

वैजयन्ती कोश

2-2

॥ श्रीः ॥

जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

२



श्रीयादवप्रकाशाचार्यविरचितः

वैजयन्तीकोषः

सलिङ्गनिर्देशं शब्दानुक्रमणिकासहितः

सम्पादकः

'विहार'राज्यस्थ-'शाहाबाद'-मण्डलान्तर्गत-'केसठ'-ग्रामवास्तव्य-

व्याकरण-साहित्याचार्य-साहित्यरत्न-

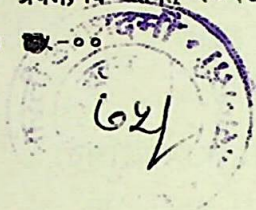
मिश्रोपाह्व श्री प० हरगोविन्दशास्त्री



चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१

१६७१

प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी
मुद्रक : विद्याविलास प्रेस, वाराणसी
संस्करण : प्रथम, वि० संवत् २०२८
मूल्य : १००-००



© चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस
गोपाल मन्दिर लेन
पो० बा० ८, वाराणसी-१ (भारतवर्ष)
फोन : ६३१४५

प्रधान शाखा
चौखम्बा विद्याभवन
चौक, पो० बा० ६६, वाराणसी-१
फोन : ६३०७६

THE
JAIKRISHNADAS-KRISHNADAS PRACHYAVIDYA GRANTHAMALA

2

VAIJAYANTIKOŚA

OF
ŚRĪ YĀDAVAPRAKĀŚĀCĀRYA

Edited with

Introduction and Index

BY

ŚRĪ PT. HARAGOVINDA ŚĀSTRĪ

Vyākaraṇa-Sāhityāchārya, Sāhityaratna

THE
CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE
VARANASI-1

1971

© The Chowkhamba Sanskrit Series Office

Gopal Mandir Lane

P. O. Chowkhamba, Post Box 8

Varanasi-1 (India)

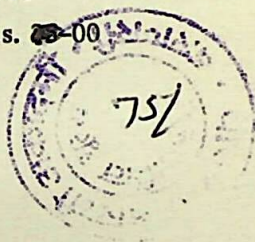
1971

Phone : 63145

First Edition

1971

Price Rs. ~~25~~-00



Also can be had of

THE CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN

Publishers and Oriental Book-Sellers

Chowk, Post Box 69, Varanasi-1 (India)

Phone : 63076

गौरीशङ्करतुल्यावेकात्मानो प्रसूजनकौ ।

मूर्ती रामस्वार्थो मिश्रः स्वःस्थो सदा जयतः ॥ १ ॥

यत्स्नेहेनास्त्यतीतं विविधसुखमयं जन्मतो जीवनं मे

यः सोदर्योऽप्यभूद्वै जनक इव सदा पूज्यपदाब्जयुग्मः ।

गार्हस्थ्यं यं विनेदं सुखदमपि महाभारभूतं मदीयं

स्वाद्धीङ्गिन्या सहासावमरपुरगतो 'रामगोविन्दमिश्रः' ॥ २ ॥

एतज्जननीजनकसहोदरकराम्बुजेषु नतमूर्द्धा ।

हरगोविन्दः कोषग्रन्थमिमं समर्पयति तत्तुष्ट्यै ॥ ३ ॥



प्रस्तावना

लोकव्यवहृतिहेतु शारदराकेशविमलतमम् ।

सारस्वतं महोऽहं शब्दब्रह्माभिधं वन्दे ॥ १ ॥

चन्द्रांशुसितभस्माङ्ग चन्द्रार्काग्निविलोचन ।

चन्द्रास्योमाचितार्द्धाङ्ग चन्द्रचूड नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

अपने-अपने पूर्वजन्माजित शुभाशुभ कर्मोंके अनुसार चौरासी लक्ष योनियों-में-से नानाविध योनियोंमें जन्म लेकर इस कष्टमय संसारमें विविध दुःखोंको भोगनेके लिए जीव बाध्य हुआ करता है । देव-यक्षादि कुछ योनियां उनमें सुखद भी हैं, किन्तु उनमें भी उत्पन्न जीव अपने शुभ कर्मोंसे उपलब्ध सुखोंका भोगमात्र ही करता है, पुनः पुण्यकर्मार्जन-द्वारा अपने सुखद भोगोंमें लेशमात्र भी वृद्धि नहीं कर सकता, क्योंकि वे सभी भोग-योनियां हैं, कर्मयोनियां नहीं । कर्म-योनि तो केवल मनुष्य-योनि ही है, इसीमें उत्पन्न प्राणी अपने-अपने कर्मजन्य सुखप्रद भोगोंको भोगता हुआ भी शुभकर्मार्जन-द्वारा धर्मार्थकामरूप पुरुषार्थत्रय प्राप्तकर मोक्षरूप परम पुरुषार्थ भी प्राप्त कर सकता है । इसी कारण इस मनुष्य-योनिको सर्वश्रेष्ठ योनि माना गया है । इसे प्राप्त करनेके लिए देवराज इन्द्र भी तरसते हैं और चाहते हैं कि सीभाग्यवश यदि मुझे दुर्लभ मनुष्य-योनि प्राप्त हो जाय तो मैं मोक्ष-लाभकर परमानन्दकन्द परब्रह्मा परमात्मामें लीन होकर कष्टमय संसारके आवागमनसे सदा सर्वदाके लिए मुक्त हो जाऊँ ।

मनुष्य-योनि-प्राप्तिके साधन—

परमदुर्लभ मनुष्य-योनि-प्राप्तिके मुख्यसाधन दो प्रकारके हैं—प्रथम कठोरतम तपश्चरणादि तथा द्वितीय सुखमय जीवन व्यतीत करते हुए सत्काव्य-सेवन । इनमें-से प्रथम साधन नानाविध विघ्न-बाधाओंसे भरा हुआ अतिशयकष्ट-साध्य है तथा सत्काव्य-सेवनरूप द्वितीय साधन पूर्वापेक्षया अधिक सरल एवं सुख-साध्य है । अत एव जीवमात्रको सत्काव्य-सेवन-द्वारा यश, धन तथा व्यवहार-ज्ञानकी प्राप्ति करते हुए दुःख-निवृत्ति एवं कान्तोपदेशसम्मित सद्यः परमसुख-प्राप्ति करनी चाहिए । शास्त्रकारोंने भी डिण्डिमघोषपूर्वक इसी बातका समर्थन किया है । यथा—

‘काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये ।

सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततथोपदेशयुजे ॥’

तथा—

‘धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलास्तु च ।

करोमि कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिपेक्षणम् ॥’

इसी सत्काव्य-सेवनद्वारा व्यास, वाल्मीकि, कालिदास, भास, भवभूति, माघ, मयूर, बाण, श्रीहर्ष, धावक, दण्डी आदि महामनीषियोने स्व-स्व-लक्ष्यानुसार अर्थ, धर्म, काम और मोक्षतक प्राप्त किया, यह सर्वविदित है। मनुष्य-योनि लाभ करनेपर भी विद्या, कवित्व और कवित्व-शक्तिका लाभ करना उत्तरोत्तर दुर्लभ है। यथा—

‘नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा ।

कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा ॥’

(अग्निपुराण २३७।३-४)

भगवान् पतञ्जलिने तो सम्यक् प्रकारसे ज्ञात एवं सुप्रयुक्त एक शब्दको भी इहलोक एवं परलोकमें कामदुघा ही बतलाया है। यथा—

‘एकः शब्दः सस्यरज्ञातः सुप्रयुक्तः सर्वे लोके च कामधुश्भवति ।’

(महाभाष्य पस्पशाह्निक)

इसी कारणसे शास्त्रकारोंने व्याकरणशास्त्रके अध्ययनपर विशेष जोर दिया है। यथा—

‘यद्यपि बहु नाधीपे पठ पुत्र व्याकरणम् ।

स्वजनः स्वजनो मा भूत् सकलं शकलं सङ्गच्छकृत् ॥’

उपर्युक्त वचनसे यह सुस्पष्ट हो जाता है कि अर्धमात्रात्मक एक व्यञ्जनका व्यतिक्रम होनेसे अर्थका कितना अनर्थ हो जाता है।

कोषकी आवश्यकता—

शब्द-शास्त्रके ज्ञानके बाद भी कवित्व-शक्ति-प्राप्त्यर्थ बहुशब्द-सञ्चय करना परमावश्यक होता है, वह सञ्चय उत्तमोत्तम कोषद्वारा ही हो सकता है, क्योंकि कोष-हीन पुरुष तथा भूपाल जिस प्रकार प्रजोत्पादन एवं प्रजा-रक्षणमें सर्वथैव असमर्थ रहते हैं, उसी प्रकार कोष-हीन विद्वान् भी उत्तम काव्यकी रचना करने या उसका यथावत् रसास्वादन करनेमें सर्वथा असमर्थ ही रहता है। यथा—

‘नरभूपौ विना कोषं प्रजोत्पादनरक्षयोः ।

नैव क्षमौ यथा, तद्वत् कविः काव्यकृतावपि ॥’

शब्द-दारिद्र्याक्रान्त कवि उपयुक्त शब्द-चयन करनेमें ही सदा व्यस्त रहनेसे उन्नतोन्नत-कल्पना-पूर्ण कविता करनेमें कदापि समर्थ नहीं होता है। अतः कोष-सञ्चय करना सत्कविके लिए परमावश्यक है।

वैदिक कोषकी सर्वप्रथम रचना—

सृष्टिकर्ता ब्रह्माने सर्वप्रथम अपने मानसपुत्रोंको वेदोंका अध्ययन कराया, उन्होंने उन वेदोंको सुनकर कण्ठस्थ कर लिया और पुनः उनका स्मरणकर अपने शिष्योंको अध्ययन कराया। श्रुति-गोचर (श्रवण) कर स्मरणद्वारा अध्ययन करानेकी यह परम्परा अनेक शताब्दियों तक चलती रही और हस्तामलकवत् त्रिकालदर्शी महर्षि लोकोपकारार्थ वेद-सम्मत अन्यान्य शास्त्रों (ब्राह्मण, उपनिषद्, धर्मशास्त्रादि) की रचनाकर अपने-अपने योग्यतम शिष्योंको अध्ययन कराते रहे।

आगे चलकर समय बदला और उन महर्षियोंके यम-नियम-संयमादिमें शैथिल्य होनेसे उनकी बुद्धिका भी ह्रास हो गया, श्रवणमात्रसे वेदको स्मरण रखने एवं समझनेकी क्षमताका अभाव देखकर कश्यप मुनिने वेदज्ञानार्थ निघण्टुकी रचना की, किन्तु कालचक्रके आगे बढ़ते रहनेसे अन्न-पान-संसर्गादिक बुद्धिवैश-द्यावरोधक दोषोंके कारण तपोबलका ह्रास उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। तत्फलस्वरूप वेदार्थप्रतिपादक निघण्टुका आशय समझना भी अशक्य हो गया, यह देख यास्क (ई० पू० ७०० वर्ष) ने निघण्टुके भाष्यरूप 'निरुक्त' ग्रन्थकी रचना की। वेदोंमें आनेवाले शब्दोंका निर्वचन करनेसे इसके द्वारा वेदार्थ-ज्ञान करना सरल हो गया। इसके विषय ये हैं—

‘वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ ।

धातोस्तदर्थान्तिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम् ॥’

निघण्टुके भाष्यस्वरूप इस निरुक्तमें यास्कने ‘एके, परे, अपरे, अन्ये, आचार्याः’ आदि शब्दों-द्वारा अज्ञात-नामा आचार्योंका सङ्केतकर इन बारह आचार्योंका स्पष्ट रूपसे नाम-निर्देश किया है। उनके नाम ये हैं—१ औदुम्बरायण, २ ओप-मन्यव, ३ वापायणि, ४ गार्ग्य, ५ आग्रहायण, ६ शाकपूणि, ७ और्णनाभ, ८ तैटिकी, ९ गालव, १० स्थीलाष्टीवी, ११ क्रौष्टु और १२ काथक्य। जिस प्रकार वेदाङ्ग व्याकरण, छन्द, ज्योतिष, शिक्षा और कल्प कोई एक-एक ग्रन्थ-विशेष न होकर सभी अनेकानेक ग्रन्थात्मक हैं, उसी प्रकार निघण्टु या निरुक्त भी कोई स्वतन्त्र एक-एक ग्रन्थ-विशेष नहीं; अपितु वे दोनों (निघण्टु और निरुक्त) भी अनेकानेक ग्रन्थरूपात्मक ही हैं। प० श्रीभगवद्भट्टजीने एक लेखमें वेदोंके भाष्यकार यास्कादिके भाष्य-ग्रन्थोंमें उद्धृत लगभग १७ निघण्टुओंके अस्तित्वका उल्लेख किया है, किन्तु इस समय वे सभी अप्राप्य हैं। (श्रीवाचस्पति गैरोलाकृत सं० साहित्यका इतिहास, पृ० १८७-१८९)

लौकिक कोषोंकी रचना—

संयम-नियम, आचार-विचार, अन्न-पान, रहन-सहन आदिके शास्त्र-बहिर्भूत होनेसे बल, वीर्य, मेधा, विद्या, तपश्चरणादिके और अधिक ह्रास होनेपर लौकिक

शब्दोंके अर्थ-ज्ञानको भी दुर्बोध्य होता हुआ देखकर आचार्योंने शास्त्र-ज्ञानार्थ 'लौकिक शब्दकोषों'की रचना की। प्राचीनाचार्योंमें अपने ग्रन्थोंमें समय, निवास तथा देशादिका परिचय देनेकी परम्परा नहीं रहनेसे किस आचार्यने कौन-सा लौकिक शब्दकोष सर्वप्रथम रचा, यह निर्णय आज तक इतिहासकार नहीं कर सके हैं। इसके कारण निम्न-लिखित हैं—

(क) 'शब्दकल्पद्रुम'के रचयिता 'स्यार राजा राधाकान्त देव बहादुर'ने उक्त ग्रन्थके मुखबन्ध (पृ० ४) में अग्निपुराणमें वर्णित अभिधानको सर्वप्रथम कोष माना है। इसका प्रकरण-क्रम इस प्रकार है—पहले स्वर्गपातालादिवर्ग, नानार्थवर्गके बाद भू-पुर-अद्रि-वनीषधि-सिंहादि-नृ (मनुष्य)-ब्रह्म-क्षत्र-वैश्य-शूद्र-वर्गका वर्णनकर अन्तमें सामान्यलिङ्गका वर्णन है। किन्तु अमरसिंहने स्व-रचित अमरकोषमें उक्त क्रमका व्यत्यासकर अग्निपुराणोक्त 'सामान्य-नामलिङ्गों'के स्थानमें विशेष्यनिधनवर्ग तथा सङ्कीर्णवर्गको समाविष्टकर 'लिङ्गादिसंग्रहवर्ग'को पृथक् कर दिया है। उक्त अमरसिंहका ही अनुकरण 'जटाधर' ने अपने.....ग्रन्थ में और 'पुरुषोत्तमदेव'ने 'त्रिकाण्डशेष' में किया है।

इसके बाद उक्त राजा सा० ने निम्नलिखित कोषों एवं उनके रचयिताओंका नाम-निर्देश किया है। यथा—

ग्रन्थकार	कोष
१. अमरसिंह	: नामलिङ्गानुशासन
२. अजयपाल	: नानार्थसंग्रह
३. गदसिंह	: नानार्थध्वनिमञ्जरी
४. चक्रपाणि	: शब्दचन्द्रिका
५. जटाधराचार्य	: पर्यायनानार्थकोष
६. दण्डाधिनाथ	: नानार्थरत्नमाला
७. दुर्गादासविद्यावागीश	: धातुदीपिका
८. धनञ्जयकवि	: नाममाला
९. धनिकदासब्राह्मण	: सारसंग्रहनामक अनेकार्थसमुच्चय
१०. नरसिंह कालीपण्डित	: निघण्टुराज (राजनिघण्टु)
११. नारायणदत्तकविराज	: राजबल्लभ
१२. पद्मनाभदत्तद्विज	: भूरिप्रयोग
१३. पुरुषोत्तमदेव	: एकाक्षरकोष
१४. ,,	: द्विरूपकोष
१५. ,,	: त्रिकाण्डशेष

ग्रन्थकार	कोष
१६. पुरुषोत्तमदेव	: हारावली
१७. भावमिश्र	: भावप्रकाश
१८. मधुरेशपण्डित	: शब्दरत्नावली
१९. महेश्वरवैद्य	: विश्वप्रकाश
२०. मेदिनीकरवैद्य	: नानार्थशब्दकोष
२१. रामेश्वरशर्मा	: शब्दमाला
२२. रत्नमालाकरवैद्य	: आयुर्वेदार्णवोत्थित पर्यायरत्नमाला
२३. वोपदेवमिश्र	: कविकल्पद्रुम
२४. श्रीनन्दनभट्टाचार्य	: वर्णाभिधान
२५. श्रीरामशर्मा	: उणादिकोष
२६. सि. की. संक्षिप्तसारकार :	उणादिवृत्ति
२७. " "	:
२८. हलायुधभट्ट	: अभिधानरत्नमाला
२९. हेमचन्द्रजैन	: अभिधानचिन्तामणि

इनके अतिरिक्त (१) विश्वकोषमें—

१. भोगीन्द्र, २. कात्यायन, ३. साहसाङ्क, ४. वाचस्पति, ५. व्याडि, ६. विश्वरूप, ७. मङ्गल, ८. शुभाङ्क, ९. वोपालित और १०. भागुरिके द्वारा रचे गये—

तथा (२) मेदिनीकोषमें—

१. उत्पलिनी, २. शब्दार्णव, ३. संसारावर्त, ४. नाममालाख्य, ५. वररुचि, ६. शाश्वत, ७. रन्तिदेव, ८. रत्नापरनामहर, ९. गोवर्धन, १०. रभसपाल, ११. रुद्र, १२. अमरदत्त, १३. गङ्गाधर, १४. वाभट, १५. माधव, १६. धर्म, १७. तारपाल, १८. वामन, १९. चन्द्र, २०. विक्रमादित्य और २१. गोमि'के रचित कोष तथा २२. पाणिनि-पदानुशासन कोष; इनके कोषग्रन्थोंका नामोल्लेख है ।'

(ख) पुरुषोत्तमदेव-रचित 'त्रिकाण्डशेष'नामक कोषकी 'सारार्थचन्द्रिका' नामकी संस्कृत व्याख्याके कर्ता 'श्रीशीलस्कन्ध यतिवरने' प्राप्ताप्राप्त एवं ज्ञाता-ज्ञात नामवाले कोषों तथा कोष-रचयिताओंके निम्नलिखित १९२ नामोंका उल्लेख-कर 'दैवज्ञ'मुखमण्डन, सरस्वतीनिघण्टु, और सिद्धीषधनिघण्टु,—इन तीन ग्रन्थों-के लङ्काद्वीपमें सिंहलाक्षर लिपिमें मुद्रित होनेकी चर्चा की है । उनकी तत्रत्य

१. उपरिलिखित २९, १० तथा २२ नामोंके अतिरिक्त भी कतिपय नाम और ग्रन्थ अर्वाचीन हैं तथा कुछ नाम कोषभिन्न हैं ।

पुस्तकालयीय ग्रन्थ-संख्या क्रमशः १४६, १८७ और १९२ है, यह भी उनका कथन है । उल्लिखित १९२ कोष एवं कोषकारोंके ये नाम हैं—

प्राप्तकोष :

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
१. नामलिङ्गानुशासन	: अमरसिंह
२. कल्पद्रु	: केशव
३. शब्दार्णव	: दुर्गादास
४. प्रमाणनाममाला	: धनञ्जय
५. त्रिकाण्डशेष	: पुरुषोत्तमदेव
६. हारावली	: ”
७. एकाक्षरकोष	: ”
८. द्विरूपकोष	: ”
९. ”	: भरतसेनमल्ल
१०. मातृकानिघण्टु	: महीदास
११. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	: महाक्षपणक
१२. अव्ययकोष	: महादेव
१३. विश्वप्रकाश	: महेश्वर
१४. शब्दभेदप्रकाश	: ”
१५. नानार्थमञ्जरी	: मेदिनीकर
१६. वैजयन्ती	: यादव
१७. लिङ्गविशेषविधि	: वररुचि
१८. पञ्चतत्त्वप्रकाश	: वेणीदत्त
१९. नानार्थसमुच्चय	: शास्त (?)
२०. लक्ष्मीनिवास	: शिवराम
२१. गणितनाममाला	: हरिदत्त
२२. अभिधानरत्नमाला	: हलायुध
२३. शारदीनाममाला	: हर्षकीर्ति
२४. अनेकार्थसंग्रह	: हेमचन्द्र
२५. अभिधानचिन्तामणि	: ”
२६. अभिधानचिन्तामणि— नाममालापरिशिष्ट	: ”
२७. लिङ्गानुशासन	: ”

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
२८. अभिधानरत्नमालाशिलोच्छः	जिनेन्द्रमुनीश्वर
२९. मदनपालनिघण्टु	: मदनपाल
३०. मुक्तावली	: श्रीधर
३१. रत्नमाला	: दण्डाधिनाथोपनाम इरुगप्प
३२. शब्दसंग्रहनिघण्टु	: अगस्त्य
३३. नानार्थसंग्रह	: अजयपाल
३४. नामसंग्रहमाला	: अप्पयदीक्षित
३५. एकाक्षरनाममाला	: अमरसिंह
३६. प्रयुक्तपदमञ्जरी	: कालिदास
३७. शब्दाण्व	: काशीनाथ
३८. लघुनिघण्टुसार	: केशव
३९. लोकप्रकाश	: क्षेमेन्द्र
४०. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	: गदसिंह
४१. शब्दमाला	: गोपीनाथ
४२. नामावली	: गोवर्धन
४३. शब्दसागर	: गोविन्दशर्मा
४४. शब्दचन्द्रिका	: चक्रपाणिदत्त
४५. अभिधानतन्त्र	: जटाधराचार्य
४६. निघण्टु	: जैमिनि
४७. कोमलकोषसंग्रह	: तीर्थस्वामी
४८. गीर्वाणभाषाभूषण	: त्रिविक्रमाचार्य
४९. नानार्थरत्नमाला	: दण्डनाथ या भास्कर
५०. नाममाला	: दुर्ग
५१. वैष्णवाभिधान	: देवकीनन्दन
५२. नानार्थसमुच्चय	: धरणीश
५३. कविजीवन	: धर्मराज
५४. बालप्रबोधिका	: नत्तिकरकवि
५५. वर्णाभिधान	: नन्दनभट्टाचार्य
५६. राजनिघण्टु	: नरसिंहपण्डित
५७. राजवल्लभ	: नारायणदास
५८. रत्नकोष	: नरसिंहमुनि
५९. भूरिप्रयोग	: पद्मनाभ

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
६०. शीघ्रबोधिनीनाममाला :	पुण्डरीकविठ्ठल
६१. वर्णदेशन :	पुरुषोत्तमदेव
६२. रत्नकोष :	पृथ्वीधराचार्य
६३. शब्दचन्द्रिका :	बाणभट्ट
६४. निघण्टुकैकाध्याय :	बाल्लिकेयमिश्र
६५. त्रिरूपकोष :	विल्लण
६६. नामसंग्रहनिघण्टु :	भार्गवाचार्य
६७. नाममाला :	भोजराज
६८. मङ्गलकोष :	मङ्गल
६९. शब्दरत्नावली :	मथुरेश
७०. पदचन्द्रिका :	मयूरभट्ट
७१. अनेकार्थतिलक :	प्रदीप
७२. शब्दरत्नाकर :	„
७३. एकाक्षरनिघण्टु :	माधव
७४. सुप्रसिद्धपदमञ्जरी :	मुरारि
७५. आयुर्वेदपर्यायरत्नमाला :	रत्नमालाकर
७६. शब्दार्थनिर्णय :	राक्षस
७७. कविदर्पणनिघण्टु :	राम
७८. उणादिकोष :	रामशर्मा
७९. शब्दमाला :	रामेश्वर
८०. रूपमञ्जरीनाममाला :	रूपचन्द्र
८१. नाममालानिघण्टु :	वरदराज
८२. ऐन्द्रनिघण्टु :	वररश्चि
८३. कविमञ्जरी :	वल्लभ
८४. शब्दरत्नाकर :	वामनभट्ट
८५. कविदीपिकानिघण्टु :	विक्रमादित्य
८६. शब्दार्थचिन्तामणि :	विठ्ठलाचार्य
८७. कोषकल्पतरु :	विश्वनाथ
८८. शब्दार्थकल्पतरु :	वेङ्कट
८९. शाब्दिकविद्वत्कवि- प्रमोदक :	„

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
९१. संयमिनाममाला	: शङ्कर
९२. शिवकोष	: शिवदत्त
९३. द्विरूपकोष	: श्रीहर्ष
९४. श्लेषार्थपदसंग्रह	: ”
९५. एकाक्षरनिघण्टु	: सदाचार्य
९६. लिङ्गप्रकाश	: सारेश्वर
९७. भुवनप्रदीपिका	: सार्वभौममिश्र
९८. शब्दरत्नाकर	: सुन्दरगणि
९९. अनेकार्थतिलक	: सोमभव
१००. एकार्थनाममाला	: सीभरी
१०१. द्व्यक्षरनाममाला	: ”

अविदित-ग्रन्थ-नामवाले कोषकार

१०२. अमरदत्त	११७. राजमुकुट
१०३. कृत्य	११८. रुद्र
१०४. गङ्गाधर	११९. धरणीधर
१०५. चन्द्रगोमि	१२०. वाग्भट
१०६. तारपाल	१२१. सर्वधर
१०७. दामोदर	१२२. वाचस्पति
१०८. धर्मदास	१२३. राजदेव
१०९. वोपालित	१२४. वामन
११०. भागुरि ^१	१२५. मुकुट
१११. भोगीन्द्र	१२६. विक्रमादित्य
११२. मङ्गल ^१	१२७. विश्वरूप
११३. मार्तण्ड	१२८. भट्टमल्ल
११४. रन्तिदेव	१२९. व्याडि
११५. रभसपाल	१३०. विश्वलोचन ^३
११६. राजशेखर	१३१. शुभाङ्क

१. इनका रचित 'त्रिकाण्डकोष' है। (द्रष्टव्य : वाचस्पति गैरोला-रचित सं० साहित्यका इतिहास, पृ० ६२०)

२. इनकी रचना 'मङ्गलकोष' है।

३. इनका रचित 'विश्वलोचनकोष' है, जो सूरतसे प्रकाशित है।

१३२. सोमनन्दी	१३५. हट्टचन्द्र
१३३. सज्जन	१३६. हर
१३४. साहसङ्क	१३७. कात्यायन

अविदित कर्तृनामक, विदित-ग्रन्थनामक कोष

१३८. अमरमाला ^१	१६२. बृहदमरकोष ^२
१३९. असालतिप्रकाश	१६३. महाखण्डनकोष
१४०. आनन्दकोष	१६४. पदरत्नावली
१४१. एकवर्णसंग्रह	१६५. राजकोपनिघण्टु
१४२. एकाक्षरकोष	१६६. पुद्गलकोष
१४३. उत्पलिनी	१६७. लिङ्गप्रकाश
१४४. ऊष्मविवेक	१६८. मुनिकोष
१४५. अजय	१६९. वर्णप्रकाशकोष
१४६. अरुण	१७०. पालकोष
१४७. इन्दुकोष	१७१. वात्स्यायनकोष
१४८. कल्पतरुकोष	१७२. कोषसार
१४९. ग्रहाभिधान (दैवज्ञमुखमण्डन)	१७३. शब्दतरङ्गिणी
१५०. जकारभेद ^३	१७४. गङ्गाधर
१५१. दण्डिकोष	१७५. शब्ददीपिका
१५२. सुभूतिकोष	१७६. गोवर्द्धनकोष
१५३. धन्वन्तरिनिघण्टु	१७७. शब्दरत्नसमुच्चय
१५४. नक्षत्राभिधान	१७८. शब्दसारनिघण्टु
१५५. देशीकोष	१७९. चन्द्रकोष
१५६. नानार्थमञ्जरी	१८०. संसारावर्त
१५७. नामनिधान	१८१. चरककोष
१५८. पद्मकोष	१८२. सकलग्रन्थदीपिका
१५९. भुशकोष	१८३. सकारभेद ^४
१६०. चकारभेद	१८४. सञ्जीवनी
१६१. बीजकोष	१८५. सन्मुखविवृतिनिघण्टु
	१८६. सरसशब्दसरणि

१. कतिपय विद्वान् इसे 'अमरसिंह' रचित कोष मानते हैं ।

२., ४. कतिपय विद्वान् इसे 'बाणभट्ट' की रचना मानते हैं ।

३. कुछ विद्वान् इसे 'अमरसिंह' की कृति मानते हैं ।

१८७. सरस्वतीनिघण्टु

१९०. सारस्वताभिधान

१८८. साध्यकोष

१९१. हनुमन्निघण्टु

१८९. रत्नकोष

१९२. सिद्धौषधनिघण्टु

(ग) श्री वाचस्पति गैरोला जीने अपने संस्कृत साहित्यके इतिहासमें पाणिनि-द्वारा एक 'द्विरूपकोष' लिखे जानेका उल्लेख किया है (पृ० ६३४) । इस आधारपर यह कहा जा सकता है कि उन्हीं गैरोला जीके उक्त इतिहासमें (पृ० ६३३) उद्धृत 'सत्यव्रत सामश्रमी'के मतानुसार पाणिनिका सत्ता-काल ई० पू० २४०० वर्ष मान लिया जाय तो पाणिनि-रचित उक्त 'द्विरूपकोष'-का रचना-काल आजसे लगभग साढ़े चार सहस्र वर्ष पूर्व ही होना सिद्ध होता है । इतना ही नहीं, अपि तु श्री गैरोला जीने उसी इतिहासमें 'भागुरि'की कृतियोंमें 'त्रिकाण्डकोश' होनेका उल्लेख किया है । उक्त 'भागुरि' का समय ई० पू० ३१०० वर्ष (उक्त इति० पृ० ६२०) होनेसे यह स्पष्ट हो जाता है कि कम-से-कम आजसे लगभग ६००० वर्ष पहले ही लौकिक-कोष-रचनाका श्रीगणेश हो चुका था ।

इसके अतिरिक्त महावैयाकरण आपिशलि, शाकटायन, व्याडि, पतञ्जलिने भी कोषोंकी रचना की थी (वही इतिहास पृ० ७७७-७७९) ।

लौकिक-कोष-रचनामें जैनाचार्योंका भी प्रमुख हाथ रहा है । इनके रचित उपलब्ध कोषोंमें 'हरिषेण'रचित 'बृहत्कथाकोष' सबसे विशाल एवं प्राचीन कोष है । इनका समय शक ८५३ (ई० ९६९) है । इनका रचित उक्त कोष १२५०० श्लोकोंमें पूर्ण हुआ है । (गैरोला, सं० सा० का इति० पृ० ७८१) ।

आचार्य यादवप्रकाश—

इसी लौकिक-कोष-रचनाके सन्दर्भमें आचार्य 'यादवप्रकाश'ने प्रकृत 'वैजयन्तीकोष'की रचना की । आप विशिष्टाद्वैतवादी ब्राह्मण थे । ये 'तामिलनाडु' राज्यान्तर्गत 'काञ्चीपुरम्' या 'काञ्चीवरम्'के निकटवर्ती 'तिरुप्पुटकुलि' या 'गृध्रसरस' ग्रामके निवासी थे । पहले आप कट्टर अद्वैतवादी श्रीशङ्कराचार्यके मतानुयायी थे । इन्होंने 'ब्रह्मसूत्र'पर एक 'यादवभाष्य' लिखा था और उसे ये 'शङ्करभाष्य'के साथ-साथ अपने शिष्योंको पढ़ाया करते थे । कहा जाता है कि 'तिरुप्पुटकुलि'में स्थित 'विजयराघव स्वामी-मन्दिर'में दो साधुओंकी मूर्तियाँ हैं, उनमें-से एक मूर्ति एक दण्ड धारण किये हुए अद्वैतवादी आचार्य 'यादवप्रकाश'की है और दूसरी त्रिदण्ड धारण किये हुए विशिष्टाद्वैतवादी 'रामानुजाचार्य'की है । एक बार अपने शिष्य रामानुजाचार्यके साथ शास्त्रार्थ होनेपर आचार्य यादवप्रकाश विशिष्टाद्वैतवादी होकर त्रिदण्ड धारण कर लिये ।

इसका प्रमाण यह दिया जाता है कि 'काञ्चीपुरम्' में स्थित 'वरदाचार्य स्वामी'-के मन्दिरकी भित्तिपर एक चित्रमें त्रिदण्ड धारण किये हुए आचार्य 'यादव-प्रकाश' अपनी शिष्य-मण्डलीके साथ चित्रित हैं। शिष्य-मण्डलीमें रामानुजाचार्यका भी चित्र है।

आचार्य यादवप्रकाशने 'पिङ्गल छन्दःसूत्र'पर भी भाष्य लिखा था। इनके रचे हुए 'यतिधर्मसमुच्चय'नामक ग्रन्थका वैष्णव-सम्प्रदाय में बहुत आदर है। आप जीवनके अन्तिम दिन तक वैष्णव संन्यासीके रूपमें 'काञ्चीवरम्'में ही रहे।

उपर्युक्त द्विशताधिक कोषोंके अतिरिक्त भी अन्यान्य कोषोंके प्रमापक वचनों-का उद्धरण यत्र-तत्र संस्कृत ग्रन्थोंकी व्याख्याओंमें उपलब्ध होनेसे उक्त कोषा-तिरिक्त अन्य कोषग्रन्थोंका अस्तित्व भी सिद्ध होता है। एतदतिरिक्त अर्वाचीन कतिपय विद्वानोंने और भी संस्कृत कोषोंकी रचना की है, जिनमें कुछ निम्नलिखित हैं—

१. उपनिषद्वाक्यकोष	:	कर्नल जी० ए० जाकोब
२. उपनिषद्वाक्यमहाकोष	:	गजाननके पुत्र शम्भु साधसे
३. कविकर्पटिका	:	वादीन्द्रकवि
४. कोषकल्पतरु	:	विश्वनाथ
५. कोशकौमुदी	:	रामदत्तत्रिपाठीशास्त्री
६. कोषसंग्रह	:	
७. कोषावतंस	:	राघवकवि
८. तिङन्तार्णवतरणि	:	
९. धर्मकोष	:	श्रीलक्ष्मणशास्त्री
१०. भोटसंस्कृताभिधान	:	लोकेशचन्द्र
११. मीमांसाकोष	:	केवलानन्दसरस्वती
१२. शिवकोष	:	शिवदत्त
१३. आख्यानकमणिकोष	:	
१४. बाङ्मयार्णव	:	पं० रामावतारशर्मा
१५. वाचस्पत्यम्	:	तर्कवाचस्पति तारानाथभट्टाचार्य
१६. शब्दकल्पद्रुम	:	राधाकान्तदेवबहादुर
१७. वास्तुरत्नकोष	:	
१८. देशीनाममाला	:	हेमचन्द्राचार्य

वैजयन्ती कोषका वैशिष्ट्य—

यह कोष कुल आठ काण्डोंमें पूरा हुआ है। इसे दो भागोंमें विभक्त किया

(जो संकलित है) एक। प्रथम-भाग तथा दूसरा तानाश्र-भाग। प्रथम पर्याय-भागमें

पाँच काण्ड हैं—१ स्वर्गकाण्ड, २ अन्तरिक्षकाण्ड, ३ भूमिकाण्ड, ४ पाताल-काण्ड और ५ सामान्यकाण्ड । उनमें क्रमशः ३, ४, ९, ४ और ४ अध्याय तथा कुल २३७० श्लोक हैं । द्वितीय पर्याय-भागमें तीन काण्ड हैं— १ द्व्यक्षरकाण्ड, २ त्र्यक्षरकाण्ड और ३ सामान्यकाण्ड; इनमें क्रमशः ४, ४ और ९ अध्याय तथा कुल ८४२ श्लोक हैं । ग्रन्थकारने अन्तमें ग्रन्थप्रशस्तिके ४ श्लोक दिये हैं, इस प्रकार सम्पूर्ण ग्रन्थकी श्लोक-संख्या ३२१६ अर्थात् अमरकोपसे द्विगुणाधिक है ।

महाकाव्यों एवं कोषादिकोंके संस्कृतव्याख्याकार मल्लिनाथ, नारायण, क्षीरस्वामी, भानुजिदीक्षित, सर्वदेव, महेश्वर, मुकुट आदिने 'इति यादवः, इति वैजयन्ती' लिखकर अपनी-अपनी व्याख्याओंकी पुष्टिके लिए स्थान-स्थानपर इस कोषके बहुशः उद्धरण दिये हैं । इन उद्धरणोंमें अधिकांश नानार्थ-भाषोक्त अंशों-का ही प्रयोग किया गया है ।

यादवप्रकाश जिसका पर्याय कहना आरम्भ करते हैं, उससे सम्बद्ध समस्त विषयोंका साङ्गोपाङ्ग वर्णन कर देते हैं । उदाहरणार्थ इसका कुछ दिग्दर्शन नीचे कराया जाता है—

(क) 'अग्निर्वैश्वानरः.....' (१।२।१४) से आरम्भकर 'अग्नि'-के पर्यायवाचक शब्द कहनेके उपरान्त तत्सम्बद्ध 'अग्निप्रिया, स्कन्धामि, काष्ठामि, तुषाग्नि, करीषाग्नि, मेघाग्नि, प्रेतदाहा (चिता)ग्नि, दैत्याग्नि, पित्र्यग्नि, यज्ञाग्नि, ऋत्विग्नि, विवाहाग्नि आदि समस्त अग्नियोंका पृथक्-पृथक् नाम-निर्देश किया गया है ।

(ख) ब्राह्मणादि वर्णचतुष्टयका पर्याय वर्णन करनेके बाद 'उपवर्णास्तु सङ्कीर्णाः.....' (३।५।२) से आरम्भकर वर्णसङ्कर जातियोंकी उत्पत्ति एवं उनके नामोंका निर्देश विशद रूपसे किया गया है । तदनन्तर 'एषां लक्षणसिद्धयर्थं केपल्लिचद् वृत्तिरुच्यते.....' (३।४।६४) से 'गरानलप्रयोगाद्वच प्रोच्यन्ते दस्युजातयः' (३।५।१०८) तक प्रकरणागत इन वर्णसङ्कर जातियोंकी जीवि-कादिका विस्तारके साथ वर्णन किया गया है ।

(ग) इसी तृतीय काण्डके षष्ठाध्यायमें कापोत, औदुम्बर, भिक्षु, व्युष्टि, सौमिक, बलिक, नीस, पुष्पाढ्य, द्विकालिक, शीर्णिक, मूलिक, पातालमूलिक, अम्भाव-काशिक, शिवव्रती, रुद्रव्रती, अहिब्रती आदि-आदि व्रतियों एवं तप्तकृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, चान्द्रायणादि बहुविध व्रत साङ्गोपाङ्ग वर्णित हैं । (३।६।१२५—१४९)

(घ) 'शुक्ले शुभ्रशुचिश्येताः.....' (५।३।१०—५।३।२५) द्वारा श्वेतादि वर्णोंका पृथक्-पृथक् पर्याय एवं दो-दो, तीन-तीन वर्णों (रङ्गों) के मिश्रणसे बने हुए वर्णोंके नामोंका अत्यन्त विस्तारके साथ

वर्णनकर 'मधुरस्तु रसज्येष्ठो.....'(५।३।२५)से षड्रसोंका सामान्यतः पर्याय-निर्देश करनेके पश्चात् एकाधिक (दो, तीन, चार और पांच) रसोंके सम्मिश्रणसे निष्पन्न रसों (स्वादों) के नाम अलग-अलग —'त्रिषष्टिस्तु ततो रसाः' (५।३।४५) कहे गये हैं, इस प्रकार छः रसोंके मिश्रणसे बने ६३ रसोंका नाम-निर्देश करना ग्रन्थकारकी प्रतिभाका अनुपम उदाहरण है ।

उपर्युक्त दिग्दर्शनमात्रसे 'स्थालीपुलाक' न्याय-द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि विषयान्तरोंके समाविष्ट होनेसे अन्यान्य कोष आकृति एवं श्लोक-सङ्ख्याकी दृष्टिसे विशाल भले ही हों, किन्तु ऐसा विशद वर्णन किसी भी कोषमें उपलब्ध नहीं है ।

आधुनिक संस्कृत-साहित्यके इतिहास-ग्रन्थोंमें कोषकी उपेक्षा ?

संस्कृत साहित्यके इतिहासोंके लेखक महानुभावोंने अपने-अपने ग्रन्थोंमें इतिहास, वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, पुराण, काव्य, नाटक, छन्द, चम्पू, आख्यायिका नीतिशास्त्र आदिके विषयमें तो स्वतन्त्र शीर्षक देकर सैकड़ों पृष्ठ लिखनेका कष्ट किया है, किन्तु इतनी बड़ी संख्यावाले (लगभग २२५ से भी अधिक) लौकिक संस्कृत कोषोंके विषयमें उन इतिहास-लेखक महानुभावोंकी वाच्यमिता तथा बद्धमुष्टिता देखकर महान् आश्चर्य एवं खेद होता है । कोषके विषयमें और विशद विवेचन करनेके लिए मैंने बड़े-बड़े धुरन्धर विद्वानोंके लिखे दर्जनों संस्कृत साहित्य-के इतिहास-ग्रन्थोंके पन्ने उलटे, किन्तु किसीमें भी उपर्युक्त लौकिक संस्कृत कोषोंके विषयमें प्रायः कुछ नहीं पा सका । संभवतः इसका प्रधान कारण यह है कि वैदिक एवं अन्य संस्कृत साहित्यके अनुसन्धानमें अधिकतम द्रव्य-राशि एवं समय लगाकर उक्त सं० साहित्यका उद्धार करनेका प्रशस्त श्रेय प्राप्तकर भी अमर-भाषा संस्कृतको मृत भाषा कहनेवाले संस्कृत साहित्यके कुछ अंग्रेज इतिहास-लेखकोंका अनुकरण करनेवाले हमारे भारतीय, संस्कृत साहित्यके इतिहास-लेखकोंने भी लौकिक संस्कृत कोषोंपर कुछ लिखनेकी कृपादृष्टि करना उचित या आवश्यक नहीं समझा । मैं श्रीवाचस्पति गैरोलाजीको धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने अपने 'संस्कृत साहित्यका इतिहास' ग्रन्थमें 'कोश'को स्वतन्त्र शीर्षक देकर इसके विषयमें विशदरूपसे तो नहीं, किन्तु कुछ लिखनेकी उदारता प्रदर्शित की है ।

आत्म-निवेदन—

अध्ययन-कालसे ही कोष-ग्रन्थोंकी ओर अपना प्रबल झुकाव होनेसे मैंने सर्व-प्रथम 'अमरकोष'की, राष्ट्रभाषा हिन्दीमें 'मणिप्रभा' व्याख्या, 'अमरचन्द्रिका' नामक टिप्पणीके साथ लिखी, प्रकाशन होनेपर विद्वत्समाजने उसे अपनाकर

अन्यान्य ग्रन्थ लिखनेके लिए मुझे प्रोत्साहित किया। फलस्वरूप 'हेमचन्द्राचार्य'कृत 'अभिधानचिन्तामणि'की भी राष्ट्रभाषा हिन्दीमें ही 'मणिप्रभा' व्याख्या लिखनेके बाद मैंने श्रीभानुजिदीक्षित-विरचित 'व्याख्यासुधा' (रामाश्रमी) सहित 'अमरकोष'-के सम्पादनका कार्य हाथमें लिया। उक्त व्याख्यामें उद्धृत सूत्रों एवं ग्रन्थान्तरीय प्रमापक वचनोंको उपलब्ध तत्तद्ग्रन्थोंसे मिलानकर उन सबोंका स्थल-निर्देश तथा त्रुटिपूर्ति करते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दीमें 'प्रकाश' व्याख्याके साथ उसका सम्पादन किया। इन दोनों ग्रन्थोंको भी अपनाकर गुणग्राही विद्वद्गर्ने मेरा द्विगुणित उत्साह बढ़ाया। ये दोनों ग्रन्थ बहुत समयसे अप्राप्य थे।

इनके अतिरिक्त, अपने गुरुजनोंके आदेश, सुहृद्वर्गकी सद्भावना एवं सहानुभूति पूर्ण प्रेरणासे उत्साहित होकर मैंने महाकवि कालिदास रचित 'रघुवंश' महाकाव्य, माघ-रचित 'शिशुपालवध' महाकाव्य, श्रीहर्षरचित 'नैषधचरित' महाकाव्य, मनु-प्रणीत 'मनुस्मृति' ग्रन्थोंकी गुत्थियोंको 'विमर्श'में स्पष्ट करते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही 'मणिप्रभा' व्याख्या लिखी। उपर्युक्त सभी ग्रन्थ 'चीखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी'के द्वारा यथासमय प्रकाशित होकर सर्वजन-सुलभ हो गये हैं और नीर-क्षीर-विवेकी हंसके समान गुणैकपक्षपातपरायण विद्वत्समाजने इन्हें अपनाकर मुझे तथा प्रकाशकको अपने-अपने कार्यमें उत्तरोत्तर आगे बढ़ते हुए संलग्न रहनेके लिए समय-समयपर प्रोत्साहित किया है।

प्रकृत ग्रन्थका सम्पादन—

महाकाव्य आदिके संस्कृत व्याख्याकारोंके द्वारा प्रकृत 'वैजयन्तीकोष'के उद्धरण देख-देखकर इसे भी सर्व-जन-सुलभ करानेकी मेरी प्रबल आकाङ्क्षा बहुत दिनोंसे हो रही थी। इसे उपलब्ध करनेके लिये स्वयं तथा मित्रों-द्वारा बम्बई, झालरापाटन, व्यावर आदि स्वपरिचित बड़े-बड़े पुस्तकालयोंके साथ पत्राचार करनेपर भी मैं सफल नहीं हो सका। किन्तु सुल्तानगंज (भागलपुर)में स्थित राजकीय संस्कृतोच्च विद्यालयसे स्थानान्तरित होकर जब मैं 'आरा'में आया, तब कुछ वर्षोंके उपरान्त वार्ता-प्रसङ्गमें इस कोषकी चर्चा आनेपर मेरे अन्यतम मित्र डॉ० नेमिचन्द्रजी शास्त्री एम० ए० (संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी), ज्योतिषाचार्य, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, "जैन महाविद्यालय, आरा"ने इस 'वैजयन्तीकोष'की अत्यन्त प्राचीन प्रति मुझे देनेकी कृपा की। जो अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण होनेके कारण प्रेसमें मुद्रणार्थ देने योग्य नहीं थी। अतः मैंने बड़ी सावधानीसे इसकी पाण्डुलिपि तैयार की है। लिङ्गनिर्देशपूर्वक इसकी शब्दसूची तैयार करनेमें मुझे अनेक कोषोंका अध्ययन करना पड़ा है। पाठकोंको इससे अधिक सीविध्य प्राप्त होगा। सर्वांगपूर्ण पाण्डुलिपि तैयार हो जानेके बाद

मैंने सहस्रों अलभ्य संस्कृत ग्रन्थ-रत्नोंके प्रकाशक 'चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी'के संचालक महोदयको प्रकाशनार्थ इसे दी और उन्होंने इसको प्रकाशित करनेकी सहर्ष स्वीकृति दे दी, जिसके फल-स्वरूप अत्यन्त दुर्लभ एवं महत्त्वपूर्ण इस ग्रन्थ-रत्नको सर्व-सुलभ होनेका सत्सीभाग्य प्राप्त होने जा रहा है ।

मैं 'अमरकोष' तथा 'अभिधानचिन्तामणि' कोषद्वयके समान ही इसकी भी राष्ट्रभाषा हिन्दीमें विशद व्याख्या लिखना प्रारंभ कर दिया था, किन्तु सांसारिक विविध कारणोंसे मेरी इच्छा त्वरित पूरी नहीं हो सकी—प्रस्तुत संस्करणमें हिन्दी व्याख्याका समावेश नहीं हो सका । अगले संस्करणको हिन्दी व्याख्यासे समन्वित कर अपनी चिराकांक्षा पूर्ण करनेका प्रयास कहूँगा ।

आभार-प्रदर्शन—

सर्वप्रथम 'डा० श्री गुस्ताव आपर्टे, पी० एच्० डी०, अध्यापक संस्कृत तथा तुलनात्मक भाषाविज्ञान, प्रेसीडेंसी महाविद्यालय, मद्रास'का बहुत आभारी हूँ, जिनके द्वारा सम्पादित ग्रन्थको आधार मानकर मैं इस ग्रन्थका सम्पादन-कार्य करनेमें समर्थ हो सका हूँ । तदनन्तर अपने स्नेही डॉ० नेमिचन्द्रजी शास्त्री, डी० लिट०, का तथा उन्हींके सनामा, 'जैन सिद्धान्त भवन, आरा'के वर्तमान पुस्तकालयाध्यक्ष श्री नेमिचन्द्र शास्त्री, एम० ए०, साहित्याचार्य'का अतिशय आभार मानता हूँ, जिनकी कृपासे इस पुस्तककी मूल प्रति उपलब्ध हुई, और ग्रन्थके प्रकाशनान्ततक मेरे पास रहकर प्रमादादि दोषवश उपस्थित सन्देहोंका निराकरण करनेमें सहायिका होती रही । 'संस्कृत साहित्य-का इतिहास' ग्रन्थके लेखक श्री वाचस्पति गैरोलाका भी मैं आभारी हूँ, जिनका ग्रन्थ इस भूमिकाके लिखनेमें सहायक हुआ है । चौखम्बा संस्कृत सीरीजके प्रमुख कार्यकर्ता एवं मेरे परम मित्र व्या० आ० प० श्रीरामचन्द्र झा-जीको भूरिशः धन्यवाद देता हूँ, जिनकी देख-भाल एवं सहयोगमें यह ग्रन्थ अपेक्षाकृत शीघ्र और शुद्ध प्रकाशित हो रहा है । इस ग्रन्थके सम्पादन-कालमें अपना निरन्तर सहयोग देनेवाले स्नेहभाजन अपने आत्मज चि० श्री रामकिशोर मिश्रको बहुशः आशीर्वाद-प्रदान करता हूँ ।

अन्तमें अत्यन्त दुर्लभ या अमुद्रित परमोपयोगी सहस्रशः संस्कृत ग्रन्थोंके प्रकाशक 'चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस' तथा 'चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी', के वर्तमान प्रमुख व्यवस्थापक बन्धुयुगल (चि० श्री मोहनदास गुप्त एवं श्री विठ्ठलदास गुप्त)को भी साशीर्वाद भूरिशः धन्यवाद देता हुआ मैं भगवान्से प्रार्थना करता हूँ कि उक्त दोनों बन्धु अपने परिवारके सहित

स्वस्थ, सुखी एवं उत्तरोत्तर ऐश्वर्य-सम्पन्न होकर चिरायु हों तथा अपने पूर्वजों-के समान संस्कृत साहित्यके उद्धारमें सदा संलग्न रहें। इस ग्रन्थके सम्पादन एवं प्रकाशनमें अन्यान्य जिन महानुभावोंकी कृतियों या प्रकारान्तरसे सहायता मिली है उन सबोंके प्रति आभार-प्रदर्शन करता हूँ।

इस सृष्टिमात्रमें जगन्निघन्ता परात्पर परब्रह्म परमात्माके अतिरिक्त कोई भी प्राकृत प्राणी सर्वथा निर्भ्रान्त नहीं हो सकता, अतः इस ग्रन्थके सर्वतो-भावेन शुद्ध होनेका दावा करना मुझ-जैसे अल्पज्ञके लिए सर्वथा अशक्य है। इस कारण मैं गुणग्राही विद्वज्जनोंसे करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि मेरे लिखने, अत्यन्त सूक्ष्माक्षरोंके संयोजन एवं संशोधन करनेमें प्रमाद या मानव-सुलभ भ्रान्ति-वश कोई अशुद्धि रह गई हो तो वे मुझे क्षमा करते हुए सूचित करें, जिससे उसका निराकरण अग्रिम-संस्करणमें किया जा सके। क्योंकि—

‘नैवानवद्यं जगतीह किञ्चिन्न

वाऽप्यवद्यं किल वस्तुजातम् ।

ततो बुधा आददते गुणान् हि

हंसा यथा क्षीरपयोविवेकात् ॥

तथा—

‘गच्छतः स्खलनं कापि भवत्येव प्रमादतः ।

हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥’

इति शम् ॥

‘गोविन्द-कुटीर’
केसठ (शाहाबाद)
हरिप्रबोधिनी ११
सं० २०२८ वि०

विद्वज्जनविधेयः—
मिश्रोपाह्व हरगोविन्द शास्त्री

विषय-सूची

विषय	पृष्ठाङ्क
प्रस्तावना	७-२३
१. परिभाषा	...
(पर्याय-भाग : काण्ड १-५)	२-१५८
(१) स्वर्गकाण्ड—	२-१०
१. आदिदेवाध्याय	...
२. लोकपालाध्याय	...
३. यक्षाध्याय	...
(२) अन्तरिक्षकाण्ड—	११-२४
१. ज्योतिरध्याय	...
२. मेघाध्याय	...
३. खगाध्याय	...
४. शब्दाध्याय	...
(३) भूमिकाण्ड—	२५-१०७
१. देशाध्याय	...
२. शैलाध्याय	...
३. वनाध्याय	...
४. पशुसंग्रहाध्याय	...
५. मनुष्याध्याय	...
६. ब्राह्मणाध्याय	...
७. क्षत्रियाध्याय	...
८. वैश्याध्याय	...
९. शूद्राध्याय	...
(४) पातालकाण्ड—	१०८-१३६
१. सरीसृपाध्याय	...
२. जलाध्याय	...
३. पुराध्याय	...
४. भूताध्याय	...

(५) सामान्यकाण्ड	...	१३७-१५८
१. गणाध्याय	...	१३७
२. धर्मकर्मध्याय	...	१४२
३. गुणाध्याय	...	१४५
४. अर्थवल्लिङ्गाध्याय	...	१४९
(नानार्थभाग : काण्ड ६-८)	...	१५९-२२४
(६) द्व्यक्षरकाण्ड—	...	१५९-१७२
१. पुलिङ्गाध्याय	...	१५९
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	१६४
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	१६८
४. अर्थवल्लिङ्गाध्याय	...	१७१
५. नानालिङ्गाध्याय	...	१७३
(७) त्र्यक्षरकाण्ड—	...	१८०-१९८
१. पुलिङ्गाध्याय	...	१८०
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	१८६
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	१८८
४. अर्थवल्लिङ्गाध्याय	...	१९१
५. नानालिङ्गाध्याय	...	१९३
(८) शेषकाण्ड—	...	१९९-२२४
१. पुलिङ्गाध्याय	...	१९९
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	२०४
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	२०६
४. अभिधेयवह्निङ्गाध्याय	...	२०८
(अर्थवल्लिङ्गाध्याय)	...	२१०
५. नानालिङ्गाध्याय	...	२१३
६. पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्याय	...	२१५
७. अनेकार्थाव्ययाध्याय	...	२१८
८. अव्ययपर्यायाध्याय	...	२२०
९. लिङ्गसंग्रहाध्याय	...	२२५
ग्रन्थोपसंहार	...	२२७
परिशिष्ट	...	१-१७०
शब्दानुक्रमणिका	...	

वै ज य न्ती को षः

॥ श्रीः ॥

वैजयन्तीकोषः



अथ परिभाषाध्यायः

ओंकारार्थाय तत्त्वाय वाच्यवाचकशक्तये ।
ब्रह्मसंज्ञाय पूर्वेषां गुरूणां गुरवे नमः ॥ १ ॥
प्रकाश्याष्टविधं लिङ्गं निर्लिङ्गं वचनानि च ।
वैजयन्तीति विख्यातं क्रियते नामशासनम् ॥ २ ॥
स्त्रीपुन्रपुंसकं लिङ्गं संकीर्णं तच्च पञ्चधा ।
नृस्त्री नृषण्डष्वण्डस्त्री त्रिलिङ्गं वाच्यलिङ्गकम् ॥ ३ ॥
समासलिङ्गाद्विधितः साहचर्यात् पृथक्कृतेः ।
लिङ्गं विद्यात् प्रयोगाच्च क्तिन् सर्वत्रापि च स्त्रियाम् ॥ ४ ॥
यत्प्रवृत्तं समासस्य लिङ्गं तत्स्यात् समासिनाम् ।
विशेषविधितः कापि लिङ्गं तत्राप्ययं क्रमः ॥ ५ ॥
स्त्रीलिङ्गे स्त्रीत्ययं शब्दः पुंलिङ्गे ना पुमानिति ।
षण् क्लीनपुमिति क्लीबे ये च षण्डार्थवाचिनः ॥ ६ ॥
त्रिष्वित्युक्तिर्वाच्यलिङ्गे त्रयीशब्दस्त्रिलिङ्गके ।
अस्त्रीत्यादि निषेधेषु नृषण्डादीतरद्वयम् ॥ ७ ॥
ज्ञातैर्लिङ्गैः साहचर्यात् कचित् स्याल्लिङ्गनिश्चयः ।
एकत्र सव पुंलिङ्गाः स्त्रियोऽन्यत्रान्यतो नपुम् ॥ ८ ॥
इत्येकस्यापि पर्याया लिङ्गायात्र पृथक्कृताः ।
प्रयोगात् प्रायशो लिङ्गमुदन्तः संशये पुमान् ॥ ९ ॥
सन्दिग्धद्विवचोऽन्तं स्त्री ना स्याद्बहुवचोऽन्तकम् ।
समासे स्युः पृथक् सर्वे शब्दा बहुवचोऽन्तके ॥ १० ॥
न पूर्वशब्दभागात्र पुनस्त्वन्तमथादितः ॥ १०३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यां परिभाषाध्यायः ।

१. अथ स्वर्गकाण्डः

आदिदेवाध्यायः ॥ १ ॥

स्वर्गो नाकः सुरावास ऊर्ध्वलोकः फलोदयः ।
 सौरिको भोगभूमिः स्त्री दिवि द्यौश्च त्रिविष्टपम् ॥ १ ॥
 अमर्त्यभवनं गौश्च त्रिदिवः स्यात्स्वरव्ययम् ।
 देवा निलिम्पा मरुतो गीर्वाणा वायुनाः सुराः ॥ २ ॥
 आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना विवस्वन्तो दिवौकसः ।
 आदिदेवा दिविषदो लेखा अदितिजन्मनाः ॥ ३ ॥
 सुपर्वाणः क्रतुभुजो निर्जरा अमृताशनाः ।
 बर्हिर्मुखा विट्पतयस्त्रिदशा हव्ययोनयः ॥ ४ ॥
 अमर्त्याश्चाथ न स्त्री स्याद्देवतं देवता स्त्रियाम् ।
 त्रय एवादिदेवाः स्युर्ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ५ ॥
 आजानजाः स्वतोदेवाः कर्मदेवास्तु कर्मभिः ।
 ब्रह्मा विधाता विश्वात्मा धाता स्रष्टा प्रजापतिः ॥ ६ ॥
 हिरण्यगर्भो द्रुहिणो विरिञ्चः कश्चतुर्मुखः ।
 पद्मनाभः सुरज्येष्ठश्चिरजीवी सनातनः ॥ ७ ॥
 शतानन्दः शतधृतिः स्वयंभूः सर्वतोमुखः ।
 परमेष्ठी विश्वरेताः पुरुषो हंसबाहनः ॥ ८ ॥
 पद्मभूः प्राणदो वेधा द्रुषणो नाभिजो विधिः ।
 वाग्वाणी भारती भाषा गौर्गौर्ब्राह्मी सरस्वती ॥ ९ ॥
 विष्णुर्नारायणो बभ्रुश्चक्रपाणिर्जनार्दनः ।
 दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षश्चिकुद्विष्टरश्रवाः ॥ १० ॥
 पीताम्बरो हृषीकेशो विष्वक्सेनश्चतुर्भुजः ।
 श्रीवत्सः श्रीपतिः शार्ङ्गो श्रीवत्साङ्कोऽच्युतो हुणः ॥ ११ ॥
 वासुदेवः स्वभूश्चक्री वैकुण्ठः पुरुषोत्तमः ।
 अरिष्टनेमिरजितः श्रीधरो यज्ञपूरुषः ॥ १२ ॥
 मुञ्जकेशी मुररिपुर्गदापाणिरधोऽक्षजः ।
 अनन्तशायी वृन्दाको मुकुन्दो धरणीधरः ॥ १३ ॥
 शतानन्दः शतावर्तो युगावर्तः सुरोत्तमः ।
 कालकुन्थो रन्तिदेवः केशवो गरुडध्वजः ॥ १४ ॥
 पद्मनाभो विश्वरूपः कृष्णो हरिरसंपुषः ।
 कैटभारिर्ब्रह्मनाभो गोविन्दो मधुसूदनः ॥ १५ ॥
 आचारा वैष्णवी सूक्ष्मा लक्ष्मीः पुष्टिर्निरञ्जना ।

जीवनी मोहनी माया नवैता विष्णुशक्तयः ॥ १६ ॥
 कौस्तुभोऽस्य मणिर्लक्ष्म श्रीवत्सो नन्दकस्त्वसिः ।
 चापः शार्ङ्ग पाञ्चजन्यः शङ्खश्चक्रं सुदर्शनम् ॥ १७ ॥
 कौमोदकी गदाऽथास्य मत्स्याद्यैः समनामकाः ।
 अवतारा नृसिंहस्तु हिरण्यकशिपुद्विषन् ॥ १८ ॥
 उपेन्द्र इन्द्रावरजो वामनो बलिकण्टकः ।
 आदित्यो द्विपदस्तादर्यस्त्रिविक्रम उरुक्रमः ॥ १९ ॥
 विष्णुश्च जामदग्न्यस्तु रामो दाशरथिः पुनः ।
 राघवो जानकीकान्तो रामो रावणसूदनः ॥ २० ॥
 दूषणारिः खरारिश्च कुम्भकर्णारिरेव च ।
 राक्षसघ्नः सुखकरः कौसल्यानन्दवर्धनः ॥ २१ ॥
 पार्थिवेन्द्रो धनुष्पाणिर्बलिर्दशरथात्मजः ।
 रामः संकर्षणः पौरो बलदेवो हलायुधः ॥ २२ ॥
 बलभद्रः प्रलम्वारिः कालिन्दीकर्षणो हली ।
 तालाङ्को रेवतीकान्तः सात्त्वतो मुसली बली ॥ २३ ॥
 भद्राङ्गो भद्रवदनः कामपालः सितासितः ।
 बलो नीलाम्बरश्चाथ तस्य संवर्तकं हलम् ॥ २४ ॥
 सौनन्दमस्य मुसलं कृष्णो दामोदरोऽद्रिधृत् ।
 दाशार्हो नरकारातिर्वनमाली गदाप्रजः ॥ २५ ॥
 शैनिः कंसरिपुः शौरिः सारथिस्तस्य दारुकः ।
 वसुदेवोऽस्य जनको दुन्दुरानकदुन्दुभिः ॥ २६ ॥
 प्रद्युम्नो मन्मथः कामो मारो मनसिजः स्मरः ।
 कन्दर्पो दर्पकोऽनङ्गो मीनाङ्को मकरध्वजः ॥ २७ ॥
 पुष्पधन्वा रतिपतिः शंबरारिरनन्यजः ।
 शूर्पकारिर्मधुसखः पञ्चेषुर्विषमायुधः ॥ २८ ॥
 बन्धुर्वामो जराभीरुर्हृच्छयो मधुसारथिः ।
 ब्रह्मसूरनिरुद्धः स्यादृश्यकेतुरुषापतिः ॥ २९ ॥
 अथान्ये ह्यवताराः स्युर्नरनारायणावृषो ।
 अश्वो हयशिराः शेषः कपिलो व्यास इत्यपि ॥ ३० ॥
 दत्तात्रेयश्च कल्की च बुद्धश्चेत्येवमादयः ।
 कपिलस्तु महाविष्णुर्व्यासः सत्यवतीसुतः ॥ ३१ ॥
 पाराशर्यो द्वैपायनः कृष्णद्वैपायनोऽपि च ।
 बुद्धस्तु श्रीघनः शास्ता बोधिसत्त्वो विनायकः ॥ ३२ ॥

समन्तभद्रः सर्वज्ञो मारजिल्लोकजिज्जिनः ।
 षडभिज्ञो दशबलो धर्मराजस्तथागतः ॥ ३३ ॥
 मुनीन्द्रः सुगतः शाक्यो मुनिरद्वयवाद्यपि ।
 शाक्यसिंहस्तु सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिर्गुरुः ॥ ३४ ॥
 गौतमश्चार्कबन्धुश्च जिनस्त्वर्हस्त्रिकालदृक् ।
 अष्टकर्मपरिभ्रष्टो वीतरागश्च केवली ॥ ३५ ॥
 लक्ष्मीः पद्मालया शक्तिर्मा क्षीरोदमुतेन्दिरा ।
 रमाधिजा भार्गवी च स्त्रीलिङ्गाश्चाम्बुजाह्वयाः ॥ ३६ ॥
 गरुडः काश्यपसुतो गरुत्मानुरगाशनः ।
 सुपर्णीतनयस्तादर्यो वैनतेयो महेन्द्रजित् ॥ ३७ ॥
 पन्नगारिर्विष्णुरथः सुपर्णो विहगाधिपः ।
 महेश्वरः पशुपतिः श्रीकण्ठः पांसुचन्दनः ॥ ३८ ॥
 शङ्करो गिरिशो रुद्रो गिरीशः शशिभूषणः ।
 महेश्वरश्चन्द्रमौलिः पिनाकी शशिशेखरः ॥ ३९ ॥
 कपर्दी धूर्जटिः शर्वः कपाली नीललोहितः ।
 ईश ईश्वर ईशानो भर्गो मृत्युञ्जयो मृडः ॥ ४० ॥
 व्योमकेशो महादेवः प्रमथाधिपतिः शिवः ।
 शूली दक्षाध्वरारातिः कामारिः परमेश्वरः ॥ ४१ ॥
 कृत्तिवासा अहिर्बुध्न्यो नीलप्रीवस्त्रिलोचनः ।
 गङ्गाधरो विरूपाक्षो वामदेवो वृषध्वजः ॥ ४२ ॥
 भूतेशः खण्डपरशुः स्थाणुरन्धकसूदनः ।
 भगनेत्रान्तको भीमस्त्रिपुरारिर्दगायुधः ॥ ४३ ॥
 कटाटङ्को जटाटीरो जटाभाटो महानटः ।
 भिण्डीकान्तो रेरिहाणः सर्वज्ञो नन्दिवर्धनः ॥ ४४ ॥
 स्थालो डिण्डीश उड्डीशः कण्ठेकालो महाव्रतः ।
 कृतानुरेता जोटिङ्गः कङ्कटीक उमापतिः ॥ ४५ ॥
 खट्वाङ्गी मन्दरमणिरुलन्दो वृषवाहनः ।
 उग्रः कटप्रदिग्वासा भ्राण्डः पाण्डोऽकुतश्चनः ॥ ४६ ॥
 बहुरूपोऽर्धमकुटो दशबाहुर्दशाव्ययः ।
 ज्ञानं वैराग्यमैश्वर्यं तपः सत्यं क्षमा धृतिः ॥ ४७ ॥
 स्रष्टृत्वमात्मसम्बन्धोऽप्यधिष्ठातृत्वमित्यपि ।
 अव्ययानि दशैतानि शम्भोरव्ययमस्त्रियाम् ॥ ४८ ॥
 वामा ज्येष्ठा शिवा रौद्री चित्तोन्मादकरी सुखा ।
 काली कलेवरा भूतदमनी चेशशक्तयः ॥ ४९ ॥

कपर्दोऽस्य जटाजूटः खट्वाङ्गोऽस्य सुखङ्घ्रुणः ।
 पिनाकोऽजगवं युग्यमजगावमजीगवम् ॥ ५० ॥
 प्रमथाः स्युः पारिषदा नन्दी स्यान्नन्दिकेश्वरः ।
 अथ कूश्माण्डकः केलिकिलो गणपतिप्रियः ॥ ५१ ॥
 भृङ्गरीटः पुनर्भृङ्गी चर्मी भृङ्गिरिटिः शला ।
 वृषाणो लूनदोर्बाणो भेलुकस्तु कृतालकः ॥ ५२ ॥
 वीरभद्रस्तु देवाजो विघ्नेशस्तु विनायकः ।
 लम्बोदरो हस्तिराज एकदन्तो गजाननः ॥ ५३ ॥
 द्वैमातुरः परशुभृदाखुयानो गणाधिपः ।
 कुमारः शरजः स्कन्दस्तारकारिरुमासुतः ॥ ५४ ॥
 महासेनो महातेजाः शक्तिपाणिर्गुहोऽग्निभूः ।
 वैजयन्तः सिद्धसेनः सेनानीः शिखिब्राह्मणः ॥ ५५ ॥
 स्वामी गङ्गायगौरेयब्रह्मचारिमहौजसः ।
 पाण्मातुरः कार्तिकेयो ब्रह्मगर्भः षडाननः ॥ ५६ ॥
 सुब्रह्मण्यो नीलदंष्ट्रः क्रौञ्चारिः कुक्कुटध्वजः ।
 अस्य शाखो विशाखश्च नैगमेषश्च पृष्ठजाः ॥ ५७ ॥
 उमा मेनात्मजा रौद्री रुद्राणी सर्वमङ्गला ।
 आर्याऽद्रिजा महादेवी शर्वाणी पार्वती शिवा ॥ ५८ ॥
 भ्रामरी रेवती षष्ठी गौतमी बाभ्रवी सती ।
 अपर्णाऽपरुजा जारी शण्डिली वारुणी हिमा ॥ ५९ ॥
 बर्हिध्वजा शतमुखी योगिनी परमेष्ठिनी ।
 सुनन्दा नन्दिनी नन्दा नन्दयन्ती कपालिनी ॥ ६० ॥
 कालरात्री महारात्री रक्तदन्त्येकपाटला ।
 एकपर्णा भद्रकाली महाकाली करालिका ॥ ६१ ॥
 दुर्गा कात्यायनी चण्डी कैटभी सिंहवाहना ।
 यमेन्द्रकृष्णमैनाकरामाणां भगिनी स्वसा ॥ ६२ ॥
 विन्ध्यमन्दरकान्तारमलयेभ्यश्च वासिनी ।
 चर्ममुण्डा तु चामुण्डा चर्चा मार्जारकर्णिका ॥ ६३ ॥
 कर्णमोटी महाचण्डी महागन्धा कपालिनी ।
 ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री वाराही नारसिंहयपि ॥ ६४ ॥
 कौमारी वैष्णवी चेति ता एताः सप्त मातारः । ६४इ

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

स्वर्गकाण्डे आदिदेवाध्यायः ॥ १ ॥

लोकपालाध्यायः ॥ २ ॥

इन्द्रो दुश्श्रवनो वज्री वृत्रारिर्वासवो वृषा ।
 वृद्धश्रवाः शुनासीरः सहस्राक्षो दिवस्पतिः ॥ १ ॥
 वास्तोष्पतिर्वलरिपुः पुरुहूतः पुरन्दरः ।
 मघवान् पूर्वदिक्पालः प्रतनाषाद् सुराधिपः ॥ २ ॥
 संक्रन्दनो हरिहयो गोत्रभृत् पाकशासनः ।
 पुलोमशत्रुर्हरिवानूर्ध्वधन्वा शचीपतिः ॥ ३ ॥
 कारुर्जम्भरिपुर्जिष्णुर्मरुत्वान् हरिवाहनः ।
 स्वाराट्पुष्पाः सुत्रामा विडौजाः सितकुञ्जरः ॥ ४ ॥
 भूरिश्रवाश्चित्ररथः सुनासीरो युधिष्ठिरः ।
 परमन्युर्वज्रपाणिः शतमन्युर्विभीषणः ॥ ५ ॥
 आखण्डल उग्रधन्वा मेषाण्डोऽप्सरसां पतिः ।
 खदिरो माहिरो दाल्मिः शयीचिर्वियुनो जयः ॥ ६ ॥
 गौरावस्कन्दिवन्दीकौ वारणो देवदुन्दुभिः ।
 महेन्द्रो बाहुदन्तेयस्तुराषाड् वज्रदक्षिणः ॥ ७ ॥
 वृषण्वसु धनाद्यस्य पुराजः शान्तिकर्मकृत् ।
 सुतो जयो जयन्तश्च जयदत्तोऽप्यथो सुता ॥ ८ ॥
 जयन्ती देवनन्दी तु द्वाःस्थः सूतस्तु मातलिः ।
 प्रासादो वैजयन्तोऽस्य वैजयन्तो ध्वजोऽपि च ॥ ९ ॥
 अमरावत्यस्य पुरी स्यात् सुदर्शनमित्यपि ।
 अश्वोऽस्य वृषणश्च स्यादारामस्त्वस्य नन्दनम् ॥ १० ॥
 क्रीडासरो नन्दिसरः क्रीडाभूस्त्वस्य नन्दिका ।
 पुलोमजा शचीन्द्राणी पौलोमी जयवाहिनी ॥ ११ ॥
 ऐरावतो राथन्तरिरभ्रनागोऽभ्रमुप्रियः ।
 ऐरावणश्चतुर्दंष्ट्रः सूर्यभ्रातारिमर्दनः ॥ १२ ॥
 अस्त्रियौ वज्रकुलिशौ भिदुरं शतधारकम् ।
 व्याधामः पुंसि दम्भोलिः शतकोटिः पविर्भिदुः ॥ १३ ॥
 वह्निर्वैश्वानरो घासिः कृष्णवर्त्मा समन्तभुक् ।
 जातवेदा बृहद्भुर्बुधोऽतिहोत्रस्तनूनपात् ॥ १४ ॥
 दहनो ज्वलनः शुष्मा रोहिताश्च उषर्बुधः ।
 शोचिष्केशस्त्रिधामाऽग्निरुदधिः पावकोऽनलः ॥ १५ ॥
 हिरण्यरेताः सप्तार्चिर्वसुरेता हुताशनः ।
 कृपीटयोनिरर्चिष्मान् धूमकेतुर्दुरासदः ॥ १६ ॥

मन्त्रजिह्वः सप्तजिह्वः सुगिज्जो हव्यवाहनः ।
 आश्रयाशो वातसखः कृशानुर्वीतसारथिः ॥ १७ ॥
 वभिर्भुजिः पचिः साचिश्चिरिर्वञ्चतिरञ्चतिः ।
 जागृविः सहुरिः सद्विर्दमुना हवनो हवः ॥ १८ ॥
 सृदाङ्गुर्भरथः पीथो जुहुराणेषिराशिराः ।
 तेजोऽपित्तमपांपित्तं स्वाहाऽग्नायी च तत्प्रिया ॥ १९ ॥
 स्कन्धामिः स्थूलकाष्ठाभिर्मुर्मुरस्तु तुषानलः ।
 छागणस्तु करीषामिर्मेघवह्निरिरंमदः ॥ २० ॥
 कुन्दयमिर्हृच्छयोऽथौर्वे द्वौ संवर्तकवाडवौ ।
 सहरक्षा दवो दुध्रस्तार्णे क्षामतरत्समौ ॥ २१ ॥
 कव्यात्तु प्रेतदाहामिर्देवाग्निर्हव्यवाहनः ।
 सहरक्षास्तु दैत्यानां पितृणां कव्यवाहनः ॥ २२ ॥
 अपोनपात्तु यज्ञामिः ऋत्वमिः स्यादपान्नपात् ।
 शुक्रान्वाहार्यपचनावध्वरे दक्षिणानिले ॥ २३ ॥
 गार्हपत्यो गृहपतिः पवमानश्च पश्चिमे ।
 शंस्य आहवनीयश्च पूर्वोऽग्निर्हव्यवाहनः ॥ २४ ॥
 सभ्यावसथ्यौ तत्पूर्वावायुः स्यात् पाशुबन्धिकः ।
 पृथिकृद्वर्त्महोमेषु पदहोमेध्वनीकवान् ॥ २५ ॥
 आधानादिष्वहस्तानः सुरभिर्यूपकर्मणि ।
 ब्रह्मौदनाभिर्भरतो यविष्ठः सवनाहुतौ ॥ २६ ॥
 महिमांस्तु विवाहमिर्वैश्वदेवाम्निरद्भुतः ।
 व्रतान्ते बहुरन्नादः सुलभः पाकयज्ञिकः ॥ २७ ॥
 सव्यस्तु मृतके वह्निरपसव्यस्तु सूतके ।
 धूमस्तरिर्मेघवाही धूपोऽसौ गन्धवासितः ॥ २८ ॥
 शिखा जिह्वार्चिरपुमान् कीला ज्वाला च नृस्त्रियोः ।
 भलका तु महाज्वाला प्रवर्ग्यो नीलकोऽपि च ॥ २९ ॥
 सप्त जिह्वा पुनः काली कराली विष्फुलिङ्गिनी ।
 धूम्रवर्णा विश्वरुचिलोहिता च मनोजवा ॥ ३० ॥
 त्रयी स्फुलिङ्गोऽपुञ्जो ना खट्वाङ्गश्चाथ संस्वरः ।
 सन्तापः स्यात्प्रकाशस्तु द्योत आलोक आतपः ॥ ३१ ॥
 दीप्ताग्रं काष्ठमुल्का स्यात् क्रमकोऽलातमुल्मुकम् ।
 अङ्गारोऽस्त्रा प्रशान्तार्चिरिङ्गालः कारिकाभिर्विद् ॥ ३२ ॥
 भसितं भस्म भूतिः स्यादग्न्युत्पात उपाहितः ।

यमः पितृपतिर्दण्डधरो महिषवाहनः ॥ ३३ ॥
 यमराड् यमुनाभ्राता मन्दे वैवस्वतोऽन्तकः ।
 सावित्रेयः श्राद्धदेवः समवर्ती परेतराट् ॥ ३४ ॥
 कालः कृतान्तः शमनः कीनाशो दक्षिणाधिपः ।
 धर्मराजः पुराणान्तः कालकुन्थो विशीर्णपात् ॥ ३५ ॥
 पत्नी यमस्य धूमोर्णा चित्रगुप्तस्तु लेखकः ।
 पञ्जिका त्वग्रसन्धानी कालीची तु विचारभूः ॥ ३६ ॥
 नरको नारकोऽप्येष निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् ।
 अवीच्यन्ता रौरवाद्याः प्रायशो नरका नरि ॥ ३७ ॥
 नारका जन्तवः प्रेता यात्या अप्यातिवाहिकाः ।
 प्रेताः परेता वेताला गन्धर्वाः सत्त्वका ग्रहाः ॥ ३८ ॥
 यातना कारणा दुःखं त्वामनस्यं प्रसूतिजम् ।
 स्यात् कष्टं कृच्छ्रमाभीलं त्रिष्वेषां तद्वदर्थकाः ॥ ३९ ॥
 अथ रक्षांसि यातूनि राक्षसा अललोहिताः ।
 रात्रिञ्चरा रात्रिचराः क्रव्यात्क्रव्यादनैर्ऋताः ॥ ४० ॥
 कैकसेया यातुधानाः पुरुषादाः प्रवाहिकाः ।
 अनुषा विधुरा रक्तग्रहाः शङ्ख आशराः ॥ ४१ ॥
 अलक्ष्मीर्निर्ऋतिर्व्येष्टा रावणस्तु हरानतः ।
 दशास्यो विंशतिभुजश्चतुष्पान्मानमन्दिरः ॥ ४२ ॥
 लङ्केश्वरो यातुपतिः सन्नाहोऽस्य विचोलकः ।
 चन्द्रहासस्तु खड्गोऽस्य क्रीडाभूस्त्वमरावली ॥ ४३ ॥
 अशोकवनिकोद्यानं त्रिशिराः समनीपदः ।
 इन्द्रजिन्मेघनादः स्यात् ग्रहस्तः स्यादलम्बुसः ॥ ४४ ॥
 वरुणः शीतलो वामो दुन्दुभिः संवृतोऽपतिः ।
 अम्बुवासोऽम्बुकान्तारः पाशी मकरवाहनः ॥ ४५ ॥
 प्रचेता यादसान्नाथः प्रत्यगाशापतिस्तथा ।
 जलभूषण उद्दामो गौरी तु वरुणप्रिया ॥ ४६ ॥
 वातो वायुर्जगत्प्राणः शुषिलः श्वसनोऽनिलः ।
 गन्धवाहो गन्धवहो मातरिश्वा समीरणः ॥ ४७ ॥
 युजिनो लघुगो वातिर्ध्वजग्रहरणो जगत् ।
 दैत्यदेवो बहः प्राणो नभः प्राणोऽङ्कतिः सरः ॥ ४८ ॥
 आशुगः पवनः स्पर्शः पवमानः प्रभञ्जनः ।
 मरुद्भूलिध्वजो मर्कः समीरोऽग्निसखश्चलः ॥ ४९ ॥

शुष्मिर्महाबलो वेगी नभोजातः सदागतिः ।
 नभस्वान् मारुतः शीघ्रः पृषदश्वः प्रकम्पनः ॥ ५० ॥
 सङ्क्रावातः सवृष्टिः स्याद्वात्या वातस्तु मण्डली ।
 मृदुवातश्चिच्चिलिको लेढा लिट् सौरतोऽपि च ॥ ५१ ॥
 मध्यमो हारितो नेरी यौनिकः स्वेदचूषकः ।
 खरः स्वरिङ्गणोऽथासौ ग्रीष्मोभृन्भानिलोऽनिलः ॥ ५२ ॥
 पयोदान्तस्तु पवनो वसन्तेऽमलपालिकः ।
 गरवायुर्निदाघेऽल्पः शिशिरे सपुटानिलः ॥ ५३ ॥
 जारवायुस्तु हेमन्ते शारदः शारणः शरः ।
 गोगन्धनः पुरोवात उत्तरस्तु हिमानिलः ॥ ५४ ॥
 रंहस्तरः ह्री प्रसभो जवो वेगः स्यदो रयः ।
 कुवेरो यक्षराड् यक्षः कुतनुः किन्नरेश्वरः ॥ ५५ ॥
 मनुष्यधर्मैलविलः पौलस्त्यो धनदो धनी ।
 कैलासनाथस्त्रिशिरा धनाध्यक्षो वटाश्रयः ॥ ५६ ॥
 निधिपालो वैश्रवणो वित्तेशो नरवाहनः ।
 राजराजः पराविद्धः किशाली गुह्यकेश्वरः ॥ ५७ ॥
 एकपिङ्गो रुद्रसखः कुडः पुण्यजनेश्वरः ।
 इच्छावसू रत्नगर्भो रत्नहस्तः सितोदरः ॥ ५८ ॥
 अस्योद्यानं चैत्ररथं पुत्रस्तु नलकूबरः ।
 पुरी कैलाससारास्य विमानं पुष्पकोऽस्त्रियाम् ॥ ५९ ॥
 निधानं गूढकोशो ना निधिः शेवधिरस्त्रियाम् ।
 भेदाः पद्मो महापद्मः शङ्खो मकरकच्छपौ ॥ ६० ॥
 मुकुन्दकुन्दनीलाश्च चर्चश्चेति निधेर्नव ।

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

स्वर्गकाण्डे लोकपालाध्यायः ॥ २ ॥

यक्षाद्यध्यायः ॥ ३ ॥

स्पर्शानन्दास्त्वप्सरसः सुमदाश्च रतेमदाः ।
 स्वर्वेश्याश्चाथ स्वापेयो यक्षोऽथ सुरगायनः ॥ १ ॥
 गन्धर्वो गातुगान्धर्वौ सिद्धाः स्युः सनकादयः ।
 भूतापुत्रास्तु भूतानि भूताश्च शिवपार्श्वगाः ॥ २ ॥
 किन्नराः स्युः किम्पुरुषा मयवोऽश्वमुखाश्च ते ।
 गुह्यका माणिचरयस्तथा देवजनाः सुताः ॥ ३ ॥
 विद्याधरास्तु द्युचराः खेचराः सत्ययौवनाः ।
 पिशाचः स्यात्कापिशेयोऽनृजुर्दर्वश्च पिण्डकः ॥ ४ ॥
 देवयोनय एते स्युः स्वर्वेश्याद्याः सरक्षसः ।
 नासत्यदक्षौ नासत्यावश्विनौ वरवाहनौ ॥ ५ ॥
 आश्विनेयौ यज्ञवह्नौ देववैद्यौ वरान्तकौ ।
 नासिक्यावाश्विनौ दक्षौ विश्वकर्मा द्युवर्धकिः ॥ ६ ॥
 त्वष्टा नाम स देवानां मयो नाम सुरद्विषाम् ।
 सनत्कुमारो वैधात्रो नारदः कलहप्रियः ॥ ७ ॥
 रुद्रा वसव आदित्या विश्वे साध्या मरुद्गणाः ।
 तुषिता भास्वराद्याश्च बहवो देवतागणाः ॥ ८ ॥
 मन्वन्तरेषु भिद्यन्ते देवाः सप्तर्षिभिः सह ।
 असुरा दानवा दैत्या दैतेया देवशत्रवः ॥ ९ ॥
 पूर्वदेवाः शुक्रशिष्याः रसागेहा हरिद्विषः ।
 ईदृङ्चेत्यादिभिर्मन्त्रैः सदा प्रोक्ता मरुद्गणाः ॥ १० ॥
 स्वानभ्राडिति गन्धर्वगणा एकादशोदिताः ।
 सुधर्मा स्याद्देवसभा दिव्य उच्चैःश्रवा हयः ॥ ११ ॥
 मेरुः सुमेरुः स्वर्णाद्रिर्मणिसानुः सुरालयः ।
 महामेरुर्देवगिरिर्गोधुक् चाथापरेऽद्रयः ॥ १२ ॥
 तालाङ्का मेरुगण्डाश्च ये मेरुं परितः स्थिताः ।
 मन्दाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्नदी सुरदीर्घिका ॥ १३ ॥
 पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः ।
 सन्तानः कल्पवृक्षश्च हरिचन्दनमस्त्रियाम् ॥ १४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

स्वर्गकाण्डे यक्षाद्यध्यायः ॥ ३ ॥

प्रथमः स्वर्गकाण्डः समाप्तः ॥ १ ॥

२. अथान्तरिक्षकाण्डः

ज्योतिरध्यायः ॥ १ ॥

अन्तरिक्षं नभो व्योम गगनं सुरवर्त्म खम् ।
वियद्विष्णुपदं दिव्यं वायुवर्त्म विहायसम् ॥ १ ॥
तारावर्त्माम्बरं मेघवर्त्म चाकाशमस्त्रियाम् ।
दिग्दिशाशा ककुब्दीर्णी हरिदेववधूः सरिः ॥ २ ॥
अव्ययीभावोऽपदिशमवान्तरदिशा विदिक् ।
क्रमात् पूर्वादिदिङ्नाथा इन्द्राद्याः शङ्कराष्टमाः ॥ ३ ॥
लोकपालास्ततो ग्राह्या दिक् चैन्द्रीत्यादयो भिदाः ।
आग्नेयी तु चराशा स्यान्नैर्ऋती तु दिगन्धकी ॥ ४ ॥
मारुत्यनन्ता शार्वी तु शालाक्षाप्यपराजिता ।
कौबेर्यादिषु तूदीची प्राच्यवाची प्रतीच्यपि ॥ ५ ॥
ब्राह्मी तूर्ध्वाऽथ नागी स्यान्नारकी चाधरा ककुप् ।
दिङ्मण्डलं चक्रवालं दिगन्तः करिशोलुकम् ॥ ६ ॥
दिङ्मध्ये करिणीचारं दिग्युग्मे मण्डपीठिका ।
अभ्यन्तरं त्वन्तरालमवकाशोऽन्तरं पदम् ॥ ७ ॥
ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ।
पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ॥ ८ ॥
करिण्योऽभ्रमुः कपिला पिङ्गलाऽनुपमा क्रमात् ।
ताम्रपर्णी शुभदती चाङ्गना चाञ्जनावती ॥ ९ ॥
अर्कः सूर्योऽर्यमा सूरौ द्वादशात्मा दिवाकरः ।
मार्तण्डः सविता भानुर्भातुः पूषा दिनप्रणीः ॥ १० ॥
सप्तसप्तिः पद्मबन्धुस्तपनोऽनूरुसारथिः ।
द्युमणिर्हरिदश्वोऽद्रिरशीतांशुर्विकर्तनः ॥ ११ ॥
द्युमान् कुमुद्वतीशत्रुस्त्विषांपतिरहर्पतिः ।
भास्करोऽहस्करो भास्वान् विवस्वाञ्जलतस्करः ॥ १२ ॥
रश्मिमाली दृगध्यक्षः कर्मसाक्षी त्रयीवतुः ।
तर्पुर्मार्तण्डमुण्डीरपाथिपेरुगभस्तयः ॥ १३ ॥
पासिर्दृशानो रात्रिद्विद् प्रभाकरविभाकरौ ।
खाध्वनीनः खतिलकः खगः खाङ्कस्तमोरिपुः ॥ १४ ॥
चण्डांशुरंशुमानंशुः सहस्रांशुः सदागतिः ।
आदित्यो मिहिरो मित्रो रविः प्रत्यूषडम्बरः ॥ १५ ॥

वृष्टिपादमयूखांशुसान्ध्योद्योगगभस्तयः ।
 किरणोस्रौ च रोचिः क्ली रश्मिरक्ली मरीचिवत् ॥ १६ ॥
 तासां शतानि चत्वारि रश्मीनां वृष्टिसर्जने ।
 शतत्रयं हिमोत्सर्गे तावद्धर्मस्य सर्जने ॥ १७ ॥
 आनन्दनाश्च मेध्याश्च नूतना पूतना इति ।
 शतं शतं वृष्टिवहास्ताः सर्वा अमृताः स्त्रियः ॥ १८ ॥
 ता एव भन्दना मन्दाः कातनाः कोतनाः क्रमात् ।
 अथ मेध्यश्च पोष्यश्च ह्लादिन्यश्च शतं शतम् ॥ १९ ॥
 हिमोत्सर्गाय ताः सर्वाः सर्वाश्चन्द्राश्च नामतः ।
 ता एव रेश्यो वाश्यश्च मेध्याश्चेति यथाक्रमम् ॥ २० ॥
 अथ रुद्रा विश्वभृतः ककुदाश्च शतं शतम् ।
 घर्माय शुक्रास्ताः सर्वा माध्यः शक्य इत्यपि ॥ २१ ॥
 आलोकस्तु प्रभा भा रुचिदीधितिदीपयः ।
 अथातपो रौद्रमिद्धं मृगतृष्णा मरीचिका ॥ २२ ॥
 संज्ञास्य रेणुर्द्युमयी त्रसरेणुः सुवर्चला ।
 त्वाष्ट्री प्रभाऽप्यथच्छाया विक्षुभा भूमिमय्यपि ॥ २३ ॥
 हिमद्युतिः शशी चन्द्रश्चन्द्रमाः शशभृद्विधुः ।
 परिष्मा रोहिणीकान्तो निशानाथो निशाकरः ॥ २४ ॥
 पुनर्युवा दशाश्वो ग्लौरिन्दुः कुमुदबान्धवः ।
 ओषधीशो निशाकेतुर्मृगलक्ष्माऽत्रिनेत्रजः ॥ २५ ॥
 हृद्यांशुरंशुरब्जारिरमृतांशुः कलानिधिः ।
 यजतस्तपसः क्लेदुः स्यन्दः स्पन्दो यथासुखः ॥ २६ ॥
 प्राचीनतिलको जर्णो व्याप्वः सृप्रस्तृपिस्तृपत् ।
 उडुराजः शशाङ्कश्च समुद्रनवनीतकम् ॥ २७ ॥
 चन्द्रपादास्तु संवाला ज्योत्स्ना च शशिनः प्रभा ।
 चन्द्रिका चन्द्रिमा चान्द्री कौमुदी चन्द्रगोलिका ॥ २८ ॥
 अङ्गश्चिह्नमभिज्ञानं लाञ्छनं लक्ष्म लक्षणम् ।
 पुष्पवन्तौ सहैवोक्त्यां सूर्याचन्द्रमसावुभौ ॥ २९ ॥
 परिग्रहोपरक्तौ तु प्रस्तार्केन्द्रोरथ ग्रहे ।
 उपप्लवोपरगौ द्वौ स तु सन्निहितो रवेः ॥ ३० ॥
 गजच्छायाऽप्यथार्केन्द्रोः परिधिः परिवेषकः ।
 कुजारमङ्गलाङ्गारा लोहिताङ्गो धरासुतः ॥ ३१ ॥
 कर्षको रुधिरो भौमः प्रव्यालोऽप्यथ हर्षुलः ।

बुधः श्यामाङ्ग एकाङ्गः सौम्यश्चान्द्रमसायनि ॥ ३२ ॥
 वाचस्पतिरनिर्वापः सुराचार्यो बृहस्पतिः ।
 गीष्पत्याङ्गिरसौ चक्षाश्चाश्वित्रशिखण्डिजः ॥ ३३ ॥
 प्रचक्षा दीदिविश्वाथ शुक्रो दूतो दिवाचरः ।
 तिर्यग्गाम्यसुराचार्य उशाना भार्गवः कविः ॥ ३४ ॥
 मन्दः खोडोऽसितः क्रोडश्छायापुत्रः शनैश्चरः ।
 सौरिः स्थिरगतिः कोणो दीर्णाङ्गो युगवर्तकः ॥ ३५ ॥
 श्रुतकर्मा नीलवासा वक्रः कोलः स्थिरः शनिः ।
 स्वर्भानुर्ग्रहकल्लोलः सैहिकेयो विधुन्तुदः ॥ ३६ ॥
 राहुरभ्रपिशाचश्च केतवो विकचाः कृशाः ।
 धूमजाः शिखिनो ब्रह्मपुत्राः श्रीमन्त आहिकाः ॥ ३७ ॥
 तारा भं रात्रिजं बिष्णुं सन्नक्षत्रमुडुर्न ना ।
 मृगशीर्षं मृगशिरो मार्गायण्याग्रहायणी ॥ ३८ ॥
 इन्वकास्तच्छिरोदेशे तारका इल्वला मताः ।
 योग्यः सिध्यश्च पुष्यः स्याद्यामकौ तु पुनर्वसू ॥ ३९ ॥
 निष्ठया स्वाती विशाखे तु रावे आर्द्रा तु कालिनी ।
 श्रवणे श्रोणा मूले तु मूलवर्हण्यथ श्रविष्ठासु ॥ ४० ॥
 मन्दागाश्च धनिष्ठाश्च भरण्योऽपभरणीषु योग्याश्च ।
 ज्येष्ठा ज्येष्ठपत्नी स्यात्प्रोष्ठपदाः पुंस्त्रियोः सभाद्रपदाः ॥ ४१ ॥
 अश्विन्यौ वालिन्यावश्चयुजावाश्वकिन्यौ च ।
 यथाप्रयोगमेतेषु वचनं स्याद्व्यवस्थितम् ॥ ४२ ॥
 अषाढाकृत्तिकाश्लेषामघा भूमिनि स्त्रियश्च ताः ।
 फल्गुन्यौ तु द्वित्वभूम्नोर्हस्तः शतभिषक् च सा ॥ ४३ ॥
 अनूराधास्तु पुंभूमिनि शेषं सर्ववचः स्त्रियाम् ।
 वीथ्यो नवैव नक्षत्रैरश्विन्याद्यैस्त्रिभिस्त्रिभिः ॥ ४४ ॥
 त्रिर्वाथिका त्रयो मार्गा दक्षिणोत्तरमध्यमाः ।
 उत्तरो देवयानः स्याद्योगियानस्तु मध्यमः ॥ ४५ ॥
 दक्षिणः पितृयाणः स्यात्तत्राद्या नागवीथिका ।
 रोहिण्याद्याजवीथी स्यात्तत्तत्स्त्वैरावती परा ॥ ४६ ॥
 मार्गोऽयं देवयानाख्यो मघाद्या पुनरार्षभी ।
 हस्तादिका तु गोवीथी ततो जारद्वी परा ॥ ४७ ॥
 मार्गोऽयं योगियानाख्यो मूलाद्या गजवीथिका ।
 श्रोणाद्या मृगवीथी स्यात्ततो वैश्वानरी परा ॥ ४८ ॥

मार्गोऽयं पितृयाणाख्यः स्थानान्येषां पथां दिवि ।
 ऐरावतं जारद्वयं वैश्वानरमिति क्रमात् ॥ ४६ ॥
 सप्तर्षयस्तु खे तारारूपाश्चित्रशिखण्डिनः ।
 ज्योतिषामयनं ज्योतिःशास्त्रं राशिर्ग्रहाह्वयः ॥ ४७ ॥
 पूर्वपश्चिमराश्यधौ सन्दालवलयौ क्रमात् ।
 संज्ञा द्रेक्काणहोराद्याः शास्त्रे ज्ञेयाः सलिङ्गकाः ॥ ४८ ॥
 कालोऽनेहा च दिष्टश्च स सूक्ष्मः स्त्री तुटिस्तुटिः ।
 द्वे तुटी लघक्षरकस्तौ द्वावक्षरपातकः ॥ ४९ ॥
 तौ निमेषो लिप्तिका तु तौ द्वौ काष्ठा तु ता नव ।
 ते द्वे लघो लघाः पञ्च कला दश च तद्द्वयम् ॥ ५० ॥
 लेशो लेशाः पञ्चदश क्षणो नाडी तु षट् क्षणाः ।
 तौ तु नाडी मुहूर्तोऽस्त्री घटिका धारिकेति च ॥ ५१ ॥
 त्रिंशता तैरहोरात्रः पक्षाङ्गोऽप्यथ वासरः ।
 दिवसं चास्त्रियौ भानुर्घृणिर्घस्रो रविध्वजः ॥ ५२ ॥
 पद्मबन्धुः कोकहितो द्युश्च क्ली स्यादहर्निशम् ।
 रजनी यामिनी याम्या त्रियामा क्षणदा क्षपा ॥ ५३ ॥
 तमी तमस्विनी रात्रिर्निशा धारिर्निभावरी ।
 तमिस्रा क्षणिनी क्षाणी शर्वरी वासतेऽयुषा ॥ ५४ ॥
 निशीथिनी निशीथ्या च ज्यौत्स्नी ज्यौतिष्मती निशा ।
 पूर्णेन्दुस्तु दिनम्मन्या गर्भितं तु निशाद्वयम् ॥ ५५ ॥
 बह्वयस्तु गणरात्रं च चिररात्रं च रात्रयः ।
 पक्षाभ्यामिव याऽहोभ्यां युक्ता सा पक्षिणी निशा ॥ ५६ ॥
 तामसी सात्त्विकी चित्रा चित्रोपमा च राजसी ।
 खण्डिता चेति शर्वयः प्रावृडाद्यृतुषु क्रमात् ॥ ५७ ॥
 या सप्तसप्ततितमे वर्षे मासि च सप्तमे ।
 सप्तमी प्राणिनां घोरा रात्रिर्भैरवस्थी हि सा ॥ ५८ ॥
 ध्वान्तस्तिमिरमासक्तं तामिस्रं शार्वरं तमः ।
 आततिश्चान्धकारोऽस्त्री तत्तु सन्तमसं यदि ॥ ५९ ॥
 परितोऽथावतमसं लघ्वन्धतमसं महत् ।
 छदो व्यवधिरन्तर्धिर्वरणं चापवारणम् ॥ ६० ॥
 अपिधानतिरोधानपिधानाच्छादनानि च ।
 दिनादौ प्राहपूर्वाह्नौ ततः संगतसंगवौ ॥ ६१ ॥
 मध्यन्दिनं तु मध्याह्न उच्छ्रस्तु विकालकः ।

सायाहोऽप्यपराहोऽस्त्री प्रदोषो मैथिलः समौ ॥ ६५ ॥
 सान्बाधिकः परस्तस्मान्निशीथस्त्वर्धरात्रकः ।
 मध्यरात्रो महारात्र उच्चन्द्रोऽपररात्रकः ॥ ६६ ॥
 ब्राह्मोऽप्येते क्रमाद्यामा यामे प्रहरयातुकौ ।
 पुण्याहमहि पुण्योऽशस्त्रिसन्ध्यं तूपवैणवम् ॥ ६७ ॥
 विहानोऽस्त्री प्रविसरो गोसर्गप्रत्युषावुषः ।
 व्युष्टं विभातं प्रत्यूषं संयात्रिकमहर्मुखम् ॥ ६८ ॥
 काल्यं प्रभातं स्त्री वोषः सन्धा सन्ध्या पितृप्रसूः ।
 तिथिर्न षण् कर्मवाटी प्रतिपत्त्वेकपक्षतिः ॥ ६९ ॥
 पक्षतिश्चाथ पादूरो भूतेष्टा च चतुर्दशी ।
 निष्पक्षतिर्द्वितीया स्याद्दर्शोऽमावास्यमावसी ॥ ७० ॥
 अमावस्याऽप्यमावास्याऽप्यमामस्याऽप्यमामसी ।
 सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली नष्टचन्द्रकला कुहूः ॥ ७१ ॥
 पित्र्या तु पूर्णिमा चान्द्री चन्द्रमाता निरञ्जना ।
 पूर्णा तु पूर्णमासी च पौर्णमासी च पूर्णिका ॥ ७२ ॥
 चन्द्रे कलोनेऽनुमतिः सैव राका तु पूरिते ।
 पर्वणी पञ्चदश्यौ द्वे पक्षान्तौ नन्दिवर्धनौ ॥ ७३ ॥
 आग्रायणी शङ्कमूली पौर्णमास्याग्रहायणी ।
 पौषी तु महिषी माता माघी स्यादभिपूर्णिमा ॥ ७४ ॥
 फाल्गुनी दण्डपाता स्याच्चैत्री तु मदनध्वजा ।
 विश्वविस्ता तु वैशाखी ज्यैष्ठी तूपनिवेशिनी ॥ ७५ ॥
 आषाढी कृत्तिमाचारी श्रावणी तु द्विवेदिनी ।
 अथ प्रौष्ठपदी गाङ्गी स्यादाश्विन्यवराविला ॥ ७६ ॥
 वत्सरान्ता त्वरिश्रेणी धैनुकी चापि कार्तिकी ।
 मासाख्याकूर्चनक्षत्रयोगश्च गुरुणा यदा ॥ ७७ ॥
 महाग्रहायणीत्याद्यास्त एव तिथयः क्रमात् ।
 जयन्तीत्यादिकाः संज्ञाः पुराणे तिथिषूदिताः ॥ ७८ ॥
 पक्षोऽर्धमासः पूर्वस्तु शुक्लाख्योऽन्योऽसिताह्वयः ।
 क्षीयमाणतिथिप्रायः पक्षो रिक्तोऽपरस्त्वणिः ॥ ७९ ॥
 अणिकूर्चस्त्वमावास्या भूतेष्टा प्रतिपत्क्षयात् ।
 मासः सांवत्सरस्तान्तः संक्रान्त्या तु स तारणः ॥ ८० ॥
 ज्यौतिषः पुनराचारात् सावनो दिनसंख्यया ।
 आमहायणिको मार्गशीर्षो वर्षमुखः सहाः ॥ ८१ ॥

सहस्ये स्युस्तैषपौषसैधा माघे तु शानकः ।
 शातरश्च तपाश्चाथ द्वौ फाल्गुनिकफाल्गुनौ ॥ ८२ ॥
 तपस्ये फल्गुनालश्च चैत्रे मौहनिको मधुः ।
 चैत्रिको मन्मथसखो वैशाखो राघ उच्छुनः ॥ ८३ ॥
 ज्येष्ठामूलीय ईजानो ज्यैष्ठश्च खरकोमलः ।
 ते शुके स्युरथाषाढे शुचिः श्रावणिको नभाः ॥ ८४ ॥
 श्रावणश्च नभस्ये तु भाद्रो भाद्रपदोऽपि च ।
 अपि प्रौष्ठपदस्तस्मिन्नाश्विनाश्वयुजाविषे ॥ ८५ ॥
 कार्तिके स्यात् कार्तिकिको बाहुलः शैलकौमुदौ ।
 छीवेऽप्येषु सकारान्ता ऋतुर्बीजं सतेरकम् ॥ ८६ ॥
 हेमन्तः प्रसवो लोध्रः शैखस्तु शिशिरोऽस्त्रियाम् ।
 मधुर्वसन्तः सुरभिर्वलाङ्गः पुष्पसारणः ॥ ८७ ॥
 पुष्पकालोऽपीध्ममल्ली ग्रीष्मस्त्वाखोर ऊष्मकः ।
 शुचिरुष्णागमः पात्म उष्ण ऊष्माऽप्यथ क्षरी ॥ ८८ ॥
 प्रावृड् वर्षी भूमिर्न वर्षाः कालोक्षी च घनागमः ।
 घनात्ययः शरत् स्त्री स्याद्विसर्गो दक्षिणायनम् ॥ ८९ ॥
 उत्तरायणमाग्नेयं विषुवान् विषुवोऽस्त्रियौ ।
 संवत्सरोऽब्द आग्नेयो वत्सरः परिवत्सरः ॥ ९० ॥
 वत्सवायव्यसौर्याश्च वर्षोऽस्त्री स्त्री शरत् समाः ।
 कृतं सत्ययुगं सौम्यं त्रेताग्रेयी द्विसर्गिका ॥ ९१ ॥
 द्वापरे यज्ञियाग्नेयौ पुण्यो भर्भरकः कलिः ।
 त्रियुगं तु युगासारं द्वयायोगं तु युगद्वयम् ॥ ९२ ॥
 मन्वन्तरं त्वन्तरं स्यात् कल्पभागे चतुर्दशे ।
 चतुर्युगसहस्रं तु कल्पस्तद् ब्रह्माणो दिनम् ॥ ९३ ॥
 तद्रात्रौ तु महासुप्तिः समसुप्तिर्जगत्क्षयः ।
 महाप्रलयकल्पान्तौ युगान्तो भूतसम्प्लवः ॥ ९४ ॥
 प्रतिसर्गस्तु संहारः प्रलयः प्रतिसञ्चरः । ९४इ

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्या-

मन्तरिक्षकाण्डे ज्योतिरध्यायः ॥ १ ॥



मेघाध्यायः ॥ २ ॥

मेघोऽब्दो जलदो नभ्राट् तटित्वान् जलमुग्धनः ।
 धाराधरो वारिधरो धूमयोनिर्बलाहकः ॥ १ ॥
 तटित्पतिः पयोगर्भो नदनुर्मुदिरोऽम्बुभृत् ।
 कादम्बिनी मेघमाला काली कृष्णनवाम्बुदः ॥ २ ॥
 इन्द्रायुधं त्विन्द्रधनुस्तदीर्घमृजु रोहितम् ।
 ऐरावतं च विद्युत्तु चञ्चला चपला चला ॥ ३ ॥
 आकालिकी शतावर्ता जलदा जलपालिका ।
 क्षणांशुः क्षणिका चम्पा तटिहीना शतहृदा ॥ ४ ॥
 सौदामिन्यैरावती च तद्भेदेऽप्यन्तिमत्रयम् ।
 गर्जितं स्तनितं शीर्णं वज्रे ह्लादुनयः स्त्रियः ॥ ५ ॥
 वज्रपातस्तु निर्घातश्चण्डकोऽप्यशान्तिर्न पण् ।
 स्फूर्जथुर्वज्रनिष्पेषो न स्त्री वज्रोऽशान्तिर्न पण् ॥ ६ ॥
 वर्षोऽस्त्री वर्षणं वृष्टिः शीकरोऽस्यम्भसः कणः ।
 घनोपलस्तु करकः पुञ्जिका मचटीति च ॥ ७ ॥
 विप्रुट् स्त्री पृपतो बिन्दुः स्तोको द्रप्सः पृषन्न पुम् ।
 अनावृष्टिरवग्राहो मेघच्छन्नेऽहि दुर्दिनम् ॥ ८ ॥
 अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुहिनं हिमम् ।
 प्रालेयं मिहिका चाथ हिमानी हिमसंहतिः ॥ ९ ॥
 कुहिढोऽस्त्री कुहेलिः स्त्री कुहेडिर्धूमिका त्रयी ॥ १० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे मेघाध्यायः ॥ २ ॥

खगाध्यायः ॥ ३ ॥

पक्षी पत्ररथः पत्री पित्सन् पिपतिषन् पतन् ।
 पतङ्गः पतगः प्लावी पतङ्गपतत्रयः ॥ १ ॥
 विहङ्गमो विविहगो विहङ्गो नभसङ्गमः ।
 नीडोद्भवः शुको नीडी मल्लको विप्रुषो भसन् ॥ २ ॥
 वशाकुर्मदनः पीतुर्मशाको मदुरो द्विजः ।
 ऊकः शकुन्तः शकुनिः शकुन्तिः शकुनः खगः ॥ ३ ॥
 शलको विकिरस्तुण्डी नीडजो वातगाम्यपि ।
 पक्षिपोतस्तु चिल्लाकश्चम्पुकः पीलुकावटौ ॥ ४ ॥
 गृह्यारहेकाश्च गेहेषु संसक्ता मृगपक्षिणः ।
 हंसो मरालो नीलाक्षश्चक्रपक्षः सितच्छदः ॥ ५ ॥
 मानसौकाः परिप्लावी वक्राङ्गो जालपादकः ।
 सूतिः सङ्कुचितः शङ्कुर्ज्येष्ठः प्रास्थितधोरणौ ॥ ६ ॥
 क्षीराशश्चाप्यसौ राजहंसो रक्तैः पदाननैः ।
 मलिनैर्मल्लिकाक्षस्तैर्धार्तराष्ट्रः सितेतरैः ॥ ७ ॥
 कादम्बः कलहंसश्च हंस आधूसरच्छदः ।
 वरटा हंसकान्ता स्याद् वरालाव रलाऽपि च ॥ ८ ॥
 हंससाचिः क्षुद्रहंसः क्षयिस्तु कुवलायिकः ।
 चक्रवाको रथः कोकश्चक्रश्चक्राह्वयाह्वयः ॥ ९ ॥
 बको बकोटः कह्लोऽथ बलाका विसकण्ठिका ।
 बकजातिर्दर्वितुण्डो दर्विः क्रौञ्चश्च दर्विदा ॥ १० ॥
 मदुस्तु जलकाकः स्यादातिस्त्वाटिः शराटिका ।
 कारण्डवो महापक्षो जलरङ्गुस्तु वज्जुलः ॥ ११ ॥
 दात्यूहश्चाथ शकटात्रिले प्लवपरिप्लवौ ।
 अन्वर्थनामधेयौ द्वौ जालपादाम्बुकुटौ ॥ १२ ॥
 कुक्कुटो दीर्घवाग्दक्षः शिखी चूलिक आरणी ।
 कृकवाकुर्विवृत्ताक्षस्ताम्रचूडः शिखण्डिकः ॥ १३ ॥
 मयूरश्चटकः शौण्डः पादायुधनखायुधौ ।
 पारावतः कलरवो रक्तदृष्टिर्मदोत्कटः ॥ १४ ॥

काकस्तु द्विक एकाक्षश्चिरजीवी दिवाटनः ।
 आत्मघोषो महानेमिः कण्टको मौकलिः कुणः ॥ १५ ॥
 बलिपुष्ट उल्लकारिर्नाडिजङ्घोऽग्रहृष्टकः ।
 धूलिजङ्घोऽन्यवापश्च परभृद्वायसोऽन्यपुट् ॥ १६ ॥
 द्रोणः सकृत्प्रजोऽरिष्टो ध्वाङ्गः करट इत्यपि ।
 कृष्णकाको वृद्धकाक ऐन्द्रिः काकोल आसुरः ॥ १७ ॥
 धूङ्क्षणा तु श्वेतकाकोऽथ चटको वर आटकः ।
 बलिभुक् कलविङ्कश्च सेव्यस्तिलककण्टकः ॥ १८ ॥
 कलविङ्कस्त्वसौ पीतमुण्डः श्यामा तु पोतकी ।
 व्याघ्राटस्तु भरद्वाजः क्षिप्रः श्येन सुपर्णकः ॥ १९ ॥
 श्येनायां प्राचिका चित्रपद्मे शरुकपिञ्जलौ ।
 वाचाला मुखरा शारिः कोयष्टिः शिखरी समौ ॥ २० ॥
 कुलालकुक्कुटो गर्तकुक्कुटः पेचिका पुनः ।
 उल्लकचेटी हिक्का स्यात् कनकाक्षी च पिङ्गला ॥ २१ ॥
 उल्लकः पेचकः कोण्ठः काकारिर्हरिलोचनः ।
 नक्तञ्चरो घर्घरको निशादर्शी बहुस्वनः ॥ २२ ॥
 महापक्षी च कृष्णोऽसौ नक्तकः कृतमालकः ।
 कपोतो बालवत्सः स्यात् खञ्जरीटस्तु खञ्जनः ॥ २३ ॥
 मिथुनी चञ्चलश्चाथ सुप्तोऽस्मिन् कृष्णवक्षसि ।
 गोलन्तिका खञ्जरीटी शार्ङ्गः कीर्शा च पिप्पिका ॥ २४ ॥
 शुक्लिकेतुर्मेधावी श्रीमान् वाग्मी फलाशनः ।
 दरणो दण्डिकीरौ च लोपालोपायिके समे ॥ २५ ॥
 पात्रं तु कुण्डृणाची स्त्री कण्ठपालस्तु वञ्जुलः ।
 काकपुष्टस्त्वन्यभृतस्ताम्राक्षः कोकिलः पिकः ॥ २६ ॥
 वसन्तघोषो मधुवाक् कलकण्ठो वनप्रियः ।
 भृङ्गः कलिङ्गो धूम्राटो राजभृङ्गस्तु बुद्धिमान् ॥ २७ ॥
 मान्धीरी वाग्गुदस्तुल्यः स तु मान्धीलवो महान् ।
 आतापी चिल्लिकोऽथ स्यात् स्वस्तिकः पुष्टिवर्धनः ॥ २८ ॥
 किकिदीविः स्वर्णचूडश्चाषो राजविहङ्गमः ।
 मणिकण्ठश्चित्रवाजो विशोकः पूर्णकूटकः ॥ २९ ॥
 गृध्रस्तु पुरुषव्याघ्रो दूरदर्शी सुदर्शनः ।
 दाक्षाय्यश्चाप्यथ श्येनो वर्तुलाक्षः शशादनः ॥ ३० ॥
 कङ्कस्तु कर्कटस्कन्धः पर्कटः कमलच्छदः ।

दीर्घपादः प्रियापत्यो लोहपृष्ठश्च मल्लकः ॥ ३१ ॥
 पूर्णकूटे कुटपुरिः शकुन्ते भासकुक्कुटौ ।
 चातकस्त्वम्बुजोऽनम्बुः पौरेन्द्रः स्तोककः खगः ॥ ३२ ॥
 सारसो मैथुनी कामी गोनर्दः पुष्कराह्वयः ।
 दार्वीघाटे शतपत्रो लक्ष्मणा सारसप्रिया ॥ ३३ ॥
 क्रौञ्चस्तु कुङ्कुथोऽक्रोशः कुररो मत्स्यनाशनः ।
 टिट्ठिभस्तु कटुकाण उत्पादशयनोऽण्डुकः ॥ ३४ ॥
 तित्तिरिस्तु खरकाणो वरिष्ठश्चेश्वरप्रियः ।
 चकोरस्तु चलच्चक्षुरुत्पिबश्चन्द्रिकाप्रियः ॥ ३५ ॥
 कृकरे त्वर्ध्वकृकणौ दात्यूहे कालकण्ठकः ।
 मयूरो बर्हिणो बर्ही शुक्लापाङ्गः शिखावतः ॥ ३६ ॥
 वर्षामदः शिखी केकी शिखण्डी चित्रपत्रकः ।
 भुजङ्गारिः शापटिको मयूकश्चित्रपिङ्गलः ॥ ३७ ॥
 मार्जारकण्ठः केकालिर्विष्किरो नर्तनप्रियः ।
 मेघनादानुलासी च दार्वण्डश्चन्द्रकीति च ॥ ३८ ॥
 शब्दोऽस्य केका बर्हस्तु प्रचलाककलापकौ ।
 शिखण्डः पिच्छमप्यस्य मेचको बर्हचन्द्रकः ॥ ३९ ॥
 पक्षिभेदाः खिलिखिलश्रीकर्णीयकवर्तकाः ।
 लावकुक्कुटहारीतजीवञ्जीवादयोऽपि च ॥ ४० ॥
 हंसादयो जलचरा ग्राम्याः स्युः कुक्कुटादयः ।
 वनजाः पीतमुण्डाद्या भृङ्गाद्याः क्षुद्रपक्षिणः ॥ ४१ ॥
 भृङ्गे भ्रमरभृङ्गाणमधुलिण्मधुपालिनः ।
 अलिद्विरेफो लोलम्बो भसलः पुष्पलोलुपः ॥ ४२ ॥
 इन्दिन्दिरो मधुकरश्चञ्चरीको मधुव्रतः ।
 शित्पुटः षट्पदश्चाथ पतङ्गः शलभः समौ ॥ ४३ ॥
 जतुकाऽजिनपत्रा स्यात् परोष्णी तैलपायिका ।
 मलिम्लुचास्तु मशका भम्भराली तु मक्षिका ॥ ४४ ॥
 चर्वणा मक्षिका नीला सरघा मधुमक्षिका ।
 अरण्यमक्षिका दंशो दंशी तज्जातिरल्पिका ॥ ४५ ॥
 कषायिका तु जलजा घोणा कुम्भीरमक्षिका ।
 गण्डोली वरटा न ह्री गृहिणी गृहकारिका ॥ ४६ ॥
 अन्वर्थाख्या कोष्ठकारी कण्टका कण्टकानना ।
 निशामणिर्ध्वान्तमणिः खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ॥ ४७ ॥

भृङ्गारी मीरिका चीरी भिल्लिकाऽथ प्लुषिः पुमान् ।
 पुत्तिका च पतङ्गी च पूत्यण्डाः क्षुद्रपक्षिणः ॥ ४८ ॥
 छदः पत्रो गरुड्राजश्छदनं च तनूरुहम् ।
 पतत्रं च कुलायस्तु पञ्जरं नीडमस्त्रियाम् ॥ ४९ ॥
 पेशी कोशश्च डिम्बोऽण्डं त्रोटिश्चञ्चुः सृपाटिका ।
 डयनं गतिरुड्डीनसण्डीनादि विशेषकम् ॥ ५० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे खगाध्यायः ॥ ३ ॥



शब्दाध्यायः ॥ ४ ॥

शब्दो व्योमगुणस्वानस्वननिस्वाननिस्वनाः ।
 निर्हादो रवणो नादो द्ध्वेडो ध्वानो ध्वनिः कवः ॥ १ ॥
 कणिर्हादो रसो ध्रूणा घोषो गुञ्जनमुञ्जने ।
 गञ्जनं मशनं कानं गानं कोरणरेभणे ॥ २ ॥
 कूजनं कूजितं गर्जा न क्लीवे गर्जना न ना ।
 क्रोश उच्चस्वने प्राणिस्वने त्वाराव आरवः ॥ ३ ॥
 रवो विरावः संरावो रुतं चेत्यथ वाशनम् ।
 वाशितं च तिरश्चां स्यात् ध्वाङ्गी स्त्री घोरवाशितम् ॥ ४ ॥
 घोरितं तुरगादीनां नासापुटभवे ध्वनौ ।
 तन्दनं रम्भणं रम्भा रम्भितं च गवां ध्वनिः ॥ ५ ॥
 वृकनं श्ववृकध्वाने भषणं भषितं शुनः ।
 वृकस्य रेषणं रेषा हेषा हेषा च वाजिनाम् ॥ ६ ॥
 बृंहितं करिणां शब्दो राणोऽस्त्री मणितं रतेः ।
 काकुः स्त्री भिन्नकण्ठोत्थः शोककोपादिवैकृतात् ॥ ७ ॥
 डकनं हात्कृते पत्रवस्त्रादीनां तु मर्मरः ।
 पर्दनं गुदजे शब्दे कर्दनं कुक्षिकूजिते ॥ ८ ॥
 विष्फारो धनुषः स्वानो भूपादीनां तु शिञ्जितम् ।
 प्रणादस्त्वनुरागोत्थश्चित्कृतं स्यन्दनध्वनौ ॥ ९ ॥
 स्रोतसां खरको युद्धध्वाने क्रन्दनयोधने ।
 मार्जना मुरजध्वाने गुन्दिलो मर्हलध्वनौ ॥ १० ॥
 वाणं हुडुकहिकायां भेरीनादे तु टट्टरः ।
 कणनं कणितं क्वाणो निक्वाणो निक्कणः कणः ॥ ११ ॥
 वीणायाः कणतेः प्रादेः प्रक्वाणप्रक्वाणदयः ।
 स्त्री प्रतिश्रुत् प्रतिध्वाने तुमुलो व्याकुले भृशम् ॥ १२ ॥
 गम्भीरे मन्द्र उच्चे तु तारो रम्यास्फुटे कलः ।
 समाहितस्तु निर्दोषवर्णे दोषयुताः परे ॥ १३ ॥
 अत्युच्चारणगर्वेण पीडितोऽपि समाहितः ।
 एणीकृतः प्रतिध्वानदन्तुरो माहिषश्च सः ॥ १४ ॥
 कल्हस्तु गलमूलस्थो गद्गदः स मनाक् स्फुटः ।

लालको बालानुकृतौ लल्लरो जिह्वया हतः ॥ १५ ॥
 शिथिलोऽस्पष्टसंयोगस्तुम्बुकः सानुनासिकः ।
 सान्त्वं स्यान्मधुरं वाक्यं स्यादवाच्यमनक्षरम् ॥ १६ ॥
 अनिर्बद्धं तूच्चावचमक्लिष्टार्थं तु सङ्कुलम् ।
 अनृते वितथालोकावाहतं तु मृषार्थके ॥ १७ ॥
 अम्बूकृतं सनिष्ठीवं स्यादबद्धमनर्थकम् ।
 कल्या तु वाचि कल्याण्यां रुशती तद्विपर्यये ॥ १८ ॥
 छलवाक्तु निरानन्दा शोकभारे तु तीरिता ।
 क्रोधगर्भा तु वैद्योता दैन्यगर्भा तु नश्वरी ॥ १९ ॥
 निर्वेदगर्भा निस्सङ्गा स्नेहगर्भा तु मालुकी ।
 विरहे खण्डिता मोहे शून्या लोभे तु जाङ्गली ॥ २० ॥
 निष्ठुरा परुषा क्षेपे त्रिषु स्युस्तुमुलादयः ।
 अस्त्रियौ वर्णमर्णं च वाक्यं तु वचनं वचः ॥ २१ ॥
 आम्रेडितं द्विस्त्रिरुक्तं गुणितं घोषितं समे ।
 अरणिर्ना मुहुः प्रोक्तमनुलापश्च वर्तनम् ॥ २२ ॥
 सम्भाषणं त्वाभाषणमालापः कुरुकुञ्जिका ।
 उपसम्भाषणं साम्नि तत्तत्पृच्छन्दनं यदि ॥ २३ ॥
 धनादि स्यात् प्रतिज्ञातं गुह्ये तदुपमन्त्रणम् ।
 विभाषणं विवादे स्यादनुवादोऽनुभाषणम् ॥ २४ ॥
 आख्यायनी तु सन्देशो दिष्टं संवदनं च तत् ।
 संवादं वाचिकं च वलना त्वतिचाटुवाक् ॥ २५ ॥
 लुञ्जना पिञ्जना चेति सूत्रिते वचनद्वयम् ।
 भञ्जना स्याद्विवरणे पोटना तूत्कटं वचः ॥ २६ ॥
 कोलाहलः कलकलः कुञ्जनाऽस्मिन्नपक्रुधि ।
 चर्चरी चर्भटिस्तुल्ये रथ्यावादे तु कोहलम् ॥ २७ ॥
 उद्धूमस्तु कौरकण्या विगर्वा गर्वहारिका ।
 लोचना तु विचारोक्तिर्लोटना सानुसारवाक् ॥ २८ ॥
 विप्रलापो विरोधोक्तिः संलापो भाषणं मिथः ।
 काका वर्णनमुल्लापो विलापः परिदेवनम् ॥ २९ ॥
 प्रलापोऽनर्थकं वाक्यमपलापस्त्वपह्ववः ।
 अपठ्ययोऽप्यवज्ञाऽपि हूतिस्त्वाकारणा हवः ॥ ३० ॥
 हकारामन्त्रणाह्वानं संहूतिर्बहुभिः कृता ।
 अभिधानं नामधेयं नामाख्याऽऽह्वाऽभिधाऽऽह्वयः ॥ ३१ ॥

मिथ्याऽभियोगोऽभिख्यानमभिशापोऽभिशासनम् ।
 शापोऽधिद्वेष आक्रोशः परिवादोऽप्यवर्णवत् ॥ ३२ ॥
 अवर्णवादो निर्वादोऽप्यपवादो विरुक्षणम् ।
 क्षारणं गर्हणं निन्दा जुगुप्सागालिकुत्सनाः ॥ ३३ ॥
 जनवादस्तु वचनं भर्त्सनं प्रतितर्जनम् ।
 आक्षारणं विधुवनमाक्रोशो मैथुनं प्रति ॥ ३४ ॥
 उत्साहः स्यादुपालम्भः परिवाग्भाषणीति च ।
 श्लाघा शंसा प्रशंसा च स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ ३५ ॥
 यशो जयोदाहरणं साधुवादो गुणावली ।
 ख्यातिः कीर्तिः समज्ञा च सन्देशगिरि वाचिकम् ॥ ३६ ॥
 अर्थवादः परार्थोक्तिः प्रश्नः पर्यनुयोगवत् ।
 अनुयोगश्च पृच्छा च प्रतिवाक्यं तदुत्तरम् ॥ ३७ ॥
 कथा त्वाख्यानिकाऽऽख्यानं पुराणं पञ्चलक्षणम् ।
 इतिहासः पुरावृत्तमैतिह्यमितिहाऽव्ययम् ॥ ३८ ॥
 वार्तोदन्तोऽपि वृत्तान्तः किंवदन्ती जनश्रुतिः ।
 प्रवल्हिका प्रहेलिका प्रजल्पनं बहुदितम् ॥ ३९ ॥
 विकल्पना पृथक्क्रियाऽवधारणाऽन्यनिहुतिः ।
 समस्या तु समासः स्यात् सङ्क्षेपः स्यादविस्तरः ॥ ४० ॥
 उपोद्धात उदाहार उपन्यासः पुरोवचः ।
 प्रस्तावः पुनरुद्धातः सोऽधिकार उपक्रमः ॥ ४१ ॥
 गद्यपद्यमयी चम्पूः सारणी पद्यमात्रिका ।
 शृङ्गाराद्यधिकं काव्यं समासाढ्यं तु दण्डकम् ॥ ४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां
 वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे शब्दाध्यायः ॥ ४ ॥

द्वितीयोऽन्तरिक्षकाण्डः समाप्तः ॥ २ ॥

३. अथ भूमिकाण्डः

देशाध्यायः ॥ १ ॥

भूमिरूर्वी घनश्रेणी स्थगणा गिरिकर्णिका ।
क्षोणी सर्पभृता दक्षा कुः दमा क्षान्तिः क्षमा क्षरिः ॥ १ ॥
धरित्री धरणी धात्री भूतधात्री धरा स्थिरा ।
वसुन्धरा वसुमती वसुधा विपुला रसा ॥ २ ॥
रमा विश्वा पृथिवी पृथ्वी हेमा सर्वसहा मही ।
अब्धिवस्त्रा नगाधारा मेदिनीला गिरिस्तनी ॥ ३ ॥
अचला कीलिनी पेरा बीजसू रत्नसूः स्वसूः ।
रत्नगर्भा काश्यपी भूः कुह्यवनिर्बरा ॥ ४ ॥
द्यावापृथिव्यावेकोक्तौ रोदस्यौ रोदसी इति ।
नाभीदं भारतं वर्षं हिमाद्रेस्तच्च दक्षिणम् ॥ ५ ॥
तेन हैमवतं नाम पराण्यप्येवमुन्नयेत् ।
हेमकूटं किम्पुरुषं हरिवर्षं तु नैषधम् ॥ ६ ॥
इलावृत्तं सौमेरवं सुमेरुं परितो हि तत् ।
भद्राश्वं तु ततः पूर्वं केतुमालं तु पश्चिमम् ॥ ७ ॥
वर्षावेतौ क्रमात् पूर्वगन्धिकापरगन्धिकौ ।
उदक् तु रम्यकं नैलं नीलाद्रेरुत्तरं हि तत् ॥ ८ ॥
ततो हिरण्मयं श्वेतं तच्च श्वेताद् गिरेरुदक् ।
कुरुवर्षं शार्ङ्गवतं कुरवश्च त उत्तराः ॥ ९ ॥
जम्बूद्वीपः कुमारी स्याद्यत्रेमे भारतादयः ।
लावणो लवणोदः स्याद्येनासौ वेष्टितोऽब्धिना ॥ १० ॥
प्लक्षद्वीपादयोऽप्येवं वृता इक्षूदकादिभिः ।
मन्थोदधिस्तु क्षीराब्धिः क्षीरोदः कलशोदधिः ॥ ११ ॥
अथाप्यन्येऽन्तरद्वीपा भारतात् सप्त दक्षिणाः ।
एको वैद्युत्वतो नाम विद्युत्वान् यत्र पर्वतः ॥ १२ ॥
मालं मैत्रं व्रतं जालं नारासङ्गे पराणि षट् ।
अनुद्वीपाश्च षट् तेषामङ्गद्वीपादयो यथा ॥ १३ ॥
अङ्गद्वीपं यवद्वीपं मलयद्वीपमित्यपि ।

शङ्खद्वीपं कुशद्वीपं वराहद्वीपमित्यपि ॥ १४ ॥
 अङ्गद्वीपं चाक्रगिरं मध्ये पश्चिमवारिधिः ।
 पूर्वाब्धौ तु यवद्वीपं यत्र कालोदकोऽर्णवः ॥ १५ ॥
 मलयद्वीपमब्धौ स्याद्वक्षिणे तच्च दार्दरम् ।
 मालयं माहामलयं तत्पार्श्वे तु चतुर्थकम् ॥ १६ ॥
 अतः पूर्वं कुशद्वीपं चम्पकद्वीपमप्यदः ।
 यतः पुरो रक्तवहो लोहित्यो नाम वारिधिः ॥ १७ ॥
 अथ प्रतीच्यां वाराहं वराहद्वीपमायतम् ।
 यत्र यज्ञवराहोऽसौ हरिरद्यापि तिष्ठति ॥ १८ ॥
 बर्हिणं सिंहलं हेमकुड्यं द्वारवतीपदम् ।
 पारसीककुलं स्वर्णद्वीपं वैद्युतमार्षभम् ॥ १९ ॥
 अयोमुखं तार्णसौमं स्यात्तार्णं ग्रामणीकुलम् ।
 इत्याद्या भारते वर्षे क्षुद्रा द्वीपाः सहस्रशः ॥ २० ॥
 नीवृज्जनपदो देशस्तद्भेदाः पुंसि भूमिनि च ।
 स्त्रियो वरेन्द्री स्त्रावस्तीराढाद्या नैव भूमनि ॥ २१ ॥
 प्राग्दक्षिणः शरावत्याः प्राच्योऽस्याः पश्चिमोत्तरः ।
 उदीच्यो मध्यदेशस्तु देशो यो मध्यमस्तयोः ॥ २२ ॥
 आर्यावर्तो ब्रह्मवेदिर्मध्यं विन्ध्यहिमागयोः ।
 अथोदीच्या जनपदास्तत्र चीनाः खरम्भराः ॥ २३ ॥
 गान्धारास्तु दिहण्डाः स्युर्यवनास्तु दुरुण्कराः ।
 सम्भालाः स्युः शूरसेना अपि ते शूरसेनयः ॥ २४ ॥
 मध्ये तु शूरसेनानां मधुरा नाम वै पुरी ।
 लम्पाकास्तु मुरुण्डाः स्युस्तोक्षारास्तु युगालिकाः ॥ २५ ॥
 जालन्धरास्त्रिगर्ताः स्युर्होलाः स्युः खरटी स्त्रियाम् ।
 प्रत्यग्रथास्त्वहिच्छत्रास्तैतुलास्तु कलिङ्गकाः ॥ २६ ॥
 टर्कवाहीककाश्मीरतुरुण्डकेषु लसिन्धुषु ।
 बाह्लीका बाह्लीकाः कीराः शाखयो दारदाः क्रमात् ॥ २७ ॥
 कुमालकास्तु सौवीरा यौधेयास्तु नृगालिकाः ।
 अप्यन्ये पारदाः किञ्चाः कुल्या इत्यादिनीवृतः ॥ २८ ॥
 अथ प्राच्या जनपदास्तत्र मुद्गरकाः कुजाः ।
 प्राग्ज्योतिषाः कामरूपास्तथा प्राग्जालिका अपि ॥ २९ ॥
 विदेहास्तीरभुक्तिः स्त्री स्त्रावस्ती तु परञ्जका ।
 राढा तु सुह्याः पुण्ड्रास्तु वरेन्द्री पुण्ड्रलक्षणा ॥ ३० ॥

भौरिकाः स्युः समतटा अङ्गाश्चम्पोपलक्षणाः ।
 वङ्गास्तु हरिकेलीया मगधाः कीकटाः स्मृताः ॥ ३१ ॥
 अप्यन्येऽन्ध्रा व्रताः साल्वा इत्याद्या नीवृतः पृथक् ।
 विन्ध्यात्तु दक्षिणा देशा दक्षिणापथसंज्ञिताः ॥ ३२ ॥
 तत्र पाण्ड्याः पाण्ड्याः स्युः कुन्तलाः स्तूपहालकाः ।
 चोलाः स्युरुत्पलावर्ता महाराष्ट्रास्तु दण्डकाः ॥ ३३ ॥
 अप्यन्ये केरलाः कुल्याः सेतुजाः कुलकालकाः ।
 इषीकाः शबरारट्टा इत्याद्या नीवृतः पृथक् ॥ ३४ ॥
 अपरान्तास्तु पाश्चात्यास्ते च सूर्यारकादयः ।
 अथेमे मलदाद्याद्या विन्ध्यपर्वतवासिनः ॥ ३५ ॥
 तत्र स्युर्मलदाः स्थौराः करुशास्तु बृहद्गृहाः ।
 त्रैपुरास्तु हहालाः स्युश्चैद्यास्ते चेदयश्च ते ॥ ३६ ॥
 दाशाणीः स्थुर्वेदिपरा मालवाः स्युरवन्तयः ।
 अप्यन्ये मेकला भोजाः कोसलाद्याश्च नीवृतः ॥ ३७ ॥
 अथ देशा मध्यदेशे मरवस्तु दशेरकाः ।
 साल्वास्तु कारकुत्सीयास्तेषां त्ववयवाः परे ॥ ३८ ॥
 उदुम्बरास्तिलखला महाकारा युगन्धराः ।
 हुलिङ्गाः शरदण्डाश्च पट् साल्वावयवा इमे ॥ ३९ ॥
 अप्यन्ये कुन्तलाः कुल्याः कलिङ्गाः काशिकोसलाः ।
 मेकलाः कुसटाः सैरा जाङ्गलाः पृथवो वृकाः ॥ ४० ॥
 पटच्चरादयश्चान्ये मध्यदेशस्य नीवृतः ।
 उक्तानामन्तरालेषु बहवः क्षुद्रनीवृतः ॥ ४१ ॥
 मरवः पुंसि धन्वान् आसारी तु स्थली स्थलम् ।
 कचङ्गला तु नीलिङ्गी भूर्नीनाजन्तुसंयुता ॥ ४२ ॥
 पङ्किलः पङ्कवान् देशो वेतस्वान् बहुवेतसः ।
 शाद्वलः शादहरितः कुमुद्वान् कुमुदाधिकः ॥ ४३ ॥
 सनलो नड्वलो नड्वाब्धार्करः शर्कराधिकः ।
 देशः शर्करिलोऽप्येवमुन्नेयौ सिकतावति ॥ ४४ ॥
 कृष्णभूमः पाण्डुभूमः कृष्णा पाण्डुश्च यत्र मृतः ।
 अनूपः साम्बुरन्यस्तु जाङ्गलः शून्य उच्चटः ॥ ४५ ॥
 स्फुटिते सारणारट्टौ राजन्वास्तु सुराजनि ।
 अन्यत्र राजवान् वृष्टिजीवनो देवमातृकः ॥ ४६ ॥
 स्यान्नदीमातृको देशो नद्यम्बूत्पादसस्यकः ।
 पद्यः पदाङ्कयोग्यः स्यात् त्रिष्वेते पङ्किलादयः ॥ ४७ ॥

श्मशानं स्यात् पितृवनं स्त्रीवासः क्रिमिपर्वतः ।
 शतमूर्धा वामद्वरो नाकुर्वल्मीकमस्त्रियाम् ॥ ४८ ॥
 मार्गोऽध्वा पदवी पन्थाः पद्या चैकपदी सृतिः ।
 सुपन्था अतिपन्थाश्च सत्पथश्च शुभे पथि ॥ ४९ ॥
 विपथः कापथो व्यध्वो दुरध्वश्च कदध्वनि ।
 अपन्थास्त्वपथं दूरशून्ये प्रान्तरमध्वनि ॥ ५० ॥
 वृत्तिमार्गस्त्वर्धपदः प्राग्वंशः पदिकोऽपि च ।
 संक्रमस्तिस्तिरिस्तुल्यौ शृङ्गाटं तु चतुष्पथः ॥ ५१ ॥
 जङ्घापदं चतुष्पादस्त्रिपादस्तु गृहान्तरम् ।
 अङ्गुलोऽस्त्री यवा अष्टौ समस्तु चतुरङ्गुलः ॥ ५२ ॥
 धनुर्ग्रहश्च दिष्टिश्च स्यातामष्टाङ्गुलावुभौ ।
 दशाङ्गुलः क्रकचिको वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलाः ॥ ५३ ॥
 किष्कुः स्यादवटो हस्तश्चतुर्विंशतिरङ्गुलाः ।
 बद्धेन मुष्टिना हस्तः स्याद्रत्निर्मुष्टिको वसुः ॥ ५४ ॥
 अरत्निर्निष्कनिष्ठोऽसौ स प्रजापतिहस्तकः ।
 कुत्सश्चाप्यथवाकुत्सः सधनुर्मुष्टिरेव सः ॥ ५५ ॥
 अथ वर्धकिहस्तः स्याद् द्वाचत्वारिंशदङ्गुलः ।
 तस्मिन् विकिष्कुः क्रकचः किष्कुःक्रकचिकोऽपि च ॥ ५६ ॥
 हस्तद्वयं तु सत्किष्कुर्हस्तत्रयमलीमकम् ।
 चतुर्हस्तो धनुर्दण्डो धनुर्धन्वन्तरं युगम् ॥ ५७ ॥
 ऐश्वरं नालिका चाथ पञ्चहस्तोऽर्धहस्तकः ।
 अष्टहस्ता तु रज्जुः स्यान्नवहस्ता तु नालिका ॥ ५८ ॥
 दशहस्तः पितृनल्वो दीर्घदण्डो निदेशकः ।
 स प्रावेशनिकश्चाथ परिवेषो द्विरज्जुकः ॥ ५९ ॥
 निवर्तनं तु तिसृभी रज्जुभिर्बलिशं च तत् ।
 नल्विकः किष्कुभिः षष्ठ्या नल्वः किष्कुचतुश्शतम् ॥ ६० ॥
 दशधन्वन्तरं स्तोमो दशस्तोमस्तु वंशिकः ।
 दशवंशिक आनाहो दशानाहो नलान्तरः ॥ ६१ ॥
 धन्वन्तरसहस्रं तु क्रोशो गव्या तु तद् द्वयम् ।
 स्त्री गव्यूतिश्च गव्यूतं गोरुतं गोमतं च तत् ॥ ६२ ॥
 गव्यूतानि तु चत्वारि योजना कोसलादिषु ।
 गव्यूतिद्वयमेव स्याद्योजनं मगधादिषु ॥ ६३ ॥
 इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां
 वैजयन्त्यां भूमिकाण्डे देशाध्यायः ॥ १ ॥

शैलाध्यायः ॥ २ ॥

शैलोऽगः पर्वतः दमाभृत् सानुमान् दुर्गमोगिरिः ।
 अहार्यगोत्रकुट्टीरकुट्टारा भूधरोऽचलः ॥ १ ॥
 बन्धाकिः फलिकः कुध्रः प्रपात्यद्रिः शिलोच्चयः ।
 सुवेलः स्याच्चित्रकूटस्त्रिकूटस्त्रिककुब्ज सः ॥ २ ॥
 लोकालोकश्चक्रवालो लोकान्ताद्रिः पराचलः ।
 मलये त्रिकलापाढौ विन्ध्यस्तु जलवालकः ॥ ३ ॥
 हिरण्यनाभो मैनाकः सुदारुः पारियात्रकः ।
 मात्यवांस्तु प्रस्रवणो हिमवांस्तु हिमाचलः ॥ ४ ॥
 रजताद्रिस्तु कैलासो हराद्रिर्महितश्च सः ।
 वेङ्कटो वृषभः सिंहः केसरः केशवप्रियः ॥ ५ ॥
 उदयस्तूदयाद्रिः स्यादस्तस्त्वस्तमयाचलः ।
 दरी गुहा कन्दरोऽक्ली प्रपातस्तु तटो भृगुः ॥ ६ ॥
 उत्सः प्रस्रवणं तोयप्रवाहे भरनिर्भरौ ।
 स्तुर्वप्रोऽस्त्री सानुरस्त्री पादाः पर्यन्तपर्वताः ॥ ७ ॥
 कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गं नितम्बः कटकोऽस्त्रियाम् ।
 पाषाण उपलोऽश्मा च प्रस्तरश्च शिला दृषत् ॥ ८ ॥
 गण्डशैलास्तु पाषाणाः स्थूलाः प्रगलिता गिरेः ।
 उपत्यका त्वधोभूमिगिरेरुर्ध्वमधित्यका ॥ ९ ॥
 कुडङ्गोऽस्त्री निकुञ्जोऽस्त्री कुञ्जो वृक्षवृत्तान्तरे ।
 आकरः स्त्री खनिर्गञ्जा रुमा तु लवणाकरः ॥ १० ॥
 गैरिकं पीतधातुः स्यात् कुनटी तु मनःशिला ।
 रोचनी रञ्जनी हृद्या रसनेत्री महासना ॥ ११ ॥
 करवीरा कला विद्युन्नागमाता विगन्धिका ।
 शिला मनोऽभिधा काला नागजिह्वा च ताः समाः ॥ १२ ॥
 शुक्लधातौ पाकशुक्ला कठिनी कक्खटी खटी ।
 हरितालं तु खर्जूरं पिञ्जरं नटभूषणम् ॥ १३ ॥
 तालमालं वंशपत्रं पीतनं रोमहृद्वरम् ।
 सौगन्धिकस्तु पामारिः पीतो गन्धाश्मगन्धकौ ॥ १४ ॥
 बोलो गोलः शशः पिण्डः प्राणो गन्धरसो रसः ।

अभ्रकं व्योममेघाख्यं चक्रसंज्ञं तु माक्षिकम् ॥ १५ ॥
 शिलाजतु तु गौरेयमर्धमश्मजमद्रिजम् ।
 सौराष्ट्री पार्वती काक्षी कालिका पर्पटी सती ॥ १६ ॥
 आढकी तुवरी काली भूनामा च मृदाह्वया ।
 सुराष्ट्रजाऽप्यथो गोला नैपाली कुन्तीति च ॥ १७ ॥
 रुक्मं कार्तस्वरं स्वर्णं महारजतमौजसम् ।
 चामीकरं जातुरूपं तपनीयं शिलोद्भवम् ॥ १८ ॥
 लोभनं कनकं शुक्रं सुवर्णं चन्द्रकाञ्चने ।
 दाक्षायणं श्रीमकुटं गारुडं तारजीवनम् ॥ १९ ॥
 अग्निबीजं रत्नवरं गैरिकं हेम कर्तुरम् ।
 जाम्बूनदं शातकुम्भं हाटकं भूरिरस्त्रिगौ ॥ २० ॥
 वैष्णवं कर्णिकाराभं वेणूतटजकाञ्चनम् ।
 सुवर्णद्वीपजाः स्वर्णशुक्तिकाभ्रकसन्निभाः ॥ २१ ॥
 रसविद्धं तु देवार्हं पवित्रं वज्रधारणम् ।
 अलङ्कारसुवर्णं तु शृङ्गीकनकमाशु च ॥ २२ ॥
 रूप्यहेम्नी तु संश्लिष्टे घनगोलकमस्त्रियाम् ।
 रजतं त्रापुषं रूप्यं चन्द्रभीरु यवीयसम् ॥ २३ ॥
 सौधं सुभीरुकं शुभ्रं खर्जूरं वज्रजीवनम् ।
 ताम्रं शुल्बं मर्कटास्यं रक्तं व्यष्टं कनीयसम् ॥ २४ ॥
 म्लेच्छं वरिष्ठं म्लेच्छास्यं श्रेष्ठं काम्यमुदुम्बरम् ।
 रिरी तु रीतिरुत्साहा पीतलोहं सुलोहकम् ॥ २५ ॥
 लोहमप्यारकूटोऽस्त्री पित्तलं त्वारमस्त्रियाम् ।
 राजरीत्यां ब्रह्मरीतिः स्वर्णरीतिर्महेश्वरी ॥ २६ ॥
 काञ्चनी कपिला राज्ञी ब्राह्मणी कपिलोहकम् ।
 मीलिकायां तु सरटी निष्ठुरं दारुकण्टकम् ॥ २७ ॥
 गुरुज्येष्ठं सिंहमलं पञ्चलोहान्यलोहके ।
 कांस्यं तु कृत्रिमं नाट्यं प्रभासमसुराह्वयम् ॥ २८ ॥
 घण्टास्वनं भूरिलोहं रवणं लोहजं मलम् ।
 सौराष्ट्रं चाथ सीसोऽस्त्री योगेष्टं भुजगाह्वयम् ॥ २९ ॥
 यवनेष्टं समोल्लकं हेमघ्नं भूतलोद्भवम् ।
 त्रपु नागं चीनपट्टं रङ्गमप्यथ पिच्छटम् ॥ ३० ॥
 रङ्गं वज्रं त्रपु क्षोभ्यं मृद्वज्रं नागजीवनम् ।
 परासं सिंहलं ज्येष्ठं वक्राख्यं मुखभूषणम् ॥ ३१ ॥

कस्तीरं शोभनं नागमरिजं हेमजं शठम् ।
 गुरुपत्रं तमरकं घनं सलवणं रजः ॥ ३२ ॥
 अयः कृष्णायसं चीनं शस्त्राख्यं विषमायुधम् ।
 धीवरं धीमकं लोहं लौहकालदृढानि च ॥ ३३ ॥
 स्त्री कुटिर्ना पारशवो गिरिसारोऽश्मसारकः ।
 अथ कालायसं तीक्ष्णं सुलोहं रुक्षमासुरम् ॥ ३४ ॥
 वैकृन्तः स्याद् रसवरो रसज्ञो व्योमधारणः ।
 रसकस्त्वयसः सारो विकारो लोहजः कुशी ॥ ३५ ॥
 धूर्तमण्डूरसिंहाणविष्टाख्यानि त्वयोमले ।
 लोहं तु तैजसं सर्वं वसु रत्नं मणिर्न षण् ॥ ३६ ॥
 स्फटिकोऽर्को रविग्रावा सूर्यकान्तोऽनलोपलः ।
 चन्द्रकान्तश्चन्द्रमणिः सुस्वामोऽथ त्वयोमणिः ॥ ३७ ॥
 अयस्कान्तस्तद्विशेषाश्चुम्बकभ्रामकादयः ।
 गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भं हरिन्मणिः ॥ ३८ ॥
 शोणरत्नं लोहितकं पद्मरागोऽरुणोपलः ।
 विद्रुमो ज्ञा प्रवालोऽस्त्री वज्रोऽस्त्री हीरकः पुमान् ॥ ३९ ॥
 इन्द्रनीलं महानीलं वैदूर्यं बालवायजम् ।
 कुरुविन्दास्तु कुल्माषा रत्नभेदास्तु मौक्तिकम् ॥ ४० ॥
 माणिक्यं पौष्पकं शङ्खः पुलको विमलादयः ।
 रसाञ्जनं तार्क्ष्यशैलं शैलेयं रसगर्भकम् ॥ ४१ ॥
 स्त्रोतोऽञ्जनं तु सौवीरं कपोताञ्जनयामुने ।
 तुत्थाञ्जनं शिखिप्रीवं वितुन्नकमयूरके ॥ ४२ ॥
 रीतिपुष्पं पुष्पकेतुः पौष्पकं कुसुमाञ्जनम् ।
 तुत्थं तु दार्विका काथसम्भवं कर्परीति च ॥ ४३ ॥
 कुलत्थिका तु चक्षुष्या कुम्भकारी कुकालिका ।
 रसस्तु पारतः सूतो हिङ्गुलो दारदो रसः ॥ ४४ ॥
 हिङ्गुलं हंसपादं च कुरुविन्दं च के चन ॥ ४४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां
 वैजयन्त्यां भूमिकाण्डे शैलाध्यायः ॥ २ ॥

वनाध्यायः ॥ ३ ॥

अटवी काटिकाऽरण्यं विपिनं काननं वनम् ।
 कक्ष्यकं कुन्दिलं वार्क्षं वनी गहनमित्यपि ॥ १ ॥
 महाटवी त्वरण्यानी प्रस्तारस्तु तृणाटवी ।
 कृत्रिमं वनमारामोऽपवनोपवने अपि ॥ २ ॥
 तदेव राज्ञ उद्यानमाक्रीडश्चाथ तस्य तत् ।
 सान्तःपुरस्य प्रमदावनं गेहस्य निष्कुटः ॥ ३ ॥
 पुष्पवाटी त्वमात्यादेस्त्रयी वाटी फलाय चेत् ।
 वृक्षो द्रुमो भूरुहो द्रुर्विटपी विष्ट्रोऽङ्घ्रिपः ॥ ४ ॥
 अनोकहो नगो भूरुट् तरुः शाखी कुटः कुजः ।
 वसुः करालिकोऽगच्छो जर्णो रुक्षः पुलाक्यपि ॥ ५ ॥
 बानस्पत्यः पुष्पफली फली त्वेव वनस्पतिः ।
 ओषधिः फलपाकान्ता ह्रस्वशाखाशिफः क्षुपः ॥ ६ ॥
 अप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मावुलपस्तु प्रतानिनी ।
 गुल्मिन्यपि च वल्ली तु व्रततिव्रतती लता ॥ ७ ॥
 बन्ध्यो वृक्षोऽवकेशी स्यादबन्ध्यस्तु फलेग्रहिः ।
 पुष्पितः स्यात् कुसुमितः फलितः फलिनः फली ॥ ८ ॥
 फुल्ले प्रफुल्लसम्फुल्लव्याकोचविकचस्फुटाः ।
 उत्फुल्लोन्मिषितोन्निद्रा उद्बुद्धोन्मिलितस्मिताः ॥ ९ ॥
 फलमामं शलाढुः स्याद् वानं शुष्कतरं फलम् ।
 त्रिषु बन्ध्यादयोऽथ स्यादङ्कुरोऽङ्कूरमस्त्रियौ ॥ १० ॥
 प्ररोहश्चाथ वंशः स्याद् योऽङ्कुरः पर्वसूत्थितः ।
 परुः पर्व पुमान् ग्रन्थिर्निर्यासः खपुरो लशः ॥ ११ ॥
 शिफाजटाऽवरोहस्तु सा शाखाजा वटादिषु ।
 मूलं बुध्नोऽङ्घ्रिनामास्मादास्कन्धात् स्यात्प्रकाण्डकम् ॥ १२ ॥
 स दारुमात्रः स्थाण्वस्त्री दारु काण्डमथ त्रयी ।
 छल्ली त्वक् स्त्री त्वचा न ह्री वल्कलं चोलकोऽस्त्रियौ ॥ १३ ॥
 चोचं वल्कं च सारस्तु मज्जा सारः किनाटकम् ।
 निष्कुटः कोटरो न स्त्री विदलं दारु पाटितम् ॥ १४ ॥
 स्कन्धः प्रघाणोऽथ शिखा शाखाऽथ शिखरं शिरः ।
 स्कन्धशाखा तु शाला स्यात् प्रवालः पल्लवाङ्कुरः ॥ १५ ॥

विस्तारो विटपः स्तम्ब उच्छ्रायस्तु समुन्नतिः ।
 छदस्तु छदनं पत्रं पलाशं पतनं दलम् ॥ १६ ॥
 पर्णं बह्वं पतत्रं च त्रयी शुङ्गास्य कोशिका ।
 पल्लवोऽस्त्री किसलयं किसलोऽपि नवे दले ॥ १७ ॥
 पत्रमध्यशिरा माढिः पुष्पोऽस्त्री कुसुमं सुमम् ।
 मणीचकं प्रसूनं च सूतं सुमनसः स्त्रियः ॥ १८ ॥
 मकरन्दो मरन्दोऽस्य रसे जालं तु जालकम् ।
 कलिका कोरकश्चाथ कुट्मलो मुकुलोऽस्त्रियौ ॥ १९ ॥
 गुच्छो गुलुच्छः स्तवको मञ्ज्यां मञ्जरिवल्ली ।
 प्रसवः पिप्पलं सस्यं फलं वृन्तं तु बन्धनम् ॥ २० ॥
 पण्डास्त्वाम्रादयः शब्दा आम्रादिफलपुष्पयोः ।
 हरीतक्यादिकं स्त्री स्यादश्वत्थादिफले पुनः ॥ २१ ॥
 आश्वत्थमैजुदं प्लाक्षं नैयग्रोधं च बार्हतम् ।
 वैणवं शैबवं चाथ जम्बूः स्त्री जम्बु जाम्बवम् ॥ २२ ॥
 जात्यादयः स्वलिङ्गाः स्युः पुष्पार्थे व्रीहयः फले ।
 विदार्याद्यास्तु मूलेऽपि पाटला कुसुमे न ना ॥ २३ ॥
 सप्तम्यन्तपदारम्भाः पर्याया इह कुत्रचित् ।
 सप्तम्यन्तं च पुंलिङ्गं विज्ञेयं संशये सति ॥ २४ ॥
 आम्ने कामाङ्गमाकन्दौ चूतो वेलोऽङ्गनाप्रियः ।
 करको वलयश्चाथ श्रेष्ठेऽत्र सहकारकः ॥ २५ ॥
 अथ श्यामलके लाला लवली लावली फला ।
 केसरे वकुलो मद्यलालसः सिंहकेसरः ॥ २६ ॥
 द्राक्षाफलो गुडश्चाथ न्यग्रोधो बहुपाद्वटः ।
 श्रीवृक्षे पिप्पलोऽश्वत्थः प्लाक्षश्चलदलोऽङ्गुलः ॥ २७ ॥
 उदुम्बरे प्राणिफलो मशकी हेमदुग्धकः ।
 प्लाक्षस्तु पर्कटिजटिकलापिगिरिलक्ष्मणाः ॥ २८ ॥
 पलाशे किंशुकः पर्णो वातपोथस्त्रिपर्णकः ।
 आस्फोटो ब्रह्मवृक्षश्च हस्तिकर्णदले कृती ॥ २९ ॥
 बिल्वे मात्सरमङ्गल्यौ श्रीफलो गोहरीतकी ।
 परिठ्याधे बालभीरुभीरुबालोऽम्बुवेतसः ॥ ३० ॥
 शीतेऽभ्रपुष्पो वानीरो वज्जुलो वेतसो रथः ।
 विदुले प्रिय आम्राते द्वौ पीतनकपीतनौ ॥ ३१ ॥

कपित्थे स्युर्दधिफलो दधित्थग्राहिमन्मथाः ।
 हृद्यो दन्तशठः पुष्पफलोऽरिष्टे तु फेनिलः ॥ ३२ ॥
 मातुलुङ्गे तु रुचको वराम्लः केसरी शठः ।
 बीजपूरे मातुलुङ्गो लुङ्गः सुफलपूरकौ ॥ ३३ ॥
 देविकायां महाशल्का दूष्याङ्गी मधुकुक्कुटी ।
 अथात्यम्ला मातुलुङ्गी पूतिपुष्पी वृकाम्लिका ॥ ३४ ॥
 छागो तु करुणो लक्षो मल्लिकाकुसुमप्रियः ।
 जम्बीरे जम्भको दन्तशठो जम्बीरजम्भलौ ॥ ३५ ॥
 नागरङ्गे तु नारङ्गो नार्यङ्गस्तक्रवासनः ।
 त्वग्गन्ध एलको योगी मुचुलिन्दे तु निम्नकः ॥ ३६ ॥
 न्युञ्जे कर्मफलो भव्यः कर्मरङ्गः शठेश्वरौ ।
 महीपतिर्दन्तशठः कर्ता नेता च कर्म च ॥ ३७ ॥
 विकङ्कते ग्रन्थिलः स्याद्व्याघ्रपाञ्च मधुच्छदः ।
 सर्जेश्वकर्णः साले तु कार्श्यकः सस्यसंवरः ॥ ३८ ॥
 पीतसाले गौरसर्जप्रियकासनपीवराः ।
 रक्तपुष्पोऽप्यथो सिन्धुसर्जे बाणः खरोऽर्जुनः ॥ ३९ ॥
 रोहिते रौहिषो रोही रक्तो रौहितकोऽपि च ।
 स्त्रीप्रिये वज्रुलोऽशोकः कङ्कलिः कर्णपूरकः ॥ ४० ॥
 हेमपुष्पोऽप्यथाङ्गोले निचोलोऽङ्गोदशोधनौ ।
 रसाले वरणः सेतुस्तिक्तशाकोऽश्मरीरिपुः ॥ ४१ ॥
 दोषग्रहे तु कतको द्रावणः स्रवणः सरः ।
 उल्लेखनीयो लक्ष्मीवांस्तेरस्तोयप्रसादनः ॥ ४२ ॥
 राजादने फलाध्यक्षः प्रियकश्च मधुस्रवः ।
 मधुपुष्पे मधुष्ठीलो वानप्रस्थो मधूकवत् ॥ ४३ ॥
 गुडपुष्पोऽप्यद्रिजेऽस्मिन् गौरशाको मधूलकः ।
 पारिभद्रस्य भेदे च मन्दारः पारिजातकः ॥ ४४ ॥
 भूर्जपत्रे भुजो भूर्जो मृदुत्वक् चर्मिचर्मिकौ ।
 पीलौ गुडफलः स्रंसी श्यामश्चाथात्र शैलजे ॥ ४५ ॥
 अक्षोडः कर्परालश्च नेमीये त्वतिमुक्तकः ।
 चित्रकृत् तिमिशो नेमी वज्रुलोऽथायुगच्छदे ॥ ४६ ॥
 सप्तपर्णो विशालत्वक्छारदो विषमच्छदः ।
 कोविदारो चमरिको रक्तपुष्पो युगच्छदः ॥ ४७ ॥
 काञ्चनारोऽप्यागर्वधे तु व्याघातश्चतुरङ्गुलः ।
 आरग्वध आरेवतः शम्याकः प्रमहोऽर्वधः ॥ ४८ ॥

कृतमालः सुपर्णश्च मदने तु फणी रसः ।
 पिण्डीतके मरुवक इक्ष्वाकुर्गालवामनौ ॥ ४६ ॥
 विचुलः पिचुलो राद्धः कैडर्यो विषपुष्पकः ।
 काकदर्शद्वदनश्चीनो गरलः कण्टकीति च ॥ ४७ ॥
 कालस्कन्धे तिन्दुकोऽक्ली स्फूर्जकः शितिसारकः ।
 काकेन्दौ कालपीलुः स्यात् कुलकः काकतिन्दुकः ॥ ४८ ॥
 सिते लोध्रे महालोध्रः शवरश्चाथ लोहिते ।
 तिरीटो मार्जनश्चिल्वः कृष्णेऽस्मिन् लोध्रगालवौ ॥ ४९ ॥
 गुग्गुलौ कालनिर्यासो देवधूपो महेश्वरः ।
 श्रीमान् स्निग्धः सर्वसहः श्लेष्मी तिक्तः कटुर्लघुः ॥ ५० ॥
 कामः पुरो जटायुश्च कुम्भोत्पलकं वरम् ।
 रज्जुदाले नीचुदारः कच्छूदारो गृहद्रुमः ॥ ५१ ॥
 गूढवृक्षः श्लेष्मफलो विषघ्नो द्विजकुत्सितः ।
 उद्दालो बहुवारो ना सेलुः श्लेष्मातकी न षण् ॥ ५२ ॥
 शोभाञ्जने तीक्ष्णगन्धः शिग्रुः काक्षीवमोचकौ ।
 उष्णो मुरुङ्गी रक्तेऽस्मिन् मधुशिग्रुः सुभञ्जनः ॥ ५३ ॥
 गृञ्जनः स्वादुगन्धा च प्रियालुस्तु धनुः पटः ।
 काष्मर्ये गोपभद्रा स्यात् कार्ष्मरी कृष्णवृन्तिका ॥ ५४ ॥
 श्रीपर्णी कुमुदा गृष्टिर्गम्भारी भद्रपर्णिका ।
 कैडर्यं कटफलः कुम्भी श्रीपर्णी कुमुदेति च ॥ ५५ ॥
 सुपाश्वे स्यात् कन्दरालो गर्दभाण्डः कपीतनः ।
 ताम्रपाकी फलेपाकी प्लक्षको गन्धमुण्डकः ॥ ५६ ॥
 कदम्बे पुलकी श्रीमान् प्रावृषेण्यो हलीमकः ।
 महाकदम्बके नीपो धूर्तो धूर्तारदीपनौ ॥ ५७ ॥
 वासन्ते स्यात् कुरवकस्तिलकः कुवको मधुः ।
 शुक्लपुष्पः कुरुवको मदनो धूर्तनागरौ ॥ ५८ ॥
 करञ्जे स्यान्नक्तमालः प्रकीर्यश्चिरिबिल्वकः ।
 कालिङ्गे पूतिकरजः पूतिके कलिकारकः ॥ ५९ ॥
 बालपत्रे तिक्तसारः खदिरो दन्तधावनः ।
 सिते तु तस्मिन् कदरः शल्यकश्च मरुन्धवः ॥ ६० ॥
 मरुद्भवे विटखदिरोऽप्यरिमोऽप्यरिमेदकः ।
 कण्टकी चाप्यथैरण्डे हस्तपर्णोऽप्यलम्बकः ॥ ६१ ॥

रुवुः पञ्चाङ्गुलश्चञ्चुरामण्डस्तरुणोऽम्बुकः ।
 गन्धर्वहस्तो रुवुको वातघ्नो व्याघ्रपुच्छकः ॥ ६५ ॥
 प्रियके तु प्रियङ्गवाख्या कारम्भा फलिनी फली ।
 विष्वक्सेना बला वृन्ता गुन्दा गोबन्दिनी लता ॥ ६६ ॥
 भावज्ञा सर्षपी स्याख्या वृत्ताङ्गी सुयमावनी ।
 कन्या चापि कदम्बस्तु निचुलोऽम्बुज इज्जलः ॥ ६७ ॥
 स्योनाके शोणकट्वाङ्गौ दीर्घवृन्तः कुटजटः ।
 मण्डूकपर्णः पत्रोर्णो मल्लकः शुकनाशकः ॥ ६८ ॥
 भूतपुष्पो नटो ढङ्क ऋक्षटुण्डुक आरलुः ।
 तिलके फलकः श्रीमान् सुगन्धो मुखमण्डनः ॥ ६९ ॥
 कर्णपूरोऽल्पपुष्पश्च पुन्नागे सुरवल्लभः ।
 किदिरे दीनकम्बोजौ तद्भेदे सुरपर्णिका ॥ ७० ॥
 पारिभद्रे दुकिलिमं देवदारु सुराह्वयम् ।
 पूतिकाष्ठं भद्रदारु पीतदारु च दारु च ॥ ७१ ॥
 वृक्षोत्पले कर्णिकारः परिव्याधोऽथ अण्डिले ।
 कपीतनः शिरीषश्च करके दाडिमी त्रयी ॥ ७२ ॥
 कुटजे कुटचो वत्सः शक्राख्यो गिरिमल्लिका ।
 एतस्यैवास्त्रियाविन्द्रयवभद्रयवौ फले ॥ ७३ ॥
 पनसे कण्टकिफलः पयोऽण्डो जघनेफलः ।
 कर्कशी मधुबीजश्च सरले पूतिकाष्ठकम् ॥ ७४ ॥
 निम्बे पार्वतकैडर्यद्वेषिच्छर्दनमाधिकाः ।
 रोमशः पिचुमन्दश्च लकुचे लिकुचो डहुः ॥ ७५ ॥
 पिचुले भावुकः शाके पृथुच्छदहलीमकौ ।
 उन्मत्ते धूर्तधुत्तूरधुस्तूरकितवाः शठः ॥ ७६ ॥
 धूर्धूरः काञ्चनाह्वोऽथ त्रिपुरे मदमत्तकः ।
 प्रेतालये तु तिक्तीकः शाखोटो गन्धमालहा ॥ ७७ ॥
 कृसरे भीरुमार्जारकिंशुका इज्जुदी न षण् ।
 पिण्डारके तु पिण्डीकः कृष्णे त्वस्मिन् वलाहकः ॥ ७८ ॥
 पुत्रजीवे त्वक्षफलो रुद्राक्षे तु महामुनिः ।
 एकास्ये त्वत्र माभीदो द्विमुखे तु वरार्गलः ॥ ७९ ॥
 चतुर्मुखे ब्रह्मसंज्ञः पञ्चवक्त्रे हराह्वयः ।
 षण्मुखे तु गुहाख्योऽथ किम्पाके काकमर्दकः ॥ ८० ॥
 तिनृङ्गीकेऽम्लिका चिञ्चा शुक्तिनारी कपिप्रिया ।
 तिन्रिणी चाप्यथो हेमपुष्पे चाम्पेयचम्पकौ ॥ ८१ ॥

हरणः शीतलः कान्तः कमनीयः पचम्पचः ।
 हीने त्वङ्निः कुम्भफलश्चास्पेयो नागकेसरः ॥ ८२ ॥
 करमर्दं वशश्चोलः कृष्णपाकफलैः पदैः ।
 व्यस्तैः समस्तैर्युग्मैश्च पुंसि पञ्चदशाभिधाः ॥ ८३ ॥
 शुषेणो विप्रकोऽप्यल्पफलोऽस्मिन् करमर्दिका ।
 वन्दाके वृक्षको वन्दा जीवन्त्यपदरोहिणी ॥ ८४ ॥
 वृक्षादनी वृक्षरुहा सेव्यास्मिन् क्षीरवृक्षजे ।
 तनुस्तुष्टो जयः कान्तः कुणिः कातुलको दुमः ॥ ८५ ॥
 अग्निमन्थे हविर्मन्थोऽप्यरणिः पावको वशा ।
 गणिकार्यप्यथो देवताडे वेणी खरागरी ॥ ८६ ॥
 कालस्कन्धे तमालोऽस्त्री तापिञ्छे काकतुण्डिका ।
 वदर्या कुवली कोलिः कूली क्रूरा तिरीटिका ॥ ८७ ॥
 लताकोलौ तु खलकी गिरिकोलौ तु सौरसा ।
 हस्तिकोलौ महाघोण्टा गोपघोण्टा महाफला ॥ ८८ ॥
 जलकोलौ तु सङ्गाली नरकोलौ तु कर्कशी ।
 सृगालकोलौ हिंसाऽथ शमी सक्तुफला जया ॥ ८९ ॥
 काकस्थात्यां कुबेराक्षी कृष्णवृन्ता फलेरुहा ।
 आमोघा पाटलिर्न क्ली पूरण्यां शाल्मलिर्न षण् ॥ ९० ॥
 काष्ठीला तूलिनी तूलफलाऽथ कूटशाल्मलौ ।
 रोचनः शिशपायां तु तीक्ष्णधूमावसादनी ॥ ९१ ॥
 कपिला पिच्छिला भस्मगर्भा मण्डलपत्रिका ।
 जम्बवां त्रिसारा विरजा महाजम्बवां महाफला ॥ ९२ ॥
 सुरसाथो राजजम्बवां सुफलः सुरभिच्छदः ।
 काकजम्बवां तु मेघाभः शिवेष्टः शीतपल्लवः ॥ ९३ ॥
 जम्बूटनीलजम्बूटौ शफर्या श्लक्ष्णपत्रकः ।
 शिलीन्द्राश्मन्तकाम्लोटा धवे गौरधुरन्धरौ ॥ ९४ ॥
 भल्लातक्यां त्रिलिङ्गायामग्निमुख्यप्यरुष्करः ।
 कम्पिल्ले रोचनी गुण्डा रक्ताङ्गश्चन्द्रकर्कशौ ॥ ९५ ॥
 सल्लक्यां सुरभिर्हस्तिप्रिया हस्त्यशना ध्रुवा ।
 वैजयन्त्यां तु तर्कारी नादेयी च जयन्त्यपि ॥ ९६ ॥
 धातक्यामनलज्वाला सुभिक्षा धातुपुष्पिका ।
 स्नुह्यां समन्तदुग्धा स्नुग्वज्रा नन्दासिपत्रिका ॥ ९७ ॥

सिद्गुण्डः सिन्धुरण्यस्यां विपत्रायां त्रिकण्टकः ।
 वज्री गण्डर्यथो घण्टारवायां शणपुष्पिका ॥ ६८ ॥
 तुण्डिकेर्या रवा शीरा केसरा बदराफला ।
 कार्पास्यकल्यत्र वन्यायां भारद्वाज्यपि कुष्ठनुत् ॥ ६९ ॥
 विषन्त्यां भञ्जिका भाञ्जी विष्टा ब्राह्मण्यष्टिका ।
 ब्रह्मदण्डी च पद्मा च सारपण्या स्थिरा ध्रुवा ॥ १०० ॥
 कोकिलाक्षस्तु काण्डेक्षुरिक्षुरः क्षुरकः क्षुरः ।
 वासके त्वाटरूपः स्यात् सिंहास्यो वाजिदन्तकः ॥ १०१ ॥
 वाशा सिंही वैद्यमाता वार्ताक्यां दुष्प्रधर्षिणी ।
 वातिङ्गनस्तु भण्डाकी वार्ताकुहिङ्गुलुः स्त्रियाम् ॥ १०२ ॥
 गोष्ठवातिङ्गने त्वेला परुका जलजम्बुका ।
 हस्तिवातिङ्गने त्विभ्या विशाला दद्रुनाशिनी ॥ १०३ ॥
 बृहत्यां प्रसहा काली वार्ताकी हिङ्गुदी कुली ।
 लतावृहत्यां सुस्त्रिग्धा धन्या प्रसहनी लता ॥ १०४ ॥
 निदिग्धिकायां सन्धानी महासन्धा गिरिप्रिया ।
 कण्टकाल्यां परिकूरा कुल्या कुल्यस्पृशी वरा ॥ १०५ ॥
 दुःस्पर्शा राष्ट्रिका सिंही कण्टकाली निदिग्धिका ।
 दण्डोत्पले सहा देवा तलपोटे प्रमेहनुत् ॥ १०६ ॥
 हयपुच्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा ।
 मार्कवे भृङ्गराजः स्यात् पर्पणस्तु श्वपामनः ॥ १०७ ॥
 कालमेष्ठ्यां कृष्णफला वागूची वसुवञ्जिका ।
 सोमवल्ली पूतिफली सोमराजिरवत्गुजः ॥ १०८ ॥
 पारित्राण्यां त्रायमाणा त्रायन्ती बलभद्रिका ।
 रेवत्यां रामदूती स्याद्धारुणी नागदन्त्यपि ॥ १०९ ॥
 श्रीफल्यां क्लीतकी नीली नीलकेशी महारसा ।
 प्रासीणा रञ्जनी तुत्था कारवाही च नीलिनी ॥ ११० ॥
 फल्गुः काकोदुम्बरिका बलयूर्जघनेफला ।
 दास्यां षडश्रा शार्ङ्गष्टा काकजङ्घा विलोमिका ॥ १११ ॥
 काकनासा तु काकाङ्गी जीवनीया शिरोरुहा ।
 तृङ्घ्न्यां वयस्या काकोली काकमाची तु वायसी ॥ ११२ ॥
 प्रत्यक्छ्रेण्यां सुतश्रेणी द्रवन्ती शम्बरी वृषा ।
 चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी रण्डा मूषिकपर्ण्यपि ॥ ११३ ॥
 देव्यां मूर्वा धनुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्णिका ।
 मधूलिका तिक्तवल्का पीलुनी तेजनी स्रवा ॥ ११४ ॥

प्रत्यक्पर्णी तु शिखरी किणिही खरमञ्जरी ।
 अपामार्गः शैखरिको धामार्गवमयूरकौ ॥ ११५ ॥
 अजशृङ्ग्यां विषाणी स्याद् गोजिह्वादाविके समे ।
 शङ्खिनी चोरपुष्पी स्यात् केशिनी चाप्यथो लघु ॥ ११६ ॥
 वर्षा लङ्कायिका स्पृक्का मरुन्माला लता मरुत् ।
 कच्छूरके द्राविडकः काल्यको वेधमुख्यकः ॥ ११७ ॥
 निर्गुण्ड्यामिन्द्रसुरसः सिन्धुवारश्च सिन्दुकः ।
 कुठेरके तु पर्णासो मालोर्जरकठिञ्जरौ ॥ ११८ ॥
 सितेऽस्मिन् मञ्जरी तीक्ष्णस्तीक्ष्णगन्धोऽर्जकोऽत्रः तु ।
 सुगन्धौ श्वेतसुरसा भारती तुलसी शिवा ॥ ११९ ॥
 अल्पपत्रस्तु जम्बीरः फणिर्जकसमीरणौ ।
 अस्मिन् सुगन्धौ सौवासो मञ्जरीकमयूरकौ ॥ १२० ॥
 तीक्ष्णे तीक्ष्णार्जको गौरी भूतघ्नी देवदुन्दुभिः ।
 अल्पमात्रे तु वैकुण्ठो बिल्वगन्धो वचाच्छदः ॥ १२१ ॥
 कालपण्यां तु सुरभिः करालः कालमालकः ।
 मालो ब्रह्मजटायां तु सलज्जं दानवाञ्जनम् ॥ १२२ ॥
 पुण्डरीकं दमनकं कान्तं दान्तं मुनिः पुमान् ।
 विष्णुक्रान्ता तु सुमुखी गवसी स्यान्महारसा ॥ १२३ ॥
 ऋषणी द्रोणिका ह्यत्रा चक्षुष्या द्रोणपुष्पिका ।
 सूर्यावर्ते पणिकायां मोरटा मूलपुष्पिका ॥ १२४ ॥
 मुण्ड्यां मुण्डितिका मुण्डा श्रमणी श्रमणी बुधा ।
 रोदन्त्यां कच्छुरानन्ता ताम्रमूला दुरालभा ॥ १२५ ॥
 यासो यवासो दुस्स्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ।
 वृश्चिकाल्यामुष्ट्रधूम्रपुच्छिका नागवृन्तिका ॥ १२६ ॥
 सर्पदंष्ट्रचमरा काली विषघ्नी वृश्चिकच्छदा ।
 वाटपुण्यां बला वाट्या सम्मासा चान्नसंज्ञिका ॥ १२७ ॥
 वाट्यालोऽतिबलायां तु पुष्पवीर्या जनी सहा ।
 अश्वकन्दस्त्वश्वगन्धी तिक्ते तु कटुपर्पटौ ॥ १२८ ॥
 ऋषमी त्वजहाध्यण्डा कण्डूरा प्रावृषायणी ।
 कपिकच्छूः शूकशिम्बिरात्मगुप्ता च कच्छूरा ॥ १२९ ॥
 अस्थिमांस्त्वस्थिसङ्घातोऽप्यस्थिसन्नहोऽपि च ।
 एकाष्टीला पापचेली स्थापनी वनतिक्तिका ॥ १३० ॥

पाठाम्बष्टा विद्वकर्णी प्राचीना श्रेयसी रसा ।
 गुड्ढ्यां कुण्डली धीरा छन्ना छिन्नरुहा धरा ॥ १३१ ॥
 वत्सादनी सोमवल्ली विशल्या चक्रलक्षणा ।
 जीवन्ती खरुहा देवी विषघ्न्यमृतवल्लीका ॥ १३२ ॥
 दीर्घवल्ल्यां वेत्रवन्यौ कुरुवेत्रश्च भूरदः ।
 गवाक्ष्यां किणिही जैत्री प्रत्यक्छेप्यपराजिता ॥ १३३ ॥
 विष्णुक्रान्ता परास्फोताश्वखुरी शीतलात्र तु ।
 श्वेतायां चारिणी सूर्या गिरिकर्णी गवादिनी ॥ १३४ ॥
 नीलायां तु भद्राश्वेता निष्ठ्यान्ता स्थूलपुष्पिका ।
 जिङ्ग्यां समङ्गा विकसा मञ्जिष्ठाञ्जनवल्लीका ॥ १३५ ॥
 पृश्निपर्ण्या पृथक्पर्णी लाङ्गली पद्पर्णिका ।
 गुहा कलशिधावन्यौ दीर्घा सा चित्रपर्णिका ॥ १३६ ॥
 सिंहपुष्पी फेरुविन्ना चित्राङ्गी क्रोष्टुमेखला ।
 नागार्या केशिका त्र्यशना त्रिपुटा त्रिपुटी त्रिवृत् ॥ १३७ ॥
 रेचनी महती श्वासा माया कुठरुणात्र तु ।
 कृष्णायां रोचनी श्यामा काला चित्रा सुषेण्यपि ॥ १३८ ॥
 गोपा तु शारिवा भद्रा नागजिह्वा सुगन्धिका ।
 ज्योतिष्मत्यां पीतरसा लगणा कटभीङ्गुदी ॥ १३९ ॥
 पारावतपदी पिण्या जीवन्ती स्फुटवल्कली ।
 नागवल्ली तु ताम्बूली तथा ताम्बूलवल्लीका ॥ १४० ॥
 क्षुरे तु कण्टकिफलः क्षीगोभ्यां कण्टकः परः ।
 गोक्षुरः स्थलशृङ्गाट इक्षुगन्धा पलङ्कपा ॥ १४१ ॥
 श्वदंष्ट्रा भीरुपर्ण्या तु शतमूली शतावरी ।
 इन्दीवरी बहुसुताप्यहेरुः पीवरीति च ॥ १४२ ॥
 सुदर्शनायां चक्राङ्का दध्याली वृषपर्ण्यपि ।
 जीवन्त्यां जीवनी जीवा जीवनीया मधुश्च सा ॥ १४३ ॥
 चर्मपर्ण्या तु शार्ङ्गाष्टा सुताह्वयामुपोदिका ।
 ब्रह्म्यां सत्यवती ब्राह्मी मत्स्याक्षी सोमवल्लरी ॥ १४४ ॥
 मण्डूकपर्ण्या भण्डीरी भाण्डी योजनवल्ल्यपि ।
 शोफघ्न्यां पूरणा पूरी वर्षाभ्वी जीवबोधिनी ॥ १४५ ॥
 पुनर्नवा च रक्तायां तस्यां योग्या कटिस्तका ।
 श्वेतायां वृश्चिकोऽल्पायां दीर्घपत्री विटाटिका ॥ १४६ ॥
 अस्या जात्यन्तरे स्वल्पे पूरणी हस्तिपूरणी ।
 तुण्डिकेया रक्तफला बिम्बोष्ठी पीलुपर्ण्यपि ॥ १४७ ॥

लज्जालुस्तु नमस्कारी बदर्यञ्जलिकारिका ।
गण्डकाली खदिर्या तु लज्जालुः स्याच्छमीफला ॥ १४८ ॥
कलम्ब्यां शतपर्वा स्यात् कलम्बूर्वायसी वधा ।
पटुञ्जिकायां तु शिवः शान्तः स्वस्तिककुक्षुटौ ॥ १४९ ॥
निद्रालुः करुणो मानी वनालुः सुनिषण्णकः ।
मारिषे जीवशाकः स्यादत्राल्पे तण्डुलीयकः ॥ १५० ॥
मेघनादो विगण्डीरमथ स्युर्देवमारिषे ।
विभाजनो रसोत्सृष्टौ काणमारिष ओलकः ॥ १५१ ॥
लतामारिषतुवरौ वरशाकोलताटिकाः ।
जलजोऽसौ चच्छटकः कुकुण्डे कबकोऽस्त्रियाम् ॥ १५२ ॥
भूवत्खरमहिच्छत्रं भूस्फोटं भूमिकन्दकम् ।
छत्राकश्च सिलिन्ध्रश्च मुकुलेऽस्मिन् पलाण्डुकम् ॥ १५३ ॥
सृगालवास्तुके त्वारुर्वास्तुके क्षारपत्रकः ।
प्रवालो वीरशाकश्च श्रूषायां कासमर्दकः ॥ १५४ ॥
हरिपर्णे मल्लकोऽस्त्री सेकिमं बुस्तिका न पण् ।
नीलकण्ठोऽथ मरुजे शिवं चाणक्यमूलकम् ॥ १५५ ॥
मत्स्याद्यां शालशालीनौ पत्तूरो लोहमारकः ।
अगस्त्ये मुनिमार्जारान्नगस्तिर्वज्रसेनकः ॥ १५६ ॥
शुकनासोऽप्यथो पश्चात् सुन्दरो ग्रीष्मसुन्दरः ।
कपित्थपञ्चयधःपुष्पी व्रणघ्नी भरसी भरा ॥ १५७ ॥
प्रपुष्पाडे त्वेडगजो दद्रुघ्नश्चक्रमर्दनः ।
घोषे कोशफला घण्टा घण्टाला फलिनी फली ॥ १५८ ॥
जाली पटोली ऋण्डाली कोशातक्यपि चात्र तु ।
पृथौ महाकोशातकी मृदङ्गः कृतवेधनः ॥ १५९ ॥
ज्योत्स्न्यां स्वल्पफला ग्राम्या मृदङ्गः कृतवेधनः ।
अथ जिङ्गी दीर्घफला मागधी मलनोत्तमा ॥ १६० ॥
बहुजाल्यां कोशफला वन्या तिक्तपटोलिका ।
कर्कोटक्यां कोशफला राजकोशातकी फला ॥ १६१ ॥
महाजाली पीतघोषा क्षोडो धामार्गवोऽपि च ।
हस्तिघोषे तरङ्गोऽल्पे त्वादाली देवदाल्यपि ॥ १६२ ॥
चाङ्गेर्या चुक्रिका दन्तशाठाम्बण्टाम्ललोण्यपि ।
सुषण्यां तिक्तच्छदनः कारवेल्लः कठिल्लकः ॥ १६३ ॥

राजवल्ल्युरुवल्ल्यम्बुवल्ली रञ्जनवल्ल्यपि ।
 सुगन्धके तु कर्कोटः किलासन्नः पटुच्छदः ॥ १६४ ॥
 बृहत्कर्कोटके त्वैहो हस्तिकर्कोटको बली ।
 पटोलके तु राजीवान् रवणः कर्कशः पटुः ॥ १६५ ॥
 राजी राजामृतापाण्डुभूतेभ्यश्च फलः परः ।
 तिक्ते राजपटोलश्च भीरुस्त्विर्वारुकर्कटिः ॥ १६६ ॥
 चोदन्युर्वारुवालक्योऽप्यल्पा सा राजकर्कटिः ।
 तुम्ब्यां पिण्डफलालावूः कटुतुम्ब्यां नृपात्मजा ॥ १६७ ॥
 इदवाकुर्वासनी निम्ना वृन्ततुम्ब्यां तु तुम्बुका ।
 अल्पतुम्ब्यां कुक्कुटाक्षो वृन्ते कर्कोलिचित्रलौ ॥ १६८ ॥
 कालिङ्गोऽल्पेऽत्र चेन्नाणचेन्नालौ क्रोष्टुकर्कटिः ।
 कालिङ्ग्यां छत्रकः सोमः कर्कार्धनवासकः ॥ १६९ ॥
 कूश्माण्डकः पुष्पफलः पीतपुष्पो नृपात्मजः ।
 महाफला शाकफला सुभद्रा शङ्कुलापि च ॥ १७० ॥
 सुखवासे शीर्णवृन्त उग्रगन्धः सुवासकः ।
 त्रिलिङ्गे त्रपुषे तालुः छर्दनी हस्तिपर्णिनी ॥ १७१ ॥
 चिद्भिटे पुनरुर्वारुर्मुगाद्यां गजचिद्भिटा ।
 विटङ्कोऽतिमृगेर्वारुर्विशालेन्द्रीन्द्रवारुणी ॥ १७२ ॥
 अथो गवाद्यां गोडुम्बा चित्रा च कदले पुनः ।
 वृषा वारुषा रम्भा काष्ठीलानंशुमत्फला ॥ १७३ ॥
 कदली दीर्घपर्णी च रम्भा सा गौरपर्णिका ।
 कृष्णा तु लम्पा कदली माहेन्द्री तु बृहत्फला ॥ १७४ ॥
 सुगन्ध्यल्पफला मोचा साष्ठी काष्ठी कदल्यसौ ।
 बिभीतकखिलिङ्गः स्यात् कलिस्तिष्ठ्यः कलिद्रुमः ॥ १७५ ॥
 बिभीदकः कर्षफलो भूतवासो वहेटकः ।
 दैत्यः पापस्तुषः कल्पः कालेयस्तुमुलाक्षकः ॥ १७६ ॥
 संवर्तश्च पडश्रायां त्रिलिङ्ग्यामलकी शिवा ।
 धात्री कर्षफला तिष्ठ्या सेव्याध्यण्डा भृता दृढा ॥ १७७ ॥
 हरीतक्यां शुक्रसृष्टा नन्दिनी साधिकाभया ।
 अव्यथा चेतकी पथ्या धारणी कालकूणिका ॥ १७८ ॥
 गुञ्जायां कृष्णला ताम्रा शार्ङ्गश्रा रक्तिका वरा ।
 चूडामणिः कपिक्रोडा कालवृन्ती परा नव ॥ १७९ ॥
 काकशब्दात् पीलुपीथ्यौ चिञ्चाणन्त्यदनी नखी ।
 जङ्गा तिक्ता च वक्ष्सा च सा शुक्रा चेन्मधुसूता ॥ १८० ॥

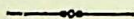
द्राक्षायां कृष्णिका स्वाद्वी प्रियाला कालमेषिका ।
 हारभूरा दारुफला मृद्वीका गोस्तनी रसा ॥ १८१ ॥
 मालत्यां रेवती जातिर्यूथिकायां मनोज्वला ।
 मानवी चात्र पीतायां वासन्ती हेमपुष्पिका ॥ १८२ ॥
 मल्लिकायां विचकिलो भूपदी मुक्तबन्धना ।
 शीतभीरुर्मदयन्ती गवाक्षी तृणशून्यकम् ॥ १८३ ॥
 देवमाल्यां वरारोहा गोधामाल्यां तु सेवनी ।
 सुरुपायां तृणं वेश्यं काकमाल्यां वनोद्भवा ॥ १८४ ॥
 आस्फोता चैकपटलमाल्यां बालाऽथ रक्तकः ।
 बन्धूको बन्धुजीवश्च सप्तलायां विभावनी ॥ १८५ ॥
 सुगन्धा ग्रैष्मिकाताना मालिका नवमालिका ।
 शोफालिका तु निर्गुण्डी नीलिका निवहात्र तु ॥ १८६ ॥
 सितायां श्वेतसुरसा वासन्त्यां माधवी लता ।
 निस्सङ्गजा कान्तनाला प्रहसन्ती कुटुम्बिका ॥ १८७ ॥
 अतिमुक्तश्च कन्यायां कुमारी तरुणी सहा ।
 महासहायामम्लानः पीताम्लाने कुरण्डकः ॥ १८८ ॥
 शोणे बली कुरवको भाटेऽस्मिन् कलशोदकः ।
 किङ्किराते किङ्किराटः प्रलोही चापि लातकः ॥ १८९ ॥
 सैरेयके तु झिण्टी स्त्री तस्मिन् कुरवकोऽरुणे ।
 दासी सहाऽप्यार्तगलः कुरण्डश्च सनीलकः ॥ १९० ॥
 पीतेऽव्ययः कुरवकः सहा स्त्री सहचर्यषण् ।
 कुन्दे माध्यः शुक्लपुष्पो वासोऽथ करवीरकः ॥ १९१ ॥
 प्रतिहासः शतप्रासः शितिकुम्भोऽश्वमारकः ।
 चण्डातोऽश्वरिपुः श्वेते मरालोऽत्रातिलोहिते ॥ १९२ ॥
 भुज उग्रविषः काकनासायां शिवमल्लिका ।
 बकपुष्पस्तूलपुष्पः काकशीर्षः शिवप्रियः ॥ १९३ ॥
 वसुभट्टः पाशुपत एकाष्ठीलोऽम्बुको वसुः ।
 नन्द्यावर्ते तु तगरस्तारावटनभोऽङ्गणौ ॥ १९४ ॥
 जपायामोढपुष्पं स्यादत्र पद्मदयोऽपि च ।
 विदार्या भूमिकुष्माण्डः सा तु कृष्णा पलाशिका ॥ १९५ ॥
 कोष्ठिका क्षीरशुक्लेक्षुगन्धिकेक्षुविदारिका ।
 श्वेता क्षीरविदारी सा महाश्वेतर्क्षगन्धिका ॥ १९६ ॥

शारद्यां लाङ्गली तोयपिप्पली शङ्कुलादनी ।
 गोलोभ्यां जटिलोभ्रोमगन्धा तीक्ष्णा जया वचा ॥ १६७ ॥
 मङ्गल्या चाथ शुक्ला सा षड्ग्रन्था जललम्बिका ।
 श्यामा तु सा घुणाभीष्टा कोशमीरी देवदुन्दुभिः ॥ १६८ ॥
 कैवर्ती मुस्तकेत्वासौ गुन्द्रायां भद्रमुस्तकः ।
 महोदरी वरारोहा नादेयी वलयो वरम् ॥ १६९ ॥
 मुस्तायां मुस्तकं न स्त्री सुगन्धः कर्णपूरकः ।
 शङ्कुलाक्षः श्वेतमध्ये हंसः पीठरदुन्दुभे ॥ २०० ॥
 जलमुस्ते तु प्लवनं गोदर्भं परिपेलवम् ।
 कुटन्नटं दशपुरं गोपुरं वर्तकं प्लवम् ॥ २०१ ॥
 बालं तु पिङ्गलं वज्रं ह्रीवेरं दीर्घरोमकम् ।
 चामरं चमकं ज्येष्ठं बहिष्ठं जटिलं जटो ॥ २०२ ॥
 शैलमूलं तु कञ्चोरं पलाशो हिमजा जटी ।
 अशोभ्यां मुसली ताली तालमूली फलिन्यपि ॥ २०३ ॥
 खञ्जेऽरिष्टो गुहोच्छिष्टो रसोनो गृञ्जनः कटुः ।
 कायाङ्गं लशुनं दिव्यं महाकन्दामृतोद्भवे ॥ २०४ ॥
 जीर्णकञ्च पलाण्डुस्तु श्वेतकन्दो मुकुन्दकः ।
 हरितेऽस्मिन् लतार्कः स्यात् फरुण्डो दुद्रुमो रसः ॥ २०५ ॥
 स्वल्पकन्दे हरिद्रक्ते गृञ्जनो गर्जनो गुजः ।
 लशुनं दीर्घपत्रं च पिच्छनद्धो महौषधः ॥ २०६ ॥
 फरुण्डश्च पलाण्डुश्च लतार्कश्च परारिका ।
 गृञ्जनो यवनेष्टश्च पलाण्डोर्दश जातयः ॥ २०७ ॥
 कन्दं त्वक्षी चित्रदण्ड उल्लूः कण्डूरसूरणौ ।
 अशोभो दैत्यमदनः कचूस्तु दलकूर्चिका ॥ २०८ ॥
 शकटश्चाथ कालाची नूतनं वेष्टितं दलम् ।
 शोथशत्रौ महापद्मो मोहो माणो बृहच्छदः ॥ २०९ ॥
 वराहकन्दे वाराही चक्रोष्ठ्यां मालुवा स्त्रियाम् ।
 मध्वालुको मधुरसः कन्दलः कन्दली समौ ॥ २१० ॥
 गौर्या हरिद्रा रात्र्याख्या हेमघ्नी काञ्चनी परा ।
 रोचनी रञ्जनी पीता पिङ्गा पिण्डा मनशिशला ॥ २११ ॥
 तोषणी वर्णिनी बाला विटकान्ता तरङ्गिणी ।
 दाव्या दारुहरिद्रा स्यात् पीतदारुश्च पर्जनी ॥ २१२ ॥
 पचम्पचा कर्कटिनी पर्परा पर्पटी वरा ।
 कटकुटेरी कालेयः प्रकोट्यां तु कटूत्कटम् ॥ २१३ ॥

कटुभृङ्गं शृङ्गिवेरमार्द्रमार्द्रकमस्त्रियौ ।
 वेणौ तु वंशकर्मारौ मृत्युपुष्पस्तृणध्वजः ॥ २१४ ॥
 त्वचिसारो यवफलः खिलस्तेतनमस्करौ ।
 चपश्च तेषु पवनोद्धूतध्वनिपु कीचकाः ॥ २१५ ॥
 निस्सुषौ विषमो वेणौ क्षुद्रे लगुडवंशिका ।
 तृणराजे तलस्तालो महापत्रः फलेरुहः ॥ २१६ ॥
 क्रमुके वाटिका घोण्टा गुवाकः क्रूर आसवः ।
 कषयो रागवान् पूगः फले पर्कटमस्य तत् ॥ २१७ ॥
 पक्वं जोडं खरं शुष्कं चिक्कणे चक्कचक्कणे ।
 दीर्घवृन्ते रामपूगो लतापूगे तु योजनः ॥ २१८ ॥
 भूपूगे लघुकः क्षुद्रफले पाधोवकापि च ।
 पूगे गैरेयकः शैलजातेऽथ स्याल्लताङ्कुरः ॥ २१९ ॥
 हिन्तालस्तृणराजश्च नालिकेरे तु लाङ्गली ।
 दाक्षिणात्योऽप्फलोऽबालः सुतङ्गः कूर्चकेसरः ॥ २२० ॥
 सदाफलो बली चास्मिन् ह्रस्वे स्यात् खुड्डकोऽत्र तु ।
 रक्ते स्वर्णोऽम्बिकश्चाथ परिकोणास्य पट्टके ॥ २२१ ॥
 खपुरः पूगपट्टोऽथ मधुक्षीरो महारसः ।
 परुषः पाण्डुखर्जूरौ तस्मिन् खर्जूरिकाऽल्पके ॥ २२२ ॥
 हलीमे केतकी न क्ली दीनो व्यञ्जनजम्बुलौ ।
 स्त्रीभूषणो रजःपुष्पो गुप्तरागो वलीनकः ॥ २२३ ॥
 ताल्यां दृढदला ताडी पत्रताली वराङ्गना ।
 पत्रला फलपाकान्ता तालाद्याः स्युस्तृणद्रुमाः ॥ २२४ ॥
 सवेणवस्ते त्वक्सारस्तृणानीक्षुयवादयः ।
 इक्षुवृष्यो मधुतृणो मृत्युपुष्पो महारसः ॥ २२५ ॥
 खड्गपत्रोऽप्यथानिष्पुर्वीयसालीक्षुपालिका ।
 इक्षुमेदास्तु कान्तारवंशपुण्ड्रादयो नरि ॥ २२६ ॥
 दर्भोऽश्ववालः काशिर्ना काशोऽस्त्री स्त्रीक्षुगन्धिका ।
 कुशो मुनिः कुथो दर्भो वीनाहो यज्ञजागरः ॥ २२७ ॥
 लताकुशे तु शीरी स्त्री धमने शुषिरो नलः ।
 शरो मुञ्जो भद्रमुञ्जो गुन्द्रस्तेजनकः खरः ॥ २२८ ॥
 मुञ्जस्तु यज्ञियो मेथ्यो मृदुत्वग्रहमेखलः ।
 चत्त्वक्स्तूलपो दर्भ ऊर्ध्वमूलः खरच्छदः ॥ २२९ ॥

बालकेश्यां दृढदला जूर्णा कृकणपत्रिका ।
 पुंभूम्नि बल्लजा वात्यां त्विल्कटः स्यात् पराशकः ॥ २३० ॥
 स्याद्वीरणं वीरवृणं मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् ।
 सेव्या मृणालनलदलामज्जानि जलाशयम् ॥ २३१ ॥
 नियुतस्तम्बजदृढदैत्यगौरकुदानवम् ।
 अभयं चावदाहं च दूर्वा तु हरितालिका ॥ २३२ ॥
 वरा सहस्रवीर्या च भार्गवी चाथ सा सिता ।
 गोलोमी शतवीर्या च गोऽर्गलस्त्वेरका वृणम् ॥ २३३ ॥
 सौगन्धिकं देवजग्धं ध्यामकं कत्तुणं पुरम् ।
 छत्रातिच्छत्रापालन्नौ मालावृणकभूस्त्वयो ॥ २३४ ॥
 पुञ्जीलस्तु वृणस्तम्ब इषीका तूलिका समे ।
 शष्पं बालवृणं शादः सर्वं तु वृणमर्जुनम् ॥ २३५ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 भूमिकाण्डे वनाध्यायः ॥ ३ ॥



पशुसङ्गहाध्यायः ॥ ४ ॥

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यः पारीन्द्रः श्वेतपिङ्गलः ।
 व्यादीर्णास्यो महानादः शार्दूलस्तुल्यविक्रमः ॥ १ ॥
 कण्ठीरवो मृगरिपुः सुगन्धिर्हरितो हरिः ।
 हलीक्ष्णस्तृणसिंहः स्यात् कूटरुर्मृगर्हिसकः ॥ २ ॥
 व्याघ्रो मृगारिः शार्दूलो हिंसारुश्चन्द्रकी मृगात् ।
 हुण्डश्चाल्पस्त्वयं द्वीपी चुलुको भेलमेहिनौ ॥ ३ ॥
 तरक्षुस्तु मृगाजीवस्तिलित्सकमृगादनौ ।
 पिण्डारकस्तु चित्राङ्गो महादंष्ट्रो वरोत्कटः ॥ ४ ॥
 वराहः सूकरो घोणी वक्रदंष्ट्रो जलप्रियः ।
 पीनस्कन्धः स्तब्धरोमा कामरूपी तलेक्षणः ॥ ५ ॥
 भूदारः कुमुखो घृष्टिः स्थूलनासो बहुप्रजः ।
 पङ्कक्रीडनकः पोत्री किटिराखनिकः किरिः ॥ ६ ॥
 भल्लूको दीर्घरोमर्क्षो भल्लाटो वृक्षधूर्तकः ।
 विकरालोऽच्छभल्लश्च गण्डके खड्गखड्गिनौ ॥ ७ ॥
 वार्ध्राणसो गणोत्साहः कोकस्त्वीहामृगो वृकः ।
 महिषः सैरिभोऽश्वारिर्जलात्मा गद्गदस्वरः ॥ ८ ॥
 लुलायः कासरः शृङ्गी हेरम्बः कृष्णशृङ्गकः ।
 जरन्तः कलुषः पोत्री वीरस्कन्धो रजस्वलः ॥ ९ ॥
 स्कन्धशृङ्गो यमरथः कटाहो दंशलालिकः ।
 हंसकालीसुतश्चाथ सृजया महिषोऽसितः ॥ १० ॥
 गवलश्च परस्वांश्च महिषः स्यादरण्यजः ।
 मृगः प्लावी भीरुचेता वननो मरुको लिगुः ॥ ११ ॥
 नित्यशङ्की च कृष्णस्तु कृष्णसारो निरञ्जनः ।
 यज्ञाङ्ग एणस्ताम्रस्तु हरिणस्तृणसंवरः ॥ १२ ॥
 राजीवस्त्वेष राजीमान् सितक्रोडः स चीनकः ।
 शम्बरस्त्वल्पहरिणः पृषतस्तु स बिन्दुमान् ॥ १३ ॥
 रुरुर्महान् कृष्णसारः कुरङ्गो हरिणो महान् ।
 रोहिदृश्यो हरिणवन्मृदुशृङ्गः प्रतापसः ॥ १४ ॥

न्यङ्कुस्तु शम्भराकारक्षिकेण विपुलोन्नतः ।
 परम्परस्तु गोकर्णः पोटरूपस्तु तत्समः ॥ १५ ॥
 रौहिषो गर्दभाभासो रोहितः श्वेतराजिमान् ।
 वातायुः स्याद्वातमृगो जवी वातप्रभोः शिवः ॥ १६ ॥
 प्रियको रोमभिर्युक्तो मृदूषमसृणैर्धनैः ।
 नीलः स श्वेतरखावानथवा श्वेतचन्द्रकः ॥ १७ ॥
 कदली तु बिले शेते मृदुरूक्षोच्चकवुरैः ।
 नीलाग्रै रोमभिर्युक्ता सा विंशत्यङ्गुलायता ॥ १८ ॥
 श्यामिका तु श्वेतबिन्दुः श्यामला षोडशाङ्गुला ।
 चतुरा तु घनस्निग्धरोमा श्यामा सचन्द्रका ॥ १९ ॥
 कालिका त्वसिता यद्वा कपोता पिङ्गबिन्दुका ।
 सामूना तु समूरुर्ना सार्धहस्तसमायता ॥ २० ॥
 गोधूमाभाऽथवा कृष्णा स्निग्धोच्चमृदुरोमिका ।
 चीनस्तु चीनसी स्त्रीत्वे कपोता त्रिशदङ्गुला ॥ २१ ॥
 मरुजा तूचमसृणमृदुपाण्डुरोमिका ।
 रोमराजीमती मध्ये द्वादशाङ्गुलसंमिता ॥ २२ ॥
 चनका तु चमूरुर्ना सिताभा यदि वासिता ।
 कृष्णरोमानुविद्धा वा पुच्छोऽस्या न भवत्यपि ॥ २३ ॥
 सेलिमस्तु मृदुश्वेतरूक्षोच्चघनरोमकः ।
 चमूरुस्तु महाग्रीवः सितः केसरवान् जवी ॥ २४ ॥
 कदली तु श्यामवर्णा हस्तायामा महोदरी ।
 एते स्युः कृष्णसाराद्या मृगा अजिनयोनयः ॥ २५ ॥
 शशतुल्या विजातिश्च रक्ताभा मृगमातृका ।
 बिलेशया तु कृमिरा कुमारी तु हिमद्युतिः ॥ २६ ॥
 कुचारुश्चारुपुच्छः स्यात् सुविषाणो वृषाकृतिः ।
 कृतारुस्तु स निष्पुच्छो जायते हिमवत्तटे ॥ २७ ॥
 रुचुस्तु शुद्धो मेषाभः स पीतः सूकराकृतिः ।
 कृष्णे शृङ्गे च तस्याथ कृतमालो वृकाकृतिः ॥ २८ ॥
 सृमरः स्याद्बालमृगः परुर्ना चमरी न षण् ।
 कालपुच्छस्तु तत्प्रायो नामार्थेनैव भिद्यते ॥ २९ ॥
 चारुकस्तु किशोराभः कन्दरस्तूच्चजानुकः ।
 मृगाः स्युः कृष्णसाराद्यास्त एव पशवः सह ॥ ३० ॥
 सिंहाद्यैश्च शशाद्यैश्च ग्राम्यैश्चैव गवादिभिः ।
 शशस्तु रोमकर्णः स्यान्मृदुरोमा च शूलिकः ॥ ३१ ॥

गन्धर्वः स्याद्गोलपुसो रामस्तु वृकधोरणः ।
 शरभस्तु गजारातिरुत्पादश्चाष्टपादपि ॥ ३२ ॥
 गवयः स्याद् वनगवो गोवाही वाहवारणः ।
 कोलाङ्गकस्तु जलको भालुको भल्लुकाकृतिः ॥ ३३ ॥
 पुरोही स्यात् कुलचरो ललनाक्षो वृकाकृतिः ।
 कोटङ्गः स्याज्जन्तुधरो मार्जारी चमराकृतिः ॥ ३४ ॥
 शालिजातस्तु खट्वासः पूतिः खट्वासिकापि च ।
 शिवेव स्याद् गन्धमृगः कस्तूरी मृगपालिका ॥ ३५ ॥
 अण्डौ तु तस्याः कस्तूरी राजार्ह शितिचन्दनम् ।
 मार्जारिका वेधमुख्या मदनी गन्धचेलिका ॥ ३६ ॥
 श्वाविच्छललशल्यौ तल्लोम्यना शलली शलम् ।
 सृगालो भरुजः क्रोष्टा श्वभीरुर्मृगमत्तकः ॥ ३७ ॥
 शयालुः सूचको घोरः फेरुफेरुण्डफेरवाः ।
 मृगधूर्तो भूरिमायो गोमायुर्वृकधूर्तकः ॥ ३८ ॥
 किखिः स्त्री क्रोष्टुभेदेऽल्पे पृथौ लोपाशगुण्डिवौ ।
 वानरो मर्कटः कीशः कपिः शाखामृगो हरिः ॥ ३९ ॥
 महावेगो दधिमुखः कुरङ्गो भल्लुकः पृथुः ।
 वलीमुखो वनौकाः स गोलाङ्गूलोऽसिताननः ॥ ४० ॥
 नीलशीर्षोऽप्यथ द्विवङ्को वानरो रोहिताननः ।
 शृङ्गिणी सौरभेयी गौरध्या माहेय्युषा शुभा ॥ ४१ ॥
 अनड्वाह्यनडुह्युष्मा तम्बा तम्पा निलिम्पिका ।
 रजःपूता च कृष्णाऽसौ बहुला क्षितिसम्भवा ॥ ४२ ॥
 सिता तु धवला पुण्ड्रा सुनन्दा जलसम्भवा ।
 कपिला त्वग्निजा दाक्षी सुरभिः कामरूपिणी ॥ ४३ ॥
 रक्तवर्णा रोहिणी स्याच्छीतला वायुसम्भवा ।
 शबली तु प्रक्षराङ्गी सुमना व्योमसम्भवा ॥ ४४ ॥
 वराङ्गा तु चतुर्वर्णा द्विवर्णा तु द्विहायनी ।
 एकहायन्येकवर्णा बहुक्षीरा तु वञ्जुला ॥ ४५ ॥
 नैचिकी गौर्गवां श्रेष्ठा भद्रा गौर्गोमतल्लिका ।
 काल्योपसर्या प्रजने पलिकनी बालगर्भिणी ॥ ४६ ॥
 पष्ठौह्यन्या वशा बन्ध्या वेहद्रर्भोपघातिनी ।
 अवतोका स्रवद्रर्भा वत्सकामा तु वत्सला ॥ ४७ ॥

चिरसूता वष्कयणी गृष्टिः सूतवती सकृत् ।
 समांसमीना सा गौर्या प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥ ४८ ॥
 पीनस्तनी तु पीनोन्नी सुखदोह्या तु सुव्रता ।
 दुःखदोह्या तु करटा प्रस्तुता प्रसवोन्मुखी ॥ ४९ ॥
 द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा बहुसूतिः परेषुका ।
 धेनुर्नवप्रसूता गौर्धेनुष्या बन्धके स्थिता ॥ ५० ॥
 अभिवान्यान्यवत्सा गौर्वृषाक्रान्ता तु सन्धिनी ।
 आपीनमूढो वृन्तं तु स्तनो वत्सस्तु तर्णकः ॥ ५१ ॥
 विषाणी वृषभः शृङ्गी वाहो गौरक्षधूर्तिलः ।
 उक्षा गौर्वृषलोऽनड्वान् वाह्यः स्कन्धवहो वही ॥ ५२ ॥
 सौरभेयो बलीवर्दो बाडवेयश्च शाकरः ।
 षण्डस्तु गोपतिः श्रीमान् डङ्क इट्वर ईश्वरः ॥ ५३ ॥
 ककुदी गोवृषो घोणः ककुद्धान् मदकोहलः ।
 जातोक्षो जातमात्रोक्षा दम्यो वत्सतरः समौ ॥ ५४ ॥
 महोक्षः स्यादुक्षतरो वृद्धोक्षस्तु जरद्भवः ।
 आर्षभ्यः षण्डतायोग्यो नैचिक्याः प्राक् परे त्रिषु ॥ ५५ ॥
 भयशृङ्गपशुः कूटः प्रष्टवाड् युगपार्श्वगः ।
 स्थूरी पृष्ठयः पृष्ठवाह्यः स्कन्धिकः स्कन्धवाहकः ॥ ५६ ॥
 नस्योतो नस्तिते षोडन् षड्देऽथो धुरन्धरे ।
 धुरीणधुर्यधौरेयाः प्रासङ्गादेस्तु वोढुषु ॥ ५७ ॥
 प्रासङ्ग्यः शाकटो युग्यो हालिकः सैरिकादयः ।
 एवं सर्वधुरीणैकधुरीणैकधुरा अपि ॥ ५८ ॥
 कर्णः कर्णविहीनः स्यात् षण्डस्तु च्छिन्नपुच्छकः ।
 गोमान् गोमी च गोस्वामी गोविन्दोऽधिकृतो गवाम् ॥ ५९ ॥
 नैचिकी गोः शिरोदेशः सास्ना तु गलकम्बलः ।
 गोशकृद्गोमयो न स्त्री गोमन्थिः शुष्कगोमयः ॥ ६० ॥
 दोहलं तु करीषोऽस्त्री गोकुलं गोधनं समे ।
 गोमहिष्यादिकं जीवधनं स्यात् पाशबन्धनम् ॥ ६१ ॥
 छगस्तु छगलश्छागो लम्बकर्णः स्तभः पशुः ।
 बस्तोऽजश्च छगी मञ्जी सर्वभक्षा गलस्तनी ॥ ६२ ॥
 चुलुम्पा चित्रला हृद्या पर्णादा पलिकिन्यजा ।
 इलिकस्तु वनच्छागो वालवीज्यो निरायसः ॥ ६३ ॥

मेघे शृङ्गिणसम्फलवृष्णिपेत्वहुलुहदाः ।
 एडकोऽप्युरणो मीढ उरध्रो रोमशोऽप्यविः ॥ ६४ ॥
 मेघी तु कुरी वेणी जालकिन्यविला रुजा ।
 खररासभचक्रीवद्वाह्वालेयगर्दभाः ॥ ६५ ॥
 रूक्षस्वरो धूस्रकर्णो नेमिर्भारसहः शलः ।
 चिरमेही गोर्दनकः कोलिण्टो बडवापतिः ॥ ६६ ॥
 करभश्च मयस्तूष्ट्रो महाग्रीवः क्रमेलकः ।
 दाशोरकश्च रवणः करभः स्यादसौ शिशुः ॥ ६७ ॥
 करभाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः ।
 श्वा सारमेयः शुनको भषणो मृगदंशकः ॥ ६८ ॥
 दीर्घनादी गृहमृगः कुक्कुरः क्रोधनः शुनिः ।
 यक्ष इन्द्रसहश्चालः कपिलो मण्डलः शुनः ॥ ६९ ॥
 जिह्वापानः पुरोगामी कृतज्ञो रात्रिजागरः ।
 कौलेयकोऽस्थिखादश्च भवनो भलुहोऽपि च ॥ ७० ॥
 शुनी तु खरमा श्वाली विट्चारो ग्रामसूकरः ।
 ओतुर्विडालो मार्जार आखुमुक् पृषदंशकः ॥ ७१ ॥
 जाहको गात्रसङ्कोची मण्डली नखरायुधः ।
 पशुस्तु मलुको मोकः कपः शुद्धो जडश्चरिः ॥ ७२ ॥
 बाले तु बर्करः सूता तूवरः शृङ्गवर्जितः ।
 हिंस्रो व्याघ्रादिको व्यालः श्वापदो मरुलः शरिः ॥ ७३ ॥
 पुच्छोऽस्त्री लूम लाङ्गूलं बालहस्तश्च बालधिः ।
 खुरः शफः शको विष्टा घासस्तु यवस्तः शरिः ॥ ७४ ॥
 रोमन्थनन्तु रोमन्थो रोमोर्णोर्णास्तुकोऽपि च ॥ ७४½ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे पशुसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ४ ॥

मनुष्याध्यायः ॥ ५ ॥

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नरः ।
 द्विपादो नहुषा गोधा व्राताः पञ्चजना नराः ॥ १ ॥
 ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रा इति वर्णाश्रतुष्टये ।
 उपवर्णास्तु सङ्कीर्णा विवर्णास्त्वन्त्यजातयः ॥ २ ॥
 एकवर्णाः सवर्णाः स्युर्हानवर्णास्तु जङ्गिताः ।
 सवर्णं ब्राह्मणाद्राज्ञी सूते मूर्धावसिक्तकम् ॥ ३ ॥
 वैश्याऽम्बष्ठं निषादं तु शूद्रा पारशवश्च सः ।
 एते विवाहजाः पुत्रा व्यभिचारसुताः पुनः ॥ ४ ॥
 अभिषिक्तः कुम्भकारः शूलिकश्च यथाक्रमम् ।
 विप्रादावृतमुग्रस्त्री निषादी तु मनोजवम् ॥ ५ ॥
 अम्बष्ठकन्या त्वाभीरं खञ्जमन्तावसायिनी ।
 आयोगवी धिग्वनकं कुक्कुटी तु पराजकम् ॥ ६ ॥
 भृञ्जकण्ठी तु सौधातं शनकी तु बहिर्गिरम् ।
 वैदेहकी कारुविन्दं मैत्री रन्ध्रं भटी सटम् ॥ ७ ॥
 चण्डाली तु श्वचण्डालं शबरी तु परिच्छदम् ।
 कालकिञ्चं तु करणी यवनी यावशादनम् ॥ ८ ॥
 नटी भटं खपी द्रोहं मागधी तु दमण्डकम् ।
 पराजकी तु सिद्रुण्डं कारुविन्दी कुविन्दकम् ॥ ९ ॥
 रथकारी रथाश्मानमावृती तु खरुञ्जकम् ।
 सूता पारावतं सूते श्वपाकी पालुखञ्जनम् ॥ १० ॥
 पुलकसी भर्मिणं सूते धीवरी तीवरं ततः ।
 एते ब्राह्मणपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ११ ॥
 सूते विप्रा नृपाद्वैश्या माहिष्यं यवनश्च सः ।
 अश्वपण्यमनूढा सा शूद्राऽनूढैव शूलिकम् ॥ १२ ॥
 उग्रमूढा निषादी तु वेणुकं कुक्कुटी कुटम् ।
 तीवरी महिषं वेनी रट्टासं पुलकसी बकम् ॥ १३ ॥
 चण्डाली रुचिटं मल्ली पल्लमुग्री भषा परम् ।
 श्वपाकी कलुषं सूता कीलुषं घर्घरी मिषम् ॥ १४ ॥
 सिद्रुण्डी डिण्डिकं जल्ली भ्रुकुञ्चं शनकी कचम् ।
 कची भ्रेणं भ्रुकुञ्ची तु पागलं पागली गिलम् ॥ १५ ॥

एते क्षत्रियपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ।
 वैश्याद्वैदेहकं विप्रा क्षत्रकन्या तु मागधम् ॥ १६ ॥
 शूद्रा तु करणं सैव जारात् कटकं ततः ।
 कटकर्मो स वेनी तु वागुरं वेणुकी वटम् ॥ १७ ॥
 अम्बष्ठी कोहलं रन्ध्री घर्घरं विन्दकी भ्रषम् ।
 कारुविन्दी पराविद्धमुग्रीवेशं कुटी मटम् ॥ १८ ॥
 कुक्कुटी पलिनं मेदी मालुकं मालुकी मकम् ।
 चण्डाली नीलिकं वाटी मेणकं करणी वशम् ॥ १९ ॥
 रथकारी सनालिङ्गं वैदेही वानवासिकम् ।
 श्वपाकी पाणिशं मल्ली विवुकं डिण्डिकी कशम् ॥ २० ॥
 मैत्री वाटं नटी भोलं प्रसूते कीलुषी फिटम् ।
 घर्घरी धिर्मिणं घोल्मित्येते वैश्यसूतवः ॥ २१ ॥
 चण्डालं ब्राह्मणी शूद्रात् क्षत्रिया पारधेनुकम् ।
 वेलवं सैव चौर्येण वैश्या त्वायोगवं ततः ॥ २२ ॥
 चौर्यात् सा चाक्रिकं वेनी वंशिकं फलिनी कुथम् ।
 निषादी कुक्कुटं भिल्ली शबरं कोहली नसम् ॥ २३ ॥
 पुल्कसी कवटं वाटी मञ्जनं मालुकी मलम् ।
 वैदेहकी नीवलकं धीवरी कलशीनकम् ॥ २४ ॥
 भृज्जकण्ठी कुवादुष्कं करणी कालशीनकम् ।
 सूता मालसुपर्णाण्डौ सैरन्ध्री रथवारकम् ॥ २५ ॥
 नटी भ्राणञ्जकं वाटी विभण्डं द्रमिडी दुहम् ।
 कैवर्ती धीवरं रन्ध्री कलशं यवनी क्षुदम् ॥ २६ ॥
 कारावती सुललिकं कुवादुष्की वशामखम् ।
 चण्डाली पाण्डुकं द्रोही छाणकं महिषी पुरम् ॥ २७ ॥
 वरुटी रुण्डकं घोली वीलकं कवटी पुटम् ।
 एते शूद्रस्य पुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ २८ ॥
 निषादाब्राह्मणी भेकं क्षत्रिया कालकुण्डकम् ।
 वैश्या सूचि हरिं शूद्रा सोऽपि चायोगवः क्वचित् ॥ २९ ॥
 कैवर्ती बुरुलं भिल्ली शनकं शनकी रसम् ।
 श्वपाकी गर्मुटं घोली घर्घरं द्रमिडी कणम् ॥ ३० ॥
 वैदेही कलशं द्रोही भ्रेणकं छाणकी लुषम् ।
 रथकारी मन्दुपालं मागधी मड्डुकैरिकम् ॥ ३१ ॥

आयोगवी तु कैवर्तं निषादान्मार्गरश्च सः ।
 एते निषादपुत्राः स्युर्नानायेषित्समुद्भवाः ॥ ३२ ॥
 जालं वैदेहकाद्विप्रा क्षत्रिया रथकारकम् ।
 वैश्या धन्ववनं शूद्रा गैरुषं करणी कृमिम् ॥ ३३ ॥
 अम्बष्ठी वेनमुग्री तु गर्गरं शनकी हनुम् ।
 आयोगवी तु मैत्रेयं पुलकसी कणकुक्कुटम् ॥ ३४ ॥
 निषादी मेदमन्ध्रं तु सैव चेन्नान्यपूर्विका ।
 एते वैदेहपुत्राः स्युर्नानायेषित्समुद्भवाः ॥ ३५ ॥
 मैत्रेयाद् ब्राह्मणी लालं क्षत्रिया जालभूषणम् ।
 वैश्या छण्डभटं शूद्रा निषादी लोहमालकम् ॥ ३६ ॥
 आयोगवी तु मधुकं चाण्टिकं नान्यपूर्विका ।
 एते मैत्रेयपुत्राः स्युर्नानायेषित्समुद्भवाः ॥ ३७ ॥
 विप्रा नाविकमम्बष्ठादस्मिन् क्वापि श्वपाकवाक् ।
 वैणवं सैव माहिष्याद्रजकं पारधेनुकात् ॥ ३८ ॥
 श्वपचं सैव चण्डालाच्चर्मकञ्चुकजीवनम् ।
 मागधात्ताम्रजीवं सा तक्ष्माणं करणादसौ ॥ ३९ ॥
 आयोगवाच्चर्मकारं राज्ञी वार्मिकसूचकौ ।
 माहिष्याच्चर्मकारं सा खनकं मागधादसौ ॥ ४० ॥
 उद्बन्धं खनकाच्छूद्रा स्पृश्यमम्बरनेजकम् ।
 अधोनापितमम्बष्ठी करणान्मत्स्यबन्धकम् ॥ ४१ ॥
 वैश्या सामुद्रमाजीवेत् पण्यं सामुद्रमेव सः ।
 निषादी धिग्वनाच्चर्मकारं कारावरोऽपि सः ॥ ४२ ॥
 कारावरो निषादेन वैदेह्यामिति केचन ।
 वैदेही पाण्डुसोपाकं चण्डालात् कुङ्कुणश्च सः ॥ ४३ ॥
 आहिण्डिकं निषादात् सा कवटी तु हुरिञ्जकम् ।
 निष्ट्याच्छूद्रा मधुश्रेणि शौण्डिकं मण्डारकम् ॥ ४४ ॥
 उग्री क्रमेलकं तस्मान्निर्णक्ता रजकश्च सः ।
 सोपाकं पुलकसी निष्ट्याच्चण्डालादिति केचन ॥ ४५ ॥
 अन्ध्री तु शबरान्निष्ट्यं भिल्लं सा निष्ट्यपूर्विका ।
 किरातं पर्णशबरी शबरान्निष्ट्यपूर्विका ॥ ४६ ॥
 पुलिन्दपर्णशबरौ किराती निष्ट्यपूर्विका ।
 पुलिन्दश्वपचौ निष्ट्यात् किराती नान्यपूर्विका ॥ ४७ ॥
 रथकारं तु माहिष्यात् करणी माहिषाडुकम् ।
 पुलकसं सैव चण्डालात् किरातात् पलगण्डकम् ॥ ४८ ॥

चण्डालात् पुलकसी डोम्बं निषाद्यन्तावसायिनम् ।
 डोम्बी खपं सैव निष्ठयाद् विभेणं हड्डिकं खषी ॥ ४६ ॥
 तीवरी धीवरात् पौण्ड्रं बर्बरं यवनादसौ ।
 पुलकसात् पामरं वेनाच्छुषं डोम्बाद्वाराणकम् ॥ ५० ॥
 श्वपाकं क्षत्रुरुग्रही केचिदाहुविपयम् ।
 चूचुं किराती शबराद्वैदेहात् पुलकसात् कचित् ॥ ५१ ॥
 निष्ठयात्तु वरुटी मदगुं बल्लारं तु किरातिका ।
 निपादपुल्कसाद्यास्तु पूर्वोक्ता इह नोत्तरे ॥ ५२ ॥
 विप्रा ब्रात्याद् भृज्जकण्ठमावन्त्यं विप्रपूर्विका ।
 अध्यूहा वाटधान्यं सा शैखं सा नान्यपूर्विका ॥ ५३ ॥
 सा पुष्पवं पुष्पवती सम्यगूहा द्विजन्मना ।
 लिच्छिवि क्षत्रिया ब्रात्याज्जल्लं सा विप्रपूर्विका ॥ ५४ ॥
 ब्रात्यपूर्वा तु सा मल्लं क्षत्रपूर्वा तु सा नटम् ।
 प्राक्प्रसूतस्वजातिः सा वरुटं करणश्च सः ॥ ५५ ॥
 सा वैश्यपूर्वा द्रमिडं शूद्रपूर्वा तु सा खषम् ।
 वैश्या ब्रात्यात् सुधन्वानमाचार्यं विप्रपूर्विका ॥ ५६ ॥
 सुधन्वाचार्य एको वा मैत्रं सा वैश्यपूर्विका ।
 शूद्रपूर्वा द्विजन्मानं सात्त्वतं क्षत्रपूर्विका ॥ ५७ ॥
 अपूर्वा भारुषं कारुं ब्रह्मक्षत्रविशाममी ।
 ब्रात्यानां क्रमशः पुत्राः शूद्रा ब्रात्याच्छ्वकण्ठकम् ॥ ५८ ॥
 कुर्वन्त्यनुपनीता ये विवाहं ब्राह्मणादयः ।
 ब्रात्या ब्राताश्च ते सर्वे तत्सुताश्चावृतासु ये ॥ ५९ ॥
 अवरेटः सवर्णायां जाराज्जातः सवर्णकात् ।
 पत्यौ जीवति कुण्डोऽसौ भर्तर्यसति गोलकः ॥ ६० ॥
 अविवाह्यासु जाताश्च तथा स्युः कुण्डगोलकाः ।
 ये च प्रव्रजितापुत्रास्तथा प्रव्रजितस्य ये ॥ ६१ ॥
 क्षत्रकुण्डः पट्टबन्धो भोजः क्षत्रियगोलकः ।
 देवप्रैष्यो विप्रकुण्डो ग्रामप्रैष्यस्तु गोलकः ॥ ६२ ॥
 मणिकारो वैश्यकुण्डः शङ्करस्तु गोलकः ।
 शूद्रकुण्डो मालवको घासहारस्तु गोलकः ॥ ६३ ॥
 एषां लक्षणसिद्धयर्थं केषाञ्चिद् वृत्तिरुच्यते ।
 उक्ता प्रागेव केषाञ्चिन्नाम्ना केषाञ्चिदूह्यते ॥ ६४ ॥

मूर्धावसिक्तः सेनेशो धनुर्वेद्यस्त्रधारकः ।
 मणिमन्त्रौषधिज्ञश्च सोऽम्बष्ठो यानशिक्षया ॥ ६५ ॥
 चिकित्सागणितज्योतिर्ज्ञानी स्यादभिषिक्तकः ।
 अम्बष्ठो भृज्जकण्ठोऽस्य चिकित्सा शस्त्रसाधना ॥ ६६ ॥
 कट्याजीवात्स दौष्पन्तो निषादो ध्वजघोषणात् ।
 कुम्भकारो भाण्डवृत्तिरेष स्यादूर्ध्वनापितः ॥ ६७ ॥
 नाभेरूर्ध्वं वपन् पुंसां सूतकप्रेतकादिषु ।
 चित्रमर्हलनृत्तज्ञः कालीं पारशवोऽर्चयेत् ॥ ६८ ॥
 शूलिको दण्डयेदण्ड्यान् शूलारोपादिकर्मणा ।
 निषादो मृगघातात् स माहिष्यो नृत्तगीतवित् ॥ ६९ ॥
 स एव मङ्कुशोऽथासौ निषादः सस्यरक्षया ।
 जीवनं सवर्णो नक्षत्रैः सोऽम्बष्ठो वैद्यशास्त्रवित् ॥ ७० ॥
 महानर्मा च मद्गुश्च स श्रेष्ठी वैश्यवृत्तितः ।
 अश्वपण्यस्त्वाश्विकाख्यः सोऽश्वव्यापारजीवनः ॥ ७१ ॥
 उग्रो दण्ड्यान् दण्डयेत् स दौष्पन्तो मत्स्यघातनात् ।
 निषादो व्यालादिवधाद्यवनः कुञ्जरग्रहात् ॥ ७२ ॥
 पुरो धावन् पारशवो राज्ञः शस्त्रञ्च धारयन् ।
 धनान्तःपुररक्षश्च शूलिकः शूलिकोपमः ॥ ७३ ॥
 करणो लेखको राज्ञां वारकः शकनामकः ।
 चुचूकः शाकताम्बूलक्रमुकादिकविक्रयात् ॥ ७४ ॥
 रथकारो निधिप्रभृद्यूतापणनिरूपणात् ।
 रथकारो व्यालमृगहिसावृत्तिरिति क्वचित् ॥ ७५ ॥
 उग्रः पारशवो दुर्गधनान्तःपुरपालनात् ।
 अन्वर्थः स्यात् कटकरो द्वादशैतेऽनुलोमजाः ॥ ७६ ॥
 इतिहासपुराणज्ञः सूतो देवांश्च पूजयेत् ।
 सूत ऊढासुतः पक्ता स्थानालङ्कारादिकृत् ॥ ७७ ॥
 सोऽनूढाजो रथाश्वानां वाहको रथकारकः ।
 वैदेहकस्य स्त्रीरक्षा स वन्दी स्तुतिजीवनात् ॥ ७८ ॥
 मौक्त्यो रामको वस्त्रस्थूतिरञ्जनजीवनात् ।
 मागधोऽसावनूढाजो जङ्घाकरिकवृत्तिकः ॥ ७९ ॥
 वाप्याद्यवतरेच्छुद्धयै क्षालयेन्मलिनाम्बरम् ।
 वणिक्पथे मागधस्य वाग्भो राजप्रबोधनम् ॥ ८० ॥

चूचुको वेधनेनासौ स वन्दी स्तुतिकर्मणा ।
 वैतालिको बोधनया वेणुवीणादिवादनैः ॥ ८१ ॥
 धीवरो मार्गसन्त्राणाद् रामको दौत्यजीवनात् ।
 आयोगवः पुल्कसश्च स वासःकांस्यजीवनात् ॥ ८२ ॥
 चौर्याज्जातः पुलिन्दोऽसौ स हन्ता दुष्टसत्त्वकान् ।
 चण्डालो भल्लरीकक्षो वदूर्ध्रीकण्ठो मलं हरेत् ॥ ८३ ॥
 स्यात् पारधेनुको वेनो गोधादिवधबन्धकृत् ।
 स निषादो मत्स्यघातान्मद्गुराघोषणेन सः ॥ ८४ ॥
 क्षत्ता दौत्यद्वारपाल्यात् पुल्कसो मद्यविक्रयात् ।
 पेलवः पुनरस्पृश्यो जम्भको नृत्तगानवित् ॥ ८५ ॥
 आयोगवस्तैजसकृद्भ्रमकृन्मणिवेधकृत् ।
 स तक्षा तक्षणाज्जीवन् स्थपतिर्नगराधिकृत् ॥ ८६ ॥
 अन्तावसायी वपनान्मागधश्चित्रकर्मणा ।
 स वैदेहः पाशुपाल्यात् तद्रसानां च विक्रयात् ॥ ८७ ॥
 पुल्कसस्तान्तवेनासौ चाक्रिकस्तैलविक्रयात् ।
 लवणक्रीतकोऽसौ स्याल्लवणस्यैव विक्रयात् ॥ ८८ ॥
 एवमेकादश प्रोक्ता वर्णानां प्रतिलोमजाः ।
 गोधादिवधबन्धास्तु हरीणां पुल्कसाश्च ते ॥ ८९ ॥
 रथकारो वास्तुवृत्तिरिज्याधानोपनीतिमान् ।
 आवृतानां तु हस्त्यश्वस्यन्दनेष्वधिकारिता ॥ ९० ॥
 शूर्पच्छत्रादिकर्माणि सूचीनां ते च पुल्कसाः ।
 कैवर्तानां पक्षिपशुमृगघातनजीवनम् ॥ ९१ ॥
 आन्ध्राणां तु गृहद्वाररथ्यावस्करशोधनम् ।
 मेदानां चक्रवृत्तित्वं विण्मूत्रग्रहणोज्जनम् ॥ ९२ ॥
 आहिण्डिकानां कारासु बहिः स्थित्वाऽभिरक्षणम् ।
 मेदान्ध्रचूचुमद्गूनामारण्यपशुर्हिसनम् ॥ ९३ ॥
 मैत्रेयकः प्रशंसेन्नृन् घण्टाताडोऽरुणोदये ।
 पारावरश्छत्रधरो दीपधृद्वाहको नृणाम् ॥ ९४ ॥
 कुर्यादासनरक्षां च चर्मच्छेदनसीवनम् ।
 कुक्कुटानां शस्त्रकृती राज्ञां कुक्कुटखेलनम् ॥ ९५ ॥
 मागधादपि शूद्रायां कुक्कुटो नाम जायते ।
 योऽन्वेष्टोद्यानवप्रादेवैश्याज्जातोऽपि कुक्कुटः ॥ ९६ ॥

निषाद्यां तन्तुवायोऽसौ वृक्षच्छेदावरोपकृत् ।
 धिग्वनानां तु कार्मार्यं वेनानां भाण्डवादनम् ॥ १७ ॥
 वेणः कुशीलवश्चासौ लङ्घनश्रवणादिभिः ।
 वेणो राज्ञीसुतोऽप्युग्रान्मायासम्भोहनादिकृत् ॥ १८ ॥
 वैदेह्यम्बुजो वेनो नाट्यरङ्गावतारकृत् ।
 आभीराणां जीवधनं कूटानामश्मतक्षणम् ॥ १९ ॥
 नौवाहो मार्गरो नद्यां नाविकस्त्वन्धिनागमः ।
 शैखोऽभिचारं कुर्वीत कार्मणं भृङ्गकण्ठकः ॥ २० ॥
 मन्त्रौषधैर्द्विषत्सेनां वशीकुर्वीत पुष्पवः ।
 आवन्त्यो वाटधानश्च स्वसेनाचित्तवृत्तिवित् ॥ २१ ॥
 ब्राह्म्याः क्षत्रसुताः शत्रुकोशमन्त्रादिवेदिनः ।
 खषाणां तोयाहरणं द्रमिलानां प्रपाङ्गातः ॥ २२ ॥
 नटानां करणानां च चारवृत्तिः स्फुटास्फुटा ।
 भारुषस्त्वर्चयेन्मातृः श्मशानादि चतुष्पथम् ॥ २३ ॥
 सुधन्वाचार्य ईशानं शाक्यचैत्यादि मैत्रकः ।
 भूतप्रेतपिशाचांस्तु विजन्मा सूतिवेश्म च ॥ २४ ॥
 सात्त्वतः पूजयेद्विष्णुमुक्तो भागवतश्च सः ।
 सन्ति भागवताश्चान्ये ब्राह्मणा भगवत्पराः ॥ २५ ॥
 श्वकण्ठकस्य शूद्रादि मालवस्याश्वपालनम् ।
 वैणवीं पाण्डुसोपाकः सोपाको भूलवृत्तिकः ॥ २६ ॥
 श्मशानचेलरक्षादिवृत्तयोऽन्तावसायिनः ।
 वनश्मशानरक्षा तु चण्डालान्तावसायिनाम् ॥ २७ ॥
 गरानलप्रयोगाश्च प्रोच्यन्ते दस्युजातयः ।
 ब्राह्मणस्य त्रयः पुत्रा वर्णस्त्रीष्वनुलोमजाः ॥ २८ ॥
 शूद्रस्य च त्रयः पुत्रास्तास्वेव प्रतिलोमजाः ।
 त्रयस्त्रयः क्षत्रविशोः प्रतिलोमानुलोमजाः ॥ २९ ॥
 एते द्वादश वर्णानां पुत्रा एकैकशस्तु ते ।
 चातुर्वर्ण्ये प्रसूयन्ते चतुरश्रतुरः सुतान् ॥ ३० ॥
 ते चत्वारिंशदष्टौ च पूर्वैर्द्वादशभिः सह ।
 ब्राह्मणाद्यैश्चतुर्भिश्च चतुर्षाष्टिर्हि जातयः ॥ ३१ ॥
 ते सर्वे दस्यवो दोषैश्चौर्याद्यैः सद्बहिष्कृताः ।
 आसाविकस्तु सैरिन्द्रो दस्योरायोगवीसुतः ॥ ३२ ॥

दस्यूनां बहुजातित्वाद् बह्वयः सैरिन्द्रजातयः ।
 प्रसाधनोपचारज्ञा मृगादिवधजीवनाः ॥ ११३ ॥
 शाकपुष्पफलानां च विक्रेतारो बहिष्कृताः ।
 राजस्त्रीणां सृतिकानां द्वास्त्याः प्रेताम्बरावृताः ॥ ११४ ॥
 विक्रेतारः सुरां कृत्वा सैरिन्द्राः स्युर्यथोचितम् ।
 दस्युस्लेक्षगणानां तु कृषिशस्त्रोपजीवनम् ॥ ११५ ॥
 स्लेच्छाः स्युर्विप्रकृष्टा ये स्लेच्छवाचो वनौकसः ।
 कार्या क्षनुग्रवैदेहैरन्या वृत्तिरगर्हिता ॥ ११६ ॥
 मेदान्ध्रैर्गर्हिता वृत्तिरनुक्ताः कुलवृत्तयः ।
 तत्रापि मातृकीं वृत्तिं गर्हितामनुलोमजाः ॥ ११७ ॥
 भजेरन् प्रतिलोमास्तु पैवृकं कर्म गर्हितम् ।
 अनुलोमा निष्कृष्टायामुत्कृष्टादुद्भवन्ति ये ॥ ११८ ॥
 प्रतिलोमा विपर्यस्ता ब्रात्यास्तत्प्रतिलोमजाः ।
 आनुलोमप्रातिलोम्यादान्तरालिकसंज्ञिताः ॥ ११९ ॥
 वर्णमात्रानुलोमा ये षट् तेऽपशदसंज्ञिताः ।
 षडपध्वंसजा ये स्युर्वर्णानां प्रतिलोमजाः ॥ १२० ॥
 रजकश्चर्मकारश्च वेनो बुरल एव च ।
 कैवर्तमेदभिह्लाश्च सप्तैता अन्यजातयः ॥ १२१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे मनुष्याध्यायः ॥ ५ ॥

ब्राह्मणाध्यायः ॥ ६ ॥

ब्राह्मणो मुखजो विप्रो भूदेवो मैत्र एतशः ।
 अग्रजन्मा वेदगर्भो बाडवश्च त्रयीपुषः ॥ १ ॥
 संस्कारास्तु निषेकाद्याः श्मशानान्ता द्विजन्मनाम् ।
 गर्भाधानं तु यौनं स्यात् प्राजापत्यं च मौलिकम् ॥ २ ॥
 आधानिकं पुंसवनं पौस्नमप्यथ गार्भिणम् ।
 सीमन्तोन्नयनं नामकर्म्ममन्त्रणिके समे ॥ ३ ॥
 चौले तु चूडाकरणं क्षुरकर्म तु मुण्डनम् ।
 मौण्डिकं भद्राकरणं वपनं परिवापणम् ॥ ४ ॥
 सशिखं वपनं तोडं निशिखं भिक्षुलोचकम् ।
 ओद्वितं त्वतिघृष्टं स्यात् पञ्चचीरोद्वितं पुनः ॥ ५ ॥
 आडिण्डिकं त्रिषु परे मुण्डः स्यान्मुण्डितोऽशिखः ।
 शिखावानवमुण्डः स्यात् पञ्चचूडस्तु सारणः ॥ ६ ॥
 उपनायस्तूपनय आनायश्च वटूकृतिः ।
 ब्रह्मचारी व्रती वर्णी नैष्ठिकस्तु स आश्रमी ॥ ७ ॥
 गायत्रस्तूपकुर्वाणो वैदिकोऽधीतवेदकः ।
 प्राजापत्यः कृतोद्वाहः स एवौदुम्बरायणः ॥ ८ ॥
 वर्णिलिङ्गी लिङ्गवृत्तिर्निस्स्वाध्यायो निराकृतिः ।
 वान्ताशी भोजनार्थं यो गोत्रादि वदति स्वकम् ॥ ९ ॥
 उच्छिष्टभोजनो देवनिवेद्यबलिभोजनः ।
 जातिमात्रोपजीवस्तु यः स स्याद् ब्राह्मणब्रुवः ॥ १० ॥
 अजपस्त्वसदध्येता देवाजीवस्तु देवलः ।
 अघायवो वधरता विगीताः ख्यातगर्हणाः ॥ ११ ॥
 अवगीताश्च हन्ता तु गुरूणां नरकीलकः ।
 शिशिवदानो दुराचारो निषिद्धैकरुचिः खरुः ॥ १२ ॥
 त्यक्तात्मा त्यक्तसंवासो ह्यवकीर्णी क्षतव्रतः ।
 शाखारण्डोऽन्यशाखास्थो वर्णिलिङ्ग्यादयस्त्रिषु ॥ १३ ॥
 वानकं तु ब्रह्मचर्यं नियमप्रयमौ व्रते ।
 अग्नीन्धनं त्वग्निर्कार्यमाग्नीध्री चाग्निकारिका ॥ १४ ॥
 ग्रासे तु पावनी भिक्षा पुष्कलस्तच्चतुष्टयम् ।
 ते चत्वारो हन्तकारो हन्तकारद्वयं घनः ॥ १५ ॥

मुष्ट्यष्टकेऽव्ययं किञ्चित् पुष्कलं तु तदष्टके ।
 पुष्कलानि तु चत्वारि पूर्णपात्रकमस्त्रियाम् ॥ १६ ॥
 भिक्षाचारः कौक्कुटिकस्त्रिषु स्यादौर्ध्वरथ्यकः ।
 मौञ्जी तु मेखला क्षोणी मौर्वी त्वेकलमात्रिका ॥ १७ ॥
 सौत्री तु धटिनी रम्भा दण्डस्तु दमयन्तिका ।
 पालाशो दण्ड आपाढो व्रते रम्भस्तु वैणवः ॥ १८ ॥
 बैलवः सारस्वतो रौच्यः पैलवस्त्वौपरोधिकः ।
 आश्वत्थस्त्वजितनेमिरौदुम्बर उल्लखलः ॥ १९ ॥
 द्विजायनी ब्रह्मसूत्रं सूत्रं यज्ञोपवीतकम् ।
 पवित्रञ्चोपवीतं तु प्रोदधृते दक्षिणे भुजे ॥ २० ॥
 प्राचीनावीतमन्यस्मिन्निवीतं कण्ठलम्बितम् ।
 कृष्णाजिनं कणिकं स्यात् कृत्तिः स्त्री चर्म चाजिनम् ॥ २१ ॥
 गुरुर्दिशानो बोधानः क्षाणी च ब्राह्मिकोऽथ सः ।
 (देशिकः परमाप्तः स्यादात्मलाभकरो गुरुः ।)
 मन्त्रव्याख्यादिनाऽऽचार्य उपाध्यायस्तु पाठनात् ॥ २२ ॥
 पाठके तु पठिर्वेदपठिता कल्पपाठकः ।
 पाठको धर्मशास्त्राणां धार्मिको धर्ममाणवः ॥ २३ ॥
 एकतीर्थी सतीर्थ्यैकगुरु सब्रह्मचार्यपि ।
 धर्मभ्राता सहाध्यायी शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः ॥ २४ ॥
 द्वात्रस्तु शिष्यो मोक्षः प्राडुपज्ञा ज्ञानमादिमम् ।
 समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ ज्ञात्वाऽऽरम्भ उपक्रमः ॥ २५ ॥
 पाठे बिन्दुर्ब्रह्मबिन्दुर्ब्रह्माञ्जलिरिहाञ्जलिः ।
 ऋक् स्त्री साम यजुश्चेति वेदास्ते तु त्रयस्त्रयी ॥ २६ ॥
 आथर्वणं पौरोहितं वेदाश्चत्वार एव ते ।
 छन्दो ब्रह्म श्रुतिर्वेदोऽप्यथ विद्यार्चतुर्दश ॥ २७ ॥
 शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दसां चयः ।
 ज्योतिषामयनं चेति वेदाङ्गान्यङ्गिभिः सह ॥ २८ ॥
 मीमांसया पुराणेन स्मृत्या न्यायगणेन च ।
 आयुर्वेदो वैद्यशास्त्रं गान्धर्व गीतिशासनम् ॥ २९ ॥
 अर्थशास्त्रं दण्डनीतिर्धनुर्वेदोऽस्त्रशासनम् ।
 चत्वार उपवेदास्ते विद्यार्चष्टादशोदिताः ॥ ३० ॥
 आन्वीक्षिकी तर्कविद्या निरुक्तं पदभञ्जना ।
 नामशास्त्रे निघण्टुर्ना सर्वविद्या कदम्बिका ॥ ३१ ॥

अध्यायः कामिकः काव्ये तूच्छासः सर्ग इत्यपि ।
 प्रपाठकस्त्वाह्निकोऽथो अनुवाकश्च खण्डिका ॥ ३२ ॥
 ब्राह्मणश्चेत्यवच्छेदा एकग्रन्थस्तु फक्तिका ।
 विध्यर्थवादमन्त्रास्तु खिलान्युपखिलानि च ॥ ३३ ॥
 छन्दोभेदास्तु गायत्रीप्रमुखा एकविंशतिः ।
 स्त्रियस्तासु क्रमात् क्लीवे स्युर्गायत्रौष्णिहादयः ॥ ३४ ॥
 मुखशोभा वेदशालिमुखे चित्रावनिश्च सा ।
 विधा ह्युच्चारणाभेदाः स्पृष्टसंवृततादयः ॥ ३५ ॥
 कादयो व्यञ्जना क्ली वा स्पर्शास्ते मावसानकाः ।
 स्त्रियोऽन्तस्स्था यरलवा ऊष्माणः शषसाः सहाः ॥ ३६ ॥
 विसर्गस्त्वभिनिष्ठानः परे त्रिष्वनुनासिकः ।
 नीचोऽनुदात्तो निहत उदात्तः स्वरितोऽपि च ॥ ३७ ॥
 वरिवस्या तु शुश्रूषा सेवा भक्तिरुपासना ।
 परिचर्याऽऽराधनञ्च सेवनञ्च प्रसादनम् ॥ ३८ ॥
 पूजाऽर्चना नमस्याऽर्चा सपर्येज्याऽर्हणाऽञ्जनम् ।
 नमस्या तु नमस्कारो वन्दनं चाभिवादनम् ॥ ३९ ॥
 उपसङ्ग्रहणं पादग्रहणेनाभिवादनम् ।
 गृहस्थः स्नातकश्चक्री गृहमेधी गृहीति च ॥ ४० ॥
 तस्मिन् सावित्रशालिनौ यः कुसूलेन धान्यभृत् ।
 पृथुचित्रः कुण्डधान्यो विघसाशी दिनत्रयी ॥ ४१ ॥
 यायावरश्चक्रचरः सद्यःप्रक्षालिताक्षकः ।
 परिवेत्ताऽग्रजेऽनूढे कृतदारपरिग्रहः ॥ ४२ ॥
 परिवित्तस्तु तज्ज्यायान् परिवित्तिः कुरी च सः ।
 भ्रातुर्मृतस्य जायायां संसक्तो दिधिषूपतिः ॥ ४३ ॥
 स तु स्यादग्रदिधिषुर्योऽनुजो रमते तथा ।
 स्यादग्रेदिधिषुश्चासौ स्यादग्रेदिधिपूरपि ॥ ४४ ॥
 या ज्येष्ठायामनूढायामूढाऽग्रेदिधिपूरसौ ।
 पुनरूढा पुनर्भूः स्यादूर्मिला त्यक्तभर्तृका ॥ ४५ ॥
 देवरे विनियुक्ता या यात्यन्यं साऽभिसारिका ।
 प्रसभा निरिणा मीढा निर्लज्जा धर्षणी च सा ॥ ४६ ॥
 विस्तीर्णजानुर्विकटा नतजानुस्तु सिंहिका ।
 दूषिका क्रोधविवशा पृषता श्वेतबिन्दुका ॥ ४७ ॥

अन्यानुरक्ता विगता नष्टा संस्पृष्टमैथुना ।
 कन्याप्रसूतिजा जारी हारी नास्नैव दूषिता ॥ ४८ ॥
 हारिता पतितोत्पन्ना कोहली मुखरा भृशम् ।
 जडा तु पाली कुब्जा तु दुर्दर्शा कालिकापि च ॥ ४९ ॥
 धृष्टा प्रापणिका व्यङ्गा निघृष्टा कुत्सिता हता ।
 अरणिर्निस्स्पृहा पालिर्हर्षुला विकला सरूक् ॥ ५० ॥
 शरभा तु विशीर्णाङ्गी स्वल्पदेहा मङ्गषिका ।
 द्योता पिङ्गलकेशाक्षी ऋषभा वृषलक्षणा ॥ ५१ ॥
 वर्षकारी स्रवत्पाणिपादा राता विहारिणी ।
 साङ्कारिका तु पित्रादिगृहेष्वग्न्यादिदायिनी ॥ ५२ ॥
 वैधव्यलक्षणोपेता पतिव्री खण्डनाऽपि च ।
 सुता त्वजीववत्साया मातुर्या सा विदूषिका ॥ ५३ ॥
 विकटाद्यास्तु नोद्वाह्याः कन्यकाः सप्तविंशतिः ।
 उपयासः परिणयो विवाहो दारसङ्ग्रहः ॥ ५४ ॥
 उद्वाहोपयमौ पाणिग्रहो जम्बूलमालिका ।
 कन्यादाने तु यदत्तं यौतकं यौतुकं च तत् ॥ ५५ ॥
 गोपाली वर्णके शान्तियात्रावरनिमन्त्रणे ।
 दौन्दुभी वरयात्रायां धूलिभक्ते तु वार्तिकम् ॥ ५६ ॥
 स्यादिन्द्राणीमहे हेलिरुल्लुर्भङ्गलध्वनिः ।
 धोरी हुलिहुली चासौ सैव मङ्गलमालिका ॥ ५७ ॥
 क्लीवे स्वस्त्ययनं पूर्णकलशे मङ्गलाहिकम् ।
 नन्दिकौ तोरणस्तम्भौ शुक्कूटस्तयोः स्रजि ॥ ५८ ॥
 सैव वन्दनमालाऽपि कुहलिः पूगपुष्पिका ।
 हस्तसूत्रं प्रतिसरस्तद्वन्धे हस्तकोहलिः ॥ ५९ ॥
 तद्ग्रन्थिस्त्वधका धानी करणं हस्तलेपनम् ।
 उत्सवेषु सुहृद्भिर्यद् बलादाकृत्य गृह्यते ॥ ६० ॥
 वस्त्रमाल्यादि तत् पूर्णपात्रं पूर्णानकं च तत् ।
 उत्सवो मह उद्धर्ष उद्धवो हर्षवेणुकः ॥ ६१ ॥
 क्षणः पर्व च कल्याणं भोज्यं तु जठरोत्सवः ।
 मधुपर्कस्तु निष्ठकः शङ्खपात्रं तु पाटली ॥ ६२ ॥
 यज्ञाध्ययनदानानि याजनाध्यापनग्रहाः ।
 षट्कर्माणि महायज्ञा देवयज्ञादिपञ्चकम् ॥ ६३ ॥

निवापः पितृदानं स्यादामपात्रं तु वापिमम् ।
 मृतस्नानमपस्नानं श्राद्धं तु पितृभोजनम् ॥ ६४ ॥
 दशाहे श्राद्धमाग्नेयं साज्यमेकादशेऽहनि ।
 सम्प्रेषणी द्वादशेऽह्नि मासप्राप्तौ तु मासिकम् ॥ ६५ ॥
 एवं त्रिपक्षी षाण्मासी ज्ञेया सांवत्सरीति च ।
 गयायां पिण्डदानं यत् पितृकार्यं तदार्यकम् ॥ ६६ ॥
 आम्रसेकस्तु यस्तत्र सा चारी सा पितृप्रपा ।
 त्रिज्वातिध्यमतिध्यर्थं विघसो विप्रशोषितम् ॥ ६७ ॥
 आवेशिकः स्यादागन्तुरातिध्यः प्राहुणोऽतिथिः ।
 सूर्योदस्तु स सम्प्राप्तो यः सूर्येऽस्तं गतेऽतिथिः ॥ ६८ ॥
 अथाग्न्याधानमाधेयमाधानं चाग्निसङ्ग्रहः ।
 होमस्तु सवनं होत्रं हवनं हुतिराहुतः ॥ ६९ ॥
 अग्निहोत्रं नित्यहोमः कुत्सितास्त्वग्निहोत्रिणः ।
 वीरोज्ज्वलप्रमुखास्तत्र वीरोज्ज्वो न जुहोति यः ॥ ७० ॥
 अग्निहोत्रं स्वयं वर्षमुत्सन्नाग्निस्तु वीरहा ।
 अग्निहोत्रच्छलाद् याज्ञवल्क्यो वीरोपजीवकः ॥ ७१ ॥
 वीरविप्लावको जुह्वद् धनैः शूद्रसमाहृतैः ।
 जातमात्रगृहीताग्निर्यः स जातारणिर्द्विजः ॥ ७२ ॥
 यस्यौपासन एवाग्निरेकाग्निः काल्पिकश्च सः ।
 अग्न्याहितस्त्वाहिताग्निर्नग्नः पुनरनग्निकः ॥ ७३ ॥
 पर्याधाताऽग्रजेऽनग्नौ कृताधानोऽग्रजस्त्वसौ ।
 पर्याहितस्तथा न्यायः परियष्टृपरीष्टयोः ॥ ७४ ॥
 इज्याशीलो यायजूकः सोमपीथी तु सोमपः ।
 सुत्वा त्वभिषवाद्ध्वं चितवानग्निमग्निचित् ॥ ७५ ॥
 यष्टा तु यजुरादेष्टा यजमानश्च होत्ववत् ।
 सोमे तु दीक्षितः सोत्वो यज्वा स्यादिष्टवानसौ ॥ ७६ ॥
 सर्ववेदाः स यो यागे दत्तसर्वस्वदक्षिणः ।
 यज्ञत्यागी वृथाजातोऽपञ्चयज्ञो मलिम्लुचः ॥ ७७ ॥
 याजका भरता यज्ञलिहः कुरव ऋत्विजः ।
 यतस्तुचो देवयवो वाघतो वृक्तबहिषः ॥ ७८ ॥
 अध्वर्यूद्गातृहोतारो ब्रह्मा चेति महर्त्विजः ।
 मन्त्राणां दैवतं छन्दो निरुक्तं ब्राह्मणान्यधीन् ॥ ७९ ॥

कृत्तद्धितादि चाज्ञात्वा यजन्तो यागकण्टकाः ।
 याजयन्तो लैङ्गधूमाः कौटास्तूभयकारिणः ॥ ८० ॥
 प्रसर्पको दृशीकुश्च दर्शनायाध्वरं गतः ।
 उपद्रष्टा सदस्यः स्याच्छान्दसश्रोत्रियौ समौ ॥ ८१ ॥
 अधीतसाङ्गवेदो यः सोऽनूचानो युगी गणिः ।
 यज्ञो यागोऽध्वरः स्तोमः सप्ततन्तुर्मखः सवः ॥ ८२ ॥
 सहसानुर्यजः सानुर्वसुनो विश्वहर्षकः ।
 पाकयज्ञाः पार्वणाद्या हविर्यज्ञास्त्वसोमकाः ॥ ८३ ॥
 पशुबन्धास्तु पशवः सोमाः सौम्याश्च सोमिनः ।
 सवनैस्त्रिभिरेकाहास्तैरावृत्तैरहर्गणाः ॥ ८४ ॥

ते दीक्षितैः कृताः सत्राण्यहीना याजकैः कृताः ।
 अहीना द्वादशाहात् प्राक् सत्राण्यूर्ध्वं स तु द्वयः ॥ ८५ ॥
 सर्वेऽमी यज्ञक्रतवस्त एवैन्द्राः प्रजागमाः ।
 ज्योतिष्टोमश्चतुष्टोमो ज्योतिरानृण्यमित्यपि ॥ ८६ ॥
 अग्निष्टोमादयः संस्थाभेदाः सप्तास्य तन्तवः ।
 सौमिकी दीक्षणीयेष्टिर्दीक्षा तु व्रतसङ्ग्रहः ॥ ८७ ॥
 प्रायणीयोदयनीयौ त्रिष्वद्येऽन्त्ये च कर्मणि ।
 पुरोडाशस्य प्रथमे प्रणिकं प्रथिकैरुके ॥ ८८ ॥
 प्रोक्षण्यासादनं दैष्टं पत्नीसन्नहनं स्पशा ।
 स्नुचां सम्मार्जनं शुद्धिः स्नुगासादनमाहुतिः ॥ ८९ ॥
 हुतिराज्याधिश्रयणमाज्यावेक्षणमक्षतिः ।
 स्यादिध्मप्रोक्षणं कार्ष्णश्चैत्यमाज्याधिवासनम् ॥ ९० ॥
 वेद्यास्तरणमाप्रासः प्रस्तरः स्तरणं छदिः ।
 त्रैहोत्रं समिदाधानमदितिस्तासु सेचनम् ॥ ९१ ॥
 पावकं सोमपानं स्यान्मिश्रकं तु घृताञ्जनम् ।
 उपांशुस्तु प्राणिकः स्यादन्तर्यामस्त्वपानिकः ॥ ९२ ॥
 श्यैतनौधसयोगानं सान्नोरुपनिमन्त्रणम् ।
 व्यञ्जनाः पशुसंस्काराः सामिकं त्वभिमन्त्रणम् ॥ ९३ ॥
 परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च पशोर्वधे ।
 अथ यज्ञोपकरणं यजत्रं यजनं च तत् ॥ ९४ ॥
 होमधेनुस्त्वग्निहोत्री होमकाष्ठी तु नालिका ।
 होमधूमस्तु निगणो होमभस्म तु वैष्णुतम् ॥ ९५ ॥

निवापः पितृदानं स्यादामपात्रं तु वापिमम् ।
 मृतस्नानमपस्नानं श्राद्धं तु पितृभोजनम् ॥ ६४ ॥
 दशाहे श्राद्धमाग्नेयं साज्यमेकादशेऽहनि ।
 सम्प्रेषणी द्वादशेऽहि मासप्राप्तौ तु मासिकम् ॥ ६५ ॥
 एवं त्रिपक्षी षाण्मासी ज्ञेया सांवत्सरीति च ।
 गयायां पिण्डदानं यत् पितृकार्यं तदार्यकम् ॥ ६६ ॥
 आम्रसेकस्तु यस्तत्र सा चारी सा पितृप्रपा ।
 त्रिष्वातिथ्यमतिथ्यर्थं विघसो विप्रशोषतम् ॥ ६७ ॥
 आवेशिकः स्यादागन्तुरातिथ्यः प्राहुणोऽतिथिः ।
 सूर्योदस्तु स सम्प्राप्तो यः सूर्येऽस्तं गतेऽतिथिः ॥ ६८ ॥
 अथान्याधानमाधेयमाधानं चाम्रिसङ्ग्रहः ।
 होमस्तु सवनं होत्रं हवनं हुतिराहुतः ॥ ६९ ॥
 अग्निहोत्रं नित्यहोमः कुत्सितास्त्वग्निहोत्रिणः ।
 वीरोज्झप्रमुखास्तत्र वीरोज्झो न जुहोति यः ॥ ७० ॥
 अग्निहोत्रं स्वयं वर्षमुत्सन्नाग्निस्तु वीरहा ।
 अग्निहोत्रच्छलाद् याच्ञापरो वीरोपजीवकः ॥ ७१ ॥
 वीरविप्लावको जुह्वद् धनैः शूद्रसमाहृतैः ।
 जातमात्रगृहीताग्निर्यः स जातारणिद्विजः ॥ ७२ ॥
 यस्यौपासन एवाग्निरेकाग्निः काल्पिकश्च सः ।
 अग्न्याहितस्त्वाहिताग्निर्नग्नः पुनरनग्निकः ॥ ७३ ॥
 पर्याधाताऽग्नजेऽनग्नौ कृताधानोऽग्नजस्त्वसौ ।
 पर्याहितस्तथा न्यायः परियष्टृपरीष्टयोः ॥ ७४ ॥
 इज्याशीलो यायजूकः सोमपीथी तु सोमपः ।
 सुत्वा त्वभिषवाद्ध्वं चितवानग्निमग्निचित् ॥ ७५ ॥
 यष्टा तु यजुरादेष्टा यजमानश्च होत्ववत् ।
 सोमे तु दीक्षितः सोत्वो यज्वा स्यादिष्टवानसौ ॥ ७६ ॥
 सर्ववेदाः स यो यागे दत्तसर्वस्वदक्षिणः ।
 यज्ञत्यागी वृथाजातोऽपञ्चयज्ञो मलिम्लुचः ॥ ७७ ॥
 याजका भरता यज्ञलिहः कुरव ऋत्विजः ।
 यतस्तुचो देवयवो वाघतो वृक्तबर्हिषः ॥ ७८ ॥
 अध्वर्यूद्रावृहोतारो ब्रह्मा चेति महर्त्विजः ।
 मन्त्राणां दैवतं छन्दो निरुक्तं ब्राह्मणान्यधीन् ॥ ७९ ॥

कृत्तद्धितादि चाज्ञात्वा यजन्तो यागकण्टकाः ।
 याजयन्तो लैङ्गधूमाः कौटास्तूभयकारिणः ॥ ८० ॥
 प्रसर्पको दृशीकुश्च दर्शनायाध्वरं गतः ।
 उपद्रष्टा सदस्यः स्याच्छ्वान्दसश्रोत्रियौ समौ ॥ ८१ ॥
 अधीतसाङ्गवेदो यः सोऽनूचानो युगी गणिः ।
 यज्ञो यागोऽध्वरः स्तोमः सप्ततन्तुर्मखः सवः ॥ ८२ ॥
 सहसानुर्यजः सानुर्वसुनो विश्वहर्यकः ।
 पाकयज्ञाः पार्वणाद्या हविर्यज्ञास्त्वसोमकाः ॥ ८३ ॥
 पशुबन्धास्तु पशवः सोमाः सौम्याश्च सोमिनः ।
 सवनैस्त्रिभिरेकाहास्तैरावृत्तैरहर्गणाः ॥ ८४ ॥

ते दीक्षितैः कृताः सत्राण्यहीना याजकैः कृताः ।
 अहीना द्वादशाहात् प्राक् सत्राण्यूर्ध्वं स तु द्वयः ॥ ८५ ॥
 सर्वेऽमी यज्ञकतवस्त एवैन्द्राः प्रजागमाः ।
 ज्योतिष्टोमश्चतुष्टोमो ज्योतिरानृण्यमित्यपि ॥ ८६ ॥
 अग्निष्टोमादयः संस्थाभेदाः सप्तास्य तन्तवः ।
 सौमिकी दीक्षणीयेष्टिर्दीक्षा तु व्रतसङ्ग्रहः ॥ ८७ ॥
 प्रायणीयोदयनीयौ त्रिष्वद्येऽन्त्ये च कर्मणि ।
 पुरोडाशस्य प्रथमे प्रणिकं प्रथिकैरुके ॥ ८८ ॥
 प्रोक्षण्यासादनं दैष्टं पत्नीसन्नहनं स्पशा ।
 स्नुचां सम्मार्जनं शुद्धिः स्नुगासादनमाहुतिः ॥ ८९ ॥
 हुतिराज्याधिश्रयणमाज्यावेक्षणमक्षतिः ।
 स्यादिधमप्रोक्षणं कार्ष्णश्चैत्यमाज्याधिवासनम् ॥ ९० ॥
 वेद्यास्तरणमाप्रासः प्रस्तरः स्तरणं छदिः ।
 त्रैहोत्रं समिदाधानमदितिस्तासु सेचनम् ॥ ९१ ॥
 पावकं सोमपानं स्यान्मिश्रकं तु घृताञ्जनम् ।
 उपांशुस्तु प्राणिकः स्यादन्तर्यामस्त्वपानिकः ॥ ९२ ॥
 श्यैतनौघसयोगानं सान्नोरुपनिमन्त्रणम् ।
 व्यञ्जनाः पशुसंस्काराः सामिकं त्वभिमन्त्रणम् ॥ ९३ ॥
 परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च पशोर्वधे ।
 अथ यज्ञोपकरणं यजत्रं यजनं च तत् ॥ ९४ ॥
 होमधेनुस्त्वग्निहोत्री होमकाष्ठी तु नालिका ।
 होमधूमस्तु निगणो होमभस्म तु वैष्णुतम् ॥ ९५ ॥

होमेन्धने स्यादिध्मोऽस्त्री पुमानेधः समित् स्त्रियाम् ।
 इन्धनं त्वेध आलाद्यमहोत्रं तु तृणेन्धनम् ॥ १६ ॥
 काष्ठेन्धनं तु गरहं गोकरीपेन्धनं वुसा ।
 यवादि त्वकृतं हव्यं तण्डुलास्तु कृताकृतम् ॥ १७ ॥
 अन्नादि कृतमामिक्षा दध्मोष्णं संयुतं पयः ।
 पयस्या च क्षीरशरस्तन्मस्तुनि तु वाजिनम् ॥ १८ ॥
 सान्नाय्यं तु दधिक्षीरं पृषदाज्यं पृषातकः ।
 पृषतोऽपि च दध्याज्ये पुरोडाशस्तु तृप्रकः ॥ १९ ॥
 हवनी सुक् सुचो भेदाः स्युर्जुहूरुपभृदध्रुवा ।
 अथामिहोत्रहवणी श्रपण्याधारणः सुवः ॥ १०० ॥
 चमसोऽस्त्री त्रिपात्राणि वायव्यं सौमिके त्रिषु ।
 परिप्लवार्थदण्डा सुक् दर्वी तु घृतलेखनी ॥ १०१ ॥
 चमूः स्त्री चर्म सुत्यार्थं प्रावाणस्त्वभ्रयोऽश्मसु ।
 विघनो घनो मुद्गरे नरः फयोद्धनजन्दनाः ॥ १०२ ॥
 यूपोऽस्त्री संस्कृतः स्तम्भो होमयूपस्तु शौभिकः ।
 यूपावमिषु पार्श्वस्थावुपस्थाविति संज्ञितौ ॥ १०३ ॥
 अग्निष्ठं त्रिषु यूपादि यदग्नेः सम्मुखे स्थितम् ।
 यूपमध्यं समादानं यूपान्नं तर्म न स्त्रियाम् ॥ १०४ ॥
 कटकेऽस्य चषालोऽस्त्री मूले तूपरमक्षते ।
 वेष्टनं तु परिव्याणं कुम्बा सुगहना वृतेः ॥ १०५ ॥
 यूपे सप्तदशारत्नावरन्निर्मेथिकोऽधरः ।
 उत्तरेषां क्रमादाख्या उत्त्रासत्वरुमोचनः ॥ १०६ ॥
 तथाञ्जनो वैयतिथः क्षालनः शवशीर्षकः ।
 सुधन्वो रथगरुतः शैखालीकरञ्जकौ ॥ १०७ ॥
 वासवो वैष्णवस्त्वाष्ट्रः सौम्यो माधुरवेजनौ ।
 संघातिकारणिर्न क्ली कुशा वरुणकाष्ठिका ॥ १०८ ॥
 खर्जनी कृष्णविषाणा वेदिर्भूमिः परिष्कृता ।
 कुण्डं हवित्री हवनी कुण्डे स्याद्वर्तुले परम् ॥ १०९ ॥
 वेदिः स्त्रियां चतुष्कोणे त्रिकूटं तु त्रिकोणके ।
 तस्मिन्नास्तावसंस्तावौ स्तुवते यत्र सामभिः ॥ ११० ॥
 चात्वालोऽस्त्री मृत्खनः स्यादुत्करोऽवकरालयः ।
 शस्त्राण्युक्त्यानि सामानि स्तोत्राणि स्तुतयोऽपि च ॥ १११ ॥

याज्या पुरोऽनुवाक्या च याज्यापुटमिति द्वयम् ।
 सौविष्टकृत्यौ संयाज्ये कूर्चालोलस्फुटी पशुः ॥ ११२ ॥
 स्रज्यावित् क्रमो विधिः कल्प उपकल्पोऽनुकल्पकः ।
 पौर्वापर्यं त्वानुपूर्व्यं पर्यायोऽनुक्रमः क्रमः ॥ ११३ ॥
 अनुपात्यय आवृत् स्त्री परिपाठ्यानुपूर्व्यपि ।
 पर्ययस्त्वतिपातः स्यादतिक्रम उपात्ययः ॥ ११४ ॥
 इष्टं यागात्मकं कर्म पूर्तं खातादिकर्मणि ।
 आचारो वृत्तचारित्रचरित्रचरणानि च ॥ ११५ ॥
 वृत्तस्याध्ययनस्यापि सम्पत्तिर्ब्रह्मवर्चसम् ।
 पतनं सत्पथाद् भ्रंशश्चर्या त्वीर्यापथस्थितिः ॥ ११६ ॥
 हिंसाकर्माभिचारः स्यान्मूलकर्म तु कर्मणम् ।
 वशीकारः संवननं विकर्माकार्यसेवनम् ॥ ११७ ॥
 त्यागो दानं वितरणं विश्राणनविसर्जने ।
 विहापनं निर्वपणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ ११८ ॥
 उत्सर्जनं प्रादेशनमपवर्जनमंहतिः ।
 अतोयं सात्त्विकं दानमुदपूर्वं तु पौष्टिकम् ॥ ११९ ॥
 आशिषा शान्तिकं दानं काम्यदानं प्रवापणम् ।
 आशासनेऽर्थना याचना याचनाऽध्येषणाऽर्दना ॥ १२० ॥
 भिक्षा च सनिरुद्धी स्यान्मार्गणा तु गवेषणा ।
 पर्येषणा परीच्छा च मृगणाऽन्वेषणा मृगः ॥ १२१ ॥
 यस्तु नीलवृषोत्सर्गः स षण्डो वृषपूतनः ।
 उद्वन्धवृषभश्चायमापिङ्गलक इत्यपि ॥ १२२ ॥
 लोहितः स्यान्नीलवृषः पुच्छशृङ्गखुरे सितः ।
 यष्टिर्न ह्री स्त्रियां मीना खनित्री तु विशाखिका ॥ १२३ ॥
 बद्धदर्भो वेदयष्टिः कुण्डिका ना कमण्डलुः ।
 वैखानसो वनेवासी वानप्रस्थश्च तापसः ॥ १२४ ॥
 कापोतो वर्षमात्रस्य स वन्याहारसङ्ग्रहात् ।
 औदुम्बरस्तु षाण्माससंग्रही तुर्यकालमुक् ॥ १२५ ॥
 परे त्रिषु तपस्वी स्यात्तापसः पारिकाङ्क्षिकः ।
 चतुर्थकालिको भिक्षुर्व्यष्टिरष्टमकालमुक् ॥ १२६ ॥
 चान्द्रायणरतश्चन्द्रव्रतिकः सौमिकश्च सः ।
 षष्ठकाली तु बलिको नौसो नक्षत्रकालिकः ॥ १२७ ॥

पुष्पाढ्यस्तु स्वयंशीर्णपुष्पमूलफलाशनः ।
 भुङ्क्ते पक्षान्तयोरेव यो यवान् स द्विकालिकः ॥ १२८ ॥
 शीर्णकः शीर्णपर्णाशी वृक्षमूली तु मूलिकः ।
 भूमौ विपरिवृत्त्यास्ते यः स पातालमूलिकः ॥ १२९ ॥
 वर्षवातातपानङ्गे बिभ्रदभ्रावकाशिकः ।
 शिवव्रती स यो विप्रः पादेनैकेन तिष्ठति ॥ १३० ॥
 रुद्रव्रती क्षत्रियश्चेद् वाताहारस्त्वहिव्रती ।
 मत्स्यव्रती जलाचारस्तृणशय्यस्तु पर्णशः ॥ १३१ ॥
 तथैव स्यात् स्थण्डिलश औल्लकोऽङ्गारशाकटे ।
 पाणिपात्रस्तु खपुटो दन्तोल्लखलको व्युपः ॥ १३२ ॥
 पिबत्यधोमुखो धूमं यः स धुर्यावकर्तिकः ।
 जानुभ्यां जानुकस्तिष्ठन्नष्टप्रासो मुनिव्रती ॥ १३३ ॥
 पद्मासनी तु वसिकः क्षीराहारस्तु लोचकः ।
 नीवारपिष्टकानष्टावशनाति मुनिपिष्टकी ॥ १३४ ॥
 एकान्तर्येकान्तरिती तथा कालावलोलकः ।
 और्वव्रती जलाहारो घृताशी घृतभुग् घृती ॥ १३५ ॥
 तपो व्रतोऽस्त्री कृच्छ्रोऽस्त्री तच्च चान्द्रायणादिकम् ।
 चान्द्रायणं चन्द्रव्रतं प्राजापत्यं तु कृच्छ्रकम् ॥ १३६ ॥
 प्राजापत्यं तु गोकृच्छ्रं कृतं गोमूत्रयावकैः ।
 शिशुकृच्छ्रं कृतं पच्छः कच्छमद्भिस्तु यः कृतः ॥ १३७ ॥
 कृच्छ्रः कृच्छ्रातिकृच्छ्रोऽसौ स्याद्वाहान्येकविंशतिम् ।
 शिशुकृच्छ्रातिकृच्छ्रं तत्त्रिसन्ध्यं चेदपः पिबेत् ॥ १३८ ॥
 प्राजापत्यं पाणिपात्रं पूर्णान्नेनातिकृच्छ्रकम् ।
 तप्तकृच्छ्रं तदस्नानात् क्षीरसर्पिर्जलैः कृतम् ॥ १३९ ॥
 एकैकं त्र्यहमभ्युष्णैः शीतैस्तैः शीतकृच्छ्रकम् ।
 बिल्वेन मासं श्रीकृच्छ्रं मूलकृच्छ्रं बिसाशानात् ॥ १४० ॥
 पानेन साम्बुसक्तूनां मासं वरुणकृच्छ्रकम् ।
 त्रिस्सप्ताहं पयःपानं कचित् कृच्छ्रातिकृच्छ्रकम् ॥ १४१ ॥
 पिण्याकाचामतक्राम्बुसक्तून् भुक्त्वा क्रमादहः ।
 उपोष्य सौम्यकृच्छ्रं स्याज्जलाचामौ विनैव वा ॥ १४२ ॥
 स्यात् तुलापुरुषोऽभ्यासादेकैकस्य दिनत्रयम् ।
 सौम्यस्य तु द्विरभ्यासात् स्यात्तुलापुरुषः शिशोः ॥ १४३ ॥

उपवासस्तूपवस्तुः सन्यासः स्यादनाशकम् ।
 द्वादशाहे पराको ना षोडशाहे तुरायणम् ॥ १४४ ॥
 तुरायणद्वये सौम्यं चातुर्मास्ये परायणम् ।
 परायणं जलेनैतत् क्षीरेणैतत् परावसु ॥ १४५ ॥
 एकान्तरितमर्धांशं षष्ठकालेषु षाष्टिकम् ।
 गोमूत्रयावकैर्मासो वज्रोऽस्त्री यावकैः पुनः ॥ १४६ ॥
 त्र्यहं वज्राभिषवणं पयसा तु पयोव्रतम् ।
 पञ्चरात्रं पयःपानं सङ्गमः सङ्गतश्च सः ॥ १४७ ॥
 मासं गोष्ठे पयःपानं गोव्रतं ब्राजिकं च तत् ।
 पिवेद् ब्रह्मसुवर्चलामुपोष्योपस्करव्रतम् ॥ १४८ ॥
 कणान्नस्यैव भोजनं द्वादशाहं वसुव्रतम् ।
 कुशापीडः कुशवटो व्रतिनामासनं ब्रसी ॥ १४९ ॥
 योगपट्टस्तु चीना स्यात् पर्यस्तिरवसक्थिका ।
 ऋषिस्त्रिकालदर्शी स्यान्मौनी वाचंयमो मुनिः ॥ १५० ॥
 अगस्त्यः कलशीपुत्रस्तपनः पीतसागरः ।
 और्वशेयः कुम्भयोनिरगस्तिर्विन्ध्यकूटकः ॥ १५१ ॥
 मैत्रावरुणिराग्नेयो मुनिर्वातापिसूदनः ।
 दक्षिणाशारतः काथिः सत्याग्निश्चाग्निमारुतः ॥ १५२ ॥
 तस्य कौपीतकी भार्या लोपामुद्रा वरप्रदा ।
 प्राचेतसस्तु वाल्मीकिर्वाल्मीकश्च कुशी कविः ॥ १५३ ॥
 सालातुरीयको दाक्षीपुत्रः पाणिनिराहिकः ।
 हलभूतिस्तूपवर्षः कृतकोटिकविश्च सः ॥ १५४ ॥
 याज्ञवल्क्यस्तु योगास्त्रिर्योगेशो ब्रह्मरात्रिकः ।
 आपवस्तु वसिष्ठः स्याद्यज्ञाढ्यस्तु पराशरः ॥ १५५ ॥
 गौतमस्तु शतानन्दो यवक्रीतस्तु रोहितः ।
 यायावरो जरत्कार्दुर्वासास्तु कुशारणिः ॥ १५६ ॥
 अष्टावक्रस्तु गर्भोजिह्वच्छ्युत्स्विधमवाहकः ।
 मत्स्यगुश्च्यवनोऽथ स्याद् गोनर्दीयः पतञ्जलिः ॥ १५७ ॥
 अथ व्यालिर्विन्ध्यवासी नन्दनीनन्दनोऽपि च ।
 कात्यायनो वररुचिर्मेधजिह्व पुनर्वसुः ॥ १५८ ॥
 वात्स्यायनस्तु कौटिल्यो विष्णुगुप्तो वराणकः ।
 द्राविलः पक्षिलः स्वामी मल्लनागोऽङ्गुलोऽपि च ॥ १५९ ॥

यतिः पाराशरी भिक्षुः परिव्राट् पाररक्षिकः ।
 अनाशकी प्रव्रजितः कर्मन्दी मस्करी यती ॥ १६० ॥
 परमात्मा परो ब्रह्म जीवः क्षेत्रज्ञ आविशः ।
 शक्तिस्तु माया प्रकृतिर्व्योमाख्यं मूलकारणम् ॥ १६१ ॥
 असदक्षरमव्यक्तं तमः सदसदात्मकम् ।
 अलिङ्गं गुणसामान्यं गुणाः सत्त्वं रजस्तमः ॥ १६२ ॥
 महास्तु लैङ्गिको ब्रह्मा लिङ्गज्येष्ठश्च चेतना ।
 मनीषा शेमुषी बुद्धिर्धीः पूः ख्यातिर्विदा बुधा ॥ १६३ ॥
 ज्ञप्तिः पण्डोपलब्धिस्तु संवित्तिरनुभूतिः ।
 अवगत्यनुभूती चिज्ज्ञप्तिर्ज्ञानं च बोधनम् ॥ १६४ ॥
 षोढा धीस्तत्त्वधीः पण्डा मेधा धीर्धारणक्षमा ।
 ऊहापोहक्षमा चार्वी गृहीतिर्ग्रहणक्षमा ॥ १६५ ॥
 शुश्रूषाबहुला श्रौषिः श्रवणज्ञा तु चत्वरि ।
 धृतिस्तु तुष्टिः सन्तोषः प्रौढिस्तु क्रियदेतिका ॥ १६६ ॥
 यत्नोत्साहोद्यमायामास्तरिषोऽध्यवसायवत् ।
 वैराग्यं मर्दमुद्वेगो निर्वेदश्च विरागवत् ॥ १६७ ॥
 धर्मोऽस्त्री सुकृतं पुण्यं पाप्माधर्मौ तु दुष्कृतम् ।
 दुरितं पातकं पापं त्रस्तमहोऽघकल्मषे ॥ १६८ ॥
 स्मयोऽभिमानोऽहङ्कारो गर्वः स्त्री गर्विरस्मिता ।
 शौटीर्यञ्चाथ शृङ्गारगर्वे चङ्कोरवेङ्कोरौ ॥ १६९ ॥
 आहोपुरुषिका सा यद् गर्वादात्मनि गौरवम् ।
 अहं पूर्यमहं पूर्वमित्यहम्पूर्विकोन्नतिः ॥ १७० ॥
 सा स्यादहमहमिका योऽहङ्कारः परस्परम् ।
 अत्याकारः परिभवस्तिरस्कारोऽप्यनादरः ॥ १७१ ॥
 रीढाऽवमाननाऽवज्ञाऽप्यवहेलमसूक्ष्णम् ।
 उच्चलं मानसं चेतश्चित्तमुच्चलितं मनः ॥ १७२ ॥
 स्वान्तं गूढपदं हृच्च सङ्कल्पो मानसी क्रिया ।
 मनो बुद्धिरहङ्कार इत्यन्तःकरणं त्रिधा ॥ १७३ ॥
 आकृतिर्मतमाकृतं भावोऽभिप्राय आशयः ।
 चित्ताभोगो मनस्कार उत्प्रेक्षा स्वमनीषिका ॥ १७४ ॥
 मीमांसा तु विजिज्ञासा प्रत्यगृष्टिर्विकुण्ठना ।
 तर्कमूलिकसम्मर्श ऊहो न कल्यूहना न ना ॥ १७५ ॥

सम्भावना स्यादाशङ्का वितर्कस्तर्कमस्त्रियाम् ।
 प्रतिभा प्रतिभासः स्यान्निर्णयोऽन्तश्च निश्चयः ॥ १७६ ॥
 विचिकित्सा तु सन्देहः संशयो विशयो भ्रमः ।
 विस्मरणं प्रस्मरणमुन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥ १७७ ॥
 तन्द्रा कौसीद्यमालस्यं प्रमादोऽनवधानता ।
 स्यादायल्लकमौत्सुक्यमुत्कण्ठोत्कलिका रतिः ॥ १७८ ॥
 हृल्लेखो रणरणकोऽप्यभिध्या विषमस्पृहा ।
 वृषिः काङ्क्षा स्पृहेहेच्छा वाञ्छा कामो मनोरथः ॥ १७९ ॥
 अभिलाषश्च लिप्सा तु धनायेप्सा च गर्धना ।
 गर्भिण्याः पुनरिच्छायां श्रद्धा दोहलदौहृदे ॥ १८० ॥
 रागोऽनुरागोऽनुरतिर्वीक्षायां मोहविस्मयौ ।
 शोषुर्ना शुषकोदन्या पिपासाऽप्यपलासिका ॥ १८१ ॥
 बुभुक्षेच्छाऽशनाया क्षुज्जिघत्साऽशिशिषा पचिः ।
 राड्यलौल्यं तु कौहोलं तपसीच्छा प्रशान्तिकम् ॥ १८२ ॥
 शोकस्तु मन्युरुत्खेदः शुक् स्त्री दैन्यानुशोचने ।
 क्रोधः कोपोऽमर्षरोषौ रुषा रुट्क्रुतक्रुधाः स्त्रियः ॥ १८३ ॥
 मर्षः क्षमा तितिक्षा स्यादसूया दोषदृग्गुणे ।
 वैरं विरोधो विद्वेष ईर्ष्या मात्सर्यमुन्नते ॥ १८४ ॥
 तङ्कोऽस्त्री भीमिया भीतिः साध्वसं भयनं भयम् ।
 विप्रतिसारेऽनुशयः पश्चात्तापोऽनुतापवत् ॥ १८५ ॥
 स्नेहोऽस्त्री प्रेम सौहार्दमजय्यं हार्दसौहृदे ।
 आनन्दनं सङ्गतं स्यादप्रच्छन्नं सभाजनम् ॥ १८६ ॥
 सख्यं साप्तपदीनं स्यात् कौतुकं तु कुतूहलम् ।
 कौतूहलं विनोदश्च दुःखं पीडाव्यथाऽऽर्तयः ॥ १८७ ॥
 सम्भरस्तु मदो हर्षः प्रमोदो मोदसम्मदौ ।
 आनन्दो नन्दशुर्हार्दस्तृप्तिमुन्नन्दिहृष्टयः ॥ १८८ ॥
 शर्म शातं सुखं सौख्यमयः शुभफलो विधिः ।
 विधौ दैवं दिष्टभाग्ये विपाको भवितव्यता ॥ १८९ ॥
 उपलिङ्गं त्वरिष्टं स्यादजन्यं डिम्बविप्लवौ ।
 डमरोपप्लवोत्पाता उपसर्ग उपद्रवः ॥ १९० ॥
 सम्पत् सम्पत्तिलक्ष्म्यौ श्रीर्विपत्तिर्विपदापदौ ।
 अवसादस्तु सादः स्याद्विषादश्च श्लिकुर्न ना ॥ १९१ ॥

उग्रता तूष्णिका रौद्री करुणा तु दया कृपा ।
 घृणाऽनुकम्पाऽनुक्रोशः कारुण्यं चाथ कौकुटे ॥ १६२ ॥
 क्लेशायासौ जुगुप्सा तु हृणीया हृणिया घृणा ।
 ऋतिः कुत्साऽप्युपक्रोशो गर्हा दोषश्च गर्हणा ॥ १६३ ॥
 मन्दाक्षं ह्रीन्मृगा लज्जा ब्रीला साऽपत्रपाऽन्यतः ।
 हासिका तु हसो हासो हसनं हास्यधर्धरे ॥ १६४ ॥
 व्याजो मिषं छलं छद्म निभं च कपटोऽस्त्रियाम् ।
 दम्भो दण्डाजिनं कूटं दौन्दुभिश्छन्दनोपधा ॥ १६५ ॥
 रेभटिः कुक्कुटिर्मिथ्याचर्या च परिकल्पना ।
 जागरितं जागरणं जागर्या जागरा न षण् ॥ १६६ ॥
 प्रमीला तामसी तन्द्रा स्वापस्तु स्वप्नसंशयौ ।
 निद्रा गुडाका सुप्तं च स्वप्नस्त्वेवात्र दर्शनम् ॥ १६७ ॥
 संस्कारमात्रजः स्वप्नः कामिको रसकोऽपि च ।
 अदृष्टजस्त्वत्र चाप्रो दोषजस्त्वाङ्गलौकिकः ॥ १६८ ॥
 प्रदोषे बलकः स्वप्नोर् नशीथे लोचमालकः ।
 नचकोऽपररात्रे स्यात् सद्यःपाको निशात्यये ॥ १६९ ॥
 नन्दीमुखी श्वासहेतिः सुषुप्तिः सुखसुप्तिका ।
 मूर्च्छा तु मूर्च्छना मौढ्यं वैचित्त्यं कश्मलं लयः ॥ २०० ॥
 कालधर्मस्तु दिष्टान्तो निपातो गमिरन्धकः ।
 कटमोषो भूमिलाभो दीर्घनिद्रा निमीलनम् ॥ २०१ ॥
 पञ्चत्वं मरणं मृत्युरक्ली स्यादमतोऽस्त्रियाम् ।
 सर्वलोकतते मृत्यौ मारिः स्त्री मारकोऽस्त्रियाम् ॥ २०२ ॥
 हृषीकमिन्द्रियं प्राणः प्राणा ना भूमिर्न चासवः ।
 प्राणापानादयस्त्वस्य वृत्तयः पञ्च वायवः ॥ २०३ ॥
 श्वासस्तु श्वसितं सोऽन्तर्मुख उच्छ्वास आहरः ।
 आनश्चाथ बहिर्वृत्तो निश्वासः पान एतनः ॥ २०४ ॥
 स्थिरस्त्वाश्वास एती च स्यादूवद्धयं गुदानिले ।
 तन्मात्राण्यविशेषाः स्युर्विशेषाः पञ्च खादयः ॥ २०५ ॥
 महाभूतानि भूतानि लोको भुवनविष्टपे ।
 मर्त्यलोको जीवल्लोको मर्त्योऽप्यथ भुवोऽव्ययम् ॥ २०६ ॥
 स्वर्महश्च क्रमाल्लोका महरेव महानपि ।
 प्राजापत्यो जनस्तस्माद् गोलोकस्तु तपो न पुम् ॥ २०७ ॥

ब्रह्मलोकः सत्यलोकस्तत्र पुर्यपराजिता ।
 योगस्त्वाध्यात्मिकोऽथासावष्टाङ्गोऽङ्गैर्यमादिभिः ॥ २०८ ॥
 अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यमसङ्गग्रहः ।
 यमाः स्युर्नियमाः शौचसन्तोषतपआदयः ॥ २०९ ॥
 आसनं करणं तस्य भेदाः पद्मासनादयः ।
 उत्तानौ चरणावूर्वोर्न्यस्येन्नाभौ करद्वयम् ॥ २१० ॥
 दक्षिणोत्तरमुत्तानं घ्राणदृक् पद्माकासनी ।
 अर्धपद्मासनं त्वेकपाद ऊरोरधःस्थिते ॥ २११ ॥
 निगूढचरणं तूर्वोरधश्चेच्चरणावुभौ ।
 पादोपवेशस्त्वन्वर्थः संयुज्य पदयोस्तले ॥ २१२ ॥
 ते चत्वारोऽपि पर्यङ्का पृष्ठवंशशिरोधरम् ।
 नियम्य मीलिताक्षश्चेत्पर्यस्तिकरणेन वा ॥ २१३ ॥
 नागदन्तकमूर्ध्वज्जोर्जानुस्थौ प्रसृतौ भुजौ ।
 सूचीमुखमिदं पाणितलौ चेत्संहतौ मिथः ॥ २१४ ॥
 अर्धसूची तु तौ द्वौ चेत् प्रादेशान्तरतो मुखात् ।
 कुट्मलं मुकुलीभूतौ तौ चेदूर्ध्वमुखौ स्थितौ ॥ २१५ ॥
 अस्पृष्टौ नागदन्तस्य स्फिचौ चेद् भुवमुत्कटम् ।
 वहित्रकर्णः संयुज्य जङ्घायुग्मप्रसारणात् ॥ २१६ ॥
 एष पादप्रसारोऽपि स्यादथो मरणालसम् ।
 वस्तिशुण्डकमप्यस्य जङ्घैका चेत्प्रसारिता ॥ २१७ ॥
 अर्धनाकुलमूर्ध्वज्जोर्जङ्घे बद्धे भुजेन चेत् ।
 द्वाभ्यां चेन्नाकुलं दोभ्यामथ वज्रासनं यदि ॥ २१८ ॥
 जङ्घे पद्मासनावस्थे तत्सन्धिनिहितौ करौ ।
 ताभ्यामेव स्थितौ भूमावन्तरिक्षासनं च तत् ॥ २१९ ॥
 गोधासनं तदेकेन स्थितश्चेत् पाणिना भुवि ।
 पद्मासनस्य पदयोः पाणिना पृष्ठगामिना ॥ २२० ॥
 वामेन दक्षिणाङ्गुष्ठं वामं चान्येन पीडयेत् ।
 वेतालासनमित्येतदेकाङ्गुष्ठग्रहात् किणः ॥ २२१ ॥
 कर्णयोर्जानुपार्श्वाभ्यां स्पर्शं जानुनिकुञ्चनम् ।
 भुजवेष्टितजङ्घोरोश्चूलिकाश्लेषितावनेः ॥ २२२ ॥
 पृष्ठतो भुजपाशश्चेन्मृत्युसंयमनोऽपि सः ।
 बिन्दुभेदोऽप्यथो जानुसन्ध्योः पादप्रवेशनात् ॥ २२३ ॥
 स्वस्तिकोऽथ समस्थानं पादौ कुञ्चितसम्पुटौ ।
 आसीनस्यासनान्येतान्यथ सुप्तस्य साम्यतः ॥ २२४ ॥

गवादीनां निषण्णानां स्याद्वोनिषदनादिकम् ।
 उत्तानस्योर्ध्वपादत्वमित्येतद्विद्विभासनम् ॥ २२५ ॥
 दण्डासनादिभेदेन पञ्चधा स्यात् स्थितासनम् ।
 दण्डासनं स्यादन्वर्थं यत्र दण्डवदुत्थितः ॥ २२६ ॥
 स्याद्वीरासनमुत्पादः कृत्वा भूमौ शिरः स्थितः ।
 दुर्योधनासनमपि मृत्युसंयमनोऽपि सः ॥ २२७ ॥
 दण्डपद्मासनं तस्मिन् जङ्घे पद्मासनोचिते ।
 त्रिविक्रमासनं तार्क्ष्यासनमित्यपि साम्यतः ॥ २२८ ॥
 प्राणायामः प्राणयम उत्खातो मानमस्य यत् ।
 छोटिकास्त्रिः परामृश्य जानुस्फोटक्रियाऽथ ताः ॥ २२९ ॥
 षट्त्रिंशन्मन्द उत्खातो द्विगुणत्रिगुणौ पुनः ।
 मध्यमश्चैवोत्तमश्च प्रथमो द्वादशैव वा ॥ २३० ॥
 प्रत्याहारस्त्विन्द्रियाणां विषयेभ्यः समाहृतिः ।
 धारणा तु कचिद्धयेये चित्तस्य स्थिरबन्धनम् ॥ २३१ ॥
 ध्यानं तु विषये तस्मिन्नेकप्रत्ययसन्ततिः ।
 समाधिर्ना तदेवार्थमात्राभासनरूपकम् ॥ २३२ ॥
 प्रयुक्तं धारणाद्येतत्त्रयमेकत्र संयमः ।
 ओङ्कारः प्रणवस्तारस्तारकं सर्वविन्मतिः ॥ २३३ ॥
 विद्वान् सन् कोविदः सूरिर्मैधावी पण्डितो बुधः ।
 सुधीर्विपश्चित् सङ्ख्यावान् प्राज्ञो धीमान् विचक्षणः ॥ २३४ ॥
 दीर्घदर्शी दूरदर्शी लब्धवर्णो मनीष्यपि ।
 त्रिवर्गो धर्मकामार्थाश्चतुर्वर्गः समोक्षकः ॥ २३५ ॥
 सबलैस्तैश्चतुर्भद्रः शास्त्रीयं तु फलं गतिः ।
 सान्दष्टिकं फलं सद्यः कार्यं कृत्यं प्रयोजनम् ॥ २३६ ॥
 प्राप्तिरैक्येन सायुज्यं साष्टिरैश्वर्यतुल्यता ।
 ब्रह्मभूयं ब्रह्मभावो देवभूयादिकं तथा ॥ २३७ ॥
 अमृतत्वं तु कैवल्यं मुक्तिर्मोक्षोऽपुनर्भवः ।
 मोक्षावलम्बिनः प्रायः पाषण्डा बाह्यलिङ्गिनः ॥ २३८ ॥
 ते च हेरुकशोभायाः प्रोक्ताः पण्णवतिः कचित् ।
 दशोत्तरं शतं कैश्चित् पाषण्डानां प्रदर्शितम् ॥ २३९ ॥
 शतत्रयं षष्ट्यधिकमुक्तं चीनेशसंसदि ।
 वेषाजीवकृतान्ताद्यैस्तेषां भेदः परस्परम् ॥ २४० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 भूमिकाण्डे ब्राह्मणाध्यायः ॥ ६ ॥

क्षत्रियाध्यायः ॥ ७ ॥

क्षत्रं बाहुजराजन्यौ भूशक्रः क्षत्रियो विराट् ।
 राजा तु पार्थिवो भूभुग् राड् भूपो नृपतिर्नृपः ॥ १ ॥
 नरेन्द्रो नरदेवश्च वश्यामात्यस्त्वधीश्वरः ।
 सार्वभौमश्चक्रवर्ती नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥
 स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ।
 राज्यङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च ॥ ३ ॥
 गुणाः साङ्ग्रामिकाः सर्वे स्वामिनस्त्वाभिगामिकाः ।
 इन्द्रव्रतादयश्चाष्टौ सम्पत्तिर्विपदोऽपराः ॥ ४ ॥
 तत्र याः शक्तयस्तिष्ठः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ।
 षाड्गुण्यमस्त्राद्यभ्यासो गुणाः साङ्ग्रामिका इमे ॥ ५ ॥
 षड्गुणा आसनं यानं द्वैधं विग्रह आश्रयः ।
 सन्धिश्चेन्द्रयमादीनां वृत्तिमिन्द्रव्रतादिकम् ॥ ६ ॥
 अथ विद्यार्जनं दानमष्टवर्गस्य वर्धनम् ।
 द्विकपञ्चकपट्काणां विजयः सप्तवर्जनम् ॥ ७ ॥
 उपायनैपुणं धर्म इत्याद्याः शोभनाः क्रियाः ।
 दृष्टादृष्टोदयार्था यास्ते गुणा आभिगामिकाः ॥ ८ ॥
 तत्राष्टवर्ग आरम्भः कृषिः सेतुर्वणिक्पथः ।
 खनिस्थानं वनच्छेदो दुर्गं शून्यनिवेशनम् ॥ ९ ॥
 द्विकं तु मनआत्मानाविन्द्रियाणि तु पञ्चकम् ।
 षट्कं कामो मदो मानो लोभो हर्षो रुषाऽपि च ॥ १० ॥
 मृगयाक्षाः स्त्रियः पानं वाक्पारुष्यार्थदूषणे ।
 दण्डपारुष्यमित्येतन्महाव्यसनसप्तकम् ॥ ११ ॥
 मुख्योपायास्तु सामाद्याः क्षुद्रोपायाः पुनस्त्रयः ।
 मायोपेक्षेन्द्रजालं चेत्येते माया तु शाम्बरी ॥ १२ ॥
 इन्द्रजालं तु कुहकमुपेक्षा त्ववधीरणम् ।
 उपजापस्तु भेदः स्यात् साम सान्त्वं च सान्त्वनम् ॥ १३ ॥
 तन्त्रं स्वराष्ट्रचिन्ता स्यादावापस्त्वरिचिन्तनम् ।
 अदृष्टं वह्नितोयादि दृष्टं स्वपरचक्रजम् ॥ १४ ॥

राज्ञामहिभयं तु स्यात् स्वपक्षप्रभवं भयम् ।
 हैमं सिंहासनं भद्रासनं त्वन्यन्नृपासनम् ॥ १५ ॥
 छत्रं स्यादातपत्रं तन्नृपलक्ष्म नृपस्य चेत् ।
 अभिसारस्त्वनुचरः सहायोऽनुप्लवोऽनुगः ॥ १६ ॥
 सेवकश्चानुजीवी च यस्तु केलिसहायकः ।
 वैहासिकः केलिकिलस्तस्मिन् हासनिकोऽपि च ॥ १७ ॥
 सामन्ता राजसन्धिस्था आरक्षाः पुररक्षिणः ।
 मन्त्र्यमात्यौ तु धीकर्मसहायेऽतः परे त्रिषु ॥ १८ ॥
 अध्यक्षः स्यादधिकृतः स्थाने चेत् स्थानिको ह्यसौ ।
 क्षुद्रोपकरणेषु स्यादध्यक्षः पारिकर्मिकः ॥ १९ ॥
 कुमारोऽमात्यको मन्त्री वर्गे धर्मे तु धार्मिकः ।
 हृष्टे धीकर्मिकः पुर्या चोरिको दण्डपाशिकः ॥ २० ॥
 रजते नैष्किको ग्रामे स्थायुको हेम्नि भौरिकः ।
 महानसे पौरोगवो दण्डपालोऽखिले बले ॥ २१ ॥
 अन्तःपुरेऽन्तर्बशिको गोपो ग्रामेषु भूरिषु ।
 कालिकोऽधिकृतः शुल्के सौविदल्लस्तु सौविदः ॥ २२ ॥
 स्थापत्यकञ्चुक्यार्याश्च षण्डो वर्षवरः समौ ।
 प्रदेष्टा पञ्चजनीनो भाण्डागारिक इत्यपि ॥ २३ ॥
 दौवारिको वेत्रधरो द्वास्थः क्षत्ता च दर्शकः ।
 द्वारपाले पुरोधास्तु सौवस्तिकपुरोहितौ ॥ २४ ॥
 मौहूर्तिकमौहूर्तज्यौतिषिकज्ञानिगणकदैवज्ञाः ।
 सावत्सर आदेशी कार्तान्तिक इत्यमी तुल्याः ॥ २५ ॥
 यथार्हवर्णो मन्त्रज्ञो भीमरो गूढपुरुषः ।
 चारोऽप्यथ वणिग्भिक्षुश्छात्रो लिङ्गी कृषीवलः ॥ २६ ॥
 इति संस्थाचराः पञ्च तत्र भिक्षुरुदास्थितः ।
 कृषीवलो गृहपतिश्छात्रे कापटिकश्चरे ॥ २७ ॥
 सञ्चारोऽस्त्वपरे चाराः स्थिताः संस्थाचरेषु ये ।
 तीक्ष्णोऽतिहिंसनः शूरशङ्करी छद्मप्रधारवान् ॥ २८ ॥
 अपसर्पाः कर्मकरव्याजात् स्थाने वसन्ति ये ।
 वार्तिकः सन्देशहरो दूतः सान्देशिको रभूः ॥ २९ ॥
 वैतालिको बोधकरो वन्दी तु स्तुतिपाठकः ।
 मागधो मधुको घण्टाताडे घण्टिकचातिकौ ॥ ३० ॥

कृताभिषेका महिषी महादेव्यप्यथापरा ।
 देवी राजकुलोत्था चेत् परिवृत्ती तु पूजिता ॥ ३१ ॥
 वावाता तु प्रियतमा स्वामिनी त्वनृपात्मजा ।
 फालाकली युद्धजिता नृपस्योढाः प्रिया इमाः ॥ ३२ ॥
 अनूढास्तु प्रिया राज्ञः कलाज्ञा गणिकाः स्मृताः ।
 गणिका सा प्रगणिका यानाप्तपचारिका ॥ ३३ ॥
 आज्ञा स्यादाज्ञागणिका या राज्ञाप्तपरिच्छदा ।
 अथालगन्धिकाऽप्याज्ञागणिका कुलसम्भवा ॥ ३४ ॥
 या तु भोगाय वेश्यात्वं गता वैषयिकीति सा ।
 बन्धकी तु गता वेशमर्थायानाप्तसत्कृतिः ॥ ३५ ॥
 शय्यास्त्रभूषणादौ तु निधुक्ता परिचारिका ।
 सञ्चारिका महाकार्ये कथायां द्रविणादिषु ॥ ३६ ॥
 विचारिका तूपवनकक्षान्तरविचारिणी ।
 आशीस्स्वस्त्ययनाभिज्ञा या वृद्धा सा महत्तरी ॥ ३७ ॥
 प्रतिहारी तु राजानं सम्भावयति या सदा ।
 आयुक्तिविनियुक्ता या सा ताम्बूलकरङ्गिका ॥ ३८ ॥
 असिक्न्यन्तःपुरप्रेष्याऽनाप्तभोगा कुमारिका ।
 विषयानन्तरो राजा शत्रुमित्रमतः परम् ॥ ३९ ॥
 उदासीनः परस्तस्मात् पार्ष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ।
 शत्रुर्दस्युरमित्रारी अरातिरहितो द्विषन् ॥ ४० ॥
 द्वेषणः प्रत्यनीको द्विङ् जिघांसुर्हिसनो रिपुः ।
 सपत्नोऽसहनो वैरी दूषकः शात्रवः परः ॥ ४१ ॥
 प्रत्यर्थी पर्यवस्थाता प्रतिपक्षो विपक्षकः ।
 दुर्हृद् द्वेष्यभियातिश्च परिपन्थी विरोध्यपि ॥ ४२ ॥
 मित्रं नपुं त्रिषु स्निग्धवयस्येष्टहितप्रियाः ।
 निजात्मीयाप्तसुहृदः सहायः सद्रुचिः सखा ॥ ४३ ॥
 कोशोऽर्थसञ्चयो राज्ञां भाण्डान्यर्था हि कोशगाः ।
 आयोदयौ धनोत्पत्तौ तत्क्षयेऽपचितिर्व्ययः ॥ ४४ ॥
 पर्याहारः प्रजास्वायो भागधेयो बलिः करः ।
 उपदा तूपहारः स्यादुपग्राह्यमुपायनम् ॥ ४५ ॥
 प्रदेशनं प्राभृतं च लम्बा तूत्कोच आमिषः ।
 दण्डो दमः साहसोऽस्त्री द्विपाद्यो द्विगुणो दमः ॥ ४६ ॥

अपराधो मन्तुरेनः खसृमं विप्रियागसी ।
 अपवादस्तु निर्देशो निदेशः शासनं तथा ॥ ४७ ॥
 शिष्टिराज्ञाऽप्यथ न्यायो देशरूपं समञ्जसम् ।
 राष्ट्रं तु विषयः सोऽपि युक्तो ग्रामैः शताधिकैः ॥ ४८ ॥
 उपवर्त्तनमप्यस्मिन्मण्डलं तैः शताधिकैः ।
 दुष्प्रापं तु पुरं दुर्गं यन्त्रशैलजलादिभिः ॥ ४९ ॥
 वारकादीनि यन्त्राणि परिखाया बहिर्भवि ।
 पादुका कण्टकी गर्तः पांसुच्छन्नो महापथे ॥ ५० ॥
 तलयन्त्रं क्षुराकारं यदि वा क्रकचोपमम् ।
 श्वदंष्ट्रार्गलशृङ्गाटमण्डूकाद्यन्वितार्थकम् ॥ ५१ ॥
 शरभा जानुमात्री दा दारुजा जानुभञ्जिनी ।
 अवपातस्तु हस्त्यर्थो गर्तश्छन्नस्तृणादिना ॥ ५२ ॥
 स्यात् कण्टकप्रतीसारा रज्जुः कण्टकसञ्चिता ।
 अहिपृष्ठं तु निर्मासपृष्ठास्थ्याभमयोमयम् ॥ ५३ ॥
 उपस्करप्रस्खलिनी भूमिः स्थपुटपिच्छिला ।
 छन्नैरेतैश्छन्नपथं सुरुङ्गादिः कृतश्च यः ॥ ५४ ॥
 सैन्यं चक्रं बलं सेना चमूर्वाहिन्यनीकिनी ।
 पताकिनी च पृतना ध्वजिनी च वरुथिनी ॥ ५५ ॥
 सैन्यं तु भिन्नकूटं तन्नष्टावान्तरनायकम् ।
 शून्यमूलं तदस्थानमन्तश्शल्यं तदोषकम् ॥ ५६ ॥
 त्रिहयं पञ्चपादातं यदेकरथकुञ्जरम् ।
 सैन्यं सा पत्तिरेतस्यास्त्रैर्गुण्यात् स्युर्यथाक्रमम् ॥ ५७ ॥
 सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः ।
 अनीकिनीत्यनीकिन्यः पुनरक्षौहिणी दश ॥ ५८ ॥
 प्रत्यासारश्चमूपाणिः सज्जनं तूपरक्षणम् ।
 हस्त्यश्वरथपादातं बलं स्याच्चतुरङ्गकम् ॥ ५९ ॥
 इभो मतङ्गजो हस्ती दन्ती कुम्भी करी रदी ।
 स्तम्बेरमो गजो गर्जो द्विरदोऽनेकपो द्विपः ॥ ६० ॥
 दन्तावलो महाकायो वारणः कुञ्जरोऽसुरः ।
 महामृगः शूर्पकर्णः सामजः सिन्धुरः कपिः ॥ ६१ ॥
 मदवृन्दः कुषी कम्बुः शुण्डालः षष्टिहायनः ।
 भद्रो मन्द्रो मृग इति गजाः सङ्करजास्तथा ॥ ६२ ॥

अङ्गप्रत्यङ्गभद्रत्वं संक्षिप्तं भद्रलक्षणम् ।
 पृथुत्वं श्लथता स्थौल्यं संक्षिप्तं मन्द्रलक्षणम् ॥ ६३ ॥
 तनुप्रत्यङ्गदीर्घोच्चप्रायो मृगगणो मृगः ।
 भद्रमन्द्रो भद्रमृगो भद्रमन्द्रमृगोऽपि च ॥ ६४ ॥
 मन्द्रभद्रादयोऽप्येवमिति सङ्करजा नव ।
 ऊर्ध्वाधःकायभेदात्ते द्विधेत्यष्टादशोदिताः ॥ ६५ ॥
 पञ्चवर्षो गजो बालः पोतस्तु दशवर्षकः ।
 त्रिंशद्वर्षस्तु कलभो विक्को विंशतिवर्षकः ॥ ६६ ॥
 कालेऽप्यजातदन्तश्च स्वल्पाङ्गोऽपि च मक्कणः ।
 आज्ञाकृद्दिनयग्राही यूथनाथस्तु यूथपः ॥ ६७ ॥
 लग्नो मदकलो मत्तः प्रभिन्नोऽप्यथ निर्मदः ।
 उद्धान्तोऽसौ परिणतस्तिर्यग्दन्तप्रहारकः ॥ ६८ ॥
 औपवाह्यो राजवाह्यः सन्नाह्यः समरोचितः ।
 स्थूलह्रस्वरदोऽसोढ ईषादन्त उदग्रदन् ॥ ६९ ॥
 करेणुः करिणी धेनुः कल्पना सज्जना घटा ।
 गण्डूपको बहिष्कर्षः सस्भोगश्चातिहस्तकः ॥ ७० ॥
 स्थूलहस्तः फलीहस्तः पृथुहस्त इति क्रमात् ।
 उपर्येते गजाङ्गुल्याः प्रदेशाः सा तु कर्णिका ॥ ७१ ॥
 आकर्षः परिकर्षश्च बहिष्कर्षस्य पार्श्वयोः ।
 किरीटी दन्तमूलं स्यात् प्रवेष्टस्तु ततः परम् ॥ ७२ ॥
 मध्येमुखं तु बाहिर्त्थं पिलाटौ तस्य पार्श्वयोः ।
 कर्णमूले पीतलिका चूलिका पिप्पलीति च ॥ ७३ ॥
 तस्यास्तु पर उद्घात आरक्षः कुम्भयोरधः ।
 उरःपार्श्वौ तु विश्वोभौ दर्दरौ गलपार्श्वयोः ॥ ७४ ॥
 कटोऽस्य कटो गण्डो गात्रं पूर्वोऽङ्घ्रिरस्य तु ।
 मूलेधोऽधः प्रदेशास्तु क्षयश्च पलिपादकः ॥ ७५ ॥
 कूर्मः सन्दानभागश्च प्रोह उत्सङ्ग इत्यपि ।
 विशेषभागो जघनभागो वैशाख्यपि क्रमात् ॥ ७६ ॥
 गात्रे सप्त नखादूर्ध्वं पिण्डकान्तमवस्थिताः ।
 पुच्छवंशोऽपवंशः स्यान्निष्कोशः कुक्षिमध्यकम् ॥ ७७ ॥
 अवरं पश्चिमः पादस्तत्राधोऽधः स्थिताः क्रमात् ।
 कालभागो बहिष्पार्श्वस्तथा जघनपिण्डिका ॥ ७८ ॥

मण्डुकी शकुटा पाष्णिस्तलप्रोहश्च सक्थि च ।
 सन्दानभागः कूर्मश्च प्रदेशाः स्युर्नखावधेः ॥ ७६ ॥
 अत्यूहः ककुदं मेढ्रे क्षीरिका चूचुकान्तरम् ।
 अथ पुच्छे स्थिता किङ्क्षी संवालो बालपुष्कलम् ॥ ८० ॥
 बालपाशक इत्येवमधोऽधः स्युर्यथोत्तरम् ।
 दन्तभागः पुरोभागः पुच्छभागस्तु पार्श्वतः ॥ ८१ ॥
 मुखे पृषन्ति पद्मानि वमथुः करशीकरः ।
 प्रवृत्तिर्मद आलानं स्तम्भस्तोत्रं तु वेणुकम् ॥ ८२ ॥
 अन्दुको निगलो न स्त्री भिदुरं शृङ्खला त्रयी ।
 कलापकः कण्ठबन्धस्त्रिपदी पादबन्धनम् ॥ ८३ ॥
 चूषा कट्या वरत्रा स्यादङ्कुशोऽस्त्री सृणिर्न षण् ।
 अपष्टं त्वङ्कुशस्याग्रं सूना दण्डोऽर्पिताङ्कुशः ॥ ८४ ॥
 सूनापष्टान्तरं मन्या वक्रकीलो हुरुट्टकः ।
 कीलस्तु पुण्यलः शङ्कुर्हिङ्गीरो लोहशृङ्खलः ॥ ८५ ॥
 पश्चाच्चरणशङ्कौ तु पङ्क्तीशो घुटिकोऽपि च ।
 कदलिः करिणां केतुः शृङ्गारो गजमण्डनः ॥ ८६ ॥
 स्थासको नक्षत्रमाला कर्णशङ्कौ तु शङ्किलौ ।
 गजोपचारकुशलो वाहितो मलहारकः ॥ ८७ ॥
 आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः ।
 तत्प्रधाना महामात्रा आरोहा गजजीवनाः ॥ ८८ ॥
 पादकर्म यतं तेषां यातमङ्कुशवारणम् ।
 वीतं तदुभयं यच्च निस्सारं हयकुञ्जरम् ॥ ८९ ॥
 अश्वस्तुरङ्गस्तुरगो हयः सप्तिस्तुरङ्गमः ।
 शालिहोत्री व्रती कुण्डी प्रोथी वारुः प्रकीर्णकः ॥ ९० ॥
 कुदरो घोटकस्तादर्यः क्रमणो ग्रहभोजनः ।
 पाकलः परुलः पीतिर्माषाशी हि सविक्रमः ॥ ९१ ॥
 श्रीवृक्षकी वक्षसि चेद्रोमावर्तो मुखेऽपि च ।
 मल्लिकाक्षः सितैर्नेत्रैः कृष्णैरिन्द्रायुधो हयः ॥ ९२ ॥
 पञ्चभद्रस्तु हृत्पृष्ठमुखपार्श्वेषु पुष्पितः ।
 पुच्छोरःखुरपुच्छास्यैः सितैः स्यादष्टमङ्गलः ॥ ९३ ॥
 आजानेयाः कुलीना स्युः पारसीकादयश्च ते ।
 पारसीकादिसंज्ञास्तु पारसीकादिदेशजाः ॥ ९४ ॥

ये तु काम्बोजवाह्नीकवनायुजमुखा हयाः ।
 ते निहीनकुलाः किञ्चित् (पश्चि)मोत्तरदेशजाः ॥ ६५ ॥
 निहीनास्त्वञ्जलारट्टशम्भला दोषिणः परे ।
 तत्र शृङ्गी शृङ्गपदे मांसबुद्बुदवान् हयः ॥ ६६ ॥
 मुसल्यन्यप्रभैकाङ्काघ्नः कराली तु जरुर्ददः ।
 ऋषभः ककुदावर्तो यमो हीनाधिकाङ्गकः ॥ ६७ ॥
 इन्द्रवृद्धिस्तु निर्मुष्कः स्त्री सरी तु खुरे त्रिके ।
 कृत्तिकापिञ्जरः स स्याद्यः पृषत्पुञ्जपिञ्जरः ॥ ६८ ॥
 अश्वानामागमे संज्ञा वर्णिता वर्णहेतवः ।
 सिते द्वौ कर्ककोकाहौ खोज्जाहः श्वेतपिङ्गलः ॥ ६९ ॥
 आनीलः स्यान्नीलकोशः पुङ्गाहः कृष्णवर्णकः ।
 शोणः कोकनदच्छायस्त्रियूहः कपिलो हयः ॥ १०० ॥
 कियाहो लोहितः पीतरक्तस्तूद्रकलाहकः ।
 उराहस्तु मनाक् पाण्डुः कृष्णं जङ्घाद्वयं यदि ॥ १०१ ॥
 पाटलो वोरुखानः स्याद् गर्दभाभः सुरुहकः ।
 हलाभश्चित्रलो रेखाऽप्यस्य कृष्णाऽस्ति पृष्ठगा ॥ १०२ ॥
 कलाहस्तु मनाक् पीतः कृष्णः स्याद्यदि जानुनि ।
 खेल्लाहः कर्पलच्छायः पाण्डुवालधिकेसरः ॥ १०३ ॥
 पीतस्तु हरियाः पीतहरिते हरिहालकौ ।
 पीयूषवर्णे सेराहः पङ्गुलः सितकाचसः ॥ १०४ ॥
 सर्व एवान्यसंज्ञाः स्युः कर्काद्याः पुण्ड्रके सति ।
 कोकुराहः खुरुराहो हलुराह इति क्रमात् ॥ १०५ ॥
 कर्काद्याः खुरुराहस्तु फाले रेखा च पृष्ठगा ।
 सरुराहः सेरुराहो द्वौ सेराहे सपुण्ड्रके ॥ १०६ ॥
 अश्वपोतः किशोरः स्याद्दाम्यश्वा वडबाऽवती ।
 लुठितोऽश्व उपावृत्तः सुकरो दुर्विनीतकः ॥ १०७ ॥
 अह्नाऽश्वगम्यमाश्वीनं त्रिष्वेतेऽश्वतरः पुमान् ।
 स्याद्वेसरो वेगसरो मूकरुण्डौ तु वेसरात् ॥ १०८ ॥
 अश्वा सूतेऽश्वतर्यौ तु मूकाज्जातः किसिदृकः ।
 निगालस्तु गलोद्देशे नासाग्रे प्रोथमस्त्रियाम् ॥ १०९ ॥
 आवर्तो रोमजो देवमणिस्त्वेष निगालजः ।
 कश्यमश्वस्य मध्यं स्यादन्तवेष्टस्तु नालिका ॥ ११० ॥

कालिका दन्तरेखा स्यादन्तच्छिद्रमुखस्वली ।
 कर्तनं धूलिलुठितं वर्तनं तूपवर्तनम् ॥ १११ ॥
 लोठभूर्मुखरज्जुस्तु स्यादन्ताल्यवरक्षणी ।
 दामाञ्जनं पादपाशो नासारज्जुस्तु लालिका ॥ ११२ ॥
 कवियोऽस्त्री खलीनोऽस्त्री पञ्चाङ्गी कविका कवी ।
 प्राक्पादरज्जुरातालो बका स्याद् द्विप्रहे द्वयोः ॥ ११३ ॥
 पर्याणं स्यात् पल्ययनं बल्गावक्षेपणी कुशा ।
 कशा काम्रा वक्त्रपट्टे तलिका तलसारकम् ॥ ११४ ॥
 पादपुट्यां पादफली प्रक्षरं प्रखरोऽस्त्रियाम् ।
 युग्याशनप्रसेवे तु द्वौ बोक्काणप्ररोहकौ ॥ ११५ ॥
 आयानं स्यादलङ्कारो ग्रीवाभूषा तु गण्डकः ।
 लवणस्य प्रदानाय कृता लवणलांयका ॥ ११६ ॥
 तैलस्य नालिका सूत्रसङ्ग्रहोऽश्वस्य कषकः ।
 केशकारक्षौरकारौ नालिवाहस्तु घासिकः ॥ ११७ ॥
 अश्वानां तु गतिधारा विभिन्ना सा तु पञ्चधा ।
 आस्कन्दितां धौरितकं रेचितं बल्गितं प्लुतम् ॥ ११८ ॥
 इत्येतेषाञ्च पञ्चानामेकैकं बहुभेदकम् ।
 गत्यर्थास्तद्वदर्थश्च सर्वे ते बाच्यालङ्काः ॥ ११९ ॥
 तत्रास्कान्दतकं कोपादिव सर्वैः पदैर्मुहुः ।
 उत्प्लुत्योत्प्लुत्य गमनमुपकण्ठापराभिधम् ॥ १२० ॥
 अथ धौरितकं धौर्यं धौरितं धौरणं च तत् ।
 तच्च कङ्कशिखिक्रोडनकुलानां गतैः समम् ॥ १२१ ॥
 रेचितं स्याद्भारवहं तच्चावक्रगतिर्द्रुता ।
 बल्गितं बल्गनं पद्भिर्भेदाश्चाष्टौ यमादयः ॥ १२२ ॥
 प्लुतं तु लङ्घनं पक्षिमृगधर्मेण भिद्यते ।
 यानं सांयात्रिकं युग्यं वाहनं बाह्यधोरणे ॥ १२३ ॥
 योग्यं चास्मिंश्चक्रयुते शताङ्गः स्यन्दनो रथः ।
 बहिर्त्र वहनं चास्मिंश्चतुरश्रे सकूबरे ॥ १२४ ॥
 दीर्घद्विपक्षवहनमनः क्ली शकटोऽस्त्रियाम् ।
 प्रवाहिर्ना वृत्तमध्ये पक्षकूबरवर्जिते ॥ १२५ ॥
 देवतार्थो देवरथो युद्धार्थः साम्परायिकः ।
 क्रीडार्थः स्यात् पुण्यरथः कृतः कर्णारथो मृदा ॥ १२६ ॥

कर्णैरथं प्रवहणं ह्यनं रथगर्भके ।
 गन्त्री स्त्री कूबरं न स्त्री रथे कम्बलिवाहयके ॥ १२७ ॥
 रथस्तु जयकृञ्जैत्रो यात्रार्थः पारियाणिकः ।
 रथेऽत्र द्वैपवैयाघ्रौ प्रावृते व्याघ्रचर्मणा ॥ १२८ ॥
 वृते रथे पाण्डुभिः स्यात् कम्बलैः पाण्डुकम्बली ।
 एवं काम्बलवाह्याद्याः कम्बलादभिरावृते ॥ १२९ ॥
 योग्यारथो वैनयिको जैत्रप्रभृतयस्त्रिषु ।
 धूः स्त्री धुर्वी यानमुखं युगमीषान्तबन्धनम् ॥ १३० ॥
 कस्तम्भि युगमध्येऽस्त्री स्यादक्षश्चक्रधारणम् ।
 अक्षकीले त्वर्णिर्न क्ली ध्रुवः कीलोऽप्यनिर्न षण् ॥ १३१ ॥
 रथनीडो रथस्यान्तं बन्धुरा तनुकूबरम् ।
 रथगुप्तिर्वरुथो ना कूबरो ना युगन्धरः ॥ १३२ ॥
 अनुकर्षो रथस्याधोधरणन्दार्थानसः ।
 युगो द्वितीयः प्रासङ्गः पताका तु ध्वजोऽस्त्रियाम् ॥ १३३ ॥
 अस्योच्चूडावचूडौ द्वावूर्ध्वाधोमुखचूडकौ ।
 अरि चक्रं रथपदं रथाङ्गं केशवायुधम् ॥ १३४ ॥
 स्त्री नेमिर्ना प्रधिश्चक्रप्रान्ते तुम्बा तु नाभिका ।
 अरास्तयोः स्थिता मध्ये रथाङ्गानि त्वपस्कराः ॥ १३५ ॥
 शिबिका याप्ययानं स्याद्दोला हेलार्थरूपणम् ।
 प्रेङ्खोलनं तु प्रेङ्खोलं प्रेङ्खो रिङ्खोलनाद्यपि ॥ १३६ ॥
 आन्दोलनं स्यादान्दोलो दोला स्याद्दोलिकाऽपि च ।
 परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ॥ १३७ ॥
 नियन्ता प्राजिता क्षत्ता यन्ता सृतश्च सारथिः ।
 सव्येष्टो दक्षिणेस्थश्च स्यन्दपाणिंसारथिने ॥ १३८ ॥
 सेवका युधि योद्धृणां भटा यौधाश्च यौधकाः ।
 पदातिपत्तिपादातपदातिकपदाजयः ॥ १३९ ॥
 पातिकः पादिकः पट्टो रथिको रथिनो रथी ।
 सेनास्थाः सैनिकाः सैन्याः सेनारक्षास्तु सैनिकाः ॥ १४० ॥
 पाणिग्राहास्तु पृष्ठस्थाः साहस्रास्तु सहस्रिणः ।
 परिधिस्थाः परिचराः सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ १४१ ॥
 दंशिते स्युः कवचित्सज्जसन्नद्धवर्मिताः ।
 आबद्धः पुनरामुक्तः प्रतिमुक्तः पिनद्धवत् ॥ १४२ ॥

काण्डपृष्ठस्त्वायुधिक आयुर्धीयोऽस्त्रजीवनः ।
 धन्वी धनुष्मान् धानुष्को निषङ्गयस्त्री धनुर्धरः ॥ १४३ ॥
 चर्मि शाक्तीकयाष्टीकपारश्वधिककौन्तिकाः ।
 काण्डीरखाङ्गिकाद्याश्च चर्मशक्त्यादधारिणः ॥ १४४ ॥
 छायाकरश्छत्रधरः पताकी वैजयन्तिकः ।
 पुरस्सरः पुरोगोऽग्रेसरः प्रष्टोऽग्रतस्सरः ॥ १४५ ॥
 पुरोगमः पुरोगामी यस्त्वलं यात्यरीन् प्रति ।
 सोऽभ्यमित्रोऽभ्यमित्रीणोऽप्यभ्यमित्रीय इत्यपि ॥ १४६ ॥
 शूरो वीरश्च विक्रान्तः पटुश्चारभटोऽपि च ।
 अशूरो हतकः क्लीबो जिष्णौ तु जयिजित्वरौ ॥ १४७ ॥
 शक्ये तु जेतुं जय्यः स्याज्जेयो जेतव्यमात्रके ।
 जैत्रो जेता जितो भग्नः कृतहस्तस्तु शिक्षितः ॥ १४८ ॥
 लघुहस्तः सुहस्तश्च कृतास्त्रः कृतपुङ्गवः ।
 सायुगीनो रणे साधुरत्यन्तीनो भृशं गते ॥ १४९ ॥
 कामङ्गाम्यनुकामीनो जवी तु जवनो जवः ।
 जङ्गालोऽर्तजवे धीरमन्थरौ मन्दगामिनि ॥ १५० ॥
 स्यादुरस्वानुरसिल ऊर्जस्व्यूर्जस्वलोर्जितौ ।
 बली प्रबल ओजस्वी वाच्यवद्रथिकादयः ॥ १५१ ॥
 संशप्तकास्तु संग्रामात् समयेनानिवर्तिनः ।
 त्वक्त्रं तु दंशनं वर्म तनुत्रं क्वचोऽस्त्रियाम् ॥ १५२ ॥
 माठिः स्त्री जागरो वक्षश्छदः सन्नाहकङ्कटौ ।
 तत्सूत्रकं सूत्रमयं जालिका स्यादयोमयी ॥ १५३ ॥
 नागोदर्युदरत्राणं जङ्घात्राणं तु मत्कुणम् ।
 पटुस्तु लिपिसन्नाहः प्रकोष्ठादौ कृतो यथा ॥ १५४ ॥
 बाहुलं बाहुरक्षा च मर्दनी पादरक्षणी ।
 गोधा तला च न नरौ हस्तघ्नो ज्यानिवारणे ॥ १५५ ॥
 अङ्गलित्रे कपी शीर्षत्राणे शीर्षण्यशीर्षके ।
 अधिकाङ्गं सारसनं मध्ये धार्य सकङ्कटैः ॥ १५६ ॥
 सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसन्नहनार्थकः ।
 न क्ली हेतिः शस्त्रमस्त्रमायुच्छत्रुघ्नमायुधम् ॥ १५७ ॥
 ऋष्टिः खड्गः प्रचारोऽसिर्धर्मपालः प्रजागरः ।
 धर्मो विशसनो देवो मनुष्येष्टः शिवङ्करः ॥ १५८ ॥

श्रीगर्भो विजयः शास्ता कृपाणासङ्गरिष्टयः ।
 कौक्षेयको भद्रसुतो ह्रस्वनिर्वशकस्त्वसिः ॥ १५६ ॥
 स्नुहीदलाभो निस्त्रिशो मण्डलाग्रोऽन्वितार्थकः ।
 चन्द्रहासोऽर्धचन्द्राग्र इली तु करवालिका ॥ १६० ॥
 जम्बूगर्तस्तु खड्गाम्बु न्यस्ततैलरुचिर्यदि ।
 वराभोऽनिल परण्डबीजाभपुलकावलिः ॥ १६१ ॥
 हुण्डुतः पुलकैरण्डः सितदीर्घानवस्थितैः ।
 हरकस्तरवारिः स्त्री यष्टिश्चापि मृदौ पृथौ ॥ १६२ ॥
 कुण्डलो दीर्घनिर्वशे पुलकास्त्वणुराजयः ।
 अथासिपुत्री क्षुरिका शस्त्रिका चासिधेनुका ॥ १६३ ॥
 साऽतिदीर्घा पत्रफला कुट्टन्ती हुलमात्रिका ।
 पट्टसो लोहदण्डो यस्तीक्ष्णधारः खुरोपमः ॥ १६४ ॥
 कण्टकच्छेदनोऽप्येवं द्विमुखश्च भवत्यसौ ।
 प्रासः कुन्तो हाटकस्तु स त्रिकण्टकसंज्ञितः ॥ १६५ ॥
 भिण्डपालः क्षेपणीयः सृगो दीर्घे महाफले ।
 तोमरोऽस्त्री लोहहुलदण्डे कासूश्च सर्वला ॥ १६६ ॥
 कणयो लोहमात्रोऽथ शङ्कुर्ना शल्यमस्त्रियाम् ।
 वराहकर्णकोऽन्वर्थः क्षुरिकाद्याः हुलाग्रकाः ॥ १६७ ॥
 हुलं द्विफलपत्राग्रं मुनयोऽस्त्यस्य शेखरम् ।
 प्रत्याकारपरीवारौ कोशो मुष्टौ त्सरुः पुमान् ॥ १६८ ॥
 शतघ्नी तु चतुस्ताला लोहकण्टकसञ्चिता ।
 अयःकण्टकसंज्ञना शतघ्न्येव महाशिला ॥ १६९ ॥
 भुसुण्डी स्याद्दारुमयी वृत्तायःकीलसञ्चिता ।
 हस्तिचारो गजत्रासहेतुः शरभसन्निभः ॥ १७० ॥
 देवदण्डोऽरन्निमात्रो दीर्घो मुसलयष्टिकः ।
 द्रुघणे मुद्गरघनौ परिघः परिघातनः ॥ १७१ ॥
 अस्त्रियौ चापधनुषावासेष्वासौ धनुर्द्रुणम् ।
 कार्मुकं धन्व कोदण्डमायुधाग्रयं शरासनम् ॥ १७२ ॥
 कार्मुकं तु चतुर्हस्तं कोदण्डं त्र्यङ्गुलं विना ।
 कार्मुकात् तु क्रमात् पञ्च विद्धायुधशरायुधे ॥ १७३ ॥
 गौतमं रथायुधकं कोसलं गाण्डिवोऽस्त्रियाम् ।
 पातनं मार्गणं चेति द्विगुणानि यथोत्तरम् ॥ १७४ ॥

उच्चलं ब्रह्मदण्डश्च वैशिखं बिम्बसारकम् ।
 द्विगुणानि क्रमादाद्यं त्वष्टोत्तरशताङ्गुलम् ॥ १७५ ॥
 केतनं पञ्चविंशत्या पलैर्द्वे द्विगुणे परे ।
 करीरपृष्ठं व्यासञ्च सहितं तु शतैस्त्रिभिः ॥ १७६ ॥
 पत्नानां पञ्चभिस्त्वेषां शतैः स्यात् सहितोत्तरम् ।
 लस्तुको धनुषो मध्यमग्रं लुस्तमटन्यपि ॥ १७७ ॥
 अतिरार्तिः किरिः कोटी व्या जीवा मौर्विका द्रुणा ।
 तूणी तूण उपासङ्गतूणीरौ विशिखाश्रयः ॥ १७८ ॥
 निषङ्ग इषुधिर्न क्ली पत्री तु विशिखः खगः ।
 पृषत्को रोपणो बाणः कलम्बो मर्मभेदनः ॥ १७९ ॥
 चित्रपुङ्खो वीरशङ्कुः शरो रोध इषुर्न षण् ।
 प्रद्वेलनस्तु नाराच एषणश्चायसे शरे ॥ १८० ॥
 अर्धशल्योऽर्धनाराचः कङ्कपत्रः शिलीमुखः ।
 त्रिभागशल्यनाराचे द्वौ दण्डासनदण्डिकौ ॥ १८१ ॥
 अर्धचन्द्रः क्षुरप्रः स्याद्विकर्णिः कर्णिकारलः ।
 स्नुहीदलफलो भल्लश्चिपाटोऽल्पस्तदाकृतिः ॥ १८२ ॥
 पाददण्डोऽन्वितार्थः स्याद् बाणस्तु गतपत्रणः ।
 तीरी त्वल्पा वेगवती त्वग्बलाः शरजालकाः ॥ १८३ ॥
 अयश्शलाका कूटोऽस्त्री पत्रकूटः सपत्रणः ।
 द्विद्वाविंशत्यङ्गुलिः स्यान्निचोटे द्व्यङ्गुलोत्तराः ॥ १८४ ॥
 स्युश्चोटलिङ्गकस्तालः कुलिको बिम्बसारकः ।
 कर्तरी पुङ्ख आरामं त्वग्रं वाजश्छदावलिः ॥ १८५ ॥
 पत्रणा पक्षरचना धारा शस्त्रमुखं फलम् ।
 स्थानानि धन्विनां पञ्च तत्र वैशाखमस्त्रियाम् ॥ १८६ ॥
 त्रिवितस्त्यन्तरौ पादौ मण्डलं तोरणाकृती ।
 अन्वर्थं स्यात् समपदमालीढं तु ततेऽग्रतः ॥ १८७ ॥
 दक्षिणे वाममाकुञ्च्य प्रत्यालीढं विपर्यये ।
 वैहायसञ्च वेधे तु योगावाप उपक्रमः ॥ १८८ ॥
 हस्तावापः शरादानं प्रमाथो लस्तकग्रहः ।
 मुष्ट्यायोजनमादानमिषोर्ज्यायां समूहनम् ॥ १८९ ॥
 वितानं संहितस्येषोः किञ्चिदेव विकर्षणम् ।
 निमित्तग्रहणं लक्ष्यग्रहो बुद्धिदृगादिना ॥ १९० ॥

आकर्णकर्षणं पूर्णमायामं त्वङ्गुलाधिकम् ।
 ततोऽप्यर्धाङ्गुलाकृष्टसन्धानं तेजनं न ना ॥ १६१ ॥
 मुष्टिमान्द्यं निर्हरणं व्यवच्छेदस्तु मोक्षणम् ।
 कैराती गतिरूर्ध्वाऽधःप्रकर्षस्तु गतेर्लयः ॥ १६२ ॥
 दृढदुष्करचित्राणि कर्माणि हरणानि च ।
 मुचुटी सिंहकर्णी च पताका चेति मुष्टयः ॥ १६३ ॥
 लक्षं तु लक्षणं लक्ष्यमभिसन्धानमासिकम् ।
 वेध्यं शरव्यं न नरि श्रमस्थानं खल्लुरिका ॥ १६४ ॥
 योगाभ्यासः परिचयो बाणाभ्यास उपासनम् ।
 शक्त्याद्यस्त्रं पाणिमुक्तं यन्त्रमुक्तं शरादिकम् ॥ १६५ ॥
 मुक्तामुक्तं धृतं मुक्तं नागपाशादिदीर्घकम् ।
 अमुक्तं छुरिकादि स्यादिति शस्त्रं चतुर्विधम् ॥ १६६ ॥
 धौते निशातं निशितं क्षणुतं तेजितमर्थवत् ।
 फलं चर्ममयं चर्म फलकं खेटकं समम् ॥ १६७ ॥
 अन्तर्लोहेन बद्धान्ते फलान्ते स्याद्वलाहका ।
 हस्तिकर्णः परोवण्टः फली फलकिकाल्पिका ॥ १६८ ॥
 कावाटो लघुकाष्ठः स्यात् सयष्टिर्यष्टिवारणः ।
 कटिका सूत्रसंस्थूता शलाकाः परिमण्डलाः ॥ १६९ ॥
 अङ्गुलं सैव वेत्राद्यैः सङ्ग्राहो मुष्टिरेषु या ।
 लोहाभिसार उद्योने राज्ञां नीराजनाविधिः ॥ २०० ॥
 यत्सेनयाऽभिनिर्माणं पत्युस्तदभिषेणनम् ।
 आसारस्तु प्रसरणी प्रचक्रं चलितार्थकम् ॥ २०१ ॥
 विरतं तु भटोद्योगोऽभिक्रमो यानमभ्यरीन् ।
 वीरपाणं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे ॥ २०२ ॥
 नासीरोऽयग्रयानं स्यादवस्कन्दस्तु सौप्तिकः ।
 मृधमास्कन्दनं युद्धं समिकं साम्परायिकम् ॥ २०३ ॥
 आयोधनं रणं सङ्ग्रहं प्रथनं प्रविदारणम् ।
 सम्प्रहारसमाघातकलिसंस्फोटसंयुगाः ॥ २०४ ॥
 अभिमर्दाभिसम्पातप्रघाताभ्यागमाहवाः ।
 समुदायः समुदयः सम्मर्दः सङ्गरः स्पशः ॥ २०५ ॥
 संग्रामः समरोऽस्त्री स्त्री संयुदायुच्च युत् समित् ।
 वीराशंसनमाजेर्भूर्घोरा लोलो महारणम् ॥ २०६ ॥

नियुद्धं बाहुयुद्धं स्यादवमर्दस्तु पीडनम् ।
 अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं स्खलितं चलम् ॥ २०७ ॥
 अविषादो धृतिर्धैर्यमवष्टम्भस्तु सौष्टवम् ।
 वीराणां यद्वरणे नृत्तं तस्मिन् वीरजयन्तिका ॥ २०८ ॥
 प्रसभोऽस्त्री बलात्कारो हठश्च विजयो जयः ।
 प्रतीकारो वैरशुद्धिरपदानं पराक्रमः ॥ २०९ ॥
 शौर्यं वीर्यमथ स्थाम बलं शुभं तरः सहः ।
 नाशस्त्वपक्रमोऽपायो विप्रयाणं पलायनम् ॥ २१० ॥
 सन्द्रवोद्द्रावसन्द्रावप्रदावद्रवविद्रवाः ।
 विशस्तु घात उन्मथो विशरः प्रमथो वधः ॥ २११ ॥
 निर्वासनं निहननं निबर्हणनिपूदने ।
 निस्तरहणं निशरणं निकारणनिशुम्भने ॥ २१२ ॥
 निर्वापणं निरसनं निर्ग्रन्थननिर्हिसने ।
 प्रमापणं प्रमथनं प्रवासनमपासनम् ॥ २१३ ॥
 परासनं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ।
 उद्धासनं प्रशसनं क्षणनं परिवर्जनम् ॥ २१४ ॥
 उज्जासनं संज्ञपनं काथनं प्रविसारणम् ।
 व्यापादनं च हिंसा च कदनं सङ्कुलो वधः ॥ २१५ ॥
 रुण्डोऽशिराः कबन्धोऽस्त्री कुणपस्तु शवोऽस्त्रियाम् ।
 शवयानं कटः खाटिश्रिता चित्या चितिः स्त्रियाम् ॥ २१६ ॥
 अरुः क्षतं ना क्षणितुर्व्रणोऽपीर्मोऽपि न स्त्रियौ ।
 किणो रूढं व्रणस्थाने तुमुलं रणसङ्कुलम् ॥ २१७ ॥
 जितकाशी जितरणः कान्दिशीको भयद्रुतः ।
 अपराद्धशरोऽसौ स्याद्यस्य लक्ष्याच्छयुतः शरः ॥ २१८ ॥
 पराजितः पराभूतः प्रणष्टस्त्वगृहीतदिक् ।
 प्रस्कन्नपतितौ ध्वस्ते मूढे मूर्छालमूर्छितौ ॥ २१९ ॥
 परासुरपसम्पन्नः प्रमीतः संस्थितो मृतः ।
 जीवो जीवन् किणादूर्ध्वं त्रिषु जीवस्तु जीवितम् ॥ २२० ॥
 आयुर्जीवितकाले ह्ये जीवातुर्जीवितागदः ॥ २२० ॥
 इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 भूमिकाण्डे क्षत्रियाध्यायः ॥ ७ ॥

वैश्याध्यायः ॥ ८ ॥

अर्या भूमिस्पृशो वैश्या ऊरव्या ऊरुजा विशः ।
 आजीवो जीविका वृत्तिर्वार्ता वर्तनजीवने ॥ १ ॥
 मृतं क्ली याचितं भैक्षममृतं स्यादयाचितम् ।
 उद्धो धान्यश आदानं कणिशाद्यर्जनं सिलम् ॥ २ ॥
 ऋतं तदुभयं स्त्री तु कृषिः क्ली प्रमृतानृते ।
 सत्यानृतं तु वाणिज्यं वणिज्या वणिजा स्त्रियौ ॥ ३ ॥
 पाशुपाल्यं जीववृत्तिः स्यादृणं पर्युदञ्चनम् ।
 तदवृद्धिकमुद्धारः कुसीदं तु सवृद्धिकम् ॥ ४ ॥
 वार्धुष्यं वार्धुषं धान्यवृद्धिर्वृद्धिः पुनः कला ।
 सा कायिकान्वहं देया प्रतिमासं तु कालिका ॥ ५ ॥
 कारिका तु स्वयं दृष्टा चक्रवृत्तिस्तु वृद्धिजा ।
 परिवर्तेन निर्वृत्तं वस्तु स्यादापमित्यकम् ॥ ६ ॥
 सेवा श्ववृत्तिरेताश्च याजनाद्याश्च वृत्तयः ।
 त्रिष्वालेखात् कुडुम्बी तु क्षेत्राजीवः कृषीवलः ॥ ७ ॥
 कर्षकोऽथ द्वैगुणिको वृद्ध्याजीवः कुसीदिकः ।
 वार्धुषी स्याद्वार्धुषिके प्रयोक्त्युत्तमर्णकः ॥ ८ ॥
 गृहीतर्यधमर्णः स्यादाप्तः प्रत्ययितः समौ ।
 मध्यस्थः प्राश्निकः साक्षी मूली स्यादुष्टसाक्षिणि ॥ ९ ॥
 कूटसाक्षी मृषासाक्षी प्रतिभूर्लग्नकोऽन्तरः ।
 अभियोक्ता शिरोवर्ती शिरस्थोऽथाभियुक्तके ॥ १० ॥
 सन्दंशितोऽभिशास्तश्च वसुराक्षारिकोऽपि च ।
 सदेवासकृतं सभ्यैस्तिरितं साक्षिणा तु चेत् ॥ ११ ॥
 अनुशिष्टमथो लेखो लेख्यं दिव्यं तु दैविकम् ।
 न्यासस्तूपनिधिस्थाप्यनिक्षेपा न्यस्तकोऽस्त्रियाम् ॥ १२ ॥
 सदस्या देशिकाः स्थेयाः सभास्ताराः सभासदः ।
 सभ्याः सामाजिकाश्चाथ गोष्ठ्यास्था परिषत् सभा ॥ १३ ॥
 समञ्या तारणी संसद् घटा स्थानं सदोऽप्यना ।
 द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राङ्मवपाकोऽक्षदर्शकः ॥ १४ ॥
 न्यायोऽक्षो व्यवहारोऽथ सम्प्रश्नः सम्प्रधारणम् ।
 समर्थनं च संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः ॥ १५ ॥

अर्थिनो वचनं भाषा स्यात् प्रत्यर्थिन उत्तरम् ।
 कारणं त्वभ्यवस्कन्दः प्रत्यवस्कन्द इत्यपि ॥ १६ ॥
 अवस्कन्दश्च भाषार्थमङ्गीकृत्य विशेषगीः ।
 केदारः केदारः क्षेत्रमुर्वरा सर्वसस्यभूः ॥ १७ ॥
 भूमिच्छिद्रं कृष्ययोग्या प्रहतं नालमुत्थितम् ।
 खिलं त्वप्रहतं स्थानमूषवत्यूपरेरिणौ ॥ १८ ॥
 मौद्गीनकौद्रवीणाद्याः क्षेत्रे मुद्रादिसम्भवे ।
 यव्यत्रैहेयशालेयषष्टिक्याः सयवक्यकाः ॥ १९ ॥
 यवादेस्तिगतैलीनौ तिलस्योमाणुभङ्गतः ।
 माषाच्चैवं द्विरूपत्वं शाकाच्छाकिनशाकटौ ॥ २० ॥
 एवं वास्तुकवार्ताकबालकाशेक्षुमूलकात् ।
 द्रोणाढकादिवापेषु द्रौणिकाढकिकादयः ॥ २१ ॥
 खारीवापे तु खारीकं हल्यं सीत्यं च कृष्टके ।
 तृतीयाकृतं त्रिसीत्यं त्रिहल्यं त्रिगुणाकृतम् ॥ २२ ॥
 त्रिष्कृष्ट एवं द्विष्कृष्टे शम्बाकृतमिहाधिकम् ।
 बीजाकृतं तूमकृष्टं प्रहतप्रमुखास्त्रिषु ॥ २३ ॥
 लोष्टोऽस्त्री दरिणिर्न क्ली लेष्टुर्ना मृत्तु मृत्तिका ।
 पुरीषं मृत्तिकाचूर्णं मृत्सा मृत्स्ना प्रशस्तमृत् ॥ २४ ॥
 मरुका त्विष्टकाया विङ्कषस्तु क्षारमृत्तिका ।
 धूलिः स्त्रियां रजः पांसू रेणुः पुंस्यथ कर्दमे ॥ २५ ॥
 दारिपत्परिपत्पङ्कचिकिलाश्च निषद्वरः ।
 शादावकीलजम्बाला वप्रोऽस्त्री पालिराल्यपि ॥ २६ ॥
 क्षेत्रमध्ये कृता साल्पा स्थाला स्यादथ लाङ्गलम् ।
 हलं गोदारणं सीरमीषा सीरादिदण्डकः ॥ २७ ॥
 निरीषः कृषकः फालः शम्या तु युगकीलकम् ।
 योक्त्रं तु योत्रमाबन्धः खनित्रमवदारणम् ॥ २८ ॥
 गोदारणं तु कुन्दालमग्निः स्त्री क्षूस्तु तन्मुखे ।
 प्रतोदः प्राजनं तोत्रं कोटिशो लोष्टमञ्जनः ॥ २९ ॥
 दात्रं लवित्रमसिदो योऽस्य मुष्टिः स वण्टकः ।
 स्यात्समीकरणं मत्यं सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ ३० ॥
 न स्त्री मेथिः खले पाली खलधानं पुनः खलः ।
 व्रीहिर्वरेणुको बीज्यो धान्यं सस्यं लवेटिका ॥ ३१ ॥

ग्रीहयः स्तम्बकरयः शालयः श्वेततण्डुलाः ।
 सुगन्धिको महाशाली रक्तशालिः सलोहितः ॥ ३२ ॥
 सांवत्सरः कृष्णशालिर्बालकश्चावरोहकः ।
 श्वेतशालोऽपौरशूरचपलाः करसूकरौ ॥ ३३ ॥
 षष्टिको गर्भपाकी स्यात् प्रवरः शालियष्टिकः ।
 कलापकास्तु कलमा हायनास्तु महाबुसाः ॥ ३४ ॥
 माषस्तु मलदो नन्दी घरी बीजवरो बली ।
 वृष्यो महावृषो गुच्छा कुलिङ्गाटी फलाङ्कुरा ॥ ३५ ॥
 मुद्गस्तु प्रथनो लोभ्यो बलाङ्गो हरितो हरिः ।
 पीतेऽस्मिन् वसुखण्डीरप्रवेलजयशारदाः ॥ ३६ ॥
 सुराष्ट्रचीनचक्षुष्या हरिमन्थार्धरूपकौ ।
 कृष्णे प्रवरवासन्तौ हरिमन्थजशिम्बिकौ ॥ ३७ ॥
 वनमुद्गे तु वरकनिगूढककुलीमकाः ।
 खण्डी च राजमुद्गे तु मरिष्टकमयष्टकौ ॥ ३८ ॥
 जर्तिलोऽरण्यजतिलो जालकश्चूलिकस्तिलः ।
 कृष्णेऽस्मिन्स्तिलके (षण्डे) पिञ्जपेजौ तिलात्परौ ॥ ३९ ॥
 तिलपुष्पं वज्रपुष्पं मसुरस्तु मसूरकः ।
 मङ्गल्यं पृथुसूप्यश्च ग्रीहिकङ्को मसूरिका ॥ ४० ॥
 कदम्बकस्तु शुभकः सर्षपोऽस्मिन् पुनः सिते ।
 त्रिष्टुभभ्रातरक्षोष्नाः शठः सिद्धार्थतोटकौ ॥ ४१ ॥
 पक्तिका त्रिष्टुभा चास्मिन् गौरेऽथो राजसर्षपे ।
 क्षुधा क्षुधाभिजननस्त्वाष्ट्रको राजिकासुरी ॥ ४२ ॥
 वंशवर्णे कृष्णवर्णः संवर्तो वातुलश्चणः ।
 कलायः स्यात् कालपूरः खण्डिकः कालपूरकः ॥ ४३ ॥
 पूरकोऽप्योलहा जाड्यो वर्तुलेऽत्र सतीनकः ।
 खुडारे त्रिपुटः खेलौ रङ्कुटी तु हरेणुकः ॥ ४४ ॥
 स्नेहपूरे तु फलकः कर्षायौ पाकचूडकौ ।
 सुवर्चलामसृण्यौ च क्षुमा चोमाऽप्यतस्यपि ॥ ४५ ॥
 खल्वे तु पवनिष्पावौ शिम्बिकाऽस्य प्रियैलिका ।
 अलसान्द्रे राजमाषो निष्पावः श्वेतशिम्बिका ॥ ४६ ॥
 काकाण्डः स्याच्चोदनिका कृष्णशिम्बिर्विचक्षणा ।
 कृष्णवृन्ते खलकुलं ताम्रवृन्तः कुलस्थकः ॥ ४७ ॥

प्रचूडकः कफहरी प्रवृत्तिश्च कुलुस्थिका ।
 आढकी तुवरी वल्ला सौराष्ट्री करवीरिका ॥ ४८ ॥
 पतङ्गना च पृथ्वी सा वर्णा स्यात् पाटलिङ्गिका ।
 छत्रा कुस्तुम्बरी धान्या धन्या धाना धनीयिका ॥ ४९ ॥
 कुमारी मुसली वंश्या गुडूची कटुकैषणा ।
 सुचरित्रा च धन्याकधन्येयकतकानि च ॥ ५० ॥
 कुस्तुम्बुरु च धान्यं च भृङ्गा स्यान्मातुलानिका ।
 यवे रूढो दीर्घशूकः शितशूकः महाबुसः ॥ ५१ ॥
 आरूढश्च पवित्रश्च याज्ञिकोऽश्वप्रियोऽपि च ।
 महायवे प्ररूढोऽल्पे वनाशोऽतिथयोऽपि च ॥ ५२ ॥
 यावके बलकुल्माषौ यवके तोयपर्णिका ।
 गोधूमस्तु म्लेच्छभोज्यः सुमनः श्लेष्मलो गुरुः ॥ ५३ ॥
 शतपर्वा बहुवक्रः कोद्रवे कोरदूषकः ।
 वालनाटकवाट्यालौ वरकः कूरदूषकः ॥ ५४ ॥
 विरूक्षकोद्रवोन्नालमदनाः वनकोद्रवे ।
 चिक्काणकङ्गुनी कङ्गुः प्रियङ्गुः पीततण्डुला ॥ ५५ ॥
 शीतकङ्गुस्तु मुसुटी पीतकङ्गुस्तु मागवी ।
 श्यामकङ्गुस्तु मधुका यवनालस्तु जोनलः ॥ ५६ ॥
 जूर्णाह्वयो देवधान्यं जोन्नाला बीजपुष्पिका ।
 नीवारस्तु वृषावाहः प्रतीचो मुनिसेवितः ॥ ५७ ॥
 अव्यादा लोलिका सेव्या जलजा तृणधान्यकम् ।
 श्यामाको नीलपुष्पः स्यात् स्मयाकश्च मुनिप्रियः ॥ ५८ ॥
 स्त्री काककङ्गुश्चीनः स्यात् तृणकोलोऽप्युदारकः ।
 गर्भुत् पुनर्गर्भुटिका घुलुञ्छस्तु गवीधुका ॥ ५९ ॥
 ज्योतिष्मती सुलवणा गोजिह्वा भक्षिणी शिवा ।
 गुन्द्रा कुत्रफला गुच्छा चैत्रिया बालनायिका ॥ ६० ॥
 रूक्षणीया जन्तुफला गवेथुश्च गवेथुका ।
 गाङ्गेरुकी नागबला भूषा ह्रस्वगवेथुका ॥ ६१ ॥
 गोरक्षतण्डुलश्चाथ शाको मर्कटकः समौ ।
 माषादयः शमीधान्ये शूकधान्ये यवादयः ॥ ६२ ॥
 कोद्रवाद्याः कुधान्यानि ब्रीहयः शालिकादयः ।
 स्तम्बे गुचक्षुपौ काण्डे नाली त्रय्यफला तु सा ॥ ६३ ॥

पलालोऽस्त्री कर्णिका स्त्री पूलोऽस्त्री तृणपञ्चिका ।
 कडङ्गरो बुसोऽथ स्यात् कणिशं धान्यमञ्जरी ॥ ६४ ॥
 पीनकोशी शमी शिम्बा तीक्ष्णाग्रे शूकमस्त्रियाम् ।
 धान्यराशिस्तु वलजा वरण्डस्तृणसञ्चयः ॥ ६५ ॥
 गृहार्थोऽसौ कपोलः स्त्री विक्षिप्तः खस्तरो ह्यसौ ।
 समौ प्रथामनीवाकौ कपुकात्प्राक् परे त्रिषु ॥ ६६ ॥
 ऋद्धमावसितं धान्य पूतं तु बहुलीकृतम् ।
 खलपूः स्याद्बहुकरश्छादिषेयं छदिस्तृणम् ॥ ६७ ॥
 क्रयिकः क्रयिकः क्रेता विपूर्वाः क्रेयवस्तुदे ।
 क्रये प्रसारितं क्रय्यं क्रेयं क्रेतव्यमात्रकम् ॥ ६८ ॥
 विक्रेयं पणितव्यं च पण्येऽथ कपुकः क्रयः ।
 भेटकः प्रक्रयः क्रेणी विक्रयो विपणः पणः ॥ ६९ ॥
 वस्नोऽर्घोऽवक्रयो मूल्यं बन्धः प्रणय आधिकः ।
 नीवी परिपणं मूलं धनं लाभोऽधिकं फलम् ॥ ७० ॥
 परिवर्तो विनिमयो वैमेयो निमयोऽपि च ।
 सत्यङ्कारः पुनः सत्याकृतिः सत्यापनं च तत् ॥ ७१ ॥
 पण्याजीवः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ।
 वैदेहकः प्रापणिकः क्रयविक्रयिकोऽपि च ॥ ७२ ॥
 विटपोऽर्थः स्वापतेयं रिक्थं पृक्थं धनं वसु ।
 वित्तं च द्रविणं द्युम्नं हेमरूप्यात्मकं तु तत् ॥ ७३ ॥
 अकुप्यं कुप्यमन्यत् स्याद्रूप्यं तद्द्वयमाहृतम् ।
 कोशमस्त्री हिरण्यं च हेमरूप्यं कृताकृतम् ॥ ७४ ॥
 ओषध्यो जातिमात्रे स्युरजातौ सर्वमौषधम् ।
 स्त्री शुण्ठिरूषणं विश्वभेषजं सिंहलं कटम् ॥ ७५ ॥
 शृङ्गिवेरं महाकन्दं हंसच्छत्रं कलापकम् ।
 पिप्पली मागधी शौण्डी वृषलं चोषणा बला ॥ ७६ ॥
 श्यामोपकुल्या वैदेही ग्रन्थिनी तीक्ष्णतण्डुला ।
 जालिनी तण्डुला तन्वी काल्यम्बष्ठा मनोहरी ॥ ७७ ॥
 कपिवल्ल्यां कोलवल्ली गण्डीरी हस्तिपिप्पली ।
 काण्डी वसीरकाण्डीरौ गृहकाण्डः शिरः पुमान् ॥ ७८ ॥
 मरीचं तु विरावृत्तमुषणं धर्मपत्तनम् ।
 (मरिचं) पलितं श्यामं वेल्लनं पेन्नवं कट्ट ॥ ७९ ॥

लोहाख्यं श्यामवल्ली च त्र्यूषणं (तूषणादिकम्) ।
 कावेरं त्रिकटु व्योषमप्यं कोलं कटूत्कटम् ॥ ८० ॥
 ग्रन्थिकानलचव्यैस्तु चतुष्पञ्चषड्व्युषणम् ।
 चव्यं तु चविकं कोला भार्गी पद्मा च विष्टिका ॥ ८१ ॥
 त्रिफला तु मदोदका भूतसारी फलत्रिका ।
 बलकाली बलारोहा चित्रकस्त्वग्निसंज्ञकः ॥ ८२ ॥
 पञ्चकोलं कणाशुण्ठीचव्यग्रन्थिकचित्रकाः ।
 अजाजी तु जया दीप्यो जीरको जीरणः सितः ॥ ८३ ॥
 मागधश्चाथ सूक्ष्मोऽसौ कणजीरण ओसरः ।
 अभिमन्थो हृद्यगन्धः सुगन्धिः कालिका कणा ॥ ८४ ॥
 कृष्णे तु जीरके पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चका ।
 सुषवी कारवी फारी पृथ्विका पृथुशालिका ॥ ८५ ॥
 कटुः कटुम्भराऽशोका रोहिणी कटुरोहिणी ।
 कृष्णभेदी मत्स्यपित्ता चक्राङ्गी शकुलादनी ॥ ८६ ॥
 निष्कुट्यां चन्द्रबालैला पृथ्वीका त्रिदिवाऽत्र तु ।
 सूक्ष्मायां त्रिपुटा कुन्तिस्तुत्थोपकुञ्चिका ॥ ८७ ॥
 कोराङ्गी नन्दिनी शाला कलुषी संयताऽपि च ।
 काश्मीरं पौष्करे मूले पद्मपत्रं च पुष्करम् ॥ ८८ ॥
 अव्यथाऽतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ।
 जन्या जतूका रजनी जतुकृच्चक्रवर्तिनी ॥ ८९ ॥
 शृङ्गी विषा प्रतिविषाऽतिविषोपविषाऽरुणा ।
 शिशुभ्रं श्वेतमरिचं त्वक्क्षीरा वंशरोचना ॥ ९० ॥
 पद्मोत्तरं वह्निशिखं महारजतमित्यपि ।
 कुसुम्भे पिप्पलीमूले ग्रन्थिकं चटिका शिरः ॥ ९१ ॥
 वह्निपुष्पे ग्रन्थिपर्णं स्थौणेयं कुक्कुरं शुक्रम् ।
 शतपर्वं च मित्रञ्च कमलञ्च शिलञ्च तत् ॥ ९२ ॥
 समृद्धिः प्राणदा सिद्धिर्लक्ष्मीः सर्वजनप्रिया ।
 ऋश्यप्रोक्ता श्रोत्रकान्ता श्रावणी हस्तिपादिका ॥ ९३ ॥
 ऋषिः सृष्टा वृषा वृष्या हृद्या योज्या युगाह्वया ।
 अथ वृद्धिर्बोधनीया महाश्रावणिका बुधा ॥ ९४ ॥
 हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ।
 पलावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ॥ ९५ ॥

वालुकं चाथ शैलेयं वृद्धं गिरिशिलाह्वयम् ।
 कालानुसार्य पाषाणपुष्पं शितशिवं शिवम् ॥ ६६ ॥
 किमिन्द्रस्तुण्डुलो वेङ्गममोघा चित्रतण्डुला ।
 विडङ्गोऽस्त्री सुगन्धा तु सुरसा गन्धनाकुला ॥ ६७ ॥
 नाकुली सुवहा रास्ना छत्राकी सर्वलोचना ।
 गन्धिनी स्यात्तालपर्णी दैत्या गन्धकुटी मुरम् ॥ ६८ ॥
 कुष्ठं वाप्यं पारिभाष्यं रोगाख्यं पाकलोत्पले ।
 व्यालायुधं व्याघ्रनखं करञ्जं चक्रकारकम् ॥ ६९ ॥
 सुषिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रिर्नटी नली ।
 जटिला लोमशी मांसी तपस्विन्यामिषी जटा ॥ १०० ॥
 धमन्यस्त्रनकेश्यौ तु हनुर्हृद्विलासिनी ।
 अपि शुक्तिः खुरः शङ्खो नखं कोलदलं समाः ॥ १०१ ॥
 अजमोदा तूष्प्रगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका ।
 कारवी च खराश्वोष्ट्रा दीप्यका लोचमस्तकः ॥ १०२ ॥
 मधुरं क्लीतकं यष्टिमधुका मधुयष्टिका ।
 लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञं च वरालकम् ॥ १०३ ॥
 त्वक्पत्रं तु त्वचं चोचं वराङ्गं भृङ्गमुत्कटम् ।
 मृगनाभिर्मृगमदो नगः कस्तूरिकाऽपि च ॥ १०४ ॥
 घनसारस्तु कर्पूरः सिताङ्गो हिमवालुका ।
 चन्द्रनामानि चाथ स्यात् तक्कोलं कोलकं परम् ॥ १०५ ॥
 अपि कोशफलं फालं कार्पासकृतमालकौ ।
 जातीकोशं कोशफलमथागरु नृपार्हकम् ॥ १०६ ॥
 लोहाख्यं कृमिजं भृङ्गं जोङ्गकं जाङ्गलं मतम् ।
 वंशकं वंशिकं शीर्षं प्रकरं मृदुलं लघु ॥ १०७ ॥
 वनमायः पुरमदः काकतुण्डो वनद्रुमः ।
 कालागरु तु मङ्गल्या मल्लिकासमगन्धि चेत् ॥ १०८ ॥
 श्रीवेष्टः पायसं श्रयाख्यं श्रीवासो रक्तशीर्षकः ।
 वेष्टः श्रीवत्सपिण्याको दधिश्च सरलद्रवे ॥ १०९ ॥
 वृक्षधूपश्च तूणस्तु पिण्डकश्चपलश्चलः ।
 कप्याख्यः कपिलः सिहः कृत्रिमः क्षेत्रिको वरः ॥ ११० ॥
 तुरुष्कः पावनश्चाथ सर्जनो लालनो रसः ।
 बहुरूपो यक्षधूपोऽप्यरालोऽप्यथ कृत्रिमे ॥ १११ ॥

वृक्षधूपोऽङ्गुलालस्तु महिषाक्षः पलङ्कषः ।
 चन्दनोऽस्त्री मलयजो भद्रश्री रोहणद्रुमः ॥ ११२ ॥
 श्रीखण्डो गन्धसारश्च ताम्रसारं तु चन्दनम् ।
 पीतचन्दनमर्केष्टं गोशीर्षं हरिचन्दनम् ॥ ११३ ॥
 किरातजं बला हार्या पिञ्जनं तैलपर्णिकम् ।
 तथा कुचन्दनं पीतदारु रक्ते तु चन्दने ॥ ११४ ॥
 पत्राङ्गं रञ्जनं सेव्यं धूर्तमैरावतं लसम् ।
 कुचन्दनं जघन्यश्च रक्तं च तिलपर्ण्यपि ॥ ११५ ॥
 कुङ्कुमं घुसृणं वर्ण्यं रक्तं लोहितचन्दनम् ।
 करटं चितकावेरं गौरवं वासनीयकम् ॥ ११६ ॥
 काश्मीरजं पुष्परजः सङ्कोचं पीतनं वरम् ।
 घोरं चाग्निशिखं चापि जपापुष्पं प्रियङ्गु च ॥ ११७ ॥
 नागोद्भवं तु सिन्दूरं कुङ्कुमेन समप्रभम् ।
 गवलं माहिषं शृङ्गं शशोर्णं शशलोमनि ॥ ११८ ॥
 अब्धिजे लवणे खण्डं त्रिकूटं त्रिकुटं कुटम् ।
 भोजनीयं कटकटमणु प्रवरवारिजे ॥ ११९ ॥
 अक्षीबं बिसिरं सेव्यं सैन्धवं तु नदीभवम् ।
 माणिमन्थं शितशिवं नादेयं वेधकं पटु ॥ १२० ॥
 विशुन्थलवणं सङ्गं सिन्धि सिन्दूद्भवं मुखम् ।
 सम्भरी पुनरेतद्द्रौमकं तु रुमाभवम् ॥ १२१ ॥
 वस्नं चाथो भूलवणं कनिष्ठं पाक्यमुद्भिदम् ।
 क्षुद्रकं पांसुलवणं कुप्यं पानीयसम्भवम् ॥ १२२ ॥
 ऊषमूषरजं क्षेप्यं पांशुजं यवनं पटु ।
 शूलिका तु महाजाली वेष्टावारं महाविडम् ॥ १२३ ॥
 विडं तु पाक्यं बहुलं कृत्रिमद्राविणासुराः ।
 घटिकालवणं तूष्णं विडवद्भनकालकम् ॥ १२४ ॥
 सौधर्चलं तु रुचकं दुर्गन्धं शूलनाशकम् ।
 अक्षं तादर्यं रुचिष्यं च तिलकं त्वत्र कृष्णके ॥ १२५ ॥
 सौधर्चलं द्रवस्तु स्याज्जारणं लोहितोऽस्त्रियाम् ।
 दशेत्थं लवणानि स्युरथोपलवणास्त्रयः ॥ १२६ ॥
 तत्र क्षारो यवक्षारो निपीती कासनुद्धरः ।
 श्वेतक्षारस्तीक्ष्णरसो विपाकी च स तु द्विधा ॥ १२७ ॥

यवाग्रजो यावशूकस्तत्रान्यो बहुसारकः ।
 रसाढ्यो रसको योगी पत्रकः पत्रसारकः ॥ १२८ ॥
 वीज्योऽसुवर्चिका क्षारः कापोतः सुखवर्चकः ।
 स्नुन्निका स्वर्जिका स्वर्जियोगवाही सुवर्चिका ॥ १२९ ॥
 टङ्कणस्तु क्रामणको लोहसंश्लेषकः कटुः ।
 रसयोनिः पावनको मालतीतीरसम्भवः ॥ १३० ॥
 परशुः शस्त्रकण्टकः शस्त्रक्षारो महाबलः ।
 सहस्रवेधि बाह्वीकं जतुकं हिङ्गु रामठम् ॥ १३१ ॥
 पत्रेऽस्य करवी बाष्पी पृथिविका कारवी पृथुः ।
 तिन्तृणीके तु वृक्षाम्लं चुक्रं शुक्ती रुचिः स्त्रियाम् ॥ १३२ ॥
 सहस्रवेधी चुक्रोऽम्लवेतसः शतवेध्यपि ।
 गूथः क्षारस्य विकृतौ मत्स्यण्डी खण्डशर्करा ॥ १३३ ॥
 फाणितं क्षुद्रकं खण्डं न स्रयथो शर्करा सिता ।
 मधूलं तु मधुर्न स्त्री मधुकं तत्पुरातनम् ॥ १३४ ॥
 भ्रामरं तु भ्रमरकं क्षौद्रं सारघमाक्षिके ।
 अन्वर्थं पौत्तिकं दालं दद्रुजं रुक्षवालुकम् ॥ १३५ ॥
 औदालकं तु शालाकं विषजिन्मधुराम्लकम् ।
 छात्रं सर्वौघमत्यर्थस्वाद्विमा मधुजातयः ॥ १३६ ॥
 मदनस्तु मधूच्छिष्टं स्नेहोऽस्त्री पिच्छिले रसे ।
 स्नेहे तिलानां तैलं स्यादन्येषां नामपूर्वकम् ॥ १३७ ॥
 घृतमाज्यं हविः सर्पिः कौम्भं त्वाज्यं दशाब्दिकम् ।
 हैयङ्गवीनं पीथं च नवनीतं तु तक्रजम् ॥ १३८ ॥
 दधि विप्रप्रियं हृद्यं क्षीरजं श्रीघनं गुरु ।
 स्थूलं श्वेतं च मङ्गल्यं कट्वारः शण्डगोरसौ ॥ १३९ ॥
 सञ्जावने तूष्णमात्रे प्राङ्मन्दात् सर्जकं दधि ।
 मन्दन्तु मण्डजातं तद् बालजातं तु बालकम् ॥ १४० ॥
 अम्लजुण्डी तु गर्भात् प्राग्गर्भस्तु मुखबन्धनम् ।
 वलीमुखं तु गाढास्यं तत्स्थं तु सशरं दधि ॥ १४१ ॥
 छिन्नं दधि बुसं रुक्षं खलं सेव्यं च निश्शरे ।
 बहुसूदनमप्यस्मिन् द्रप्सं स्यादघनं दधि ॥ १४२ ॥
 पत्रलं चाथ पकं स्यात् सञ्जातं पयसः शृतात् ।
 धुक्षिमां तूदधृतस्नेहान्मथितात् प्रमाथितम् ॥ १४३ ॥

तक्रपिण्डं चाथ मस्तु प्राग्राढं दधिमण्डके ।
 आतञ्चनं सञ्जावनं प्रतीवापश्च मूतकम् ॥ १४४ ॥
 पयो दुग्धं च पीथं च स्तन्यं पुंसवनं सरम् ।
 गव्यं ज्येष्ठं मधु क्षीरं योग्यं सोमरसोद्भवम् ॥ १४५ ॥
 ऊधस्यं जीवनीयं च धारोष्णं त्वमृतं पयः ।
 आसप्ताहात्तु पीयूषं ततो मोरटमोरके ॥ १४६ ॥
 अविसोढाविमरीसे अविदूसमवेः पयः ।
 सन्तानिनी क्षीरशरः शरोम्रद्रवसंहतिः ॥ १४७ ॥
 तिलाटः कूचिका चेति क्षीरस्य विकृती उभे ।
 घोलं तूष्णं कालशेयं दण्डाहतरसायने ॥ १४८ ॥
 मोरटं गोरसश्चाथ घोलः पादाम्बुसंयुते ।
 तक्रं कट्वरमर्शोर्धनं श्वेतच्छाणं च सारणम् ॥ १४९ ॥
 निरम्बु घोलं मथितमुदश्चित्तु जलार्धकम् ॥ १५० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकण्डे वैश्याध्यायः ॥ ८ ॥

शूद्राध्यायः ॥ ९ ॥

शूद्रोऽन्त्यवर्णां वृषलो द्विजपोतो जघन्यजः ।
 पञ्जः पद्मोऽप्येकजातिः शूद्राः सङ्करजा अपि ॥ १ ॥
 दासे भृत्यः परिस्कन्दः परजातः परैधितः ।
 नियोज्यचेटकप्रेष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥ २ ॥
 लाडीककिङ्करप्रेङ्खपालूकपरिकर्मिणः ।
 सञ्चारिते धीकरश्च गोप्याः स्युर्दाससूनवः ॥ ३ ॥
 बन्धके स्थित आयत्तो भक्तायैव स्थितः कृतः ।
 स्वस्कन्दो भिन्नकुम्भश्च भुजिष्यो दासमोचितः ॥ ४ ॥
 भृतके भृतिमुक्कर्मकरो वैतनिकस्त्रिषु ।
 भरण्यं भरणं भर्म वेतनं निष्कयो भृतिः ॥ ५ ॥
 कर्मण्या तुलिका भृत्या भारवाहस्तु भारिकः ।
 वार्त्तादरो वैवधिको भारयष्टिर्विहङ्गिका ॥ ६ ॥
 शिक्यं तल्लम्बि काचश्च पाथेयं शम्बलोऽस्त्रियाम् ।
 कारवः शिल्पिनः सर्वे कुलिकास्ते कुलोत्तमाः ॥ ७ ॥
 कला शिल्पं च कर्माथ तन्तुवायः कुविन्दकः ।
 वाणिर्व्यूतिश्च वानं स्याद् वेमा ना वानदण्डकः ॥ ८ ॥
 तर्कुः कर्तनभाण्डे ना त्रसरः सूत्रवेष्टनः ।
 धराः कार्पासतूलाः स्युस्तूलमस्त्री पिचुः पुमान् ॥ ९ ॥
 पिञ्जनं स्याद्विहननं धराणां प्रविसारणम् ।
 कल्पनं कर्तनं तुल्ये त्रिवृतं तु त्रिवित् त्रिषु ॥ १० ॥
 आवर्तनं तु बलनं सूत्राणि नरि तन्तवः ।
 सौचिकस्तुन्नवायः स्यात् सूचिः सूचा च सीवनी ॥ ११ ॥
 सूचिसूत्रं पिप्पलकमोतं प्रोतमुभे त्रिषु ।
 सीवनं सेवनं स्यूनी रङ्गाजीवस्तु चित्रकृत् ॥ १२ ॥
 लेखनी तूलिका कूर्ची पुस्तं लेप्यादिकर्मणि ।
 या तु लेप्यमयी नारी सा स्यादञ्जलिकारिका ॥ १३ ॥
 पाञ्चालिका तु वस्त्रादिपुत्रिका सालभञ्जिका ।
 पलगण्डो लेपकारः कल्पाणिः समलेपनी ॥ १४ ॥
 संवाहकोऽङ्गमर्दी स्याच्छस्त्रमार्जोऽसिधावकः ।
 मणिकारो वैघटिकः शौल्बिकस्ताम्रकुट्टकः ॥ १५ ॥

नाडिन्धमः स्वर्णकारः कलादो 'मौष्टिकः समाः ।
 कर्मारः स्यादयस्कारो व्योकारो लोहकारकः ॥ १६ ॥
 शाङ्गिकः स्यात् काम्बविको भस्त्रा चर्मप्रसेविका ।
 सन्दंशः स्यात् कङ्कमुखः काणा मूका बुषा स्मृता ॥ १७ ॥
 विध्यते येन मण्यादिराविधोऽसौ निघोऽपि च ।
 आस्फोटनी वेधनिका भ्रमः कुन्दश्च यन्त्रकम् ॥ १८ ॥
 नाराची स्यादेषणिका शाणस्तु निकषः कपः ।
 रोषाणस्तु घृषिघृष्वो हेमादिनिकषाश्मनि ॥ १९ ॥
 यत्र निक्षिप्य कूटेन हन्यते सा निघानिका ।
 प्रतिच्छाया प्रतिकृतिः प्रतिमा प्रतियातना ॥ २० ॥
 प्रतिच्छन्दः प्रतिनिधिर्बेरं च प्रतिरूपकम् ।
 प्रतिबिम्बोपमाने च सादृश्ये सन्निभं निभम् ॥ २१ ॥
 हरिणी हेमप्रतिमा सूर्मिः स्थूणान्यलोहजा ।
 कूटोऽश्मकुट्टकोऽथ स्यादृङ्गः पाषाणदारकः ॥ २२ ॥
 कायस्थः स्याल्लिपिकरः करणोऽक्षरजीवनः ।
 लेखकोऽक्षरचञ्चुश्च लिबिलेखाक्षरस्य या ॥ २३ ॥
 लिपिस्त्वालेख्यलेखा स्याद्रेखा तु स्यादकृत्रिमा ।
 वर्णान्तरस्य सर्पादौ लाजिलेखा तु कृत्रिमा ॥ २४ ॥
 मेलामन्दो मषिघटी मेलाम्बु मलिनाम्बु च ।
 मेला (मणिर्न षण् तस्या लेखन्या) कणिकोद्धृता ॥ २५ ॥
 चण्डिलः क्षुरमर्दी स्यान्नापितोऽन्तावसाय्यपि ।
 क्षुरोऽस्य वपनं शस्त्रं कत्रिका कर्तनी कृवी ॥ २६ ॥
 कुम्भकारः कुलालोऽस्य पचनं पाकमण्डलम् ।
 धूसरश्चाक्रिकस्तैली पिण्याको ना खलिः स्त्रियाम् ॥ २७ ॥
 आभीरस्तु महाशूद्रो गोपो गोसङ्घच्यगोदुहौ ।
 गोपालो वल्लवश्चाथ वत्सीयस्त्रिषु तद्धिते ॥ २८ ॥
 जाबालः स्यादजाजीवः कोणोऽक्ली लगुडो नरि ।
 सन्दानं दामनी दामा न ना दाम पशोस्तु या ॥ २९ ॥
 रज्जुः सा बन्धनी तन्त्री त्वल्पा पाशस्तु कर्णिका ।
 गुणो वराटो रज्जुः स्त्री न ना शुल्बा बटी त्रयी ॥ ३० ॥
 प्रन्थिर्बन्धो ब्रजो गोष्ठो गौष्ठीनं तु पुरा ब्रजः ।
 मन्थस्तु मन्था मन्थानो वैशाखः खजकोऽपि च ॥ ३१ ॥

कुठारो मन्थविष्कम्भो मन्थपात्रं तु गर्गरी ।
 घोष आभीरपल्ली स्यात् पक्कणोऽस्त्रयन्त्यजालयः ॥ ३२ ॥
 मालाकारो माल्यजीवी मालिकः प्रातिहारकः ।
 ऊर्णा स्नावः कदल्यादेः करण्डी तु पुटी त्रयी ॥ ३३ ॥
 तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारश्च काष्ठतट् ।
 ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः कौटतक्षोऽनधीनकः ॥ ३४ ॥
 स उद्धनो यत्र काष्ठे काष्ठं निक्षिप्य तक्ष्यते ।
 ब्रश्चनः पत्रपरशुः परशुस्तु परश्वधः ॥ ३५ ॥
 स्वधितिर्ना कुठारोऽक्ली वासी स्यादाकृतक्षणी ।
 ऋकचोऽस्त्री करपत्रं स्वधितिः कर्त्तनः समौ ॥ ३६ ॥
 जीवान्तको मांसिकश्च कौटिको मांसविक्रयी ।
 सूनातटिर्वधस्यानं कृपाणीली च कर्तरी ॥ ३७ ॥
 मृगयुर्लुब्धको व्याधो द्वौ वागुरिकजालिकौ ।
 आच्छोटनं खेटनञ्च मृगव्यं मृगयाऽपि च ॥ ३८ ॥
 आखेटश्च वराधिश्च वागुरा मृगबन्धिनी ।
 श्वा विश्वकर्दुर्मृगयादक्षोऽलर्कस्तु योगितः ॥ ३९ ॥
 दक्षिणेर्मा तु स मृगो यो लुब्धैर्दक्षिणे हतः ।
 वैतंसिकः शाकुनिक उन्माथः कूटयन्त्रकम् ॥ ४० ॥
 शल्यमस्त्री शलाका स्याद् वितंसः पक्षिबन्धनम् ।
 पक्षिणा येन गृह्यन्ते पक्षिणोऽन्ये स दीपकः ॥ ४१ ॥
 कैवर्तो धीवरो दाशो नौजीवी जालिमार्गरौ ।
 मत्स्यधानी कुवेणी स्याद् बलिशं मत्स्यवेधनम् ॥ ४२ ॥
 जालमानाय उद्दालस्तूजतो मुकुलाकृतिः ।
 पादूकृच्चर्मकारः स्यादारा चर्मप्रभेदनी ॥ ४३ ॥
 वदूर्ध्वो नदूर्ध्वी वरत्रा च शौण्डिकस्त्वासुतीवलः ।
 कल्यापालो ध्वजी चाथ मद्यं स्यात् कपिशायनम् ॥ ४४ ॥
 शीघ्रु कश्यमिरा कल्या शुण्डा देवी परिस्नुता ।
 परिस्नुन्माधवी हाला प्रसन्ना मदिरा सुरा ॥ ४५ ॥
 मदना मोहकलिका मदिष्ठा काचमालिका ।
 कादम्बरी वारुणी च मधूलैस्तु मधूलिका ॥ ४६ ॥
 पकैस्त्वक्षुरसैरस्त्री शीघ्रुः पङ्कुरसः शिवः ।
 शीतपङ्को रूक्षणीयोऽप्यपक्कै रसिकासवौ ॥ ४७ ॥

मधुमद्ये तु माध्वीकं कामिकान्तं मदोत्कटम् ।
 विक्रान्तं कपिशं हृद्यं मुखवासः सुखोदयः ॥ ४८ ॥
 मध्वासवोऽसितः सेव्यः शार्करो माधवोऽस्त्रियाम् ।
 मैरेयमासवो धात्रीधातकीगुडवारिभिः ॥ ४९ ॥
 काकोली पैष्टिकी श्वेताऽप्यापानं पानगोष्ठिका ।
 नग्नहूर्ना मद्यबीजं किण्वमप्यथ मेदकः ॥ ५० ॥
 जगलोऽथ सनिस्सारो मर्कसो मासरोऽपि च ।
 आसूतिर्मद्यसन्धानमासवोऽभिषवोऽपि च ॥ ५१ ॥
 कारोत्तरः सुरामण्ड आसवोऽप्यथ भक्षणम् ।
 उपदंशोऽपदंशश्च मधुवारा मधुक्रमाः ॥ ५२ ॥
 शुण्डापानं मदस्थानं सपीतिः सहपानकम् ।
 सरकं चषकं चास्त्री गल्वर्तोऽप्यनुकर्षणम् ॥ ५३ ॥
 पानगोष्ठीषु यन्नृत्तं तत्र स्यादुच्चतालकम् ।
 प्लवचाण्डालचण्डालमातङ्गास्तु जनङ्गमे ॥ ५४ ॥
 विष्टिर्ना कारितं कर्म हठाद्येऽपि च तत्कृतः ।
 अथैकागारिकश्चोरः परिमोषी मलिग्लुचः ॥ ५५ ॥
 प्रतिरोधी परास्कन्दी तस्करः प्रतिरोधकः ।
 स्तेनो रात्रिचरो दस्युर्मोषकः पारिपन्थिकः ॥ ५६ ॥
 पश्यतो यो हरत्यर्थं स चोरः पश्यतोहरः ।
 पटच्चरः पटच्चरो बन्दी स्त्री प्रग्रहो ग्रहः ॥ ५७ ॥
 लोप्त्रं हृतोऽर्थश्चौर्यं तु स्तेयं स्तैन्यं च चौरिका ।
 धूर्तोऽक्षधूर्तः कितवो द्यूतकृत् कृष्णकोहलः ॥ ५८ ॥
 चौरिकश्चाक्षजीवी च सभिका द्यूतकारकाः ।
 द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती तद्भेदाः पश्चिकादयः ॥ ५९ ॥
 समाधिश्च समङ्गश्च परिवी रञ्जनं च तत् ।
 पणो ग्लहो देवनस्तु पाशकोऽक्षोऽथ शारयः ॥ ६० ॥
 शाराः स्युः परिणायस्तु तेषां सञ्चारणेऽभितः ।
 अक्षपाता अयास्ते तु चतुस्त्रिच्येकयोगिनः ॥ ६१ ॥
 कृतं त्रेता द्वापरं च कलिश्चेति यथाक्रमम् ।
 जायाजीवस्तु शैलूषः शैलाली भरतो नटः ॥ ६२ ॥
 रङ्गाजीवो नृतुर्नग्नो नण्डो रङ्गावतार्यपि ।
 सर्वकेशी कृशाश्वी च नर्तकस्त्वभ्रफुल्लकः ॥ ६३ ॥

यो यष्टिरञ्जुखड्गेषु प्रनृत्यति स पूरकः ।
 केलकः प्रवकश्चासौ चारणास्तु कुशीलवाः ॥ ६४ ॥
 नर्तको भूमिकां प्राप्नो देवानामर्धमानुषः ।
 रङ्गावतारी रुद्रस्य (कृष्णस्य) त्वर्धमानवः ॥ ६५ ॥
 रामस्य स्याद्देवरथः शक्रस्य तु शचीबलः ।
 रावणस्य तु रङ्गोपमर्दी कंसस्य भूमिकाम् ॥ ६६ ॥
 प्रातः फालगलालेपो यस्तु स्त्रीभूमिकां गतः ।
 स भ्रुकुंसो भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसवत् ॥ ६७ ॥
 तत्तद्वेषो भूमिका स्यात् तद्धारी भूमिकागतः ।
 पात्राणि नाट्येऽधिकृताः सूत्रधारस्तु सूचकः ॥ ६८ ॥
 नान्दी तु पाठको नान्द्याः पार्श्वस्थाः पारिपायिकाः ।
 विदूषकः केलिकिलः प्रहासी प्रतिभोऽपि च ॥ ६९ ॥
 वेश्याचार्यः पीठमर्दः विद्वो वातसुतो विटः ।
 मार्दङ्गिको मौरजिको वीणावादास्तु वैणिकाः ॥ ७० ॥
 वेणुध्माः स्युर्वैणविकाः पाणिवादास्तु पाणिघाः ।
 नृत्तं गीतं वाद्यमिति नाट्यं तौर्यत्रिकं त्रिकम् ॥ ७१ ॥
 सङ्गीतकं प्रेक्षणार्थं नाट्योक्ते नाट्यधर्मिका ।
 उत्तमोत्तमिकं श्लोकैः सैन्धवं प्राकृतोक्तिभिः ॥ ७२ ॥
 ताण्डवोऽस्त्री नृत्तलास्यनटनाक्षजनर्तनम् ।
 नटितिर्नाटकी रासो नृत्तं बाह्यं स्वकल्पितम् ॥ ७३ ॥
 रसभावाङ्गहारद्यैः शास्त्रोक्तै रूपकाश्रयम् ।
 नृत्तमाभ्यन्तरं नाम स्थायिभावात्मको रसः ॥ ७४ ॥
 शृङ्गारहास्यबीभत्सवीरादभुतभयानकाः ।
 रौद्रश्च करुणश्चाष्टौ रसाः शान्तोऽपि च क्वचित् ॥ ७५ ॥
 स्थायिभावाः क्रमादेशां रतिर्हासो जुगुप्सनम् ।
 उत्साहो विस्मयो भीतिः क्रोधः शोकः शमोऽपि च ॥ ७६ ॥
 बीभत्समाने बीभत्सो विस्मेतर्थाद्भुतो रसः ।
 भयानको रसो भीते हास्यो हसितरि स्थितः ॥ ७७ ॥
 बीभत्सो विकृतिश्चित्रं त्वाश्चर्यं फुल्लमद्भुतम् ।
 भयानकं प्रतिभयं भीमं भीष्मं भयङ्करम् ॥ ७८ ॥
 भैरवं भीषणं घोरमाभीलं दारुणं च तत् ।
 करुणः सकृपो रौद्रस्तूरोऽमी विंशतिस्त्रिषु ॥ ७९ ॥

भावो मनोविकारः स्यादनुभावोऽस्य सूचकः ।
 विभावो हेतवस्तस्य भावस्य हृदि वत्स्थितः ॥ ८० ॥
 स्थायिसञ्चारिभेदेन द्विधा भावो व्यवस्थितः ।
 स्वेदो घर्मो निदाघः स्यात् कालिका तु विवर्णता ॥ ८१ ॥
 रोमोद्गमो रोमहर्षो रोमाञ्चः कण्टकोऽपि च ।
 रोमाङ्ग उल्लसनकं मण्युल्बणकमित्यपि ॥ ८२ ॥
 स्मितं त्वष्टदशने हासो वक्रोष्ठिका न ना ।
 रुचिः स्त्री हसितं दृष्टदन्ते विहसितं श्रुते ॥ ८३ ॥
 सोत्प्रासे त्वाच्छुरितकं तथोपहसितं भवेत् ।
 निकुञ्चितशिरोगात्रमट्टहासो महाहसे ॥ ८४ ॥
 अतिहासस्त्वनुस्यूतोऽपहासोऽकारणात् कृते ।
 स्वरभेदस्तु कल्कत्वं स्वरकम्पस्तु वेपथुः ॥ ८५ ॥
 आकारगोपनायामपटीकाप्यवकटापि स्त्री ।
 न पुमानवहित्था स्यादक्ली गृहजालिकाप्यस्याम् ॥ ८६ ॥
 क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं लोतोऽश्रु नयनोदकम् ।
 अक्षु रोदनमास्रं च क्रीडा खेला च कुर्दनम् ॥ ८७ ॥
 न स्त्री केलिः परीहासः क्रीडा लीला च नर्म च ।
 जृम्भणं तु त्रयी जृम्भा मुखभेदस्तु जृम्भिका ॥ ८८ ॥
 एजनं वेपथुः कम्पः प्रलयोऽस्पन्दनस्थितिः ।
 आटोपावेगसंरम्भसम्भ्रमास्तु त्वरा त्वरी ॥ ८९ ॥
 असौम्येऽक्षण्यदृष्टिः स्यादवलोकस्त्वधः कृतः ।
 चन्मीलनं स्यादुन्मेषो निमिषस्तु निमीलनम् ॥ ९० ॥
 स्फुरितं स्पन्दितमथ भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः स्त्रियाम् ।
 भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः सारी काली तीरतरङ्गिका ॥ ९१ ॥
 चतुरं त्वल्पा भ्रुकुटी रेचितं त्वेकया भ्रुवा ।
 चेष्टाः शृङ्गारजाः स्त्रीणां हावा लीलादयो दश ॥ ९२ ॥
 वल्लभानुकृतिर्लीला विलासः श्लिष्टविक्रिया ।
 विच्छित्तिर्वस्त्रमाल्यादेर्न्यासोऽनास्थोपशोभितः ॥ ९३ ॥
 सकृत्सुश्लिष्टरुदितस्मितादि किलिकिञ्चितम् ।
 बिम्बोकोऽहङ्कृतेनैव प्राप्तेऽभीष्टेऽप्यनादरः ॥ ९४ ॥
 विकृतं तूचितस्यापि लज्जादिभिरभाषणम् ।
 मोहायितं वल्लभस्य चिन्ता कुट्टमितं पुनः ॥ ९५ ॥

स्तनोष्ठादेर्दृढस्पर्शाद् (दुःखवत्) सुखसम्भ्रमः ।
 विभ्रमो हृदयपर्यासो ललितं कोमलकमः ॥ ६६ ॥
 सत्त्वाद्भावस्ततो हावो लीला हावात् समुत्थिता ।
 अङ्गहारोऽङ्गविच्छेपो नानाकरणसंहतिः ॥ ६७ ॥
 करणान्यङ्गचेष्टाः स्युर्हरणं करणं समे ।
 व्यञ्जकोऽभिनयो यस्तु सूच्योऽर्थोऽभिनयः स च ॥ ६८ ॥
 भूषणाद्यैर्गिराऽङ्गेन सत्त्वेनाभिनयाः कृताः ।
 त्रिषु क्रमात् स्युराहार्यवाचिकाङ्गिकासत्त्विकाः ॥ ६९ ॥
 नाटकं नाटिका भाणो वीथिः प्रहसनं डिमः ।
 ईहामृगः प्रकरणमङ्कः समवकारकः ॥ १०० ॥
 व्यायोगश्चेति रूपाणि नाट्यस्यैता विकल्पनाः ।
 भारती सात्त्वती चैव कैशिक्यारभटीति च ॥ १०१ ॥
 चतस्रो वृत्तयो भाषाः संस्कृताद्या विकल्पिताः ।
 भारती संस्कृता वाणी शेषाश्चेष्टा इति क्वचित् ॥ १०२ ॥
 अथ नाट्योक्तयो राजा देवो भट्टारकोऽपि च ।
 महाराजश्च राज्ञी तु स्वामिनी महिषी तु चेत् ॥ १०३ ॥
 देवी स्याद्भट्टिनी त्वन्या गणिका पुनरञ्जुका ।
 भट्टारिका राजमाता तत्पुत्री भर्तृदारिका ॥ १०४ ॥
 तनयस्त्वस्य गोस्वामी (स्वामी) चाप्यथ राष्ट्रियः ।
 स्यालोऽस्य युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥ १०५ ॥
 पतिस्त्वार्थ आर्यपुत्र आर्यौ मारिषमार्षकौ ।
 आवुक्स्तु पिताऽम्बा तु माता ज्येष्ठा स्वसौप्तिका ॥ १०६ ॥
 बला वुसा कनिष्ठा स्यादावुत्तो भगिनीपतिः ।
 बाला वासूर्भदन्ताः स्युः शाक्यक्षपणकादयः ॥ १०७ ॥
 आर्यभ्राता क्षुल्लतातो देवरस्त्वार्थपुत्रकः ।
 हण्डे हञ्जे हलाऽऽह्वाने नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १०८ ॥
 अब्रह्मण्यमवद्यं स्यान्निष्ठा निर्वहणं समे ।
 गीतं गेयं च गानं च यत्तु तन्त्रीसमुद्भवम् ॥ १०९ ॥
 तन्निर्गीतं बहिर्गीतं गान्धर्व दिव्यमैश्वरम् ।
 सप्त स्वररात्रयो ग्रामा मूर्च्छना एकविंशतिः ॥ ११० ॥
 तानान्येकोनपञ्चाशदित्येष स्वरविस्तरः ।
 स्थानान्युरः शिरः कण्ठः श्रावकः कण्ठजो गुणः ॥ १११ ॥

यो दूराच्छ्रावयत्यन्ये त्वन्वर्था मधुरादयः ।
 काकीत्याद्याः कण्ठदोषास्तत्र काकी नृलिङ्गकः ॥ ११२ ॥
 अगम्भीरः स्वरोऽथ स्यात्तम्बिकी घ्राणनिर्गतिः ।
 सन्दष्टो भेदसम्मिश्रः कफिलो घर्घरः कफात् ॥ ११३ ॥
 काकली तु कले सूक्ष्मे रागा गीतेर्विधाः पृथक् ।
 वादित्रं वादनं वाद्यमोतोद्यं तच्चतुर्विधम् ॥ ११४ ॥
 ततं वीणादिकं वाद्यं तालाद्यं विततं घनम् ।
 वंशादिकं तु सुषिरमानद्वं मुरजादिकम् ॥ ११५ ॥
 घनं चाथाद्यवाद्ये द्वे विततं सहकीर्तने ।
 विपञ्ची वल्लकी वीणा घोषवत्यनुवादिनी ॥ ११६ ॥
 स्यात् कण्ठकूणिका चाथ स्याच्चित्रा परिवादिनी ।
 तन्त्र्यश्चेत् सप्त ताश्चेत् स्युश्चतुर्दश चतुर्दशी ॥ ११७ ॥
 एकादश्येकादश चेदेवं वीणा त्रयोदशी ।
 वीणा स्थाणोरनालम्बी गणानां तु प्रभावती ॥ ११८ ॥
 विश्वावसोस्तु बृहती तुम्बुरोस्तु कलावती ।
 महती नारदस्य स्यात् सरस्वत्यास्तु कच्छपी ॥ ११९ ॥
 कोलम्बकस्तु कायोऽस्याः ककुभस्तु प्रसेवकः ।
 वीणा वंशशलाका तु कणिका कूणिका च सा ॥ १२० ॥
 परिवादो वादनार्थं उपनाहस्तु बन्धनम् ।
 तन्त्रीष्वङ्गुष्ठसंस्पर्शः कलस्तासां तु ताडनम् ॥ १२१ ॥
 निष्कोटितोऽस्त्री सव्येन तलस्त्वन्येन पाणिना ।
 लयस्तु साम्यं दशभिश्छन्दोऽक्षरपदैः सह ॥ १२२ ॥
 विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात् ।
 तालः कालक्रियामानं क्रियाङ्गुलिकरोद्भवा ॥ १२३ ॥
 ताली त्रयी कांस्यताली विताली तालपत्रिका ।
 भिङ्गिल्लस्तु पयोऽथ स्याद् दर्दरः कलशीमुखः ॥ १२४ ॥
 वंशे तु वंशिका पूरी मुरली वेणुका च सा ।
 शृङ्गवाद्ये खरमुखं स्यादाघट्टलिकेति च ॥ १२५ ॥
 तोट्टभी चाथ पिच्छोला पाली तु जनुकाहला ।
 काहला तु कहाला स्याच्चण्डकोलाहलेति च ॥ १२६ ॥
 नालिका सुषिरच्छेदे मुरली पुष्पिकेति च ।
 चाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी ॥ १२७ ॥

काण्डवीणा कुवीणा च ढक्कारी किन्नरीति च ।
 सारिका कुङ्कुणी चाथ यो दण्डोऽल्पकलस्वनः ॥ १२८ ॥
 दण्डिका कारवी सृष्टा किङ्किरो जर्जरश्च सः ।
 मुरजास्तु मृदङ्गास्ते त्वङ्क्यालिङ्गयोर्ध्वकास्त्रयः ॥ १२९ ॥
 पूर्वः पूर्वो महानेषामेतत्पुष्करमण्डले ।
 व्यापारस्त्वङ्गुलीनां यो मार्जना सा त्रिधा त्वियम् ॥ १३० ॥
 मायूरी चार्धमायूरी तथा कर्मारवीति च ।
 घर्घरी स्याद् घर्घरिका वादने मूर्च्छना न ना ॥ १३१ ॥
 स्युः षड्जर्षभगान्धारमध्यमाः षड्चमस्तथा ।
 धैवतश्च निषादश्च तन्त्रीकण्ठोद्भवाः स्वराः ॥ १३२ ॥
 ते केकिचातकाजकुङ्पिकभेकगजस्वराः ।
 दुन्दुभिस्त्वानको भेरी भम्भा नासूश्च नान्यपि ॥ १३३ ॥
 स्याद् यशःपटहो ढक्का पटहस्त्वानकोऽस्त्रियौ ।
 हुङ्कुस्तु हङ्कोऽस्त्री समौ पणवमर्हलौ ॥ १३४ ॥
 वाद्यप्रभेदा डमरुमड्डुडिण्डिमभर्भराः ।
 तिमिलाटट्टरीवेध्यालुम्बिकाकुञ्जिकादयः ॥ १३५ ॥
 वादित्रलगुडे कोणो न नपुं शारिका स्त्रियाम् ।
 तूर्योऽस्त्री वाद्यनिर्घोषे वादित्रं वादनञ्च तत् ॥ १३६ ॥
 तूरकामध्वजौ चाथ सायन्तूर्येऽक्षताडनम् ।
 संवेशने तु भ्रुकुटः प्रकटः प्रतिबोधने ॥ १३७ ॥
 पटहाडम्बरौ युद्धे मङ्गले प्रियवादिका ।
 देवतार्चनतूर्ये तु धूमलोऽस्त्री बलिर्न षण् ॥ १३८ ॥
 क्षुण्णकं मृतयात्रायामर्धतूरो रणोद्यमे ।
 नटोत्साहनमङ्के स्यात् पूर्वरङ्गास्त्वतः परे ॥ १३९ ॥
 प्रत्याहारोऽत्र कुतपविन्यासे कुतपः पुनः ।
 वाद्यवादकसामग्र्यामारम्भः गीत्युपक्रमे ॥ १४० ॥
 निवेशने गायिकानां न पुमानवतारणम् ।
 लोकपालार्चने दिक्षु करणीपरिवर्तनम् ॥ १४१ ॥
 नन्दी चारी महाचारी कथा सूत्रं प्ररोचना ॥ १४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे शुद्धाध्यायः ॥ ९ ॥

तृतीयो भूमिकाण्डः समाप्तः ॥ ३ ॥

४. अथ पातालकाण्डः

सरीसृपाध्यायः ॥ १ ॥

पातालं बलिसद्माधोभुवनं वडबामुखम् ।
रसातलं तलं नागलोको दैत्यक्षयो रसा ॥ १ ॥
अगाधो भुवनं रोकं रन्ध्रं निर्व्यथनं बिलम् ।
कुहरं सुषिरं छिद्रं श्वभ्रोऽस्त्र्यक्ली सुषिर्वपा ॥ २ ॥
गर्तः पतेरो भूश्चभ्रमवखातोऽवटोऽवधिः ।
शेषोऽनन्तो नागराजः सर्पराजस्तु वासुकिः ॥ ३ ॥
नागा बहुफणाः सर्पास्तेषां भोगवती पुरी ।
सर्पो द्विरसनो व्यालो दन्दशूकः सरीसृपः ॥ ४ ॥
उरगो भुजगो जिह्वो भुजङ्गोऽहिर्भुजङ्गमः ।
फुल्लरीको लेलिहानः कुण्डल्याशीविषः फणी ॥ ५ ॥
दीर्घपृष्ठो विषधरः पन्नगो हृक्श्रवा हरिः ।
बिलौका गूढपाच्चक्री नाकुसद्मानिलाशनः ॥ ६ ॥
दर्वीकरा मण्डलिनो राजिमन्तश्च पन्नगाः ।
रथाङ्गलाङ्गलच्छत्रस्वस्तिकाङ्कुशलाञ्छनाः ॥ ७ ॥
फणिनः शीघ्रगतयः सर्पा दर्वीकराभिधाः ।
दीर्घा मन्दा मण्डलिनो मण्डलैर्विविधैर्युताः ॥ ८ ॥
राजिमन्तो राजियुता राजीला राजिलाश्च ते ।
वैकरञ्जाः सङ्करजास्त्रयाणां व्यन्तरास्तथा ॥ ९ ॥
षड्विंशतिर्मण्डलिनस्तथा दर्वीकराभिधाः ।
त्रयोदश च राजीला वैकरञ्जाभिधास्त्रयः ॥ १० ॥
निर्विषा द्वादशेत्येवमशीतिः सर्पजातयः ।
दर्वीकरा महासर्पः फुल्लः पुष्पाभिकीर्णकः ॥ ११ ॥
कुम्भीनसो लोहिताहिः कृष्णसर्पः कुलस्थकः ।
शङ्खपालो महापद्मः काकोदर इतीदृशाः ॥ १२ ॥
आशीविषाश्च सर्वेऽथ कृष्णसर्पो वलाहकः ।
अथ मण्डलिनस्तन्तुर्गोनसो वृद्धगोनसः ॥ १३ ॥
किशुकः पीनसः पिङ्गो देवभिन्न इतीदृशाः ।
गोनसस्तु तिलित्सः स्याद्गोनासो घोणसोऽपि च ॥ १४ ॥

राजिलाः स्युः पुण्डरीकश्चित्रको लोहिताक्षकः ।
 दिव्येलकः सर्पराजः किकीसादः इतीदृशाः ॥ १५ ॥
 अथ पुष्करसादः स्यात् सर्पराजश्च सर्पभुक् ।
 वैकरञ्जाः पोटगलस्तथा पुष्पाभिकीर्णकः ॥ १६ ॥
 दिव्योऽलर्कोऽप्यथो सर्पा निर्विषा दिव्यकालिनी ।
 पैङ्गराजोऽप्यजगरः शुकपोत्रो वलाहकः ॥ १७ ॥
 वर्षाभीः शकलज्योतिः कोलकः पादवाहिकः ।
 पुष्पकोऽहिपताकश्च गन्धाहिक इतीदृशाः ॥ १८ ॥
 अलगर्द्धो जलव्यालो वाहसोऽजगरः शयुः ।
 मालुधानो मातुलाहिः पुण्डरीकस्तु डुण्डुभः ॥ १९ ॥
 राजिलः क्षीरकश्चाथ नानीपातः स्वजः समौ ।
 अहीरिणिः स्त्री द्विमुखी निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ॥ २० ॥
 सर्पाश्चरस्तु निर्मोकः कञ्चुको नित्वयन्यपि ।
 अहिनित्वयनी चाथ स्फटा भोगः फणा न षण् ॥ २१ ॥
 गरलं तु विषं द्वेलो गरस्तु कृतकं विषम् ।
 द्वेलास्तु कालकूटाद्या मूलपुष्पफलात्मकाः ॥ २२ ॥
 कालकूटः कटोऽथ स्याद् गौराद्रौ ब्रह्मवालुकम् ।
 ब्रह्मघोषश्च घौषश्च पुण्डरीकं तु वालुकम् ॥ २३ ॥
 एवमन्येऽपि काकोलो वत्सनाभो हलाहलः ।
 सौराष्ट्रिको ब्रह्मपुत्रशौक्लिकेयेन्द्रदारदाः ॥ २४ ॥
 मुस्तः कुष्ठो मेषशृङ्ग इत्याद्याश्चाथ वातिकः ।
 विषवैद्यो जाङ्गलिको व्यालग्राह्याहितुण्डिकः ॥ २५ ॥
 गोधा निहाका मुसली वृक्षजा सा शयण्डकः ।
 अथ गौधेरगौधारौ भुजगीगोधयोः सुते ॥ २६ ॥
 गौधेयश्चाथ चिक्रोडस्तालको रोमशीति च ।
 नकुलः पिङ्गलोऽथैष कशो रोमशपुच्छकः ॥ २७ ॥
 नकुलस्तु महान् बभ्रुर्धरीको नकुलाकृतिः ।
 कृकलासः प्रतिरविः शयानः सरटः शयः ॥ २८ ॥
 स कामरूपी बिम्बः स्यात् कृकवाकुः सुदुष्प्रभः ।
 हालाहलस्त्वञ्जनिका ब्राह्मणी रक्तपुच्छिका ॥ २९ ॥
 सृजया चाथ दैवज्ञा ज्येष्ठा स्याद् गृहगौलिका ।
 टट्टनी मुसली पल्ली माणिक्या गृहगोधिका ॥ ३० ॥

कुड्यमत्स्या सुरश्वेता कुण्डुणाची सुराजिका ।
 उन्दुरुर्मूषिकः काण्डमाखुस्तु खनकः क्रमः ॥ ३१ ॥
 चुचुन्दरी तु गन्धाखुर्गिरिका बालमूषिका ।
 वृश्चिके त्वात्यलिद्रूणा मलं तत्पुच्छकण्टकः ॥ ३२ ॥
 खर्जूरो वृश्चिका न क्ली शूककीटोऽपि वृश्चिकः ।
 आढा शतपदी कर्णजल्लका ढारिकापि च ॥ ३३ ॥
 मूषिका लृतिका लृता तन्तुवायश्च जालिकः ।
 ऊर्णनाभस्तन्तुनाभः कृमिर्मर्कटकोऽपि च ॥ ३४ ॥
 ऊर्णाबहिश्चोर्णवाहीराशाबन्धोऽस्य जालकम् ।
 लृतापट्टस्तु तत्कोश उदंशो मत्कुणः समौ ॥ ३५ ॥
 घुणः कृमिः काष्ठभवा लृतातः स्यात् पिपीलिका ।
 ब्राह्मणी स महान् पिङ्गः कपिशा तु गृहेडिका ॥ ३६ ॥
 उलङ्कलो महान् कृष्णः सा मर्कोटपिपीलिका ।
 या कृष्णाऽल्पाऽथ सूक्ष्माऽन्या जातिः कन्यापिपीलिका ॥ ३७ ॥
 वम्बो वम्बयुपदीकोपजिह्विका चोपदेहिका ।
 तत्प्राया शिथिली पिङ्गा यूकस्तु शिरसि क्रिमिः ॥ ३८ ॥
 नीलाङ्गा कृमिरन्तर्जः क्षुद्रः कीटो बहिर्भवः ।
 पुल्लकास्तूभयेऽपि स्युः कीकसाः कृमयोऽणवः ॥ ३९ ॥
 सरीसृपास्तु सर्पाद्या दन्दशूकास्तु दंशकाः ।
 शलभाद्याः पतङ्गाः स्युर्यादांसि जलजन्तवः ॥ ४० ॥
 पृथुतोमा भृषो मत्स्यो मीनो वैसारिणस्तिमिः ।
 जलपिप्पिक आत्माशी शकुली स्वकुलक्षयः ॥ ४१ ॥
 स्थिरजिह्वः सङ्गचारी विसारः शम्बरोऽण्डजः ।
 अथो सहस्रदंष्ट्रः स्याद् गलेबालोऽपदालकः ॥ ४२ ॥
 वदालस्त्वहिकश्चित्रः पाठीनो मृदुकण्टकः ।
 फलकी स्याच्चित्रफली लोहितस्त्वावतारिकः ॥ ४३ ॥
 एत्थालः स्याच्चीननको महाशल्कः सितायुधः ।
 शृङ्गी तु सर्पशफरी प्रोष्ठी तु शफरी न षण् ॥ ४४ ॥
 नलमीनश्चिलिचिमो गण्डकाः शकुलार्भकाः ।
 क्षुद्राण्डो मत्स्यसङ्घातः पोताधानं नपुंसकम् ॥ ४५ ॥
 उद्गण्डपालनदलद्रेकराजीवकोत्पलाः ।
 कुलीरः कर्कटः पृष्ठचक्षुः पार्श्वोदरप्रियः ॥ ४६ ॥

बिल्वकोऽण्डप्रहरणः षोडशाङ्घ्रिर्द्विधागतिः ।
 भेके शालुः प्लवव्यङ्गशालूराण्डुककेण्डुकाः ॥ ४७ ॥
 मण्डूकश्चैष गृहजो म्लानः कोणेषिशाचकः ।
 पीतेऽस्मिन् कूलमण्डूको वारिपिण्डोऽश्ममध्यजः ॥ ४८ ॥
 कृष्णास्या कृतभीः श्वेता कोटिका तद्विपर्यये ।
 चित्रे चित्राणुकः कूपे भवः कूपेपिशाचकः ॥ ४९ ॥
 कूर्मः कच्छप ओहारः पञ्चगूढश्चतुर्गतिः ।
 गुहाशयस्तूपृष्ठः कश्यपो जीवथो भृथः ॥ ५० ॥
 दुली दुणी च तत्कान्ता मकरो मत्स्यराड् भृषः ।
 खड्गानामा खड्गपुच्छस्तिमिशत्रुस्तिमिङ्गिलः ॥ ५१ ॥
 तद्भेदो हस्तिमकरोऽथ स्याद् वारुणपाशकः ।
 ग्राहस्तन्त्रस्तन्तुनागस्तन्द्रश्चामोघतन्तुकौ ॥ ५२ ॥
 नके तु कुम्भी कुम्भीरो गोमुखश्च महामुखः ।
 तालुजिह्वः शङ्खमुख आलास्यस्त्वम्बुसूकरः ॥ ५३ ॥
 उद्रस्तु जलमार्जारः पारी परकुलो वशी ।
 शिशुमारस्त्वम्बुकपिरुष्णवीर्यो महावसः ॥ ५४ ॥
 असिप्लवोऽम्बुलुकी स्त्री वीगलस्तु महाभृषः ।
 त्रयी तु कम्बुः शङ्खोऽस्त्री सुभीवो मधुरस्वनः ॥ ५५ ॥
 त्रिरेखः षोडशावर्तः स तु शङ्खनखोऽल्पकः ।
 मुक्तास्फोटोऽन्धिमण्डूकी शुक्तिर्मुक्ता तु मौक्तिकम् ॥ ५६ ॥
 मुक्ताफलं शौक्तिकेयं गङ्गेष्टिः कटशर्करा ।
 शम्बूकः क्षुल्लकः शङ्खः कपर्दस्तु वराटकः ॥ ५७ ॥
 स्त्री चूर्णिरथ शुक्तिः स्याद् दुर्नामा दीर्घकोशिका ।
 जलुका तु जलालोका सृक्था भूम्नि जलौकसः ॥ ५८ ॥
 या जलौका तृणचरी सा स्यात् तृणजलायुका ।
 गण्डूपदः किञ्चुलुको भूलता तत्प्रिया शिली ॥ ५९ ॥
 स्थले करिनराश्चाद्या यावन्तः सन्ति जन्तवः ।
 ते जलेऽपि जलाख्याः स्युर्जलपर्यायपूर्वकाः ॥ ६० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

पातालकाण्डे सरीसृपाध्यायः ॥ १ ॥

जलाध्यायः ॥ २ ॥

सलिलं मलिनं तोयं मरुलं मेघजं कतम् ।
 नीरं वारि पयोऽम्भोऽर्णो मेघपुष्पं कुलीनसम् ॥ १ ॥
 पानीयं जीवनीयं कं जलमम्बूदकं दकम् ।
 विषं पाथो घनपदं भुवनं जीवनं वनम् ॥ २ ॥
 वारं पुंसि स्त्रियो भूमन्यापो घनरसः पुमान् ।
 वल्हरं तु सितं तोयमतिक्षारं तु किट्टिमम् ॥ ३ ॥
 काचिमं स्यादतिस्वच्छमूतं कलुषमाविलम् ।
 शीतलं स्वादुनि जले द्राग्भृतं तत्क्षणोद्धृतम् ॥ ४ ॥
 जलाशया जलाधारास्ते त्वगाधजला ह्रदाः ।
 अखातं देवखाते स्यात् पुष्करिण्यां तु खातकम् ॥ ५ ॥
 आधारस्तु तटाकोऽस्त्री कासारः सरसी सरः ।
 आवाहो दीर्घिका वापी वेशन्तस्त्वल्पपल्वले ॥ ६ ॥
 अन्धुरब्धः प्रहिः कूपश्चुण्डी चौण्डश्च चूतकः ।
 अवखातस्तु कीर्णः स्यादुत्कीर्णश्च पुरी स्त्रियाम् ॥ ७ ॥
 विकिरः स्यात् कीर्णजल उद्भिदस्तु जलोद्गमः ।
 पीनाहस्तु स्त्रियां नेमिः कूपस्य मुखबन्धनम् ॥ ८ ॥
 आहावश्च निपानश्च कूपपार्श्वजलाश्रयः ।
 प्रदरस्तूदपानोऽस्त्री बद्धाम्बु स्रोतसो धृतम् ॥ ९ ॥
 आवालमालवालं स्यात् सेतौ वारणसंवरो ।
 उदधिः सागरोऽपारो जलराशिरपांपतिः ॥ १० ॥
 रत्नाकरो जलनिधिः समुद्रो मकरालयः ।
 उदन्वान् वरुणावासः सरितांपतिरप्पतिः ॥ ११ ॥
 सरित्पतिरकूपारः पारावारोऽब्धिरर्णवः ।
 मितद्रुः संवरः पेरुः स्तम्भी स्तम्भिर्महोदधिः ॥ १२ ॥
 कूलेऽस्य वेला मर्यादा पूर्णिवेलाम्बुवर्धनम् ।
 डिण्डीरोऽम्बुकफः फेनो बुद्बुदस्थासकौ समौ ॥ १३ ॥
 भङ्गस्तरङ्गो वीचिः स्त्री तस्मिन्स्त्वेव महत्यषण् ।
 ऊर्मिः कल्लोल उल्लोलो लहर्युत्कलिकेति च ॥ १४ ॥

पोहित्थं तु प्रवहणं पोथश्चाप्यथ मङ्गिनी ।
 नौस्तरिस्तरणी वेटी द्रोणी काष्ठास्त्रुवाहिनी ॥ १५ ॥
 उडुपं तु प्लवो भेल आरोह्योऽसौ तरण्डकः ।
 केनिपातास्त्वरित्राणि पोलिन्दास्तु पुलिन्दकाः ॥ १६ ॥
 कर्णं पृष्ठस्थितारित्रं नौशिरो मङ्गमस्त्रियाम् ।
 नावो दण्डः क्षेपणी स्त्री कूपस्तु गुणवृक्षकः ॥ १७ ॥
 आतरस्तरपण्यं स्यात् सेकपात्रं तु सेचनम् ।
 सांयात्रिकः पोतवणिक् पोतवाहो नियामकः ॥ १८ ॥
 कर्णधारस्तु निर्यमो नावारोहास्तु नाविकाः ।
 अगाधमतलस्पर्शमस्थानञ्च गभीरकम् ॥ १९ ॥
 गम्भीरश्चाथ नौतार्यं नाव्यं स्यात्ते नव त्रिषु ।
 घट्टोऽवतारस्तीर्थोऽस्त्री प्रणाल्यङ्की पयोवहा ॥ २० ॥
 सरणी हरणिर्भ्रूणिर्निर्गमद्वारि तु भ्रमः ।
 उद्धाटनं घटीयन्त्रं पादावर्तोऽरघट्टकः ॥ २१ ॥
 नदी स्रोतस्विनी कुल्या स्रवन्ती निम्नगा सरित् ।
 हिरण्यवर्णा गिरिजा रोधोवक्त्रा पयस्विनी ॥ २२ ॥
 तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्यादिनी धुनी ।
 अब्धा कूलङ्कषा सिन्धुरापगा वाहिनी वहा ॥ २३ ॥
 त्रिस्तोता जाह्नवी गङ्गा देवसिन्धुस्त्रिमार्गा ।
 भागीरथी विष्णुपदी स्वर्वापी हरशेखरा ॥ २४ ॥
 धर्मद्रवी त्रिमार्गा च पाताले भोगवत्यसौ ।
 यमस्वसा तु यमुना कालिन्द्यर्कात्मजा यमी ॥ २५ ॥
 नर्मदा स्यात् सोमभवा रेवा मेकलकन्यका ।
 बाहुदा त्वर्जुनी सैता श्यामाङ्गी सैतवाहिनी ॥ २६ ॥
 तापी तु तापिनी शैव्या चन्द्रभासा तु चन्द्रिका ।
 शतद्रुस्तु शुतुद्री स्याद्विपाशा तु विपाट् स्त्रियाम् ॥ २७ ॥
 गोदावरी तु गोदा स्यात् कावेरी त्वर्धजाह्नवी ।
 शरावती वेत्रवती तुङ्गभद्रा सरस्वती ॥ २८ ॥
 ताम्रपर्णी कृष्णवर्णा गोमत्याद्याश्च निम्नगाः ।
 नदः सरस्वान् भियोद्धथौ कुल्या कर्षूः कृता नदी ॥ २९ ॥

वेणिर्धारा प्रवाहौघौ पूरस्तु जलबृंहणम् ।
 चक्राणि पुटभेदाः स्युरावर्तः पयसां भ्रमः ॥ ३० ॥
 जलोच्छ्वासाः परीवाहाः कूपकास्तु विदारकाः ।
 सञ्छेद्यं सङ्गमो नद्योः सम्भेदोऽप्यथ रोधसि ॥ ३१ ॥
 तीरं कूलं प्रपातश्च प्रान्ते कच्छस्तटी त्रयी ।
 पारावारे परात्रत्ये कूले पात्रं तदन्तरम् ॥ ३२ ॥
 अस्त्री द्वीपोऽन्तरीपं क्ली पुलिनं तज्जलोत्थितम् ।
 सैकतं सिकताप्रायं सिकता भूमिर्न बालुकाः ॥ ३३ ॥
 उत्पल स्यात् कुवलयं कुवेलं कुवलं कुवम् ।
 नीलोत्पलश्च कन्दोष्ठं कन्दोब्जं कर्णभूषणम् ॥ ३४ ॥
 इन्दीवरश्च नीलाब्जं रक्तपाणिकमुत्पले ।
 वरोत्पलं तु कल्हारं सौगन्धिकशिशुप्रिये ॥ ३५ ॥
 कंसोत्पलं विगन्धि स्याद् वनजं वन्यकं जले ।
 पद्मोऽस्त्री पद्मजं कञ्जं कुविलीनं सरोरुहम् ॥ ३६ ॥
 सरसीजं सरसिजं सारसं सरसीरुहम् ।
 सरोजमब्जमप्युष्पमरविन्दं महोत्पलम् ॥ ३७ ॥
 सहस्रपत्रं नलिनं शतपत्रं कुशेशयम् ।
 बिसप्रसूनं राजीवं निर्लेपं बिसनाभिजम् ॥ ३८ ॥
 पङ्केरुहं तामरसं कमलं दारदोलके ।
 रक्ते तु पद्मे कण्डारं बिसखण्डमथोऽम्बुजम् ॥ ३९ ॥
 चारुनालं कोकनदं श्वेते तु शुचिकणिकम् ।
 पुण्डरीकं महापद्मं पवित्रं पुण्यगन्धिकम् ॥ ४० ॥
 श्रीपुष्पं स्वर्णराजश्च कुमुदं गर्दभाह्वयम् ।
 गन्धसोमं कुमुचन्द्रं कैरवश्चाथ लोहिते ॥ ४१ ॥
 अस्मिन् कोकनदं जारं मुनालं रक्तकुण्डलम् ।
 करहाटः शिफा कन्दं नाला नालमथ त्रिषु ॥ ४२ ॥
 मृणाली शतपर्व क्ली बिसश्च नलिनी पुनः ।
 बिसिनी पद्मिनीत्याद्याः पद्मस्तम्बे सरस्यपि ॥ ४३ ॥
 भवेत् पुटकिनी पद्मस्तम्बमात्रे प्रकीर्तिता ।
 कुमुद्वती कुमुदिनी शाल्कं कन्दमौत्पलम् ॥ ४४ ॥

संवर्तिका नवदलं पद्म क्ली कुसुमच्छदः ।
 किञ्जल्कः केसरो न स्त्री बीजकोशो वराटकः ॥ ४५ ॥
 कर्णिका कर्णिकं चाथ पद्माक्षं पद्मकर्कटी ।
 हठः कुम्भी वारिपर्णी किञ्चोलस्त्वङ्गलोड्यकः ॥ ४६ ॥
 शुक्लकारं तु कृसरं वृष्यकन्दं कशेरु च ।
 शृङ्गाटकस्तु गरुलो दन्तबीजस्त्रिकण्टकः ॥ ४७ ॥
 क्षीरबीजः क्षीरशुक्लस्तर्पणो जलकण्टकः ।
 चिञ्चोटिका स्यादवका स्वादुमुस्ता गरोलिका ॥ ४८ ॥
 शैवलो जलशूरः स्यादवका जलनील्यपि ।
 शैवालश्चाथ शेवालं चूर्णाभं लोहितं जले ॥ ४९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां दैजयन्त्यां

पातालकाण्डे जलाध्यायः ॥ २ ॥



पुराध्यायः ॥ ३ ॥

पुर्यना नगरी पूः स्त्री स्थानीयं नगरं पुटः ।
 पुर्याः शाखापुरी गृह्या पुरेऽल्पे खेटमस्त्रियाम् ॥ १ ॥
 ग्रामः पर्युपसन्निभ्यः प्रतेश्च वसथः परः ।
 स्थानीयं तु महाग्रामो ग्रामाः क्षुद्राः परे क्रमात् ॥ २ ॥
 स्युः कर्वेटं कार्वटिकं कार्वटं नृङ्गपट्टने ।
 कर्वटोऽस्त्री द्रोणमुखं पट्टनं पुटभेदनम् ॥ ३ ॥
 पत्तनं चाप्यथानृङ्गे नृङ्गो द्रङ्गं विवेशिका ।
 कटकोऽस्त्री संवासः स्कन्धावारश्च राजधानी स्यात् ॥ ४ ॥
 शिबिरं मार्गनिवेशो गामार्थं वाटकोऽस्त्री स्यात् ।
 साकेतं स्यादयोध्यायां कोसलानन्दिनीति च ॥ ५ ॥
 द्वारका तु द्वारवती मथुरा तु मधूषिका ।
 मथुरा च मधूपत्रा कौशं तु स्यात् कुशस्थली ॥ ६ ॥
 वाराणसी शिवपुरी वारणास्यपि काशिका ।
 मिथिला पूर्वदेहेषु कन्याकुब्जो महोदयः ॥ ७ ॥
 हस्तिनी हास्तिनपुरं नागाहं हस्तिनापुरम् ।
 अथास्त्री खाण्डवप्रस्थं जयन्तीपुरमाहुकम् ॥ ८ ॥
 अवन्ती स्यात्तक्षशिला काकुन्दी वारणावतम् ।
 देवीकोट्टः कोटिवर्षं माहिष्मत्यां वृकस्थली ॥ ९ ॥
 ग्रामादिभूमिर्वास्त्वस्त्री सन्दंशस्त्वस्य कोणभूः ।
 ब्रह्मस्थली वास्तुमध्यं ब्रह्मधारा तदन्तभूः ॥ १० ॥
 प्रशस्ता वास्तुभूमिर्या प्रवीरा नन्दिनी च सा ।
 सीमा तु सीमा मर्यादा ग्रामसीमोपशत्यकम् ॥ ११ ॥
 प्रान्तरं ग्रामयोर्मध्यमुपन्नं त्वन्तिकाश्रयः ।
 पर्यन्तभूः परिसरः कटो ग्रामेयकः पुनः ॥ १२ ॥
 ग्रामीणं च त्रिषु ग्राम्ये ग्रामधान्यं तु खेटकम् ।
 खेयं तु परिखाऽथास्त्री वप्रः प्राकारमूलिकः ॥ १३ ॥
 प्राकारो वरणः सालः प्राचीरं त्वेष सच्छदिः ।
 आवेष्टकस्तु वाटोऽस्त्री विवृतश्च वृत्तिद्रुमैः ॥ १४ ॥

वारिकूटो हस्तिमुखो नगरद्वारकुट्टके ।
 गोपुरं तु पुरद्वारं दिक्तु निस्सारणं मुखम् ॥ १५ ॥
 रथ्या प्रतोली विशिखाऽप्युपरथ्या तु दर्शनी ।
 राजमार्गे संसरणं श्रीघण्टाभ्यां पथः परः ॥ १६ ॥
 स एव पुरि दिङ्मार्गे वाहनी चोपविष्करम् ।
 अगारं भवनं धाम वस्तं वस्त्यं निकेतनम् ॥ १७ ॥
 शय्यं निवसनं सद्य बुन्दिरं वेश्म मन्दिरम् ।
 निकार्यवासावसथनिकायनिलयालयाः ॥ १८ ॥
 न नोदवसितं न स्त्री गेहं पुम्भूम्नि वा गृहम् ।
 महाकीर्तनमोकश्च केतरं केतनं क्षयः ॥ १९ ॥
 अथर्वणं शान्तिगृहमास्थानगृहमिन्द्रकम् ।
 वासागारं तल्पगृहमरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ २० ॥
 कुप्यशाला तु सन्धानी पक्षिशाला कुनालिका ।
 चतुरं हस्तिनां शाला वाजिशाला तु मन्दुरा ॥ २१ ॥
 सन्दानिनी तु गोशाला हविश्शाला विषाणिका ।
 आवेशनं शिल्पिशाला तन्त्रशाला तु गर्तिका ॥ २२ ॥
 कुम्भशाला पाकपुटी चित्रशाला तु जालिनी ।
 संवासनं कर्मशाला प्रपा पानीयशालिका ॥ २३ ॥
 वेशनी मुखशाला च पक्षशाला तु पक्षकः ।
 तैलिशाला यन्त्रगृहं पोटकी कटकी च सा ॥ २४ ॥
 इक्षुपीडनयन्त्रस्य शालिका त्विक्षुसूनिका ।
 वपनी स्यात् खरकुटी शिल्पा चाप्यथ कुण्डिनी ॥ २५ ॥
 क्षणा बुशाल्याश्रमे तु पर्णशालोटजोऽस्त्रियाम् ।
 चतुश्शालं सञ्जवनं सत्रशाला शुभा स्थली ॥ २६ ॥
 मठावसथ्यौ छात्रादिवासो वेणुं विटाश्रये ।
 कुटीरस्तु कुटी पल्ली चैत्रपल्ली तु गर्गरी ॥ २७ ॥
 सन्यासपल्ली निर्वीरा मण्टपोऽस्त्री जनाश्रयः ।
 देवतायतनं चैत्यं विहारो लयनालिकः ॥ २८ ॥
 सौधोऽस्त्री सुधया श्वेतं मेटो हर्म्यं च मालिका ।
 तदेव राजदेवानां स्यात् प्रासादः प्रसादनः ॥ २९ ॥
 राजवेश्मोपकार्या स्यादुपकार्योपकारिका ।
 स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्दावर्तादयोऽपि च ॥ ३० ॥

पिच्छन्दिका राजधान्नां सन्निवेशो निकर्षणम् ।
 कूटागारं तु बलभी निर्यूहो मत्तवारणम् ॥ ३१ ॥
 कुट्टिमोऽस्त्री बद्धभूमिः कोद्रङ्गस्तु तमङ्गकः ।
 इन्द्रकोशोऽप्यथो मञ्च उद्धातो डुण्डुरोऽपि च ॥ ३२ ॥
 वेश्यागृहे कायमानं तथेदं केलिमण्डपे ।
 अट्टालयोऽट्टः क्षौमोऽस्त्री तलिन्यट्टालिके समे ॥ ३३ ॥
 चन्द्रशाला शिरोगेहं पणिकस्तु वणिग्गृहम् ।
 आपणस्तु निषद्या स्यान्माटङ्को लवणापणः ॥ ३४ ॥
 संवासो विपणिः पण्यवीथी हट्टस्तु पण्यभूः ।
 आवालिर्हट्टवेशमाली वेशो वेश्याजनाश्रयः ॥ ३५ ॥
 अवरोधः पराविद्धः शुद्धान्तोऽन्तःपुरं वृषम् ।
 अङ्कणस्त्वजिरं चारं वेदिका तु वितर्दिका ॥ ३६ ॥
 कुड्योऽस्त्री भित्तिका कन्थाऽप्येड्ढकं त्वन्तरस्थिकम् ।
 नीत्रं बलीकं चोलान्ते चोलोऽस्त्री पटलं छदिः ॥ ३७ ॥
 सन्धिस्तु कुड्यच्छदिषोः कावातायनिका कला ।
 अपशाला तु संहारी विटका तु विटाटिका ॥ ३८ ॥
 गोपानसी तु बलभी छादने वक्रदारुणि ।
 वेश्मस्थूणा गृहस्थूणमुल्बस्थूणा तु पादिका ॥ ३९ ॥
 मेढी तु पादिकाशीर्षे स्थूणाशीर्षे शिली शिला ।
 नासा धारकदारु स्यात् पालिकाष्ठं तु धारणा ॥ ४० ॥
 कोणप्रतिग्राहि शिरोविष्टब्धिकरमाढकम् ।
 सूकरी तूपरिस्थूणा सन्धिकाष्ठं तु वासिकम् ॥ ४१ ॥
 द्वाः स्त्री द्वारं पक्षकं तु पक्षद्वारं खडक्किा ।
 तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं प्रच्छन्नद्वारमान्तरम् ॥ ४२ ॥
 कवाटं द्वारबन्धोऽस्य धारके व्याघ्रकोऽस्त्रियाम् ।
 उत्तराङ्गं तूर्ध्वदारु द्वारस्यैरुण्डकः पुनः ॥ ४३ ॥
 गृहावग्रहणी देहल्यम्भरोदुम्बरोम्बुरा ।
 सट्टं सपट्टी तत्पार्श्वे वृकवाला परालिनी ॥ ४४ ॥
 नासा तु द्वार्यधोदारु शिला नासाविधारिणी ।
 प्रधानप्रघणालिन्दाः पिण्डकोऽलिन्दवासनौ ॥ ४५ ॥
 बहिर्द्वारप्रकोष्ठे स्युर्गृहश्रेणी तु वीथिका ।
 अथ त्रय्यौ कवाटोऽपि कुवाटोऽप्यररं न पुम् ॥ ४६ ॥

पिच्छन्दिका राजधान्नां सन्निवेशो निकर्षणम् ।
 कूटागारं तु बलभी निर्यूहो मत्तवारणम् ॥ ३१ ॥
 कुट्टिमोऽस्त्री बद्धभूमिः कोद्रङ्गस्तु तमङ्गकः ।
 इन्द्रकोशोऽप्यथो मञ्च उद्धातो डुण्डुरोऽपि च ॥ ३२ ॥
 वेश्यागृहे कायमानं तथेदं केलिमण्डपे ।
 अट्टालयोऽट्टः क्षौमोऽस्त्री तलिन्यट्टालिके समे ॥ ३३ ॥
 चन्द्रशाला शिरोगेहं पणिकस्तु वणिगृहम् ।
 आपणस्तु निषद्या स्यान्माटङ्को लवणापणः ॥ ३४ ॥
 संवासो विपणिः पण्यवीथी हट्टस्तु पण्यभूः ।
 आवालिर्हट्टवेशमाली वेशो वेश्याजनाश्रयः ॥ ३५ ॥
 अवरोधः पराविद्धः शुद्धान्तोऽन्तःपुरं वृषम् ।
 अङ्कणस्त्वजिरं चारं वेदिका तु वितर्दिका ॥ ३६ ॥
 कुड्योऽस्त्री भित्तिका कन्थाऽप्येङ्गकं त्वन्तरस्थिकम् ।
 नीत्रं वलीकं चोलान्ते चोलोऽस्त्री पटलं छदिः ॥ ३७ ॥
 सन्धिस्तु कुड्यच्छदिषोः कावातायनिका कला ।
 अपशाला तु संहारी विटका तु विटाटिका ॥ ३८ ॥
 गोपानसी तु बलभी छादने वक्रदारुणि ।
 वेश्मस्थूणा गृहस्थूणमुल्बस्थूणा तु पादिका ॥ ३९ ॥
 मेढी तु पादिकाशीर्षे स्थूणाशीर्षे शिली शिला ।
 नासा धारकदारु स्यात् पालिकाष्ठं तु धारणा ॥ ४० ॥
 कोणप्रतिग्राहि शिरोविष्टन्धिकरमाढकम् ।
 सूकरी तूपरिस्थूणा सन्धिकाष्ठं तु वासिकम् ॥ ४१ ॥
 द्वाः स्त्री द्वारं पक्षकं तु पक्षद्वारं खडक्किका ।
 तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं प्रच्छन्नद्वारमान्तरम् ॥ ४२ ॥
 कवाटं द्वारबन्धोऽस्य धारके व्याघ्रकोऽस्त्रियाम् ।
 उत्तराङ्गं तूर्ध्वदारु द्वारस्यैरुण्डकः पुनः ॥ ४३ ॥
 गृहावग्रहणी देहल्यम्मरोदुम्बरोम्बुरा ।
 सट्टं सपट्टी तत्पार्श्वे वृकवाला परालिनी ॥ ४४ ॥
 नासा तु द्वार्यधोदारु शिला नासाविधारिणी ।
 प्रघाणप्रघणालिन्दाः पिण्डकोऽलिन्दवासनौ ॥ ४५ ॥
 बहिर्द्वारप्रकोष्ठे स्युर्गृहश्रेणी तु वीथिका ।
 अथ त्रयौ कवाटोऽपि कुवाटोऽप्यररं न पुम् ॥ ४६ ॥

पार्श्वद्वयस्थं तद्युग्ममनीरिति निगद्यते ।
 विष्कम्भकेऽस्य गुडको द्रुमशोऽप्यर्गला न षण् ॥ ४७ ॥
 सूचिस्त्वयोऽर्गलैषा चेद् द्वारोर्ध्वं तूर्ध्वसूचिका ।
 मर्कटं मर्कटी सूची विष्कम्भार्थमथाङ्कुटः ॥ ४८ ॥
 साधारणी कुञ्चिका च द्वारयन्त्रं तु तालकम् ।
 एतस्योद्घाटनं यन्त्रं ताल्यपि प्रतिताल्यपि ॥ ४९ ॥
 अर्गलं द्वारपटलं विदण्डस्त्वर्गला त्रयी ।
 अस्त्री तु घर्घरोऽट्टादेरधोद्वारकवाटिका ॥ ५० ॥
 गर्भागारोऽपवरको भ्रमन्तो गृहकोऽल्पकः ।
 आरोहणं स्यात् सोपानं निश्रेणिस्त्वधिरोहणी ॥ ५१ ॥
 कोणाश्रौ नर्यणिर्न क्ली स्त्रियोऽश्रिस्त्रक्तिकोटयः ।
 सम्मार्जनी शोधनी तन्मलेऽवकरसङ्करो ॥ ५२ ॥
 दन्तिका नागदन्ताः स्युर्लङ्घनी वस्त्रधारणी ।
 कपोतपाली स्त्री न स्त्री विटङ्कोऽथ गवाक्षकम् ॥ ५३ ॥
 वातायनं गवाक्षश्च रसवत्यां महानसम् ।
 उद्धानमश्मन्तमधिश्रयणी चुल्लिरन्तिका ॥ ५४ ॥
 हसन्यङ्गारशकटी हसन्यङ्गारधान्यपि ।
 पिठरः स्थाल्युखा कुम्भिः पिधानं स्यादुदञ्चनम् ॥ ५५ ॥
 कंटाहः कर्परो लट्ठो मणिकः स्यादलिञ्जरम् ।
 भ्राष्ट्रः पुंस्यम्बरीपोऽस्त्री कन्दुर्ना स्वेदनी स्त्रियाम् ॥ ५६ ॥
 ऋचीषं पिष्टपचनं मल्लो मल्ली च कोशिका ।
 वर्धनी तु गलन्त्यालुः कर्करी करकोऽपि च ॥ ५७ ॥
 भृङ्गारो हेमकरकः करङ्को नालिकेरजः ।
 निपो घटः कुटः कुम्भः करीरः कलशी त्रयी ॥ ५८ ॥
 घटी पारी कपाली तु त्रयी घोतश्च कर्परः ।
 शालाजिरो वर्धमानः शरावोऽस्त्री दृतिस्तु ना ॥ ५९ ॥
 खल्वं क्लीबे चर्ममयी त्वालुः करकवर्तिका ।
 स्नेहपात्रं कुतूः कृत्तिः सैवाल्पा कुतुपः पुमान् ॥ ६० ॥
 अवगाहो जलद्रोणिरुष्टिका काञ्चिकादिभृत् ।
 भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भः स्थालं स्यात् कांस्यपात्रकम् ॥ ६१ ॥
 भाण्डमावपनेऽमत्रं भाजने पात्रमित्युभे ।
 चर्मकोशं तु कललं करालं तरलं च तत् ॥ ६२ ॥

पेटकः पिटकः पेटा मञ्जूषा सा तु चर्मणा ।
 वृता तरिः स्त्री तमतो वस्त्रकोशं करोटकम् ॥ ६३ ॥
 स्यूतः प्रसेवकोऽथ स्यात् समुद्गः सम्पुटः पुटः ।
 धान्यकोष्ठे कुसूलोऽथ कण्डोलः पिटकः पिटः ॥ ६४ ॥
 प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री न स्त्री तितउ चालनी ।
 अयोनिर्मुसलोऽस्त्री स्यादुदूखलमुदूखलम् ॥ ६५ ॥
 प्रस्फोटनं तु पवनमवधातस्तु कण्डनम् ।
 फलीकृतस्तण्डुलः स्याद्धान्यानां तु तुषस्त्वचि ॥ ६६ ॥
 शम्बूकास्तु कणाः सूदमास्तण्डुलस्य च यो मलः ।
 शम्बूकः कण्डनं चासौ ज्येष्ठाम्बु तु तदम्बुनि ॥ ६७ ॥
 गोधूमचूर्णे शमिता चिक्कसो यवचूर्णके ।
 पृथुकश्चिपिटो लाजाः पुंभूम्नि परिवारकः ॥ ६८ ॥
 खदिका तु गुडाद्याह्यलाजसक्तुषु तर्पणम् ।
 सुस्विन्नभृष्टमृदिता उत्कुञ्चः कल्कपिण्डिकाः ॥ ६९ ॥
 पिण्डिर्ना पिष्टधानादिचूर्णे गौडी तु ममरा ।
 उलुम्बं बुम्बिका बुम्बी चक्षुष्या सक्तवः कणाः ॥ ७० ॥
 ते घृतादियुता मन्थः करम्भो दधिसक्तवः ।
 धानाः स्त्रियो भृष्टयवा दारपत्रस्तु पोलिकः ॥ ७१ ॥
 पूपस्तु पिष्टकोऽपूपः कोकुन्दाः पिष्टपिण्डिकाः ।
 उत्कारिका चूर्णपूपे कुल्माषा यवपिष्टकाः ॥ ७२ ॥
 शमिता त्वम्लदुग्धार्द्रा पक्का खण्डे घृतोत्तरे ।
 संयावोऽयं युतश्चूर्णैः खण्डैलामरिचार्द्रकैः ॥ ७३ ॥
 क्षीराह्यः शमितापिण्डो घृतपूरो घृते शृतः ।
 फेनकः शमिता शुक्ला घृतपक्वालपशर्करा ॥ ७४ ॥
 शङ्कुली त्वायता पिष्टगुडतैलतिलैः कृता ।
 जीवनान्नाशनान्धांसि कूरं भक्तं प्रसादनम् ॥ ७५ ॥
 पाजो वाजोऽप्योदनोऽस्त्री भिस्सा स्त्री दिदिविर्न षण् ।
 पुन्नपुंसकयोश्चोरं करमाहार्यमित्यपि ॥ ७६ ॥
 दग्धान्नं भिस्सिटा मिह्नी परमान्नं तु पायसम् ।
 क्षैरेयी चाथ मण्डोऽस्त्री रसाग्रोऽथ करोटिका ॥ ७७ ॥
 ग्वागुल्या स्याद्धानाम्लायां ग्वागुली मण्डिका समे ।
 मासराचामनिस्त्रावप्रस्त्रावा भक्तमण्डके ॥ ७८ ॥

वाय्वमण्डो यवैर्भृष्टैर्लाजमण्डोऽन्वितार्थकः ।
 तिलतण्डुलमाषैस्तु त्रिरसा कृसरा त्रयी ॥ ७६ ॥
 यवागुरुष्णिका श्राणा पिच्छा सा तु घनाद्रवा ।
 विलेपी स्याद्विलेप्या च सा पेया तरणान्यथा ॥ ८० ॥
 खलिः स्त्री तण्डुलैः पिष्टैर्जले पक्वा घनद्रवा ।
 सौवीरं काञ्चिकं कुण्डमारनालं गृहोदकम् ॥ ८१ ॥
 अवन्तिसोमं रक्षोघ्नं शुक्ताभिषुतकुञ्जलम् ।
 गोलकुल्माषसन्धानान्यौदरो मधुरा न षण् ॥ ८२ ॥
 तद्धान्ययोनि धान्याम्लं तुषाम्बु तुषसंहितम् ।
 मूलकाद्यैः संहिते स्यान्मूलकादिसुतं न ना ॥ ८३ ॥
 मूलकच्छदसन्धानं शिण्डाकी स्वादुसुद्रवा ।
 यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे सक्षौद्रगुडकाञ्चिकम् ॥ ८४ ॥
 त्रिरात्रं धान्यराशिस्थं तच्छुक्तं शुद्धमित्यपि ।
 निष्ठानं तेमनं तच्च व्यञ्जनं स्याद् घृतादि च ॥ ८५ ॥
 सूपोऽस्त्री प्रहितं सूदोऽप्युपदंशोऽपदंशकः ।
 स्त्री पक्वभृष्टे भरुटा सगुडाज्योषणैः पुनः ॥ ८६ ॥
 वेशवारः पिष्टमांसे पक्वे भूतिस्ततोऽन्यथा ।
 रसको मांसनिष्काथः पिष्टमांसकृतो रसः ॥ ८७ ॥
 सोरावासो निर्लवणः परिशुष्कं पुनर्घृते ।
 सिक्त्वा मांसे मृदूष्णाम्बुपक्वं युक्तं कणादिभिः ॥ ८८ ॥
 उत्तमं शुष्कमांसं स्याद्वल्लरा त्रय्यथ स्त्रियाम् ।
 पेशिः शुण्ठः पिचिण्डस्तु निष्कृतोऽवयवः पशोः ॥ ८९ ॥
 शाकोऽस्त्री हरितं शिश्रुः स्त्री तन्नाले कडम्बकः ।
 कन्दमल्ली मूलसस्यं वेशवार उपस्करः ॥ ९० ॥
 लेह्यं पेयञ्च चूष्यञ्च खाद्यमास्वाद्यमित्यपि ।
 पञ्चामृतमिदं स्वाद्यं मुक्त्वा त्वन्नं चतुर्विधम् ॥ ९१ ॥
 त्रिष्वानुताद्भ्यकारे द्वौ कान्दविकपौपिकौ ।
 सूपकारे त्वारालिकसूदान्धसिकवल्लवाः ॥ ९२ ॥
 गुणौदनिकसुपाश्च लवणो लवणोत्कटः ।
 पक्वं तु रन्धितं सिद्धं भृष्टं पक्वं विनाम्बुना ॥ ९३ ॥
 प्रणीतमुपसम्पन्नं प्रयस्तं स्यात् सुसंस्कृतम् ।
 शूलाकृतं भट्टिन्नं च शूल्यमुख्यं तु पैठरम् ॥ ९४ ॥

सार्पिष्कदाधिकाद्यं स्यात्सर्पिर्दध्यादिसंस्कृते ।
 शीनं स्त्यानं शृतं पक्वं विलीनं विद्रुतं द्रुतम् ॥ ६५ ॥
 तक्रं कपित्थचाङ्गेरीमरीचाजाजिचित्रकैः ।
 यत्पक्वं गुडजूषोऽसावलकाम्बलिकोऽपरः ॥ ६६ ॥
 दध्यम्लो लवणस्नेहतिलमाषविपाचितम् ।
 अपक्वतक्रं सव्योषचतुर्जातगुडार्द्रकम् ॥ ६७ ॥
 सजीरकं रसालः स्यान्मार्जिता शिखरिण्यपि ।
 सा जाजी डाडिमव्योषं पटे घृष्टं च सट्टकम् ॥ ६८ ॥
 बलकं स्याद् गुडक्षीरं यमकं तैलसर्पिषी ।
 त्रिस्नेहं त्रैवृतं मार्जा चतुस्स्नेहं वसान्वितम् ॥ ६९ ॥
 मधु सर्पिश्च मिथुनं यूषोऽस्त्री यूः पुमान् रसे ।
 परिवेषणं वर्धनं च प्रतीच्छा पततो ग्रहः ॥ १०० ॥
 कबलः कबतो प्रासो गुडः पिण्डो गुडेरकः ।
 गण्डोरश्च गडोलश्च चर्वणं चूषणं रदैः ॥ १०१ ॥
 जग्धिस्तु निघसो न्यादो लेपोऽप्यभ्यवहारवत् ।
 प्रत्यवसानमशनं भोजनं जेमनादने ॥ १०२ ॥
 स्वदनं परिपत्रं च सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ।
 चूषणं तु रसादानं जिह्वास्वादस्तु लेहनम् ॥ १०३ ॥
 धीतिस्तु धयनं पानं जक्षा खादनभक्षणे ।
 काभं निकामं पर्याप्तं प्रकामं च यथेष्टितम् ॥ १०४ ॥
 पर्याप्तं तु परित्राणं हस्तवारणमित्यपि ।
 वृषिः सुधा च सौहित्यं वृप्तं तु सुहितं त्रिषु ॥ १०५ ॥
 करम्बः सेकमिश्रान्ने फेला पिण्डेऽधिकोऽभिभूते ।
 खण्डपर्कटमुद्वेगं ताम्बूलं सुखभूषणम् ॥ १०६ ॥
 अम्बलोर्णं चर्वितेऽस्य चूर्णेऽस्य त्वम्बला रसे ।
 करङ्को वेडादिक्वते पूगताम्बूलभाजने ॥ १०७ ॥
 स्यात् पूगावपनी गन्त्री कर्त्तर्युद्वेगकर्तरी ।
 भवेत् क्षुरसमुद्गं तु त्रिष्वाकर्णकरन्धके ॥ १०८ ॥
 अस्त्री तु पुस्तकं सिन्दूरादेर्दारवभाजने ।
 चातुरीकं त्रिषु भवेच्चन्दनद्रवभाजने ॥ १०९ ॥
 नागवल्लीपलाशानां तैलाक्तानां रसातलः ।
 निष्ठानं वीतकं प्रोक्तं चन्द्रमन्दारचूर्णघृतम् ॥ ११० ॥

वीरस्नाका या तु शरशलाकायन्त्रनिमिता ।
 पाठार्थमुद्गृहीता स्यात् कबली पत्रपञ्चिका ॥ १११ ॥
 परिकर्माङ्गसंस्कारः कङ्कतस्तु प्रसाधनः ।
 प्रसाधनं स्यादभ्यङ्गः सोत्पाताच्छुरिते समे ॥ ११२ ॥
 उद्वर्तनं तूत्सादनं स्नानं त्वाप्लाव आप्लावः ।
 उपस्पर्शोऽभिषेकश्च गोसव्यं गोमयेन तत् ॥ ११३ ॥
 सुगन्धामलकैः स्नानं यत्तल्लक्ष्मीनिकेतनम् ।
 यत्तु सवौषधिस्नानं तन्मङ्गल्यमलोचकम् ॥ ११४ ॥
 यन्मृत्तिकाऽम्भसा स्नानं दिष्टं देशनिकं च तत् ।
 ऋषीणां तर्पणं यत्तत् कौलकुल्यं कुलं च तत् ॥ ११५ ॥
 सिक्खी पटोऽस्त्री सिचयो वासो वसनमंशुकम् ।
 आच्छादनं निवसनं वसितं वस्त्रमम्बरम् ॥ ११६ ॥
 चेलं च तच्चतुर्धा स्यात् त्वक्फलक्रिमिरोमजम् ।
 वालकं क्षौमादिके वस्त्रे फाले कार्पासवादरौ ॥ ११७ ॥
 कौशेयं कृमिकोशोत्थे राङ्गवं मृगरोमजे ।
 पत्रोर्णं धौतकौशेयं महामूल्यं महाधनम् ॥ ११८ ॥
 अग्निगौचं वक्रवल्लीपदे वज्रांशुकं तथा ।
 राजावर्तं चित्रपटे राजवर्तो नवश्रियाम् ॥ ११९ ॥
 अहतं निष्प्रवाणिः स्यात् तन्त्रकं च नवांशुके ।
 निवीतं प्रावृते धौतयुग्मं तूद्गमनीयकम् ॥ १२० ॥
 आप्रपदीनं प्रपदव्यापि वालकादयस्त्रिषु ।
 अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधोऽशुके ॥ १२१ ॥
 चण्डातकं वरस्त्रीणां स्यादधोरुक्मम्बरम् ।
 संव्यानमुत्तरीयं क्षौमं सूक्ष्मं दुकूलं स्यात् ॥ १२२ ॥
 बैकट्यं तु बृहतिका प्रावारश्चोतरासङ्गः ।
 चन्द्रोदय उल्लोचः कदरश्चन्द्रातपो वितानोऽस्त्री ॥ १२३ ॥
 मशकहरी तु चतुष्की शिरसि सिगुष्णीषमस्त्री स्यात् ।
 काण्डपटः स्यादपटी प्रतिसारायवनिका तिरस्करिणी ॥ १२४ ॥
 दूष्यं स्थूलं पटकुटी गुणलयनी केणिका तुल्याः ।
 नालकं नलकं चापि नलिकं चेत्यपि त्रयः ॥ १२५ ॥
 पर्याया धनुरादीनां कवचेऽप्राणिनाममी ।
 निचोलः प्रच्छदपटो वरासी स्थूलशाटका ॥ १२६ ॥

चोली तु शाटिका शाटो वरकोऽस्त्री द्विखण्डकः ।
 निशारो हिमसम्पातत्राणे जीर्णे पटच्चरम् ॥ १२७ ॥
 निचोलः कञ्जकञ्जोलः कूर्पासञ्जाङ्गिकोऽस्त्रियाम् ।
 चीवरं भिक्षुसङ्घाटी कन्थाकन्थटिके समे ॥ १२८ ॥
 कक्ष्यापटस्तु कौपीनं समौ रत्नककम्बलौ ।
 विशालस्त्वाविकौरभ्रौ हस्तिकर्णस्तु रोचकः ॥ १२९ ॥
 शाणी गोर्णा छिद्रवस्त्रैश्चरं खण्डलमस्त्रियाम् ।
 नक्तकः कर्पटो वस्त्रग्रन्थोऽस्त्री नीविरुचयः ॥ १३० ॥
 कक्षः कच्छो गुह्यबन्धः कक्ष्या पृष्ठे कृतोऽञ्चलः ।
 वस्त्रान्तस्त्वञ्चलो वस्तिस्त्वक्ली भूम्नि दशा न षण् ॥ १३१ ॥
 पुष्कलस्तुम्बिका चाथ प्रान्तत्रसरकेसराः ।
 आकल्पवेषौ नैपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ १३२ ॥
 अलङ्कारस्त्वाभरणं भूषणं मण्डनं पुनः ।
 विभूषणं परिष्कारः कर्णिका कर्णभूषणम् ॥ १३३ ॥
 उत्क्षिप्तिका तु कर्णाकस्तालपत्रं तु तालकम् ।
 कर्णपूरस्तु पुष्पाद्यैस्ताडङ्गो दन्तकादिभिः ॥ १३४ ॥
 वालिका कर्णपृष्ठस्था कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ।
 मौलिः कोटीर उष्णीषं किरीटं मकुटोऽस्त्रियाम् ॥ १३५ ॥
 चूडामणिः शिरोरत्नं स्वस्तिकस्तु त्रिकोणकः ।
 वालपाश्या पारितथ्या पत्रपाश्या ललाटिका ॥ १३६ ॥
 ग्रैवेयकं कण्ठभूषा लम्बनं तु ललन्तिका ।
 स्वर्णैः प्रालम्बिकाऽथोरस्सूत्रिका मौक्तिकैः कृता ॥ १३७ ॥
 हारो मुक्तावली स्त्री स्यात्तद्भेदा यष्टिसङ्ख्यया ।
 देवच्छन्दः शतं साष्टमिन्द्रच्छन्दः सहस्रकम् ॥ १३८ ॥
 तस्यार्धं विजयच्छन्दो हारस्त्वष्टोत्तरं शतम् ।
 अर्धं रश्मिकलापोऽस्य द्वादशस्त्वर्धमाणवः ॥ १३९ ॥
 द्विर्द्वादशोऽर्धगुच्छोऽथ पञ्च हारफलं लताः ।
 अर्धहारश्चतुष्पष्टिर्गुच्छमाणवमन्दराः ॥ १४० ॥
 अपि गोस्तनगोपुच्छावर्धमर्धं यथोत्तरम् ।
 एकावल्यानुकण्ठी च हारः स्यादेकयष्टिकः ॥ १४१ ॥
 यष्टिर्नक्षत्रमालैका सप्तविंशतिमौक्तिका ।
 गुडकैर्मणिसोपानं चाटुकारश्च हेमजैः ॥ १४२ ॥

हारमव्यस्थितं रत्नं तरलो नायकोऽपि च ।
 केयूरमङ्गदं भूषा दोर्मूले कङ्कणं करे ॥ १४३ ॥
 आवापकः पारिहार्यं वलयं कटकोऽस्त्रियाम् ।
 पादेऽसौ हंसकः स्त्रीणामङ्गुलीयकमूमिका ॥ १४४ ॥
 साक्षराऽङ्गुलिमुद्रा सा क्षुद्रघण्टा तु किङ्किणी ।
 शिङ्गिनी ना तुलाकोटिर्मञ्जरी नूपुरोऽस्त्रियौ ॥ १४५ ॥
 कटिस्तत्रं सारसनं मेखला रशनाऽथ सा ।
 स्त्रीकट्यां सप्तकी काञ्ची पुंस्कट्यां शृङ्खला त्रयी ॥ १४६ ॥
 स्त्री चर्त्तिर्वर्णकालेपावनुबोधः प्रबोधनम् ।
 माष्टिश्चर्चा च चर्चिक्यं समालम्भनमित्यपि ॥ १४७ ॥
 स्थासको हस्तबिम्बः स्यात् पत्तिच्छेदास्तु राजयः ।
 चित्रं तमालपत्रं क्ली तिलकोऽस्त्री विशेषकम् ॥ १४८ ॥
 पत्तिस्तु पत्रकं लेखा बाहुगण्डस्तनादिषु ।
 पत्राङ्गुलिः पत्ररेखा सा ललाटे ललाटिका ॥ १४९ ॥
 राढा शोभा छवी रुक् त्विट् सुषमा परमा छविः ।
 त्रिगन्धमेलात्वक्पत्रैस्त्रिसुगन्धं त्रिजातकम् ॥ १५० ॥
 चतुर्जातं तदेव स्यान्नागकेसरकेसरैः ।
 सर्वगन्धमिदं सेन्दुतकोलागरुसिलहकम् ॥ १५१ ॥
 लवङ्गपूगतकोलजातीफलहिमांशवः ।
 पञ्च पञ्चसुगन्धं स्यादथ तकोलकुङ्कुमैः ॥ १५२ ॥
 कस्तूर्यगरुकपूर्णाः सुगन्धो यक्षकर्दमः ।
 यावो द्रुमामयोऽलक्तो लाक्षा रक्ता जतु क्रिमिः ॥ १५३ ॥
 कालानुसार्यं कालेयं जावकं चाप्यथ स्रजि ।
 मालाङ्गिलिरथापीडे वतंसोत्तंसशेखराः ॥ १५४ ॥
 केशेषु गर्भकं माल्यं प्रालम्बं कण्ठलम्बितम् ।
 प्रभ्रष्टकं शिखालम्बि पुरोन्यस्तं ललामकम् ॥ १५५ ॥
 वैकट्यं तिर्यगुरसि स्थितं निर्माल्यमुष्मिते ।
 संस्कारो गन्धधूपाद्यैरपुमानधिवासनम् ॥ १५६ ॥
 अञ्जनं त्वक्षिसंस्कारः कज्जलं धूमयोनि तत् ।
 चूर्णानि वासयोगाः स्युः पिष्टातः पटवासकः ॥ १५७ ॥
 रचना स्यात् परिस्कन्धो भावना वासना समे ।
 अथोपकरणं सर्वं परिबर्हः परिच्छदः ॥ १५८ ॥

व्यजनं तालवृन्तं स्याद् धवित्रं चर्मणा कृतम् ।
 आलावर्तस्तु वस्त्रेण चामरं तु प्रकीर्णकम् ॥ १४६ ॥
 पन्तद्वहः प्रतिग्राहो वालोऽस्त्री दारुणा कृतः ।
 आसन्दी स्त्री नरि प्रेङ्खो दीपवल्ली तु दीपिका ॥ १६० ॥
 दीपवृक्षस्तदाधारो दशा वर्तिरथ स्त्रियाम् ।
 वर्तिर्गृहमणिर्दीपो गिरीयकगुडौ गिरिः ॥ १६१ ॥
 दर्पणो मुकुरादशौ कन्दुको गण्डकः समौ ।
 पादुकाऽनुपदीना स्यादुपानत् पादरक्षिणी ॥ १६२ ॥
 उपला तु दृषत्पुत्रः शिला माता दृषत्समाः ।
 दर्विस्तु कम्बिस्तर्द्धः स्यात् खजाका दारुहस्तकः ॥ १६३ ॥
 विष्टरं त्वासनं पीठं दारुजं वेत्रजं पुनः ।
 आसन्दी मञ्चकः खट्वापाश्रयो मत्तवारणम् ॥ १६४ ॥
 शय्या पर्यङ्कपल्यङ्कौ शयनं शयनीयवत् ।
 प्रस्तरः संस्तरः शय्या रचिता पल्लवादिभिः ॥ १६५ ॥
 कटः किलिञ्जो वर्णस्तु परिस्तोमः कुथा त्रयी ।
 नमतं चाप्यास्तरणं प्रस्तरस्तुत्तरच्छदः ॥ १६६ ॥
 उपधानं तूपबर्हमुच्छीर्षमुपबर्हणम् ।
 संवापः शयनं स्वापः संवासो वासनं सह ॥ १६७ ॥
 शयने शयसंवेशावुपशायोऽन्तिकेशयः ।
 पर्यादेरथ पर्यायाः परिशायः समन्ततः ॥ १६८ ॥
 कामध्वजः कामोत्सवः शृङ्गारः कामविक्रिया ।
 परिरम्भः परिष्वङ्ग आश्लेष उपगूहनम् ॥ १६९ ॥
 आलिङ्गनमपि क्रीडीकरणं चाङ्कपाल्यपि ।
 ग्राम्यधर्मः कामकेली रतिर्निधुवनं रतम् ॥ १७० ॥
 मेहनं मिथुनत्वं च समे निसनचुम्बने ॥ १७०३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 पातालकाण्डे पुराणायः ॥ ३ ॥

भूताध्यायः ॥ ४ ॥

भूतानि प्राणिनो जीवा जन्तवो जन्यवोऽङ्गिनः ।
 पुंसः प्राक् त्रिषु गुल्माद्यमुद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥ १ ॥
 स्वेदजा दंशयूकाद्या नृपश्वाद्या जरायुजाः ।
 अण्डजाः पक्षिसर्पाद्याः पुमांस्तु पुरुषो वृषः ॥ २ ॥
 पुरुषो नाऽप्यथ क्लीबः पण्डः षण्डो नपुंसकम् ।
 तृतीयाप्रकृतिश्चाथ पोटा स्त्रीपुंसलक्षणा ॥ ३ ॥
 स्त्री योषिल्ललना योषा वशा सीमन्तिनी वधूः ।
 वनिता महिला नारी तद्भेदास्तु नितम्बिनी ॥ ४ ॥
 प्रतीपदर्शिनी वामा प्रमदा भीरुरङ्गना ।
 अबला भामिनी कान्ता कामिनी वामलोचना ॥ ५ ॥
 सुन्दरी रमणी रामा वेणिनी चान्वितार्थकाः ।
 कुमारी कन्यका कन्या किञ्चित्प्रौढा महोदया ॥ ६ ॥
 अचिरव्यूढा तु वधूः पतिवरा तु स्वयंवरा वर्या ।
 कुलपालिका कुलस्त्री कुल्याऽथ सती पतिव्रता साध्वी ॥ ७ ॥
 स्त्रीव्यञ्जनकृता श्यामा चीरिणी तु सुवासिनी ।
 प्रातर्तुर्दिक्करी राका युवतिस्तलुनी चरी ॥ ८ ॥
 वधूटी च चिरण्टी च द्वितीयवयसि स्त्रियाम् ।
 स्वैरिणी धर्विणी पुंश्चल्यसती कुलदेवरी ॥ ९ ॥
 बन्धकी पांमुला चर्चा चला नगना तु कोट्टवी ।
 भिक्षुकी श्रमणी मुण्डा तीव्रकोपा तु भामिनी ॥ १० ॥
 विप्रशिनका त्वीक्षणिका दैवज्ञा प्रश्नवादिनी ।
 कामुकेच्छुः कामुकी तु वृषस्यन्ती रतार्थिनी ॥ ११ ॥
 वरारोहोत्तमा नारी सैव स्यान्मत्तक्राशिनी ।
 कामात् कान्तं याति याऽसावविनीताऽभिसारिका ॥ १२ ॥
 अभ्यूढा चाधिविन्ना च कृता यस्याः सपत्निका ।
 वीरपत्नी वीरभार्या वीरमाता तु वीरसूः ॥ १३ ॥
 पतिवन्ती जीवपतिर्विश्वस्ता विधवाऽथ सा ।
 कात्यायनी द्वितीयं चेद्वयः काषायमम्बरम् ॥ १४ ॥

उदक्या मलवद्वासा आत्रेयी पुष्पवत्यपि ।
 रजस्वला च मलिना स्त्रीधर्मिण्यृतुमत्यपि ॥ १५ ॥
 ऋतुः पुंस्त्यार्तवं रक्तं पुष्पं चाथानृतुर्वधूः ।
 निष्कलाऽऽपन्नसत्त्वा तु स्र्यन्तर्वन्नी च गर्भिणी ॥ १६ ॥
 अद्यश्चीना तु सा या स्याद्य श्वः प्रसवोन्मुखी ।
 विजाता तु प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥ १७ ॥
 जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ।
 गर्भाशयो जरायुः स्यादुल्बं च कललोऽस्त्रियाम् ॥ १८ ॥
 बालस्य नाभिनालायाममरा कालिनीति च ।
 सूतिमासो वैजननो जीवतोका तु जीवसूः ॥ १९ ॥
 बिन्दुर्नश्यत्प्रसूतिः स्यादशिश्वी शिशुवर्जिता ।
 अवीरा निष्पतिसुता किमिला बहुसूतिका ॥ २० ॥
 कुटुम्बिनी तु गृहिणी पुरन्ध्री मातृकेति च ।
 वृद्धा पलिकनी प्राज्ञी तु प्रज्ञा प्राज्ञा तु धीमती ॥ २१ ॥
 उपाध्यायान्युपाध्यायी शूद्रार्थी क्षत्रियीति च ।
 आचार्यानी च पुंयोगादर्यार्याण्यौ तु जातितः ॥ २२ ॥
 क्षत्रिया क्षत्रियाणी च शूद्रा चेत्यपि जातितः ।
 स्यादुपाध्याय्युपाध्यायाऽप्याचार्या च स्वयंकृता ॥ २३ ॥
 पण्यस्त्री गणिका वेश्या वारस्त्री रूपजीवना ।
 वारमुख्या सत्कृताऽसौ दूती सञ्चारिणी समे ॥ २४ ॥
 कुट्टिनी शम्फली चुन्दी वयस्याली सखी सुहृत् ।
 सैरन्ध्री परवेशमस्था स्वतन्त्रा शिल्पकारिणी ॥ २५ ॥
 दासी तु चेटिका चेटा वडबा कुम्भधारिका ।
 जनयित्री जनन्यम्बा माताऽथ भगिनी स्वसा ॥ २६ ॥
 सा ज्येष्ठाम्बाऽप्यवन्ती च कनिष्ठा कन्यसाम्बिका ।
 ननान्दा तु स्वसा पत्युः ननन्दा नन्दिनीति च ॥ २७ ॥
 पत्न्यास्तु भगिनी ज्येष्ठा ज्येष्ठश्वश्रूः कुलीति च ।
 कनिष्ठा स्यालिका हाली पत्रिणी केलिकुञ्चिका ॥ २८ ॥
 बीजी तु जनको वप्ता तातो जनयिता पिता ।
 पितामहः पितृपिता तत्पिता प्रपितामहः ॥ २९ ॥
 मातुर्मातामहाद्येवं तदूर्ध्वं वृद्धपूर्वकाः ।
 दसपत्योर्वर्त्ययान्माता श्वश्रूः स्यात् श्वशुरः पिता ॥ ३० ॥

सहजः स्वसरो भ्राता कनिष्ठोऽवरजोऽनुजः ।
 पूर्वजस्त्वग्रजो ज्येष्ठः पितृव्याः सहजाः पितुः ॥ ३१ ॥
 ज्येष्ठतातः पितृज्येष्ठः क्षुल्लतातोऽनुजः पितुः ।
 स्यालः स्यादनुजः पत्न्यास्तस्याः स्यादबलोऽग्रजः ॥ ३२ ॥
 देवरो देवदेवानौ मातुर्भ्राता तु मातुलः ।
 दम्पत्योराजिकोऽन्योन्यो वैमात्रेयो विमातृजः ॥ ३३ ॥
 समानोदर्यसोदर्यौ सगर्भः सोदरः समाः ।
 भार्या जाया सहचरी द्वितीया सहधर्मिणी ॥ ३४ ॥
 सधर्मचारिणी पाणिगृहीती पालुषी बधूः ।
 पत्नी क्षेत्रं कलत्रं च गृहाः पुंभूमिर्न दारवत् ॥ ३५ ॥
 जाया प्रजावती मातुर्ज्येष्ठभ्रातुः प्रिया बधूः ।
 स्नुषा बधूर्जनी सूनोर्मातुलानी तु मातुली ॥ ३६ ॥
 भ्रातृवर्गस्य या भार्या यातरस्ताः परस्परम् ।
 रुच्यः प्रियः पतिर्भर्ता सेक्ता वरयिता धवः ॥ ३७ ॥
 पतिर्ननान्दुः कौतूलो नशिको भगिनीपतिः ।
 जारस्तु स्यादुपपतिर्जामाता दुहितुः पतिः ॥ ३८ ॥
 वेश्यापतौ षिद्गकुम्भभुजङ्गवितपल्लवाः ।
 पुत्रस्तु तनयः सूनुरात्मजो नन्दनोऽङ्गजः ॥ ३९ ॥
 सुतः पोतश्च पुङ्गवे नरो दुहितरि स्त्रियः ।
 द्वयोश्च गर्भसन्तानौ प्रसवश्च नरः सदा ॥ ४० ॥
 तोकापत्ये नपुं स्त्री तु प्रसूतिः सन्ततिः प्रजा ।
 जामेयभागिनेयौ तु स्वस्त्रीयोऽथ पितृष्वसुः ॥ ४१ ॥
 पुत्रे पैतृष्वसेयश्च पितृष्वस्त्रीय इत्यपि ।
 एवं मातृष्वसुश्च द्वौ भ्रात्रीयो भ्रातुरात्मजः ॥ ४२ ॥
 सौभागिनेयकानीनौ सुभगाकन्ययोः सुतौ ।
 दास्या दासेयदासेरौ पौत्रलेयोऽसतीसुते ॥ ४३ ॥
 बन्धुलबान्धकिनेयौ च कौलटेयश्च कौलटेरश्च ।
 साध्वी तु भिक्षुकी चेत् कौलटिनेयश्च कौलटेयश्च ॥ ४४ ॥
 पौनर्भवः पुनर्भूज उरस्यस्त्वौरसः स्वजः ।
 नप्तारौ पौत्रदौहित्रौ प्रतिनप्ता प्रपौत्रकः ॥ ४५ ॥

परम्परस्तु तत्पुत्रस्तत्पुत्रोऽपि परम्परः ।
 अयं पत्न्ययनोऽपि स्यात् कल्पनस्तु तदात्मजः ॥ ४६ ॥
 सह प्रवाच्यौ भगिनीभ्रातरौ भ्रातराविति ।
 मातापितरौ पितरौ मातरपितराविति प्रसूतातौ ॥ ४७ ॥
 श्वश्रूश्वशुरौ श्वशुराविति पुत्राविति सुतापुत्रौ ।
 जायापती तु मिथुने जम्पती दम्पती इति ॥ ४८ ॥
 पितरस्तु पितुर्वश्या मातुर्मातामहाः कुले ।
 अन्ववायोऽन्वयो वंशः सन्तानो जननं कुलम् ॥ ४९ ॥
 राजबीजी राजवंश्यो बीज्यो वंश्यश्च वंशजः ।
 स्युर्जातयः सगोत्राश्च सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ५० ॥
 स्वजनो बान्धवो बन्धुः कुटुम्बन्तु सुतादिकम् ।
 परिवारः परिजनः परिस्पन्दः परिग्रहः ॥ ५१ ॥
 देहोऽस्त्री स्त्री तनुर्गात्रं क्षेत्रमङ्गं कलेबरम् ।
 चतुश्शाखं संहननं शरीरं करणं सिनम् ॥ ५२ ॥
 बन्धः प्रजानुकः कायो भूषणः सञ्चरोऽपि च ।
 प्राया वयांस्यस्य दशास्तेरुण्यं यौवनं वयः ॥ ५३ ॥
 व्यानिर्जीर्णिः स्थाविरं तु पात् स्त्री विस्त्रंसजा जरा ।
 शिशुत्वं शैशवं बाल्यं सामुद्रं देहलक्षणम् ॥ ५४ ॥
 गात्राण्यङ्गानि चास्यांशाः प्रतीकापघनावपि ।
 अंशस्त्ववयवो भाग एकदेशः कलेति च ॥ ५५ ॥
 भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धोऽर्धं समेऽशके ।
 अस्त्री चरणमङ्घ्रिर्ना पत् पादः क्रमणं पदम् ॥ ५६ ॥
 तद्वन्थी घुटिकौ गुल्फौ प्रपदं चरणाग्रकम् ।
 गुल्फशीर्षस्त्विन्द्रवस्तिः कूर्चस्त्वङ्गुष्ठकान्तरम् ॥ ५७ ॥
 पादाङ्गुष्ठाङ्गुलीमध्ये क्षिप्रं क्षेपणमस्त्रियाम् ।
 प्रसृता जाघनी जङ्घा पिण्डिका स्यात् पिचिण्डिका ॥ ५८ ॥
 नलतीरं तूरुपर्व जानुरष्टीवदस्त्रियौ ।
 सक्थि क्लीबं पुमान् वोरुल्लुमूलानि वङ्गणाः ॥ ५९ ॥
 अङ्गस्तूपस्थ उत्सङ्गः पीठीवं त्वण्डमूलकम् ।
 पायुस्तु ना गुदापाने त्रिवलीकं बुलिश्च्युतिः ॥ ६० ॥

शङ्कुर्मैढः शोफकोशौ शिरनं मेहनशोफसी ।
 पुषो भगं कामपदमक्ली योनिश्च्युतिर्बुलिः ॥ ६१ ॥
 उक्तद्वयमुपस्थोऽस्त्री गुह्यप्रजनने नपुम् ।
 सीवन्यस्मादधःसूत्रं गुह्यमध्यं गुडो मणिः ॥ ६२ ॥
 धारका गुह्यधारायां पुष्फिका गुह्यजे मले ।
 अस्त्रिथो मुष्ककोशाण्डाः फेलुको वृषणोऽण्डुकः ॥ ६३ ॥
 काञ्चीपदं कलत्रं च कटिः श्रोणिः ककुद्भती ।
 पुरोभागोऽस्य जघनो नितम्बोऽपरभागकः ॥ ६४ ॥
 ऊखौ पुंसि कटिप्रोथौ पूलकौ च स्फिचौ स्त्रियौ ।
 कुकुन्दरे कटीकूपौ कटौ तु कटिशीर्षकौ ॥ ६५ ॥
 वंशस्तु पृष्ठमध्यास्थि (मूलभागोऽस्य तु त्रिकम्) ।
 मूत्राशयो वस्तिरक्ली नाभिर्नाभी प्रतारिका ॥ ६६ ॥
 कुक्षिको मलुकस्तुन्दं जठरं चोदरं न ना ।
 अवलग्नवलग्रौ तु मध्यमो मध्यमस्त्रियाम् ॥ ६७ ॥
 हृदयं हृदुरो वक्षः स्तनो वक्षसिजः कुचः ।
 स्तनाग्रे पिप्पलं वृन्तं चूचुकं मेचकं शिखा ॥ ६८ ॥
 न ह्री कक्षा बाहुमूलं पार्श्वमस्त्री तयोरधः ।
 पश्चिमाङ्गं तनोः पृष्ठमंससन्धी तु जत्रुणी ॥ ६९ ॥
 उल्लखलं तु सन्धिः स्यात् कक्षाया वङ्गणस्य च ।
 कण्ठेगुडः कण्ठमणिरंसान्तौ पीठबन्धनौ ॥ ७० ॥
 स्कन्धो दोशिशखरोऽसोऽस्त्री बाहा बाहुभुजौ न पण् ।
 दोर्न स्त्री करपोणिर्ना हरणः करणः प्लवः ॥ ७१ ॥
 प्रवेष्टश्च कफोण्यां तु कूर्परः कफणिर्न षण् ।
 प्रगण्डः कूर्परादूर्ध्वं प्रकोष्ठः कूर्परादवाक् ॥ ७२ ॥
 मणिबन्धो मणिः पाणिमूले पाणौ करः शयः ।
 पञ्चशाखस्तलो हस्तस्तर्जनी तु प्रदेशिनी ॥ ७३ ॥
 अनामिका तु सावित्री कनिष्ठा तु कनीनिका ।
 ज्येष्ठा तु मध्यमाऽङ्गुष्ठस्त्वङ्गुलोऽथाङ्गुलिः स्त्रियाम् ॥ ७४ ॥
 करशाखाऽथ करभो मध्यं मणिकनिष्ठयोः ।
 तीर्थानि हस्तावयवा नखरस्तु नखोऽस्त्रियाम् ॥ ७५ ॥

पुनर्भवः पाणिरुहो महाराजः पुनर्भवः ।
 खरूलः करजश्चाथ स प्रवृद्धः स्मराङ्कुशः ॥ ७६ ॥
 चपेटश्चर्पटस्तालः प्रहस्तः प्रतलस्तलः ।
 षट् ते तताङ्गुले हस्ते न्युब्जेऽस्मिन् प्रसृते करे ॥ ७७ ॥
 तौ संहतौ संहतलः सोऽञ्जलिः करभावपि ।
 प्रसृते तु द्रवाधारे गण्डूषश्चुलुकश्चुलः ॥ ७८ ॥
 पताकः कुञ्चिताङ्गुष्ठे संश्लिष्टप्रसृताङ्गुलौ ।
 अक्लीबौ मुष्टिमुस्तू द्वौ सङ्ग्राहो मुचुटिः स्त्रियाम् ॥ ७९ ॥
 घण्टाङ्गुष्ठेन भिन्ना सा खेटकस्त्वर्धमुष्टिकः ।
 प्रदेशतालगोकर्णा वितस्तिः स्त्री यथाक्रमम् ॥ ८० ॥
 तर्जन्यादिभिरङ्गुष्ठे वितते विततैः सह ।
 अवटोमनहस्तः स्यात् सप्रकोष्ठं तताङ्गुलिः ॥ ८१ ॥
 दघ्नद्वयसमात्रास्तु जान्वादेस्तत्तदुन्मिते ।
 व्यायामो न्यग्रोधो व्यासश्च भुजौ प्रसारितौ तिर्यक् ॥ ८२ ॥
 त्रिषु तु परे चत्वारः पौरुषमुद्गाहुपुम्माने ।
 गलो निगरणः कण्ठो गरो ग्रीवा तु कन्धरा ॥ ८३ ॥
 शिरोधरावशुषिरा शिरोधिव्यापलण्डिका ।
 कम्बुग्रीवा त्रिरेखा सा शिरःपीठः कृकाटिका ॥ ८४ ॥
 घाटाऽप्यवदुरक्लीब उत्तमाङ्गं पुनः शिरः ।
 उष्णीषं शीर्षमक्षत्रं पुंसि मूर्धा च मस्तिकः ॥ ८५ ॥
 मुण्डोऽस्त्री मस्तकोऽप्यस्त्री मुखं तु वदनं घनम् ।
 तेरं तुण्डं वक्त्रमास्यमाननं च द्विजालयम् ॥ ८६ ॥
 ओष्ठस्याधस्तु चिबुकं चुबुकं चबुकं च तत् ।
 अधरस्त्वधरोष्ठः स्यादोष्ठो दन्तच्छदोऽपि च ॥ ८७ ॥
 दन्तवस्त्रं च तत्प्रान्तौ सूकणी दशनाः पुनः ।
 रदनाः खादना दन्ता दंशा मल्ला रदा द्विजाः ॥ ८८ ॥
 मध्यदन्ता राजदन्ता दंष्ट्रा तत्पार्श्वयोर्द्वयोः ।
 तत्पार्श्वयोः स्थिता दन्ता जम्भास्तालु तु काकुदम् ॥ ८९ ॥
 रसज्ञा रसना जिह्वा राजिः सूनाऽप्यधः स्थिता ।
 गण्डो गल्लः कपोलश्च तत्परा तु हनुर्न षण् ॥ ९० ॥

वक्रो नकुटकं घ्राणं घोणा नासा विघूणिका ।
 शिङ्घाणी नासिका चाथ धमनौ नासिकापुटौ ॥ ६१ ॥
 नासाग्रे दृष्टिबन्धोऽथ शिङ्घाणो नासिकामलः ।
 पिण्डूषः कर्णजमलः कर्णः शब्दग्रहः श्रवः ॥ ६२ ॥
 पैण्डूषोऽस्त्री श्रुतिः श्रोत्रं श्रोतश्च श्रवणं श्रवः ।
 पालिस्तु कर्णलतिका वेष्टनं कर्णशङ्कुली ॥ ६३ ॥
 ईक्षणं नयनं चक्षुरक्षि लोचनमम्बकम् ।
 दृष्टिर्दृक् चाथ न पुमांस्तारकादणः कनीनिका ॥ ६४ ॥
 बल्गु पद्म च दृग्लोम्नि दृक्छदो वर्त्मवर्त्मनी ।
 बिडालको नेत्रपिण्डो दूषिका त्वक्षिजं मलम् ॥ ६५ ॥
 ललाटमलिकं गोधिः स्त्री तत्प्रान्तौ तु शङ्खौ ।
 भूर्भिल्लिकाऽथ शिरसः पृष्ठे नापितकोलिका ॥ ६६ ॥
 जटुले कालकः पिप्लुस्तिलके तिलकालकः ।
 तनूरुहं रोम लोम केशाः शिरसिजाः कचाः ॥ ६७ ॥
 वालाः कङ्क्षास्तीर्थवाहाः कुन्तलाश्च शिरोरुहाः ।
 कुञ्चितास्ते कर्कराला बर्बरा अलका अपि ॥ ६८ ॥
 ते ललाटे भ्रमरकाः कुरुला भ्रमरालकाः ।
 पर्पर्या स्याद्वल्लरीका भल्लर्या भम्पटिः क्षुवः ॥ ६९ ॥
 केशकूटस्तु धम्मिल्लः कबरी कर्परी समे ।
 चोचुस्तु वालकूर्चालः सीमन्तः केशपद्धतिः ॥ १०० ॥
 तद्वन्थिः सन्धितोऽथ प्ता जालिनी गरुडा जटा ।
 प्रलोभ्यं तु शिरस्यं च शीर्षण्यं चामलाः कलाः ॥ १०१ ॥
 चूडा केशी केशपाशी शिखण्डी कमुजा शिखा ।
 बालानां सा काकपक्षः शिखण्डश्च शिखण्डकः ॥ १०२ ॥
 श्मश्रु तु व्यञ्जनं चोटः समे शिङ्घाणशिङ्गिनी ।
 त्वक् स्त्री छदिस्तनुः कृत्तिः संछादन्यप्यसृग्धरा ॥ १०३ ॥
 रसस्तु घनधातुः स्यादात्रेयः षड्रसासवः ।
 मूलधातुर्वह्निमुतो महाधातुरसृक्करः ॥ १०४ ॥
 रुधिरं लोहितं रक्तमस्रं क्षतजमासुरम् ।
 राक्यं शोध्यं मांसकरं रसतेजो रसोद्भवम् ॥ १०५ ॥

आग्नेयं प्राणदं विस्त्रं वासिष्ठं शोणितासृजी ।
 मांसं तु काश्यपं क्रव्यं तरसं पललं पलम् ॥ १०६ ॥
 रक्ततेजो रक्तभवं पिशितं कीनमामिषम् ।
 मेदस्करं च मेदस्तु पलतेजः पलोद्भवम् ॥ १०७ ॥
 विस्त्रमस्थिकरं स्नेहवरं गौतममित्यपि ।
 अथास्थि कीकसं विड्ढं कललं क्रूरमाढिकम् ॥ १०८ ॥
 कुल्यं मेदोभवं मेदस्तेजो मज्जाकरं बलम् ।
 भारद्वाजं श्वदयितं सारसङ्घातकर्कराः ॥ १०९ ॥
 मज्जा स्त्री कौशिकं सूक्ष्ममस्थितेजोऽस्थिसम्भवम् ।
 अस्थिस्नेहो वीर्यकरो मज्जतेजस्विनौ बली ॥ ११० ॥
 रेतो बीजं वरं वीर्यं हर्षजं स्नेहु पौरुषम् ।
 शुक्लं प्रधानधातुश्च धातवोऽमी नवाष्ट वा ॥ १११ ॥
 तिलकं छोम गोर्दं तु मस्तिष्को मस्तुलुङ्गकः ।
 पेशिर्मांसलताऽथ द्वौ वृक्यौ पार्श्वगतौ गुडौ ॥ ११२ ॥
 अस्त्री परीतदान्त्रं स्यात् कालखण्डं पुनर्यकृत् ।
 गुल्मः ग्रीहा च डिम्बः स्यादष्ट्रीला गर्भसम्पुटः ॥ ११३ ॥
 अग्रमांसं तु हृदयं हृद्वसा त्वामिषो रसः ।
 कङ्कालोऽस्त्री तनोरस्थि करङ्कोऽप्यस्थिपञ्जरम् ॥ ११४ ॥
 पार्श्वस्य वङ्कः पर्वस्त्री पृष्ठस्यास्थि कशेरुना ।
 कर्परो ना करोटिः स्त्री कपालोऽस्त्री शिरोऽस्थनि ॥ ११५ ॥
 शाखास्थि नलकं जानोरष्टी स्यात् कूर्परस्य च ।
 धमनी त्वीलिका नाली सिरा दोषप्रणालिका ॥ ११६ ॥
 ग्रीवायास्तु शिरा मन्या महास्नायुस्तु कन्धरा ।
 नखारुस्तु स्नसा स्नावः स्नायवना सन्धिबन्धनम् ॥ ११७ ॥
 लसीका लसिका रक्तरसमांसविपाकजाः ।
 पूयं तु कुणपं दूष्यं पुरीषं शमलं शकृत् ॥ ११८ ॥
 उच्चारो विण्ण ना गूथो वर्चस्को मलमस्त्रियाम् ।
 विष्ठा चाप्यथ लण्डोऽस्त्री विष्ठा राजियुता दृढा ॥ ११९ ॥
 प्रस्रावो देहवारि स्यान्मूत्रमेकाङ्गुलं च तत् ।
 सृणिका स्यन्दिनी लाला मलं किट्टं च न स्त्रियाम् ॥ १२० ॥

पित्तं मायुर्नरि श्लेष्मा बलासः खेटकः कफः ।
 क्षुत् स्त्री क्षुतः क्षवः पुंसि प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥ १२१ ॥
 दवथुः परितापः स्याद् ग्लानिः स्त्री ग्लवथुः पुमान् ।
 शोफोऽस्त्री श्वयथुः शोथः पादस्फोटो विपादिका ॥ १२२ ॥
 स्फोटकः कीलको गण्डो विस्फोटः पिटका त्रयी ।
 खसः पुमान् स्त्रियः कच्छूपामपामाविचर्चिकाः ॥ १२३ ॥
 कण्डूकण्डूतिकण्डूयाः खर्जूः कण्डूयने स्त्रियः ।
 यद्मा यक्ष्मः क्षयः शोषः कोष्ठः कुष्ठं च मण्डलम् ॥ १२४ ॥
 श्वित्रं श्वेतेऽत्र चक्रं तु दद्रुः स्त्री मुखजः पुनः ।
 पुंहलोऽपि वरण्डोऽपि व्यङ्गो नीलं पृषन्मुखे ॥ १२५ ॥
 मङ्कुस्तु सिद्धम् सिद्धं च केशघ्नं त्विन्द्रलुप्तकम् ।
 उद्गालो वमथूद्गारौ वान्तिः प्रच्छदिका वमिः ॥ १२६ ॥
 भ्रिणिका वातसञ्चारो हिक्का हेक्का च हिक्किका ।
 उच्छ्वासरोधो योऽकस्मात् क्राथोऽसौ ऋथनं क्षणम् ॥ १२७ ॥
 अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात् प्रमेहस्त्वत्तिमूत्रतः ।
 आनाहो मलविष्टम्भ उत्थानं तु मलस्रुतिः ॥ १२८ ॥
 नातिभिन्नस्त्वतीसारो ग्रहणी स्त्री प्रवाहिका ।
 गलगण्डो गण्डमालो रोहिणी तु गलाङ्कुरः ॥ १२९ ॥
 गुल्मः स्यादुदरग्रन्थिः सीवनीजो भगन्दरः ।
 शम्बूकावर्त एष स्यात् त्रिदोषोत्थोऽथ पित्तजः ॥ १३० ॥
 स्यादुष्ट्रग्रीवकोऽथ स्त्री परिस्त्रावी कफोद्भवः ।
 अर्शो दुर्नाम वृद्धिस्तु कुरण्डश्चाण्डवर्द्धने ॥ १३१ ॥
 उपदंशो लिङ्गशोफ उदावर्तो गुदग्रहः ।
 नेत्ररुक् कामला क्लीबं कुम्भः स्यात् सा महत्तरा ॥ १३२ ॥
 श्लेपदः पदवलमीको गतिर्नाडीव्रणः पुमान् ।
 अर्बुदो मांसकीलः स्यात् पृष्ठग्रन्थिर्गुडो गडुः ॥ १३३ ॥
 सुप्तः कुक्कुट एकाङ्गग्रहश्च वरुणग्रहः ।
 गजे ज्वरस्य नामानि सिंहे तोये च सोऽण्डिकः ॥ १३४ ॥
 उष्ट्रे लसोऽभितापोऽश्वे व्याघ्रे पोतो गवीश्वरः ।
 बिडाले कणकः पोत्रिण्यलसः छर्दनः शुचिः ॥ १३५ ॥

क्रमाद्धारिद्रेन्द्रमदौ मृगरोगौ पपा ततः ।
 महिषे मत्स्यमृगयोः खगे चाक्षेपकोऽनिले ॥ १३६ ॥
 धरण्यां करकोत्पाटानुद्धिजे पाण्डुवर्णकः ।
 मारिमसूरी रुग्मेदाः शूलाद्या विद्रधिर्न षण् ॥ १३७ ॥
 व्याधिव्याप्यामया माथरोगामा देहमर्दनः ।
 सन्तापोऽपाटवं मान्द्यमाकुल्यं रुग्ने स्त्रियौ ॥ १३८ ॥
 उपचर्या चिकित्सा स्याल्लङ्घनं त्वपतर्पणम् ।
 कुशी भग्नास्थिबन्धः स्यादरिष्टो दंशबन्धनम् ॥ १३९ ॥
 पटुस्तु व्रणबन्धः स्यान्नस्यं नस्तं च नावनम् ।
 अङ्गुल्यग्रेण चूर्णाद्यैर्धर्षणं प्रतिसारणम् ॥ १४० ॥
 जायुः पुंस्यगदस्तन्त्रं भैषज्यौषधभेषजम् ।
 काथः कषायो निर्यूहः फाण्टोऽतिक्वाथजो रसः ॥ १४१ ॥
 काथदेस्तु पुनः काथाद् घनीभावो रसक्रिया ।
 वार्त पाटवमारोग्यं सङ्गद्यं स्वास्थ्यमनामयम् ॥ १४२ ॥
 त्रिष्वतः पटुरुल्लाघो वार्तः कल्यो निरामयः ।
 रोगहार्यगदङ्कारो भिषग्वैद्यश्चिकित्सकः ॥ १४३ ॥
 निदानज्ञस्तु दोषज्ञ आयुर्वेदी तु शास्त्रवित् ।
 आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तो विकृतो व्याधितोऽपटुः ॥ १४४ ॥
 आमयावी समौ ग्लास्तुग्लानौ पामनकच्छुरौ ।
 वाताशोदद्रुमन्तः स्युर्वातलार्शसदद्रुणाः ॥ १४५ ॥
 श्लेष्मसूः श्लेष्मलः खेटी सातिसारोऽतिसारकी ।
 किलासी सिध्मलो वृद्धनाभौ तुन्दिभतुन्दिलौ ॥ १४६ ॥
 खल्व्वाटः खलतिर्बभ्रुः शिपिविष्टैन्द्रलुप्तिकौ ॥ १४६ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

पातालकाण्डे भूताध्यायः ॥ ४ ॥

चतुर्थः पातालकाण्डः समाप्तः ॥ ४ ॥

५. अथ सामान्यकाण्डः

गणाध्यायः ॥ १ ॥

पूगप्रकरसङ्घातविसरव्रातसञ्चयाः ।
 वारस्कन्धगणस्तोमसमवायचयव्रजाः ॥ १ ॥
 सन्दोहनिवहव्यूहसमूहनिकराकराः ।
 समुदायः समुदयो निकुरुम्बं कदम्बकम् ॥ २ ॥
 वृन्दं जातं चक्रवालं जालकं पेटकं जटा ।
 धान्यादिवृन्दे कूटोऽस्त्री राशिपुञ्जोत्करा नरि ॥ ३ ॥
 वृन्दे तिरश्चां यूथोऽस्त्री निकायस्तु सधर्मणाम् ।
 सङ्घसारथौ तु जन्तूनां वर्गस्तु सदृशां गणे ॥ ४ ॥
 पशूनां समजोऽन्येषां समाजो धीमतां सभा ।
 उद्विज्जानां तु षण्डोऽस्त्री स्कन्धोऽश्वनरहस्तिनाम् ॥ ५ ॥
 पटल्यपुं सुश्लिष्टानां सजातीयगणे कुलम् ।
 शौककापोतशावाद्याः शुकादीनां गणे नपुम् ॥ ६ ॥
 क्ली गोत्रप्रत्ययान्तेभ्यः स्यादौपगवकादिकम् ।
 माणवानां तु माणव्यं बाडव्यं तु द्विजन्मनाम् ॥ ७ ॥
 राजन्यकं मानुष्यकं राजकं च पृथक् पृथक् ।
 गार्भिणं यौवनं तासां गाणिक्यं गणिकागणे ॥ ८ ॥
 जनबन्धुगजग्रामसहायानां गणे स्त्रियः ।
 जनताबन्धुतेत्याद्या बाडवं बडबागणे ॥ ९ ॥
 हास्तिकमौष्ट्रकमौक्षकमौरभ्रकमाजकं गजादीनाम् ।
 एवं धैनुकवात्सकमाश्वीयं त्वाश्वमश्वानाम् ॥ १० ॥
 सवर्मणां कावचिकं पादातं पादचारिणाम् ।
 आपूपिकं शाष्कुलिकमित्यादिकमचेतसाम् ॥ ११ ॥
 कैदारिकं तु कैदार्यं क्षैत्रं कैदारकं समम् ।
 केशानां कैशिकं कैश्यं खल्या तु खलिनी समे ॥ १२ ॥
 भैक्षसाहस्रकारीषवार्मणानि च तद्गणे ।
 रथकट्या तु रथ्या स्याद् गोत्रा गव्या च गोगणे ॥ १३ ॥

धूस्या वात्या पाश्या हत्या गत्या नट्या वन्या तृण्या ।
 पृष्ठ्यं तत्तद्वृन्दे सर्वं पार्श्वं वृन्दे पर्शूनां स्यात् ॥ १४ ॥
 मिथुनं द्वितयं द्वैतं द्वयं द्वन्द्वं युगं यमम् ।
 यमलं युगलं युग्मं युतकं च द्वयोर्गणे ॥ १५ ॥
 त्रयं त्रयाणां त्रितयं मिथुनं तद्वति त्रिषु ।
 स्त्रीपुंसयोस्तु मिथुनं कशिपुः स्यन्नवस्त्रयोः ॥ १६ ॥
 औशीरं शय्यासनयोलिङ्गं बुद्ध्यादिसङ्गतौ ।
 ग्रामः परोऽस्त्राद्विषयाद् (गुणाद्) भूतेन्द्रियार्थकान् ॥ १७ ॥
 पक्षः पाशश्च हस्तश्च केशार्थेभ्यः परो गणे ।
 पशूनां गोयुगं युग्मे तत्तदाह्वयपूर्वकम् ॥ १८ ॥
 गणपूरणं गणतिथं पूगतिथं चैवमेव सङ्गतिथम् ।
 बहुतिथसंवत्सरतममासतमान्यर्धमासतमम् ॥ १९ ॥
 यावतिथैतावतिथे तावतिथं कतिथमपि च कतिपयथम् ।
 पञ्चमसप्तमनवमान्यष्टमदशमद्वितीयानि ॥ २० ॥
 षष्ठं प्रथमतृतीये तुरीयतुर्ये चतुर्थश्च ।
 द्वादशमेकादशमिति रूपं स्याद् विंशतेरर्वाक् ॥ २१ ॥
 विंशं विंशतितममेकविंशमिति वत्परं द्विधा सर्वम् ।
 षष्टितममिति वदेकं रूपमसङ्ख्यादिषष्ट्यादेः ॥ २२ ॥
 शततममेकशततमं सहस्रतममिति च सर्वमेकविधम् ।
 ओजमयुग्मं युग्मं युगिति द्वितीयतुर्यादि ॥ २३ ॥
 त्रिष्वेते पूरणार्थाः स्युः शब्दा गणतिथादयः ।
 आवलिः पद्धतिः पङ्क्तिरालिलेखा च मालिका ॥ २४ ॥
 एकादयश्च सङ्ख्येये शब्दाः प्राग्विशतेस्त्रिषु ।
 द्वित्रा द्वौ वा त्रयो वा स्थुरेवं त्रिचतुरा अपि ॥ २५ ॥
 चतुःपञ्चाः पञ्चषाश्च षट्सप्ताद्याश्च तादृशाः ।
 स्त्री पङ्क्तिर्विंशतिस्त्रिंशच्चत्वारिंशच्च पञ्चाशत् ॥ २६ ॥
 षष्टिः सप्तत्यशीतिश्च नवतिश्च दशोत्तराः ।
 क्रमेणाथ परेणाथ परे दशगुणोत्तराः ॥ २७ ॥
 शतं सहस्रमयुतं नियुतं प्रयुतार्बुदे ।
 न्यबुदं वृन्दस्वर्वे च निस्वर्वं शङ्खमम्बुजम् ॥ २८ ॥

समुद्रो मध्यमन्तं च परार्धं च यथाक्रमम् ।
 परं परार्धाद् द्विगुणमथ स्त्री कोटिरर्बुदे ॥ २६ ॥
 व्यत्यासेन च दृश्येते नियुतप्रयुते क्वचित् ।
 वृन्दादिषु तु षट्स्वन्ये निखर्वं बद्धमक्षितम् ॥ ३० ॥
 व्योम चान्तश्च सर्वश्च समुद्राद्यास्तु वा त्रिषु ।
 अन्ये त्वाहुः शतं कोटिः शङ्कुर्बुन्दं महागुणः ॥ ३१ ॥
 पद्मं महाम्बुजं चेति क्रमाक्षगुणोत्तरम् ।
 सहस्राणां शते लक्षा लक्षं च नियुतञ्च तत् ॥ ३२ ॥
 पङ्क्त्यादयः स्युः संख्यायां संख्येयेषु च वस्तुषु ।
 संख्यायां द्वयेकबहुताः संख्येयेषु सदैकता ॥ ३३ ॥
 तद्यथा विंशतिर्गावः स्वावृत्तौ जातु नैकता ।
 तद्यथा विंशतिर्विप्रास्तिस्रो विंशत्यो भटाः ॥ ३४ ॥
 बहुव्रीहौ बहुवचो वाच्यलिङ्गं च तद्यथा ।
 उपविंशैर्भुजैर्भुक्तमुपत्रिंशा अजा इति ॥ ३५ ॥
 कला गणनसंख्याने हननं ताडनं समे ।
 वर्गस्तावत्कृतिश्चेति तावत्कृत्वः कृतेर्द्वयम् ॥ ३६ ॥
 तन्मूले तु पुमान् हेतुर्गच्छा वाञ्छितराशयः ।
 गण्डः कपर्दाश्चत्वारस्ते बोध्री पञ्च तद्द्वयम् ॥ ३७ ॥
 बिन्दुकोऽस्त्री तद्द्वये तु पणपाणिकपादिकाः ।
 क्रमात्ततोऽङ्गजो रुच्यः कार्षिकश्च चतुर्गुणाः ॥ ३८ ॥
 कार्षापणः कार्षिकः स्यात् स षोडशपणः क्वचित् ।
 लोहे विंशतिमाषोऽसौ कार्षिके ताम्रिके पणः ॥ ३९ ॥
 ताम्रकर्षकृता मुद्रा क्वचित् कार्षापणः पणः ।
 स एव चाधिकेत्युक्ते धानका तच्चतुष्टयम् ॥ ४० ॥
 ता द्वादश सुवर्णोऽस्त्री निष्को दीनार इत्यपि ।
 साशीतिपणसाहस्रो दण्ड उत्तमसाहसः ॥ ४१ ॥
 त्रसरेणुभिरष्टाभिलिङ्क्षा सैव मरीचिका ।
 रथरेणुश्च रेणुश्च तास्तिस्रो राजसर्षपः ॥ ४२ ॥
 धुरणश्च यवाग्रश्च ते त्रयो गौरसर्षपः ।
 तेऽष्टौ यवः षोडश तु यवा माषोऽथवा त्रिभिः ॥ ४३ ॥

यवैर्गुञ्जा पञ्च गुञ्जा माषः कुप्ये तु सप्त ताः ।
 रूप्यमाणो द्विगुञ्जो वा धरणं षोडशैव ते ॥ ४४ ॥
 शतमानं तु दशभिर्धरणैः पलमेव च ।
 माषस्तण्डुलमात्रो वा हेम्नस्तैरष्टभिः पणः ॥ ४५ ॥
 निष्कोऽस्त्री विंशतिपणस्तेऽष्ट वा दश वा पलम् ।
 यः पञ्चकृष्णलो माषः कुप्ये वा सप्तकृष्णलः ॥ ४६ ॥
 तौ द्वौ माषावर्णिका स्याल्लोहितीकं त्रिमाषकम् ।
 शाणो मण्डः पिचूलं च माषाः स्युश्चतुरादयः ॥ ४७ ॥
 मक्षुणं सप्तमाषं स्यादण्डिका तच्चतुर्थेवा ।
 द्रक्षुणं द्रक्षुमं कोलं वटकं चाष्टमाषके ॥ ४८ ॥
 तृतीये ध्वानका शाणभागे माषास्तु षोडश ।
 सुवर्णोऽक्षः पिचुः पाणिः कर्षोऽस्त्री क्रोडबिन्दुके ॥ ४९ ॥
 बिडालपादकं हंसपदं ग्रासग्रहं तलम् ।
 शतमानं तु कर्षे द्वे शुक्तिरष्टमिका न ना ॥ ५० ॥
 ते द्वे चतुर्थिका वा क्ली निष्कुञ्च्याज्यपलानि च ।
 बिल्वः प्रकुञ्चं मुष्टिश्च हेम्नोऽक्षे विस्तवारदौ ॥ ५१ ॥
 पादिकं ताम्रकर्षं स्यादिन्दुः स्याद्रजते पले ।
 कुरुविस्तः पले हेम्नः प्रसृतोऽस्त्री द्विमुष्टिके ॥ ५२ ॥
 प्रसृतौ द्वावञ्जलिः स्यात् कुडपो वाहिकोऽध्युषः ।
 तौ द्वौ मान्यष्टमानं च ते द्वे प्रस्थः स कुप्यके ॥ ५३ ॥
 द्वात्रिंशत्पलकोऽन्येषां द्वादशैव पलानि सः ।
 चतुष्प्रस्थः पुना राशिर्महोद्रेको बृहाणकः ॥ ५४ ॥
 पात्रं शूर्पावरं पिष्टं सेहिका द्व्याढकोऽस्त्रियाम् ।
 कंसं चाथ चतुष्के स्युर्द्रोणोऽस्त्री कलशो घटः ॥ ५५ ॥
 अमर्णं नल्वलं शौर्पमुन्मानं तद्द्वयं पुनः ।
 कुम्भः शूर्पोऽस्त्रियां तौ द्वौ गोणी वाहस्तु तद्द्वयम् ॥ ५६ ॥
 तौ द्वौ खारी परे त्वेनां विदुः कुम्भीं परे पुनः ।
 खारीं कंसयुगेनान्ये मानीं वाहं परे विदुः ॥ ५७ ॥
 वाहं केचिच्चतुःखारीं खारीभागं च गोणिकाम् ।
 वाहं प्रस्थद्वयं केचित् कुम्भानां विंशतिर्जटी ॥ ५८ ॥

दश कुम्भाः पाञ्चमिकः कुम्भोऽयमिति केचन ।
 धारणं तु पलान्यष्टौ हेम्नस्तान्नस्य सप्ततिः ॥ ५६ ॥
 दशान्येषां शतं मानं सार्धं रूप्यपलैस्त्रिभिः ।
 तुला पलशतं तास्तु दशर्क्षं धटिकोऽस्त्रियाम् ॥ ६० ॥
 तौ तु द्वौ शाकटो भारः शाकटीनः शलाटवत् ।
 भारा दश समं सङ्गं धारभारं च शाकटम् ॥ ६१ ॥
 आचितं द्वयाचितं होढं हेलकं समकं समम् ।
 बाहितं भारितं चाष्टावृक्षादशगुणाः क्रमात् ॥ ६२ ॥
 माषः शाणस्तलं मुष्टिरञ्जलिः प्रस्थ आढकः ।
 द्रोणो गोणी च खारी च क्रमादेतच्चतुर्गुणम् ॥ ६३ ॥
 पाय्यं हस्तादिभिर्मानं द्रुवयं कुडबादिभिः ।
 पौतवं तुलया तस्य सूत्रं स्याद्रागसूत्रकम् ॥ ६४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 सामान्यकाण्डे गणाध्यायः ॥ १ ॥

धर्मकर्माध्यायः ॥ २ ॥

रूपं तत्त्वं सतत्त्वं च स्वरूपं च सलक्षणम् ।
 सहजं निजमाजानं धर्मसर्गौ निसर्गवत् ॥ १ ॥
 स्वभावः प्रकृती रीतिरवस्था तु दशा स्थितिः ।
 प्रभावः प्रभवन्ती स्यात् प्रभुता प्रभविष्णुता ॥ २ ॥
 परभागो गुणोत्कर्षः प्राग्भारोऽतिशयो भरः ।
 विस्तारो विग्रहो व्यासः स तु शब्दस्य विस्तरः ॥ ३ ॥
 अनायासार्थकं फाण्टं दौर्मत्यं तु करैरकम् ।
 विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहो रोषे त्वादीनवाश्रवौ ॥ ४ ॥
 दैर्घ्यमायाम आनाहः परिणाहो विशालता ।
 वैपरीत्यं विपर्यासो व्यत्ययश्च विपर्ययः ॥ ५ ॥
 व्यत्यासो व्यतिहारः स्यादन्तर्गडु निरर्थकम् ।
 तत्क्षणं स्यादेकपदं यदृच्छा नियमोज्झितिः ॥ ६ ॥
 वण्टो विभागो भागोऽशः पादस्त्वंशश्चतुर्थकः ।
 कला तु षोडशो भागो वारस्त्ववसरः क्षणः ॥ ७ ॥
 प्रतिकूलानुकूलार्थे अपष्ठुरमपष्ठु च ।
 पृष्ठमांसादनं पश्चाद् गतस्यार्थस्य गर्हणम् ॥ ८ ॥
 आग्नेडनं भटप्पः स्याज्भम्पः सम्पातपाटवम् ।
 कर्म क्रियाऽप्यनुष्ठानं तद्भेदा गमनादयः ॥ ९ ॥
 यात्रा ब्रज्या च गमनं प्रस्थानं च गतिर्गमः ।
 चक्रावर्तो भ्रमो भ्रान्तिर्भ्रमिर्घूर्णिश्च घूर्णनम् ॥ १० ॥
 ईहं शीघ्रगमनं सारणं छद्मना गतिः ।
 ब्रज्याऽटाट्या पर्यटनमल्पेऽध्वनि गतागतम् ॥ ११ ॥
 सविकारा गतिः सोरो भेलनं तरणं प्लवः ।
 कादाचित्कस्तु भेयोऽसौ क्षेपो लङ्घनलङ्घने ॥ १२ ॥
 निर्योणं स्यान्निर्गमनमंहनं वक्षसा गतिः ।
 प्रतिबन्धः प्रतिष्टम्भः सम्बन्धः प्राप्तिरापनम् ॥ १३ ॥
 निर्बन्धोऽभिवेशः स्यात् प्रवेशोऽन्तरगाहनम् ।
 आस्यासनोपवेशश्च निवेशो रचना स्थितिः ॥ १४ ॥

अथाभ्यादानमारम्भः प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ।
 प्रत्युत्क्रमः प्रयोगः स्यादादरोहणमभिक्रमः ॥ १५ ॥
 आक्रमोऽभिक्रमः क्रान्तिव्युत्क्रमस्तूत्क्रमो मृतम् ।
 विक्रमः शौर्यकरणमत्याधानमतिक्रमः ॥ १६ ॥
 भूमानं विक्रमः पद्भ्यां निर्हारोऽभ्यवकर्षणम् ।
 अनुहारोऽनुकारः स्यात् परिहारो निवर्तना ॥ १७ ॥
 प्रत्याहार उपपादानमभिहारस्त्वभिग्रहः ।
 समास उपसंहारः समाहारः समुच्चयः ॥ १८ ॥
 अपहारस्त्वपादानं प्रहारस्त्वभिताडनम् ।
 उपलम्भस्त्वनुभवो विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ॥ १९ ॥
 विप्रलम्भो विसंवादः प्रतिलम्भस्तु लम्भनम् ।
 स्वतन्त्रवृत्तिव्युत्थानमभ्युत्थानं तु गौरवम् ॥ २० ॥
 संस्थानं सन्निवेशः स्यादुपस्थानं तु सङ्गतिः ।
 धान्योत्क्षेपणमुत्कारः पराकारस्तु धिक्क्रिया ॥ २१ ॥
 विकारो विप्रकारः स्यादाकारस्त्वङ्ग इङ्गितम् ।
 उपक्रियोपकारः स्यादपकारोऽन्यतः कृतिः ॥ २२ ॥
 प्रकार इत्थम्भावः स्यादपकारोऽन्यपीडनम् ।
 प्रत्याख्यानं निराकारः प्रत्यादेशो निरासवत् ॥ २३ ॥
 परिणामोऽन्यथाभावः सन्नामस्त्वन्यथाकृतिः ।
 प्रणामः प्रणिपातः स्यादुन्नामस्तुङ्गतोन्नतिः ॥ २४ ॥
 उद्योगोऽस्त्री समुत्थानं विनियोगोऽर्पणं फले ।
 विधिर्नियोगः सम्प्रेष उपयोगः फलक्रिया ॥ २५ ॥
 संयोगसम्प्रयोगौ सम्भेदः सन्निपातसंश्लेषौ ।
 सम्पाते विश्लेषे तु विप्रयोगविरहवियोगाः ॥ २६ ॥
 विगमोऽपगमोऽपायो मेलने सङ्गसङ्गमौ ।
 शमथस्तु शमः शान्तिर्दान्तिस्तु दमथो दमः ॥ २७ ॥
 बन्धनं प्रसितिर्बन्धः क्लान्तिस्तु क्लमथः क्लमः ।
 परिसर्या परीसारः परिसर्पः परिक्रमः ॥ २८ ॥
 लवे विलावो लवनं तेमः स्तेमः समुन्दनम् ।
 प्रतिश्रवः प्रतिख्यातिरपेक्षा प्रतिजागरः ॥ २९ ॥
 संयामसंयमौ यामो वियामो वियमो यमः ।
 संवाहनं मर्दनं स्यात् पर्यवस्था विरोधनम् ॥ ३० ॥

संस्तवः स्यात् परिचय उदजः प्रेषणे पशोः ।
 पवनं पवनिष्पावौ जूतिस्तु जवनं जवः ॥ ३१ ॥
 प्रेजनं स्यादयसरो रन्धनं पचनं पचा ।
 क्षयः क्षिया नयो नायो मदो मादः स्नवः स्नावः ॥ ३२ ॥
 उद्वेग उद्भ्रमः श्रायः श्रयणं प्रमितिः प्रमा ।
 स्फातिस्तु वृद्धिः स्फुरणं स्फुलनं क्षेपणं क्षिपा ॥ ३३ ॥
 उद्यमो गुरणं श्च्योतिः प्रघारः प्रथनं प्रथा ।
 भङ्गिस्तु व्याकृतिः खेदो निर्वेदो घटना घटा ॥ ३४ ॥
 यत्प्रेषणं समाहूय तस्मिन् स्यात् प्रतिशासनम् ।
 वञ्चनं त्वतिसन्धानं व्यलीकं च प्रतारणम् ॥ ३५ ॥
 निष्ठीवोऽस्त्री निष्ठीवनमपि निष्ठेवनं च निष्ठ्यूतिः ।
 उपरत्यारत्यपरतिविरतय उपरमण उपरामः ॥ ३६ ॥
 संविदागूः प्रतिज्ञाऽऽस्थाऽप्यभ्युपायः प्रतिश्रवः ।
 अङ्गीकाराभ्युपगमनियमाश्रवसंश्रवाः ॥ ३७ ॥
 प्रणीतिः स्यादनुनयः प्रश्रयः सान्त्वनं तथा ।
 सपत्राकृतिनिष्पत्राकृती त्वत्यन्तपीडने ॥ ३८ ॥
 वर्णनं स्याद्विभजनं प्रवाहस्तु परम्परा ।
 श्रन्थनं ग्रन्थनं गुम्फः सन्दर्भो रचना न ना ॥ ३९ ॥
 विधूननं विधुवनं त्यागो हानं च वर्जनम् ।
 आवर्जनं द्रवक्षेपे निधानं क्षेपणासने ॥ ४० ॥
 सम्मूर्च्छनं व्यापनं स्याद् विदरः स्फुटनं भिदा ।
 आवर्तनं काथनं स्यात् कथनं पाकवर्तनम् ॥ ४१ ॥
 संवीक्षणं विचयनं लोटनं तु विवेष्टनम् ।
 इत्यादयः क्रियाशब्दा लक्ष्या धातुषु लक्षणैः ॥ ४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 सामान्यकाण्डे धर्मकर्माध्यायः ॥ २ ॥

गुणाध्यायः ॥ ३ ॥

गुणो जसुर्द्रव्यपदो द्वौ स्नेहे मार्जमार्जनौ ।
 मसृणत्वे तु मारुङ्गक्रासनौ द्रवणे द्रुतिः ॥ १ ॥
 खादीनां तु गुणाः शब्दः स्पर्शो रूपं रसः क्रमात् ।
 गन्धश्चेतीन्द्रियार्थास्ते विषया गोचराश्च ते ॥ २ ॥
 सत्यं तथ्यमृतं सम्यक् समीचीनं तथार्थवाक् ।
 कर्कशे परुषो रूक्षो मठरः खोरणः खरः ॥ ३ ॥
 उत्क्षुद्रलोऽथ मसृणे श्लक्ष्णसोमालचिक्रणाः ।
 पिच्छिले स्याद् विज्विलः कठिने खरटः खटः ॥ ४ ॥
 कठोरनिष्ठुरकूरदृढदारुणकक्खटाः ।
 खरश्च सुकुमारे तु कोमलो मृदुलो मृदुः ॥ ५ ॥
 शीतले शीकरः शीतः सुषिकः सुषिमो जडः ।
 समीकः सोलिकः सोलः स्कन्दोलो मेकलस्तलः ॥ ६ ॥
 तुषारः शिशिरः स्फीतः सेभ्यः सीमो हिमोऽपि च ।
 उष्णं ज्वलः खरः क्रूरो बालस्तिग्मः कृशश्चुपः ॥ ७ ॥
 सोमलो वह्निको व्यक्तस्तालको जलशीनकः ।
 अङ्गारो दहनस्तप्तः प्रूष्वो धूम्रः प्रतापनः ॥ ८ ॥
 तीक्ष्णश्चण्डोल्बणप्रोन्द्रकरालविकारालिनः ।
 मन्दोष्णमोष्णं कोष्णं च कवोष्णं च कदुष्णवत् ॥ ९ ॥
 शुक्ले शुभ्रशुचिश्वेताः पुण्ड्रको धवलोऽर्जुनः ।
 अवदातः सितो गौरो विशदश्येतपाण्डराः ॥ १० ॥
 काले कृष्णासितश्यामनीलश्यामलमेचकाः ।
 रोहिते लोहितो रक्तो हारिद्रे पीतपीतले ॥ ११ ॥
 उत्पिशस्तु सितश्यामे हरिणे पाण्डुपाण्डरौ ।
 कपोतस्तु कपोताभः पद्मः पीतसितासितः ॥ १२ ॥
 पिञ्जो नीलसितश्यामः सोवालः कृष्णधूमलः ।
 सितकाचस्तु पिङ्गाणः कण्डारः सितकाचरः ॥ १३ ॥
 वरालः सितपिङ्गाणः स्तोकपाण्डुस्तु धूसरः ।
 कोसलः पाण्डुलः श्यामश्चाटः कृष्णहरिः सितः ॥ १४ ॥

बलक्षस्तु सितश्यामः सैराभः श्वेतपीतलः ।
 सितपीतहरित्रीलस्तरलो वृद्धपत्रवत् ॥ १५ ॥
 रक्तपीतासितश्येते बोलः कारीषभस्मवत् ।
 उत्पिशाद्यास्त्वमी मिश्रवर्णाः शुक्लप्रधानकाः ॥ १६ ॥
 शोणोऽरुणश्च सन्ध्याभः श्वेतरक्तस्तु पाटलः ।
 मरालोऽल्पः पीतरक्तः पीतरक्तस्तु पिञ्जरः ॥ १७ ॥
 बभ्रुः कडारः कपिलो विदग्धो दुष्टरक्तवत् ।
 श्यावे तु कपिशः पिङ्गे पिशाङ्गः कटुपिङ्गलौ ॥ १८ ॥
 नीलपीतारुणः शारो जोणालो नीललोहितः ।
 इति लोहितवर्गीणा अथ पीतप्रधानकाः ॥ १९ ॥
 सेरालोऽल्पसितः पीतः पेरालः पीतधूमलः ।
 पीतश्यामल ओरालो गौरः स्यात् पीतलोहितः ॥ २० ॥
 कीनाशः पीतहरितो हरितो नीलपीतलः ।
 कृष्णवर्ग्याः पुनर्धूम्रधूमलौ कृष्णलोहिते ॥ २१ ॥
 पीतकृष्णहरिद्राभः काचरः कृष्णधूमलः ।
 कृष्णपीतस्तु काचोऽथ पालाशो हरितो हरित् ॥ २२ ॥
 तारावतारकिर्मीरशबलैतास्तु चित्रके ।
 स चान्योन्यानवष्टम्भान्नानावर्णसमुन्नयः ॥ २३ ॥
 कर्बुरः शुक्लहरित आरुः स्यात् कृष्णपिङ्गलः ।
 सितकृष्णस्तु कल्माषः पिञ्ज्रूषः सितकाचरः ॥ २४ ॥
 कृष्णरक्तसितः शारः किमिरः सितलोहितः ।
 मधुरस्तु रसज्येष्ठो गुली स्वादुर्मधूलकः ॥ २५ ॥
 अम्लस्तु पाचनः शुक्तो लवणस्तु पटुः सरः ।
 ऊषणस्तु कटुस्तीक्ष्णस्तिक्तस्तु विसरः कटुः ॥ २६ ॥
 कषायोऽस्त्री स्वप्रतिष्ठस्तुवरो मधुराङ्गकः ।
 मधुराम्लौ सलवणौ कटुतिक्तकषायकाः ॥ २७ ॥
 षट् ते मूलरसाः शेषा रसका योग्योनयः ।
 स्युः शाडववराश्रयूषाः श्रयूष आसोऽपि च क्रमात् ॥ २८ ॥
 अम्लाद्या मधुरोपेताः साम्लास्तु लवणादयः ।
 चाटसस्तीक्ष्णचो रूपः शुक्तश्च लवणेन तु ॥ २९ ॥
 युक्ता वैखारकः क्षारः स्वाद्यश्च कटुकादयः ।
 तिक्तिकः कटुतिक्ते स्यात् कुल्या कटुकषायके ॥ ३० ॥

तैलित्सस्तिककाषाय एवं पञ्चदश द्विकाः ।
 क्रमेण शोणिकः श्यावो रातपं रागशालवः ॥ ३१ ॥
 सस्वाद्वम्ला लवणाद्याः सस्वादुलवणेषु ते ।
 कटुकादिषु कट्वारो माधुरो मधुकः क्रमात् ॥ ३२ ॥
 तिक्तकषायौ सस्वादुकटू मधुमधूलिकौ ।
 स्वादुतिक्तकषाये तु मधुलोऽमी दश त्रिकाः ॥ ३३ ॥
 कट्वाद्याः साम्ललवणा बोसरः खलुषः क्रमात् ।
 कोलश्चाथो साम्लकटू कलुषत्रिखरौ क्रमात् ॥ ३४ ॥
 कषायतिक्तौ सोलस्तु शुक्ततिक्तकषायके ।
 अम्लतिक्तकषायेऽस्मिन् बालाम्लो बालचूतकः ॥ ३५ ॥
 कषायतिक्तौ सपटुकटू वेलानवेलजौ ।
 कषायतिक्तलवणेऽसोलोऽथैलारसालकः ॥ ३६ ॥
 कटुतिक्तकषाये स्यात् तदेवं विंशतिस्त्रिकाः ।
 स्वाद्वम्ललवणोपेता कट्वाद्या मधुमालकः ॥ ३७ ॥
 मधुबोलः सोरणश्च कचिदन्त्यः करोलकः ।
 सस्वाद्वम्लकटौ तिक्ते लीसुषः परुषः पुनः ॥ ३८ ॥
 कषायेऽत्रैव कलुषाकषायौ जालनः पुनः ।
 स्वाद्वम्लतिक्ततुवरे सस्वादुलवणोषणे ॥ ३९ ॥
 रसकोपशाडविकौ कषाये बलजः पुनः ।
 तिक्ते तिक्तपटुस्वादुकषाये फलसोत्थसौ ॥ ४० ॥
 सस्वादुकटुतिक्ते तु कषाये स्यात् कलापकः ।
 जलोलकः साम्लपटुकटौ तिक्ते कषायके ॥ ४१ ॥
 तुवरः स्यात् कुवेलश्च खरस्तु लवणे युते ।
 अम्लतिक्तकषायैस्तैः संयुते पलुषः कटौ ॥ ४२ ॥
 कट्वाद्यालोडकास्त्वेवं चतुष्का दश पञ्च च ।
 स्वादुमेकं विहायान्ये युक्ताः पञ्च स्युरोलकः ॥ ४३ ॥
 आलुकस्तु विहायाम्लं पटुं हित्वा पराञ्जनः ।
 ओलकः कटुकं हित्वा विना तिक्तेन चोलकः ॥ ४४ ॥
 समोलकः कषायेण षडेवं पञ्चका रसाः ।
 षट्कस्त्वेकः षड्रसः स्यात् त्रिषष्टिः स्युस्ततो रसाः ॥ ४५ ॥
 मधुराम्लादिसंज्ञाश्च शाडवादौ समुन्नयेत् ।
 न स्यात् पूर्वैरसस्याख्या परावररसाह्यात् ॥ ४६ ॥

सुरभ्यसुरभी गन्धौ विभिन्नौ तौ च योगतः ।
 बहुधा तत्र सुरभिः कटुस्तिक्तः कषायकः ॥ ४७ ॥
 समष्टिरप्यतोऽन्यो यो गन्धोऽसुरभिरित्यसौ ।
 मल्लिकायां स्थितो गन्धो मङ्गल्या मङ्गलश्च सः ॥ ४८ ॥
 जात्यां सौमनसो नागकेशरे गन्धसारणः ।
 चम्पके सुरभिः पद्मे वासनः कुटजे घुणः ॥ ४९ ॥
 कस्तूरिकायामामोदः कुङ्कुमे पलशीनकः ।
 पारिहाय्यो मरुवके पाटले तृणशोणकः ॥ ५० ॥
 चन्दने चन्द्रिकः साले शोणो गन्धिक उत्पले ।
 केतके शोणितं सर्जधूपे सरलशोणिकः ॥ ५१ ॥
 वकुले स्यात् परिमलो वलनोऽगरुधूपके ।
 सहकारे सरलिको गुग्गुलौ त्ववलोलुकः ॥ ५२ ॥
 कुन्दोपरालो मदने दुलो जम्बीर(के स्थितः) ।
 मल्ल्यां (स्थितस्तु) खवुकः कर्पूरे मुखवासनः ॥ ५३ ॥
 आज्ये समशनोऽशोके सुरवस्तिलके कुलः ।
 गात्रे गन्धो गन्धके तु गन्धिकः पित्तले लसः ॥ ५४ ॥
 गुदवायौ तु दुर्गन्धः किट्टे कोलः कफे घनः ।
 मस्त्यत्वच्यामिषो निम्बे तिक्तको गोमुखे सणिः ॥ ५५ ॥
 उद्दंशे देहलिर्गोविण्मूत्रयोर्मुकमुर्मुरौ ।
 शुक्ले मांसिर्मदे रूक्षो मूत्रिते त्वन्धमेहलः ॥ ५६ ॥
 स्नेहदोषे मेचटिको गूधे स्थालिकवैणिकौ ।
 चिक्षो यकृति पूये तु पूतिर्मूत्रे तु मेहलः ॥ ५७ ॥
 दुष्टव्रणे तु कथितो रुधिरं त्वाममांसकः ।
 गन्धशब्दास्त्वमी योज्याः साम्याद् द्रव्यान्तरेष्वपि ॥ ५८ ॥
 एते सत्यादयः शब्दाः शब्दस्पर्शादिगोचराः ।
 उक्तलिङ्गा गुणार्थास्ते सर्वेऽपि गुणिनि त्रिषु ॥ ५९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 सामान्यकाण्डे गुणाध्यायः ॥ ३ ॥

अर्थवह्निङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

गुणयुक्तं क्रियायुक्तं द्रव्ययुक्तं च वक्ति यः ।
 स शब्दो वाच्यवह्निङ्गो बालो वक्ता धनी यथा ॥ १ ॥
 बालो हिम्भोऽर्भकः शावः कुमारो दारकः शिशुः ।
 अप्युत्तानशयो वत्सः स्तनपस्तु स्तनन्धयः ॥ २ ॥
 वटुर्माणवकोऽथ स्याद् वयस्थस्तरुणो युवा ।
 जीनो जीर्णो वृद्धवयाः प्रवयाः स्थविरो जरन् ॥ ३ ॥
 वर्षीयान् दशमी ज्यायान् कनिष्ठोऽवरजोऽनुजः ।
 जघन्यजो यवीयांश्च पूर्वजे त्वग्नियोऽग्रजः ॥ ४ ॥
 पितुर्विभक्तः संसृष्टी भ्रात्रार्थेनैकतां गतः ।
 पृथ्निः किरातोऽल्पतनुर्दुर्बलस्तु कृशस्तनुः ॥ ५ ॥
 पीनस्तु पीवरः पीवा प्रबलो मांसलोऽसलः ।
 सिंहसंहननः स्वङ्गस्तुण्डिरुन्नतनाभिकः ॥ ६ ॥
 पिचण्डिलस्तूदरिलस्तुन्दिलस्तुन्दितुन्दिकौ ।
 वलिनो वलिभो बिभ्रद्वली राजीस्तु राजिलः ॥ ७ ॥
 एवं सिरालमणिलौ प्रलम्बाण्डस्तु मुष्करः ।
 केशवः केशिकः केशी रोमशो लोमशः समौ ॥ ८ ॥
 श्मश्रुलो जटिलश्चैवं दन्तुरः स्यादुदग्रदन् ।
 किरिभस्तद्विपर्यासे मिर्मिरः स्तब्धलोचनः ॥ ९ ॥
 आसीन उपविष्टः स्यादूर्ध्वङ्गस्तूर्ध्वजानुकः ।
 संङ्गुः संहतजानुः स्यात् प्रङ्गुः प्रगतजानुकः ॥ १० ॥
 विकलाङ्गस्तु पोगण्डो गङ्गुले न्युञ्जकुञ्जकौ ।
 खुरणाः स्यात् खुरणसो नःक्षुद्रः क्षुद्रनासिकः ॥ ११ ॥
 खरणाः स्यात् खरणसो विग्रो विगतनासिकः ।
 नतनासेऽवटीटः स्यादवनाटोऽप्यवभ्रटः ॥ १२ ॥
 केकरो वलिरोऽनेडमूकोऽन्धः काण एकदृक् ।
 एडस्तु बधिरः कण्व एडमूकस्त्ववाक्छ्रुतिः ॥ १३ ॥
 अनेडमूकस्तु जडो जलो मूकः कलोऽप्यवाक् ।
 पङ्गुः श्रोणे खञ्जकोलौ खोडेऽथ कुकरो कुणिः ॥ १४ ॥

शिपिविष्टस्तु दुश्चर्मा दुर्बालश्च द्विनम्रकः ।
क्षपणश्रमणौ नम्रो नम्राटश्च दिगम्बरः ॥ १५ ॥

आजीवो जीवको जैनो निर्ग्रन्थो मलवार्यपि ।
हृदयालुः सुहृदयो महेच्छस्तु महाशयः ॥ १६ ॥

प्रौढः प्रगल्भः प्रतिभायुक्तोऽन्यस्त्वपगल्भकः ।
धृष्टो धृष्णुर्विजातश्च शालीनस्तु विपर्यये ॥ १७ ॥

अधीरे कातरत्रस्तुभीरुभीरुकभीलुकाः ।
दरिते भीतचकितत्रस्ताः स्निग्धस्तु वत्सलः ॥ १८ ॥

प्रवीणोऽभिजनोऽभिज्ञो विज्ञो वैज्ञानिकः कृती ।
कृतकृत्यः कृतमुखो निष्णातो दक्षशिक्षितौ ॥ १९ ॥

अग्राम्ये सरलोदारविदग्धच्छेकदक्षिणाः ।
गर्विते स्तब्ध उद्वीवो बाहो धीरः स इत्यपि ॥ २० ॥

मूर्खे त्वनेडो देवानांप्रियो यो नामवर्जितः ।
अपि वैधेयमूढाज्ञा मातृशिष्टयथोद्गतौ ॥ २१ ॥

नीचे तु हीनापशदपामरेतरबबेराः ।
नैकृतः स्यान्नैकृतिकः शठः कौन्तृतिकोऽनृजुः ॥ २२ ॥

कुहकः स्यात् कापटिको दाण्डाजिनिकजालिकौ ।
ढौण्डुको ढण्डुकश्चाथ कोलाकोऽर्यरतः सदा ॥ २३ ॥

क्रूरो नृशंशोऽप्यदये धूर्ते व्यसकवञ्चकौ ।
कौक्कुटो मायिको मायी मायावी प्रातिहारिकः ॥ २४ ॥

ना दुर्जनः खले कर्णेजपः पिशुनसूचकौ ।
कद्वदः कुत्सितोऽत्यर्थं परिभोक्ता गुरुस्वभृत् ॥ २५ ॥

नीलीरागः स्थिरप्रेमा हरिद्रारागकः पुनः ।
अस्थिरप्रेम्णि गोष्ठश्वः पुनः स्थाने स्थितो द्विषन् ॥ २६ ॥

अन्वेष्टा स्यादनुपदी चिद्रूपस्तु सुमानसः ।
स्वच्छन्दोऽपावृतः स्वैरी स्वतन्त्रो निरवग्रहः ॥ २७ ॥

परच्छन्दः पराधीनः परवान् परतन्त्रकः ।
निम्नः प्रसव्य आयत्तो विधेयो गृह्यको वशः ॥ २८ ॥

अहंयुः स्यादहङ्कारी शुभंयुस्तु शुभान्वितः ।
सूक्ष्मदर्शी कुशाग्रीयधीर्विलक्षः सविस्मयः ॥ २९ ॥

यद्भविष्यो दैवपरो यद्वदः स्यादनुत्तरः ।
परीक्षकः कारणिक उद्युक्ते प्रसितोऽसुकौ ॥ ३० ॥

अन्तर्वाणिः शास्त्रवित् स्यादविनीतः समुद्धतः ।
 प्रत्युत्पन्नमतिस्तु स्यात् तत्कालोत्पन्नधीर्नरः ॥ ३१ ॥
 प्रणयः प्रश्रितो वश्यो विधेयो निभृतो यतः ।
 क्रोधनः कोपनोऽमर्षी चण्डस्तु भृशकोपनः ॥ ३२ ॥
 सहिष्णुः सहनः सोढा तितिक्षुः क्षमिता क्षमी ।
 हर्षमाणो विक्रुर्वाणः प्रमना मुदितः समुत् ॥ ३३ ॥
 दुर्मना विमना अन्तर्मनाः स्यादुत्क उन्मनाः ।
 दोषदर्शी पुरोभागी कमनः कामनोऽनुकः ॥ ३४ ॥
 कामुकः कमिताऽभीकः कम्प्रः कमयिताऽभिकः ।
 वृष्णक् तु गर्धनो गृध्नुर्लिप्सुर्लुब्धोऽभिलाषुकः ॥ ३५ ॥
 लोलुपे लोलुभो लोलो लम्पटो लालसोऽपि च ।
 बुभुक्षुः क्षुधितः श्रान्तो जिघत्सुरशनायितः ॥ ३६ ॥
 पिपासितस्तु वृषितः पिपासुस्तपितः सवृट् ।
 मत्ते शौण्डोत्कटक्षीबा श्राद्धः श्रद्धालुरास्तिकः ॥ ३७ ॥
 नास्तिकस्तद्विपर्यसे गृह्यालुर्ग्रहीतरि ।
 संशयालुस्तु सन्देग्धा पतयालुस्तु पातुकः ॥ ३८ ॥
 दयालुः स्यात् कारुणिकोऽनुकम्प्यः कारुणः समौ ।
 स्वप्नक् शयालुर्निद्रालुर्निद्राणः शयितः समाः ॥ ३९ ॥
 लज्जाशीलोऽपत्रपिष्णुर्वर्तिष्णुर्वर्तनः समौ ।
 निराकरिष्णुः क्षिप्नुः स्याद् वर्धिष्णुर्वर्धनः समौ ॥ ४० ॥
 उन्मदिष्णुस्तु सोन्मादोऽलङ्कारिष्णुस्तु मण्डनः ।
 भूष्णुर्भविष्णुर्भविता प्रजनिष्णुस्तु भावुकः ॥ ४१ ॥
 उत्पतिष्णुस्तूत्पतिता रोचिष्णू रोचनः समौ ।
 स्थास्नुस्तु स्थायुकः स्थायी शरारुहिस्त्रघातुकौ ॥ ४२ ॥
 वेदिता विदुरो विन्दुः सान्द्रः स्निग्धस्तु मेदुरः ।
 आशंसुराशंसितरि वन्दारुरभिवादकः ॥ ४३ ॥
 जागरूको जागरिता श्लक्ष्णवाक् तु प्रियंवदः ।
 शक्नो मधुरवाक् चाथ रूक्षो लूक्षो विपर्यये ॥ ४४ ॥
 वदो वदावदो वक्ता वागीशो वक्त्रपतिः समौ ।
 वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी वावदूकश्च दक्षवाक् ॥ ४५ ॥
 जल्पाकस्त्वपि वाचालो वाचाटो बहुगर्हवाक् ।
 मुखरो दुर्मुखोऽबद्धमुखो मातृमुखोऽपि च ॥ ४६ ॥

कद्वदो गहर्वादी स्याल्लोहलोऽस्फुटभाषणः ।
 अधरो दीनवादी स्यात् सम्मुखः प्रतिभातवाक् ॥ ४७ ॥
 नालीकरस्तु नालीकवाक् स्वनोऽशोभनस्वरः ।
 कुवदे कुचरः शब्दकारे रवणशब्दनौ ॥ ४८ ॥
 व्युत्पन्नः प्रहतः क्षुण्णो वचनेस्थित आश्रवः ।
 परान्नः परपिण्डादः परजातपरैधितौ ॥ ४९ ॥
 सर्वात्रीनः सर्वभक्ष आमिषादी तु शौलिकः ।
 आत्मम्भरिः कुक्षिम्भरिर्भक्षको घस्मरोऽद्धारः ॥ ५० ॥
 आद्यूनः स्यादौदरिको विमुक्तो विजिगीषया ।
 ह्रीणो ह्रीतो लज्जितः स्यादन्वेष्टा तीक्ष्णसाधनैः ॥ ५१ ॥
 अद्रुते धीरविस्मन्धावुत्तालः कर्मणि द्रुतः ।
 कुटुम्बव्यापृते तु द्वावभ्यागारिक उत्थितः ॥ ५२ ॥
 दीर्घदृष्टिस्तु यो दूरादर्थानर्थौ निरीक्षते ।
 आमुष्यायण उत्पन्नः प्रख्यातकुलतः पितुः ॥ ५३ ॥
 वैरङ्गिको विरागार्ह उत्पश्यः पुनरुन्मुखः ।
 चतुरः पेशलो दक्षः सूत्थानः पटुरुष्णकः ॥ ५४ ॥
 मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसः ।
 क्षेमङ्करोऽरिष्टतातिः शिवतातिः शिवङ्करः ॥ ५५ ॥
 लक्ष्मीवान् लक्ष्मणः श्रीलो महामात्रोऽधिकर्धिकः ।
 उदारोदीर्णधन्यास्तु महात्मा सुकुतीति च ॥ ५६ ॥
 समृद्धः स्यादुपचितो धनवानस्तिमान् समौ ।
 आढ्यस्त्विभ्यो धनी नेता त्वीश्वरो नायकः प्रभुः ॥ ५७ ॥
 अधिभूरधिपोऽधीश ईशिताऽधिपतिः पतिः ।
 ईशः परिवृढः स्वामी स्थूललक्षो बहुव्यये ॥ ५८ ॥
 कदर्ये कृपणक्षुद्रकिम्पचानमितम्पचाः ।
 आशयश्चाप्यदाता च दरिद्रे स्यादकिञ्चनः ॥ ५९ ॥
 अपि दुस्स्थक्रूरदीननीचदुर्गतदुर्विधाः ।
 मार्गणः स्याद् याचनको याचकोऽर्थी वनीपकः ॥ ६० ॥
 आर्यः कौलेयको जात्यः कुलीनः कुलजोऽभिजः ।
 जगत्त्रसचरप्राणमिषदिङ्गञ्च जङ्गमम् ॥ ६१ ॥
 स्थावरं तस्थिवच्चान्यदुभयं तु चराचरम् ।
 वा क्ली प्रधानं प्रमुखप्रबर्हप्रवरोत्तमाः ॥ ६२ ॥

मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवेकोऽनपराध्यवत् ।
 श्रेष्ठः प्राग्रहरं प्राग्रमग्रमग्रीयमग्रियम् ॥ ६३ ॥
 परार्थ्यं ग्रामणीः स्पर्ध्यं जात्यं च वरमग्रणीः ।
 उपाग्रस्तु गुणः पुंसि क्लीवे स्यादुपसर्जनम् ॥ ६४ ॥
 तत्तु स्यादासेचनकं न तृप्तिर्यस्य दर्शनात् ।
 पवित्रं प्रयतं पूतं मेध्यं शुद्धं शुचीति च ॥ ६५ ॥
 निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निश्शोध्यमनवस्करम् ।
 विमले वीद्भ्रं मलिने द्वौ कच्चरमलीमसौ ॥ ६६ ॥
 आत्तगन्धोऽभिभूतः स्याद् बद्धे कीलितसंयतौ ।
 आक्षिप्तो हतकः क्षिप्तो विह्वलो विह्वलः समौ ॥ ६७ ॥
 विहस्तो व्याकुलो व्यग्रश्चले सङ्कुसुकोऽस्थिरः ।
 व्यसनार्तस्तूपरक्त आततायी वधोद्यतः ॥ ६८ ॥
 शत्रूणां तापयितरि द्विषन्तपपरन्तपौ ।
 द्वेष्ट्यस्त्वक्षिगतोऽनिष्टो दुर्मगोऽपि च विप्रिये ॥ ६९ ॥
 चक्षुष्यः सुभगः कान्तो दयितो वल्लभः प्रियः ।
 गेहेनर्दी गृहेशूरः पिण्डीशूरो गृहे प्रभुः ॥ ७० ॥
 वध्यो विष्यो विषेण स्यान्मुसल्यो मुसलेन च ।
 निष्कासितोऽपकृष्टः स्यादपध्वस्तस्तु धिक्कृतः ॥ ७१ ॥
 कर्मक्षमोऽलङ्कर्मिणः कर्मशूरस्तु कर्मठः ।
 कर्मस्तु कर्मशीलः स्याद्दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः ॥ ७२ ॥
 कर्मण्यकृत् कर्मकरः कर्मकारस्तु तत्क्रियः ।
 निर्वार्यः कार्यकृद्यः स्याद्युक्तः सन् सत्त्वसम्पदा ॥ ७३ ॥
 क्रियावान् कर्मवान् कर्मी कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ।
 स आयश्शूलिको यः स्यादन्वेष्टा तीक्ष्णसाधनैः ॥ ७४ ॥
 गर्ह्योऽपकृष्टचेलावरेफयाप्याधमावमाः ।
 प्रतिकृष्टावद्यखेटनिकृष्टाणककुत्सिताः ॥ ७५ ॥
 जघन्यं तु कुपूयं स्यादसारं लघु फल्गु च ।
 पुंस्यादिराद्यपौरस्त्यप्रथमप्रमुखादिमाः ॥ ७६ ॥
 अग्र्यं त्वग्रिममग्रस्थं मध्यमीयं तु मध्यमम् ।
 अन्त्ये जघन्यपाश्चात्यचरमान्तिमपश्चिमाः ॥ ७७ ॥
 करम्बः कम्बरो मिश्रः सम्पृक्तः खचितः समाः ।
 चलाचलं तु प्रचलं चपलं चञ्चलं चलम् ॥ ७८ ॥

चिकुरं चटुलं कम्प्रं पारिप्लवपरिप्लवौ ।
 स्थास्नवेकरूपं कूटस्थं स्थेयान् स्थेष्टोऽप्यतिस्थिरे ॥ ७६ ॥
 विशालमुरुं विस्तीर्णं विपुलं पृथुलं पृथु ।
 स्फारं भद्रं बृहद् व्यूढमुदूढं बहुलं बहु ॥ ८० ॥
 प्रांश्चमुन्नतं तुङ्गमुदग्रं तूच्छिताग्रकम् ।
 न्यङ्नीचह्रस्वखर्वास्तु वामने दीर्घमायते ॥ ८१ ॥
 विशालं विकरालं स्याद् विकटं च विशङ्कटम् ।
 वर्तुलं निस्तलं वृत्तं सुवृत्तं परिमण्डलम् ॥ ८२ ॥
 चिपिटः पिच्छितो व्यूढे स्थपुटं विषमोन्नतम् ।
 आनतं तु नतं नम्रं बन्धुरं तून्नतानतम् ॥ ८३ ॥
 क्षीणं क्षामं विलिष्टं स्यात् स्थूलं तु बहलं दृढम् ।
 प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यं बहलं बहुलं बहु ॥ ८४ ॥
 अदभ्रमधिकं भूरि भूयिष्ठं पुरुहं पुरु ।
 समग्रं सकलं सर्वं समस्तं निखिलाखिले ॥ ८५ ॥
 अखण्डकृत्स्ननिशेषपूर्णविश्वसमानि च ।
 खण्डनेमोनविकलाः पूर्णे भरितपूरितौ ॥ ८६ ॥
 सम्पूर्णश्चाथ वशिकं शून्यं तुच्छं च रिक्तकम् ।
 पुराणे प्राक्तनप्रत्नपुरातनचिरन्तनाः ॥ ८७ ॥
 नूत्ने त्वभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ।
 शाश्वते त्वमृतो नित्यः सनातनसदातनौ ॥ ८८ ॥
 सद्यस्तने तु साद्यस्कप्रत्यग्राभ्यग्रशारदाः ।
 ह्यस्तनश्चस्तनाद्याः स्युर्ह्यआदिस्थेषु वस्तुषु ॥ ८९ ॥
 कालवाच्यव्ययेभ्यः स्यादन्येभ्योऽपि तथा तनः ।
 न्यक् स्यादधोमुखं न्युब्जमुदुब्जोत्तानमुन्मुखे ॥ ९० ॥
 उदक् प्रत्यक् परागर्वाक् प्राक् च तिर्यग्वागपाक् ।
 विष्वक् चैवमुदीचीनप्रमुखाः स्युर्यथाक्रमम् ॥ ९१ ॥
 दिग्देशकालवचनमुदगादिकमव्ययम् ।
 दिग्देशकालसम्बन्धिपदार्थेष्वभिधेयवत् ॥ ९२ ॥
 यः सहाञ्चति सध्रचङ् स विष्वद्रचङ् विष्वगञ्चति ।
 देवानञ्चति देवद्रचङ् सधीचीनादि चोन्नयेत् ॥ ९३ ॥
 अविलम्बितमुच्चण्डं संशितं तु सुतेजितम् ।
 उत्पिब्जलं समुत्पिब्जमिति द्वे भृशमाकुले ॥ ९४ ॥

अनाहते त्ववज्ञातमवतीर्णापहस्तितम् ।
 चलितप्रेङ्खिताधूतवेङ्खिताकम्पिता धुते ॥ ६५ ॥
 रुचिते हृद्यलषितवाञ्छितेष्टेडितेहिताः ।
 संवीतं स्याद् वलयितं वेष्टितं रुद्धमावृतम् ॥ ६६ ॥
 नुन्नास्तनुत्तप्रहितक्षिप्तविद्धाः स्युरीरिते ।
 बद्धे सन्नाहितं नद्धं मुद्रितं सन्दितां सितम् ॥ ६७ ॥
 सन्तापितं धूपायितं दूनं तप्तञ्च धूपिते ।
 मार्गिते मृगितान्विष्टावन्वेषितगवेषितौ ॥ ६८ ॥
 लब्धाप्तासादितप्राप्तभूतविन्नास्तु भाविते ।
 प्रयत्ने मुदितप्रीतहृष्टाः सुहितवृत्तवत् ॥ ६९ ॥
 आबर्हिते तूद्वृद्धितोन्मूलितोत्पाटितोदधृताः ।
 उतगोपायितत्रातत्राणगुप्तास्तु रक्षिते ॥ १०० ॥
 मनिता विदितज्ञातौ बुधिते बोधबुद्धवत् ।
 त्यक्ते तु विधुतोत्सृष्टहीनधूतसमुष्मिताः ॥ १०१ ॥
 कृते लूनच्छिन्नदातवृक्कणच्छातच्छितार्दिताः ।
 स्रस्ते भ्रष्टध्वस्तपन्नगलितस्कन्नविच्युताः ॥ १०२ ॥
 प्रेङ्खोलितं तरलितं लुलितं प्रेङ्खितं च तत् ।
 भजमाने प्राप्तयुक्तन्याय्यान्यौपयिकोचिते ॥ १०३ ॥
 न्यस्ते त्वारोपितोऽध्यस्तो निहितोऽपहितो हितः ।
 उपसन्नं तूपनतमुपप्राप्तमुपस्थितम् ॥ १०४ ॥
 शुश्रूषितं परिवसितमुपासितञ्च वरिवसितञ्च समम् ।
 अपचायितं नमसितं नमस्यितं सममपचितञ्च ॥ १०५ ॥
 पणितपणायितपनिताः पनाथितस्तुतनुतेडिताः शस्ते ।
 वर्णितगीर्णौ च तथा सङ्गीर्णौपश्रुतौ प्रतिज्ञाते ॥ १०६ ॥
 उन्नोत्ततिमितक्लिन्नस्नपितार्द्राणि सार्द्रवत् ।
 स्युः प्रत्यवसिते प्सातजग्धान्नाशितखादिताः ॥ १०७ ॥
 प्रस्तग्लस्ताभ्यवहृतमुक्तभक्षितजक्षिताः ।
 परिक्षिप्तं तु निवृतं निदिग्धोपचितौ समौ ॥ १०८ ॥
 प्राप्ते प्रणिहितापन्नौ विस्मृतोऽन्तर्गतेऽस्मृते ।
 सङ्गूढं स्यात् सङ्कलितं स्यन्नं रीणं सुतं स्नुतम् ॥ १०९ ॥
 अवरीणो धिक्कृतः स्याद् दृग्धे प्रथितमुद्रितौ ।
 सङ्कीर्णे सङ्कुलाकीर्णौ विस्वृते विस्वृतं ततम् ॥ ११० ॥

सिद्धे निर्वृत्तनिष्पन्नौ भिन्ने भेदितदारितौ ।
 वेधितच्छिद्रतौ विद्धे तष्टत्वष्टौ तनूकृते ॥ १११ ॥
 उतं स्यूतमुतं तन्तुसन्तते प्रार्थितेऽर्दितम् ।
 उद्धृतं समुदस्तं स्यान्मर्मस्पृक् स्यादरुन्तुदम् ॥ ११२ ॥
 गुण्डितं रूषिते क्लिष्टे क्लेशितं पूजितेऽञ्चितम् ।
 ज्ञप्तं तु ज्ञापिते हन्नं गूने मीढं तु मूत्रिते ॥ ११३ ॥
 पुषिते पुष्टमुद्गूर्णोद्यत(यत्ताः प्रयत्नवान्) ।
 दमिते दान्तं शमिते शान्तमुद्धान्तमुद्रते ॥ ११४ ॥
 पन्नं प्रपतिते सन्नं लिष्टे तुन्नं तु पीडिते ।
 निष्पक्वे कथितं सोढे क्षान्तं निचितमाचिते ॥ ११५ ॥
 मुषिते लुण्ठितं यस्ते निस्त्रुष्टं वृद्धमेधिते ।
 काचितं शिष्यिते दिश्यं दिग्भवेऽभ्रभवेऽभ्रिथम् ॥ ११६ ॥
 यज्ञियं यज्ञकर्माहं चक्षुष्यं चक्षुषे हितम् ।
 तत्तद्वात्रभवे दन्त्वं हस्त्यमोष्ठ्यमितीदृशाः ॥ ११७ ॥
 पुंसः पौंसं स्त्रियाः स्त्रौणमग्नेराग्नेयमित्यपि ।
 दण्डवान् दण्डिको दण्डीत्येवं नेयमदन्ततः ॥ ११८ ॥
 ब्रीहिणो ब्रीहिमन्तः स्युर्यवमन्तो यवान्विताः ।
 निर्जने स्थान एकान्तं विविक्तं विजनं तथा ॥ ११९ ॥
 छन्नं गुह्यं निश्शलाकं रहः क्लीबोऽथवाऽव्ययम् ।
 गुह्यं रहस्यमित्येतावप्रकाश्येऽपि वस्तुनि ॥ १२० ॥
 समं समानं सविधं सदृक्षं सदृशं सदृक् ।
 तुल्यं सवर्णं शब्देभ्यः परे स्युः प्रतिमा प्रभा ॥ १२१ ॥
 आभा प्रख्योपमाभिख्या प्रकारः सन्निभं निभम् ।
 निकाशाद्याश्च साम्यार्थाः समे स्युः शब्दतः पराः ॥ १२२ ॥
 परस्परं स्यादन्योन्यमितरेतरमित्यपि ।
 वक्रं वृजिनमाविद्धमूर्ध्निमत् कुञ्चितं नतम् ॥ १२३ ॥
 अरालं कुटिलं भुग्नमवक्रे प्रगुणोऽप्यजुः ।
 सत्वरं त्वरितं तूर्णमरं क्षिप्रं लघु द्रुतम् ॥ १२४ ॥
 अजिरं चपलं शीघ्रमविलम्बितमाशु च ।
 विरलं तनु विश्लिष्टमघनं तलिनं तथा ॥ १२५ ॥

निबिडं निबिरीसं स्याद् घनं सान्द्रं निरन्तरम् ।
 विकटं तु विरूपं स्यात् सम्बाधः सङ्कटः समौ ॥ १२६ ॥
 प्रतीपं प्रतिकूलं स्यादनुकूलं विपर्यये ।
 अनुलोममनूचीनं प्रतिलोमं विपर्यये ॥ १२७ ॥
 अव्ययीभावोऽनुपदमन्वगन्वक्षमित्यपि ।
 एकसर्गोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनैकगम् ॥ १२८ ॥
 अप्येकतान एकान्तोऽप्येकायनगतोऽपि च ।
 साधारणं तु सामान्यं मोघं व्यर्थमपार्थकम् ॥ १२९ ॥
 नित्यानवरताजस्रसतताश्रान्तसन्तताः ।
 अनारतं चाविरतमसक्तं चानिशं नपुम् ॥ १३० ॥
 अतिमात्रेऽतिमर्याद मतिवेलातिमानकम् ।
 भृशमत्यन्तमत्यर्थमधिकोद्गाढनिर्भरम् ॥ १३१ ॥
 तीव्रं तु गाढमेकान्तं नितान्तं दृढबाढवत् ।
 वशेऽनर्गलमुद्दाममुच्छृङ्खलमयन्त्रितम् ॥ १३२ ॥
 परोक्षेऽतीन्द्रियोऽध्यक्षप्रत्यक्षौ तु समक्षवत् ।
 सकाशं स्यात् सन्निहिते समन्तं तु समन्तिकम् ॥ १३३ ॥
 प्रकाशं प्रकटं स्पष्टमूलबणं विशदं स्फुटम् ।
 सुन्दरं रुचिरं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ॥ १३४ ॥
 शोभनं सुषमं चारु हृद्यं चौक्षं मनोहरम् ।
 न्युङ्क्तं हारि प्रियं साधु लडहं च मनोरमम् ॥ १३५ ॥
 अल्पं सूक्ष्ममणु स्तोकं दहं दहरमर्हकम् ।
 किञ्चिन्मात्रं मितं दध्नं श्लक्ष्णं तनु च पेलवम् ॥ १३६ ॥
 अतिरिक्तोऽतिशयितो दृढः समधिकोऽधिकम् ।
 चतुरं पेशलं दक्षं कटु तूलबणमुत्कटम् ॥ १३७ ॥
 विशेषणं क्रियाया स्युः समाद्याः क्ली च तद्यथा ।
 पुत्रं धत्ते सममिति नित्याद्यास्तु गुणस्य च ॥ १३८ ॥
 नित्यं धत्ते सितो नित्यमिति द्रव्ये पुनस्त्रिषु ।
 उभयेऽपि यथा धत्ते समो नित्योऽर्थवानिति ॥ १३९ ॥

प्रथमं चरमं पूर्वमित्याद्यप्येवमुन्नयेत् ।
 समीपनिकटाभ्यग्राभ्यर्णाभ्याशान्तिमा इव ॥ १४० ॥
 सदेशसविधासन्नसन्निकृष्टसवेशवत् ।
 उपकण्ठसमर्यादसवेधानि सनीडकम् ॥ १४१ ॥
 उपान्ते विप्रकृष्टे तु दूरं व्यवहितं परम् ।
 भासुरं भविकं भव्यं कल्याणं श्रवणीयसम् ॥ १४२ ॥
 श्वश्रेयसं शिवं भद्रं कुशलं सूनृतं शुभम् ।
 श्रेयश्चैते समीपाद्या धर्मे क्ली तद्वति त्रिषु ॥ १४३ ॥
 सुखं दुःखं मलं छिद्रं किलासं सिध्ममर्मरौ ।
 रभसः पलितं श्वित्रमेतेऽपि त्रिषु धर्मिणि ॥ १४४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां सामान्यकाण्डे

अर्थवलिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

पञ्चमः सामान्यकाण्डः समाप्तः ॥ ५ ॥

६. अथ द्यक्षरकाण्डः

पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अथ काण्डैरनेकार्थाः प्रोच्यन्तेऽत्र परैस्त्रिभिः ।
 द्व्यक्षरास्त्र्यक्षराः शेषा इति काण्डेषु ते क्रमात् ॥ १ ॥
 अकारादिहकारान्तं नाम्नामाद्यक्षरक्रमात् ।
 संग्रहो द्व्यक्षरादीनां प्रोक्तान् प्रायो विना पुरा ॥ २ ॥
 अर्थः स्याद्विषये मोक्षे शब्दवाच्ये प्रयोजने ।
 व्यवहारे धने शास्त्रे वस्तुहेतुनिवृत्तिषु ॥ ३ ॥
 अर्कोऽर्कपणे स्फटिके ज्येष्ठभ्रातरि भास्वति ।
 अवयः शैलमेषार्का अद्रयोऽर्कगिरिद्रुमाः ॥ ४ ॥
 अट्टावतिशयक्षौमावधौ पूजाप्रतिक्रयौ ।
 अर्याः शास्त्रस्वामिवैश्याः सर्पे वृत्रासुरेऽप्यहिः ॥ ५ ॥
 अंशुः सूत्रादिसूक्ष्मांशेऽप्यङ्कश्चिह्नेऽन्तिकोरसोः ।
 आत्मा जीवे धृतौ देहे स्वभावे परमात्मनि ॥ ६ ॥
 यत्नेऽर्केऽग्नौ मतौ वातेऽप्याखू सूकरमूषिकौ ।
 आधिस्तु व्यसने चित्तदुःखेऽधिष्ठानबन्धयोः ॥ ७ ॥
 इन्द्रो विषात्मशक्रार्केष्वीश्वरे नामतः परः ।
 इष्वोऽभिलाष आचार्य ऊमो व्योम्नि पुरेऽपि च ॥ ८ ॥
 ग्रीष्मोष्णबाष्पा ऊष्माण ऊर्जावुत्साहकार्तिकौ ।
 ऋषिस्तु वेदे भृगवादौ ज्ञानवृद्धे दिगम्बरे ॥ ९ ॥
 ओघः परम्परायां स्याज्जलस्रोतसि सञ्जये ।
 करो घनोपले हस्ते प्रत्याये रश्मिशुण्डयोः ॥ १० ॥
 दातुं भूषितकन्यायां कूपो गर्ते प्रहावपि ।
 क्षणो व्यापारवैकल्ये कालभेदाल्पकालयोः ॥ ११ ॥
 उत्सवे परतन्त्रत्वे मध्यावसरपर्वसु ।
 कन्तू कुसूलकन्दपौ प्राज्ञकाव्यकृतौ कवी ॥ १२ ॥

कण्ठो गलेऽन्तिके शब्दे कपयोऽर्केभवानराः ।
 गुडभस्मरसाः क्षाराः क्षोदो रजसि पेषणे ॥ १३ ॥
 क्रतू अध्वरसङ्कल्पौ कल्पान्तेऽपचये क्षयः ।
 कुक्षौ वासे च कच्छस्तु पार्श्वे गुह्याम्बरे तटे ॥ १४ ॥
 कारुस्तु विश्वकर्मापि धान्यांशे शीकरे कणः ।
 कालो दिष्टे यमे काचो मृद्भेदे शिष्यदृष्टजोः ॥ १५ ॥
 उत्पातेऽङ्के ध्वजे केतुः क्लेदौषधिशशाङ्कयोः ।
 कोणाः शब्दाश्रितगुडा कल्पो न्याये सुरद्रुमे ॥ १६ ॥
 विकल्पेऽपि च कक्षस्तु गुल्मे स्पर्धापदे तृणे ।
 काम्यस्पृहास्मराः कामाः कलहेऽन्त्ययुगे कलिः ॥ १७ ॥
 कुम्भो गजशिरोऽन्तेऽपि पक्ष्यर्केष्वनिलाः खगाः ।
 खरुः पुंस्मररुद्रेषु गर्मुद्रुक्मे खगे रवौ ॥ १८ ॥
 गणाः प्रमथसङ्घयौघाः प्रावाणौ पर्वतोपलौ ।
 तन्तुनागाग्रहौ ग्राहौ गुल्मो व्यूढा च वाहिनी ॥ १९ ॥
 गण्डो गर्वेऽप्यथार्कादिसत्त्वादानाग्रहा ग्रहाः ।
 गुणस्त्वावृत्तिशब्दादिष्येन्द्रियामुख्यतन्तुपु ॥ २० ॥
 ग्रन्थो द्रव्यं वचश्शास्त्रं द्वात्रिंशद्वर्णसञ्चयः ।
 गर्भोऽपवरकेऽन्नेऽग्नौ सुते पनसकण्टके ॥ २१ ॥
 कुक्षौ कुक्षिस्थजन्तौ च गन्धो लेशो महीगुणे ।
 घृणिर्ज्वालांशुवीचीषु चरुः स्थाल्यां हविष्यपि ॥ २२ ॥
 चटुश्चाटुश्च राजादिस्तुतौ पशुपिचिण्डके ।
 चक्री विष्णौ कुलालेऽहौ च्युपौ पवनसङ्क्रमौ ॥ २३ ॥
 वशाभिप्राययोश्छन्दो जूर्णी रविहविर्भुजौ ।
 टङ्कौ प्रमाणगवौ च डिम्बः प्लीहखगाण्डयोः ॥ २४ ॥
 तर्काः काङ्क्षावितर्कोहास्त्वष्टा तद्दिण द्युशिल्पिनि ।
 मणिदोषे भये त्रासस्तिष्यः पुष्ये कलौ युगे ॥ २५ ॥
 द्वारपाले यमे दण्डी दन्तोऽद्रिकटके रदे ।
 दायो दाने यौतकादिधने वित्ते च पैतृके ॥ २६ ॥
 दवदावौ बनारण्यवह्नयोः खगार्कयोर्द्युवा ।
 धवो वृद्धे नरे पत्यौ ध्वाङ्कः स्याद् वायसे बके ॥ २७ ॥
 धातुर्वातादिशब्दादिगैरिकादित्वगादिषु ।
 महाभूतेष्विन्द्रियेषु शब्दयोनिस्वभावयोः ॥ २८ ॥

लोहेऽर्थे गैरिकस्वर्णरेतोऽस्थिषु विशेषतः ।
 नरोऽर्जुने मनुष्ये च नाकः स्वर्गान्तरिक्षयोः ॥ २६ ॥
 ग्राहाभ्राहिगजा नागा नाभिः क्षत्रे महानृपे ।
 न्यङ्कुर्गुरुकुलेवासी शिष्यो मुनिमृगावपि ॥ ३० ॥
 नाशः पलायने मृत्यौ परिध्वंसेऽप्यदर्शने ।
 नग्ना वैतालिकाद्याश्च पिण्डो वृत्ते तनौ गुडे ॥ ३१ ॥
 पीयुः काल उल्लेके च पीलुः काण्डे गजे द्रुमे ।
 पुष्टाः कृमीक्षुतिलकाः पत्री श्येने शरे खगे ॥ ३२ ॥
 प्रेषणे मर्दने प्रैषः पुङ्खः श्वेतशराङ्गयोः ।
 पवी वातास्त्रधारे च पाकपोतौ शिशावपि ॥ ३३ ॥
 पट्टो नेत्रेऽपि शाणे स्यात् पिण्डः कल्केऽपि तैलजे ।
 पणो मूल्ये ग्लहे माने कार्षिकव्यवहारयोः ॥ ३४ ॥
 द्यूते विक्रय्यशाकादिबद्धमुष्टौ भृतौ धने ।
 पक्षः पार्श्वगरुत्साध्यसहायबलभित्तिषु ॥ ३५ ॥
 पार्श्वद्वारे विरोधेऽर्धमासे चुल्लिबिलेऽन्तिके ।
 प्रायो वयसि बाहुल्ये तुल्यानशनमृत्युषु ॥ ३६ ॥
 पाशो रञ्जौ कर्णशब्दात् परः कर्णेऽतिशोभने ।
 क्रमनिम्नमहीभागकपिप्लुतिखगाः प्लवाः ॥ ३७ ॥
 प्राणस्तु प्रणवे जीवे जीविते परमात्मनि ।
 इन्द्रिये वायुभेदे च बलान्तर्यामिणोरपि ॥ ३८ ॥
 श्वेतार्के ङाडिमे फालो बन्धाः सीसाधियन्त्राः ।
 बलिः पूजोपहारे च दैत्यभेदे करेऽपि च ॥ ३९ ॥
 बाष्पोऽश्रण्यम्बुधूमे च भानवोऽर्कहरांशवः ।
 भ्रूणोऽर्भके लोणगर्भे गर्भिण्यां श्रोत्रियद्विजे ॥ ४० ॥
 भवो भद्रे हरे प्राप्ता सत्तासंसारजन्मसु ।
 भागा भाग्यांशुर्योशा भरभारौ गरिम्ण्यपि ॥ ४१ ॥
 भरवीवधयोश्चान्त्यौ भूरुष्टौ वैश्यमानवौ ।
 विश्लेषे दारणे भेदो भेनः सूर्ये निशाकरे ॥ ४२ ॥
 भावो लीलाक्रियाचेष्टाभूत्यभिप्रायजन्तुषु ।
 पदार्थमात्रे सत्तायामात्मयोनिस्वभावयोः ॥ ४३ ॥
 भोगो राज्ये धने सौख्ये पालनाभ्यवहारयोः ।
 फणे देहे च सर्पस्य वेश्यादीनां भृतावपि ॥ ४४ ॥

मन्त्रावृगादिगुह्योक्ती मन्युर्दैन्येऽध्वरे क्रुधि ।
 मर्को मनसि वायौ च मोहाः कुन्मौख्यमृढताः ॥ ४५ ॥
 मार्गो मृगपदे मासि सौम्यर्क्षेऽन्वेषणेऽध्वनि ।
 मूत आतञ्जने व्रीहौ व्रीह्यादेर्वन्धने तृणैः ॥ ४६ ॥
 मृगस्तु मृगशीर्षेऽपि मोक्षो मृत्यौ मरुद्गिरौ ।
 यन्ता हस्तिपके सूते यक्षोऽग्न्यात्महरीष्टिषु ॥ ४७ ॥
 ययुरश्वेऽश्वमेधाश्वे योगो विस्रब्धघातिनि ।
 प्राप्तौ सन्नहनोपायध्यानसङ्गतिर्युक्तिषु ॥ ४८ ॥
 रसो राने विषे वीर्ये तिक्तादौ पारदे द्रवे ।
 रेतस्यास्वादने हेम्नि निर्यासेऽमृतशब्दयोः ॥ ४९ ॥
 रश्मी ज्वालाग्रग्रहौ च रदो दन्तविलेखयोः ।
 राजा तु क्षत्रिये चन्द्रे लताभेदे नृपे प्रभौ ॥ ५० ॥
 रागोऽनुरागे लाक्षादौ त्विषि राकस्तु पूष्णि च ।
 रङ्गौ तु स्थानरागौ च भूप्रदेशे मृगे लिङ्गः ॥ ५१ ॥
 भोजने लेपने लेपो लोकः स्याद् विष्टपे जने ।
 वंशः पृष्ठास्त्रि गेहोर्ध्वकाष्ठे वेणौ गणे कुले ॥ ५२ ॥
 नासोर्ध्वास्त्रीक्षुभेदे च वहिरुद्दिण हयेऽनले ।
 वलो धान्येऽसुरे काके गवां श्वासेऽनिले वहः ॥ ५३ ॥
 वेणू वेदसहस्रांशू गोष्ठाध्वनिवहा व्रजाः ।
 वालौ पुच्छाश्वपुच्छौ च व्याजश्छद्वापदेशयोः ॥ ५४ ॥
 विधी तु दैवकालौ च वाजी त्वश्वे शरे खगे ।
 विधुर्निशाकरे काले विष्णौ वातेऽग्निरक्षसोः ॥ ५५ ॥
 वृन्दविन्यासयोर्व्यूहो वृषोऽप्यग्रये पुमिन्द्रयोः ।
 वृत्राः शत्रुतमोदैत्या वेगः किम्पाकरंहसोः ॥ ५६ ॥
 वेधसो विष्णुधातृज्ञाः शादः कर्दमशष्पयोः ।
 शम्भुर्धातृहरार्हस्तु शक्रः कुटजवज्रिणोः ॥ ५७ ॥
 शम्भो वज्रे लोहमयवलये मुसलाग्रगे ।
 शरो रसाग्रसारेऽपि शूकोऽनुक्रोशशुङ्गयोः ॥ ५८ ॥
 शब्दोऽक्षरे यशोगीत्योर्वाक्ये खे श्रवणे ध्वनौ ।
 शङ्कुः पत्रसिराजाले कीलेऽस्त्रे मेढ्रसङ्ख्ययोः ॥ ५९ ॥
 कुक्कुटेऽमौ मयूरंऽशौ वृत्ते केतुग्रहे शिखी ।
 पद्ये यशसि च श्लोकः षण्डौ विट्चरपण्डकौ ॥ ६० ॥

षट्सूत्रमसूत्रौ जले चन्द्रे तन्तुमङ्गलरश्मिषु ।
 सम्राजोऽग्नीन्द्रविष्णवर्का यश्च स्यान्मण्डलेश्वरः ॥ ६१ ॥
 राजसूयेन येनेष्टं राज्ञः शास्त्याज्ञया च यः ।
 सर्गास्तु सर्जनाध्यायस्वभावोत्साहनिश्चयाः ॥ ६२ ॥
 सन्धिः श्लेषे सुरङ्गायां नाट्याङ्गे योनिरन्ध्रयोः ।
 स्वरोऽकाराद्युदात्ताद्योः षड्जादौ प्राणिनां स्वने ॥ ६३ ॥
 सरटौ पक्षिजलदौ स्पशौ तु चरसंयुगौ ।
 स्तम्भौ स्थूणाजडीभावौ यूपांशे कुलिशे स्वरुः ॥ ६४ ॥
 स्कन्दो धाता नदीकूलं साद्यश्चःरोहसूतयोः ।
 सालो मत्स्ये वृक्षभेदे प्राकारद्रुममात्रयोः ॥ ६५ ॥
 सिक्थो ना भक्तपूलाके मधूच्छिष्टे कचिन्नपुम् ।
 सुतः पुत्रे सोमरसे सोमौ व्योमनिशाकरौ ॥ ६६ ॥
 स्तूपा वायुरणोच्छ्वाया आज्ञाऽऽह्वानाध्वरा हवाः ।
 हर्तुर्मृत्यौ महारागे हरा रुद्राग्निगर्दभाः ॥ ६७ ॥
 हंसोऽश्वेऽर्के हरे विष्णौ खगे निर्लोभभूभुजि ।
 जीवे श्वेतवृषे भिक्षौ पार्श्विकाप्रसभौ हठौ ॥ ६८ ॥
 वारिपर्णी च हेतुस्तु कारणे कर्मजन्मनोः ।
 हीरः सर्पे हरे सिंहे हेलिरालिङ्गने रवौ ॥ ६९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे पुलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥



स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अर्चा पूजाप्रतिमयोरर्तिश्चापाग्रपीडयोः ।
 अन्दूस्तु शृङ्खला पादभूषाऽप्यष्टी फलास्थ्यपि ॥ १ ॥
 आस्था गोष्ठ्यां प्रतिज्ञायां तत्परत्वेऽवलम्बने ।
 आशीरुगदंष्ट्रायां शुभवाक्याभिलाषयोः ॥ २ ॥
 आलिः सेतौ सखीपङ्क्त्योराशा दिगतिवृष्णयोः ।
 आजिः समेऽपि भूभागे गोनाडीभूद्युवाद्विड्डा ॥ ३ ॥
 इलाऽप्येतासु चार्धे च स्यादिज्या यागपूजयोः ।
 इष्टिः स्पृहायजनयोरिरा भूवाक्सुराम्बुषु ॥ ४ ॥
 अन्ने च स्यादथो ईतिरुपसर्गप्रवासयोः ।
 ईहा तु लिप्सोद्यमयोरुतिः सूत्यभिरक्षयोः ॥ ५ ॥
 ऊर्णा भ्रमध्यगावर्ते तन्तौ मेषादिलोमसु ।
 हिंसाविक्षेपयोः कीर्णिः कीर्तिः पङ्के यशस्यपि ॥ ६ ॥
 कक्ष्या कच्छे वरत्रायां काञ्च्यां गेहप्रकोष्ठके ।
 कर्मा हाटकपुत्र्यां स्यादपि शालापलालयोः ॥ ७ ॥
 कासूर्बुद्धौ कुवाच्यस्त्रे कान्तिः शोभाभिकामयोः ।
 काष्ठोत्कर्षे सीम्नि दिशि क्षोण्यां वासे क्षये क्षितिः ॥ ८ ॥
 क्रिया तु निष्कृतौ शिक्षाचिकित्सोपायकर्मसु ।
 करणारम्भपूजासु चेष्टार्या सम्प्रधारणे ॥ ९ ॥
 काले शिल्पे वित्तवृद्धौ चन्द्रांशे कलने कला ।
 महाभूतेष्विन्द्रियेषु ज्ञानावयवयोरपि ॥ १० ॥
 कोटिस्त्वश्रौ प्रकर्षेऽन्ने दशोपायगमे गतिः ।
 गुप्तिः क्षितिव्युदासेऽपि गुञ्जा भाण्डेऽपि वादने ॥ ११ ॥
 घृणा जुगुप्साकृपयोर्घोणाऽपि रथकर्णिका ।
 चिन्ताचचिकययोश्चर्चा चूर्णिर्ग्रन्थे कपर्दके ॥ १२ ॥
 चापाग्रे पिष्टके चूलिशृङ्गिर्द्वान्तिरेतसोः ।
 छाया त्वनावृषे कान्तौ प्रतिबिम्बार्कजाययोः ॥ १३ ॥

जनिर्वरस्त्रीपत्योश्च जामिः स्वसृकुलस्त्रियोः ।
 जातिश्छन्दसि मालत्यां सामान्ये जन्मगोत्रयोः ॥ १४ ॥
 अलक्ष्म्यग्रजयोज्यैश्चा गृहगोत्र्यक्षभेदयोः ।
 जिह्वा वाग्रसनार्चिष्णु तन्द्रा निद्राप्रमीलयोः ॥ १५ ॥
 तन्त्रीर्गुण्डीचीसिरयो रज्ज्वां वीणादिगे गुणे ।
 तन्दूद्रोणिप्लवे दूर्या वाद्ये काले लवे तुटिः ॥ १६ ॥
 तुला साम्ये स्तम्भपीठे लेशसंशययोस्तुटिः ।
 तूली शय्याकूर्चिकयोस्तेता त्वग्नित्रये युगे ॥ १७ ॥
 दरदो भीतिहृद्गूढा दृष्टिर्धीदर्शनादिषु ।
 द्रोणी स्यादम्बुवाहिन्यां द्रवमाण्डे गिरिप्लवे ॥ १८ ॥
 दिष्टिः सुखे च दाने च धात्री भूव्युपमातरि ।
 धनुः सुखीधनुर्ज्यासु धानां बीजेऽपि भूरुहाम् ॥ १९ ॥
 धारास्त्राग्रेऽम्बुसन्तत्यां सैन्याग्रेऽश्वगतिष्वपि ।
 धीता सुतायां बुद्धौ च धृतिः सौख्येऽपि धारणे ॥ २० ॥
 निष्ठोत्कर्षे व्यवस्थायां नाशेऽन्ते व्रतयज्ञयोः ।
 भित्तिमूले प्रधौ नेमिर्निन्दा कुत्साऽपवादयोः ॥ २१ ॥
 पालिरग्निः प्रदेशोऽङ्कः सश्मश्रुः स्त्री त्सरुश्छदः ।
 छन्दः सङ्ख्यावली पङ्क्तिः पक्तिगौरवपाकयोः ॥ २२ ॥
 क्षुद्रग्रामेऽपि पल्ली स्यात् प्रभाऽर्चिषि च भासि च ।
 प्रज्ञा प्राज्ञस्त्रियां बुद्धौ प्रजा तु जनपुत्रयोः ॥ २३ ॥
 प्रसूर्जनन्यामश्वयां पारिः सृणिगुणेऽपि च ।
 पादुकोपानहोः पादूः प्राप्ती अभिगमोदयौ ॥ २४ ॥
 पीडाऽवमर्दकपयोः प्रीतिः प्रेमप्रमोदयोः ।
 प्रेक्षा नृत्तेक्षणे बुद्धौ बाधा दुःखनिषेधयोः ॥ २५ ॥
 भसदौ गुह्यविट्कोष्ठौ भक्तिभोगे निषेधणे ।
 भिक्षा तु भिक्षितान्नादौ याचव्यायां भृतिसेवयोः ॥ २६ ॥
 भूमिः क्षितौ स्थानमात्रे भूतिः श्रीजन्मभस्मसु ।
 मतिः काङ्क्षा शेमुषी च मल्लिर्मृत्पात्रपीठयोः ॥ २७ ॥

माता तु गव्यकारादौ ब्राह्मचाद्यासु प्रसूमयोः ।
मूर्तिर्देहप्रतिमयोः काककाठिन्ययोरपि ॥ २८ ॥

पुंश्चल्यां मौक्तिके मुक्ता कारासंयमयोर्यतिः ।
गमने जीवने यात्रा रुजा रुग्भृङ्गमृत्यवः ॥ २९ ॥

राजिः पङ्क्तौ राजसर्पे क्षेत्रेऽधो रसनस्य च ।
रीतिर्दग्धसुवर्णादिमले स्थित्यारकूटयोः ॥ ३० ॥

प्रचारे श्रवणे पङ्क्तौ रण्डा स्याद्विधवाऽपि च ।
रुचिः कान्त्यर्चिषोर्भासि तन्नित्रिडीके स्पृहाश्रियोः ॥ ३१ ॥

रेटिर्वह्नेश्च रटितं वाणी चासंयतोत्कटा ।
रेखायामावलौ रेखा लङ्का पूर्वैदशाखयोः ॥ ३२ ॥

लीला क्रिया विलासश्च वपा गोण्डो विलं तथा ।
वलिर्मध्यगरेखोर्मिजीर्णत्वग्गृहदारु च ॥ ३३ ॥

वर्धी स्नायुनि नध्र्यां च ब्रज्या पर्यटने गतौ ।
विधा विधाने हस्त्यन्त्रे भृत्यामृद्धिप्रकारयोः ॥ ३४ ॥

वीरुधौ गुल्मगुल्मिन्यौ वीथी पङ्क्त्यध्वनोरपि ।
वीचिः पङ्क्त्यूर्मिलेशेषु व्युष्टी फलसमृद्धते ॥ ३५ ॥

वृत्तिर्ग्रन्थाजीवयोश्च वेलाऽन्विजलवर्धने ।
काले सीमि च वेणी तु केशबन्धे जलस्रुतौ ॥ ३६ ॥

वृद्धिः सुखेऽपि जङ्घापि वारुः शुक्तिस्तु ह्रस्वजि ।
अश्ववर्ते च शाला तु गृहाङ्गस्कन्धशाखयोः ॥ ३७ ॥

शक्तिः कासूर्बलं लक्ष्मीः शारदावृत्तुवत्सरौ ।
शङ्का वितर्कभययोः श्रद्धाऽऽस्तिक्याभिलाषयोः ॥ ३८ ॥

शाखा वेदप्रभेदेषु बाहौ पादद्रुमाङ्गयोः ।
श्यामा कन्या निशा चाथ शान्तिः प्रशममङ्गले ॥ ३९ ॥

शिखा श्वालाकेकिमौल्योः शिफा शाखाग्रमौलिषु ।
शुण्डा करिकरे मद्ये श्रुतिर्वेदे श्रवस्यपि ॥ ४० ॥

शय्या तल्पे ग्रन्थगुम्फे शंसा तु स्तववाक्ययोः ।
संविद् युद्धे प्रतिज्ञायां सङ्केताचारनामसु ॥ ४१ ॥

सम्भाषणे क्रियाकारे विज्ञाने तोषणेऽपि च ।
 सभा तु संसदि द्यूते गृहे सामाजिकेषु च ॥ ४२ ॥
 संज्ञाऽर्कभार्या चैतन्यं हस्ताद्यैः सूचनाऽभिधा ।
 संस्था व्यवस्थाप्रणिधिसमाप्त्याकारमृत्युषु ॥ ४३ ॥
 सन्धाऽवधौ प्रतिज्ञायां सातिर्दानावसानयोः ।
 सीमसीमे तु कूलेऽपि स्थानमर्यादयोः स्थितिः ॥ ४४ ॥
 गङ्गेष्टिर्पूर्वयोः स्नुह्यां लेपभेदेऽमृते सुधा ।
 राशिमखलयोः स्थूना सीता सस्ये हलाध्वनि ॥ ४५ ॥
 स्थूणा सूर्या गृहस्तम्भे हिंसा चौर्यादिके वधे ।
 हेलाऽवज्ञाभावचारौ हेतिर्ज्वालांशुरायुधम् ॥ ४६ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अभ्रं सलिलदे व्योमन्यस्त्रं कोदण्ड आयुधे ।
 अग्रं पुरःशिखामानशैष्ट्याधिक्यफलेषु च ॥ १ ॥
 मुष्के पक्ष्यादिकोशेऽण्डं दुःखैर्नोव्यसनेष्वधम् ।
 अर्शसी व्याधिदुर्नाम्नी आज्ये श्रीवाससर्पिषि ॥ २ ॥
 वर्षार्थजीवितेष्वायुरास्यं मुखविले मुखे ।
 उरस्तु वक्षसि श्रेष्ठ ऋतं तथ्यशिलोच्छयोः ॥ ३ ॥
 ओजोऽवष्टम्भबलयोरोकसी मन्दिराश्रमौ ।
 क्रियायजनयोः कर्म क्षीरं दोहजमम्बु च ॥ ४ ॥
 कुण्डं स्थाल्यां जलाधारविशेषेऽनलगर्तके ।
 पिण्याको नग्नहूः किण्वं कूलं तीरे चमूकटौ ॥ ५ ॥
 क्षेत्रं गृहे पुरे देहे केदारे योनिभार्ययोः ।
 पुण्यस्थाने समूहे च घृतं त्वाज्येऽम्बुसर्पिषोः ॥ ६ ॥
 चक्रं सैन्ये जलावर्ते रथाङ्गे चयराष्ट्रयोः ।
 संसारे मण्डले वृत्ते छद्मभेदास्त्रभेदयोः ॥ ७ ॥
 चैत्यं चिताङ्गे बुद्धाण्डे उद्देशेऽद्रौ सुरालये ।
 चिह्नमङ्के पताकायां छद्म सद्धानि कैतवे ॥ ८ ॥
 छन्दः श्रुतीच्छापद्येषुच्छिद्रं रन्ध्रापराधयोः ।
 जालं गवाक्ष आनाये क्षारके कपटे गणे ॥ ९ ॥
 जीलं चर्मपुटः कोशो दृतिः करकपत्रिका ।
 ज्योतिस्ताराग्निभाज्ज्वालाहक्पुत्रार्थाध्वरात्मसु ॥ १० ॥
 तन्त्रं स्वराष्ट्रव्यापारे तन्तुवाने परिच्छदे ।
 शास्त्रौषधान्त्रमुख्येषु प्रयोगेऽध्वरकर्मणम् ॥ ११ ॥
 एकस्यैवोभयार्थत्वे कुड्मुम्बव्यापृतावपि ।
 तल्पं शय्यादृजायासु तनुषी तनुविस्वृती ॥ १२ ॥
 त्रपु सीसे च रङ्गे च तरसी बलरंहसी ।
 तीर्थं मन्त्राद्युपाध्यायशास्त्रेष्वम्भसि पावने ॥ १३ ॥
 पात्रोपायावतारेषु स्त्रीपुष्पे योनियज्ञयोः ।
 तेजो बले प्रभावेऽन्ने ज्योतिष्यर्चिषि रेतसि ॥ १४ ॥

नवनीतेऽनले धर्मे दानं हस्तिमदेऽपि च ।
 द्रव्यं गुणानामाधारे भेषजे योगवित्तयोः ॥ १५ ॥
 द्वन्द्वं युग्मं हिमोष्णादि मिथुनं कलहो रहः ।
 धाम जन्मप्रभावान्नभाःसु खे भोजने गृहे ॥ १६ ॥
 नेत्रं नाड्यां तरोर्मूले वस्त्रे दृशि मथो गुणे ।
 नाट्यं तौर्यत्रिके नृत्ते नालं विवरशेषसोः ॥ १७ ॥
 पदं स्थाने शरे त्राणे पादाङ्के पादचिह्नयोः ।
 शब्देऽशुवस्तुवाक्येषु व्यवसायापदेशयोः ॥ १८ ॥
 पर्व ग्रन्थौ पञ्चदश्यां प्रस्तावे विषुवादिके ।
 पद्म सूत्रायवयवे किञ्चलके नेत्रलोमसु ॥ १९ ॥
 पत्रं तु वाहने पर्णे क्षुरिकागरुतोरपि ।
 पयोऽम्भसि च दुग्धे च पाथसी सलिलौदनौ ॥ २० ॥
 पात्रं तु भाजने योग्ये वित्ते कूलद्वयान्तरे ।
 पाथीपि स्वर्गचन्द्रार्का पिच्छं बर्हे खगच्छदे ॥ २१ ॥
 पोत्रं मुखाग्रदेशे स्यात् सूकरस्य हलस्य च ।
 नवनीतं पयः पीथं बर्हं पर्णशिखण्डयोः ॥ २२ ॥
 बीजं शुक्लो फलास्थन्यन्ने भर्मणी स्वर्णवेतने ।
 वणिङ्मूलधने पात्रे भाण्डं भूषाश्वभूषयोः ॥ २३ ॥
 भाग्यं कर्मण्यन्यजन्मकर्मण्यपि शुभाशुभे ।
 भर्गसी रेतआलोकौ महसी तेजउत्सवौ ॥ २४ ॥
 माल्यं पुष्पे पुष्पदाम्नि मूल्यं वेतनवस्त्रयोः ।
 मुखं तु वदने मुख्ये ताम्रे द्वाराभ्युपाययोः ॥ २५ ॥
 मूलं वशीकृतौ स्वीये शिफातारान्तिकादिषु ।
 गमने वाहने यानं रत्नं श्रेष्ठे मणावपि ॥ २६ ॥
 रहो रहस्ये सुरते रिष्टं नाशे शुभेऽशुभे ।
 रुक्मं हेम सुलोहं च रेतसी शुक्लमम्बु च ॥ २७ ॥
 रूपं शब्दे पशौ श्लोके ग्रन्थावृत्तौ सितादिषु ।
 सौन्दर्ये च स्वभावे च शरद्रेण्वार्तवे रजः ॥ २८ ॥
 ललं पल्लव उद्याने लक्ष्म चिह्नवरिष्ठयोः ।
 स्यादुपच्छन्दने लालं गुह्यार्थपरभार्ययोः ॥ २९ ॥
 लिङ्गं शेफसि वेपथेऽशे चिह्ने बुद्ध्यादिसंहतौ ।
 वयः खगेऽन्ने वर्षेऽर्थे शुभाकारे तनौ वपुः ॥ ३० ॥

वचोऽर्चीरूपविडभाःसु वनं भास्यप्सु कानने ।
 व्रतं विष्णुवृत्तुवर्षेज्यातपोमासाग्निभुक्तिषु ॥ ३१ ॥
 वीर्यं पराक्रमे रेतस्यन्नमाहात्म्ययोरपि ।
 वेष्टं ब्रह्मणि नाके च शल्के शकलवलकले ॥ ३२ ॥
 शस्त्राण्यस्त्रमयःशंसा शास्त्रं ग्रन्थनिदेशयोः ।
 शाङ्गं चापे हरेश्चापे शीलं वृत्तस्वभावयोः ॥ ३३ ॥
 शुल्बं ताम्रे यज्ञकर्मण्याचारे जलसन्निधौ ।
 शोचिः शोकांशुपैङ्गल्यशुद्धत्वेषु सरोऽप्सु च ॥ ३४ ॥
 यज्ञभेदे सदादाने सत्रमाच्छादने वने ।
 सर्पिर्धृते च तोये च सान्त्वे दाक्षिण्यसान्त्वने ॥ ३५ ॥
 स्नानीयेऽभिषवे स्नानं स्थानं स्यादाश्रये स्थितौ ।
 सूत्रं तन्तौ सङ्ग्रहोक्तौ सुखमानन्दतोययोः ॥ ३६ ॥
 स्रोतोऽम्बुनिर्गमद्वार इन्द्रियेऽप्सु जलस्रुतौ ।
 हविर्हव्ये धृते तोये हेम्नी काञ्चनवेतने ॥ ३७ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 द्व्यक्षरकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अर्थवह्निङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

अथर्वोऽर्थयुक्तात्मवतोरन्त्योऽन्त्यजनिकृष्टयोः ।
 कल्पतेऽर्घ्यायार्घ्यमर्घाह्नेऽप्यदस्त्वत्र परत्र च ॥ १ ॥
 अन्यौ विभिन्नसदृशावार्यः साधुकुलीनयोः ।
 आद्यमादिभवे भक्ष्येऽप्युत्पत्तिरहितेऽप्यृजुः ॥ २ ॥
 मुख्यान्यकेवलोष्वेकः कष्टौ गहनदुःखितौ ।
 कल्या नीरुग्दक्षसज्जा योग्ययुक्तहिताः क्षमाः ॥ ३ ॥
 कटुस्तिक्ताप्रियाकार्यसुरभ्यूषणमत्सरे ।
 क्रूरो भयङ्करे क्रुद्धे नृशंसे कठिनोष्णयोः ॥ ४ ॥
 गौरोऽरुणे सिते पीते गृह्यस्त्वस्वैरिपक्षयोः ।
 छिन्नाक्षे छिन्ननेत्रे च चिल्लं चुल्लं च पिल्लवत् ॥ ५ ॥
 चोद्यं चित्रे चोदनार्हं चारु चित्रवचस्यपि ।
 जडो जालमश्च निर्वुद्धौ स्तब्धेऽनालोच्यकारिणि ॥ ६ ॥
 ज्यायान् ज्येष्ठश्चाग्रजन्मन्यतिवृद्धातिशस्तयोः ।
 जात्यः श्रेष्ठे कुलीने च डिम्भो बालिशबालयोः ॥ ७ ॥
 द्रुतं शीघ्रे शीघ्रगतेऽप्यवदीर्णविलीनयोः ।
 दृढं गाढेऽधिके स्थूले धूतं त्यक्ते प्रकम्पिते ॥ ८ ॥
 धृष्णुर्धृष्टे प्रगल्भे च कुटिले बन्धुरे नतम् ।
 न्यक्षं छिष्टे निकृष्टे च निजमात्मीयनित्ययोः ॥ ९ ॥
 नीचं खर्वं निकृष्टे च समर्थेऽधिपतौ प्रभुः ।
 प्राप्तं न्याय्ये च लब्धे च विपुलानेकयोर्बहु ॥ १० ॥
 बालो मूर्खे शिशौ भव्यो भावी योग्यः शुभोऽपि च ।
 मिश्रेऽपि भिन्नं म्लिष्टं तु म्लानाविस्पष्टवाक्ययोः ॥ ११ ॥
 मुग्धं सौम्ये नवे मूढे मूढो मोहिनि तन्द्त्रिते ।
 मृद्वतीक्षणे कोमले च बद्धोपरतयोर्यतः ॥ १२ ॥
 याप्यं गह्वं यापनीये पृथक्संयुक्तयोर्युतम् ।
 न्याय्यसंयुक्तयोर्युक्तं रूक्षो निष्प्रेम्ण्यचिक्कणे ॥ १३ ॥
 रथ्यो रथहितेऽमुष्य स्वीयेऽस्याश्वे च वोढरि ।
 रागवद्रोहितौ रक्तौ रामश्चारौ सितेऽसिते ॥ १४ ॥

न्याय्यलब्धव्ययोर्लभ्यं लिप्तो भक्षितदिग्धयोः ।
 लघु त्वसारागुरुणोरिष्टे क्षिप्रमनोज्ञयोः ॥ १५ ॥
 लोलं चले लोलुपे च व्यग्रो व्यापृत आकुले ।
 वल्गु मञ्जौ च वामस्तु सौम्ये सव्यप्रतीपयोः ॥ १६ ॥
 विद्धं विदारिते तुल्ये विन्नं लब्धे विचारिते ।
 शितिः श्वेते च नीले च शुभो मञ्जुप्रशस्तयोः ॥ १७ ॥
 शुभ्रं शुक्ले भास्वरे च शुक्तं तु परुषाम्लयोः ।
 सभ्यः सामाजिके साधौ सव्यो दक्षिणवामयोः ॥ १८ ॥
 सन्नमल्पे विशीर्णादौ स्वादुर्मधुरमृष्टयोः ।
 स्फुटाः स्पष्टव्याप्तफुल्लाः स्थूलौ तु जडपीवरौ ॥ १९ ॥
 मन्त्रिण्यपि सुहृत्स्निग्धे प्रतिज्ञावत्यपि स्थितः ।
 मन्दस्वच्छन्दयोः स्वैरो हीनो मुक्तविगर्हयोः ॥ २० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 द्व्यक्षरकाण्डे अर्थवह्निज्ञाध्यायः ॥ ४ ॥

नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

नानालिङ्गेषु सर्वत्र स्वयमेव क्वचित् क्वचित् ।
 उन्नेयमर्थवल्लिङ्गं गुणद्रव्यक्रियार्थकम् ॥ १ ॥
 अक्षो रथाङ्ग आधारे व्यवहारे विभीतके ।
 शकटे पाशके कर्षे द्यूतभेदेऽक्षमिन्द्रिये ॥ २ ॥
 अवज्रो धन्वन्तरौ शङ्खे चन्द्रे क्ली लवणेऽम्बुजे ।
 प्रदेशेऽंश उपायेऽङ्गमङ्गो देशेऽङ्गशालिनि ॥ ३ ॥
 अविर्भूषणवत्योः स्त्री वायुप्राकारभाःसु ना ।
 अजः पितामहेऽनादौ छागे विष्णौ हरे रवौ ॥ ४ ॥
 अन्तोऽस्त्र्यवसिते मृत्यौ स्वरूपे निश्चयेऽन्तिके ।
 नार्धमासेऽणिरकल्यश्रौ रूप्येऽक्षाग्रध्रुवे ध्रुवे ॥ ५ ॥
 अर्हन्तौ जिनसम्मान्यावर्चन्तौ ह्यकुत्सितौ ।
 अन्धोऽचक्षुस्तमोऽप्यन्धमर्चिर्भाज्वालयोर्न ना ॥ ६ ॥
 अस्र आस्रश्च पुल्लिङ्गौ क्लेशे क्ली रुधिराऽश्रुणि ।
 आद्यो मुख्ये धातृपूर्वेष्वाभ्यामोऽपकेऽपि रुड्यपि ॥ ७ ॥
 इनास्त्वात्माधिपार्काढ्या उष्णोऽग्नौ चतुरेऽपि च ।
 उशिर्नागनावुशीरेऽस्त्री न नोषः कल्यसन्ध्ययोः ॥ ८ ॥
 उस्त्रः किरण उस्त्रा गौर् ऋक्षं निलोमनीन्द्रिये ।
 कम्बवस्त्री बलये शंखे शम्बूके कणसंख्ययोः ॥ ९ ॥
 कल्को ना सिंहके न स्त्री किट्टे दम्भेऽघपिष्टयोः ।
 कारा बन्धनगेहे स्त्री करे ना बन्धने न षण् ॥ १० ॥
 कांस्यं कंसोऽस्त्रियां पानपात्रे तैजस आढके ।
 काण्डोऽस्त्रीषौ बले नाले गर्ह्येऽवसरवर्गयोः ॥ ११ ॥
 ग्रन्थौ स्तम्भे प्रकाण्डेऽप्सु कश्यपं मद्यकशार्हयोः ।
 क्षुद्रो दरिद्रे कृपणे नृशंसेऽल्पनिकृष्टयोः ॥ १२ ॥
 क्षुद्रा व्यङ्गा नटी वेश्या सरधा कण्टकारिका ।
 कूटोऽस्त्री पुञ्जमायाघेष्वाद्रिःशृङ्गेषुभेदयोः ॥ १३ ॥
 अयोधनेऽनृते फाले दम्भे निश्चलयन्त्रके ।
 कृष्णं सीसाद्यलोहेषु कृष्णो नीले नले कलौ ॥ १४ ॥

शूद्रे काके पिके व्यासे ध्वान्तपक्षेऽर्जुने हरौ ।
 कोशोऽस्त्री कुङ्मले दिव्ये शास्त्रेऽथौघे गृहे तनौ ॥ १५ ॥
 गुह्येऽण्डे वेष्टके पेश्यां पुस्तकासिपिधानयोः ।
 कोलं बदरतक्रोलशुण्ठीव्योपेऽर्धकर्षके ॥ १६ ॥
 कोला चव्येऽस्त्रपिप्पल्योः कोलः खल्ले प्लवे क्रिदौ ।
 कायो लक्ष्ये तनौ वृन्दे पुमांस्त्रिषु कदैवते ॥ १७ ॥
 कर्पूः स्त्री तुषकोष्ठे कुल्यायां ना च ना करीषाग्नौ ।
 श्रोण्यां भृशे किलिञ्जे गजगण्डे शवरथे शवे च कटः ॥ १८ ॥
 किष्कुर्वितस्तावनपुं सप्रकोष्ठकरे पुमान् ।
 कीलोऽस्त्री कफणौ ज्वाले बाहौ ना शङ्कुशर्वयोः ॥ १९ ॥
 पीठे श्मश्रुणि कूर्चोऽस्त्री भ्रूमध्ये कत्थने कुशे ।
 कृत्या क्रियादेवतयोः कार्ये स्त्री कुपिते त्रिषु ॥ २० ॥
 युगेऽक्षपाते पर्याप्ते कृतं स्त्री विहितेऽर्थवत् ।
 दवेडा वेणुशलाकायां सिंहनादे विषे तु ना ॥ २१ ॥
 क्षेमो ना प्राप्तरक्षायां मोक्षेऽप्यस्त्री तु मङ्गले ।
 स्वीयेऽन्तःकुक्षि कोष्ठोऽस्त्री कुसूलेऽन्तर्गृहे पदे ॥ २२ ॥
 क्रोडं स्त्री कर्ष उत्सङ्गे सूकरे ना न नोरसि ।
 औषधे रुजि कुष्ठोऽस्त्री कुब्जोऽस्त्री गह्वरे हनौ ॥ २३ ॥
 दर्भे कुशोऽस्त्री तोये क्ली कुटिर्वक्त्रे गृहे नषण् ।
 कृष्टिर्विलेखे प्राज्ञे ना खेटो ग्रामे कफेऽधमे ॥ २४ ॥
 अर्धे गुडविकारे च खण्डोऽस्त्री खण्डिते त्रिषु ।
 खलं भूस्थानकल्केषु खलो नीचः खलेत्वरी ॥ २५ ॥
 गव्यूतौ गोगणे गव्या ज्यायागद्रव्ययोर्नपुम् ।
 भाण्डागारे पुमान् गजः स्त्री तु खन्यां सुरागृहे ॥ २६ ॥
 गुडौ पिण्डेक्षुविकृती स्नुहीगुलिकयोर्गुडा ।
 गुरुगोष्पतिपित्राद्योः पौरोहित्यकरे च ना ॥ २७ ॥
 मात्रादौ स्त्री बृहत्खातदुर्भरालघुषु त्रिषु ।
 गोत्रा गोनिचये भूम्यां गोत्रं नान्नि कुलेऽचले ॥ २८ ॥
 गडुः पृष्ठगुडे कुब्जे गदो रोगो गदायुधम् ।
 गोप्यो रक्ष्ये दाससुते घ्राणमाघ्रातनासयोः ॥ २९ ॥
 घनाः कठिनसङ्घातमेघकाठिन्यमुद्गराः ।
 चित्रा सुभद्रा तारा च चित्रमालेख्यमिश्रयोः ॥ ३० ॥

चेलं वासोऽक्षमं काम्यं गर्हितं बर्हिचन्द्रकः ।
 चुम्नो नाशे विषण्णे च चोक्षो गीतमनोज्ञयोः ॥ ३१ ॥
 छेको विदग्धे गृह्ये च जिह्वं मन्देऽघवक्रयोः ।
 जन्यं रणे जनितरि विगीतजननीययोः ॥ ३२ ॥
 ज्ञातिभृत्या नवोढाया जन्याः स्निग्धा वरस्य च ।
 जीवः प्राणे त्रयी ना तु जन्तवात्मनि गीष्पतौ ॥ ३३ ॥
 त्रिषु जीवति मौर्व्या स्त्री स्याज्जीर्णो वज्रवृद्धयोः ।
 भूषा नागबलायां स्त्री ना मत्स्ये मकरे वने ॥ ३४ ॥
 तनुः स्त्री त्वचि देहे च त्रिष्वल्पे विरले कृशे ।
 तमा राहुस्तमोऽघं शुक् स्वरूपेऽधस्तलोऽस्त्रियाम् ॥ ३५ ॥
 क्ली तुल्यदेशे तारस्तु मुक्ताशुक्तौ समौक्तिके ।
 उडुदृढाध्ययोरक्ली तुच्छं त्वसुखशून्ययोः ॥ ३६ ॥
 तान्नं शुल्वे शुल्बनिभे तिग्मास्तीक्ष्णोष्णभास्कराः ।
 तीक्ष्णमुष्णे क्षणुते युद्ध आत्मत्यजि विषेऽयसि ॥ ३७ ॥
 कर्णमूलेऽभ्रहरितोस्तोक्मं तोक्मो हरिद्यवः ।
 दण्डोऽस्त्री शासने राज्ञां हिंसायां लगुडे दमे ॥ ३८ ॥
 मिथ्याऽऽज्ञायां सैन्यभेदे दलो भागे दलं छदे ।
 दरोऽस्त्री शङ्खभीगर्तेष्वल्पार्थे त्वव्ययं दरम् ॥ ३९ ॥
 दंष्ट्री ग्राहे सदंष्ट्रेऽहौ शार्दूले मूषिके किटौ ।
 परिमाणे दारुपात्रे द्रोणोऽस्त्री वायसे पुमान् ॥ ४० ॥
 दिग्धो विषप्रलिप्तेषौ लिप्ते स्नेहप्रवृद्धयोः ।
 दुर्गो राष्ट्रे वने दुर्गं दुर्गमे नरके पुरे ॥ ४१ ॥
 दृश्या स्यात् पृतना दृश्यं दर्शनीये विभूषणे ।
 धर्मोऽस्त्री सुकृते साम्ये स्वभावे ना तु सोमपे ॥ ४२ ॥
 न्यायाचारयमाहिंसास्वस्त्री मेढ्राङ्गयोर्ध्वजः ।
 धिष्ण्यौ शुक्रानलौ धिष्ण्यमृक्षे स्थाने बले गृहे ॥ ४३ ॥
 ध्रुवो धात्रीशकीलर्क्षनित्येषु स्त्री तु भूस्त्रुचोः ।
 ह्री तर्के निश्चिते व्योम्नि धीरोऽब्धौ मन्थरे बुधे ॥ ४४ ॥
 निष्कोऽस्त्री हेम्नि दीनारे साष्ट्रे कर्षशते पले ।
 वक्षोविभूषणे कर्षे नाथस्त्विन्द्रे प्रभावपि ॥ ४५ ॥
 न्युब्जं कुब्जे कर्मरङ्गे न्युब्जो व्याधावधोमुखे ।
 नेमः पुरोहिते तुल्ये प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः ॥ ४६ ॥

बन्धने दूरमार्गे च प्राध्वं क्ली प्रवणे त्रिषु ।
 पूर्वोऽर्थलिङ्गः प्राच्यादौ पूर्वजेषु नृभूमवान् ॥ ४७ ॥
 पद्मोऽस्त्यब्जेऽष्टकायां क्ली सङ्ख्यायां गजबिन्दुषु ।
 ना तु नागे निधौ व्यूहे पङ्कोऽस्त्री कर्दमैनसोः ॥ ४८ ॥
 परं दूरान्यमुख्येषु परोऽरिपरमात्मनोः ।
 पार्ष्टिणरुन्मत्तनार्या स्त्री पादग्रन्थेरघोऽपि च ॥ ४९ ॥
 पुमांस्तु पृतनाकट्यां पापं स्यात् ऋरपाप्मनोः ।
 पुण्यं धर्मे जले हेम्नि पुष्पे क्ली सुन्दरेऽर्थवत् ॥ ५० ॥
 पार्श्वमस्त्री समीपेऽपि पूज्यः श्वशुरमान्ययोः ।
 स्नेहे केलौ प्रेम न स्त्री पीतिः पाने हये तु ना ॥ ५१ ॥
 स्यात् परेत इव प्रेतो मृतप्राणिविशेषयोः ।
 लाभनिष्पत्तिभोगेषु बीजे फाले धने फलम् ॥ ५२ ॥
 फली ताम्रादिफलके बहिर्नाऽग्नौ नपुं कुशे ।
 ब्रह्मा रुद्रेन्द्रभृग्वादिविप्रविग्यज्ञधातुषु ॥ ५३ ॥
 अर्केऽग्नौ क्ली तु वेदेऽन्ने स्वाध्यायात्मतपःसु च ।
 बलं रूपेऽस्थनि स्थौल्ये शक्तिरेतश्चमूषु च ॥ ५४ ॥
 बलो रामे बलाढ्ये च बाढं त्वनुमते दृढे ।
 बिम्बोऽस्त्री मण्डलसमप्रतिमामुखलक्ष्मसु ॥ ५५ ॥
 प्रतिबिम्बे तत्प्रकृतौ क्ली तु स्याद् बिम्बिकाफले ।
 साज्ये मधुनि तक्कोले बोलं बोलोऽम्भसां भ्रमः ॥ ५६ ॥
 बोधिरर्थे सुविज्ञाने कुक्कुटाश्वत्थयोस्तु ना ।
 बालोऽक्ली नीलभिण्ड्यां च भेलौ तूडुपभीरुकौ ॥ ५७ ॥
 भगं योन्यां भगो यत्ने यशोवीर्याकभूतिषु ।
 कान्तीच्छाज्ञानवैराग्यधर्मैश्वर्यतपःसु च ॥ ५८ ॥
 खादौ जन्तौ च भूतं क्ली समातीतोचिते त्रिषु ।
 भास्वानिन्दौ भास्वरेऽर्के भेको वर्षाश्व कातरे ॥ ५९ ॥
 अन्नतत्परयोर्भक्तं भद्रं कल्याणसौख्ययोः ।
 मन्दाः सरोगनिर्भाग्यस्वल्पाज्ञापदुसूर्यजाः ॥ ६० ॥
 क्षौद्रादौ तद्रसेऽप्यस्त्री ना वसन्ते रसेऽसुरे ।
 चैत्रे मधूके क्ली त्वप्सु मये पुष्परसे मधु ॥ ६१ ॥
 अक्ली मणिरजाकण्ठस्तने रत्नेऽप्यलिङ्गरे ।
 मात्रा परिच्छदेऽर्थेशे प्रवृत्तौ कर्णभूषणे ॥ ६२ ॥

अक्षरावयवे माने मात्रं कात्स्न्येऽवधारणे ।
 मध्यं युक्तेऽन्तराले च महद्राज्यविशालयोः ॥ ६३ ॥
 मोचा कदल्यां स्त्री वृक्षरसे ना पाटले नषण् ।
 मौलिः संयतकेशेषु चूडायां मुकुटेऽप्यषण् ॥ ६४ ॥
 मलं किट्टाघयोश्चास्त्री यमजान्तकयोर्यमः ।
 ययुर्ना मोक्षमार्गेऽश्वे स्त्री त्वाम्रौ दीर्घयष्टिके ॥ ६५ ॥
 युगोऽस्त्री स्यन्दनाचङ्गे क्ली तु युग्मे कृतादिके ।
 योनिः स्त्रीणां भगे स्थाने कारणे ताम्रकेऽप्यषण् ॥ ६६ ॥
 योग्यं यन्त्रक्षमापूपयानोपायिषु चन्दने ।
 योग्याभ्यासः क्षमापुण्ये रोको रश्मौ बिले नपुम् ॥ ६७ ॥
 राजते भूषणे रूप्यं रजते हेम्नि चाहते ।
 त्रिषु प्रशस्तरूपेऽथ रणोऽस्त्री युधि ना ध्वनौ ॥ ६८ ॥
 राष्ट्रोऽस्त्री विषये जन्तौ लोहोऽस्त्री तैजसायसोः ।
 लक्षं नपुं शरव्ये ना स्त्री व्याजे नियुते न ना ॥ ६९ ॥
 वर्णो नीलादिविप्राद्योः कीर्तौ गीतिक्रमे स्तुतौ ।
 कुथे वृतेऽक्षरे त्वस्त्री प्रकारे लेपशोभयोः ॥ ७० ॥
 वशा करिण्यां वन्ध्यायां रामायां दुहितर्यपि ।
 वशो जनस्पृहायत्तेष्वायत्तत्वप्रभुत्वयोः ॥ ७१ ॥
 वरो ना रूपजामात्रोर्देवादेरीप्सिते वृत्तौ ।
 त्रिष्वग्रये क्ली मनागिष्टे व्यक्तं स्पष्टे बुधे तु ना ॥ ७२ ॥
 वत्सो ना कुटजे वर्षे तर्णके तनयादिके ।
 बाले च वक्षसि त्वस्त्री वज्रोऽस्त्री हीरकास्त्रयोः ॥ ७३ ॥
 व्यालो दुष्टगजे सर्पे श्वापदे च पुमांस्त्रिषु ।
 शठेऽथ वित्तमर्थे क्ली त्रिषु ख्याते विचारिते ॥ ७४ ॥
 वीतं शान्ते दुर्गजाश्वे वधो हिंसितृहिंसयोः ।
 वार्ता वातिङ्गणोदन्तवाणिज्यादिषु वर्तने ॥ ७५ ॥
 निःसारारोग्ययोः षण्डो वृत्तिमन्नीरुजोस्त्रिषु ।
 वृत्तं स्वरूपे चरिते वृत्तौ छन्दोविधासु च ॥ ७६ ॥
 त्रिष्वतीतदृढाधीतवर्तुलेष्वथ गीष्पतौ ।
 श्रेष्ठोक्षाश्वाखुरेतःसु पुंघर्मेन्द्रबले वृषः ॥ ७७ ॥
 वसुहर्देऽग्नौ योक्त्रेऽशौ वसु तोये धने मणौ ।
 विश्वं जगति सर्वस्मिन्स्त्रिषु शुण्ठ्यां पुनर्न ना ॥ ७८ ॥

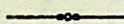
वप्रः पितरि ना न स्त्री क्षेत्रे रोधसि सानुनि ।
 वर्षोऽस्त्री भारताद्यब्दवृष्टिषु प्रावृषि स्त्रियः ॥ ७६ ॥
 वास्त्वस्त्री गृहभूपूर्योर्गृहे सीमसुरुङ्गयोः ।
 वानं शुष्के गतौ व्यूतौ गन्धे वृद्धौ सुधीयमौ ॥ ८० ॥
 वर्ष्म न स्त्री शुभाकारे सौम्ये देहप्रमाणयोः ।
 विभुः सर्वगते पत्यौ चन्द्रे रविकुवेरयोः ॥ ८१ ॥
 वीरो राहौ हरे शक्रे शूरे स्कन्दकुवेरयोः ।
 गजग्रहणभूमौ स्त्री वारिः स्यात् सलिले नपुम् ॥ ८२ ॥
 शङ्खोऽस्त्री बलये कम्बौ संख्यायां च निधौ तु ना ।
 अमावस्यां च नागे च शितौ बाणतनूकृतौ ॥ ८३ ॥
 शिवा हरीतकी क्रोष्टा शमी नद्यामलक्ष्युमा ।
 शिवो घोले पद्मरागे हरे कीले शिवं जले ॥ ८४ ॥
 भद्रे चाथोपधा शुद्धसचिवेऽग्नौ हरौ शुचिः ।
 चन्द्रेऽर्के च त्रिषु त्वेष शुद्धेऽनुपहते शिते ॥ ८५ ॥
 शुकः सिते कवौ चन्द्रे मासभेदेऽनले द्विजे ।
 शुकं मध्येऽप्सु पुण्येऽर्थे रुक्मेऽश्विरुजि रेतसि ॥ ८६ ॥
 क्रीडाभ्युयन्त्रे शृङ्गोऽस्त्री पर्वताग्रप्रभुत्वयोः ।
 पञ्चङ्गे चाथ शेषस्त्रिष्वन्यस्मिन्नुपयुक्ततः ॥ ८७ ॥
 माल्याक्षतादिदाने स्त्री ना नागेशाप्रधानयोः ।
 ना पर्याणे विहङ्गे स्त्री शारिर्द्युते गुडे नषण् ॥ ८८ ॥
 पथि देये शुल्कमस्त्री जामात्रा यच्च दीयते ।
 श्रुतं शास्त्रावधृतयोर्नपुमाकर्णितेऽर्थवत् ॥ ८९ ॥
 सजातिशिल्पसंहत्यामषण्डः श्रेणिरावलौ ।
 शौण्डी जलदमालायां शौण्डौ समदक्षुकुटौ ॥ ९० ॥
 शको विष्टा पशूनां स्याद्देशे च गवये शकाः ।
 शबले मारुते शारः शुद्धाः पूतार्ककेवलाः ॥ ९१ ॥
 शुभ्रिर्नार्केऽर्थवत्सौम्ये शूरौ विक्रान्तकुक्कुटौ ।
 शूलोऽस्त्री रुजि शस्त्रे च श्वेतं धवलरूपयोः ॥ ९२ ॥
 शीतो ना वेतसे शैलौ शैत्ये क्ली तद्वति त्रिषु ।
 सत्त्वोऽस्त्री जन्तुषु क्ली तु व्यवसाये पराक्रमे ॥ ९३ ॥
 आत्मभावे पिशाचादौ द्रव्ये सत्तास्वभावयोः ।
 प्राणे बलेऽन्तःकरणे स्वामी पत्यौ षडानने ॥ ९४ ॥

समा स्त्री वत्सरे साधुसर्वतुल्येषु वाच्यवत् ।
 परमार्थेऽर्थवत् सत्यं षण्डः शपथतथ्ययोः ॥ ६५ ॥
 स्पर्शः संस्पर्शने स्पष्ट्युपताप्रदानयोः ।
 साधुस्त्रिषृचिते सौम्ये सज्जने वार्धुषौ पुमान् ॥ ६६ ॥
 सारो बले स्थिरांशेऽर्थे पुमान् न्याये वरेऽर्थवत् ।
 स्त्री नद्यां ना नदे सिन्धुर्देशभेदेऽम्बुधौ गजे ॥ ६७ ॥
 सौम्यो विप्रे सोमजेऽब्दे सुन्दरे सोमदैवते ।
 सखा सहाये बन्धौ ना सूक्ष्ममध्यात्मदभ्रयोः ॥ ६८ ॥
 सूतं पुष्पे सुतायां स्त्री स्नेहोऽस्त्री द्रवहार्दयोः ।
 विष्णुचन्द्रेन्द्रवातार्कयमाशवांशुशुक्राग्निषु ॥ ६९ ॥
 कपिभेकाहिंसिहेषु हरिनौ कपिले त्रिषु ।
 हृद्यो वशीक्रिया मन्त्रे हृद्यं दध्युपलेपने ॥ १०० ॥
 हृत्प्रिये हृद्धिते हृज्जे ह्रीकौ नकुललज्जितौ ।
 यमेऽरूपे वामने ह्रस्वो हरित् स्त्री दिशि षण् रूणे ॥ १०१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां दैजयन्त्यां

द्व्यक्षरकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

द्व्यक्षरकाण्डः समाप्तः ॥ ६ ॥



७. अथ त्र्यक्षरकाण्डः

पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अविनौ विहगाध्वर्यु अरन्ती हस्तकूर्परौ ।
 अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रे मरणे दण्डदोषयोः ॥ १ ॥
 आसारः स्यात् प्रसरणे वेगवृष्टौ सुहृद्वले ।
 आग्रहः स्यात् स्वीकरणे निर्बन्धेऽनुग्रहेऽपि च ॥ २ ॥
 आम्नायोऽध्ययने वेदे सम्प्रदाये कुलेऽपि च ।
 आकर्षः शारिफलको द्यूत आकृष्टिपाशकौ ॥ ३ ॥
 गन्धमाल्योपहारे स्यादायोगो व्यापृतावपि ।
 आनर्त्तो नृत्तशालायां देशभेदे जने युधि ॥ ४ ॥
 आक्रन्दः क्रन्दने रावे नाथे घोररणेऽपि च ।
 आधार आलवालेऽम्बुबन्धेऽधिकरणेऽपि च ॥ ५ ॥
 आशिरः क्षीरविकृतौ भोजने पावके रवौ ।
 आवापो न्यास आवाले स्मरे धातरि चात्मभूः ॥ ६ ॥
 श्रोण्याञ्चारोह आकारस्त्वाकृतावात्मवैकृते ।
 आमोदौ हर्षसौगन्धे आभोगौ यत्नपूर्णते ॥ ७ ॥
 आघातौ घातसीमानावाहारौ भक्षणान्धसी ।
 आलोकौ दर्शनोद्योतावागमौ शास्त्रमागतिः ॥ ८ ॥
 रुग्भीतितापेष्वातङ्क आशुगोऽर्के शरेऽनिले ।
 तदात्वे पात आपात आकरो निकरे खनौ ॥ ९ ॥
 अत्याकर्षणमाक्षेप आलम्भः स्पर्शहिंसयोः ।
 ईशानौ हरिधाताराबुत्सेधौ वपुरुन्नती ॥ १० ॥
 उपाधिर्धर्मचिन्तायां कुडुम्बव्यापृतेऽपि च ।
 उत्सवस्त्विच्छाप्रसर उत्सेधामर्षयोर्महे ॥ ११ ॥
 उदर्क उत्तरे काले यच्च स्यात् फलमुत्तरम् ।
 उदान उदरावर्त्ते सर्पवायुप्रभेदयोः ॥ १२ ॥
 ऊर्णायुर्गुणनाभे स्यान्मेषतल्लोमकम्बले ।
 ऋषभोऽग्रये मत्तगजे श्रोत्ररन्ध्रे स्वरे वृषे ॥ १३ ॥

कुम्भीरपुच्छे च जलस्थाने त्वृक्षर ऋत्विजि ।
 वेणौ दुमाङ्गे रोमाङ्गे क्षुद्रशत्रौ च कण्टकः ॥ १४ ॥
 कञ्चुकः सर्पनिर्मोके कवचे वारवाणके ।
 कलापो भूषणे काञ्च्यां सङ्घाते बर्हतूणयोः ॥ १५ ॥
 क्षारको मत्स्यपक्ष्यादिपिटके पुष्पजालके ।
 दैवे कृतान्तः सिद्धान्ते यमाकुशलकर्मणोः ॥ १६ ॥
 कौशिको गुग्गुलुलकशर्कर्षिष्वाहितुण्डिके ।
 कलङ्कोऽङ्कोऽपवादे च कलहो द्वन्द्वयुद्धयोः ॥ १७ ॥
 कलमोऽङ्कुरलेखनयोः कठाकुः खगशिल्पिनोः ।
 कारुजः कलभे नाके क्षवथुः क्षुतकासयोः ॥ १८ ॥
 कर्परोऽग्नौ कपालेऽपि करभोऽपि खरोष्ट्रयोः ।
 शरे किशारुकादम्बौ कुरण्डस्तु ऋषेऽपि च ॥ १९ ॥
 कुटीरस्तु कुलीरेऽपि कुम्भीलस्तस्करेऽपि च ।
 कपोतः पारावतेऽपि कोकिलस्तूलमुकेऽपि च ॥ २० ॥
 वायौ वसन्ते क्षिपणुः क्षिपणो वायुकालयोः ।
 कुषाकुः पावके सूर्य केसरी हयसिंहयोः ॥ २१ ॥
 किङ्किरौ क्रोष्टुखट्वाङ्गौ खेचरः पवनेऽपि च ।
 खपुरः पूगवेष्टेऽपि पूगनिर्यासयोरपि ॥ २२ ॥
 खोलकः पूगकोशे स्याद् भग्नमाण्डे शिरस्त्रके ।
 गोलको मणिके पिण्डे कम्बले विधवासुते ॥ २३ ॥
 अन्तराभवसत्त्वे स्याद् गन्धर्वो गायने ह्ये ।
 गरुत्मान् विहगे तार्क्ष्ये वृषार्केन्द्रेषु गोपतिः ॥ २४ ॥
 चङ्कुरः स्यन्दने दैत्ये चाक्रिकौ तैलघाण्टिकौ ।
 चिकिरोऽहौ गेहवभ्रौ जसुरिः पावके शनौ ॥ २५ ॥
 जम्बुकौ क्रोष्टुवरुणौ जम्बालौ पङ्कशैवलौ ।
 श्वेतस्तिलोऽपि जामाता जीमूतौ मेघपर्वतौ ॥ २६ ॥
 जगलो मेदके पिष्टमद्येऽपि कितवेऽपि च ।
 जनिमा मातापितरावुत्पत्तिस्तनयोऽपि च ॥ २७ ॥
 त्रिवर्गस्त्रिफला व्योषं स्थितिवृद्धिक्षया अपि ।
 तमोनुदोऽग्निचन्द्रार्कास्तक्षकौ नागवर्धकौ ॥ २८ ॥
 तपनो भास्करे ग्रीष्मे त्रिदिवो व्योम्नि दिव्यपि ।
 त्रिशङ्कू तार्क्ष्यमार्जारौ त्रिधामा केशवेऽनले ॥ २९ ॥

सपिण्डपुत्रौ दायादौ द्वापरौ युगसंशयौ ।
 दिवौकाश्चातके देवे दुधणौ धातुमुदगरौ ॥ ३० ॥
 दरथो विवरे भीत्यां दिक्षु चापि प्रसारणे ।
 द्विजातिश्च द्विजन्मा च ब्राह्मणादिपतत्रिणोः ॥ ३१ ॥
 द्रुहिणौ हरिधातारौ शास्त्रोदाहरणयोस्तु दृष्टान्तः ।
 दोषज्ञौ बुधभिषजौ धरुणाः स्तनधातुलोकार्काः ॥ ३२ ॥
 धाराटश्चातकेऽश्वे च नभसौ व्योमसागरौ ।
 निवेशौ शिबिरोद्वाहौ निरोधौ रोधसंक्षयौ ॥ ३३ ॥
 निदेशावाज्ञाकथने विग्रहः सीम्नि भर्त्सने ।
 निवहो वायुभेदेऽपि निषङ्गस्तूणसङ्गयोः ॥ ३४ ॥
 ऊर्णाविकारे नमतो धूमे दिनकरेऽपि च ।
 निगमो निश्चये वेदे पुरे पथि वणिक्पथे ॥ ३५ ॥
 नितम्बः पश्चिमश्रोणिभागेऽद्रिकटके कटौ ।
 निष्क्रमो बुद्धिसामर्थ्ये निगतौ चाथ भूपतौ ॥ ३६ ॥
 नरेन्द्रो विषवैद्ये च नैगमस्तु श्रुतावपि ।
 निकारस्तु तिरस्कारे धान्यस्योत्क्षेपणेऽपि ॥ ३७ ॥
 द्वार्यापीठे काथरसे निर्यूहो नागदन्तके ।
 निषधोऽद्वौ देशभेदे कठिने तस्य राजनि ॥ ३८ ॥
 निहवः स्यादविश्वासेऽपह्वे निकृतावपि ।
 निर्वेशः सम्मूर्च्छने स्यात् कर्मभृत्युपभोगयोः ॥ ३९ ॥
 प्रतिज्ञायन्त्रणाऽऽज्ञासु नियमो निश्चये व्रते ।
 पतङ्गः शलभे शालौ मार्जारोऽग्नौ रवौ खगे ॥ ४० ॥
 परिधिर्यज्ञिये काष्ठे प्राकारे परिवेषणे ।
 परिघाते मूढगर्मे परिघोऽर्गलदण्डयोः ॥ ४१ ॥
 परागः पुष्परेणौ च स्नानीयादौ रजस्यपि ।
 पर्जन्यो गर्जदभ्रेऽभ्रध्वाने शक्रेऽस्त्रयन्त्रके ॥ ४२ ॥
 प्रलयो मरणे श्लेषे मूर्च्छासंवर्तयोरपि ।
 प्रवहो वायुभेदे स्याद् वायुमात्रे बहिर्गतौ ॥ ४३ ॥
 प्रयोगो ग्राम्यधर्मे स्यात् कुसीदे कर्मणां विधौ ।
 प्रणयः स्यात् परिचये याच्व्यायां सौहृदेऽपि च ॥ ४४ ॥
 प्रवाहस्तु प्रकृष्टाश्वे जलवेगे प्रवर्तने ।
 पादपः पादपीठे स्यात् पादयाने द्रुमेऽपि च ॥ ४५ ॥

पिण्याकः सिंहके किण्वे श्रीवासतिलकल्कयोः ।
 पुरुषो धातृपुन्नागपुंस्त्वात्मपरमात्मनोः ॥ ४६ ॥
 पुलकोऽखे रत्नराज्यां रोमाञ्चे हीरके क्रिमौ ।
 पुलाकस्तुच्छधान्ये स्यात् सङ्क्षेपे भक्तसिक्थके ॥ ४७ ॥
 प्रसवो जननानुज्ञापुत्रेषु फलपुष्पयोः ।
 पारम्पर्ये प्रसङ्गेऽपि प्राणिनां गर्भमोचने ॥ ४८ ॥
 तुलासूत्रेऽश्वादिरश्मौ प्रग्रहः प्रग्रहः पुनः ।
 तयोश्च संयमोद्योतपूलाबन्धगर्वधेषु च ॥ ४९ ॥
 प्रभवः स्यादपां मूले विक्रमे जन्मकारणे ।
 आद्योपलब्धिस्थाने च पुद्गलो देह आत्मनि ॥ ५० ॥
 प्रत्ययस्तु ख्यातिरन्ध्रविश्वासाधीनहेतुषु ।
 विज्ञाने शपथे शब्दे प्रस्तरोऽश्मा मणिः कुशः ॥ ५१ ॥
 पर्यस्त्यामपि पर्यङ्कः प्रकोष्ठोऽलिन्दकेऽपि च ।
 गजस्कन्धेऽपि पणवः प्रघणौ लोहमुद्गरौ ॥ ५२ ॥
 प्रियकः कृकलासेऽपि पेचकस्त्वचि हस्तिनाम् ।
 पुच्छमूले प्रपातस्तु पाते रोधसि सौप्तिके ॥ ५३ ॥
 पदाजिर्युधि मार्गे च रक्षोवृक्षौ पलाशिनौ ।
 प्रतिघौ रुद्रप्रतीघातौ प्रतापौ पौरुषातपौ ॥ ५४ ॥
 प्रसादौ स्वाच्छयानुरोधौ पर्यायोऽवसरे क्रमे ।
 प्रदोषौ दोषरात्र्यंशौ प्रणिधिः प्रार्थने चरे ॥ ५५ ॥
 वरुणेऽनले प्रचेताः प्रतापमाहात्म्ययोः प्रभावः स्यात् ।
 भेदसमते प्रकारौ विपर्यये विस्तरे प्रपञ्चः स्यात् ॥ ५६ ॥
 रुग्भङ्गबाणाः प्रदराः श्रेष्ठोक्षाणौ तु पुङ्गवौ ।
 पिशाचौ सत्त्वमार्जारौ पिचण्डः कुक्षिशय्ययोः ॥ ५७ ॥
 पृथुकश्चिपटे बाले पृदाकुर्व्याघ्रसर्पयोः ।
 भासन्तावर्कनक्षत्रे सूर्यश्चाग्निश्च भास्करौ ॥ ५८ ॥
 भ्रातृव्यौ भ्रातृजामित्रौ भुरण्यु विष्णुभास्करौ ।
 भूमिस्पृशौ वैश्यनरौ भुवन्यौ वह्निभास्करौ ॥ ५९ ॥
 भूतात्मा पवने देहे यश्च कर्त्ता तनौ पुमान् ।
 राजभेदाहिमार्जारश्चार्कशुक्रेषु मण्डली ॥ ६० ॥
 धूर्तरे सर्पभेदे च मातुलो मदनः पुनः ।
 सिक्थे वसन्ते धूर्तरे कन्दर्पेऽप्यथ माधवः ॥ ६१ ॥

विष्णौ वसन्ते वैशाखे मरुकौ भेककेकिनौ ।
 मिहिरा वायुमेघार्का यज्वरौ तु हयाध्वरौ ॥ ६२ ॥
 युञ्जानः सारथौ विप्रे रभसो विषवेगयोः ।
 रक्ताक्षौ रक्षोमहिषौ रमती स्वर्गमन्मथौ ॥ ६३ ॥
 रुचको भूषणे दन्ते रुथः कुक्कुटे ध्वनौ ।
 वज्रथः कोकिले काले वतकोऽश्वखुरे खगे ॥ ६४ ॥
 व्यवायो मैथुनेऽन्तर्धौ चित्रे दर्पे च विस्मयः ।
 वाहसौ वह्न्यजगरौ द्रुप्रवालौ तु विद्रुमौ ॥ ६५ ॥
 विस्त्रम्भौ स्नेहविश्वासौ विबुधौ सुरपण्डितौ ।
 विकारौ रोगविकृती विष्किरौ शिखिकुक्कुटौ ॥ ६६ ॥
 रहःप्रकाशौ वीकाशौ विपाकः स्वेदपाकयोः ।
 विश्वात्मारकेऽपि विष्कम्भो विस्तारप्रतिबन्धयोः ॥ ६७ ॥
 स्पर्धायां पौरुषे व्यामे व्यायामोऽथ परिक्रमे ।
 विहारः सौगतावासे क्रीडायां चाथ विग्रहः ॥ ६८ ॥
 युद्धे देहे विस्तरे च कुशमुग्रौ च विष्टरः ।
 विभ्रमः संशये भ्रान्तौ शोभायां चाथ वालुका ॥ ६९ ॥
 विकीर्णोऽर्थश्च विकिरौ विसर्गौ मुक्तिवर्चसौ ।
 विनयो धर्मविद्याधीशिक्षाचारप्रशान्तिषु ॥ ७० ॥
 विवधो वीवधश्च द्वौ पर्याहारेऽध्वभारयोः ।
 वृत्तान्तः स्यात् प्रकरणे कात्स्न्ये वार्ताप्रकारयोः ॥ ७१ ॥
 वासरौ नागदिवसौ वैकुण्ठाविन्द्रकेशवौ ।
 विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि ॥ ७२ ॥
 शपथः कर आक्रोशे शपने च सुतादिभिः ।
 बालके शिशुमारे च शिशुकोऽथाध्वरे पशौ ॥ ७३ ॥
 अध्वर्यौ च श्रपाय्यः स्याच्छ्रकुन्तौ भासपक्षिणौ ।
 कक्ष्यान्तरेऽपि शुद्धान्तः श्वश्रुय्यौ स्यालदेवरौ ॥ ७४ ॥
 मन्त्री सहायः सचिवः सहुरी वृषभास्करौ ।
 स्यमीकौ वृक्षवल्मीकौ समीकौ मिथुनार्णवौ ॥ ७५ ॥
 सरण्यू वायुजलदौ संस्तरौ प्रस्तराध्वरौ ।
 क्षये रोधे च संरोधः संवर्तोऽब्दे जगत्क्षये ॥ ७६ ॥
 सङ्घर्षौ घर्षणं स्पर्धा शरखड्गौ तु सायकौ ।
 समिको वृक्षवल्मीकौ सृदाक् व्याघ्रपावकौ ॥ ७७ ॥

सविता सारथौ रुद्रे पितर्यर्के सुजातिभिः ।
 सन्निवेशे गणे गेहे संस्त्यायः संग्रहाः पुनः ॥ ७८ ॥
 स्वीकारोच्छ्रायसङ्क्षेपाः सम्भ्रमोऽत्यादरे भये ।
 सम्भवो जन्मसंहत्योराधारानतिरेचने ॥ ७९ ॥
 आधेयस्याथ सम्भोगो भोगे करिकरे रते ।
 प्रत्यक्षे सन्निधाने च सन्निधिः स्थपतिः पुनः ॥ ८० ॥
 स्थापत्येऽधिपतौ तद्दिण बृहस्पतिसवी च यः ।
 समाधिर्ध्याननीवाकप्रतिज्ञासु समर्थने ॥ ८१ ॥
 सन्नयः समवाये च पृष्ठस्थायिबलेऽपि च ।
 समयस्तु क्रियाकारे सङ्केते चरिते सताम् ॥ ८२ ॥
 सिद्धान्ते शपथे काले स्वाध्यायो जपवेदयोः ।
 सारसो विहगे चन्द्रे हिमारिः पावके रवौ ॥ ८३ ॥
 हर्यक्षो धनदे सिंहे व्रीह्याब्दार्चिष्णु हायनः ।
 महोदरेऽपि हेरम्बो हरिमा मृत्युरोगयोः ॥ ८४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

त्र्यक्षरकाण्डे पुलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

श्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अमनिः पशुवङ्कण्यां जलपात्रे च दारवे ।
 अदितिः शैलकन्यायां पृथिव्यां देवमातरि ॥ १ ॥
 अभिख्या त्विड्यशोनामस्वम्बिका मातुलान्युमा ।
 अमतिर्मरणे मोहेऽप्याकारे देह आकृतिः ॥ २ ॥
 आयतिर्दीर्घतायां स्यात् प्रभावागामिकालयोः ।
 उपधा सुपरीक्षाऽपि कृपाण्यामपि कर्तरी ॥ ३ ॥
 कल्पना समर्थनाऽपि कषिके सस्यमक्षिके ।
 कणिका तिलकाण्डेऽंशे गोधूमे तस्य चूर्णके ॥ ४ ॥
 करिका यातनायां स्याच्छ्लोके विवरणे कृतौ ।
 कूर्चिका मस्तुपिण्डेऽपि सूचितूलिकयोरपि ॥ ५ ॥
 तुर्येऽंशे मापदण्डस्य मापस्यापि च काकणी ।
 विंशतौ च कपर्दानां पादुकैककपर्दयोः ॥ ६ ॥
 गृहिणी काश्चिकं जाया देहली गृहकारिका ।
 वेश्याकरिण्योर्गणिका वेष्टनेऽपि च गोलका ॥ ७ ॥
 पार्या कालेऽपि घटिका रथयायामपि चत्वरि ।
 जुगुप्सा निन्दाघृणयोर्जननी करुणाऽम्बयोः ॥ ८ ॥
 जगती विष्टपे मह्यां वास्तुच्छन्दविशेषयोः ।
 छत्रान्तालाम्बिवस्त्रेऽपि भल्लरी केशवाद्ययोः ॥ ९ ॥
 चापे तृणत्वे तृणता दारिद्र्येऽपि च दुर्गतिः ।
 पद्माकरेऽब्जे नलिनी स्वास्थ्ये नाशे च निर्वृतिः ॥ १० ॥
 निवृत्तिस्तु मनस्तोपे मोक्षेऽस्तमयबाढयोः ।
 नालिका चुल्लिकारन्ध्रे विवरे देणुभाजने ॥ ११ ॥
 नाले काले देशमाने नियतिः संयमे विधौ ।
 प्रकृतिः पञ्चभूतेषु स्वभावे मूलकारणे ॥ १२ ॥
 छन्दःकारणगुह्येषु जन्त्वमात्यादिमातृषु ।
 पक्षतिर्गरुतो मूले द्वयोः प्रतिपदोरपि ॥ १३ ॥
 अधिकारे प्रकारे च प्रक्रियोत्पादनेऽपि च ।
 गृहादिधिष्ण्ये पिण्डे च जङ्घामांसे च पिण्डिका ॥ १४ ॥
 परीष्टिर्मार्गणे भक्तौ पङ्क्तौ पथि च पद्धतिः ।
 प्रतिष्ठे स्थितिमाहात्म्ये प्रतती ततिवीरुधौ ॥ १५ ॥

बोधे तिथौ च प्रतिपत् प्रवृत्तिर्वृत्त्युदन्तयोः ।
 प्रवेणी तु कुथावेण्योः प्रसृतिः पुत्रजन्मनोः ॥ १६ ॥
 पाताली वागुरा स्थाली बन्धकी तु करिण्यपि ।
 वृद्धी पद्यवार्ताक्योः कण्टकार्या च वाचि च ॥ १७ ॥
 भित्तिका तु शतावर्या वज्रे चाप्यथ मेखला ।
 श्रोणिस्थानेऽद्रिकटके कटिबन्धेऽसिबन्धने ॥ १८ ॥
 महिषी पशुराट्पत्न्योर्मर्यादा सीम्नि धारणे ।
 पेटा पुरी च मञ्जूषा मनाका कामिनी गजी ॥ १९ ॥
 गन्धत्ते रेवती देव्यां शुक्लायां रजनी निशि ।
 रोचना रक्तकल्हारे गवां पित्ते वरस्त्रियाम् ॥ २० ॥
 पथ्यायां गन्धुमाकन्यालोहिनीषु च रोहिणी ।
 नक्षत्रे कण्ठरोगे च वर्तनी वृत्तिमार्गयोः ॥ २१ ॥
 विपणिस्तु निषद्यापि वालुकोर्मिश्च वालुका ।
 बडवा स्त्रीविशेषेऽपि वाशिता करिणीस्त्रियोः ॥ २२ ॥
 वसतिस्तु निशि स्थित्यां जैनानामाश्रमे गृहे ।
 वाणिनी तु विदग्धायां नर्त्तक्यां मत्तयोर्षित ॥ २३ ॥
 वीणा विपञ्ची सैवालपदण्डा सा नवतन्त्रिका ।
 वृषल्यनुमती कन्या शूद्रा बन्ध्या मृतप्रजा ॥ २४ ॥
 वनिता स्निग्धनार्याश्च नार्याश्चाप्यथ वेदिका ।
 वेदिश्चाङ्गुलिमुद्रा च काञ्ची छन्दश्च शकरी ॥ २५ ॥
 शङ्कुल्यपूपभेदेऽपि शिञ्जिनी नूपुरज्ययोः ।
 शर्करा तु शिलाभेदे रुग्भेदाल्पकपालयोः ॥ २६ ॥
 शर्करावत्प्रदेशेषु सितायां शकले गुडे ।
 समितिः परिषत्स्थाने युद्धे संसदि सङ्गमे ॥ २७ ॥
 सन्ततिस्त्वन्ववाये स्यात् पारम्पर्ये सुतेऽपि च ।
 संहिता वर्णसंयोगे शास्त्रवेदैकदेशयोः ॥ २८ ॥
 सिद्धौ स्वभावे संसिद्धिर्वाञ्छाऽनुज्ञा च सम्मतिः ।
 संविती ज्ञानसंवादौ ह्यादन्यौ वज्रविद्युतौ ॥ २९ ॥
 हरिणी हरिता पाण्डुः सुवर्णप्रतिमा मृगी ॥ ३० ॥

इत भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

त्र्यक्षरकाण्डे स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अयनं निलये मार्गे सूर्योदग्दक्षिणागतौ ।
 अंशुकं केवले वस्त्रे सूक्ष्मवस्त्रोत्तरीययोः ॥ १ ॥
 अभीक्ष्णमव्ययं वा स्यात् पौनःपुन्यभृशार्थयोः ।
 अरुलं सलिले पोतेऽप्यलीकं त्वप्रियेऽनृते ॥ २ ॥
 अनूकमन्वये शीलेऽप्यारूपदं स्थानकृत्ययोः ।
 स्तम्भमात्रेऽपि चालानं हस्तिनोऽसेऽपि चासनम् ॥ ३ ॥
 रेतसीन्द्रियमक्षे च दर्शनेऽक्षणि चेक्षणम् ।
 उद्यानं सङ्ग्रहोद्गत्योवेनभेदे प्रयोजने ॥ ४ ॥
 उत्थानमुद्यमे वास्तौ तन्त्रेहापौरुषेषु च ।
 उद्धानमुद्यमे चुल्ल्यामौशीरे दण्डचामरे ॥ ५ ॥
 कटीरं कन्दरे कट्यां कलत्रं श्रोणिभार्ययोः ।
 क्रन्दनं रुदिते ध्वाने कार्मुकं शस्त्रचापयोः ॥ ६ ॥
 कारणं हेतुवधयोः कारकं हिंसकेऽपि च ।
 कीलालं रुधिरं तोये कुहरं गह्वरे बिले ॥ ७ ॥
 कुरीरं ग्राम्यधर्मेऽब्जे कुन्नानं कुण्डशिक्ययोः ।
 कैतवं कपटे द्यूते कृपीटमुदरे जले ॥ ८ ॥
 करणं कारणे काये साधने बवकादिषु ।
 स्पृष्टाद्युच्चारणाभेदध्यानपद्मासनादिषु ॥ ९ ॥
 रतबन्धे नाड्यभेदे गीतके कर्मणीन्द्रिये ।
 कौतुकं विषयाभोगे हस्तसूत्रे कुतूहले ॥ १० ॥
 कामे ख्याते मङ्गले च हस्तसूत्रेऽपि कङ्कणम् ।
 कटित्रं चर्म सुस्यूतं कटीवेष्टनचर्म च ॥ ११ ॥
 कोदण्डं तु चतुर्हस्तं धनुर्वेणुर्धनुर्धरः ।
 केतौ तु केतनं चापे कृत्यार्थोपनिमन्त्रणे ॥ १२ ॥
 कौलीनं प्राणिभिर्द्यूते कुलीनत्वापवादयोः ।
 गुह्यकार्ये च कौपीनं गन्धनं तु प्रकाशने ॥ १३ ॥
 सूचनेऽपि च हिंसायां परस्योत्साहनेऽपि च ।
 ग्रहणं बन्दिरादानमादरोऽर्काद्यप्लवः ॥ १४ ॥

गह्वरं कन्दरे दम्भे चलनं पादयन्त्रयोः ।
 जघनं स्यात् कटौ पूर्वश्रोणिभागापराङ्गयोः ॥ १५ ॥
 तलिमं कुट्टिमे तल्पे तर्पणं त्विन्धनेऽपि च ।
 तानितं तूलितपटे गुणवादित्रभाण्डयोः ॥ १६ ॥
 तेमनं व्यञ्जने क्लेदे तोत्रे तोदे च तोदनम् ।
 दर्शनं चक्षुषि स्वप्ने बुद्धिशालोपलब्धिषु ॥ १७ ॥
 दुकूलं शुक्लवस्त्रेऽपि द्योतनं दीपनेऽद्दिण च ।
 धाराग्रमवतारेऽश्रौ निमित्तं हेतुलक्षयोः ॥ १८ ॥
 नाभीलं नाभिगन्धश्च वङ्कणं च वरस्त्रियाः ।
 निर्याणं हस्तिनेत्रान्ते मरणे निर्गमेऽपि च ॥ १९ ॥
 निर्वाणं निर्वृतौ मोक्षे विनाशे गजमज्जने ।
 निदानमपदाने स्यात् खण्डनेऽप्यादिकारणे ॥ २० ॥
 पललं तिलचूर्णे स्यान्मांसकर्दमभेदयोः ।
 प्रयाणं गजद्वक्पूर्वप्रदेशे मरणे गतौ ॥ २१ ॥
 प्रज्ञानं लाञ्छने बुद्धौ प्रसूनं फलपुष्पयोः ।
 पातालं लोक और्वश्च पतत्रं खे गरुत्यपि ॥ २२ ॥
 नवसूतगवीदुग्धे पीयूषममृतेऽपि च ।
 प्रमाणं बोधनेयत्तामर्यादाशास्त्रहेतुषु ॥ २३ ॥
 सम्यग्वक्तरि चाथ स्यात् प्रायणं मरणे गतौ ।
 पुष्करं हस्तिहस्ताग्रे जले वाद्यमुखे युधि ॥ २४ ॥
 खेऽब्जे दिव्यसिधारायां तीर्थभेषजभेदयोः ।
 ब्राह्मण्यं ब्राह्मणत्वे स्याद्विप्रौघे विप्रकर्मणि ॥ २५ ॥
 वाल्मीकिं कुङ्कुमं हिङ्गु भण्डनं कवचे रणे ।
 भूतिकं भूमिनिम्बे च भूस्तृणे कत्तणेऽपि च ॥ २६ ॥
 मणीचमग्रहस्तेऽपि पुष्पमौक्तिकयोरपि ।
 मन्दिरं देहपुर्योश्च सम्बन्धे मैथुनं रते ॥ २७ ॥
 यापनं स्यान्निरसने नृत्ते प्रस्यापनेऽपि च ।
 लक्षणं कार्षिके चिह्ने नाम्नि मुद्राङ्गसम्पदोः ॥ २८ ॥
 लाङ्गूलं बालधौ मेढ्रे वर्जनं त्यागहिसयोः ।
 वराङ्गं स्त्रीभगे मूर्ध्निच्छेदे वृद्धौ च वर्धनम् ॥ २९ ॥
 व्यञ्जनं श्मश्रुनिष्ठानचिह्नेष्ववयवेऽक्षरे ।
 वृद्धत्वे वृद्धसङ्गाते वृद्धकर्मणि वार्द्धकम् ॥ ३० ॥

बालकं त्वङ्गुलीये स्याद् बर्हिष्ठे वलयेऽपि च ।
 व्युत्थानं प्रतिकूलत्वे स्वातन्त्र्यकरणेऽपि च ॥ ३१ ॥
 व्यसनं शक्तिविपदोदैवानिष्टफलेऽहसि ।
 पैशुन्यादौ च कोपोत्थे मृगयादौ च कामजे ॥ ३२ ॥
 विधानं हस्तिकबले प्रेरणेऽभ्यर्चने धने ।
 वेतने चाप्युपाये च प्रकारे वैरकर्मणि ॥ ३३ ॥
 वेष्टने मकुटोष्णीषौ शकले खण्डवल्कले ।
 शाळुकं पङ्कजे कन्दे जले शमलमप्यथे ॥ ३४ ॥
 शासनं निग्रहे लेख्ये वेदवाक्येषु कर्मणि ।
 वाङ्मनियोगे प्रहरणे शास्त्रे ग्रामे च निष्करे ॥ ३५ ॥
 साधनं शेर्फास धने सिद्ध्युपायनिवृत्तिषु ।
 मारणे मृतसंस्कारे दापनेऽनुगमे गमे ॥ ३६ ॥
 सेनाङ्गे यातनायाञ्च सेवनं स्यूतिसेवयोः ।
 मृत्यौ समाप्तौ संस्थानं सन्निवेशे चतुष्पथे ॥ ३७ ॥
 मणौ शीघौ शीघुपाने सरकं मद्यभाजने ।
 सामर्थ्ये शक्तिसम्बन्धौ हृदयं तु मनस्यपि ॥ ३८ ॥
 हिरण्यं काञ्चने वित्ते मानभेदेऽप्यकुप्यके ।
 हरणं करणे नृत्ते चापेनान्यास्त्रवारणे ॥ ३९ ॥
 हृतौ कथितशीताप्सु पणने यौतकादिके ॥ ३९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

त्र्यक्षरकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अर्थवल्लिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

अधमौ गर्हितन्यूनावभीकौ निर्भयाभिकौ ।
 प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षमखिलं गर्हकृत्स्नयोः ॥ १ ॥
 आविष्टौ क्षिप्तकुटिलावाहतौ सादराचितौ ।
 विपन्नप्राप्तावापन्नावाभीलौ कष्टभीषणौ ॥ २ ॥
 आप्लुतौ स्नातकस्नातावाहतं गुणिते हते ।
 आयस्तः कुपिते क्षिप्ते क्लेशिते तेजितेऽपि च ॥ ३ ॥
 इरिणं तूषरस्थाने भूभागे च निराश्रये ।
 उदारो महति ख्याते दक्षिणे दानशौण्डके ॥ ४ ॥
 उद्धृतं भुक्तनिर्मुक्ते तुलिते चाप्यथोच्छ्रितम् ।
 वृद्धे तुङ्गे समुत्पन्नेऽप्युदितौ कथितोद्गतौ ॥ ५ ॥
 उदूढावृढप्रथुलावुत्तमौ प्रवरान्तिमौ ।
 महत्युदात्त उच्चोक्तेऽप्युपोढो निकटोढयोः ॥ ६ ॥
 अभ्यस्तेऽप्युचितं न्याग्येऽप्युषितं स्थितदग्धयोः ।
 उत्तलो द्रुत उत्तानेऽप्युत्कटो मत्त उद्भटे ॥ ७ ॥
 करालो दन्तुरे तुङ्गे विशाले विकृतेऽपि च ।
 कर्कशः प्रखरस्पर्शे निर्दये साहसिन्यपि ॥ ८ ॥
 द्वौ कनिष्ठकनीयांसौ यून्यत्यल्पेऽनुजेऽपि च ।
 क्षुल्लका नीचनिःस्वाल्पाः कलितो ज्ञातबद्धयोः ॥ ९ ॥
 कल्माषौ कृष्णसिन्धौ च कुहकोऽपीर्ष्या युते ।
 क्षेत्रियं दुष्प्रतीकारे व्याधौ क्षेत्रोद्भवे तृणे ॥ १० ॥
 देहान्तरचिकित्सार्हे गरले पारदारिके ।
 चतुरौ दक्षधीमन्तौ जघन्योऽन्त्यकुपूपयोः ॥ ११ ॥
 जरठः कठिने जीर्णे तलिनो विरलाल्पयोः ।
 पशुः कालेऽपि निःशृङ्गो नरोऽश्मश्रुश्च तूपरौ ॥ १२ ॥
 दुर्विधो निर्धने नीचे निहतो न्यक्स्वरे हते ।
 निर्ग्रन्थः श्रमणे निःस्वे निरस्तस्तु निराकृते ॥ १३ ॥
 निष्कृत्यते प्रास्तवान्ते च वचने च द्रुतोदिते ।
 निवातो दृढसन्नाहे निर्वातेऽप्याश्रयेऽपि च ॥ १४ ॥
 निर्दयः परदोषोक्तिपरे निष्ठुरभाषिणि ।
 प्रणाय्योऽसम्मतेऽपि स्यादनभिष्वङ्गवत्यपि ॥ १५ ॥

प्रतीतो भूषितो ख्याते ज्ञाते प्रत्ययिते बुधे ।
 प्रार्थितं त्वभियुक्ते स्यान्निहिते याचितेऽपि च ॥ १६ ॥
 पिण्डिलः स्थूलजङ्घे च गणनाकुशलेऽपि च ।
 प्रतीक्ष्यौ प्रतिपाल्याच्यौ प्रथमौ प्रवरादिमौ ॥ १७ ॥
 प्रहतौ क्षुण्णव्युत्पन्नौ प्रयतौ पूतसंस्कृतौ ।
 सव्यायत्तौ प्रसव्यौ द्वौ प्रवृद्धौ प्रसृतैधितौ ॥ १८ ॥
 पिण्डितौ घनसङ्ख्यातौ प्रसिद्धौ ख्यातभूषितौ ।
 पेशलौ चारुचतुरौ पूर्णश्रेष्ठौ तु पुष्कलौ ॥ १९ ॥
 मिश्रास्त्रिधौ च परुषौ प्रगाढो गहने दृढे ।
 पामरोऽपशदेऽङ्गे च बालेशो बालमूर्खयोः ॥ २० ॥
 बीभत्सौ क्रूरविकृतौ बहलौ सान्द्रपुष्कलौ ।
 बन्धुरौ नम्रमुन्दरौ भङ्गुरौ वक्रनश्वरौ ॥ २१ ॥
 भावितौ लब्धवासितौ भुजिष्यौ स्वैरिक्किङ्करौ ।
 मधुरौ स्वादुमुन्दरौ मूर्च्छितौ मूढसोच्छ्रयौ ॥ २२ ॥
 विधुतौ त्यक्तकम्पितौ विदितौ ज्ञातसंशुतौ ।
 विलीनौ लीनविद्रुतौ वेल्लितौ धूतकुञ्चितौ ॥ २३ ॥
 विगतौ वीतनिस्पृहौ विवित्तौ शुद्धनिर्जनौ ।
 विवर्णौ मूर्खदुर्वर्णौ व्यायतो व्यापृते दृढे ॥ २४ ॥
 विकृतौ रोगिदूरूपौ विशदो धवले शुचौ ।
 वल्लभौ दयिताध्यक्षौ वरिष्ठोऽतिवरेऽत्युरौ ॥ २५ ॥
 पृथौ कराले विकटो विस्तृतं विगते तते ।
 वदान्यो वल्गुवाग्दत्तोर्वरीयान् सत्तमेऽत्युरौ ॥ २६ ॥
 विवशस्त्वस्वतन्त्रात्माप्यरिष्टेन च दुष्टधीः ।
 विधुरः पत्न्यपेते स्यात् क्लिष्टविश्लिष्टयोरपि ॥ २७ ॥
 संस्कृतं लक्षणोपेते कृत्रिमे निर्मलीकृते ।
 मिश्रीकृते च संसृष्टं शुद्धे च वमनादिभिः ॥ २८ ॥
 साधीयोऽनुमतेऽत्यर्थं सत्तमे शोभनेऽपि च ।
 तथ्यपथ्यार्थवाक्येऽपि सूतृतोऽथ क्षमे हिते ॥ २९ ॥
 सम्बद्धेऽपि समर्थः स्यात् स्तिमितं स्तम्भवत्यपि ॥ ३० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

त्र्यक्षरकाण्डे अर्थवल्लिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

गुणाद्यर्थेऽर्थलिङ्गत्वमिहाप्युक्तं स्वयं क्वचित् ।
 अन्तरः परिधानीये बाह्ये स्वीयेऽन्तरात्मनि ॥ १ ॥
 क्ली तु मध्येऽवकाशे च तादर्थ्येऽवसरेऽवधौ ।
 विशेषविवरान्तर्धिष्ववसानविनार्थयोः ॥ २ ॥
 अक्षरोऽसौ हरौ धातर्यक्षरं प्रणवे विधौ ।
 धर्मे वर्णे तपःक्रत्वोः खे मोक्षे मूलकारणे ॥ ३ ॥
 अनन्तो नागराड्विष्णुरनन्तं खनिरन्तयोः ।
 अनन्ता पूर्णिमा दूर्वा यवावः शारिबा मही ॥ ४ ॥
 अर्जुनः पाण्डवे पाण्डौ मातुरेकसुते हुमे ।
 नेत्ररोगे चाजुनं तु तृणे हेमन्यर्जुनी गवि ॥ ५ ॥
 विषारुणारुणं ताम्रमरुणः सूर्यसारथौ ।
 अव्यक्तराने शशिजे सन्ध्याध्रे लोहिते रंभौ ॥ ६ ॥
 अमृतं व्योम्नि देवान्ने यज्ञशेषे रसायने ।
 अयाचिते जले जग्धौ मोक्षेऽन्ने हेम्नि गोरसे ॥ ७ ॥
 क्लीवो ना त्वमरे स्त्री तु गुल्फ्यां मद्यभिक्षयोः ।
 आमलक्यां हरीतक्यां त्रिषु तु स्वादुनित्ययो ॥ ८ ॥
 अरिष्टो वायसे निम्बे गोरसे निरुपद्रवे ।
 क्ली तु वर्णे मृत्युचिह्ने मद्ये तान्ने शुभेऽशुभे ॥ ९ ॥
 अङ्गजो ना सुतेऽनङ्गे क्ली रोगे रुधिराऽपि च ।
 न ना क्वाटे क्ली लोहे सोमे स्यादररः पुमान् ॥ १० ॥
 लाजेऽवभ्योषमभ्योषाः साव्याम्भःपेयसक्तवः ।
 कृकलासेऽण्डजो मत्स्ये खगे कसूरिकाऽण्डजा ॥ ११ ॥
 अविषो निर्विषेऽम्भोधावविषो दिवि पुंसि वा ।
 अपानो देहजो वायुरपानं वृषणे गुदे ॥ १२ ॥
 प्रधानेऽव्यक्तमव्यक्तो ब्रह्मण्यस्पष्टमूर्खयोः ।
 अमरेन्द्रपुरी स्थूणा गुडुची चामराः सुराः ॥ १३ ॥
 क्लृप्तं तण्डुले धान्ये न ना लाजेषु ना यवे ।
 अजिरं जर्जरे कामे विषयाङ्गणयोर्द्विजे ॥ १४ ॥
 अलसौ पादरुङ्मन्दावण्डीरौ शक्तपूरुषौ ।
 विद्युत्पन्योरङ्गुथशनिरनीकोऽस्त्री चमयुधोः ॥ १५ ॥

अधरोऽनूर्ध्वहीनोष्ठेऽवनृतं वितथे कृषौ ।
 आश्रमोऽस्त्री मुनिस्थाने ब्रह्मचर्यादिके मठे ॥ १६ ॥
 कोट्टरे कृपणे जीर्णे स्थानेऽभिप्राय आशयः ।
 शर्करायां दृष्टपुत्रे स्र्यस्र्यश्मन्युपलो मणौ ॥ १७ ॥
 उत्तरं प्रतिवाक्ये स्यादुदीच्ये प्रवरोर्ध्वयोः ।
 स्त्रीलिङ्गत्वे धनुर्लक्ष्म्यां पुरुषे पावके च ना ॥ १८ ॥
 करीरो ना घटे न स्त्री पादपे वैणवाङ्कुरे ।
 करेणुस्तु करिण्यां स्त्री कर्णिकारे गजे च ना ॥ १९ ॥
 भिक्षापात्रे तु कमठं कमठौ खर्बकच्छपौ ।
 अस्त्री कशिपु शय्यायां वस्त्रेऽन्ने तद्द्वयेऽपि च ॥ २० ॥
 करटो दुर्दुरुटे स्याद् बिल्वे काकेभगण्डयोः ।
 कल्याणी क्षमोमयोः क्ली तु मङ्गलेऽक्षयरुक्मयोः ॥ २१ ॥
 रागे काथे कषायोऽस्त्री निर्यासे सौरभे रसे ।
 कान्तार इक्षुभेदे ना न स्त्री व्यध्वे महावने ॥ २२ ॥
 कीनाशो रक्षसि यमे कदर्ये कर्षकेऽर्थवत् ।
 कुहनो मूषिके सेष्ये कुहना दम्भशीलता ॥ २३ ॥
 कुशलं निपुणे पुण्ये पर्याप्तौ मङ्गले क्षमे ।
 कुकूलं शङ्कुभिः कीर्णे श्वभ्रे ना तु तुषानले ॥ २४ ॥
 कुण्डली चित्रलमृगे सर्पे कुण्डलवत्यपि ।
 कुङ्कुमे महारजने कुसुम्भं ना कमण्डलौ ॥ २५ ॥
 केवलं निश्चिते क्लीवे वाच्यवत्त्वेककृत्स्नयोः ।
 कमलं छुरिकादीनां हेमाद्यैश्चित्रिताजिने ॥ २६ ॥
 रक्ताब्जजेऽप्सु च श्रीस्तु कमला कमलो मृगः ।
 अक्ली कोल्यां क्रोष्टुकोल्यां कर्कन्धूः स्त्री तु संयुगे ॥ २७ ॥
 तथा मध्वाज्यसंसिक्तधवलाजजतर्पणं ।
 कुमारः स्याद् गुहे बाले वरणेऽश्वानुचारके ॥ २८ ॥
 युवराजे च ना क्ली तु द्वीपे पुंस्त्री मृगोमयोः ।
 कुतपो भागिनेयेऽर्के विप्रेऽग्नावतिथौ गवि ॥ २९ ॥
 अस्त्री त्वहोऽष्टमे भागे तिलेषु छागकम्बले ।
 दर्भे च केसरस्त्वस्त्री सिंहकेशाश्वकेशयोः ॥ ३० ॥
 कलिलं गहने वृन्दे सैन्येऽपि कटकोऽस्त्रियाम् ।
 किञ्चल्कः केसरे खे क्ली कृषकौ फालकर्षकौ ॥ ३१ ॥

कातरः पण्डके त्रस्नौ क्षेत्रज्ञावात्मशिक्षितौ ।
 कुसीदमृणवृद्धौ क्ली वाच्यवद् वृद्धिजीविनि ॥ ३२ ॥
 कलिङ्गं तु यवे ना तु देशपक्षिविशेषयोः ।
 खनको भूमिवित्तज्ञे मूपिकेऽप्यवदारके ॥ ३३ ॥
 गर्जितो मत्तमातङ्गे क्ली तन्नादेऽम्बुदध्वनौ ।
 गण्डूषोऽस्त्री गण्डपूर्तौ प्रसृते गजपुष्करे ॥ ३४ ॥
 पार्थचापे चापमात्रे गाण्डीवो गाण्डिवोऽस्त्रियौ ।
 कशेरुहेम्नोर्गाङ्गेयं गाङ्गेयो गुहभीष्मयोः ॥ ३५ ॥
 ग्रामणीः स्वामिनि श्रेष्ठे ग्रामेशे नापिते तु ना ।
 गोमुखोऽस्त्री वाद्यभेदे नक्रे नाले वने नपुम् ॥ ३६ ॥
 गोष्पदं गोखुरश्वध्रे मानगोगम्ययोरपि ।
 वृत्तैकमक्ते चरणे चरणा बह्वचादयः ॥ ३७ ॥
 स्थण्डिले प्राङ्गणे च क्ली चत्वरं ना चतुष्पथे ।
 चातुरः शकटे चक्रगण्डे नयनगोचरे ॥ ३८ ॥
 चपलः पारदे शीघ्रे दुर्विनीते चले कपौ ।
 चले केशे च चिकुरो जराटवस्त्र्यम्बुजेऽपि च ॥ ३९ ॥
 जृम्भितं जृम्भणोऽम्बुविष्वदेषु विचेष्टिते ।
 जीवकः प्रवरे जन्तौ श्रमणे वृद्धिजीविनि ॥ ४० ॥
 जर्जरस्त्रिषु जीर्णे स्यात् पुमानिन्द्रध्वजे पिके ।
 टगरष्टङ्गनक्षारे ना केकरदृशि त्रिषु ॥ ४१ ॥
 स्त्री नौनद्योर्ब्रजस्तम्भे तरणिर्नार्णवे रवौ ।
 भुवीन्द्रपुत्र्यां तविषी ताविष्यब्धिदिवोनरौ ॥ ४२ ॥
 तमिस्रा स्त्री ध्वान्तनिशि निश्यन्धतमसे न ना ।
 तातगुः शूद्रताते ना ताताय तु हिते त्रिषु ॥ ४३ ॥
 तातलो लोहकूटे ना त्रिषु तप्ते मनोजवे ।
 तरलो भास्वरे हारे चञ्चलेऽप्यथ तारका ॥ ४४ ॥
 न नाक्षिमध्ये नक्षत्रे द्विजिह्वौ सूचकोरगौ ।
 दुर्वर्णं दुष्प्रभे रूप्ये देयभेदे तु दक्षिणा ॥ ४५ ॥
 त्रिष्ववाकसरलावामेष्वन्यच्छन्दानुवर्तिनि ।
 कनिष्ठपत्न्यामरतौ पुनर्भूपरिविन्नयोः ॥ ४६ ॥
 स्त्री पुनर्भवास्तु पत्यौ ना दिधिषुर्दिधिषूरपि ।
 स्याद् दीपकमलङ्कारे स्वरूपे दीप्तिमत्यपि ॥ ४७ ॥

दुन्दुभिः पुंसि भेर्या स्त्री त्वक्षबिन्दुत्रिकद्वये ।
 धषणं सुरते धाष्ट्ये कुलटायां तु धर्षणी ॥ ४८ ॥
 चारौ श्रेष्ठे वृषे श्वेते धवलो धवली गवि ।
 धौताञ्जले रजक्याञ्च धावनी धावनं गतिः ॥ ४९ ॥
 धिषणा स्त्री धियां गौर्या स्त्रीचिह्ने ना तु गीष्पतौ ।
 नागरं पुरजे चुक्रे शुण्ठीराजकशेरुणोः ॥ ५० ॥
 निधनोऽस्त्री कुले नाशे निखिंशः क्रूरखड्गयोः ।
 नालीकमञ्जे बाणे ना निशान्तं गृहशान्तयोः ॥ ५१ ॥
 केशादिशौक्ये पलितं शैलेये ना तु कर्दमे ।
 पटलं दृष्टुकच्छदिषोः क्ली न ना पिटके गणे ॥ ५२ ॥
 पर्याप्तं स्याद्यथाकामे तृप्तौ शक्तौ निवारणे ।
 प्रवणो दक्षिणे प्रह्णे क्रमनिम्ने चतुष्पथे ॥ ५३ ॥
 प्रकाशोऽर्चिषि दीधित्यां ना तुल्यस्फुटयोस्त्रिषु ।
 मुखे प्रतीकस्त्रिषु तु प्रतिकूलानुरूपयोः ॥ ५४ ॥
 वीणादण्डे प्रवालोऽस्त्री विद्रुमे नवपल्लवे ।
 प्रसूनमर्थवज्जाते पुष्पे क्ली सारथौ पुमान् ॥ ५५ ॥
 प्रग्रीवमस्त्री कलशे ग्रीवाप्रासादयोरपि ।
 पाटला गवि पाटल्यामाशुग्रीहिस्तु पाटलः ॥ ५६ ॥
 पिनाकोऽस्त्री रजोवर्षे शूले शङ्करधन्वनि ।
 त्रिषूर्ध्वबाहुपुमात्रे क्ली पुंसो भावकर्मणोः ॥ ५७ ॥
 पौरुषं पल्लवं त्वस्त्री प्रकोष्ठेऽप्यतिविस्तृतौ ।
 पवित्रोऽग्नौ हरौ पूते क्ली तु ताम्रेऽप्सु गोमये ॥ ५८ ॥
 मन्त्रे दध्नि ब्रह्मसूत्रे हेम्नमर्थे कलशे कुशे ।
 पुलस्त्यवंश्ये पुरुषे पौलस्त्यः क्ली तु संयुगे ॥ ५९ ॥
 फलकी चन्दने स्त्री न स्त्री दार्वासनचर्मणोः ।
 फेनिलं बदरे फेनयुक्तेऽथ ब्राह्मणो द्विजे ॥ ६० ॥
 आमत्से क्ली तु विधिवद्वेदभागतदंशयोः ।
 बहुलः कृष्णपक्षेऽग्नौ पुमांस्त्रिष्वसिते बहौ ॥ ६१ ॥
 स्त्री स्यात् पृथिव्यामुस्त्रायामेलायां कृत्तिकासु च ।
 भविलं भवने भव्ये भ्रमरः कामुकेऽलिनि ॥ ६२ ॥
 उद्याने मलयं ना तु गिर्यशगिरिभेदयोः ।
 मत्सरोऽन्योदयद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु ॥ ६३ ॥

मन्थरः सूचके कोपे मन्थाने मन्दगामिनि ।
 मार्गणं मृगणायां स्यान्मार्गणो याचके शरे ॥ ६४ ॥
 दूर्वायां स्त्रीक्षुमूले क्ली गोरसेऽपि च मोरटम् ।
 त्रिलिङ्गं मण्डलं वृन्दे ग्रामौघप्रतिबिम्बयोः ॥ ६५ ॥
 उपसूर्यं कुष्ठरोगे देशे द्वादशराजके ।
 मुचिरौ धर्मदातारौ मोदकौ खाद्यहर्षकौ ॥ ६६ ॥
 पित्रादेः कन्वयाऽऽप्तेऽर्थे क्ली स्वीये त्रिषु यौतकम् ।
 युतकं युगले युक्ते यौतके वसनाञ्चले ॥ ६७ ॥
 संश्रयेऽग्रे च शूर्पस्य वस्त्रभेदे च योषितः ।
 रसनं क्ली कषायेऽन्ने द्रवे स्नेहे विषे फले ॥ ६८ ॥
 निर्यासे हेम्नि रूप्ये च जिह्वास्वादनयोर्न ना ।
 रेवटं दक्षिणावर्तशङ्खे रेणौ तु रेवटः ॥ ६९ ॥
 वातूले विषवैद्येऽथ रजतं शोणिते हृदे ।
 श्वेते हारेऽप्यथोष्ट्रेऽलौ रवणः शब्दनेऽर्थवत् ॥ ७० ॥
 रोषाणो रोषणे स्वर्णघर्षणग्राट्णि पारदे ।
 रौहिणं रक्तकतूणे मत्स्यभेदे मृगे च ना ॥ ७१ ॥
 लालसा तु ना नौत्सुक्ये दौहदाद्यभिलाषयोः ।
 ललामोऽस्त्री ललामापि प्रभावे पौरुषे ध्वजे ॥ ७२ ॥
 श्रेष्ठे भूषापुण्ड्रशृङ्गपुच्छचिह्नाश्वलिङ्गिषु ।
 लोचको मांसपिण्डे स्यान्नीलिन्यां चर्मणि भ्रुवि ॥ ७३ ॥
 रक्तांशुके दुष्टबुद्धौ क्रोष्टृधूतौ तु वज्रकौ ।
 विनीतस्त्रिष्वपि प्राप्ते निश्च्युते विजितेन्द्रिये ॥ ७४ ॥
 विनयं ग्राहिते चैष सुखवाहिहये पुमान् ।
 विषयी राज्ञि कन्दर्पे विषयस्थजने च ना ॥ ७५ ॥
 अर्थवद्विषयोपेत इन्द्रिये तु नपुंसकम् ।
 अस्त्री वितानमुल्लोचे विस्ताराध्वरयोः क्षणे ॥ ७६ ॥
 त्रिषु शून्ये च मन्दे च विषाण्युक्षेभश्चङ्गिषु ।
 भेक्यां पुनर्नवायां स्त्री वर्षाभूर्ददुरे न षण् ॥ ७७ ॥
 वयःस्थाऽऽमलकीपथ्यान्नाह्वीषु तरुणे त्रिषु ।
 वलजा वरनार्या च क्षेत्रे द्वारि च सा न ना ॥ ७८ ॥
 वर्णकोऽस्त्री प्रकारे स्याच्चन्दने स्यङ्गलेपने ।
 दुःखे विलक्षे व्यलीकमप्रियाकार्ययोस्तु ना ॥ ७९ ॥

वातूलो वातसङ्घाते वातले मरुतोऽसहे ।
 विहायाः पुनपुं व्योम्नि पुमानैव पतत्रिणि ॥ ८० ॥
 विशिखा तु खनित्री च क्ली चित्ते ना त्वसौ शरे ।
 विमानोऽस्त्री देवयाने सप्तभूमे च सद्मनि ॥ ८१ ॥
 विटपोऽस्त्री द्रुविस्तारे पल्लवे स्तम्बशाखयोः ।
 विषाणस्त्रिषु लिङ्गेषु पश्वङ्गगजदन्तयोः ॥ ८२ ॥
 वेदना दुःखानुभवे ज्ञाने च स्त्रीनपुंसकम् ।
 स्कन्दे विशाख ऋक्षे स्त्री विहायः स्फुटहासयोः ॥ ८३ ॥
 पापेऽपि वृजिनं केशे पुमानिन्दुस्तु शर्वरः ।
 स्त्री रात्रिसन्ध्याशर्वर्योदैत्ये ना शम्बरोऽप्सु षण् ॥ ८४ ॥
 शयथुस्त्रिषु निद्रालौ मृत्यावजगरे च ना ।
 शय्यायां शयनं न स्त्री निद्रासुरतयोर्नपुम् ॥ ८५ ॥
 शरत्पक्कादिशालीनौ प्रत्यग्नोऽब्जश्च शारदः ।
 गम्भार्या कट्फले श्रीपर्ण्यग्निमन्थाब्जयोर्नपुम् ॥ ८६ ॥
 यमेऽपि शमनो ध्वान्ते क्ली हिंसे त्रिषु शार्वरः ।
 करञ्जभेदे षड्ग्रन्थः षड्ग्रन्था ग्रन्थिकं वचा ॥ ८७ ॥
 समानः प्राणभेदे ना त्रिष्वेकसमसाधुषु ।
 संस्कारो ना संस्कृतिः स्त्री सङ्कल्पप्रतियत्नयोः ॥ ८८ ॥
 स्पर्शनः पवमाने स्यात् स्पर्शनं सृष्टिदानयोः ।
 सारङ्गः शबलो वर्णश्चातकः षट्पदो मृगः ॥ ८९ ॥
 छिद्रे छिद्रान्विते वाद्ये सुपिरं सुषिरो नडः ।
 सुमनाः पुष्पमालत्योः स्त्री देववुधयोः पुमान् ॥ ९० ॥
 सैन्धवोऽश्वेऽश्वभेदे ना न स्त्री तु लवणोत्तमे ।
 बदरेऽपि च सौवीरं ना नीवृद्रोपघोण्टयोः ॥ ९१ ॥
 सङ्गरो ना क्रियाकारे प्रतिज्ञाविपदोर्युधि ।
 शमीफले तु षण्डोऽथ सम्बाधौ योनिसङ्कटौ ॥ ९२ ॥
 सुरभिर्वाच्यवत् सौम्ये सुगन्धौ स्त्री त्वसौ गवि ।
 पुमांश्चैत्रे वसन्ते च सेवकौ स्यूतभाजकौ ॥ ९३ ॥
 सुकृतं शोभने धर्मे हर्षुलो मृगकामिनोः ॥ ९३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

त्र्यक्षरकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

त्र्यक्षरकाण्डः समाप्तः ॥ ७ ॥

८. अथ शेषकाण्डः

पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अकारादिक्रमेणादाविहोक्त्वा चतुरक्षरान् ।
 अध्यायान्तेषु सङ्कीर्णाः कृताः पञ्चाक्षरादयः ॥ १ ॥
 अनुबन्धो दोषभावे प्रकृत्यादेर्विनश्वरे ।
 मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्तने ॥ २ ॥
 अपहारः पुनश्चोरे द्यूतयुद्धादिविश्रमे ।
 निमन्त्रणोपनेतव्यद्रव्ये ग्राहाख्ययादसि ॥ ३ ॥
 अवग्रहो वृष्टिरोधे प्रतिबन्धे गजालिके ।
 अवष्टम्भः समालम्भे स्तब्धिकाञ्चनयोरपि ॥ ४ ॥
 पिशाचादिग्रहे तीर्थेऽप्यवतारोऽवतारणे ।
 अवरोहोऽवतरणं शाखाप्याग्रादुगताङ्घ्रितः ॥ ५ ॥
 अधिवासो निवासे स्याद् गन्धधूपादिसंस्कृतौ ।
 अपवर्गः क्रियासाध्यफलाप्तौ त्यागमोक्षयोः ॥ ६ ॥
 अपभ्रंशोऽपशब्दे स्याद् भाषाभेदप्रपातयोः ।
 अपदेशस्तु लक्ष्णे स्यान्निमित्तव्याजयोरपि ॥ ७ ॥
 अनुभावः प्रभावे स्यान्निश्चये भावसूचके ।
 पश्चात्तापे त्वनुशयो दीर्घद्वेषानुबन्धयोः ॥ ८ ॥
 अनुषङ्गस्तु कारुण्ये प्रकृतस्यानुवर्तने ।
 अभिमानस्तु विज्ञाने प्रणये दर्पहिसयोः ॥ ९ ॥
 अभिषङ्गस्त्वभिभवे सङ्ग आक्रोशनेऽपि च ।
 अभिहारोऽभियोगे च चौर्यसन्नाहयोरपि ॥ १० ॥
 स्नाने मद्यस्य सन्धानेऽभिषवः सवनेऽपि च ।
 अभिग्रहोऽभियोगे च समन्ताद्ग्रहणेऽपि च ॥ ११ ॥
 संयुगे स्यादभिमरः सबलादपि साध्वसे ।
 कुले त्वभिजनो जन्मभूमौ चाथामरे ऋषे ॥ १२ ॥
 अनिमेपोऽप्यनिमिषोऽप्यथ चण्डालशिष्ययोः ।
 स्यादन्तेवास्यथर्वज्ञे त्वथर्वोणिः पुरोहिते ॥ १३ ॥
 नृपरिक्षिप्तनीकस्थो हस्तिशिक्षाविचक्षणे ।
 अपवादौ तु निन्दाज्ञे स्तुतिस्नेहावपह्नवौ ॥ १४ ॥

वह्निवातावपाङ्गभौ गुह्यगूधाववस्करो ।
 कूर्मेशोऽन्धावकूपारोऽवलेपो लेपगर्वयोः ॥ १५ ॥
 अशिस्कौ बाहुरुण्डाववलोणेऽस्फुटापि वाक् ।
 आशोचनी तु वहीन्दू आत्मयोनी स्मरानिलौ ॥ १६ ॥
 ब्रह्माऽप्यथोपचर्यायामुपचार उपायने ।
 उपनाहो वैरबन्धे वीणायाश्च निबन्धने ॥ १७ ॥
 उपक्रमश्चिक्त्सायामुपधाऽऽरम्भयोरपि ।
 उपग्रहस्तु बन्दौ स्याद् ग्रहणेऽप्यनुकूलने ॥ १८ ॥
 उपतापौ रुजातापौ द्वारपालेऽप्युदास्थितः ।
 स्नानाचान्त्योरुपस्पर्शो हरावुच्चैःश्रवा हये ॥ १९ ॥
 दात्यौहाली कलक्काणौ खङ्गिखङ्गौ करालिकौ ।
 कलहंसो राजहंसे कादम्बे श्रेष्ठभूभुजि ॥ २० ॥
 कुरुविन्दो द्विजुलेऽपि मुस्तेऽप्यथ गुहाशयः ।
 ऋचे सिंहे च कूर्मे च ग्रहराजोऽर्कचन्द्रयोः ॥ २१ ॥
 घनाघनो मत्तगजे वासवे वार्युक्ताम्बुदे ।
 चक्रपादौ रथगजौ चित्रभानू इनानलौ ॥ २२ ॥
 देशे जने जनपदश्चन्द्रेऽर्केऽग्नौ तमोनुदः ।
 तमोपहोऽप्यथोत्सुके तस्करे कुमुदाकरे ॥ २३ ॥
 दिवाभीतो दिवाकीर्ती पुनश्चण्डालनापितौ ।
 दर्दुरीकोऽनले वाद्ये पार्थाग्नीन्द्रा धनञ्जयाः ॥ २४ ॥
 अग्न्युत्पातौ धूमकेतू धन्वन्तरिरिनाब्जयोः ।
 पर्परीकौ वह्निभक्ष्यौ शौर्योद्योगौ पराक्रमौ ॥ २५ ॥
 अग्निरुद्रौ पशुपती नाशावज्ञपराभवौ ।
 रक्षःसन्तौ पुण्यजनौ नीचमूर्खौ पृथग्जनौ ॥ २६ ॥
 द्वारद्वाःस्थौ प्रतीहारौ स्तनाम्भोदौ पयोधरौ ।
 काशे नडे पोटगलः पवमानोऽग्निवातयोः ॥ २७ ॥
 परिमर्देऽपि परिमलः पितामहौ ब्रह्मपितृतातौ ।
 परिवारः प्रावारेऽपि नृपार्हार्थेऽपि परिबर्हः ॥ २८ ॥
 परिवर्तो जगन्नाशो निमयेऽब्दे परिभ्रमे ।
 पर्युप्तौ च परीवाप आलवाले परिच्छदे ॥ २९ ॥
 पत्नीस्वीकारशपथमूलेष्वपि परिग्रहः ।
 परिक्षेपो हस्तिपादपाश्वे सम्परिवेष्टने ॥ ३० ॥

प्रतियत्नस्तु संस्कार उपग्रहणलिप्सयोः ।
 स्थाने गोष्ठ्यां सत्रशाले प्रत्याहारे प्रतिश्रयः ॥ ३१ ॥
 प्लवङ्गमः कपौ भेके प्लवङ्गप्लवगाविव ।
 मौक्तिकेऽस्त्रे पारशवो विप्राच्छूद्रासुतेऽयसि ॥ ३२ ॥
 विवेके स्यात् परिकरः पर्यस्तिपरिवारयोः ।
 प्रगाढगात्रिकाबन्धे समूहारम्भयोरपि ॥ ३३ ॥
 प्रतिग्रहः क्रियाकारे चमूषृष्टे पतद्ब्रहे ।
 दानद्रव्ये स्वीकृतौ च त्वष्ट्यर्के प्रजापतिः ॥ ३४ ॥
 दक्षादिष्वग्निजामात्रो राज्ञि ब्रह्मणि धातरि ।
 ब्रह्मपुत्रस्तु रुद्रेऽपि बाहुलेयो गुहे वृषे ॥ ३५ ॥
 धूम्यादेऽलौ भृङ्गराजो महाराजौ नृपार्थपौ ।
 महालयो महागेहे विहारे परमात्मनि ॥ ३६ ॥
 महाकालस्तु किम्पाके हरे बाणासुरेऽपि च ।
 रजसानू धर्ममेधौ रौहिणेयो हलीन्दुजौ ॥ ३७ ॥
 लक्ष्मीपुत्रोऽश्व आढ्ये च राज्ञि लक्ष्मीपतिर्हरौ ।
 लोकपालो नृपेन्द्राद्योर्हये वातप्रसीमृगे ॥ ३८ ॥
 बाढवेयोऽश्विनोर्विप्रे वासुदेवो ह्ये हरौ ।
 विश्वगोप्ता हरौ शक्रे चन्द्रेऽर्केऽग्नौ विभावसुः ॥ ३९ ॥
 वृषसानुः पुंसि मृत्यौ विष्णौ रुद्रे वृषाकपिः ।
 वानप्रस्थौ मधुष्ठीलपलाशावथ सङ्करे ॥ ४० ॥
 व्यसने च व्यतिकरो विश्वकर्माब्जजो रविः ।
 त्वष्टा च विप्रलापस्तु विप्रलम्भोपमर्दयोः ॥ ४१ ॥
 वारवाणिज्यौतिषिके धर्माध्यक्षेऽप्यथो वटे ।
 वनस्पतिर्वृक्षमात्रेऽप्यग्नीन्द्रर्का विरोचनाः ॥ ४२ ॥
 व्यवहारो वाक्प्रयोगे सम्बन्धे द्यूतदण्डयोः ।
 शासने वित्तसंवादे विवादेऽसिवणिज्ययोः ॥ ४३ ॥
 वर्धमानः शरावे स्यादेरण्डे भूषणेऽपि च ।
 शङ्कुकर्णौ गर्दभोष्ट्रावलिबाणौ शिलीमुखौ ॥ ४४ ॥

श्रीवत्साङ्गौ हरिवृकौ सिंहकाकौ सकृत्प्रजौ ।
सहसानुर्मयूरेऽहौ सम्प्रयोगो रतेऽन्वये ॥ ४५ ॥

स्तनयितुर्गर्जितेऽभ्रे विरोधे तु समुच्छ्रयः ।
उन्नतावप्यथ क्रोष्टौ शुनि सालावृको वृके ॥ ४६ ॥

समाहारस्तु सङ्क्षेप एकत्र करणेऽपि च ।
समाह्वयस्तु पद्याद्यैर्द्युते नामनि संयुगे ॥ ४७ ॥

सम्परायस्तु सङ्ग्राम आपदागामिकालयोः ।
स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये गजानां मध्यमे गते ॥ ४८ ॥

सोमयोनिः सुरे विप्रे हरिरोमाञ्जजेन्द्रयोः ।
हस्तिमल्लो गणपतौ महेन्द्रस्य च कुङ्जरे ॥ ४९ ॥

(इति चतुरक्षराः)

वर्णमात्रेऽभिनिष्ठानो हरीशावपराजितौ ।
आशुशुक्षणिर्केऽग्नौ यज्वन्यप्यासुतीवलः ॥ ५० ॥

शौण्डिके चाप्यथानन्ते कुबेरे चैककुण्डलः ।
आग्ने चामरपुष्पः स्यात् काशकेतकयोरपि ॥ ५१ ॥

ज्योतिषाम्पतिरर्के च चन्द्रे चाप्यथ चुम्बने ।
ओष्ठे च दशनोच्छिष्ट उच्छ्वासेऽप्यथ नीपके ॥ ५२ ॥

धूलीकदम्बो वरुणफलेऽथो नागवारिकः ।
गणस्थे हस्तिपाले च यमेऽपि पृथिवीपतिः ॥ ५३ ॥

प्राचीनबर्हिर्निद्राग्न्यो रुद्रेन्द्रौ मेघवाहनौ ।
मातुलपुत्रस्तून्मत्तफले मातुलसुतेऽपि स्यात् ॥ ५४ ॥

कुटजेऽपि च यवफलको बडबामुख और्ववह्नौ च ।
विकङ्कते गोक्षुरे च कोल्यां च स्वादुकण्टकः ॥ ५५ ॥

निम्बेऽपि हिङ्गुनिर्यासो हिङ्गुवृक्षरसेऽपि च ।
हिरण्यबाहुः शोणाख्ये नदे विषमलोचने ॥ ५६ ॥

(इति पञ्चाक्षराः)

निदाघ ऊष्मणि ग्रीष्मे स्वेदे धर्मस्तु तेषु च ।
आतपे च दिने चाथ वरुणे यादसांपतिः ॥ ५७ ॥

यादस्पतिश्च तावन्धावप्यथो यक्षगृह्यकौ ।
धनदेऽप्यथ वृद्धेऽद्रौ शिखर्यगनगागमाः ॥ ५८ ॥

भ्रमरेष्टालिप्रियाद्या आम्ने जम्बूकनीपयोः ।
वतंसोत्तंसावतंसाः कर्णपूरेऽपि शेखरे ॥ ५९ ॥

अंशौ च केतुसूक्ष्माग्रा अप्यद्रौ शृङ्गिभैरवौ ।

(इति विषमाक्षराः)

आकाशे दिवसे च द्युर्विः पक्षिपरमात्मनोः ॥ ६० ॥

पुमांसौ पुरुषात्मानौ मासौ मासनिशाकरौ ॥ ६० ॥

(इत्येकाक्षराः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

शेषकाण्डे पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥



स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अर्चनायामपचितिः प्रक्षये निष्कृतौ व्यये ।
 अजमोदा शाल्मलेश्च निर्यासेऽथ गदद्गुहि ॥ १ ॥
 धात्र्यां पाल्यां चाङ्कपालिरभिशस्तिस्तु दूषणे ।
 प्रार्थने चान्तशय्या तु भूमिशय्याश्मशानयोः ॥ २ ॥
 अनर्थवाचीतिकथा स्यादश्रद्धेयवाचि च ।
 रहस्यार्थे तूपनिषद्धर्मवेदान्तयोरपि ॥ ३ ॥
 उपलब्धिस्तु शेमुष्यां प्राप्तिविज्ञानयोरपि ।
 ऋश्यप्रोक्ता शतावर्या कण्डूरातिबलधिषु ॥ ४ ॥
 फलिनी स्याद् गण्डफली कलिका चम्पकस्य च ।
 वाद्यभेदे घर्घरिका वाद्यानां लगुडेऽपि च ॥ ५ ॥
 श्रीवेष्टे तैलपर्णी स्याद् धवलेऽपि च चन्दने ।
 दाक्षायणी भवान्यां भुव्यश्विन्याद्युडुषु श्रियाम् ॥ ६ ॥
 गौरीदिशोर्दक्षकन्या प्रतिपत्तिस्तु गौरवे ।
 प्रत्याप्तिप्रतिभाज्ञानेष्वथ नीलीविशल्ययोः ॥ ७ ॥
 मधुपर्णीत्यथ द्राक्षादूर्वे मधुरसेत्युभे ।
 चुच्छन्दर्या राजपुत्री राजकन्या पिचिण्डके ॥ ८ ॥
 वैजयन्ती पताकायां जयन्त्यां केशवस्रजि ।
 गुञ्जायूथ्यौ शिखण्डिन्यौ द्राक्षा स्वादुरसा सुरा ॥ ९ ॥
 समुद्रान्ता यवापे च कार्पासीस्पृक्कयोरपि ।
 गौर्यामपि सिनीवाली मदिरापि हरिप्रिया ॥ १० ॥
 गङ्गा पथ्या हैमवती गौरी शुक्लवचापि च ।

(इति चतुरक्षराः)

गोरक्षजम्बूगोधूमधान्ये गोरक्षतण्डुले ॥ ११ ॥
 चिलिमीलिकातसी स्यात् खद्योते कण्डभूषणे चापि ।
 योजनगन्धा सीता कस्तूरी व्यासमाता च ॥ १२ ॥
 घृषाकपायी श्रीगौर्योः शोफल्यां प्रावृषायणी ।
 हरिद्रायां वरायां च रामायां वरवर्णिनी ॥ १३ ॥

(इति पञ्चाक्षराः)

व्यथने सूचना सूचा दर्शनेऽभिनयेऽपि च ।
 पार्वत्यामपि मातङ्गी रौद्रयुग्मा कौशिकीति च ॥ १४ ॥

माषपर्ण्या कृष्णवृन्ता सिंहपुच्छी महासहा ।
 रात्रायप्यर्जुनी सौम्या शिखा चूडा शिरस्यपि ॥ १५ ॥
 (इति विषमाक्षराः)

भूः क्षितौ स्थानमात्रे च वन्निकायोषितोः स्त्रियौ ।
 उपायद्वारयोर्द्धाः स्यात् पूः स्यान्नगरदेहयोः ॥ १६ ॥
 धूः स्याद्यानमुखे भारे नौस्तु काले तरावपि ।
 व्या पृथिव्यां च मौर्व्या च स्वर्व्योऽग्न्योर्द्यौर्दिवावुभौ ॥ १७ ॥
 ऋशब्दः स्याद्दिव्यदितौ त्विड् ज्वालाकान्तिदीप्तिषु ।
 उत्साहेऽन्नरसेऽप्यूक् स्यात् झुक् झुवे शोपणे गतौ ॥ १८ ॥
 लक्ष्मीरिव लवङ्गे श्रीः पद्मायां कान्तिसम्पदोः ।
 रुग्ज्वालाकान्तिवाञ्छासु तृट् तु लिप्सापिपासयोः ॥ १९ ॥
 यथा तृष्णा यथा तर्षस्त्वगन्धद्रव्यवल्कयोः ॥ १९ ॥
 (इत्येकाक्षराः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 शेषकाण्डे स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

आत्माहितं महाभीत्यां प्राणानाकाङ्क्षिकर्मणि ।
 अपादानं कर्मणि स्यादतिवृत्तेऽवखण्डने ॥ १ ॥
 आभ्याधानमभिन्यासे वह्न्यर्थं चेध्मसङ्ग्रहे ।
 अन्वाहार्यममावास्याश्राद्धमिष्टेश्च दक्षिणा ॥ २ ॥
 समूहे स्यादाकलनं कलनज्ञानयोरपि ।
 आच्छादनं संविधाने स्यादावरणवाससोः ॥ ३ ॥
 आतञ्चनं प्रतीवापे जपाप्यायनयोरपि ।
 आराधने तोषणाप्ती घात आयोधनं रणे ॥ ४ ॥
 जन्मोद्गमावुत्पत्तने रहोऽन्तिकमुपहरे ।
 उद्धासने वधोद्धासावप्युत्सादनमुन्नतौ ॥ ५ ॥
 स्यादुद्धरणमुद्धान्तभक्तेऽप्युत्पाटनेऽपि च ।
 तिन्त्रिडीकं तु वृक्षाम्ले चिञ्चायामम्लवेतसे ॥ ६ ॥
 त्रिवर्णकं त्रिगन्धे स्यात् त्रिफलायां कटुत्रये ।
 निर्यातनं प्रतीकारे दाने न्यासधनार्पणे ॥ ७ ॥
 निर्भर्त्सनमलक्तेऽपि मोक्षे निःश्रेयसं शुभे ।
 शस्त्रे युद्धे प्रहरणं कार्ये हेतौ प्रयोजनम् ॥ ८ ॥
 प्रतिदानं परीवर्ते न्यासद्रव्यस्य चार्पणे ।
 पारायणं कात्स्न्यवचस्यङ्कुशस्य च बन्धने ॥ ९ ॥
 प्राणिद्यूतं तु सङ्ग्रामे द्यूते च पशुपक्षिभिः ।
 शुण्ठ्यामतिविषायां च लशुने च महौषधम् ॥ १० ॥
 रतर्धिकं सुखे स्नाने दीनमङ्गलयोरपि ।
 विदारणं तु काष्ठादेर्द्वैधीकारे विडम्बने ॥ ११ ॥
 संसारे स्यात् संसरणमसन्बाधचमूगतौ ॥ १२ ॥
 समापनायां हिंसायां समाप्तौ च समापनम् ।
 (इति चतुरक्षराः)

अवतरणं भूतादिग्रहे निवसनाञ्चले ॥ १३ ॥
 स्यादुपस्पर्शनं स्पर्शे स्नानाचमनयोरपि ।
 दुग्धाम्ने दुग्धतालीयं स्यात् फेनेऽपि च दुग्धजे ॥ १४ ॥

निन्दोपालम्भ आलापे नियमे परिभाषणम् ।

(इति पञ्चाक्षराः)

पराक्रमे धने द्युम्नं द्रविणं तु ग्रहेऽपि च ॥ १५ ॥

आगः किल्बिषमेनश्च त्रीणि पाप्मापराधयोः ।

शकुनं च निमित्तं च शुभादेः सूचकेऽपि च ॥ १६ ॥

यज्ञोपवीतोपवीते ब्रह्मसूत्रोत्तरीययोः ।

गम्भीरं गहनं रत्नं गह्वरं शरणं वपुः ॥ १७ ॥

स्नेहं सेव्यं महच्छुद्धं धरुणं सर्वतोमुखम् ।

पातालं स्वादु दिव्यं च तानि पञ्चदशास्वपि ॥ १८ ॥

(इति विषमाक्षराः)

खमिन्द्रिये दिवि व्योम्नि रन्ध्रनक्षत्रयोरपि ॥ १८½ ॥

(इत्येकाक्षरः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

शेषकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥



अभिधेयवल्लिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

(अर्थवल्लिङ्गाध्यायः)

अभिजातः कुलीने च न्याय्यपण्डितयोरपि ।
 अभिनीतः सुयुक्ते स्यादमर्षवति संस्कृते ॥ १ ॥
 अभिपन्ना विपन्नाप्तप्रस्तात्तद्रुतदक्षिणाः ।
 अधिक्षिप्तं प्रणिहिते प्रेषिते भत्सितेऽपि च ॥ २ ॥
 निश्चिते स्यादवसितं समाप्त उषितेऽपि च ।
 अवदातः सिते गौरे शुद्धे चाथावलम्बिते ॥ ३ ॥
 अविदूरेऽप्यवष्टब्धमसम्पृक्तो रहस्यपि ।
 उज्झिते धिक्कृतेऽपि स्यादवध्वस्तोऽवचूर्णिते ॥ ४ ॥
 स्यादभ्यारूढमारूढे सातिरेके च सम्पदा ।
 उत्कीर्णे स्यादुल्लिखितमनुषक्ते तनूकृते ॥ ५ ॥
 उद्ग्राहितमुपन्यस्ते बद्धग्राहितयोरपि ।
 कौक्कुटिको दाम्भिके स्याद् यश्चादूरेरितेक्षणः ॥ ६ ॥
 दशमीस्थस्तु स्थविरे नष्टबीजे मृताशने ।
 परिप्राप्ते परिगतं प्रज्ञाते परिवेष्टिते ॥ ७ ॥
 प्रतिशिष्टप्रतिक्षिप्तावाहूय प्रेषितास्तयोः ।
 विशिष्टे स्यात् प्रतिहतं प्रतिस्खलितवस्तुनि ॥ ८ ॥
 समाहिते प्रणिहितं न्यस्ताभिप्राप्तयोरपि ।
 पुरस्कृतः पूजिते द्विडभियुक्तेऽग्रतः कृते ॥ ९ ॥
 पौरुषेयं वधे पुंसो वृन्दे कार्यविकारयोः ।
 ब्रह्मबन्धुरधिद्वेष्ये निर्देश्ये ब्राह्मणाधमे ॥ १० ॥
 यातयामं यातयामे जीर्णे मुक्तोऽज्झितेऽपि च ।
 लालाटिकः प्रभोश्छन्ददर्शी कार्याक्षमश्च यः ॥ ११ ॥
 विशारदो बुधे धृष्टे वञ्चिते तु विलम्बितम् ।
 मन्दे चाथ समुन्नद्धौ पण्डितम्मन्यगर्वितौ ॥ १२ ॥
 (इति चतुरक्षराः)

कथाप्रसङ्गस्तु विषवैद्ये वाताधिकेऽपि च ।
 (इति पञ्चाक्षरः)

प्रहृष्टो हृषितो हृष्टः प्रहर्षवति विस्मिते ॥ १३ ॥
 सरोमाञ्चे प्रतिहृतेऽप्यथ सप्रभदग्धयोः ।
 स्युः प्रदीप्तप्रज्वलितदीप्ता ज्वलित इत्यपि ॥ १४ ॥
 कुत्सिते वाच्यवक्तव्यौ वदितव्यविहीनयोः ।
 प्राप्तूपोऽभिरूपश्च पण्डिते रूपवत्यपि ॥ १५ ॥
 (इति विषमाक्षराः)

सन् सत्येऽभ्यर्हिते श्रेष्ठे साधीयसि भवत्यपि ।
 किं प्रश्नाक्षेपकुत्सानां वितर्कस्य च गोचरे ॥ १६ ॥
 (इत्येकाक्षरौ)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 शेषकाण्डे अभिधेयवलिज्ञाध्यायः ॥ ४ ॥



नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

सुखाब्ध्यर्का अव्यथिषा अव्यथिष्यौ निशाक्षिती ।
 अवगीतं मुहुर्दृष्टे निर्वादे गर्हितेऽपि च ॥ १ ॥
 पुमानधिपतिर्मूर्ध्नि आवर्तेऽधीश्वरे त्रिषु ।
 काञ्चने शारिफलके स्यादष्टापदमस्त्रियाम् ॥ २ ॥
 अम्बरीषं रणे वर्षे तृणे नार्ककिशोरयोः ।
 आत्मनीनः सुते स्याले प्राणधारिणि दूषके ॥ ३ ॥
 आडम्बरोऽस्त्री संरम्भे पटहे गजगर्जिते ।
 उदुम्बरो द्रुदेहल्योर्ना स्त्री हेमाक्षताम्रयोः ॥ ४ ॥
 वचाजमोदयोरुग्रगन्धा ना लशुने सिते ।
 कलधौतं रूप्यहेम्नोः षण्डस्त्री तु कलध्वनौ ॥ ५ ॥
 कर्णपूरो वतसे ना स्त्री सौगन्धिक उत्पले ।
 काण्डपृष्ठः क्रीतसुते दत्ते शूद्रासुताम्भसोः ॥ ६ ॥
 शास्त्राजीवे च यश्चान्यकुलं याति स्वकं विना ।
 नासा गन्धवहा गन्धवहो मृगनभस्वतोः ॥ ७ ॥
 जलेशयो जलकपौ मत्स्ये पद्मं जलेशयम् ।
 जीवितेशः प्रेतनाथे दयिते द्रविणागमे ॥ ८ ॥
 जैवातृकश्चन्द्रभिषगायुष्मत्सु कृषीवले ।
 अम्ललोण्यां दन्तशठा त्रिष्वम्लेऽम्लगुणे तु ना ॥ ९ ॥
 दुरोदरे नपुं द्यूते पणे द्यूतकरे तु ना ।
 नारायणी शतावर्या लक्ष्म्यां गौर्या च ना हरौ ॥ १० ॥
 निश्चारको निर्गमके पुरीषोत्सर्गिमारुते ।
 निषद्वरी निशा कामकर्दमौ तु निषद्वरौ ॥ ११ ॥
 निरूपणा नपुं स्त्री च निरीक्षणविचारयोः ।
 निशाचर्यसती फेरु रक्षःसपौ निशाचरौ ॥ १२ ॥
 यूथभ्रष्टे पक्षचरः स्यादेकचरपक्षिणोः ।
 परायणमभिप्रेते तत्परे परमाश्रये ॥ १३ ॥
 प्रतिष्कशः पुमान् द्यते त्रिष्वग्रगसहाययोः ।
 अस्त्री प्रतिसरो हस्तसूत्रे ना तु चमूकटौ ॥ १४ ॥

आरक्षे व्रणशुद्धौ च नियोज्ये त्वभिधेयवत् ।
 पारावतः खगातस्योरीषत्पाण्डौ च पारदे ॥ १५ ॥
 नीचे व्रीहाविन्द्रनीले प्राणनाथो यमे प्रिये ।
 पुण्डरीकं सितच्छत्रे कुण्ठभेदे सिताम्बुजे ॥ १६ ॥
 ना त्वाग्रे दिग्गजे व्याघ्रे राजिलाहौ गजे ज्वरे ।
 दीप्त्यां प्रद्योतनं नार्के घोरे प्रतिभयं भये ॥ १७ ॥
 नकुले मूषिकेऽहौ ना गोधायां स्त्री बिलेशयः ।
 वृन्दारकः पुमान् देवे श्रेष्ठसुन्दरयोस्त्रिषु ॥ १८ ॥
 भागधेयं नपुं भाग्ये दायादे ना करे न षण् ।
 मस्तुलुङ्गः शिरःस्नेहे न स्त्री क्ली दधिमण्डके ॥ १९ ॥
 ओतौ चारौ धौतिदेशे मार्जालीयोऽङ्गशोधने ।
 महावीरो यज्ञपात्रे गरुडे सुभटे खगे ॥ २० ॥
 वज्रेऽश्वे तनये हंसे शूरेऽग्नौ अवरे हरौ ।
 राजादनं प्रियाले ना क्षीरिकायां पलाशके ॥ २१ ॥
 वारवाणं तु कूर्पासे कवचेऽपि च न स्त्रियाम् ।
 विश्वम्भरा धरित्री स्यादग्नौ विश्वम्भरो हरौ ॥ २२ ॥
 विश्वावसुस्तु गन्धर्वभेदे ना स्त्री पुनर्निशि ।
 वेणौ ना दूर्वावचयोः स्त्री बिले शतपर्व षण् ॥ २३ ॥
 शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे ।
 पलमाने षोडशिका न ना न स्त्री पलद्वये ॥ २४ ॥
 सनातनो हृषीकेशे चतुर्वक्त्रे सदातने ।

(इति चतुरक्षराः)

आशितम्भवमन्नादि तृप्तिः स्यादाशितम्भवः ॥ २५ ॥
 पर्याप्तावुपसम्पन्नं मृते प्राप्ते सुसंस्कृते ।
 नक्षत्रनेमी रेवत्यां स्त्री ना विष्णौ हिमद्युतौ ॥ २६ ॥
 मूर्धाभिषिक्तो ना राज्ञि क्षत्रिये चार्थवत् प्रभौ ।
 हरिचन्दनमस्त्री स्याच्चन्दने देवपादपे ॥ २७ ॥

(इति पञ्चाक्षराः)

श्रेष्ठे वृषाङ्गे राजाङ्गे ककुदोऽस्त्री ककुन्न षण् ।
 तपस्वी शिशिरे शोच्ये चन्द्रे मांसी तपस्विनी ॥ २८ ॥
 द्वीपवत्यौ धरानद्यौ द्वीपवानम्बुधौ नदे ।
 धर्मे वाद्ये प्रसृत्वा ना प्रतिपत्तिः प्रसृत्वरौ ॥ २९ ॥

पद्मी गजे पद्मिनी तु नलिन्यां हस्तिनीश्रियोः ।
 ब्रह्मचारी व्रती स्कन्दो दुर्गा तु ब्रह्मचारिणी ॥ ३० ॥
 भगवत्युमा भगवान् बुद्धे पूज्ये हरे हरौ ।
 भोगी ग्रामाद्यधिकृते सर्पे सुखिमहीभुजोः ॥ ३१ ॥
 विहाय महिषीमेकां भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ।
 श्रेयोऽत्यन्तं प्रशस्ते स्यात् कल्याणे धर्ममोक्षयोः ॥ ३२ ॥
 श्रेयसी हस्तिपिप्पल्यामभयाराक्षयोरपि ।
 सरस्वती सरिद्धेदे सरिन्मात्रे गवि क्षितौ ॥ ३३ ॥
 मत्स्याद्यां वाचि गङ्गायां सरस्वानम्बुधौ नदे ।

(इति विषमसङ्ख्याः)

विभूतिर्भूतिरैश्वर्यमणिमादिकसम्पदोः ॥ ३४ ॥
 ईशेश्वरौ प्रभौ रुद्रे पार्वत्यामीश्वरेश्वरी ।
 स्वभावे स्यान्निसर्गश्च सृष्टिश्चोत्पादनेऽपि च ॥ ३५ ॥
 गेहे कुलायो नीडोऽस्त्री रेतस्यपि रजो मदः ।

(इति विषमाक्षराः)

काश्चित्तात्मार्कधीधातृवाता मूर्ध्नि सुखेऽप्सु कम् ॥ ३६ ॥
 द्युपन्निष्वंशुवज्राम्बुभूवाग्दिग्दक्षु गौर्न षण् ।
 दृक् स्त्री स्यादशने बुद्धौ नेत्रे द्रष्टरि तु त्रिषु ॥ ३७ ॥
 स्वोऽस्त्री धने त्रिषु स्वीय आत्मनि स्वजने तु ना ।
 गूर्नुदे स्त्री प्रयत्ने ना रा न स्त्री धनरुक्मयोः ॥ ३८ ॥
 आत्मनि ज्ञातरि ज्ञः स्यान्ना विड् वैश्ये जने न षण् ।
 तेशब्दः क्रीडने स्त्री स्यात् क्रीडके त्वभिषेयवत् ॥ ३९ ॥
 सेशब्दः सेवने स्त्री स्यात् सेवके त्वभिषेयवत् ॥ ४० ॥

(इत्येकाक्षराः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 शेषकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्यायः ॥ ६ ॥

घातुः सर्वेऽपि पर्याया रुद्राक्षे स्युश्चतुर्मुखे ।
तस्मिन् पञ्चमुखे शम्भोः कुमारस्य तु षण्मुखे ॥ १ ॥
गुग्गुल्लककुटजेष्विन्द्रस्याग्नैश्च चित्रके ।
भल्लातकेऽप्यथार्कस्य भल्लातक्यर्कपर्णयोः ॥ २ ॥
कर्पूरकम्पल्लकयोर्निदोर्वज्रस्य हीरके ।
गौर्यास्त्वतस्यां कौबेरा वन्दाके क्षीरवृक्षजे ॥ ३ ॥
खस्याभ्रके ब्रह्मणि च मेघस्याभ्रकमुस्तयोः ।
भुवो नामानि सौराष्ट्राणां शैलेये प्रावशैलयोः ॥ ४ ॥
शर्वर्यास्तु हरिद्रायां प्रियङ्गुव्रततौ स्त्रियाः ।
ध्वजधूममृगेन्द्राणां श्वोक्षरासमहस्तिनाम् ॥ ५ ॥
वायसस्य पर्यायाः कमात् पूर्वादिवेशमु ।
हंसेन्दुकुमुदां रूप्ये कुमुदेऽपि खरस्य षण् ॥ ६ ॥
स्योनाके तु सृगालस्य वानरस्य तु सिंहके ।
स्पृक्षायां तस्करस्य स्युरुशीरे समरस्य हि ॥ ७ ॥
वाट्यालकेऽस्य सान्नस्य शोणितस्य तु कुङ्कुमे ।
कुष्ठाख्यभेषजे व्याघ्रेर्मातुर्गौर्या हृषद्गवोः ॥ ८ ॥
पिण्डारे त्ववटोः पाणेऽधायुधस्य त्वयस्यपि ।
अपराधे तु रन्ध्रस्य बदरस्य तु नागरे ॥ ९ ॥
रुक्मस्याञ्जनभेदे क्ली पुंलिङ्गा नागकेसरे ।
उन्मत्तेऽपि च बिन्दोस्तु सिध्मादौ देहवैकृते ॥ १० ॥
रूप्यस्याञ्जनभेदे स्युरटव्यां जलमुस्तके ।
षण्डाः केशस्य बर्हिष्ठे शिरसः शिखरे तरोः ॥ ११ ॥
माक्षिके क्ली स्त्रियो लक्ष्म्यां नरः पद्मस्य सारसे ।
त्वचो लवङ्गे पर्णस्य पक्षे क्ली किंशुके नरः ॥ १२ ॥
गणस्यावधेश्च सङ्ख्यायां बर्हिष्ठे मुस्तकेऽप्यपाम् ।
मकराम्बुजकूर्माणां निधिभेदेषु ते नरः ॥ १३ ॥
सङ्ख्याभेदेऽपि शङ्खस्य मीनमेषविषाणिनाम् ।
मिथुनस्य कुलीरस्य सिंहकन्यातुलालिनाम् ॥ १४ ॥

धनुर्मकरकुम्भानां क्रमाद् द्वादशराशिषु ।
 सर्पस्य सीसके नागकेसरे द्विपसर्पयोः ॥ १५ ॥
 अगुरुण्यसो गुन्द्रे शरस्य मकरे त्वसे ।
 शुभस्य फेनिले पुंसि कार्पासे वाससो नरः ॥ १६ ॥
 धूल्यश्वयोरश्वकन्दे पर्पटे मरिचेऽयसः ।
 इत्यादीन्यन्यनामानि बोद्धव्यान्यन्यवस्तुषु ॥ १७ ॥
 वृक्षस्य गृहनामान्ता नरः पक्षिमयूरयोः ।
 वीरात् परास्ते भङ्गाते ततः शक्राच्च तेऽर्जुने ॥ १८ ॥
 पलाशे ब्रह्मतोऽश्वत्थे श्रीतः कारस्करे विषात् ।
 मुनेः पलाशसरलस्योनाकेऽङ्गुल्यगस्तिषु ॥ १९ ॥
 नौस्तम्भे गुणतश्चैत्यादश्वत्थोद्देशवृक्षयोः ।
 व्याघाते राजतो दीपाहीपमालाविधारके ॥ २० ॥
 नरो भुगन्ताः सर्पस्य राजसर्पमयूरयोः ।
 तार्क्ष्ये चाथारिनामान्ता नकुले केकितार्क्ष्ययोः ॥ २१ ॥
 पञ्चपूर्वास्तु वक्त्रस्य व्याघ्रे सिंहे हरे नरः ।
 कण्ठस्य नीलनामभ्यो ग्रीवायाश्चेशकेकिनोः ॥ २२ ॥
 नखस्य शस्त्रनामान्ता नरो मार्जारसिंहयोः ।
 कुचन्दने कुङ्कुमे च रक्तादेश्चन्दनादयः ॥ २३ ॥
 एवं संयोगनामानि सलिङ्गान्युन्नयेत् स्वयम् ।
 पूर्वोक्तेष्वपि शब्देषु योगसम्प्राप्तवृत्तयः ॥ २४ ॥
 स्वयमूह्या यथा कन्दः कं ददातीति वारिदः ॥ २४½ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां शेषकाण्डे
 पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्यायः ॥ ६ ॥

अनेकार्थाव्ययाध्यायः ॥ ७ ॥

उक्ता लिङ्गान्विताः शब्दा निर्लिङ्गान्यव्ययान्यतः ।
 आङ्गीषदर्थेऽभिविधौ सीम्नि कर्मविशेषणे ॥ १ ॥
 आ प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्य आस्तु सन्तापकोपयोः ।
 ऐ दुःखभावने कोपे प्रत्यक्षे सन्निधावपि ॥ २ ॥
 ओ स्याद् ब्रह्मण्यनुज्ञायां कं सुखेऽऽम्भसि मूर्ध्नि च ।
 प्रश्ने क्षेपे विल्कपे किं कु पापेऽल्पार्थकुत्सयोः ॥ ३ ॥
 चान्वाचये समाहारे मिथोयोगे समुच्चये ।
 तु भेदावधारणयोदुरशोभनदुःखयोः ॥ ४ ॥
 धिग्भर्त्सने कुत्सने च नि न्यग्भावनिकामयोः ।
 नाभावान्यविरोधेषु निर्निर्णयनिषेधयोः ॥ ५ ॥
 प्रश्ने विकल्पे तु स्विच्च प्रादौ यात्राप्रकृष्टयोः ।
 वि निषेधे पृथग्भावे वा विकल्पोपमानयोः ॥ ६ ॥
 समुच्चये च वै पापे वाक्यारम्भप्रसिद्धयोः ।
 स्मृतौ वृत्ते निषेधे स्म स्वः स्वर्गपरलोकयोः ॥ ७ ॥
 समभेदे समीचीने सुष्ठुपूजासुखेषु सु ।
 प्रत्यारम्भे प्रसिद्धौ ह हा विषादश्रुतिषु ॥ ८ ॥
 हि स्याद्विशेषणे हेतौ हि हेतावधारणे ।
 आमन्त्रणे भर्त्सने हुं हूं सम्प्रश्नवितर्कयोः ॥ ९ ॥
 उ तापेऽव्ययमीशे ना मा निषेधे श्रियां स्त्रियाम् ।
 अ निषेधे पुमान् विष्णावि विचित्रे स्मरे पुमान् ॥ १० ॥
 तद्धेतौ त्रिष्वमुष्मिन् स्याद्यद्धेतौ प्रगते त्रिषु ।
 ह ह्यु तु स्म च वै पादपूरणेऽपि प्रयुज्यते ॥ ११ ॥

(इत्येकाक्षराः)

अमा सहार्थे सामीप्येऽप्यद्धा प्रत्यक्षसत्ययोः ।
 अयि प्रश्ने सानुनये विनियोगे क्रियास्वह ॥ १२ ॥
 यीडेर्ष्याऽनुमतिष्वस्तु स्यादध्यधिक ईश्वरे ।
 अलं तु भूषणे शक्तौ पर्याप्तौ विनिवारणे ॥ १३ ॥
 अपि सम्भावनाप्रश्नगर्हाशङ्कासमुच्चये ।
 अथाथोऽनन्तराऽप्यर्थविकल्पारम्भमङ्गले ॥ १४ ॥

अति स्यादधिकार्थोक्तौ प्रशंसायामतिक्रमे ।
 पश्चाद्धेतूनसाम्येषु भागे वीप्साप्रकारयोः ॥ १५ ॥
 लक्षणेऽप्यनु वीप्सादित्रयेऽप्यभिमुखेऽप्यभि ।
 अतो निन्दाहेतुचित्रेष्वाराद् दूरसमीपयोः ॥ १६ ॥
 इति हेतुप्रकरणप्रकारादिसमाप्तिषु ।
 विस्तारेऽङ्गीकृतावूरी स्यादुर्युररी यथा ॥ १७ ॥
 उपाधिकेऽन्तिके हीनेऽप्युत प्रश्नविकल्पयोः ।
 समुच्चयेऽनुमत्यां चाप्येव साम्येऽवधारणे ॥ १८ ॥
 पादपूरणकृच्चायमेवं साम्याभ्यनुज्ञयोः ।
 कश्चित् प्रश्ने कामवादे वार्तासम्भाव्ययोः किल ॥ १९ ॥
 निषेधे वागलङ्कारे ज्ञीप्सनेऽनुनये खलु ।
 तूष्णीमर्थे मुखे जोषं तर्हि स्यात् प्रश्न उत्तरे ॥ २० ॥
 तथा समुच्चये साम्ये परमार्थाभ्यनुज्ञयोः ।
 तिरोऽन्तर्द्धौ तिरश्चीने दिष्ट्या स्यान्मङ्गलादिषु ॥ २१ ॥
 तर्कनिश्चितयोर्नूनं नानाऽनेकोभयार्थयोः ।
 प्रश्नावधारणैतिहासमीहानुमते ननु ॥ २२ ॥
 नाम प्रकाश्यसम्भाव्यक्रोधोपगमकुत्सने ।
 प्रबन्धे निकटेऽतीते पुराणेऽनागते पुरा ॥ २३ ॥
 पुनरप्रथमे प्रश्ने व्यावृत्तावधारणे ।
 प्रतिदाने प्रतिनिधौ तुल्ये मात्राभिमुख्ययोः ॥ २४ ॥
 भागे प्रकारकथने वीप्सायां लक्षणे प्रति ।
 भागादिष्वेषु परि च वर्जनेऽप्यपवत् परि ॥ २५ ॥
 परा निहीनेऽनावृत्तौ बत त्वामन्त्रणेऽद्भुते ।
 तोषे खेदे कृपायाञ्च बाढं त्वनुमते भ्रूशे ॥ २६ ॥
 मुहुः क्षणेऽनुक्षणे च मिथोऽन्योन्यरहस्ययोः ।
 यथा सादृश्ययोग्यत्ववीप्सास्वर्थानतिक्रमे ॥ २७ ॥
 यावत्तावच्च साकल्यमानावध्यवधारणे ।
 वृथा निष्कारणाविध्योः शश्वद् भूयः सदेति च ॥ २८ ॥
 सकृत् सदैकवारे च सामि स्यादर्धनिन्दयोः ।
 स्वस्ति मङ्गलनिष्पापक्षेमेष्वाशीर्वचस्यपि ॥ २९ ॥
 साक्षात् प्रत्यक्षसदृशोः पृथगर्थेऽन्तिके हिरुक् ।
 वाक्यारम्भेऽनुकम्पायां हन्त हर्पविषादयोः ॥ ३० ॥
 (इति द्व्यक्षराः)

अञ्जसा त्वरिते तत्त्वेऽप्यहहादभुतखेदयोः ।
 समीपोभयतश्शीघ्रशाकल्याभिमुखेऽभितः ॥ ३१ ॥
 रहस्येऽर्थ उपांशु स्यादश्रुतोच्चारणेऽपि च ।
 परितोऽन्तिके सर्वतोऽर्थे पूर्वेषुः प्रत्युपेऽपि च ॥ ३२ ॥
 पुरस्तात् पूर्वदिश्यग्रे पुराप्रथमयोरपि ।
 शीघ्रे सपदि सद्योऽर्थे समयाऽन्तिकमध्ययोः ॥ ३३ ॥
 सद्योऽर्थे सहसा हेतुशून्ये युक्तेऽपि साम्प्रतम् ॥ ३३३ ॥
 (इति त्र्यक्षराः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 शेषकाण्डे अनेकार्थान्वयाध्यायः ॥ ७ ॥



अव्ययपर्यायाध्यायः ॥ ८ ॥

शीघ्रार्थे भटिति स्याद्राक् मङ्गलहाय सपद्यपि ।
 चिरेण चिररात्राय दीर्घकाले चिराच्चिरम् ॥ १ ॥
 विकल्पे किमुताहोस्वित् किमुताहो किमूत च ।
 सम्बोधने ननु प्याट् पाट् हे है भो अङ्ग हन्त च ॥ २ ॥
 वौषड्वोषड्वषड्वौक्षड्वाक्षट् श्रौषड्वषट्कृतौ ।
 परितः सर्वतो विष्वक् समन्ताच्च समन्ततः ॥ ३ ॥
 किमुतातीव बलवत् स्वति सुष्ठु च साधिके ।
 पृथग्विना हिरुङ् नानाऽन्तरेणर्तं च वर्जने ॥ ४ ॥
 कालेऽस्मिन्नधुनेदानीं सम्प्रत्येतर्हि साम्प्रतम् ।
 यदा यर्हि तदा तर्हि तदानीं सर्वदा सदा ॥ ५ ॥
 शश्वत् सनात् सना ज्योक् च युगपत्त्वेकदा सकृत् ।
 द्विस्त्रिचतुष्पञ्चकृत्व इत्याद्यावर्तने कृतेः ॥ ६ ॥
 कदाचिज्जातु सद्यस्तु तत्क्षणेऽन्यक्षणेऽन्यदा ।
 दोषा नक्तं च निश्यहि दिवाद्यैतदहर्निशम् ॥ ७ ॥
 अपरेऽह्नयपरेद्युः स्यादेवं पूर्वैतराधरे ।
 उत्तरेऽन्यान्यतरयोस्तर्क्याः पूर्वद्युरादयः ॥ ८ ॥
 उभयेद्युस्तूभयद्युः परे त्वहि परेद्यवि ।
 ह्यो गतेऽनागते तु श्वः परश्चस्तु ततः परे ॥ ९ ॥
 सायं साये प्रगे प्रातः काल्ये संवत्तु वत्सरे ।
 अतीतानन्तरे वर्षे परारि परुदेषमः ॥ १० ॥
 अतीते वर्तमाने च स्यादन्ते रजनेरुषा ।
 सुहुः पुनःपुनः शश्वत् पुरस्तु पुरतोऽप्रतः ॥ ११ ॥
 सङ्कोचे चिञ्चन व्यर्थे मुधा शश्वत्तु शाश्वते ।
 किञ्चनेषन्मनाक् किञ्चिद् विकल्पेऽवश्यं तु निश्चिते ॥ १२ ॥
 निष्पमं दुष्पमं दुष्टु गर्ह्ये सुष्ठु सु शोभने ।
 मिथ्या मृषा च वितथे यथार्थं तु यथातथम् ॥ १३ ॥
 मतप्रदाने यदि चेद् यथास्वं तु यथायथम् ।
 युक्ते स्थाने रुषोक्तावूम बहिर्बाह्ये नमो नतौ ॥ १४ ॥

मौने तु तूष्णीं तूष्णीकां समया निकषा हिरुक् ।
 साम्ये व वैवमेवेव प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ॥ १५ ॥
 प्राध्वं स्यादानुकूल्यार्थमशीघ्रे शनकैः शनैः ।
 अहो ही विस्मये प्रायो भूमन्यस्तमदर्शने ॥ १६ ॥
 समकं तु सजूः साकं सार्धं सत्रा समं सह ।
 सुखे दिष्ट्योपजोषं शमेवमां परमं मते ॥ १७ ॥
 हठे प्रसह्य मध्ये स्यादन्तरेणान्तरेऽन्तरा ।
 प्रादुराविः प्रकाशेऽर्वागवरे स्वयमात्मनि ॥ १८ ॥
 उपरिष्ठादुपयूर्ध्वं स्यादधस्तादवागधः ।
 तिरश्चि साच्युच्च उच्चैर्नीचैर्नीच्युच्चकैर्भृशे ॥ १९ ॥
 प्रकारेऽन्यथेतरथा कथमित्थं यथा तथा ।
 द्विधा द्वेधा त्रिधा त्रेधा चतुर्धा द्वैधमादि च ॥ २० ॥
 अर्थे यत्रादि सप्तम्याः पञ्चम्या यत आदिकम् ।
 इतिह स्यात् सम्प्रदाये पारेऽपारे दृशौ पशु ॥ २१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 शेषकाण्डे अनेकार्थाव्ययाध्यायः ॥ ८ ॥

लिङ्गसङ्गहाध्यायः ॥ ९ ॥

नाम्नां पूर्वमिहोक्तानामनुक्तानां च कृत्स्नशः ।
 सामान्यैर्लक्षणैः कैश्चित् क्रियते लिङ्गसङ्ग्रहः ॥ १ ॥
 अवाधिते विशेषोक्त्या भवेत् सामान्यलक्षणम् ।
 एकस्वरं हलादीदृद् दृङ् मा श्रीभूरिति स्त्रियाद् ॥ २ ॥
 इच्च सर्वमुदन्तेषु पाकुरज्ज्वादि किञ्चन ।
 नदीनामाह्वयाः सर्वे प्रायेण च लताह्वयाः ॥ ३ ॥
 णचोऽनि व्यवहार्याद्या अङ्ङन्तास्तु पचादयः ।
 अप्रत्यये जुगुप्साद्या युजन्ता भावनादयः ॥ ४ ॥
 क्तिन्नन्तास्ततिगत्याद्याः क्बिन्ताः सम्पदादयः ।
 इनि स्युः कारिबोध्याद्या ण्वुलि प्रच्छर्दिकाऽऽदयः ॥ ५ ॥
 क्रीडाप्रहरणे णान्ताः पाल्लवाद्या घञस्तु ज्ञे ।
 क्रियायां दाण्डपाताद्यास्तल्ङ्ग्याबूङ्ङन्त्यन्धतादयः ॥ ६ ॥
 अके वैरादिवीप्सादौ स्युः काकोल्लृकिकादयः ।
 क्यपि तु ब्रह्महत्याद्या दत्याद्यल्पत्वकीर्तने ॥ ७ ॥
 त्रिलोकीत्यादयोऽदन्तैः समाहारार्थकद्विगौ ।
 त्रिपात्रत्रियुगाद्याः षण्णभवन्यादयस्त्वन्तौ ॥ ८ ॥

(इति स्त्रीलिङ्गाः)

अदन्ताः पुंस्युपान्ताश्चेत् कणौ भरमटास्तथौ ।
 षसौ च सान्ता ये च स्युरुदन्ताः प्रायशो नरः ॥ ९ ॥
 इदन्नेष्वरतिर्वमिर्वणिर्वाहिर्ग्रहिः ग्रहिः ।
 स्तभिः कपिः सनीरालिरर्दनिर्वमतिर्नरः ॥ १० ॥
 अङ्ग्याबन्ताश्च वृक्षार्थाः प्रायो रोहित्तरत्तथा ।
 शैलानामह्वयाः सर्वे गोत्राख्याश्चरणाह्वयाः ॥ ११ ॥
 कन्यन्ता राजतक्षाद्या ऋदोरपि करादयः ।
 इकस्तिपोः शासिशास्त्याद्याः स्युरेरचि जयादयः ॥ १२ ॥
 अवश्यायादयो णान्ता घान्ता दन्तच्छदादयः ।
 प्रध्याद्याः प्रादितो घोः कौ स्युर्वमध्वादयोऽथुचि ॥ १३ ॥
 प्रश्नाद्या नङ्ङि पाकाद्या घञ् ल्यौ नन्दनादयः ।
 प्रथिमाद्या इमन्चि कुणप्पीलुकुणादयः ॥ १४ ॥

(इति पुंलिङ्गाः)

त्रान्तद्वयचकासिसुस्नान्तं लोपधं युक्तयोपधम् ।
 अम्बुपुष्पाणि च क्लीबे रेचकं त्वभयाफले ॥ १५ ॥
 ब्रह्मोद्याद्या भावकृत्याश्छन्दोऽणि त्रिष्ठुभादयः ।
 स्मताद्या भावनिष्ठान्ताः कर्णजाहादि जाहचि ॥ १६ ॥
 समूहकर्मभावार्थतद्धिते वार्धकादयः ।
 साराविणोपमानदि नोपान्तं भावसंज्ञयोः ॥ १७ ॥
 एकद्वन्द्वान्वययीभावाः स्युरितोऽकर्मधारये ।
 अनवत्त्पुरुषे शब्दाः कन्थोशीनरनामसु ॥ १८ ॥
 यथा सौशमिकन्थं स्याद् बाहुल्ये तु समासभाक् ।
 छाया यथा खगच्छायं नृपामर्त्यार्थकात् परा ॥ १९ ॥
 अराजतः सभा भूभृत्सभं रक्षःसभं यथा ।
 न काष्ठोदेरशालार्था सैव दासीसभं यथा ॥ २० ॥
 उपज्ञोपक्रमान्तं च तदादित्वे विवक्षिते ।
 पाणिन्युपज्ञमित्यादि पथस्सङ्ख्याऽव्ययात् परः ॥ २१ ॥
 शशादूर्णा गृहात् स्थूणा क्रियाऽव्ययगुणानुगम् ।
 एकत्वञ्चास्य पुण्यात्तु सुदिनादप्यहः परः ॥ २२ ॥
 कुटिलं गच्छतीत्यादि क्रियाणां तु विशेषणम् ।
 नपुंसकं तु भद्रं स्वरित्यव्ययविशेषणम् ॥ २३ ॥

(इति नपुंसकलिङ्गाः)

स्त्रीप्राण्यर्थाः स्त्रियां पुंसि पुंप्राण्यर्था विना त्विह ।
 स्त्रीत्वेनोक्तैस्तथाऽपत्येऽणादि ध्वन्नादि शिल्पिनि ॥ २४ ॥
 कचिद्रश्मिमयूखांशुघृणिघृष्टिगभस्तयः ।
 सृपाटी त्रिसरा सूर्मिः सुषुम्ना यष्टिरिङ्गुदी ॥ २५ ॥
 कलम्बी शल्लकी मल्ली वरटा जाटलिः कुटी ।
 शाटी रेणुहरेणूरुजल्लकाकोलिधूलयः ॥ २६ ॥
 उत्कण्ठा कङ्कती कन्दूवितस्ती रयिरञ्जलिः ।
 कूपस्य च त्रिका व्रीडा प्रेङ्गोलिः फलकी कटी ॥ २७ ॥

(इति स्त्रीपुंसलिङ्गाः)

अर्धर्चादिगणे प्रोक्तं सर्वं नृक्कीबलिङ्गकम् ।
 तच्च लिङ्गान्तरेऽनुक्तं सर्वमुक्तं घृतादि च ॥ २८ ॥

तत्र केचिद् घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं विदुः ।
 अत एकेन लिङ्गेन ते पूर्वमिह वर्णिताः ॥ २९ ॥
 पिशाचादिषु भूतोऽस्त्री शङ्कुरप्राणिगोचरः ।
 विशेषकञ्च तिलकं पुण्ड्रे ब्रह्मा द्विजेऽञ्जजे ॥ ३० ॥
 दवेडाश्च कन्दलाः कालकूटाद्याः स्युः कमण्डलुः ।
 सक्तः परीतन्महिमा कर्म पर्व च लोम दोः ॥ ३१ ॥

(इति नृषण्डाः)

अपुंसि चालनी दाम वणिज्याऽशसन्तिका स्थली ।
 शरव्यार्चिचर्गुडा पत्री स्यात् कुथे वर्णतर्णिका ॥ ३२ ॥
 सगरी नटने कृत्या त्वभिचारजदैवते ।
 मद्ये मधूलकं चेति काप्यथाकर्मधारये ॥ ३३ ॥
 अनञ्जत्पुरुषे सेनाच्छाया शाला निशा सुरा ।
 नृसेनं पादपच्छायं गोशालं श्वनिशं यथा ॥ ३४ ॥
 नृसेनेत्यादयोऽप्येवं कुत्रचिद्भावकर्मणोः ।
 साहायकं साहायिका मैत्र्यं मैत्री च बुद्ध्यञ्जोः ॥ ३५ ॥
 द्विगुरन्नन्त आबन्तोऽप्येवं नश्चात्र लुप्यते ।
 यथा त्रितक्षं त्रितक्षी क्षिखट्वं च त्रिट्व्यपि ॥ ३६ ॥

(इति स्त्रीषण्डाः)

त्रिलिङ्गायां तु कचिच्छुङ्गा कलशी कन्दरी दरी ।
 पेटी पुटी पटी वाटी कवाटी पिटका वटी ॥ ३७ ॥
 अर्गला दाडिमी पात्री विडङ्गा कुवली तटी ।
 मृणाली कन्दली नाली मुस्ता जृम्भा हरीतकी ॥ ३८ ॥
 त्रिजातकी गन्धिघना मठी स्थाने तपस्विनाम् ।

(इति त्रिलिङ्गाः)

गुणद्रव्यक्रियायुक्तं बुवन्तो वाच्यलिङ्गकाः ॥ ३९ ॥
 येनार्थः प्रस्तुतो नाम्ना तल्लिङ्गं वाच्यलिङ्गकम् ।
 न त्रिषु स्युर्विशिष्टार्थस्पर्शिनः पङ्कजादयः ॥ ४० ॥
 भेद्यनिष्ठत्वमेकार्थवृत्तिमात्रैककारणम् ।
 अतन्त्रीकृत्य भेदोक्तिः कैश्चिदाश्रीयते पुनः ॥ ४१ ॥

ते स्युरर्थसमा यद्वत् सत्त्वाद्या वाक्यगोचराः ।
 मचर्चिका मतल्लिका प्रकण्डमुद्धतल्लजौ ॥ ४२ ॥
 अमीषु नार्थलिङ्गता प्रशस्तवाचकेष्वपि ।
 योनिसम्बन्धवाचिन्यः पुत्राद्याः पुंगिरो नरि ॥ ४३ ॥
 मात्राद्याः स्त्रीगिरः स्त्रीत्वे विद्यासम्बन्धगोचराः ।
 आचार्यैर्विगुपाध्यायशिष्या याज्यार्थिकास्तथा ॥ ४४ ॥
 शास्त्रार्था वैदिकार्थाश्च स्थपतिश्रोत्रियादयः ।
 अधिकारकृता मन्त्रिस्थापत्याद्यभिधास्तथा ॥ ४५ ॥

भट्टारको भट्टरको भट्टस्तत्रभवान् भवान् ।
 भगवान् पूज्यपादश्च देवाश्चार्चार्थिकास्तथा ॥ ४६ ॥
 शत्रुमित्रज्ञशिल्प्यर्थाः प्रायस्तद्वन्न तु त्रिषु ।
 वाच्यवत् स्याद् बहुव्रीहिर्दिङ्नामसु तु स स्त्रियाम् ॥ ४७ ॥
 कृतः कर्तर्यसंज्ञायां कृत्याद्या ल्युट् च कारके ।
 सर्वनामान्यणाद्याश्च तद्धिताः संज्ञया विना ॥ ४८ ॥
 तद्धिताः चतुर्थ्या ये सङ्केतात् कृतकाह्वयाः ।
 षट्संज्ञा युष्मदस्मच्च त्रिषु लिङ्गेष्वभेदवत् ॥ ४९ ॥

(इत्यभिधेयवल्लिङ्गाः)

कृतद्धितसमासाख्या प्रसिद्धाख्ये च लिङ्गिनि ।
 तद्यथा चक्रभृद्विष्णुर्लताभेदाभिधा यथा ॥ ५० ॥
 द्वन्द्वस्तत्पुरुषोऽप्यन्त्यलिङ्गोऽश्वबडबौ नरि ।
 तथैवोक्षवशावह्वरात्राहाश्च टजन्तकाः ॥ ५१ ॥
 क्लीबे सङ्ख्यापरं रात्रमर्धात्रा पञ्चखार्याना ।
 त्रिष्वर्थः प्राक् चतुर्थ्यन्तस्तद्धितार्थो द्विगुस्त्रिषु ॥ ५२ ॥
 प्रादिप्राप्तालमापन्नात् परं च प्रवरो यथा ।
 प्राप्तार्थोऽलङ्कुमारिश्च पुमान् स्त्रीपुंसयोर्युतौ ॥ ५३ ॥
 ग्राम्यानेकशफाबालबहुपश्वन्वये स्त्रियः ।
 कल्यक्लीयुतौ षण्णैक्यं वा व्यक्त्यादि लुपि युक्तवत् ॥ ५४ ॥
 परवद् वानुवादिषु तिङ्गव्ययमलिङ्गकम् ।
 अचः पुंसि हलो दीर्घाः स्त्रियां लोपधनत्रसाः ॥ ५५ ॥

षण्डे सर्वे गुणद्रव्यक्रियायुक्तार्थकास्त्रिषु ।
 बहुत्वमेकता च स्याज्जात्याख्यायां यथा यवाः ॥ ५६ ॥
 यवश्च व्रीहयो व्रीहिरित्यथ स्याद् विशाखयोः ।
 द्वित्वं बहुवचश्चैवं द्वयं प्रोष्ठपदास्वपि ॥ ५७ ॥
 अनेकमिति शब्दस्य तद्विशेषस्य चैकता ।
 सङ्ख्यार्थस्याबहुव्रीहेर्यथाऽनेका वधूरिति ॥ ५८ ॥
 विरोधे पूर्वदौर्बल्यं लोकतः शेषमुन्नयेत् ।

(इति सामान्यन्यायाः)

सर्वे जनाः सहस्रास्या युगपद्वक्तुमुद्यताः ॥ ५९ ॥
 न कलामपि भारत्या ब्रूयुर्वर्षशतैरपि ॥ ५९½ ॥

इति भगवता विदितनिखिलनिगमनिचयरहस्यविद्येन दिनमणिसमतेजसा
 सकलतत्त्वप्रकाशेन यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 शेषकाण्डे लिङ्गसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ९ ॥

अष्टमः शेषकाण्डः समाप्तः ॥ ८ ॥

ग्रन्थोपसंहारः

इति यतिवरसङ्घपूजिताङ्घ्रिः

प्रथितयशा भुवि यादवप्रकाशः ।

व्यरचयदभिधानशास्त्रमेतत्

सह वचनैः सह लिङ्गसङ्ग्रहेण ॥ १ ॥

एतां शुभामष्टभिरुक्तकाण्डै-

भूतस्वरूपैरिव नाममालाम् ।

धत्तां विशाले हृदये मुरारि-

स्त्वां वैजयन्तीमिव वैजयन्तीम् ॥ २ ॥

एवं सूक्ष्मैर्न्यायनिर्णीतशब्दैः

सर्वार्थानां व्यञ्जकोऽसौ निघण्टुः ।

संवितीनां भूषणं सत्कवीनां

प्राप्तः पारं वैजयन्तीनिघण्टुः ॥ ३ ॥

[नानाविद्यावेद्यवाग्रत्नमाला

मूर्तं वेदं वेदयन्ती त्रिवेद्याः ।

रोद्धुं बुद्धिध्वंसकध्वान्तचक्रं

प्राज्ञैर्ज्ञेया वैजयन्ती जयन्ती ॥ ४ ॥]

(इति वैजयन्ती समाप्ता)



परिशिष्टम्

वैजयन्तीस्थशब्दाः काण्डाद्यङ्काः		कोषान्तरस्थशब्दाः कोषान्तरनामानि		स्थलनिर्देशाः
भिदुरम्	१।२।१३	भिदिरम्	अमरकोषः (व्याख्यासुधा)	१।१।४७
कृकरः, क्रकरः	२।३।३६	क्रकरः, क्रकणः	"	२।५।९
महलः	२।४।१०	मर्दलः	" (व्याख्यासुधा)	१।७।८
रुशती	२।४।१८	उपती	" "	१।७।८
फणिर्जकः	३।३।१२०	फणिज्जकः	"	२।४।७९
पिण्या	३।३।१४०	पण्या	"	२।४।१५०
विम्बोष्ठी	३।३।१४७	विम्बिका	"	२।४।१३९
वाध्रीणसः	३।४।८	वाध्रीणसः	त्रिकाण्डशेषः	२।५।३
		वाधीनसः	"	२।५।३
नैचिकी	३।४।४६	नैचिकम्	"	२।९।२२
स्थूरी	३।४।५६	स्थौरी	अमरकोषः	२।८।४६
कुक्कुरः	३।४।६९	कुक्कुरः	अभिधानचिन्तामणिः	४।३।४५
		कुर्कुरः	"	४।३।४५
कदलिका	३।६।३१	कलिन्दिका	"	२।१।७२
		कह्लिन्दिका	" (मणिप्रभा)	२।१।७२
		कलन्दिका	" "	२।१।७२
वेष्णुतम्	३।६।९५	वेष्टुतम्	"	३।५।०१
		वेष्टुभम्	त्रिकाण्डशेषः	२।७।७
ब्रसी	३।६।१४९	बृषी	अमरकोषः	२।७।४६
		बृषी	" (व्याख्यासुधा)	२।७।४६
क्रियदेतिका	३।६।१६६	क्रियदेहिका	त्रिकाण्डशेषः (व्याख्या)	१।७।४
चूषा	३।७।८४	दूष्या	अमरकोषः	२।८।४२
जागरः	३।७।१५३	जगरः	अभिधानचिन्तामणिः	३।४।३०
		जगरः	अभिधानरत्नमाला	२।३।०४
मिण्डिपालः	३।७।१६६	मिन्दिपालः	अमरकोषः	३।८।९१
		"	अभिधानचिन्तामणिः	३।४।४९

वैजयन्तीस्थशब्दाः काण्डाद्यङ्काः		कोषान्तरस्थशब्दाः कोषान्तरनामानि		स्थलनिर्देशाः
समिकम्	३।७।२०३	समीकम्	अमरकोषः	२।८।१०४
खले पाली	३।८।३१	खलेवाली	अभिधानचिन्तामणिः	३।५५८
मरिष्टक-मयष्टकौ	३।८।३८	मकुष्ठक-मयुष्टकौ	"	४।२४०
			अमरकोषः	२।९।१७
विटङ्गः	३।८।९७	विटङ्कम्	"	२।२।१५
यष्टिमधुका	३।८।१०३	यष्टीमधुकम्	"	२।४।१०९
		मधुयष्टी	" (व्याख्यासुधा)	२।४।१०९
		यष्टी	"	
मणिमन्थं शितशिवम्	३।८।१२०	शीतशिवं माणिमन्थम्	"	२।९।४२
		सितशिवम्	" (व्याख्यासुधा)	२।९।४२
		माणिवन्धम्	" (चौरस्वामी)	२।९।४२
मूका	३।९।१७	मूषा	"	२।१०।३३
कुठारः	३।९।३२	कुठरः, कुटरः	"	२।९।७४
		कुटरः	अभिधानचिन्तामणिः	४।८९
कल्लरवम्	३।९।८५	कल्लरवम्	"	२।२२०
निकार्य	४।३।१८	निकारयः	अमरकोषः	२।२।५
		निकायः	"	२।२।५
		निकारयः	अभिधानचिन्तामणिः	४।५६
कुण्डिनी	४।३।२५	कण्डनी	त्रिकाण्डशेषः	२।९।६
मण्डपः	४।३।२८	मण्डपः	अमरकोषः	२।२।९
		"	अभिधानचिन्तामणिः	४।६९
भिरसिटा	४।३।७७	भिरसटा	"	३।६०
		"	अमरकोषः	२।९।४९
मकुटः	४।३।१३५	मुकुटः	"	२।६।२०२
		मुकुटः	" (व्याख्यासुधा)	२।६।२०२
		"	अभिधानचिन्तामणिः	३।३।१४
		मुकुटः	" (स्वोपज्ञवृत्तिः)	३।३।१४
पिचिण्डिका	४।४।५८	पिचिण्डिका	"	२।२७९

वैजयन्तीस्थशब्दाः काण्डायङ्काः		कोषान्तरस्थशब्दाः कोषान्तरनामानि		स्थलनिर्देशाः
प्रसूतः	४।४।७७	प्रसूतिः	अमरकोषः	२।६।८५
कलाः	४।४।१०१	कचाः	,,	२।६।९८
गोर्दम्	४।४।११२	गोदम्	,,	२।६।६५
		गोदः	,, (मणिप्रभा)	२।६।६५
परीतदान्त्रम्	४।४।११३	पुरीतत्, अन्त्रम्	,,	२।६।६६
वातळः	४।४।१४५	वातकी (-किन्)	,,	२।६।५९
श्लेष्मस्	४।४।१४६	श्लेष्मणः	,,	२।६।६०
यौवनम्	५।१।८	यौवतम्	,,	२।६।२२
निर्वार्यः	५।४।७३	निर्घार्यः	,, (व्याख्यासुधा)	३।१।१३



वैजयन्तीकोषस्य शब्दानुक्रमणिका

[इस अनुक्रमणिका में क्रमशः शब्द, लिङ्गादि के अङ्क (१. पुंलिङ्ग, २. स्त्रीलिङ्ग, ३. नपुंसकलिङ्ग, ४. अव्यय), ए. = एकवचन, द्वि. = द्विवचन, व. = बहुवचन तथा () इस कोष्ठक के अन्तर्गत ग्रन्थान्तरस्थ पाठान्तर और अन्त में क्रमशः काण्डाङ्क, अध्यायाङ्क, तथा श्लोकाङ्क दिये गये हैं] ।

अ]

[अगच्छ

शब्दः लिङ्गाद्यङ्कः	काण्डाङ्कः अध्यायाङ्कः श्लोकाङ्कः	शब्दः लिङ्गाद्यङ्कः	काण्डाङ्कः अध्यायाङ्कः श्लोकाङ्कः	शब्दः लिङ्गाद्यङ्कः	काण्डाङ्कः अध्यायाङ्कः श्लोकाङ्कः
अ ४.	८।७।१०	अकुत्स १.	३।१।५५	अक्षपात १.	३।१।६१
अंश १.	४।४।५५	अकुप्य ३.	३।८।७४	अक्षफल १.	३।३।७९
„ १.	५।२।६	अकुप्यसहाय १.	५।१।५४	अक्षर ३.	३।६।१६२
अंशु १.	२।१।१५	अकूपार १.	४।२।१२	„ १ व.	७।५।३
„ १.	२।१।१६	„ १.	८।१।१५	अक्षरचुम्बु १.	३।१।२३
„ १.	२।१।२६	अकृत १.	३।६।९७	अक्षरजीवन १.	३।१।२३
„ १.	६।१।६	अक्ष १.	३।७।३३	अक्षरपातक १.	२।१।५२
„ १.	८।१।२५	„ १.	३।८।१५	अक्षवती २.	३।१।५९
अंशुक ३.	४।३।११६	„ ३.	३।८।१२५	अक्षि ३.	४।४।९४
„ ३.	७।३।१	„ १.	३।१।६०	अक्षिगत १.२.३.	५।४।६९
अंशुमत् १.	२।१।१५	„ ३.	५।१।४९	अक्षित ३.	५।१।३०
अंस १. ३.	४।४।७१	„ १. ३.	६।५।२	अक्षिस्स्कार १.	४।३।१५७
अंसल १. २. ३.	५।४।६	अक्षकील १.	३।७।३३	अक्षीव ३.	३।८।१२०
अंससन्धि १.	४।४।६९	अक्षज ३.	३।१।७३	अक्षोड १.	३।३।४६
अंसान्त १.	४।४।७०	अक्षजीविन् १.	३।१।५९	अक्षौहिणी २.	३।७।५८
अंहति २.	३।६।११९	अक्षत १. २. ३.	७।५।१४	अखण्ड १. २. ३.	५।४।८६
अंहन ३.	५।२।१३	अक्षताडन ३.	३।१।३७	अखात ३.	४।२।५
अंहस् ३.	३।६।१६८	अक्षति २.	३।६।९०	अखिल १. २. ३.	५।४।८५
अकपाय १.	५।३।३९	अक्षत्र ३.	४।४।८५	„ १. २. ३.	७।४।१
अकार्यसेवन ३.	३।६।११७	अक्षदर्शक १.	३।८।१४	अग १.	३।२।१
अकिञ्चन १.२.३.	५।४।५९	अक्षधूर्त १.	३।१।५८	„ १.	८।१।५८
		अक्षधूर्तिल १.	३।४।५२	अगच्छ १.	३।३।५

अगद]

वैजयन्तीकोषः

[अङ्कुल

अगद १.	४४११४१
अगदङ्कार १. २. ३.	४४११४३
अगम १.	८११५८
अगरी २.	३३१८६
अगरु १.	३८११०६
अगस्ति १.	३३११५६
," १.	३३११५१
अगस्त्य १.	३३११५६
," १.	३३११५१
अगाध १.	४११२
," १. २. ३.	४२११९
अगार ३.	४३११७
अगृहीतदिश् १. २. ३.	३१७२१९
अग्राथी २.	१२११९
अग्नि १.	१२११५
," १.	८६१२
अग्निक १.	३३३२२१
अग्निकारिका २.	३६११४
अग्निकार्य ३.	३६११४
अग्निगौच ३.	४३१११९
अग्निचित् १.	३६१७५
अग्निजा २.	३४१४३
अग्निपूर्णिमा २.	२११७४
अग्निबीज ३.	३२१२०
अग्निमन्थ १.	३३१८६
," १.	३८१८४
अग्निमुखी २.	३३१९५
अग्निविश्व २.	१२१३२
अग्निशिख ३.	३८१११७
अग्निष्टोम १.	३६१८७
अग्निष्ठ १. २. ३.	३६११०४
अग्निसख १.	१२१४९
अग्निसङ्ग्रह १.	३६१६८
अग्निसन्त्राक १.	३८१८२
अग्निहोत्र ३.	३६१७०
अग्निहोत्रहवणी २.	३६११००
अग्निहोत्री २.	३६१९५
अग्नीन्धन ३.	३६११४
अग्न्याधान ३.	३६१६९

अग्न्याहित १.	३६१७३
अग्न्युत्पात १.	१२१३३
अग्र १.	३६१९८
," १. २. ३.	५४१६३
," ३.	६३११
," १.	८११६०
अग्रज १.	४४१३१
," १. २. ३.	५४१४
अग्रजन्मन् १.	३६११
अग्रणी १. २. ३.	५४१६४
अग्रतः (-स्) ४.	८८१११
अग्रतःसर १. २. ३.	३१७१४५
अग्रदिधिषु १.	३६१४४
अग्रद्रवसंहति २.	३८११४७
अग्रमांस ३.	४४१११४
अग्रयान ३.	३१७२०३
अग्रसन्धानी २.	१२१३६
अग्रस्थ १. २. ३.	५४१७७
अग्राम्य १. २. ३.	५४१२०
अग्रिम १. २. ३.	५४१७७
अग्रिय १. २. ३.	५४१४
," १. २. ३.	५४१६३
अग्रीय १. २. ३.	५४१६३
अग्नेदिधिषु १.	३६१४४
अग्नेदिधिषू १.	३६१४४
," २.	३६१४५
अग्नेसर १. २. ३.	३१७१४५
अग्रथ १. २. ३.	५४१७७
अघ ३.	३६११६८
," ३.	६३१२
अघन १. २. ३.	५४१२५
अघायु १. २. ३.	३६१११
अङ्क १.	२११२९
," १.	३१११००
," १.	४४१६०
," १.	६११६
अङ्कण १.	४३१३६
अङ्कति १.	१२१४८
अङ्कपालि २.	८२१२
अङ्कपाली २.	४३११७०
अङ्किलि २.	४३११५४

अङ्कुट १.	४३१४८
अङ्कुर १. ३.	३३११०
अङ्कुश १. ३.	३१७८४
अङ्कूर १. ३.	३३११०
अङ्कोठ १.	३३१४१
अङ्कोल १.	३३१४१
अङ्कय १.	३११२२९
अङ्ग १ व.	३११३१
," ३.	३६१२०८
," ३.	४४१५२
," ३.	४४१५५
," १. २. ३.	६११३
," ४.	८८१२१
अङ्गचेष्टा २.	३११९८
अङ्गज १.	४४१३९
," १.	५११३८
," १. ३.	७५११०
अङ्गजा २.	४४१३९
अङ्गद ३.	४३११४३
अङ्गद्वीप ३.	३१११३
," ३.	३१११४
," ३.	३१११५
अङ्गना २.	२११९
," २.	४४१५
अङ्गनाग्रिय १.	३३१२५
अङ्गमर्दिन् १.	३१११५
अङ्गलोढ्यक १.	४२१४६
अङ्गविलेप १.	३११९७
अङ्गसंस्कार १.	४३११२
अङ्गहार १.	३११९७
अङ्गार १. ३.	१२१३२
," १.	२११३१
," १.	५३१८
अङ्गारधानी २.	४३१५५
अङ्गारशकटी २.	४३१५५
अङ्गारशाकट १. २. ३.	३६१३२
अङ्गिन् १.	४४११
अङ्गीकार १.	५२१३७
अङ्गु १.	२३११
अङ्गुल १. ३.	३११५२

[अङ्गुल]

शब्दानुक्रमणिका

[अतिमुक्त]

अङ्गुल १.	३।३।२७	अजिर ३.	४।४।१३६	अणु ३.	३।८।११९
„ १.	३।६।१५९	„ १. २. ३.	५।४।१२५	„ १. २. ३.	५।४।१३६
„ १.	४।४।७९	„ १. २. ३.	७।५।१४	अणुराजि २.	३।७।१६३
अङ्गुलाल १.	३।८।११२	अजीगव ३.	१।१।५०	अण्ड ३.	२।३।५०
अङ्गुलि २.	४।४।७४	अज्जुका २.	३।९।१०४	„ १.	३।७।१६२
अङ्गुलित्र ३.	३।७।१५६	अज्ञ १. २. ३.	५।४।२१	„ १. ३.	४।४।६३
अङ्गुलिमुद्रा २.	४।३।१४५	अञ्चति १.	१।२।१८	„ ३.	६।३।२
अङ्गुलीयक ३.	४।३।१४४	अञ्चन ३.	३।६।३९	अण्डज १.	४।१।४२
अङ्गुष्ठ १.	४।४।७४	अञ्चल १.	४।३।१३१	„ १. २. ३.	४।४।२
अङ्गुष्ठकान्तर १.	४।४।५७	अञ्चित १. २. ३.	५।४।११३	„ १.	७।५।११
अङ्घ्रि १.	४।४।५६	अञ्जन १.	२।१।८	अण्डजा २.	७।५।११
अङ्घ्रिनामन् १.	३।३।१२	„ १.	३।६।१०७	अण्डप्रहरण १.	४।१।४७
अङ्घ्रिप १.	३।३।४	„ ३.	४।३।१५७	अण्डमूलक ३.	४।४।६०
अचल १.	३।२।१	अञ्जनकेशी २.	३।८।१०१	अण्डिक १.	४।४।१३४
अचला २.	३।१।४	अञ्जनवल्लिका २.	३।३।१३५	अण्डिका २.	५।१।४८
अचिरव्यूढा २.	४।४।७	अञ्जनावती २.	२।१।९	अण्डीर १.	७।५।१५
अच्छ्रमल्ल १.	३।४।७	अञ्जनिका २.	४।१।२९	अण्डुक १.	२।३।३४
अच्युत १.	१।१।११	अञ्जलि १.	४।४।७८	„ १.	४।१।४७
अज १.	३।४।६२	„ १.	५।१।५३	„ १.	४।४।६३
„ १. २. ३.	६।५।४	„ १.	५।१।६३	अतः (—स्) ४.	८।७।१६
अजगर १.	४।१।१७	„ १.	८।९।२७	अतलस्पर्श १. २. ३.	४।२।१९
„ १.	४।१।१९	अञ्जलिकारिका २.	३।३।१४८	अतसी २.	३।८।४५
अजगव ३.	१।१।५०	„ २.	३।९।१३	अति ४.	८।७।१५
अजगाव ३.	१।१।५०	अञ्जसा ४.	८।७।३१	„ ४.	८।८।४
अजन्य ३.	३।६।१९०	अञ्जि १.	३।३।८२	अतिकृच्छ्रक ३.	३।६।१३९
अजप १. २. ३.	३।६।११	अटनी २.	३।७।१७७	अतिक्रम १.	३।६।११४
अजमोदा २.	३।८।१०२	अटवी २.	३।१।१	„ १.	५।२।१६
„ २.	८।२।१	„ २.	८।६।११	अतिचरा २.	३।८।८९
अजय्य ३.	३।६।१८६	अटाट्या २.	५।२।११	अतिचाटुवाच् २.	२।४।२५
अजवीथी २.	२।१।४६	अट्ट १.	४।३।३३	अतिच्छत्र १.	३।३।२३४
अजशृङ्गी २.	३।३।१४१	„ १.	६।१।५	अतिजव १. २. ३.	३।७।१५०
अजस्त १. २. ३.	५।४।१३०	अट्टहास १.	३।९।८४	अतिथि १.	३।६।६८
अजहा २.	३।३।१२९	अट्टालिका २.	४।३।३३	अतिथ्यर्थ १. २. ३.	३।६।६७
अजा २.	३।४।६३	अड्डन ३.	३।७।२००	अतिपथिन् १.	३।१।४९
आजाजी २.	३।८।२३	अणक १. २. ३.	५।४।७५	अतिपात १.	३।६।११४
आजाजीव १.	३।९।२९	अणव्य १. २. ३.	३।८।२०	अतिबला २.	३।३।१२८
अजित १.	१।१।१२	अणि १.	२।१।७९	अतिमर्याद १. २. ३.	५।४।१३१
अजितनेमि १.	३।६।१९	„ १. २.	३।७।१३१	अतिमात्र १. २. ३.	५।४।१३१
अजिन ३.	३।६।२१	„ १. २.	४।३।५२	अतिमानक १. २. ३.	५।४।१३१
अजिनपत्रा २.	२।३।४४	„ १. २.	६।५।५	अतिमुक्त १.	३।३।१८८
अजिनयोनि १.	३।४।२५	अणिकूर्च १.	२।१।८०		

अतिमुक्तक १. ३।३।४६
 अतिमृगा २. ३।३।१७२
 अतियव १. ३।८।५२
 अतिरिक्त १.२.३. ५।४।१३७
 अतिविपा २. ३।८।९०
 अतिवेल १.२.३. ५।४।१३१
 अतिशय १. ५।२।३
 अतिशयित १. २. ३. ५।४।१३७
 अतिसन्धान ३. ५।२।३५
 अतिसर्जन ३. ५।२।१९
 अतिसारकिन् १. २. ३. ४।४।१४६
 अतिस्थिर १.२.३. ५।४।७९
 अतिहस्तक १. ३।७।७०
 अतिहास १. ३।५।८५
 अतिहिंसन ३. ३।७।२८
 अतीन्द्रिय १. २. ३. ५।४।१३३
 अतीव ४. ८।८।४
 अतीसार १. ४।४।१२९
 अत्यन्त १.२.३. ५।४।१३१
 अत्यन्तीन १. २. ३. ३।७।१४९
 अत्यम्ला २. ३।३।३४
 अत्यय १. ७।१।१
 अत्यर्थ १. २. ३. ५।४।१३१
 अत्यर्थस्वादु ३. ३।८।१३६
 अत्याकार १. ३।६।१७१
 अत्याधान ३. ५।२।१६
 अत्याहित ३. ८।३।१
 अत्यृह १. ३।७।८०
 अत्रिनेत्रज १. २।१।२५
 अथ ४. ८।७।१४
 अथर्वाणि ३. ८।१।१३
 अथो ४. ८।७।१४
 अदन ३. ४।३।१०२
 अदभ्र १. २. ३. ५।४।८५
 अदय १. २. ३. ५।४।२४
 अदस् १. २. ३. ६।४।१
 अदात् १. २. ३. ५।४।५९
 अदिति २. ३।६।९१
 " २. ७।२।१
 अदितिनन्दन १. १।१।३

अदृष्ट ३. ३।७।१४
 अदृष्टि २. ३।९।९०
 अद्धा ४. ८।७।१२
 अद्भुत १. १।२।२७
 " १. ३।७।७५
 " १. ३।७।७७
 " १. २. ३. ३।७।७८
 अद्भर १. २. ३. ५।४।५०
 अद्य ४. ८।८।७
 अद्यश्चीन २. ४।४।१७
 अद्रि १. २।१।११
 " १. ३।२।२
 " १. ६।१।४
 अद्रिज ३. ३।२।१६
 अद्रिजा २. १।१।५८
 अद्रिष्टत् १. १।१।२५
 अद्रुत १. २. ३. ५।४।५२
 अद्वयवादिन् १. १।१।३४
 अधः (-स्) ४. ८।८।१९
 अधःपुष्पी २. ३।३।१५७
 अधम १. २. ३. ५।४।७५
 " १. २. ३. ७।४।१
 अधमर्ण १. २. ३. ३।८।९
 अधर १. ४।४।८७
 " १. २. ३. ५।४।४७
 " १. २. ३. ७।५।१६
 अधरा २. २।१।६
 अधरेद्युः (-स्) ४. ८।८।८
 अधरोष्ठ १. ४।४।८७
 अधर्म १. ३।६।१६८
 अधस्तात् ४. ८।८।१९
 अधि ४. ८।७।१३
 अधिक १. २. ३. ५।४।८५
 " १. २. ३. ५।४।१३१
 " १. २. ३. ५।४।१३७
 अधिकर्धिक १.२.३. ५।४।५६
 अधिका २. ५।१।४०
 अधिकाङ्ग ३. ३।७।१५६
 अधिकार १. २।४।४१
 अधिकृत १. २. ३. ३।७।१९
 अधिक्षिप्त १. २. ३. ८।४।२

अधिक्षेप १. २।४।३२
 अधित्यका २. ३।३।९
 अधिप १. २. ३. ५।४।५८
 अधिपति १. २. ३. ५।४।५८
 " १. २. ३. ८।५।२
 अधिभू १. २. ३. ५।४।५८
 अधिरोहिणी २. ४।३।५१
 अधिवास १. ८।१।६
 अधिवासन २.३. ४।३।१५६
 अधिविज्ञा २. ४।४।१३
 अधिश्रयणी २. ४।३।५४
 अधिष्ठातृत्व ३. १।१।४८
 अधीतवेदक १. ३।६।८
 अधीर १. २. ३. ५।४।१८
 अधीश १. २. ३. ५।४।५८
 अधीश्वर १. ३।७।२
 अधुना ४. ८।८।५
 अधोऽशुक ३. ४।३।१२१
 अधोऽक्षज १. १।१।१३
 अधोनापित १. ३।५।४१
 अधोभुवन ३. ४।१।१
 अधोमुख १.२.३. ५।४।९०
 अध्यक्ष १. २. ३. ३।७।१९
 " १. २. ३. ५।४।१३३
 " १. २. ३. ७।४।१
 अध्यषा २. ३।३।१२९
 " २. ३।३।१७७
 अध्ययन ३. ३।६।६३
 अध्यवसाय १. ३।६।१६७
 अध्यस्त १.२.३. ५।४।१०४
 अध्यापन ३. ३।६।६३
 अध्याय १. ३।३।३२
 अध्युष १. ५।१।५३
 अध्यूढा २. ४।४।१३
 अध्येषणा २. ३।६।१२०
 अध्वन् १. ३।१।४९
 अध्वर १. ३।६।८२
 अध्वर्यु १. ३।६।७९
 अनंशुमत्फला २. ३।३।१७३
 अनक्षर १. २. ३. २।४।१६
 अनमिक १. ३।६।७३

अनङ्ग १.	१११२७
अनङ्गह १.	३१४५२
अनङ्गह २.	३१४४२
अनङ्गवाही २.	३१४४२
अनन्त १.	४११३
„ १. २. ३.	७५१४
अनन्तशायिन् १.	११११३
अनन्ता २.	२११५
„ २.	३३१२५
„ २.	७५१४
अनन्यज १.	१११२८
अनन्यवृत्ति १. २. ३.	५४१२८
अनपरार्थ्य १. २. ३.	५४१६३
अनम्बु १.	२३३३२
अनर्गल १. २. ३.	५४१३२
अनर्थक १. २. ३.	२४११८
अनल १.	११११५
„ १.	३१८८१
अनलज्वाला २.	३३३९७
अनलोपल १.	३२३३७
अनवधानता २.	३३११७८
अनवरत १. २. ३.	५४१३०
अनवस्कर १. २. ३.	५४१६६
अनस् ३.	३७१२५
अनादर १.	३३११७१
अनादृत १. २. ३.	५४१५५
अनामय ३.	४४१४२
अनामिका २.	४४१७४
अनारत १. २. ३.	५४१३०
अनालम्बी २.	३११११८
अनावृष्टि २.	२१२८
अनाशक ३.	३३१४४
अनाशकिन् १.	३३१६०
अनि १. २.	३७१३३
अनिच्छ १.	३३३२६
अनिमिष १.	८११३३
अनिमेष १.	८११३३
अनिरुद्ध १.	१११२९
अनिर्वद्ध १. २. ३.	२४११७
अनिर्वाप १.	२११३३

अनिल १.	११२४७
„ १.	३७१६१
अनिलाशन १.	४११६
अनिश ३.	५४१३०
अनिष्ट १. २. ३.	५४१६९
अनी २.	४३१४७
अनीक १. ३.	७५११५
अनीकवत् १.	१२१२५
अनीकस्थ १.	८१११४
अनीकिनी २.	३७१५५
„ २.	३७१५८
अनु ४.	८७११६
अनुक १. २. ३.	५४३३४
अनुकण्ठी २.	४३११४१
अनुकम्पा २.	३३११९२
अनुकर्ष १.	३७१३३
अनुकर्षण ३.	३११५३
अनुकल्पक १.	३३११३३
अनुकामीन १.	३७१५०
अनुकार १.	५२११७
अनुकूल १. २. ३.	५४१२७
अनुक्रम १.	३३१११३
अनुक्रोश १.	३३११९२
अनुग १.	३७११६
अनुचर १.	३७११६
अनुज १.	४४३३१
„ १. २. ३.	५४१४
अनुजीविन् १.	३७११७
अनुताप १.	३३११८५
अनुत्तर १. २. ३.	४४१२५
अनुदात्त १. २. ३.	३३१३७
अनुद्वीप १.	३१११३
अनुनय १.	५२३३८
अनुनासिक १. २. ३.	३३१३७
अनुपद ४.	५४१२८
अनुपदिन् १. २. ३.	७३१२७
अनुपदीना २.	४३११६२
अनुपमा २.	२११९
अनुपात्यय १.	३३१११४
अनूचान १.	३३१८२
अनूचीन १. २. ३.	५४१२७

अनूप १. २. ३.	३११४५
अनूराध १ ब.	२११४४
अनूरुसारथि १.	२११११
अनृङ्ग १.	४३३४
अनृजु १.	१३३४
„ १. २. ३.	५४१२२
अनृत १. २. ३.	२४११७
„ ३.	३८३३
„ ३.	७५११६
अनेक १. २. ३.	८११५८
„ १. २. ३ पु.	८११५८
अनेकप १.	३७१६०
अनेड १. २. ३.	५४१२१
अनेडमूक १. २. ३.	५४११३
„ १. २. ३.	५४११४
अनेहस् १.	२११५२
अनोकह १.	३३१५
अन्त १.	३३११७६
„ १. २. ३.	५११२९
„ १.	५११३१
„ १. ३.	६५११
अन्तःकरण ३.	२६११७३
अन्तःपुर ३.	४३३३६
अन्तक १.	१२३३४
अन्तर ३.	२११७
„ ३.	२११९३
„ १. २. ३.	३८११०
„ १.	७५११
अन्तरगाहन ३.	५२११४
अन्तरद्वीप १.	३१११२
अन्तरा ४.	८८११८
अन्तराय १.	५२१४
अन्तराल ३.	२११७
अन्तरिक्त ३.	२१११
अन्तरिक्षासन ३.	३३१२९९
अन्तरीप ३.	४२३३३
अन्तरीय ३.	४३१२२१
अन्तरेण ४.	८८१४
„ ४.	८८११८
अन्तर्गङ्ग ३.	५२१६
अन्तर्धि १.	२११६३

अन्तर्मनस् १. २. ३. ५४३४
 अन्तर्यामि १. ३६१२
 अन्तर्वक्षिक १. ३७२२
 अन्तर्वली २. ४४१६
 अन्तर्वाणि १. २. ३. ५४३१
 अन्तश्चय्या २. ८१२२
 अन्तस्था २. ३६३६
 अन्तावसायिन् १. ३५४९
 " १. ३५८७
 " १. ३५१०७
 " १. ३५१०७
 " १. ३९२६
 अन्तिका २. ४३५४
 अन्तिकाश्रय १. ४३१२
 अन्तिकेशय १. ४३१६८
 अन्तिम १. २. ३. ५४७७
 " १. २. ३. ५४१४०
 अन्तेवासिन् १. ८११३
 अन्त्य १. २. ३. ५४७७
 " १. २. ३. ६४११
 अन्त्यजाति १. ३५२
 " २. ३५१२१
 अन्त्यजालय १. ३९३२
 अन्त्यवर्ण १. ३९११
 अन्तुक १. ३७८३
 अन्दू २. ६२११
 अन्ध १. २. ३. ५४१३
 " १. ६५६
 अन्धक १. ३६२०१
 (इन्धक)
 अन्धकसूदन १. १११४३
 अन्धकार १. ३. २११६२
 अन्धकी २. २११४
 अन्धतमस ३. २११६२
 अन्धता २. ८१६६
 अन्धमेहल १. ५३५६
 अन्धस् ३. ४३७५
 अन्धु १. ४२७
 अन्ध्र १ व. २३३२
 " १. ३५३५
 " १. ३५१२

अन्ध्र १. ३५१२३
 " १. ३५११७
 अन्न ३. ४३७५
 " १. २. ३. ५४१०७
 " ३. ८६८
 अन्नसंज्ञिका २. ३३१२७
 अन्नाद १. १२२७
 अन्य १. २. ३. ६४१२
 अन्यतरेद्युः (-स्) ४. ८८८
 अन्यथा ४. ८८२०
 अन्यथाकृति २. ५२२४
 अन्यथाभाव १. ५२२४
 अन्यद्वा ४. ८८७
 अन्यनिहति २. २४१४०
 अन्यपीडन ३. ५२२३
 अन्यपुष् १. २३१६
 अन्यभृत १. २३२६
 अन्यलोहक ३. ३२२८
 अन्यवाप १. २३१६
 अन्यशाखास्थ १. २. ३. ३६१३
 अन्यानुरक्ता २. ३६४८
 अन्येद्युः (-स्) ४. ८७४
 अन्योन्य १. २. ३. ५४१२३
 अन्वक्ष १. २. ३. ५४१२८
 अन्वच् १. २. ३. ५४१२८
 अन्वय १. ४४४९
 अन्ववाय १. ४४४९
 अन्वाहार्य ३. ८३२
 अन्वाहार्यवचन १. १२२३
 अन्विष्ट १. २. ३. ५४१९८
 अन्वेपणा २. ३६१२१
 अन्वेपित १. २. ३. ५४१९८
 अन्वेष्ट १. २. ३. ५४१२७
 अप् २ व. ४२३
 " २. ८७१३
 अप ४. ८७२५
 अपकार १. ५२२२
 " १. ५२२३
 अपकृष्ट १. २. ३. ५४७१

अपकृष्ट १. २. ३. ५४७५
 अपक्रम १. ३७२१०
 अपगम १. ५२२७
 अपगम्भक १. २. ३. ५४१७
 अपघन १. ४४५५
 अपचायित १. २. ३. ५४१०५
 अपचित १. २. ३. ५४१०५
 अपचिति २. ३७४४
 " २. ८२१
 अपञ्चयज्ञ १. ३६७७
 अपटी २. ४३१२४
 अपटीका २. ३९८६
 अपट्ट १. २. ३. ४४१४४
 अपतर्पण ३. ४४१३९
 अपत्य ३. ४४४१
 अपन्नपा २. ३६१९४
 अपन्नपिण्णु १. २. ३. ५४४४०
 अपथ ३. ३१५०
 अपथिन् १. ३१५०
 अपदंश १. ३९५२
 अपदंशक १. ४३८६
 अपदरोहिणी २. ३३८४
 अपदान ३. ३७२०९
 " ३. ८३१
 अपदालक १. ४११४२
 अपदिश ४. २१३
 अपदेश १. ८१७
 अपध्वंसज १. ३५१२०
 अपध्वस्त १. २. ३. ५४७१
 अपभरणी २. २११४१
 अपभ्रंश १. ८१७
 अपरगन्धिक १. ३१८
 अपरति २. ५२३६
 अपररात्रक १. २१६६
 अपराजित १. ८१५०
 अपराजिता २. २१५
 " २. ३३१३३
 " ३. ३६२०८
 अपराद्धशर १. २. ३. ३७२१८
 अपराध १. ३७४७
 अपरान्त १ व. ३१३५

अपराह् १.	२।१।६५	अपान्नपात् १.	१।२।२३	अब्द १.	२।२।१
अपरुजा २.	१।१।५९	अपामार्ग १.	३।३।११५	अब्ध १.	४।२।७
अपरेद्युः (-स्) ४.	८।८।८	अपास्पति १.	४।२।१०	अब्धा २.	४।२।२३
अपर्णा २.	१।१।५९	अपास्पित ३.	१।२।१९	अब्धि १.	४।२।१२
अपलाप १.	२।४।३०	अपाय १.	३।७।२१०	” १.	८।६।१३
अपलासिका २.	३।६।१८१	” १.	५।२।२७	अब्धिजा २.	१।१।३६
अपवंश १.	३।७।७७	अपार १.	४।२।१०	अब्धिमण्डूकी २.	४।१।५६
अपवन ३.	३।३।२	अपार्थक १.२.३.	५।४।१२९	अब्धिवस्त्रा २.	३।१।३
अपवरक १.	४।३।५१	अपावृत्त १. २. ३.	५।४।२७	अब्रह्मण्य ३.	३।९।१०९
अपवर्ग १.	८।१।६	अपाश्रय १.	४।२।१६४	अभय ३.	३।३।२३२
अववर्जन ६.	३।६।११९	अपि ४.	८।७।१४	अभया २.	३।३।१७८
अपवाद १.	२।४।३३	अपिधान ३.	२।१।६४	अभवनि २.	८।९।८
” १.	३।७।४७	अपुञ्ज १.	१।२।२१	अभि ४.	८।७।१६
” १.	८।१।१४	अपुनर्भव १.	३।६।२३८	अभिक १. २. ३.	५।४।३५
अपवारण ३.	२।१।६३	अपूप १.	४।३।७२	अभिक्रम १.	३।७।२०२
अपव्यय १.	२।४।३०	अपेक्षा २.	५।२।२९	” १.	५।२।१५
अपशब्द १.	३।५।१२०	अपोनपात् १.	१।२।२३	” १.	५।२।१६
” १. २. ३.	५।४।२२	अपौर १.	३।८।३३	अभिख्या २.	५।४।१२२
अपशाला २.	४।३।३८	अप्पति १.	१।२।४५	” २.	७।२।२
अपष्ट ३.	५।२।८	” १.	४।२।११	अभिख्यान ३.	२।४।३२
अपट्ट ३.	५।२।८	अप्पित्त ३.	१।२।१९	अभिग्रह १.	५।२।१८
अपसर १.	५।२।३२	अप्पुप्प ३.	४।२।३७	” १.	८।१।११
अपसर्प १.	३।७।२९	अप्फल ३.	३।३।२२०	अभिचार १.	३।६।११७
अपसव्य १.	१।२।२८	अप्य ३.	३।८।८०	अभिज १. २. ३.	५।४।६१
अपस्कर १.	३।७।१३५	अप्रकाण्ड १.	३।३।७	अभिजन १.२.३.	५।४।१९
अपस्नान ३.	३।६।६४	अप्रच्छन्न ३.	३।६।१३६	” १.	८।१।११
अपहस्तित १.२.३.	५।४।९५	अग्रहत १. २. ३.	३।८।१८	अभिजात १. २. ३.	८।४।१
अपहार १.	५।२।१९	अग्रहृष्टक १.	२।३।१६	अभिज्ञ १. २. ३.	५।४।१९
” १.	८।१।३	अप्सरस् २.	१।३।१	अभिज्ञान ३.	२।१।२९
अपहास १.	३।९।८५	अप्सरसाम्पति १.	१।२।६	अमितः (-स्) ४.	८।७।३१
अपहित १.२.३.	५।४।१०४	अफला २.	३।३।९९	अमिताढन ३.	५।२।१९
अपह्नव १.	२।४।३०	अवद्ध १. २. ३.	२।४।१८	अमिताप १.	४।४।१३५
” १.	८।१।१४	अवद्धमुख १.२.३.	५।४।४६	अभिधा २.	२।४।३१
अपाङ्गर्भ १.	८।१।१५	अवल १.	४।४।३२	अभिधान ३.	२।४।३१
अपाच ४.	५।४।९१	अवला २.	४।४।५	अभिध्या २.	३।६।१७९
अपाचीन १.२.३.	५।४।५१	अवाल ३.	३।३।२२०	अभिनय १.	३।९।९८
अपाटव ३.	४।४।१३८	अवज ३.	४।२।३७	” १.	३।९।९८
अपादान ३.	५।२।१९	” १.	६।५।३	अभिनव १. २. ३.	५।४।८८
अपान ३.	४।४।६०	अवजल १.	३।७।९६	अभिनिवेश १.२.३.	५।२।१४
” १.	७।५।१२	अवज्जि १.	२।१।२६	अभिनिष्ठान १.	३।६।३७
अपानिक १.	३।३।९२	अब्द १.	२।१।१०	” १.	८।१।५०

अभिनिन]

अभिनीत १. २. ३. ८१११
अभिपन्न १. २. ३. ८११२
अभिप्राय १. ३१६१७४
अभिभूत १.२.३. ५११६७
अभिमन्त्रण ३. ३१६१९३
अभिमर १. ८१११२
अभिमर्द १. ३१७२०५
अभिमान १. ३१६१६९
” १. ८१११९
अभियाति १. ३१७४२
अभियुक्त १.२.३. ३१८१०
अभियोक्त १.२.३. ३१८१०
अभिरूप १.२.३. ८१११५
अभिलाष १. ३१६१८०
अभिलाषुक १.२.३. ५११३५
अभिवादक १.२.३. ५११४३
अभिवादन ३. ३१६३९
अभिवान्या २. ३१४५१
अभिज्ञान ३. २१४३२
अभिज्ञस्त १.२.३. ३१८११
अभिज्ञस्ति २. ८११२
अभिज्ञाप १. २१४३२
अभिपङ्ग १. ८१११०
अभिषव १. ३१७५१
” १. ८११११
अभिषिक्त १. ३१५५
अभिषिक्तक १. ३१५६६
अभिषुत ३. ४३१८२
अभिषेक १. ४३११३
अभिषेणन ३. ३१७२०१
अभिसन्धान ५. ३१७१९४
अभिसम्पात १. ३१७२०५
अभिसार १. ३१७१६
अभिसारिका २. ३१६४६
” २. ४३११२
अभिहार १. ५१२१८
” १. ८१११०
अभीक १. २. ३. ५११३५
” १.२.३. ७१११
अभीक्षण ३. ७३१२
अभ्यग्र १. २. ३. ५११८९

वजयन्तीकोषः

अभ्यग्र १.२.३. ५१११४०
अभ्यङ्ग १. ४३११२२
अभ्यन्तर ३. २११७
अभ्यमित १.२.३. ४१११४४
अभ्यमित्र १.२.३. ३१७१४६
अभ्यमित्रिण १. २. ३. ३१७१४६
अभ्यमित्रिय १. २. ३. ३१७१४६
अभ्यर्ण १. २. ३. ५१११४०
अभ्यवकर्षण ३. ५१२१७
अभ्यवस्कन्द १. ३१८१६
अभ्यवस्कन्दन ३. ३१७२०७
अभ्यवहार १. ४३१०२
अभ्यवहृत १.२.३. ५१११०८
अभ्यागम १. ३१७२०५
अभ्यागारिक १२३. ५११५२
अभ्यादान ३. ५१२१५
अभ्याधान ३. ८३१२
अभ्यान्त १.२.३. ४१११४४
अभ्याखण्ड १. २. ३. ८११५
अभ्याश १.२.३. ५१११४०
अभ्यास १. ३१७१९५
अभ्यासादन ३. ३१७२०७
अभ्युत्थान ३. ५१२१०
अभ्युपगम १. ५१२३७
अभ्युपाय १. ५१२३७
अभ्योष १. ७५१११
अभ्र ३. ६३११
अभ्रक ३. ३१२१५
अभ्रनाग १. ११२१२
अभ्रपिशाच १. २११३७
अभ्रपुष्प १. ३३३३१
अभ्रफुल्लक १. ३३१६३
अभ्रभव १.२.३. ५१११६
अभ्रमु २. २११९
अभ्रमुप्रिय १. ११२१२
अभ्रावकाशिक १. २. ३. ३१६१३०
अभि १. ३१६१०२
” २. ३१८२९

[अमृतांशु

अभ्रिय १. २. ३. ५११११६
अमत १. ३. ३१६१०२
अमति २. ७२१२
अमत्र ३. ४३३६२
अमन १. ३३३४९
अमनि २. ७२११
अमर १. ७५१३
अमरा २. ३३३१२७
” २. ४३३१९
” २. ७५१३
अमरावती २. ११२१०
अमरावली २. ११२४३
अमर्य १. १११५
अमर्यभवन ३. १११२
अमर्ष १. ६३३१८३
अमर्षिन् १. २. ३. ५११३२
अमलपालिक १. ११२५३
अमा ४. ८१७१२
अमात्य १. ३३३३
” १. ३३३१९
अमात्यक १. ३३३२०
अमामस्या २. २११७१
अमामसी २. २११७१
अमावसी २. २११७०
अमावस्या २. २११७१
अमावासी २. २११७०
अमावास्या २. २११७१
अमित्र ३. ३३३४०
अमुक्त ३. ३३३१९६
अमुत्र ४. ८१८१५
अमृणाल ३. ३३३३३१
अमृत ३. ३३३८२
” ३. ३३३१४६
” १. २. ३. ५११८८
(अवमृत)
” ३. ७५१७
अमृतत्व ३. ३३३३३८
अमृतफल १. ३३३१६६
अमृतवल्गिका २. ३३३१३२
अमृता २ ब. २१११८
अमृतांशु १. २११२६

अमृताशन १.	१११४	अम्बुवास १.	२११४५	अरणि १.	२१४२२
अमृतोद्भव १.	३३३२०४	अम्बुवेतस १.	३३३३०	„ १.	३३३८६
अमोघ १.	४११५२	अम्बुसुकर १.	४११५३	„ २.	३३३५०
अमोघा २.	३३३९०	अम्बुकृत १.२.३.	२१११८	„ १. २.	३३३१०८
„ २.	३३८९७	अम्भस् ३.	४२११	अरण्य ३.	३३३१
अम्बक ३.	४११९४	अम्भरा २.	४३३४४	अरण्यजतिल १.	३३३३९
अम्बर ३.	२११२	अम्ल १.	५३३२६	अरण्यमक्षिका २.	२३३४५
„ ३.	४३३११६	अम्लजुण्डी २.	३३३१४१	अरण्यानी २.	३३३२
अम्बरीष १. ३.	४३३५६	(अम्लदुण्डी)		अरति १.	८१११०
„ १.	८५३३	अम्लतिक्तकपाय १.		अरलि १.	३३१५५
अम्बला २.	४३३१०७		५३३३५	„ १.	७१११
अम्बल्लोर्ण ३.	४३३१०७	अम्लदुण्डी २.	३३३१४१	अरर ३.	४३३४६
अम्बष्ट १.	३५३४	अम्ललोणी २.	३३३१६३	„ १.	७५३१०
„ १.	३५३६५	अम्लवेतस १.	३३३१३३	अरविन्द ३.	४२३७
„ १.	३५३६६	अम्लान १.	३३३१८८	अराति १.	३३३४०
„ १.	३५३७०	अम्लिका २.	३३३८१	अराल १.	३३३१११
अम्बष्टा २.	३३३१३१	अम्लोट १.	३३३९४	„ १. २. ३.	५३३१२४
„ २.	३३३१६३	अय १.	३३३१८९	अरि १.	३३३४०
„ २.	३३३१७७	„ १.	३३३१६१	अरिचिन्तन ३.	३३३१४
अम्बा २.	३३३१०६	अयन ३.	७३३१	अरिज ३.	३३३३२
„ २.	४३३२६	अयन्त्रित १.२.३.	५३३१३२	अरित्र ३.	४३३१६
„ २.	४३३२७	अयश्शलाका २.	३३३१८४	अरिन् ३.	३३३१३४
अम्बिका २.	४३३२७	अयस ३.	३३३३	अरिम १.	३३३६४
„ २.	७३३२	„ ३.	८३३१६	अरिमर्दन १.	१३३१२
अम्बु ३.	४३३२	„ ३.	८३३१७	अरिमेदक १.	३३३६४
„ ३.	८३३१५	अयस्कान्त १.	३३३२८	अरिश्रेणी २.	२३३७७
अम्बुक १.	३३३६५	अयस्कार १.	३३३१६	अरिष्ट १.	२३३१७
„ १.	३३३१९४	अयाचित ३.	३३३२	„ १.	३३३३२
अम्बुकपि १.	४३३१५४	अयि ४.	८३३१२	„ १.	३३३२०४
अम्बुकफ १.	४३३१३	अयुगच्छद १.	३३३४६	„ ३.	३३३१९०
अम्बुकान्तार १.	१३३४५	अयुग्म १. २. ३.	५३३२३	„ ३.	४३३२०
अम्बुकुकुट १.	२३३१२	अयुत ३.	५३३२८	„ १.	४३३३९
अम्बुज १.	२३३३२	अयोध्या २.	४३३५	„ १. २. ३.	७५३१
„ १.	३३३६७	अयोनि १.	४३३६५	अरिष्टताति १.२.३.	५३३५५
„ ३.	४३३३९	अयोमणि १.	३३३३७	अरिष्टनेमि १.	१३३१२
„ ३.	५३३२८	अयोमल ३.	३३३३६	अरुण १.	५३३१७
„ १.	८३३१३	अयोमुख ३.	३३३२०	„ १. २. ३.	७५३६
अम्बुजा २.	१३३३६	अयोर्जाला २.	४३३४८	अरुणा २.	३३३९०
अम्बुमृत् १.	२३३२	अर १.	३३३१३५	„ २.	७३३६
अम्बुवर्धन ३.	४३३१३	„ १. २. ३.	५३३१२४	अरुणोपल १.	३३३२०
अम्बुवल्ली २.	३३३१६४	अरघट्टक १.	४३३२१	अरुन्तुद १. २. ३.	५३३११२

अरुल ३.	७३२	अर्थ १.	३८७३	अर्बुद १.	४४१३३
अरुणकर १.	३३१५	„ १.	६१३	„ ३.	५१२८
अरुस् ३.	३७२१७	अर्थना २.	३६१२०	अर्भक १. २. ३.	५४२
अके १.	२१११०	अर्थवाद १.	२४३७	अर्मण ३.	४१५६
„ १.	३२१७	„ १.	३६३३	अर्य १.	३८१
„ १.	५४४	अर्थशास्त्र ३.	३६३०	„ १.	६१५
„ १.	८६२	अर्थसञ्चय १.	३७४४	अर्यमन् १.	२१११०
अर्कवन्धु १.	११३५	अर्थिन् १. २. ३.	५४६०	अर्या २.	४४२२
अर्कत्मजा २.	४२२५	अर्थ्य १.	२३३६	अर्याणी २.	४४२२
अर्कष्ट ३.	३८११३	„ ३.	३२१६	अर्या २.	४४२२
अगल ३.	३७५१	„ १. २. ३.	६४१	अर्वत १. २. ३.	६५६
„ १. २. ३.	४३४७	अर्दना २.	३६७०	अर्वती २.	३७१०७
„ ३.	४३५०	अर्दनि १.	८९१०	अर्वन् १. २. ३.	५४७५
„ १. २. ३.	४३५०	अर्दित १. २. ३.	५४१०२	„ १. २. ३.	६५६
„ १. २. ३.	८९३८	„ १. २. ३.	५४११२	अर्वाक् ४.	८८१८
अर्ग्वध १.	३३४८	अर्थ १.	४४५६	अर्वाच् ४.	५४९१
अर्घ १.	३८७०	अर्थचन्द्र १.	३७१८२	अर्वाचीन १. २. ३.	५४९१
„ १.	६१५	अर्थगुच्छ १.	४३१४०	अर्वास् ३.	४४१३१
अर्घ्य १. २. ३.	६४१	अर्थजाह्नवी २.	४२२८	„ ३.	६३२
अर्घ्या २.	३४४१	अर्थतूर १.	३९१३९	अर्शस १. २. ३.	४४१४५
अर्चना २.	३६३९	अर्थनाकुल ३.	३६२१८	अर्शो १.	३३२०८
अर्चा २.	३६३९	अर्थनाराच १.	३७१८१	„ ३.	३८१४९
„ २.	६२१	अर्थपद १.	३१५१	अर्शोद्गी २.	३३२०३
अर्चिष्मत् १.	१२१६	अर्थपद्मासन ३.	३६२११	अर्हक १. २. ३.	५४१३६
अर्चिस् ३.	१२२९	अर्थमुकुट १.	११४७	अर्हणा २.	३६३९
„ २. ३.	६५६	अर्थमाणव १.	४३१३९	अर्हत् १. २. ३.	११३५
„ २. ३.	७५३२	अर्थमानव १.	३९६५	„ १.	६५६
अर्जक १.	३३११९	अर्थमानुष १.	३९६५	अलक १.	४४९८
अर्जुन १.	३३३९	अर्थमायूरी २.	३९१३१	अलकाम्बलिक १.	४३९६
„ ३.	३३२३५	अर्थमास १.	२१७९	अलक्त १.	४३१५३
„ १.	५३१०	अर्थमासतम १. २. ३.	५११९	अलचमी २.	११४२
„ १. २. ३.	७५५	अर्थमुष्टिक १.	४४८०	अलगर्ध १. ३.	४११९
अर्जुनी २.	४२२६	अर्थरात्र १.	८९५२	अलङ्कारिण्यु १. २. ३.	५४४१
„ २.	७५५	अर्थरात्रक १.	२१६६	अलङ्कार्मणि १. २. ३.	५४७२
„ २.	८२१५	अर्थरूपक १.	३८३७	अलङ्कार १.	४३१३३
अर्ण १. ३.	२४२१	अर्थर्च १. ३.	८९२८	अलङ्कारसुवर्ण ३.	३२२२
अर्णव १.	४२१२	अर्थशल्य ३.	३७१८१	अलङ्कुमारि १. २. ३.	५४५३
अर्णस् ३.	४२१	अर्थसूची २.	३६२१५	अलम् ४.	८७१३
अर्णिका २.	४४४	अर्थहस्तक १.	३१५८	अलम्बक १.	३३६४
अर्ति २.	३७१७८	अर्थहार १.	४३१४०	अलर्क १.	३७३९
„ २.	६२१	अर्थोरुक ३.	४३१२२	अललोहित १.	१२४०

अलस १. ४१४१३५
 ,, १. २. ३. ५१४५५
 ,, १. २. ३. ७५१५५
 अलसान्द्र १. ३१८४६
 अलस्फुटिन् १. ३१६११२
 अलात ३. १२३३२
 अलावू २. ३१३१६७
 अलि १. २३१४२
 अलि (-न्) १. ४१३३२
 अलिक ३. ४१४९६
 अलिङ्ग ३. ३१६१६२
 अलिञ्जर ३. ४१३५६
 अलिन् १. २३१४२
 ,, १. ८१६१४
 अलिन्द १. ४१३४५
 अलिप्रिय १. ८११५९
 अलीक १. २. ३. २१४१७
 ,, ३. ७३३२
 अलीमक ३. ३११५७
 अलोचक ३. ४३१११४
 अल्प १. १२१५३
 ,, १. २. ३. ५१४१३६
 अल्पतनु १. २. ३. ५१४१५
 अल्पतुग्वी २. ३१३१६८
 अल्पपच १. ३१३१२०
 अल्पपल्लव ३. ४२१६
 अल्पपुष्प ३. ३१३१०
 अल्पफला २. ३१३१७५
 अल्पमात्र १. ३१३१२१
 अल्पहरिण १. ३१४१३
 अवकटा २. ३१९८६
 अवकर १. ४३१५२
 अवकरालय १. ३१६१११
 अवका २. ३१६१०
 ,, २. ४२१४८
 ,, २. ४२१४९
 अवकाश १. २११७
 अवकीर्णिन् १. २. ३. ३१६१३
 अवकील १. ३१८२६
 अवकेशिन् १. २. ३. ३१३८
 अवक्र १. २. ३. ५१४१२४

अवक्रय १. ३१८१०
 अवक्षेपणी २. ३१७११४
 अवखात १. ४११३
 ,, १. ४२१७
 अवगति २. ३१६१६४
 अवगाह १. ४३१६१
 अवगीत १. २. ३. ३१६१२
 ,, १. २. ३. ८१५१
 अवग्रह १. ८११४
 अवग्राह १. २१२४
 अवघात १. ४३१६६
 अवचूड १. ३१७१३४
 अवच्छेद १. ३१६३३
 अवज्ञा २. २१४३०
 ,, २. ३१६१७२
 अवज्ञात १. २. ३. ५१४९५
 अवट १. २३१४
 ,, १. ३११५४
 ,, १. ४११३
 अवटीट १. २. ३. ५१४१२
 अवटु १. २. ४१४८५
 ,, १. २. ८१६१९
 अवटोमनहस्त १. ४१४८१
 अवतंस १. ८११५९
 अवतमस ३. २११६३
 अवतरण ३. ८१३१३
 अवतार १. ४२१२०
 ,, १. ५३१२३
 ,, १. ८११५
 अवतारण १. २. ३. ३१९१४१
 अवतीर्ण १. २. ३. ५१४९५
 अवतोका २. ३१४१७
 अवदात १. ५३११०
 ,, १. २. ३. ८१४३
 अवदारण ३. ३१८१८
 अवदाह १. ३१३१३२
 अवद्य १. २. ३. ५१४७५
 अवधारणा २. २१४१०
 अवधि १. ४११३
 अवधीरण ३. ३१७१३
 अवध्वस्त १. २. ३. ८१४४

अवनाट १. २. ३. ५१४१२
 अवनि २. ३११४
 ,, २. ३१३१६७
 अवन्ति १ व. ३१३३७
 अवन्तिसोम ३. ४३१८२
 अवन्ती २. ४३१९
 ,, २. ४१४२७
 अवन्ध्य १. २. ३. ३१३८
 अवपात १. ३१७५२
 अवभ्रत १. २. ३. ५१४१२
 अवम १. २. ३. ५१४७५
 अवमर्द १. ३१७२०७
 अवमानना ३. ३१६१७२
 अवमुण्ड १. २. ३. ३१६१६
 अवयव १. ४१४५५
 अवर ३. ३१७७८
 (अपर)
 अवरक्षणी २. ३१७११२
 अवरज १. ४१४३१
 ,, १. २. ३. ५१४४
 अवराविला २. २११७६
 अवरीण १. २. ३. ५१४११०
 अवरोट १. ३१५६०
 अवरोध १. ४३३३६
 अवरोह १. ३१३१५२
 ,, १. ८११५
 अवरोहक २. ३१८३३
 अवर्ण १. ३. २१४३२
 अवर्णवाद १. २१४३३
 अवलम्ब १. ४१४६७
 अवलेप १. ८१११५
 अवलोक १. ३१९९०
 अवलोर्ण १. ८१११६
 अवलोलुक १. ५१४५२
 अवलुगुज १. ३१३१०८
 अवशयम् ४. ८१८१२
 अवशयाय १. २१२९
 ,, १. ८१९१३
 अवष्टम्भ १. २. ३. ८१४४
 ,, १. ८११४

अवसक्थिका २. ३६१५०
 अवसर १. ५२१७
 अवसाद १. ३६१९१
 अवसादनी २. ३३१९१
 अवसित १. २. ३. ८४३
 अवसुपिरा २. ४४८४
 अवस्कन्द १. ३७२०३
 „ १. ३८१७
 अवस्कर १. ८११५
 अवस्था २. ५२१२
 अवहित्था २. ३. ३१९८६
 अवहेल ३. ३६१७२
 अवाक ४. ८८१९
 अवाक्श्रुति १. २. ३. ५४१३
 अवाच् १. २. ३. ५४१४
 „ ४. ५४१९
 अवाची २. २११५
 अवाचीन १. २. ३. ५४१९
 अवाच्य १. २. ३. २४१६
 अवान्तरदिशा २. २११३
 अवार ३. ४२३२
 अवि १. ३४६४
 „ १. ५४४
 „ १. २. ६५४
 अविदूष ३. ३८१४७
 अविन १. ७११९
 अविनीत १. २. ३. ५४३१
 अविनीता २. ४४१२
 अविमरीस ३. ३८१४७
 अविरत १. २. ३. ५४१३०
 अवलम्बित १. २. ३. ५४१९४
 „ १. २. ३. ५४१२५
 अविला २. ३४६५
 अविशेष १. ३६२०५
 अविष १. २. ३. ७५१२
 अविषाद १. ३७२८
 अविसोढ ३. ३८१४७
 अविस्तर १. २४४०
 अवीची १. १२३७
 अवीरा २. ४४२०
 अव्यक्त ३. ३६१६२
 „ १. २. ३. ७५१३

अव्यथ १. ३३१९९
 अव्यथा २. ३३१७८
 „ २. ३८८९
 अव्यथिष १. २. ८५१
 अव्यय १. ३. १११४८
 „ ३. ८७१
 अव्यादा २. ३८१५८
 अशन ३. ४३१५५
 „ ३. ४३१०२
 अशनाया २. ३६१८२
 अशनायित १. २. ३. ५४३६
 अशनि १. २. २१२६
 „ १. २. २१२६
 „ १. २. ७५१५
 अशिख १. २. ३. ३६६
 अशित १. २. ३. ५४१०७
 अशिरस् १. ३७२१६
 अशिरस्क १. ८११६
 अशिषिपा २. ३६१८२
 अशिषी २. ४४२०
 अशीतांशु १. २१११
 अशीति २. ५१२७
 अशूर १. २. ३. ३७१४७
 अशोक १. ३३१४०
 अशोकवनिका २. १२१४४
 अशोका २. ३८८६
 अशोभनस्वर १. २. ३. ५४४८
 अश्मकुट्टक १. ३१२२
 अश्मगर्भ ३. ३२३८
 अश्मज ३. ३२१६
 अश्मन् १. ३२१८
 „ १. ३६१०२
 अश्मन्त ३. ४३१०४
 अश्मन्तक १ ३३१९४
 अश्मन्तिका २. ३. ८८३२
 अश्मरी २. ४४१२८
 अश्मरीरिपु १. ३३१४१
 अश्ममारक १. ३२३४
 अश्र १. ४३१५२
 अश्रान्त १. २. ३. ५४१३०

अश्रि २. ४३१५२
 अश्रु ३. ३१९८७
 अश्रुष्टार्थ १. २. ३. २४१७
 अश्व १. ११३०
 „ १. ३७९०
 „ १. ८६१७
 अश्वकन्द १. ३७१२८
 अश्वकर्ण १. ३३३८
 अश्वसुरी २. ३३३३४
 अश्वगन्धी २. ३३१२८
 अश्वतर १. ३७१०८
 अश्वत्थ १. ३३३२७
 अश्वपण्य १. ३०१२
 „ १. ३०५७१
 अश्वपोत १. ३७१०७
 अश्वप्रिय १. ३८१५२
 अश्ववडव १ द्वि. ८९१५
 अश्वमारक १. ३३१९२
 अश्वमुख १. १३३३
 अश्वयुज २. २११४२
 अश्वरिपु १. ३३१९२
 अश्ववाल १. ३३२२७
 अश्वा २. ३७१०७
 अश्वारि १. ३४१८
 अश्विन् १ द्वि. १३३२
 अश्विनी २. २११४२
 अषाढा १ व. २११४३
 अष्टकर्मपरिभ्रष्ट १. ११३५
 अष्टग्रास १. २. ३. ३६१३३
 अष्टपाद १. ३४३२
 अष्टम १. २. ३. ५१२०
 अष्टमक १. २. ३. ५११५०
 अष्टमकालमुज्ज १. २. ३. ३६१२६
 अष्टमङ्गल १. ३७१९३
 अष्टमान ३. ५११५३
 अष्टमिका २. ५११५०
 अष्टवर्ग १. ३७१९
 अष्टाङ्ग १. ३६२०८
 अष्टापद १. ३. ८५२
 अष्टावक्र १. ३६१५७

अष्टी २.	३१६११६	असृक्कर १.	४४११०४	अह ४.	८१७११२
„ २.	६१२११	असृग्धरा २.	४४११०३	अहंयु १. २. ३.	५४१२९
अष्टीला २.	४४१११३	असृज् ३.	४४११०६	अहङ्कार १.	३१६१६९
अष्टीवत् १. ३.	४४१५९	असोढ १.	३१७१६९	अहङ्कारिन् १. २. ३.	५४१२९
असक्त १. २. ३.	५४११३०	असोल १.	५३१३६	अहत ३.	४३११२०
असङ्ग्रह १.	३१६१२०९	अस्त १.	३१२१६	अहन् ३.	२११५६
असत् ३.	३१६१६२	„ १. २. ३.	५४११९७	अहमहमिका २.	३१६१७१
असती २.	४४१९	अस्त्य ४.	८१८१६	अहमूर्धिका २.	३१६१७०
असतीसुत १.	४४१४३	अस्तमयाचल १.	३१२१६	अहर्गण १.	३१६१८४
असदध्यत् १. २. ३.	३१६१११	अस्तिमत् १. २. ३.	५४१५७	अहर्पति १.	२११११२
असन १.	३१३१३९	अस्तु ४.	८१७१३३	अहर्मुख ३.	२११६८
असगुप १.	११११५	अस्तेय ३.	३१६१२०९	अहस्कर १.	२११११२
असगृक्त १. २. ३.	८१४१४	अस्त्र ३.	३१७१५७	अहस्तान १.	११२१२६
असहन १.	३१७१४१	अस्त्रग्राम १.	५११११७	अहह ४.	८१७३२
असार १. २. ३.	५४१७६	अस्त्रजीवन १. २. ३.	३१७१४३	अहार्य १.	३१२११
असि १.	३१७१५८	अस्त्रशासन ३.	३१६१३०	अहि १.	४११५
„ १.	३१७१५९	अस्त्रिन् १. २. ३.	३१७१४३	„ १.	६११५
„ १.	८१६१६	अस्थान ३.	३१७१५६	अहिंसा २.	३१६१२०९
असिक्री २.	३१७३९	„ १. २. ३.	४१२१९	अहिक १.	४११४३
असित १.	२११३५	अस्थि ३.	४४११०८	अहिच्छत्र १ व.	३११२६
„ १.	२११७९	„ ३.	४४११०८	„ ३.	३१३१५३
„ १.	३१९४९	अस्थिखाद १.	३१३७०	अहित १.	३१७४०
„ १.	५३१११	अस्थितेजस् ३.	४४१११०	अहिनित्यवयनी २.	४११२१
असितानन १.	३१४१४०	अस्थिपञ्जर ३.	४४१११४	अहिपताक १.	४१११८
असिद १.	३१८३०	अस्थिमत् १.	३१३१३०	अहिपृष्ठ ३.	३१७५३
असिधावक १.	३१९१५	अस्थिर १. २. ३.	५४१६८	अहिभय ३.	३१७१५
असिधेनुका २.	३१७१६३	अस्थिप्रेमन् १२३.	५४१२६	अहिर्बुध्न्य १.	१११४२
असिपत्रिका २.	३१३१९७	अस्थिसङ्घात १.	३१३१३०	अहिब्रतिन् १. २. ३.	३१६१३१
असिपुत्री २.	३१७१६३	अस्थिसन्नहन १.	४४११३०	अहीन १.	३१६१८५
असिप्लव ३.	४११५५	अस्थिसम्भव ३.	४४१११०	„ १.	३१६१८५
असु १ व.	३१६१२०३	अस्थिरुनेह १.	४४१११०	अहीरिणि २.	४११२०
असुर १.	१३१९	अस्पन्दनस्थिति २.	३१९१८९	अहेरु २.	३१३१४२
„ १.	३१७६१	अस्फुटभाषण १. २. ३.	५४१४७	अहो ४.	८१८१६
„ १.	३१८१२४	अस्मद् १. २. ३.	८१९१४९	अहोत्र ३.	३१६१९६
असुरभि १.	५३१४७	अस्मिता २.	३१६१६९	अहोरात्र ३.	२११५५
„ १.	५३१४८	अस्त्र ३.	४४११०५	अह्नाय ४.	८१८११
असुराचार्य १.	२११३४	„ १. ३.	६१५७	आ	
असुराह्वय ३.	३१२१२८	अस्तु ३.	३१९१८७	आ ४.	८१७११
असुवर्चिका २.	३१८१२९	अस्वम १.	१११३	„ ४.	८१७१२
असूया २.	३१६१८४				
असूर्तण ३.	३१६१७२				

आः ४.	८७७२	आख्यान ३.	२१४३८	आच्छादन ३.	२११६४
आकम्पित १.२.३.	५४१५५	आख्यायनी २.	२१४२५	" ३.	४३११६
आकर १.	३१२१०	आख्यायिका २.	२१४३८	" ३.	८३३३
" १.	५११२	आगन्तु १.	३१६६८	आच्छुरित ३.	४३११२
" १.	७११९	आगम १.	७११८	आच्छुरितक ३.	३१९८४
आकर्णक १.२.३.	४३१०८	आगस् ३.	३७७४७	आच्छोटन ३.	३१९३८
आकर्णकर्षण ३.	३७१९१	" ३.	८३११६	आजक ३.	५१११०
आकर्ष १.	३७७७२	आगू (-अगूर्) २.	३८१४७	आजान ३.	५२११
" १.	७११३	आग्निमारुत ३.	३६१५२	आजानज १.	१११६
आकलन ३.	८३३३	आग्नीध्री २.	३६१४४	आजानेय १.	३७७९४
आकल्प १.	४३१३२	आग्नेय ३.	२११९०	आजि २.	६२३३
आकार १.	५२१२२	" १.	२११९०	आजीव १.	३८११
" १.	७११७	" १.	२११९२	" १. ३. ३.	५४११६
आकारगोपना २.	३९१८६	" ३.	३६६५५	(आजिल)	
आकारणा २.	२१४३०	" १.	३६१५२	आज्ञा २.	३७३३४
आकालिकी २.	२२१४	" ३.	४४१०६	" २.	३७४४८
आकाश १. ३.	२११२	" १. २. ३.	५४११८	आज्ञागणिका २.	३७३३४
आकीर्ण १.२.३.	५४११०	आग्नेयी २.	२११४	आज्य ३.	३८१३८
आकुल्य ३.	४४१३८	" २.	२११९१	" ३.	५११५१
आकृत ३.	३६१७४	आग्रह १.	७११२	" ३.	६३३२
आकृति २.	३६१७४	आग्रहायणिक १.	२११८१	आज्याधिवासन ३.	३६१९०
आकृति २.	७२१२	आग्रहायणी २.	२११३८	आज्याधिभ्रयण ३.	३६१९०
आक्रन्द १.	७११५	" २.	२११७४	आज्यावेक्षण ३.	३६१९०
आक्रम १.	५२११६	आग्रायणी २.	२११७४	आटक १.	२३११८
आक्रीड १.	३३३३	आघट्टलिका २.	३७१२५	आठरूप १.	३३१०१
आक्रोश १.	११४३२	आघात १.	७११८	आटि ३.	२३१११
आचारण ३.	२१४३४	आघारण १.	३६१००	आटोप २.	३९१८९
आचारित १.२.३.	३८१११	आङ्गलौकिक १.	३६१९८	आढम्बर १.	३९१३८
आचित १. २. ३.	५४१६७	आङ्गिक १. २. ३.	३७१९९	" १. ३.	८५१४
आक्षेप १.	७११०	" १. ३.	४३१२८	आढिण्डिक ३.	३६१६
आक्षेपक १.	४४१३६	आङ्गिरस १.	२११३३	आढक ३.	४३१४१
आक्षोड १.	३३१४६	आचाम १.	४३१७८	" १.	५११६३
आखण्डल १.	१२१६	आचार १.	३६११५	आढकिक १.२.३.	३८१२१
आखनिक १.	३४१६	आचारा २.	११११६	आढकी २.	३२११७
आखु १.	४११३१	आचार्य १.	३५१५६	" २.	३८१४८
" १.	६११७	" १.	३६१२२	आढा २.	४११३३
आखुभुज् १.	३४१७१	" १. २.	८९१४४	आढिक ३.	४४१०८
आखुयान १.	१११५४	आचार्या २.	४४१२३	आढ्य १. २. ३.	५४१५७
आखेट १.	३९१३९	आचार्यानी २.	४४१२२		
आखोर १.	२११८८	आचित ३.	५११६२		
आख्या २.	२१४३१	" १.२.३.	५४११५		

आणवीन १.२.३. ३।८।२०	आदित्य १. १।१।१९	आन्तरालिक १. ३।५।११९
आतङ्क १. ७।१।९	" १. १।३।८	आन्त्र ३. ३।४।१।३
आतञ्जन ३. ३।८।१४४	" १. २।१।१५	(अन्त्र)
" ३. ८।३।४	आदिदेव १. १।१।५	आन्दोल १. ३।७।१३७
आततायिन् १.२.३. ५।४।६८	आदिम १. २. ३. ५।४।७६	आन्दोलन ३. ३।७।१३७
आनति २. २।१।६२	आदीनव १. ५।२।४	आन्धसिक १.२.३. ४।३।९२
आतप १. १।२।३१	आहत १. २. ३. ७।४।२	आन्वीक्षिकी २. ३।६।३१
" १. २।१।२२	आदेशिन् १. ३।७।२५	आपगा २. ४।२।२३
आतपत्र ३. ३।७।१६	आद्य १. २. ३. ५।४।७६	आपण १. ४।३।३४
आतर १. ४।२।१८	" १. २. ३. ६।४।२	आपद् १. ३।६।१९१
आताना २. ३।३।१८६	" १. ६।५।७	आपन ३. ५।२।१३
आतपिन् १. २।३।२८	आद्यून १. २. ३. ५।४।५१	आपन्न १. २. ३. ५।४।१०९
आताल १. ३।७।११३	आधान ३. ३।६।६९	" १. २. ३. ७।४।२
आति २. २।३।११	आधानिक ३. ३।६।३	आपन्नसत्त्वा २. ४।४।१६
आतिथ्य १.२.३. ३।६।६७	आधार १. ४।२।६	आपमित्यक ३. ३।८।६
" १. ३।६।६८	" १. ७।१।५	आपव १. ३।६।१५५
आतिवाहिक १. १।२।३८	आधि १. ६।१।७	आपाण्डुफल १. ३।३।१६६
आतुर १. २. ३. ४।४।१४४	आधिक १. ३।८।७०	आपात १. ७।१।९
आतोद्य ३. ३।९।११४	आधूत १. २. ३. ५।४।९५	आपान ३. ३।९।५०
आत्तगन्ध १.२.३. ५।४।६७	आधेय ३. ३।६।६९	आपिङ्गलक १. ३।६।१२२
आत्मगुप्ता २. ३।३।१२९	आधोरण १. ३।७।८८	आपिञ्जन ३।८।११४
आत्मघोष १. २।३।१५	आध्यात्मिक १. ३।६।२०८	आपीड १. ४।३।१५४
आत्मज १. २. ४।४।३९	आन १. ३।६।२०४	आपीन ३. ३।४।५१
आत्मन् १. ६।१।६	आनक १. ३।९।१३३	आपूपिक ३. ५।१।११
आत्मनीन १. ८।५।३	" १. ३. ३।९।१३४	आस १. २. ३. ३।७।३३
आत्मभू १. ७।१।६	आनकदुन्दुभि १. १।१।२६	" १. २. ३. ३।८।९
आत्मम्भरि १.२.३. ५।४।५०	आनत १. २. ३. ५।४।८३	" १. २. ३. ५।४।९९
आत्मयोनि १. ८।१।१६	आनद्ध ३. ३।९।११५	आम्रपदीन १. २. ३.
आत्मसम्बन्ध १. १।१।४८	आनन ३. ४।४।८६	४।३।१२१
आत्माशिन् १. ४।१।४१	आनन्द १. ३।६।१८८	आप्राप्त १. ३।६।९१
आत्मीय १.२.३. ३।७।४३	आनन्दन ३. ३।६।१८६	आप्लव १. ४।३।११३
आत्रेय १. ४।४।१०४	आनन्दना २ व. २।१।१८	आप्लाव १. ४।३।११३
आत्रेयी २. ४।४।१५	आनर्त १. ७।१।४	आप्लुत १. २. ३. ७।४।३
आथर्वण ३. ३।६।२७	आनाय १. ३।६।७	आबद्ध १. २. ३. ३।७।१४२
" ३. ४।३।२०	" १. ७।१।४३	आवन्ध १. ३।८।२८
आदर्श १. ४।३।१६२	आनाह १. ३।१।६१	आवर्हित १.२.३. ५।४।१००
आदान ३. ३।७।१८९	" १. ४।४।१२८	आलुक् १. ३।९।१०६
आदाली २. ३।३।१६२	" १. ५।२।५	आभरण ३. ४।३।१३३
आदि १. ५।४।७६	आनील १. ३।७।१००	आभा १. २. ३. ५।४।१२२
आदितेय १. १।१।३	आनुपूर्वी २. ३।१।११४	आभाषण ३. २।४।२३
आदित्य १. १।१।३	आनुपूर्व्य ३. ३।६।११३	आभिगामिकगुण १. ३।७।४
		" १. ३।७।८

आभीर १.	३१५६	आय १.	३१७४४	आरट्ट १. २. ३.	३११४६
„ १.	३१५९९	आयत्त १. २. ३.	५१४८१	„ १.	३१७९६
„ १.	३१९२८	आयति २.	७२१३	आरणिन् १.	२१३१३
आभीरपल्ली २.	३१९३२	आयत्त १.	३१९४	आरति २.	५१२३६
आभील ३.	११२३९	„ १. २. ३.	५१४२८	आरनाल ३.	४३१८१
„ १. २. ३.	३१९७९	आयल्लक ३.	३१६१४८	आरभट १. २. ३.	३१७१४७
„ १. २. ३.	७१४२	आयश्शूलिक १. २. ३.		आरभटी २.	३१९१०१
आभोग १.	७११७		५१४७४	आरम्भ १.	३१९१४०
आभ्यन्तरवृत्त ३.	३१९७४	आयस्त १. २. ३.	७१४३	„ १.	५१२१५
आम् ४.	८१८१७	आयान ३.	३१७११६	आरल्ल १.	३१३६९
आम १.	४१४१३८	आयाम १.	३१६१६७	अरव १.	२१४३
„ १.	६१५७	„ ३.	३१७१९१	आरा २.	३१९५३
आमण्ड १.	३१३६५	„ १.	५१२५	आराग्र ३.	३१७१८५
आमनस्य ३.	११२३९	आयास १.	३१६१९३	आरात् ४.	८१७१६
आमन्त्रण ३.	२१४३१	आयु १.	११२२५	आराधन ३.	३१६३८
आमन्त्रणिक ३.	३१६३	आयुध् २.	३१७१५७	„ ३.	८३३४
आमपात्र ३.	३१६६४	„ २.	३१७२०६	आराम १.	३१३२
आममांसक १.	५१३७६	आयुध ३.	३१२३३	आरालिक १. २. ३.	४३१९२
आमय १.	४१४१३८	„ ३.	३१७१५७	आराव १.	२१४३
आमयाविन् १. २. ३.		„ ३.	८१६९	आरु १.	३१३१५४
	४१४१४५	आयुधाग्रय २.	३१७१७२	„ १.	५१२२४
आमलक १. २. ३.	३१३१७७	आयुधिक १. २. ३.	३१७१४३	आरूढ १.	३१८५२
आमिन्ना २.	३१६९८	आयुधीय १. २. ३.	३१७१४३	आरेवत १.	३१३४८
आमिष १.	३१७४६	आयुर्वेद १.	३१६२९	आरोग्य ३.	४१४१४२
„ ३.	४१४१०७	आयुर्वेदिन् १. २. ३.		आरोपित १. २. ३.	५१४१०४
„ १.	४१४११४		४१४१४४	आरोह १.	३१७८८
„ ३.	५१३५५	आयुस् ३.	३१७२२१	„ १.	७११७
आमिषाशिन १. २. ३.		„ ३.	६१३५	आरोहण ३.	४१३५१
	५१४५०	आयोग १.	७११४	„ ३.	५१२१५
आमिषी २.	३१८१००	आयोगव १.	३१५२२	आगर्वध १.	३१३४८
आमुक्त १. २. ३.	३१७१४२	„ १.	३१५२९	आजिक १. २. ३.	४१४३३
आमुप्यायण १. २. ३.		„ १.	३१५८२	आर्तगल १.	३१३१९०
	५१४५३	„ १.	३१५८६	आर्तव ३.	४१४१६
आमोद १.	५१३५०	आयोधन ३.	३१७२०४	आर्ति २.	३१६१८७
„ १.	७११७	„ ३.	८१३४	„ २.	३१७१७८
आम्नाय १.	७११३	आर १.	२११३१	आर्द्र १. ३.	३१३२१४
आम्न ३.	३१३२१	„ १.	३१२२६	„ १. २. ३.	५१४१०७
„ १.	३१३२५	आरकूट १. ३.	३१२२६	आर्द्रक १. ३.	३१३२१४
आम्नात १.	३१३३१	आरक्त १.	३१७१८	आर्द्रा २.	२११४०
आम्नेडन ३.	५१२९	„ १.	३१७७४	आर्य १.	३१७२३
आम्नेडित १. २. ३.	२१४२२	आरग्वध १.	३१३४८	„ १.	३१९१०६
		आरट्ट १ व.	३११३४		

[आर्य]

आर्य १. २. ३.	५४६१
” १. २. ३.	६४६३
आर्यक ३.	३६६६
आर्यपुत्र १.	३९१०६
आर्या २.	१११५८
आर्यावर्त १.	३११२३
आर्यभ ३.	३१११९
आर्यभी २.	२११४७
आर्यभ्य १. ३.	३११५१
आल ३.	३२११४
आलगन्धिका २.	३७३३४
आलम्भ १.	७१११०
आलय १.	४३११८
आलवाल ३.	४२११०
आलस्य ३.	३६१७८
” १. २. ३.	५४१५५
आलान ३.	३७७८२
” ३.	७३३३
आलाप १.	२४२३
आलावर्त १.	४३१५९
आलास्य १.	४११५३
आलि १.	४११३२
” २.	५११२४
” २.	६२३
आलिङ्गन ३.	४३१७०
आलिङ्ग्य १.	३९१२९
आलिन्द १.	४३१४५
आली २.	३८२६
” २.	४४२५
आलीढ ३.	३७१८७
आलु २.	४३१५७
आलुक १.	५३१४४
आलेख्यलेखा २.	३९१२४
आलेप १.	४३१४७
आलोक १.	१२३१
” १.	७११८
आवतारिक १.	४११४३
आवन्त्य १.	३५१३
” १.	३५१०१
आवपन ३.	४३१६२
आवर्जन ३.	५२१४०

शब्दानुक्रमिका

आवर्त १.	४२३०
आवर्तन ३.	३९१११
” ३.	५२१४१
आवलि २.	५११२४
आवसथ १.	४३११८
आवसथ्य १.	१२२५
” १.	४३१२७
आवसित १. २. ३.	३८१६७
आवाप १.	३७११४
” १.	७११६
आवापक १.	४३११४४
आवाल ३.	४२११०
आवालि २.	४३१३५
आवाह १.	४२३
आविः (-स्) ४.	८८११८
आविक १.	४३१२९
आविद्ध १. २. ३.	५४१२३
” १. २. ३.	७४२
आविध १.	३९११८
आविल ३.	४२१४
आविश १.	३६१६१
(आवश)	
आवृत्त १.	३९१०७
आवृत् २.	३६११३
” २.	३६११४
आवृत्त १.	३५१५
” १.	३५१९०
” १. २. ३.	५४१९६
आवेग १.	३९१८९
आवेशन ३.	४३१२२
आवेशिक १.	३६१६८
आवेष्टक १.	४३११४
आशसितृ १. २. ३.	५४१४३
आशंसु १. २. ३.	५४१४३
आशङ्का २.	३६१७६
आशय १.	३६१७४
” १. २. ३.	५४११४
” १.	७५१७
आशर १.	१२१४१

[आपाढ]

आशा २.	२११२
” २.	६२३
आशावन्ध १.	४१३५
आशासन ३.	३६१२०
आशितम्भव १.	८५२५
आशिर १.	१२११९
” १.	७११६
आशिसू २.	६२२
आशीविष १.	४११५
” १.	४११३
आशु ३.	३२२२
” १. २. ३.	५४१२५
आशुग १.	१२१४९
” १.	७११९
आशुशुचिणि १.	८११५०
आशोचनि १.	३११३६
आश्रय १. २. ३.	३९१७८
आश्रम १. ३.	४३१२६
” १. ३.	७५१३६
आश्रय १.	३७३
आश्रयाश १.	१२११७
आश्रव १.	५२३४
” १.	५२३७
” १. २. ३.	५४१४९
आश्लेष १.	४३११६९
आश्लेषा २.	२११४३
आश्व ३.	५१११०
आश्वकिनी २.	२११४२
आश्वत्थ ३.	३३१२२
आश्वयुज १.	२११८५
आश्वस १.	३६१२०५
आश्विक १.	३५१७१
आश्विन १ द्वि.	१३३६
” १.	२११८५
आश्विनी २.	२११७६
आश्विनेय १ द्वि.	१३३६
आश्वीन १. २. ३.	३७१०८
आश्वीय ३.	५१११०
आषाढ १.	२११८४
” १.	३२३

(१७)

आषाढ १.	३१६१८
आषाढी २.	२११७६
आस १.	३१७१७२
” १.	५३१२८
आसक्त ३.	२११६२
आसङ्ग ३.	३१११३
” १.	३१७१५९
आसन ३.	३१६१२१०
” ३.	३१७१६
” ३.	४३११६४
” ३.	५३१४०
” ३.	७३१३
आसना २.	५१२१४
आसन्दी २.	४३११६०
” २.	४३११६४
आसन्न १. २. ३.	५३११४१
आसव १.	३३१२१७
” १.	३१९४७
” १.	३१९४९
” १.	३१९५१
” १.	३१९५२
आसादित १. २. ३.	५३१९९
आसार १.	३१७२०१
” १.	७११२
आसारी २.	३११४२
आसाविक १.	३१५११२
आसिक ३.	३१७१९४
आसीन १. २. ३.	५३११०
आसुतीवल १.	३१९४४
” १.	८११५०
आसुर १.	२३११७
” ३.	३२३३४
” १.	३१८१२४
” ३.	४३११०५
आसुरी २.	३१८४२
आसृति २.	३१९५१
आसेचनक १. २. ३.	५३१६५
आस्कन्दन ३.	३१७२०३

आस्कन्दित १. २. ३.	३१७११८
आस्कन्दितक १. २. ३.	३१७१२०
आस्तरण ३.	४३११६६
आस्ताव १.	३१६११०
आस्तिक १. २. ३.	५३१३७
आस्था २.	३१८१३
” २.	५१२३७
” २.	६१२२
आस्थान ३.	३१८११४
आस्थानगृह ३.	४३१२०
आस्थानी २.	३१८११४
आस्पद ३.	७३१३
आस्फोटनी २.	३१९१८
आस्फोट १.	३३१२९
आस्फोता २.	३३११३४
” २.	३३११८५
आस्य ३.	४३१८६
” ३.	६३१३
आस्या २.	५१२१४
आस्र ३.	३१९८७
” १.	६१५७
आस्वाद्य ३.	४३१२१
आहत १. २. ३.	२३११७
” १. २. ३.	७३१३
आहति २.	३१६८९
आहर १.	३१६२०४
आहव १.	३१७२०५
आहवनीय १.	११२२४
आहार १.	७११८
आहार्य ३.	३१८११४
” १. २. ३.	३१९१९
” ३.	४३१७६
आहाव १.	४१२१९
आहिक १ व.	२११३७
” १.	३१६१५४
आहिण्डिक १.	३१५४४
(आहिण्डक)	
” १.	३१५९३

आहिताग्नि १.	३१६१७३
आहितुण्डिक १.	४११२५
आहुक ३.	४३१८
आहुति २.	३१६१९
आहोपुरुषिका २.	३१६१७०
आहोस्वित् ४.	८१८२
आहिक १.	३१६३२
आह्वय १.	२३१३१
आह्वा २.	२३१३१
आह्वान ३.	२३१३१
इ	
इ ४.	८१५१०
इच्छु १.	३३१२२५
इच्छुगन्धा २.	३३११४१
इच्छुगन्धिका २.	३३११९६
(गण्डिका)	
” २.	३३१२२७
इच्छुपालिका २.	३३१२२६
इच्छुभेद १.	३३१२२६
इच्छुर १.	३३११०१
इच्छुविदारिका २.	३३११९६
इच्छुशाकट १. २. ३.	३१८२२
इच्छुशाकिन १. २. ३.	३१८२२
इच्छुसूनिका २.	४३१२५
इच्छुदक ३.	३११११
इच्छुवाकु १.	३३१४९
” २.	३३११६८
इक्ष १.	५१२२२
इक्षत् १. २. ३.	५३१६१
इक्षाल १.	११२३२
इक्षित ३.	५१२२२
इक्षुद १. २. ३.	३३१७८
इक्षुदी २.	३३११३९
इच्छा २.	३१६१७९
” २.	३१६१८२
इच्छावसु १.	११२५८
इच्छु २.	४३१११

इज्जल १.	३१३६७	इन्द्रजित् १.	११२४४	इत्थला २ व.	२११३९
इज्या २.	३१३३९	इन्द्रदारद १.	४११२४	इव ४.	८८१५
" २.	६१२४	इन्द्रधनुस् ३.	२३३३	इष १.	२११८५
इज्याशील १.	३१३७५	इन्द्रनील ३.	३१२४०	इपीक १ व.	३१३३४
इट्ठर १.	३१४५३	इन्द्रभगिनी २.	१११६२	इपीका २.	३३३२३५
इडा २.	६१२३	इन्द्रमद १.	४११३६	इषु १. २.	३१७१८०
इतर १. २. ३.	५१४२२	इन्द्रमह १.	३१३६९	इषुधि १. २.	३१७१७९
इतरथा ४.	८८१२०	इन्द्रयव १. ३.	३३३७३	इष्ट ३.	३१६११५
इतरेतर १. २. ३.	५१४१२३	इन्द्रलुप्तक ३.	४११२६	" १. २. ३.	३१७४३
इतरेद्युः (-स्) ४.	८८१८	इन्द्रवस्ति १.	४१४५७	" १. २. ३.	५१४९६
इति ४.	८१७१७	इन्द्रवारुणी २.	३३३१७२	इष्टका २.	३८१२५
इतिकथा २.	८१२३	इन्द्रवृद्धि १.	३१७९८	इष्टि २.	६१२४
इतिह ४.	२१३३८	इन्द्रव्रतादिक ३.	३१७६	इष्टव १.	६११८
" ४.	८८१२१	इन्द्रसुरस १.	३३३११८	इष्टवास १.	३१७१७२
इतिहास १.	२१३३८	इन्द्रस्वमृ २.	१११६२	ई	
इत्थम् ४.	८८१२०	इन्द्राणी २.	११२११	ईक्ष्ण ३.	४१४९४
इत्थम्भाव १.	५१२३	इन्द्राणीमह १.	३१६५७	" ३.	७३१४
इत्थरी २.	४१४९	इन्द्रायुध ३.	२३३३	ईक्ष्णिका २.	४१४११
इत्वास १.	३३३१९९	" १.	३१७९२	ईजान १.	२११८४
इदानीम् ४.	८८१५	इन्द्रावरज १.	११११९	ईडित १. २. ३.	५१४९६
इद्ध ३.	२११२२	इन्द्रिय ३.	३१६२०३	" १. २. ३.	५१४१०६
इध्म १. ३.	२११८८	" ३.	७३३४	ईति २.	६१२५
" १.	३१६९६	इन्द्रियग्राम १.	५१११७	ईदृश १.	१३३१०
इध्मप्रोक्षण ३.	२१६९०	इन्द्रियार्थ १.	५११२	ईप्सा २.	३१६१८०
इध्मवाहक १.	३१६१५७	इन्धन ३.	३१६९६	ईरित १. २. ३.	५१४९६
इन १.	६१५७	इन्वका २ व.	३१३३९	ईर्म १. ३.	३१७२१७
इन्दिन्दिर १.	२३३४३	इभ १.	३१७६०	ईर्यापथस्थिति २.	३१६११६
इन्दिरा २.	११३३६	इभ्य १. २. ३.	५१४५७	ईर्ष्या २.	३१६१८४
इन्दीवर ३.	४१३३५	इभ्या २.	३३३१०३	ईषिका २.	४१४११६
इन्दीवरी २.	३३३१४२	हरम्मद १.	११२२०	ईली २.	३१६३७
इन्दु १.	२११२५	हरा २.	३१६४५	ईशा १.	१११४०
" १.	५११५२	" २.	६१२४	" १. २. ३.	५१४५८
" १.	८१६३	हरिण १. २. ३.	३८११८	" १.	८१५३५
" १.	८१६६	" १. २. ३.	७१४४	ईशाशक्ति २.	१११४९
इन्द्र १.	११२१	हर्षा १.	३३३१६६	ईशान १.	१११४०
" १.	६११८	" २.	३३३१७२	" १.	७१११०
" १.	८१६३	हला २.	३११३	ईशित् १. २. ३.	५१४५८
इन्द्रक ३.	४१३२०	" २.	६१२४	ईश्वर १.	१११४०
इन्द्रकोश १.	४१३३२	हलावृत ३.	३११७	" १.	३३३३७
इन्द्रच्छद १.	४३३१३८	हलिक १.	३१६३३	" १.	३१४५३
इन्द्रजाल ३.	३१७१३	हली २.	३१७१६०		

ईश्वर १.	४४११३५	उग्रा २.	३३११९७	उड्डराज १.	२११२७
" १. २. ३.	५४५५७	" २.	३१८१०२	उड्डिन ३.	२३१५०
" १.	७५३३५	" २.	८२११४	उड्डिवा १.	१११४५
ईश्वरप्रिय १.	२३३३५	उग्रिका २.	३६११९२	उत्त १. २. ३.	५४११२
ईषत् ४.	८८१२२	उचित १. २. ३.	५४११०३	" ४.	८७११८
ईषा २.	३१८२७	" १. २. ३.	७४३७	" ४.	८८२
ईषादन्त १.	३७६९	उच्च १. २. ३.	५४१८१	उत्ताहो ४.	८८२
ईषान्तबन्धन ३.	३७१३०	उच्चकैः (-स्) ४.	८८११९	उत्क १. २. ३.	५४३४
ईषिर १.	१२११९	उच्चण्ड १. २. ३.	५४१९४	उत्कट १.	३३२३०
ईहान ३.	५२१११	उच्चतालक ३.	३९५५४	(इट्कट, तिलकट)	
ईहा २.	३६१७९	उचन्द्र १.	२११६६	" ३.	३६२१६
" २.	६२१५	उच्चय १.	४३१३०	" ३.	३१८१०
ईहामृग १.	५५१८	उच्चल ३.	३६१७२	" ३.	३८१०४
" १.	३७१००	" ३.	३७१७५	" १. २. ३.	५४३७
ईहित १. २. ३.	५४१९६	उच्चलित ३.	३७१७२	" १. २. ३.	५४३७
उ		उच्चस्वन १.	२४३	" १. २. ३.	७४३७
उ ४.	८७११०	उच्चार १.	४३११९	उत्कण्ठ १. २. ३.	८९२७
" ४.	८७१११	उच्चारणा २.	३६३५	उत्कण्ठा २.	३६१७८
उक्थ ३.	३६१११	उच्चूड १.	३७१३४	उत्कर १.	३६१११
उक्षतर १.	३४१५५	उच्चैः (-स्) ४.	८८११९	" १.	५१३
उक्षन् १.	३४१५२	उच्चैःश्रवस् १.	१३१११	उत्कलिका २.	३६१७८
" १.	८६१५	" १.	८१११९	" २.	४२२४
उक्षवश १.	८९१५१	उच्छिष्टभोजिन् १. २. ३.		उत्कार १.	५२२१
उखा २.	४३१५५		३६११०	उत्कारिका २.	४३७२
उख्य १. २. ३.	४३१९४	उच्छीर्ष ३.	४२१६७	उत्कीर्ण १.	४२७
उग्र १.	१११४६	उच्छुन ३.	२११८३	उच्छुञ्च १.	४३६९
" १.	३५१३३	उच्छूर १.	२११६५	उत्कोच १.	३७४६
" १.	३५७२	उच्छृङ्खल १. २. ३.		उत्क्रम १.	५२१६
" १.	३५७६		५४१३२	उत्क्रोश १.	२३३४
" १.	३५११६	उच्छ्राय १.	३३१६६	उत्तिसिका २.	४३१३४
" ३.	३८१२४	उच्छ्रित १. २. ३.	७४५	उच्छुद्रल १.	५३४
" ३.	३८१४८	उच्छ्रिताग्र १. २. ३.		उत्खात १.	३६२२९
" १. २. ३.	३९७९		५४८१	उत्खेद १.	३६१८३
उग्रगन्ध १.	३३१७१	उच्छ्रास १.	३५३२	उत्त १. २. ३.	५४१०७
" १.	८५१५	" १.	३६२०४	उत्तंस १.	४३१५४
उग्रगन्धा २.	३३११७	उज्जट १. २. ३.	३३१४५	" १.	८११५९
" २.	३८१०२	उज्जासन ३.	३७२१५	उत्तस ३.	४३८९
" २.	८५१५	उज्झ १.	३८२	उत्तम १. २. ३.	५४६२
उग्रता २.	३६१९२	उज्ज १. २.	४३२६	" १. २. ३.	७४६
उग्रधन्वन् १.	१२३६	उड्ड २. ३.	२१३८	उत्तमर्णक १. २. ३.	३८८
उग्रविष १.	३३१९३	उड्डप ३.	४२१६	उत्तमसाहस १.	५१४१

उत्तमा २.	३३११६०
उत्तमाङ्ग ३.	४४४८५
उत्तमोष्वात १.	३६१२३०
उत्तमोत्तमिक ३.	३१९०२
उत्तर ३.	२४३३७
” ३.	३१८१६
” १. २. ३.	७५११८
उत्तरच्छद् १.	४३११६६
उत्तराङ्ग ३.	४३१४३
उत्तरायण १.	२११९०
उत्तरासङ्ग १.	४३११२३
उत्तरीय ३.	४३११२२
उत्तरेद्युः (-स्) ४.	८१८१८
उत्तान १. २. ३.	५४१९०
उत्तानशय १. २. ३.	५४१२
उत्ताल १. २. ३.	५४१५२
” १. २. ३.	७४१७
उत्त्रास १.	३६११०६
उत्थान ३.	४४११२८
” ३.	७३१५
उत्थित १. २. ३.	३८११८
” १. २. ३.	५४१५२
उत्थुस १.	५३१४०
उत्पतन ३.	८३१५
उत्पतित् १. २. ३.	५४१४२
उत्पतिष्णु १. २. ३.	५४१४२
उत्पत्ति २.	४४११८
उत्पल ३.	३१८१९९
” १.	४११४६
” ३.	४२१३४
” ३.	४२१३५
उत्पलावर्त १ व.	३११३३
उत्पश्य १. २. ३.	५४१५४
उत्पाट १.	४४११३७
उत्पाटित १. २. ३.	
	५४११००
उत्पात १.	३६११९०
उत्पाद् १.	३६१३२
उत्पादशयन १.	२३१३४
उत्पिञ्जल १. २. ३.	
	५४१९४

उत्पिव १.	२३३३५
उत्पिश १.	५३११२
उत्प्रास १.	२४३३५
उत्प्रेक्षा २.	३६११७४
उत्फुल्ल १. २. ३.	३३१९
उत्स १.	३२१७
उत्सङ्ग १.	३१७७६
” १.	४४१६०
उत्सन्नान्नि १.	३६१७१
उत्सर्जन ३.	३६१११९
उत्सव १.	३६१६१
” १.	७११११
उत्सादन ३.	८३१५
उत्साधन ३.	४३११३
उत्साह १.	३६११६७
” १.	३९१७६
उत्साहा २.	३२१२५
उत्सुक १. २. ३.	५४३३०
उत्सृष्ट १.	३३११५१
” १. २. ३.	५४११०१
उत्सेध १.	७१११०
उदक ३.	४२१२
उदक्या २.	४४११५
उदग्र १. २. ३.	५४१८१
उदग्रदत् १.	३७१६९
” १. २. ३.	५४१९
उदच् ३.	२११८
” १. २. ३. ४.	
	५४१९१
उदज १.	५२१३१
उदञ्जन ३.	४३१५५
उदधि १.	४२११०
उदन्त १.	२४३३९
उदन्या २.	३६११८१
उदन्वत् १.	४२११०
उदपान १. ३.	४२१९
उदय १.	३२१६
” १.	३७१४४
उदयनीय १.	३६१५८
उदयाद्रि १.	३२१६
उदर ३. २.	४४१६७

उदरग्रन्थि १.	४४१३०
उदरत्राण ३.	३७१५४
उदरिल १. २. ३.	५४१७
उदर्क १.	७१११२
उदर्चिसू १.	१२११५
उदवसित १. २. ३.	
	४३११९
उदश्चित् ३.	३८११५०
उदात्त १. २. ३.	३६३३७
” १. २. ३.	८७१६
उदान १.	७१११२
उदार १. २. ३.	५४१२०
” १. २. ३.	५४१५६
” १. २. ३.	७४१४
उदारक १.	३८१५९
उदावर्त १.	४४१३२
उदासीन १.	३७१४०
उदास्थित १.	३७१२७
” १.	८१११९
उदाहार १.	२४१४१
उदित १. २. ३.	७४१५
उदीची २.	२११५
उदीचीन १. २. ३.	
	५४१९१
उदीच्य १.	३११२२
उदीर्ण १. २. ३.	५४१५६
उदुञ्ज १. २. ३.	५४१९०
उदुम्बर १ व.	३११३९
” ३.	३२१२५
” १.	३३१२८
” १. ३.	८१५४
उदुम्बरा २.	४३१४४
उदूखल २.	४३१६५
उदूह १. २. ३.	५४१८०
” १. २. ३.	७४१६
उद्गत १. २. ३.	५४११४
उद्गमनीयक ३.	४३१२०
उद्गाढ १. २. ३.	५४१३१
उद्गाह १.	३६१७९
उद्गार १.	४४११२६
उद्गाल १.	४४१२६

उद्गूर्ण १. २. ३. ५४१११४	उद्यत १. २. ३. ५४१११४	उन्मीलन ३. ३११९०
उद्गाहित १. २. ३. ८४१६	उद्यम १. ३६११६७	उन्मीलित १. २. ३. ३१३१९
उद्गीव १. २. ३. ५४१२०	" १. ५१२३४	उन्मुख १. २. ३. ५४१५४
उद्ग १. ८११४२	उद्यान ३. ३१३३	" १. २. ३. ५४१९०
उद्गन १. ३११३५	" ३. ७३३४	उन्मूलित १. २. ३. ५४११००
उद्गाटन ३. ४१२२१	उद्युक्त १. २. ३. ५४१३०	उन्मेष १. ३११९०
उद्गात १. २४१४१	उद्योग १. ३. ५१२२५	उप ४. ८७११८
" १. ३१७२४	उद्योत १. २१११६	उपकण्ठ १. २. ३. ३१७१२०
" १. ४३३३२	उद्ग १. ४११५४	" १. २. ३. ५४११४१
उद्गंश १. ४११३५	(दर)	उपकर्या २. ४३३३०
उद्गण्ड १. ४११४६	उद्गकलाहक १. ३१७१०१	उपकल्प १. ३१३११३
उद्गाम १. १२१४६	उद्गर्तन ३. ४३१११३	उपकार १. ५१२२२
" १. २. ३. ५४११३२	उद्गान्त ३. ३१७६८	उपकारिका २. ४३३३०
उद्गाल १. ३१३६०	" १. २. ३. ५४१११४	उपकार्या २. ४३३३०
" १. ३११४३	उद्गासन ३. ३१७२१४	उपकुञ्जिका २. ३१८८५
उद्ग्राव १. ३१७२११	" ३. ८३१५	" २. ३१८८७
उद्ग्न १. ३१६१०२	उद्गाह १. ३१६५५	उपकुर्वाण १. ३१६१८
उद्गरण ३. ८३३६	उद्गेग १. ३१६१६७	उपकुल्या २. ३१८७७
उद्गर्ष १. ३१६६१	" ३. ४३११०६	उपक्रम १. २४१४१
उद्गव १. ३१६६१	" १. ५१२३३	" १. ३१६१२५
उद्गान ३. ४३१५४	उद्गेगकर्तरी २. ५३११०८	" १. ५१२१५
" ३. ७३३५	उन्दुर १. ४११३१	" १. ८१११८
उद्गार १. ३१८१४	उन्न १. २. ३. ५४११०७	उपक्रिया २. ५१२२२
उद्गधूम १. २४१२८	उन्नत १. २. ३. ५४१८१	उपक्रोश १. ३१६१९३
उद्गृष्ट १. २. ३. ५४११००	उन्नतनासिक १. २. ३. ५४१६	उपखिल ३. ३१६३३
" १. २. ३. ५४१११२	उन्नतानत १. २. ३. ५४१८३	उपगृहन ३. ४३११६९
" १. २. ३. ७३४५	उन्नति २. ५१२२४	उपग्रह १. ८१११८
उद्गथ १. ४१२२९	उन्नाम १. ५१२२४	उपग्राह्य ३. ३१७४५
उद्गन्ध १. ३१५४१	उन्नाल १. ३१८५५	उपग्न ३. ४३११२
उद्गन्धवृषभ १. ३१६१२२	उन्निद्र १. २. ३. ३१३१९	उपचर्या २. ४३११३९
उद्गुद्ध १. २. ३. ३१३१९	उन्मत्त १. ३१३७६	अपचार १. ८१११७
उद्गृहित १. २. ३. ५४११००	उन्मदिष्णु १. २. ३. ५४१४१	उपचित १. २. ३. ५४१५७
उद्गव १. ४१११८	उन्मनसू. १. २. ३. ५४१३४	" १. २. ३. ५४११०८
उद्गिज्ज १. २. ३. ४१११	उन्मथ १. ३१७२११	उपचित्रा २. ३१३११३
उद्गिद् २. ४१११	उन्माथ १. ३१९१४०	उपच्छन्दन ३. २४१२३
उद्गिद ३. ३१८१२२	उन्माद १. ३१६१७७	उपजाप १. ३१७१३
" १. ४११८	उन्मान ३. ५११५६	उपजिह्विका २. ४११३८
" १. २. ३. ४१११	उन्मिपित १. २. ३. ३१३१९	उपजोषम् ४. ८१८१७
उद्गम १. ५१२३३		उपज्ञा २. ३१६१२५
		उपताप १. ८१११९

उपत्यका २.	३।२।९	उपरक्त ३.	३।७।५९	उपसत्र १.२.३.	५।४।१०४
उपत्रिंश १. २. ३ व.	५।१।३५	उपरति २.	४।२।३६	उपसम्पन्न १. २. ३.	३।७।२२०
उपदंश १.	३।९।५२	उपरथ्या २.	४।३।१६	" १. २. ३.	४।३।९४
" १.	४।३।८६	उपरमण ३.	५।२।३६	" १. २. ३.	८।५।२६
" १.	४।४।१३२	उपराग १.	२।१।३०	उपसम्भाषण ३.	२।४।२३
उपदा २.	३।७।४५	उपराम १.	५।२।३६	उपसर्ग १.	३।६।१९०
उपदीका २.	४।१।३८	उपरि ४.	८।८।१९	उपसर्जन ३.	५।४।६४
उपदेहिका २.	४।१।३८	उपरिष्ठात् ४.	८।८।१९	उपसर्ग २.	३।४।४६
उपद्रव १.	३।६।१९०	उपरिस्थूणा २.	४।३।४१	उपस्कर १.	४।३।९०
उपद्रष्टृ १.	३।६।८१	उपल १.	३।२।८	उपस्करस्खलिनी २.	३।७।५४
उपधा २.	३।६।१९५	" १. २. ३.	७।५।१७	उपस्करव्रत ३.	३।६।१४८
" २.	७।२।३	उपलब्धि २.	३।६।१६४	उपस्थ १.	३।६।१०३
उपधान ३.	४।३।१६७	" २.	८।२।४	(उपस्थाय)	
उपनत १.२.३.	५।४।१०४	उपलम्भ १.	५।२।१९	" १.	४।४।६०
उपनय १.	३।६।७	उपलवण १.	३।८।१२६	" १. ३.	४।४।६७
उपनाय १.	३।६।७	उपला २.	४।३।१६३	उपस्थान ३.	५।२।२१
उपनाह १.	३।९।१२१	उपलिङ्ग ३.	३।६।१९०	उपस्थित १. २. ३.	५।४।१०४
" १.	८।१।१७	उपवन ३.	३।३।२	उपस्पर्श १.	४।३।११३
उपनिधि १.	३।८।१२	उपवर्ण १.	३।५।२	" १.	८।१।१९
उपनिमन्त्रण ३.	३।६।९३	उपवर्तन ३.	३।७।४९	उपस्पर्शन ३.	८।३।१४
उपनिवेशिनी २.	२।१।७५	" ३.	३।७।१११	उपहसित ३.	३।९।८४
उपनिषद् २.	८।२।३	उपवर्ष १.	३।६।१५४	उपहार १.	३।७।४५
उपन्यास १.	२।४।४१	उपवसथ १.	४।३।२	उपहालक १ व.	३।१।१७
उपपति १.	४।४।३८	उपवस्तु १.	३।६।१४४	उपह्वर ३.	८।३।५
उपप्राप्त १. २. ३.	५।४।१०४	उपवास १.	३।६।१४४	उपांशु १.	३।६।९२
उपप्लव १.	२।१।३०	उपविंश १. २. ३ व.	५।१।३५	" ४.	८।७।३२
" १.	३।६।१९०	उपविपा २.	३।८।९०	उपाग्न १. २. ३.	५।४।६४
उपवर्ह ३.	४।३।१६७	उपविष्कर ३.	४।३।१७	उपात्यय १.	३।६।११४
उपवर्हण ३.	४।३।१६७	उपविष्ट १. २. ३.	५।४।१०	उपादान ३.	५।२।१८
उपभृत् २.	३।६।१००	उपवीत ३.	३।६।२०	उपाधि १.	७।१।११
उपमन्त्रण ३.	२।४।४	" ३.	८।३।१७	उपाध्याय १.	३।६।२२
उपमा २.	५।४।१२२	उपवेद १.	३।६।३०	" १. २. ३.	८।९।४४
उपमान ३.	३।९।२१	उपवेश ३.	५।२।१४	उपाध्याया २.	४।४।२३
" ३.	८।९।१७	उपवैणव ३.	२।१।६७	उपाध्यायानी २.	४।४।२२
उपयम १.	३।६।५५	उपशक्त्यक ३.	४।३।११	उपाध्यायी २.	४।४।२२
उपयाम १.	३।६।५४	उपशाय १.	४।३।१६७	" २.	४।४।२३
उपयोग १.	५।२।२५	उपश्रुत १.२.३.	५।४।१०६	उपानह् २.	४।३।१६२
उपरक्त १.	२।१।३०	उपसंव्यान ३.	४।३।१२१		
" १. २. ३.	५।४।६८	उपसंहार १.	५।२।१८		
		उपसंग्रहण ३.	३।६।४०		

उपान्त १. २. ३.	उर्वरा २.	३।१।४	उपस् २. ३.	२।१।६९
५।४।१४२	" २.	३।८।१७	" २. ३.	६।५।८
उपायन ३.	उर्वारु २.	३।३।१६७	उपा २.	२।१।५७
उपालम्भ १.	" १.	३।३।१७२	" २.	३।४।४१
उपावृत्त १. २. ३.	उर्वी २.	३।१।१	" ४.	८।८।११
३।७।१०७	उलङ्कल १.	४।१।३७	उपापत्ति १.	१।१।२९
उपासङ्ग १.	उलन्द १.	१।१।४६	उपित १. २. ३.	७।४।७
उपासन ३.	उलप १.	३।३।७	ऊम् १.	३।४।६७
उपासना २.	" १.	३।३।२२९	उष्ट्रग्रीवक १.	४।४।१३१
उपासित १. २. ३.	उलुम्ब ३.	४।३।७०	उष्ट्रधूम्रपुच्छिका २.	३।३।१२६
५।४।१०५	उल्लक १.	२।३।२२	उष्ट्रिका २.	४।३।६१
उपाहित १.	उल्लकचेटी २.	२।३।२१	उष्ण १.	२।१।८८
उपेक्षा २.	उल्लकारि १.	२।३।१६	" १.	३।३।५६
उपेन्द्र १.	उल्लखल १.	३।६।१९	(कृष्ण)	
उपोढ १. २. ३.	" ३.	४।३।६५	" ३.	५।३।७
उपोदिका २.	" ३.	४।४।७०	" १. २. ३.	६।५।८
उपोद्घात १.	उल्लखली २.	३।७।१११	उष्णक १. २. ३.	५।४।५४
उसकृष्ट १. २. ३.	उल्लु १.	३।६।५७	उष्णवीर्य १.	४।१।५४
उभयद्युः (-स्) ४. ८।८।९	उल्का २.	१।१।३२	उष्णागम १.	२।१।८८
उभयेद्युः (-स्) ४. ८।८।९	उल्ब ३.	४।४।१८	उष्णिका २.	४।३।८०
उमा २.	उल्बण १.	५।२।९	उष्णीष १. ३.	४।३।१२४
" २.	" १. २. ३.	५।४।१३४	" ३.	४।३।१३५
उमापति १.	" १. २. ३.	५।४।१३७	" ३.	४।४।८५
उमासुत १.	उल्बणक ३.	३।९।८२	उस्त्र १.	२।१।१६
उम्बुरा २.	उल्बस्थूणा २.	४।३।३९	" १. २.	६।५।९
उम्य १. २. ३.	उल्मुक ३.	१।२।३२	उस्त्रा २.	३।४।४२
उरग १.	उल्लसनक ३.	३।९।८२	ऊ	
उरगाशन १.	उल्लाघ १. २. ३.	४।४।९३	ऊक १.	२।३।३
उरण १.	उल्लाप १.	२।४।२९	ऊख १.	४।४।६५
उरभ्र १.	उल्लिखित १. २. ३.	८।४।५	ऊत ३.	४।२।४
उररी ४.	उल्लु १.	३।३।२०८	" १. २. ३.	५।४।१००
उरस् ३.	उल्लुक १.	३।३।२२९	" १. २. ३.	५।४।११२
" ३.	उल्लेखनीय १.	३।३।४२	ऊति २.	६।२।५
उरसिल १. २. ३.	उल्लोच १.	४।३।१२३	ऊधस् ३.	३।४।५१
उरस्य १.	उल्लोल १.	४।२।१४	ऊधस्य ३.	३।८।१४६
उरस्वत् १. २. ३.	उशनस् १.	२।१।३४	ऊन १. २. ३.	५।४।८६
उरस्त्रिका २.	उशि १. ३.	६।५।८	ऊम् ४.	८।८।१४
उराह १.	उशीर १. ३.	३।३।२३१	ऊम १.	६।१।८
उरु १. २. ३.	उष १.	२।१।६८	ऊररी ४.	८।७।१७
उरुक्रम १.	उयण ३.	३।८।७९	ऊरव्य १.	३।८।१
उरुवल्ली २.	उपबृध १.	१।२।१५		

ऊरी ४.	८७१७	ऊपणा २.	३१८७६	ऋवम १.	३१७९७
ऊरु १. २.	४१४५९	(दूषणा)		" १.	३१९१३२
" १. २.	८१९२६	ऊपर १. २. ३.	३१८१८	" १.	७११३३
ऊरुज १.	३१८१	ऊपरज ३.	३१८१२३	ऋपभा २.	३१६५१
ऊरुपर्वन् ३.	४१४५९	ऊपवत् १. २. ३.	३१८१८	ऋपभी २.	३१३१२९
ऊरुमूल ३.	४१४५९	ऊप्मक १.	२११८८	ऋपि १.	१११३०
ऊर्ज २.	८१२१८	ऊप्मन् १.	२११८८	" १.	३१६१५०
ऊर्ज १.	६११९	" १.	३१६३६	" २.	३१८९४
ऊर्जस्वल् १. २. ३.		" १.	५१४९	" १.	६११९
	३१७१५१	ऊह १. २.	३१६१७५	ऋष्टि १. २.	३१८१५८
ऊर्जस्विन् १. २. ३.		ऊहन ३. २.	३१६१७५	ए	
	३१७१५१	ऋ		एक १. २. ३.	५११२५
ऊर्जित १. २. ३.	३१७१५१	ऋ २.	८१२१८	" १. २. ३.	६१४३
ऊर्णनाम १.	४११३४	ऋक्ष १.	३१३६९	एककुण्डल १.	८११५१
ऊर्णवाहि १.	४११३५	" १.	३१४७	एकग १. २. ६.	५१४१२८
ऊर्णा २.	३१४२५	" ३.	५११६०	एकगुरु १.	३१६२४
" २.	३१९३३	" १. २. ३.	६१५९	एकग्रन्थ १.	३१६३३
" २.	६१२६	ऋक्षगान्धिका २.	३१३१९६	एकतान १. २. ३.	
ऊर्णायु १.	७११३३	ऋक्षर १.	७१११४		५१४१२९
ऊर्णवाहि १.	४११३५	ऋक्ष २.	३१६२६	एकतीर्थिन् १.	३१६२४
ऊर्ध्वक १.	३१९१२९	ऋक्षीष ३.	४११५७	एकदन्त १.	१११५३
ऊर्ध्वजानुक १. २. ३.		ऋक्षु १. २. ३.	५१४१२४	एकदा ४.	८१८६
	५१४१०	" १. २. ३.	६१४२	एकदृश् १. २. ३.	५१४१३
ऊर्ध्वजु १. २. ३.	५१४१०	ऋण ३.	३१८४	एकदेश १.	४१४५५
ऊर्ध्वधन्वन् १.	११२३	ऋत ३.	३१८३	एकधुर १. २. ३.	३१४५८
ऊर्ध्वनापित १.	३१५६७	" १. २. ३.	५१३३	एकधुरीण १. २. ३.	
ऊर्ध्वमूल १.	३१३२२९	" ३.	६१३३		३१४५८
ऊर्ध्वलोक १.	११११	ऋतु १.	२११८६	एकपक्षति २.	२११६९
ऊर्ध्वसूचिका २.	४१३४८	" १.	४१४१६	एकपटलमाली २.	
ऊर्ध्वा २.	२११६	ऋतुमती २.	४१४१५		३१३१८५
ऊर्मि १. २.	४१२१४	ऋते ४.	८१८४	एकपद ३.	५१२६
ऊर्मिका २.	४१२१४४	ऋत्विज् १.	३१६७८	एकपदी २.	३११४९
ऊर्मिमत् १. २. ३.		" १.	८१९४४	एकपर्णा २.	१११६१
	५१४१२३	ऋद्ध १. २. ३.	३१८६७	एकपाटला २.	१११६१
ऊर्मिला २.	३१६४५	ऋभु १.	१११३	एकपिङ्ग १.	११२५८
ऊवध्य ३.	३१६२०५	ऋभुक्षिन् १.	११२४	एकरूप १. २. ३.	५१४७९
ऊप १.	३१८२५	ऋश्य १.	३१४१४	एकवर्ण १.	३१५३
" ३.	३१८१२३	ऋश्यकेतु १.	१११२९	एकविंश १. २. ३.	
" १.	५१३२८	ऋश्यप्रोक्ता २.	३१८३		५११२२
ऊपण ३.	३१८७५	" २.	८१२४	एकविंशतितम १. २. ३.	
" १.	५१३२६	ऋषणी १.	३१३१२४		५११२२

एकशततम]

वैजयन्तीकोषः

[ओषधि

एकशततम १. २. ३.	एतर्हि ४.	८८८५	ऐरावत १.	१२११२
५११२३	एतश्च १.	३१६१	" १.	२११८
एकसर्ग १. २. ३.	एतावतिथ १. २. ३.	५११२०	" ३.	२११४९
५११२८	एतिन् १.	३१६२०५	" ३.	२१२३
एकहायनी २.	एत्थाल १.	४११४४	" ३.	३१८११५
एकाक्ष १.	एध १.	३१६१६	ऐरावती २.	२११४६
एकाग्नि १.	एधस् ३.	३१६१६	" २.	२१२५
एकाग्र १. २. ३. ५११२८	एधित १. २. ३. ५१११६		ऐरुक् ३.	३१६८८
एकाङ्ग १.	एनस् ३.	३१७१४७	ऐरुण्डक १.	४१३४३
एकाङ्गग्रह १.	" ३.	८१३१६	ऐलविल १.	११२५६
एकाङ्गुल ३.	एरका २.	३१३२३३	ऐलेय ३.	३१८१५५
एकादश १. २. ३. ५११२१	एरण्ड १.	३१३१६४	ऐश्वर ३.	३११५८
एकादशी २.	एलक १.	३१३३६	" ३.	३१९११०
एकान्त १. २. ३.	एला २.	३१३१०३	ऐश्वर्य ३.	१११४७
५१११९९	" २.	३१८१८७	" ३.	८१५३४
" १. २. ३.	एलारसालक ३.	५१३३६	ऐह १.	३१३१६५
५११२२९	एलावालुक ३.	३१८१५५	ओ	
" १. २. ३.	एव ४.	८१७१८	ओकस् ३.	४१३१९
५११३२२	" ४.	८१८१५५	" ३.	६१३४
एकान्तरितिन् १. २. ३.	एवम् ४.	८१७१९	ओघ १.	३१९१२३
३१६१३५	" ४.	८१८१५५	" १.	४१२३०
एकान्तरिन् १. २. ३.	" ४.	८१८१७	" १.	६१११०
३१६१३५	एषण १.	३१७१८०	ओङ्कार १.	३१६२३३
एकायन १. २. ३.	एषणा २.	३१८१५०	ओज १. २. ३.	५११२३
५११२८	एषणिका २.	३१९१९	ओजस् ३.	६१३४
एकायनगत १. २. ३.	एषमः (-स्) ४.	८१९१०	ओजस्विन् १. २. ३.	
५११२९	ऐ		३१७१५१	
एकावली २.	ऐ ४	८१७२	ओद्वित ३.	३१६५
एकाष्टील १.	ऐकागारिक १.	३१९१५५	ओत १. २. ३.	३१९१२
३१३१९४	ऐङ्गुद ३.	३१३२२	ओतु १.	३१४७१
एकाष्टीला २.	ऐतिह्य ३.	२१४३८	ओदन १. ३.	४१३७६
३१३१३०	ऐन्द्र १.	३१६८६	ओम् ४.	८१७३
एकाह १.	ऐन्द्रलुप्तिक १. २. ३.		ओराल १.	५१३२०
३१६८४	ऐन्द्र १.	३१३१७	ओलक १.	३१३१५१
एजन ३.	ऐन्द्र १.	३१३१७	" १.	५१३४३
३१९८९	ऐन्द्र २.	१११६२	" १.	५१३४४
एड १. २. ३.	" २.	२११४	" १.	५१३४४
५१११३	" २.	३१३१७२	ओलहन् १.	३१८१४४
एडक १.	ऐरावण १.	१२११२	ओषक ३.	३१७५६
३१४६४			ओषधि २.	३१३१६
एडगज १.			" २.	३१८७५
३१३१५८				
एडमूक १. २. ३. ५१११३				
५१११३				
एड्क ३.				
४१३३७				
एण १.				
३१४१२				
एणीकृत १. २. ३. २१४१४				
२१४१४				
एत १.				
५१३२३				
एतन १.				
३१६२०४				

ओपधीश]

शब्दानुक्रमणिका

[कटक

ओपधीश १.	२११२५	औष्टक ३.	५११५	कङ्काल १. ३.	४१११४
ओष्ट १.	४११८७	औष्णिह ३.	३१६३४	कङ्कलि १.	३१३४०
ओष्ट्य १. २. ३.		क		कङ्कु २. ३.	३१८५५
	५११११७			कच १.	३१५१५
ओष्ण ३.	५३१९	क १.	१११७	" १.	५११९७
ओसर १.	३१८८४	" ३.	४१२२	कचङ्गला २.	३११४२
ओहार १.	४११५०	" १.	८१३६	कचू १.	३१३२०८
औ		कंवि २.	४३१२३	कच्चर १. २. ३.	५१६६
औत्तक ३.	५३११०	कंस ३.	५११५५	कच्चित् ४.	८१७१९
औजस ३.	३१२१८	" १. ३.	६१५११	कच्चोर ३.	३१३२०३
औत्सुक्य ३.	३१६१७८	कंसरिपु १.	१११२६	कच्छ १.	४१२३२
औदनिक १. २. ३.		कंसोत्पल ३.	४१२७२	" १.	४३१३३१
	४३१९३	ककुद् १. २.	८१५२८	" १.	६१११४
औदर १.	४३१८२	ककुद् ३.	३१७८०	कच्छप १.	११२६०
औदरिक १. २. ३.	५११५१	" ३.	८१५२८	" १.	४११५०
औदुम्बर १.	३१६१२५	ककुदावर्त १.	३१७९७	कच्छपी २.	४११११९
औदुम्बरायण १.	३१६१८	ककुदिन् १.	३१४५४	कच्छुर १. २. ३.	४११४५
औद्दालक ३.	३१८१३६	ककुमत् १.	३१४५४	कच्छुरा २.	३३१३२५
औपगावक ३.	५११७	ककुमती २.	४१४६४	" २.	३३१३२९
औपयिक १. २. ३.		ककुभ २.	२११२	कच्छू २.	४११३३
	५१११०३	ककुभ १.	३११२२०	कच्छूदार १.	३३१५४
औपरोधिक १.	३१६१९	ककुहा २ व.	२११२१	(कच्छूदार)	
औपवाह्य १.	३१७६९	कक्खट १.	५३१५	कच्छूरक १	३३१११७
औस्तिका २.	३१९१०६	कक्खटी २.	३१२१३	कज्जल ३.	४३१५७
औमीन १. २. ३.	३१८२०	कक्त् १.	४३१३१	कन्चुक १.	४११२१
औरभ्र १.	४३१२२९	" १.	६१३३४	" १.	४३१२८
औरभ्रक ३.	५१११०	" १. २. ३.	४१४६७	" १.	७१११५
औरस १.	४३१४५	कक्ष्यक ३.	३३११	कन्चुकिन् १.	३१७२३
और्ध्वस्थक १. २. ३.		कक्ष्या २.	३१७८४	कज्ज ३.	४२३३६
	३३११७	" २.	४३१३१	" १.	४११९८
और्व १.	११२२१	" २.	६१२७	कज्जल ३.	४२३३६
और्वव्रतिन् १. २. ३.		कक्ष्यापट १.	४३१२९	कट १.	३१७७५
	३३११३५	कङ्क १.	२३३३१	" १.	३१७२१६
और्वशेय १.	३३११५१	कङ्कट १.	३१७१५३	" ३.	३१८७५
औल्लक १. २. ३.		कङ्कटीक १.	१११६५	" १.	४११२३
	३३११३२	कङ्कण ३.	४३१४३	" १.	४३११२
औशीर ३.	५१११७	" ३.	७३१११	" १.	४३१६६
" ३.	७३१५	कङ्कत १.	४३११२	" १.	४१६५
औषध ३.	३१८७५	" १. २. ३.	८१२२७	" १. २. ३.	६१११८
" ३.	४१११४१	कङ्कपत्र १.	३१७१८१	" १. २. ३.	८१२२७
		कङ्कमुख १.	३१११७	कटक १. ३.	३१२८

कटक]

वैजयन्तीकोपः

[कवृण

कटक १. ३.	४३१४	कटुका २.	३८१५०	कण्टक १.	७१११४
" १. ३.	४३१४४	कटुकाण १.	२३१३४	कण्टकच्छेदन १.	३७११६५
" १. ३.	७१५३१	कटुत्तिक १.	५३१३०	कण्टकप्रतीसार २.	
कटकट ३.	३८११९	कटुत्तिकपाय १.			३७१५३
कटकर १.	३१५१७		५३१३७	कण्टका २.	२३१४७
" १.	३१५७६	कटुतुम्बी २.	३३११६७	कण्टकानना २.	२३१४७
कटकर्मन् १.	३१५१७	कटुभङ्ग ३.	३३१२१४	कण्टकारी २.	५३११०५
कटकी २.	४३१२४	कटुम्भरा २.	३८१८६	कण्टकाली २.	५३११०६
कटक्कटेरी २.	३३१२१३	कटुरोहिणी २.	३८१८६	कण्टकिन् १.	३३१५०
कटम् १.	१११४६	कटुत्कट ३.	३३१२१३	" १.	३३१६४
कटभी २.	३३११३९	" ३.	३८१८०	कण्टकिफल १.	३३१७४
कटमोष १.	३६१२०१	कटफल १.	३३१५८	" १.	३३११४१
कटशर्करा २.	४११५७	कटवङ्ग १.	३३१६८	कण्ट १. २. ३.	४३१४३
कटाटङ्क १.	१११४४	कटवर ३.	३८११४९	" १.	६१११३
कटाह १.	३३११०	कट्वाङ्ग १.	३३१६८	कण्टकूणिका २.	३९१११७
" १.	४३१५६	कट्वार १.	३८११३९	कण्टदोष १.	३९१११२
कटि २.	४३१६४	" १.	५३१३२	कण्टपाल १.	२३१२६
कटिका २.	३७११९९	कटाकु १.	७१११८	कण्टभूषा २.	४३११३७
कटिन्न ३.	७३१११	कटार १.	३९१३२	कण्टमणि १. २.	४३१७०
कटिमोथ १.	४३१६५	कटिञ्जर १.	३३१११८	कण्टीरव १.	३३१२
कटिल्लक १.	३३११६३	कटिन १.	५३१४	कण्टकाल १.	१११४५
कटिल्लका २.	३३११४६	कटिनी २.	३३११३	कण्टेगुड १.	४३१७०
कटिशीर्षक १.	४३१६५	कटोर १.	५३१५	कण्डन ३.	४३१६६
कटिसूत्र ३.	४३११४६	कडङ्गर १.	३८१६४	" ३.	४३१६७
कटी २.	८११२७	कडम्बक १.	४३१९०	कडार ३.	४३१३९
कटीकूप १.	४३१६५	कडार १.	५३११८	" १.	५३११३
कटीर ३.	७३१६	कण १.	३१५३०	कण्डू २.	४३११२४
कटु १.	३३१५३	" १.	४३१३७	कण्डूति २.	४३११२४
" १.	३३१२८	" १.	४३१७०	कण्डूयन ३.	४३११२४
" १.	३३१२०४	" १.	६१११५	कण्डूया २.	४३११२४
" ३.	३३१२१३	कणकुक्कुट १.	३५१३४	कण्डूर १.	३३१२०८
" ३.	३८१७९	कणजीरण १.	३८१८४	कण्डूरा २.	३३११२९
" ३.	३८१८०	कणय १.	३७११६७	कण्डोल ३.	४३१६४
" २.	३८१८६	कणा २.	३८१८४	कण्डोलवीणा २.	३९११२७
" १.	३८११३०	कणि १.	२३१२	कण्व १. २. ३.	५३११३
" १.	५३१२६	कणिका २.	३९१२५	कत ३.	४३११
" १.	५३१२६	" २.	३९११२०	कतक १.	३३१४२
" १.	५३१४७	" २.	७३१४	" ३.	३८१५०
" १. २. ३.	६१११३७	कणिश ३.	३८१६४	कतिथ १. २. ३.	५३१२०
" १. २. ३.	६३१४	कण्टक १.	२३११५	कतिपयथ १. २. ३.	५३१२०
कटुकपायक १.	५३१३०	" १.	३९१८४	कवृण ३.	३३१२३४

कथम्]

शब्दानुक्रमणिका

[कपोल

कथम् ४.	८८१२०	कन्था २.	४३३३७	कपालिनी २.	१११६४
कथा २.	२१३३८	,, २.	४३१२८	कपाली २.	४३१५९
,, २.	३१९१४२	कन्द १. ३.	३३३२०८	कपि १.	३३३३९
कथाप्रसङ्ग १. २. ३.		,, १. ३.	४२१४२	,, १.	३३३६१
	८१३१३	,, १. ३.	४३१९०	,, १.	६१११३
कथित १.	५३१५८	,, १.	८६१२५	,, १.	८१११०
कदम्बन् १.	३११५०	कन्दर १. २. ३.	३२११६	कपिकच्छू २.	३३११२९
कदन ३.	३३७२१५	,, १.	३३३१०	कपिक्रोडा २.	३३११७९
कदन्निका २.	३३३३१	,, १. २. ३.	८११३७	कपिञ्जल १.	२३३२०
कदम्ब १.	३३३६०	कन्दराल १.	३३१५९	कपित्थ १.	३३३३२
,, १.	३३३६७	कन्दरी २.	८११३७	(कृप)	
कदम्बक १.	३३८४१	कन्दल १.	३३३२१०	कपित्थपत्नी २.	३३११५७
,, ३.	५११२	,, १.	८११३१	कपिप्रिया २.	३३३८१
कदर १.	३३३६३	,, १. २. ३.	८१३३८	कपिल १.	१११३०
,, १.	४३१२३	कन्दली २.	३३३२१०	,, १.	१११३१
कदर्थ १. २. ३.	५३१५९	,, २.	८१३३८	,, १.	३३३६९
कदल १.	३३३१७३	कन्दु १.	४३३५६	,, १.	३८१११०
कदलि २.	३३७८६	,, १. २. ३.	८१२२७	,, १.	५३११८
कदली २.	३३३१७४	कन्दुक १.	४३३१६२	कपिला २.	२११९
,, २.	३३३१८	कन्दोवज ३.	४३३३४	,, २.	३३२२७
,, २.	३३३२५	कन्दोष्ठ ३.	४३३३४	,, २.	३३३९२
कदाचित् ४.	८८१७	कन्धरा २.	४३३८३	,, २.	३३३४३
कदुष्ण ३.	५३३९	,, २.	४३३११७	,, २.	३८१५५
कद्दु १.	५३३१८	कन्यका २.	४३३६	कपिलोहक ३.	३३२२७
कद्वद १. २. ३.	५३३२५	कन्यसा २.	४३३२७	कपिवल्ली २.	३८१७८
,, १.	५३३९७	कन्या २.	३३३६७	कपिश १.	३११४८
कनक ३.	३३२१९	,, २.	३३३१८८	,, १.	५३३१८
कनकाक्षी २.	२३३२१	,, २.	४३३६	कपिशा २.	४३३३६
कनिष्ठ ३.	३३८१२२	,, २.	८६११४	कपी २.	३३३१५६
कन्दर्प १.	१११२७	कन्याकुब्ज १.	४३३७	कपीतन १.	३३३३१
,, ३.	४३३३१	कन्यापिपीलिका २.	४३३३७	,, १.	३३३५९
,, १. २. ३.	५३३४	कन्याप्रसूतिजा २.	३३३४८	,, १.	३३३७२
,, १. २. ३.	७३३९	कप १.	३३३७२	कपोत १.	२३३२३
कनिष्ठा २.	४३३२७	(कृपा)		,, १.	३८१२९
,, २.	४३३७४	कपट १. ३.	३३३१९५	,, १.	५३३१२
कनीनिका २.	४३३७४	कपर्द १.	१११५०	,, १.	७३३२०
,, २.	४३३९४	,, १.	४३३५७	कपोतपाली २.	४३३५३
कनीयस् १. २. ३.	७५३९	कपर्दिन् १.	१११४०	कपोताङ्घ्रि २.	३८११००
कनीयस ३.	३३२२४	कपाल १. २. ३.	४३३५९	कपोताञ्जन ३.	३३३४२
कन्तु १.	६३३१२	,, १. ३.	४३३११५	कपोल १.	४३३९०
कन्थटिका २.	४३३१२८	कपालिन् १.	१११४०	कपोल २.	३८६६६

कप्याख्य १.	३१८११०	करक १.	२१२७	करम्ब १. २. ३.	५१४७८
कफ १.	४१४१२१	" १.	३१३२५	करम्भ १.	४१३७१
कफणि १. २.	४१४७२	" १.	३१३७२	करवालिका २.	३१७१६०
कफहरी २.	३१८१४८	" १.	४१३५७	करवी २.	३१८१३२
कफिल १.	३१९११३	" १.	४१३१३७	करवीरक १.	३१३१९१
कफोणि १. २.	४१४७२	करकवर्तिका २.	४१३६०	करवीरा २.	३१२१२
कवत १.	४३१०१	करङ्क १.	४३१५८	करवीरिका २.	३१८१४८
कबन्ध १. ३.	३१७२१६	" १.	४३१०७	करशाखा २.	४१४७५
कवरी २.	४१४१००	" १.	४१११४	करहाट १.	४१२४२
कबल १.	४३१०१	करज ३.	३१८९९	कराल १.	३१३१२२
कबली २.	४३१११	" १.	४१४७६	" ३.	४१३६२
(कपिली)		करञ्ज १.	३१३६२	" १. २. ३.	७१४८
कम् ४.	८१७३	करञ्जक १.	३१३१०७	करालिक १.	३१३५
कमठ १. २. ३.	७१५२०	करट १.	२१३१७	" १.	८११२०
कमण्डलु १.	३१६१२४	" १.	३१७७५	करालिका २.	११३६१
" १. ३.	८१३३१	" १.	३१८११६	करालिन् १.	३१७९७
कमन १. २. ३.	५१३३४	" १.	७१५२१	" १.	५१३१९
कमनीय १.	३१३८२	करटा २.	३१४४९	कराली २.	११२३०
कमल ३.	३१८९२	करण १.	३१५१७	करिणी २.	३१७७०
" ३.	४१२३९	" १.	३१५५५	करिणीचार ३.	२११७
" १. २. ३.	७१५२६	" १.	३१५७४	करिन् १.	३१७६०
कमलच्छद १.	२१३३१	" १.	३१५१०३	करिशोलुक ३.	२११६
कमिवृ १. २. ३.	५१४३५	" ३.	३१६६०	करिर १.	४१३५८
कसुजा २.	४१४१०२	" ३.	३१६२१०	" १.	७१५१९
कम्प २.	३१९८९	" १.	३१९२३	करिरपृष्ठ ३.	३१७१७६
कम्पिल्ल १ व.	३१३९५	" ३.	३१९९८	करीप १. ३.	३१४६१
कम्प १. २. ३.	५१४७९	" ३.	४१४५२	करीपामि १.	११२२०
कम्बर १. २. ३.	५१४७८	" १.	४१४७१	करुण १.	३१३३५
कम्बल १.	४१३१२९	" ३.	७१३९	" १.	३१३१५०
कम्बु १.	३१७६२	करणीपरिवर्तन ३.		" १.	३१९७५
" १. २. ३.	४११५५		३१९१४१	" १. २. ३.	३१९७९
" १. २.	६१५९	करण्डी २.	३१९३३	करुणा २.	३१६१९२
कम्बुग्रीवा २.	४१४८४	करपत्र ३.	३१९३६	करुश १ व.	३१३३६
कम्बोज १.	३१३७०	करपोणि १.	४१४७१	करेणु २.	३१७७०
कम् १. २. ३.	५१४३५	करभ १.	३१४६७	" २. १.	७१५१९
कर १.	३१७४५	" १.	३१४६७	करैरक ३.	५१२४
" १.	३१८३३	" १.	४१४७५	करोटक ३.	४१३६३
" ३.	४१३७६	" १.	७१११९	करोटि २.	४१४११५
" १.	४१४७३	करमर्द १.	३१३८३	करोटिका २.	४१३७७
" १.	६१११०	करमर्दिका २.	३१३८४	करोलक १.	५१३३८
" १.	८१११२	करम्ब १.	४१३१०६	कर्क १.	३१७९९

ककट १.	४११४६
ककटस्कन्ध १.	२३३३१
ककटि १.	३३३१६६
ककटिनी २.	३३३२१३
ककट्यू १. २.	७१५२७
ककर् १.	४४१०९
ककर्ल १.	४४१९८
ककर्नी २.	४३१०७
ककर्श १.	३३३९५
" १.	३३३१६५
" १.	५३३३
" १. २. ३.	७१४८
ककर्शिन् १.	३३३७४
ककर्शी २.	३३३८९
ककर्शु १.	३३३१६८
" १.	३३३१६९
ककर्ष १.	३३३१६४
ककर्षकी २.	३३३१६१
कर्ण १. २. ३.	३३४५९
" ३.	४२११७
" १.	४४१९२
कर्णजमल १.	४४१९२
कर्णजलका २.	४११३३
कर्णजाह ३.	८१११६
कर्णधार १.	४२११९
कर्णपूर १.	३३३७०
" १.	५३३१३४
" १. ३.	८१५६
कर्णपूरक १.	३३३४०
" १.	३३३१००
कर्णभूषण ३.	४२३३४
" ३.	४३१३३
कर्णमोटी २.	१११६४
कर्णलतिका २.	४४१९३
कर्णविहीन १. २. ३.	३३४५९
कर्णवेष्टन ३.	३३७८७
कर्णशकुली २.	४४१९३
कर्णाक १.	४३३३३४
कर्णिक ३.	३३६२१
" ३.	४२३४६

कर्णिका २.	३३७७१
" २.	३३८१६७
" २.	३३९३०
" २.	४२३४६
" २.	४३३१३३
कर्णिकार १.	३३३७२
कर्णिकारल १.	३३७१८२
कर्णिरथ १.	३३७१२६
" ३.	३३७१२७
कर्णजप १. २. ३.	५४२५
कर्तन ३.	३३७१११
" ३.	३३९१०
" १.	३३९३६
कर्तनभाण्ड ३.	३३९१९
कर्तनी २.	३३९२६
कर्तरी २.	३३७१८५
" २.	३३९३७
" २.	४३३१०८
" २.	७२३३
कर्तृ १.	३३३३७
कर्त्रिका २.	३३९२६
कर्दन ३.	२३४८
कर्दम १.	३३८२५
कर्षट १.	४३३१३०
कर्पर १.	४३३५६
" १.	४३३५९
" १.	४४११५
" १.	७१११९
कर्पराल १.	३३३४६
कर्परी २.	३२३४३
" २.	४४१००
कर्पूर १.	३३८१०५
कक्षुर ३.	३२३२०
" १.	५३३२४
कर्मकर १. २. ३.	२३१५
" १. २. ३.	५४७३
कर्मकार १. २. ३.	५४७३
कर्मक्षम १. २. ३.	५४७२
कर्मठ १. २. ३.	५४७२

कर्मण्यकृत् १. २. ३.	५४७३
कर्मण्या २.	२३१६
कर्मदेव १.	१११६
कर्नन् ३.	३३३३७
(कर्मठ)	
" ३.	३३९८
" ३.	५२३९
" ३.	६३३४
" १. ३.	८१३३१
कर्मन्दिन् १.	३३६१६०
कर्मफल १.	३३३३७
कर्मभेद १.	५३३९
कर्मरङ्ग १.	३३३३७
कर्मवत् १. २. ३.	५४७४
कर्मवाटी २.	२३१६९
कर्मशाला २.	४३३२३
कर्मशील १. २. ३.	५४७२
कर्मशूर १. २. ३.	५४७२
कर्मसाक्षिन् १.	२३११३
कर्मार १.	३३३२१४
" १.	२३११६
कर्मारवी २.	२३११३१
कर्मिन् १. २. ३.	५४७४
कर्मी २.	६३२७
कर्वट १. ३.	४३३३
कर्वट ३.	४३३३
कर्प १. ३.	५३३४९
कर्पक १.	२३१३२
" १.	३३७११७
" १. २. ३.	३३८८
कर्पफल १.	३३३१७६
कर्पफला २.	३३३१७७
कर्पायु १.	३३८४५
कर्पू १. २.	४२३२९
" १. २.	६३५१८
कल १. २. ३.	२३३१३
" १.	३३१३२१
" १. २. ३.	५४१४
कलकण्ठ १.	२३३२७

कलकल]

वैजयन्तीकोषः

[कविका

कलकल १.	रा१४२७	कला २.	३।१।८	कलक १. ३.	६।५।१०
कलकण १.	८।१।२०	" २.	४।३।३८	कलकव ३.	३।१।८५
कलङ्क १.	७।१।१७	" २.	४।३।५५	कलिकन् १.	१।१।३१
कलत्र ३.	४।४।३५	" २.	५।१।३६	कल्प १.	२।१।२३
" ३.	४।४।६४	" २.	५।२।७	" १.	३।३।१६१
" ३.	७।३।६	" २.	६।२।१०	" १.	३।६।२८
कलधौत ३. २.	८।५।५	कलाद् १.	२।१।१६	" १.	३।६।११३
कलपाठक १.	३।६।२३	कलानिधि १.	२।१।२६	" १.	६।१।१६
(कलपाठक)		कलाप १.	७।१।१५	कल्पन ३.	३।१।१०
कलभ १.	३।७।६६	कलापक १.	२।३।३९	" १.	४।४।४६
कलम १.	३।८।३४	" १.	३।७।८३	कल्पना २.	३।७।७०
" १.	७।१।१८	" १.	३।८।३४	" २.	७।२।४
कलम्ब १.	३।७।१७९	" १.	३।८।७६	कल्पवृक्ष १.	१।३।१४
" १. २. ३.	८।१।२६	" १.	५।३।४१	कल्पाणि १.	३।१।१४
कलम्बी २.	३।३।१४९	कलापिन् १.	३।३।२८	कल्पान्त १.	२।१।९४
कलम्बू २.	३।३।१४९	कलापिनी २.	१।१।६०	कल्मष ३.	३।६।१६८
कलरव १.	२।३।१४	कलाय १.	३।८।४३	कल्माष १.	५।३।२४
कलल ३.	४।३।६२	कलावती २.	३।१।११९	" १. २. ३.	७।४।१०
" १. ३.	४।४।१८	कलाह १.	३।७।१०३	कल्य १. २. ३.	४।४।१४३
" ३.	४।४।१०८	कलि १.	२।२।९२	" १. २. ३.	६।४।३
कलविङ्क १.	२।३।१८	" १.	३।३।१७५	कल्या २.	२।४।१८
" १.	२।३।१९	" १.	३।७।२०४	" २.	३।१।४५
कलश १.	३।५।२६	" १.	३।१।६२	कल्याण ३.	३।६।६२
" १.	३।५।३१	" १.	६।१।१७	" १. २. ३.	५।४।१४२
" १. २. ३.	४।३।५८	कलिका २.	३।३।१९	" २. ३.	७।५।२१
" १.	५।१।५५	कलिकारक १.	३।३।६२	कल्यापाल १.	२।१।४४
" १. २. ३.	८।१।३७	कलिङ्ग १.	२।३।२७	कल्लोल १.	४।२।१४
कलशि २.	३।३।१३६	" १ व.	३।१।४०	कलह १. २. ३.	२।४।१५
कलशी २.	४।३।५८	" १.	७।५।३३	कलहार ३.	४।२।३५
कलशीनक १.	३।३।२४	कलिङ्गक १ व.	३।१।२६	कव १.	२।४।१
कलशीपुत्र १.	३।६।१५१	कलित १. २. ३.	७।४।९	कवक १.	३।३।१५२
कलशीमुख १.	२।१।१२४	कलिद्रुम १.	३।३।१७५	कवच १. ३.	३।७।१५२
कलशोदक १.	३।३।१८९	कलिल १. २. ३.	७।५।३१	कवचित १. २. ३.	३।७।१४२
कलशोदधि १.	३।१।११	कलुष १.	३।४।९	कवट १.	३।५।२४
कलह १.	७।१।१७	" १.	३।५।१४	कवाट ३.	४।३।४३
कलहंस १.	२।३।८	" ३.	४।२।४	" १. ३. ३.	४।३।४६
" १.	८।१।२०	" १.	५।३।३४	कवि १.	२।१।३४
कलहम्रिय १.	१।३।७	" १.	५।३।३९	" १.	३।६।१५३
कला २.	२।१।५३	कलुषी २.	३।८।८८	" १.	६।१।१२
" २.	३।२।१२	कलेवर ३.	४।४।५२	कविका २.	३।७।११३
" २.	३।८।५	कलेवरा २.	१।१।४९		

कविथ]

शब्दानुक्रमिका

[कानना

कविय १. ३.	३७११३
कवी २.	३७११३
कवोष्ण ३.	५३१९
कव्यवाहन १.	१२२२
कश १.	२५२०
” १.	४१२७
कशप १.	४१५०
कशा २.	३७११४
कशिपु २.	५११६
” १. ३.	७५२०
कशेरु ३.	४२४७
” २. ३.	४४११५
कश्मल ३.	३६२००
कश्य ३.	३७११०
” ३.	३९४५
” ३.	६५१२
कप १.	३९१९
कपाय १.	३३२१७
” १.	४४१४१
” १. ३.	५३२७
” १. ३.	७५२२
कपायक १.	५३४७
कपायतिक्लवण १.	५३३६
कपायिका २.	२३४६
कपिका २.	७२४
कष्ट १. २. ३.	१२३९
” १. २. ३.	६४३
कस्तमिन् १. ३.	३७१३१
कस्तीर ३.	३२३२
कस्तुरिका २.	३८१०४
कस्तुरी २.	३४३५
” २.	३४३६
कहाला २.	३९१२६
कह १.	२३१०
कांस्य ३.	३२२८
कांस्यताली २.	३९१२४
कांस्यपात्रक ३.	४३६१
काक १.	२३१५

काककज्जु २.	३८५९
काकचिञ्चा २.	३३१८०
काकजङ्गा २.	३३१११
” २.	३३१८०
काकजम्बू २.	३३१९३
काकणी २.	७२१६
काकतिक्ता २.	३३१८०
काकतिन्दुक १.	३३१५१
काकतुण्ड १.	३८१०८
काकतुण्डिका २.	३३१८७
काकदत्ता २.	३३१८०
काकनखी २.	३३१८०
काकनासा २.	३३११२
” २.	३३१९३
काकपत्र १.	४४१०२
काकपीथी २.	३३१८०
काकपीलु १.	३३१५१
” २.	३३१८०
काकपुष्ट १.	२३२६
काकमर्दक १.	३३१८०
काकमाची २.	३३११२
काकमाली २.	३३१८७
काकर्द १.	३३१५०
काकली २.	३९११४
काकशीर्ष १.	३३१९३
काकाङ्गी २.	३३११२
काकाणती २.	३३१८०
काकाणन्ती २.	३३१८०
काकाण्ड १.	३८१७
काकादनी २.	३३१८०
काकारि १.	२३२२
काकी २.	३९११२
काकु २.	२४७
काकुद ३.	४४८९
काकुन्दी २.	४३९
काकेन्दु १.	३३१५१
काकोदर १.	४११२
काकोदुम्बरिका २.	३३१११
काकोल १.	२३१७
” १.	४१२४

काकोली २.	३३११२
” २.	३९५०
काकोल्लिका २.	८९७
काक्षी २.	३२१६
काक्षीव १.	३३१५६
काङ्गा २.	३६१७९
काच १.	३९७
” १.	५३२२
” १.	६११५
काचमालिका २.	३९४६
काचर १.	५३२२
काचस्थाली २.	३३१९०
काचित १. २. ३.	५४११६
काचिम ३.	४२४
काञ्चन ३.	३३१९
काञ्चनार १.	३३४८
काञ्चना १.	३३७७
काञ्चनी २.	३२२७
” २.	३३२११
काञ्चिक ३.	४३८१
काञ्ची २.	४३१४६
काञ्चीपद ३.	४४६४
काटिका २.	३३१
काण १. २. ३.	५४१३
काणमारिष १.	३३१५१
काणा २.	३९१७
काण्ड १. ३.	३८६३
” ३.	४१३१
” १. २. ३.	६५११
काण्डपट १.	४३१२४
काण्डपृष्ठ १. २. ३.	३७१४३
” १. २. ३.	८५६
काण्डवीणा २.	२९१२८
काण्डी २.	३८७८
काण्डीर १. २. ३.	३७१४४
” १.	३८७८
कण्डेक्षु १.	३३१०१
कातना २. व.	२११९

कातर १. २. ३.	५४१८
„ १. २. ३.	७५३२
कातुलक १.	३३८५
कात्यायन १.	३६१५८
कात्यायनी २.	११६२
„ २.	४४१४
कादम्ब १.	३३८
„ १.	७११९
कादम्बरी २.	३९४६
कादम्बिनी २.	२१२
कान ३.	२४१२
कानन ३.	३३१
कानीन १.	४४१३
कान्त १.	३३८२
„ १.	३३८५
„ ३.	३३१२३
„ १. २. ३.	५४७०
कान्तनाला २.	३३१८७
कान्ता २.	४४५
कन्तार १.	३३२२६
„ १. ३.	७५२२
कान्तारवासिनी २.	११६३
कान्ति २.	६२१८
कान्दविक १. २. ३.	४३९२
कान्दिशीक १. २. ३.	३७२१८
कापटिक १.	३७२७
„ १. २. ३.	५४२३
कापथ १.	३१५०
कापिशायन ३.	३९४४
कापिशेय १.	१३१४
कापोत १.	३६१२५
„ ३.	५११६
कापोताञ्जन ३.	३२४२
काम १.	११२७
„ १.	३३५४
„ १.	३६१७९
„ १.	६११७
कामकेलि २.	४३१७०

कामध्वज १.	२९१३७
„ १.	४३१६९
कामन १. २. ३.	५४३४
कामपद ३.	४४६१
कामपाल १.	११२४
कामम् ४.	४३१०४
कामयितृ १. २. ३.	५४३५
कामरूप १ व.	३१२९
कामरूपिणी २.	३४४३
कामरूपिन् १.	३४५
कामल १. २. ३.	४४१३२
कामविक्रियार.	४३१६९
कामाङ्ग १.	३३२५
कामारि १.	११४१
कामिक १.	३६३२
„ १.	३६१९८
कामिकान्त ३.	३९४८
कामिन् १.	२३३३
कामिनी २.	४४५
कामुक १. २. ३.	५४३५
कामुका २.	४३११
कामुकी २.	४३११
कामोत्सव १.	४४१६७
काम्बल १. २. ३.	३७१२९
काम्बविक १.	२९१७
काम्बोज १.	३७९५
काम्बोजी २.	३३१०७
काम्य ३.	३२२५
काम्यदान ३.	३६१२०
काम्रा २.	३७११४
काय १.	४४५३
„ १. २. ३.	६५१७
कायमान ३.	४३३३
कायस्थ १.	३९२३
कायाङ्ग ३.	३३२०४
कयिका २.	३८५
कारक ३.	७३७
कारकुत्सीय १ व.	३१३८

कारण ३.	३८१६
„ ३.	७३७
कारणा २.	१२३९
कारणिक १. २. ३.	५४३०
कारण्डव १.	२३११
कारम्भा २.	३३६६
कारवाही २.	३३११०
कारवी २.	३८८५
„ २.	३८१०२
„ २.	३८१३२
„ २.	३९१२९
कारवेष्ट १.	३३१६३
कारा २. १.	६५१०
कारावर १.	३५४२
„ १.	३५४३
कारि २.	८९५
कारिका २.	१२३२
„ २.	३८६
„ २.	७२५
कार्षि ३.	५११३
कारु १.	१२४
„ १.	३५५८
„ १.	३९७
„ १.	६११५
कारुज १.	७११८
कारुण १. २. ३.	५४३८
कारुणिक १. २. ३.	५४३८
कारुण्य ३.	३६१२२
कारुबिन्द १.	३५७
कारोत्तर १.	३९५२
कार्तस्वर ३.	३२१८
कार्तान्तिक १.	३७२५
कार्तिक १.	२१६६
कार्तिकिक १.	२१६६
कार्तिकी २.	२१७७
कार्तिकेय १.	११५६
कार्पास १.	३८१०६
„ १. २. ३.	४३११७
कार्पासतूल १.	३९९
कार्पासी २.	३३९९

कर्म]

शब्दानुक्रमिका

[काष्ठीला

कर्म १. २. ३.	५१४७२	कालभाग १.	३१७७८	काली २.	३१९९१
कर्मण ३.	३१६११७	कालमालक १.	३१३१२२	कालीची २.	१२३३६
कार्मुक ३.	३१७१७२	कालमेपिका २.	३१३१८१	कालेय २.	३१३१७६
„ ३.	७३१६	कालमेपी २.	३१३१०८	„ २.	३१३२१३
कार्य ४.	३१६२३६	कालरात्री २.	१११६१	„ ३.	४३१५४
कार्वट ३.	४३३३	कालवृन्ती २.	३१३१७९	कालोत्तिन् १.	२११८९
कार्वटिक ३.	४३३३	कालशीनक १.	३१५२५	कालोदक १.	३१११५
कार्पापण १.	५११३९	कालशेय ३.	३१८१४८	कालिपक १.	३१६७३
„ १.	५११४०	कालस्कन्ध १.	३१३१५१	काल्य ३.	२११६९
कार्षिक १.	५११३८	„ १.	३१३१८७	काल्यक १.	३१३११७
„ १.	५११३९	काला २.	३१२१२	कावचिक ३.	५११११
„ १.	५११३९	„ २.	३१३१३८	कावाट १.	३१७१९९
कार्ण ३.	३१६१०	„ २.	३१८१८५	कावातायनिका २.	
(कार्य)		कालागरु ३.	३१८१०८		४३३३८
कार्मरी २.	३१३१५७	कालाची २.	३१३१२०९	कावेर ३.	३१८८०
कार्मर्य १.	३१३१५७	कालानुसार्य ३.	३१८१९६	कावेरी २.	४२२२८
कार्यक १.	३१३३८	„ ३.	४३११५४	कान्य ३.	२१४४२
काल १.	१२३३५	कालायस ३.	३२२३४	काश १. ३.	३१३२२७
„ १.	२११५२	कालावलोलक १. २. ३.		काशशाकट १. २. ३.	
„ ३.	३१२३३		३१६१३५		३१८२०
„ १.	५३१११	कालिक १.	३१७२२	काशशाकिन् १. २. ३.	
„ १.	६१११५	कालिका २.	२३११६		३१८२०
कालक १.	४१४९७	„ २.	३१६१४९	काशि १ व.	३११४०
कालकण्डक १.	२३३३६	„ २.	३१७१११	„ १.	३१३२२७
कालका २.	३१४२०	„ २.	३१८१५	काशिका ३.	४३३७
(कालिका)		„ २.	३१८८४	काश्मीर १ व.	३१२२७
कालकिञ्च १.	३१५८	„ २.	३१९८१	„ ३.	३१८८८
कालकुण्डक १.	३१५२९	कालिङ्ग १.	३१३६२	काश्मीरज ३.	३१८११७
कालकुन्ध १.	११११४	„ १.	३१३१६९	काश्मीरी २.	३१३१९८
„ १.	१२३३५	कालिङ्गी २.	३१३१६९	काश्यप ३.	४१४१०६
कालकूट १.	४११२२	कालिनी २.	२११४०	काश्यपसुत १.	१११३७
„ १.	४११२३	„ २.	४१११९	काश्यपी २.	३११४
„ १.	८१९३१	कालिन्दी २.	४२२५	काष्ठ ३.	३१३१३
कालकृणिका २.	३१३१७८	कालिन्दीकर्षण १. १११२३		काष्ठतन् १.	३१९३४
कालखण्ड ३.	४१४११३	काली २.	१११४९	काष्ठा २.	२११५३
कालधर्म १.	३१६२०१	„ २.	१२३३०	„ २.	६२१८
कालनिर्यास १.	३१३१५३	„ २.	२२२२	काष्ठाभ्युवाहिनी २.	
कालपर्णी २.	४३१२२	„ २.	३२११७		४२२१५
कालपुच्छ १.	३१४२९	„ २.	३१३१०४	काष्ठी २.	३१३१७५
कालपूर १.	३१८४३	„ २.	३१३१२७	काष्ठीला २.	३१३९१
कालपूरक १.	३१८४३	„ २.	३१८७७	„ २.	३१३१७३

काष्ठेन्धन]

वैजयन्तीकोषः

[कुकर

काष्ठेन्धन ३.	३।६।९७	किण्व ३.	६।३।५	किह्वी २.	३।७।८०
काष्मरी २.	३।३।५७	कितव १.	३।३।७६	किशालिन् १.	१।२।५७
कासनुद् १.	३।८।१२७	” १.	३।९।५८	किशोर १.	३।७।१०७
कासमर्दक १.	३।३।१५४	किदिर १.	३।३।७०	किष्कु १.	३।१।५४
कासर १.	३।४।९	किनाटक ३.	३।३।१४	” १.	३।१।५६
कासार १.	४।२।६	किन्नर १.	१।३।३	” १. २.	६।५।१९
कासू २.	३।७।१६६	किन्नरी २.	३।९।१२८	किसल १.	३।३।१७
” २.	६।२।८	किन्नरेश्वर १.	१।३।५५	किसलय ३.	३।३।१७
काहला २.	३।९।१२६	किम् १. २. ३.	८।४।१६	किसिट्टक १.	३।७।१०९
किचदन्ती २.	२।४।३९	” ४.	८।७।३	कीकट १ व.	३।१।३१
किशारु १.	७।१।१९	” ४.	८।८।२	कीकस १.	४।१।३९
किशुक १.	३।३।२९	किमिला २.	४।४।२०	” ३.	४।४।१०८
” १.	३।३।७८	किमु ४.	८।८।२	कीचक १ व.	३।३।२१५
” १.	४।१।१४	किमुत्त ४.	८।८।४	कीट १.	४।१।३९
किक्कीदिवि १.	२।३।२९	किम्पचान १. २. ३.		कीन ३.	४।४।१०७
किक्कीसाद् १.	४।१।१५		५।४।५९	कीनाश १.	१।२।३५
किखि २.	३।४।३९	किम्पाक १.	३।३।८०	” १.	५।३।२१
किङ्कर १.	३।९।३	किम्पुरुष १.	१।३।३	” १. २. ३.	७।५।२३
किङ्किणी २.	४।३।१४५	” १.	३।१।६	कीर १.	२।३।२५
किङ्किराट १.	३।३।१८९	क्रियदेतिका २.	३।६।१६६	” १ व.	३।१।२७
किङ्किरात १.	३।३।१८९	(क्रियदेहिका)		कीर्ण १.	४।२।७
किङ्किर १.	२।९।१२९	क्रियाह १.	३।७।१०१	कीर्णजल १.	४।२।८
” १.	७।१।२२	किरण १.	२।१।१६	कीर्णि २.	६।२।६
किञ्चन ४.	८।८।१२	किरात १.	३।५।४६	कीर्ति २.	२।४।३६
किञ्चित् ३. ४.	३।६।१६	” १. २. ३.	५।४।५	” २.	६।२।६
” ३.	५।४।१३६	किरातज ३.	३।८।११४	कीर्शा २.	२।३।२४
” ४.	८।८।१२	किरि १.	३।४।६	कील १. २.	१।२।२९
किञ्जलुक १.	४।१।५९	” २.	३।७।१७८	” १.	३।७।८५
किञ्जोल १.	४।२।४६	किरिभ १. २. ३.	५।४।९	” १. ३.	३।७।१३१
किञ्ज १ व.	३।१।२८	किरीट ३.	४।३।१३५	” १. २. ३.	
किञ्जलक १.	४।२।४५	किरीटिन् १.	३।४।७२		६।५।१९
” १. ३.	७।५।३१	किर्मार १.	५।३।२३	कीलक १.	४।४।१२३
किट १.	३।५।२१	किल ४.	८।७।१९	कीला २.	१।२।२९
किटि १.	३।४।६	किलास १. २. ३.		कीलाल ३.	७।३।७
किट्ट १. ३.	४।४।१२०		५।४।१४४	कीलित १. २. ३.	५।४।६७
किट्टिभ ३.	४।२।३	किलासघ्न १.	३।३।१६४	कीलिनी २.	३।१।४
किण १.	३।६।२२१	किलासिन् १. २. ३.		कीलुष १.	३।५।१४
” १.	३।७।२१७		४।४।१४६	कीश १.	३।४।३९
किणिही २.	३।३।११५	किलिकिञ्चित ३.	३।९।१९४	कु २.	३।१।१
” २.	३।३।१३३	किलिञ्ज १.	४।३।१६६	” ४.	८।७।३
किण्व ३.	३।९।५०	किखिष ३.	८।४।१६	कुकर १. २. ३.	५।४।१४

कुकुण्ड १.	३३३१५२	कुट १.	३१५१३	कुड्यमस्या २.	४११३१
कुकुन्दर ३.	४१४६५	„ ३.	३१८११९	कुण १.	२३१२५
कुकुल १. ३.	७५२२४	„ १.	४३११०८	कुणप १.	३१७२१६
कुक्कुट १.	२३३१३	कुटच १.	३३१७३	„ ३.	४१११९८
„ १.	२३३३२	कुटज १.	३३१७३	कुणि १.	३३३८५
„ १.	२३३४०	कुटन्न १.	३३३६८	„ १. २. ३.	५१११४
„ १.	३३३१४९	„ ३.	३३३२०१	कुण्ठ १. २. ३.	५११७४
„ १.	३१५२३	कुटपुरि १.	२३३३२	कुण्ड १.	३१५६०
„ १.	३१५५५	कुटर १.	३१४२	„ ३.	३३३२०९
„ १.	३१५९६	कुटि २.	३३३३४	„ ३.	४३३८१
„ १.	३१५९६	„ १. २. ३.	६५२२४	„ ३.	६३३५
„ १.	४११३३४	„ १. २. ३.	८१२२६	कुण्डगोलक १.	३१५६१
कुक्कुटध्वज १.	११२१५७	कुटिल १. २. ३.	५११२३	कुण्डधान्य १.	३३३४१
कुक्कुटाक्ष १.	३३३१६८	„ १. २. ३.	८१२२४	कुण्डनी २.	४३३२५
कुक्कुटि २.	३३३१९६	कु. टीर	४३३२७	कुण्डल १.	३३३१६३
कुक्कुर १.	३३३३९	„ २.	८१२२६	„ ३.	४३३३३५
„ ३.	३३८१२	कुटीर १.	४३३२७	कुण्डलिन् १.	४११५
कुक्कि १.	४१३६७	„ १.	७११२०	„ १. २. ३.	७५२२५
कुक्किजित ३.	२३३८	कुटुम्ब ३.	४११११	कुण्डली २.	३३३१३१
कुक्किभरि १. २. ३.	५११५०	कुटुम्बध्याष्ट १. २. ३.	५११५२	कुण्डिका २.	३३३१२४
कुक्ष्यगि १.	११२२१	कुटुम्बिका २.	३३३१८७	कुण्डिन् १.	३३३१०
कुङ्कण १.	३१५४३	कुटुम्बिनी २.	४११२१	कुण्डणाची २.	२३३२६
कुङ्कुम ३.	३३३११६	कुटुम्बन्ती २.	३३३१६४	„ २.	४११३१
कुङ्कुली २.	२१११२८	कुटुम्बित ३.	३११९५	कुतनु १.	११२१५
कुच १.	४१३६८	कुट्टार १.	३३२१	कुतप १.	३१११४०
कुचन्दन ३.	३३८११४	कुट्टिनी २.	४११२५	„ १.	७५२२९
„ ३.	३३८११५	कुट्टिम १. २.	४३३३२	कुतपविन्यास १.	३१११४०
कुचर १. २. ३.	५११४८	कुट्टीर १.	३३२१	कुतुप १.	४३३६०
कुचार १.	३३३७२	कुट्टमल १. ३.	३३३१९	कुतू २.	४३३६०
कुज १.	२११३१	„ ३.	३३३२१५	कुतूहल ३.	३३३१८७
„ १ व.	३११२९	कुठ १.	३३३५	कुत्रफला २.	३३८६०
„ १.	३३३५	कुठहणा २.	३३३१३८	कुत्स १.	३११५५
कुञ्जिका २.	४३३४९	कुठार १.	३१३३२	कुत्सना २.	२३३३३
कुञ्जित १. २. ३.	५११२३	„ १. २. ३.	३१३३६	कुत्सा २.	३३३१९३
कुञ्ज १.	३३२१०	कुठेरक १.	३३३११८	कुत्सित १. २. ३.	५११७५
„ १. ३.	६५२२३	कुड १.	११२५८	कुत्सिता २.	३३३५०
कुञ्जना २.	२३३२७	कुडङ्ग १. ३.	३३२१०	कुथ १.	३३३२२७
कुञ्जर १.	३३३६१	कुडप १.	५११५३	„ १.	३३३२३
कुञ्जल ३.	४३३८२	कुडुम्बिनी २.	४११२१	„ १. २. ३.	४३३१६६
कुञ्जिका २.	३११३५	कुड्य १. ३.	४३३३७	कुदर १.	३३३११

कुदानव]

वैजयन्तीकोषः

[कुलिक

कुदानव ३.	३१३२३२	कुमालक १ व.	३११२८	कुरण्ड १.	७१११९
कुधान्य ३.	३१८६३	कुमुख १.	३११६	कुरण्डक १.	३१३१८८
कुध्र १.	३१२१२	कुसुद १.	२११८	कुरर १.	२१३३४
कुनटी २.	३१२११	" ३.	४१२४१	कुररी २.	३१४६५
" २.	३१२१७	कुसुदवान्धव १.	२११२५	कुरचक १.	३१३६१
कुनालिका २.	४१३२१	कुसुदा २.	३१३५८	" १.	३१३६१
कुनाशक १.	३१३१२६	" २.	३१३५८	" १.	३१३८९
कुन्त १.	३१७१६५	कुसुदिनी २.	४१२४४	" १.	३१३९०
कुन्तल १ व.	३११३३	कुसुद्वत् १. २. ३.	३११४३	" १.	३१३९१
" १ व.	३११४०	कुसुद्वती २.	४१२४४	कुरिन् १.	३१६४३
" १	४१४९८	कुसुद्वतीशत्रु १.	२१११२	कुरीर ३.	७३१८
कुन्ति २.	३१८८७	कुम्वा २.	३१६१०५	कुरु १.	३१६७८
कुन्द १.	११३६१	कुम्भ १.	४१३५८	कुरुकुञ्जिका २.	२१४२३
" १.	३३ ९१	" १.	४१३९	कुरुल १.	४१४९९
" १.	३१९१८	" १.	४१३३२	कुरुवर्ष ३.	३११९
कुन्दाल ३.	३१८२९	" १.	५११५६	कुरुविन्द १.	३१२४०
कुन्दिल ३.	३१३१	" १.	६१३८	" ३.	३१२४५
कुन्दोपराल १.	५१३५३	" १.	८११५	" १.	८१२२१
कुन्नान ३.	७३१८	कुम्भकर्णारि १.	१११२१	कुरुविस्त १.	५११५२
कुपूय १. २. ३.	५१४७६	कुम्भकार १.	३१५५	कुरुवत्र १.	३१३३३
कुप्य ३.	३१८७४	" १.	३१५६७	कुर्दन ३.	३१८७
" ३.	३१८१२२	" १.	३१९२७	कुल ३.	४१११५
कुप्यप्रस्थ १.	५११५३	कुम्भकारी २.	३१२४४	" ३.	४१४४९
कुप्यमाष १.	५११४४	कुम्भधारिका	४१२६	" ३.	५११६
कुप्यशाला २.	४१३२१	कुम्भफल १.	३१३८२	" १.	५१३५४
कुबेर १.	११२५५	कुम्भयोनि १.	३१६१५१	कुलक १.	३१३५१
" १.	८१६३	कुम्भशाला २.	४१३२३	कुलकालक १ व.	३१३३४
कुबेराची २.	३१३१०	कुम्भ २.	४१३५५	कुलचर १.	३१३३४
कुब्जक १. २. ३.	५११११	कुम्भन् १.	३१७६०	कुलज १. २. ३.	५१४६१
कुब्जा २.	३१६४९	" १.	४११५३	कुलटा २.	४१४९
कुमार १.	१११५४	कुम्भी २.	३१३५८	कुलपालिका २.	४१४७
" १.	३१७२०	" २.	४१२४६	कुलस्त्री २.	४१४७
" १.	३१९१०५	कुम्भीनस १.	४१११२	कुलस्थक १.	३१८४७
" १. २. ३.	५१४२	कुम्भीर १.	४११५३	" १.	४१११२
" १. २. ३.	७१५२८	कुम्भीरमत्तिका २.	२१४४६	कुलाय १.	२१३४९
" १.	८१६१	कुम्भील १.	७११२०	" १.	८१५३६
कुमारी २.	३१११०	कुम्भोलखलक ३.	३१३५४	कुलाल १.	२१९२७
" २.	३१३१७८	कुरङ्ग १.	३१४१४	कुलालकुक्कुट १.	२१३२१
" २.	३१४२६	" १.	३१४४०	कुलालिका २.	३१२४४
" २.	३१८५०	कुरण्ड १.	३१३९०	कुलिक १.	३१७१८५
" २.	४१४६	" १.	४१३३१	" १.	२१९७

कुलिङ्गाटी]

शब्दानुक्रमिका

[कूबर

कुलिङ्गाटी २.	३८३५	कुवीणा २.	२१११२८	कुसुम्भ ३.	३८८९१
कुलिश १. २.	१२११३	कुवेणी २.	२१११२८	" १.	७५२५
कुली २.	३३१०४	कुवेल ३.	४२१३४	कुसूल १.	४३१६४
" २.	४४१२८	" १.	५३१३२	कुस्तुम्बरी २.	३८१४९
कुलीन १.	३७१९४	कुश १.	३३१२२७	कुस्तुम्बुर ३.	३८८५१
" १. २. ३.	५४१६१	" १. ३.	६५१२४	कुहक १.	३७११३
लीनस ३.	४२११	कुशद्वीप ३.	३१११४	" १. २. ३.	५४१२३
कुलीमक १.	३८१३८	" ३.	३१११७	" १. २. ३.	७४११०
कुलीर १.	४२१४६	कुशल १. २. ३.	५४११४३	कुहन १. २. ३.	७५१२३
" १.	८६११४	" १. २. ३.	७५१२४	कुहर ३.	४११२
कुलुथिका २.	३२१४४	कुशवट १.	३६११४९	" ३.	७३१७
" २.	३८१४८	कुशस्थली २.	४३१६	कुहलि २.	३६१५९
कुल्माप १.	३२१४०	कुशा २.	३६११०८	कुहिठ १. ३.	२२११०
" १.	२८१५३	" २.	३७१११४	कुङ्कु २.	२११७१
" १.	४३१७२	कुशाग्रीयधी १. २. ३.	५४१२९	कुहडि २.	२२११०
" ३.	४३१८२	कुशापीड १.	३६११४९	कुहलि २.	२२११०
कुल्य १ व.	३११२८	कुशारणि १.	३६११५६	कुहरी २.	३११४
" १ व.	३११३४	कुशिन् १.	३६११५३	कुजन ३.	२४१३
" १ व.	३११४०	कुशी २.	३२१३५	कूजित ३.	२४१३
" ३.	४४११०९	" २.	४११३२९	कूट १. ३.	३२१८
कुल्यस्पृशी २.	३३११०५	कुशीलव १.	३५१९८	" १. २. ३.	३४१५६
कुल्या २.	३३११८५	" १.	३९१११४	" १.	३५१९९
" २.	४४१२२	कुशेशय ३.	४२१३८	" ३.	३६११९५
" २.	४२१२९	कुपाकु १.	७११२१	" १. ३.	३७११८४
" २.	४४१७	कुपिन् १.	३७१६२	" १.	३९१२२
" २.	५३१३०	कुष्ट ३.	३८१९९	" १. ३.	५११३
कुव ३.	४२१३४	" १.	४११२५	" १. ३.	६५११३
कुवक १.	३३१६१	" ३.	४४११२४	कूटयन्त्रक ३.	३९१४०
(कुस्वक)		" १. २.	६५१२३	कूटशालमलि १. २.	३३१९१
कुवद १. २. ३.	५४१४८	कुष्टुद २.	३३१९९	कूटसाचिन् १. २. ३.	३८११०
कुवल ३.	४२१३४	कुसट १ व.	३११४०	कूटस्थ १. २. ३.	५४१७९
" १. २. ३.	८११३८	कुसीद ३.	३८१४	कूटागार ३.	४३१३१
कुवल्य ३.	४२१३४	" १. २. ३.	७५१३२	कूणिका २.	२९११२०
कुवलायिक १.	२३१९	कुसीदिक १. २. ३.	३८११८	कूप १.	४२१७
कुवली २.	३३१८७	(कुसीदक)		" १.	४२११७
" २.	८११३८	कुसुम ३.	३३११८	" १.	६११११
कुवाट १. २. ३.	४३१४६	कुसुमच्छद १.	४२१४५	कूपक १.	४२१३१
कुवादुष्क १.	३५१२५	कुसुमाञ्जन ३.	३२१४३	कूपेपिशाचक १.	४२१४९
कुविन्दक १.	१५१९	कुसुमित १. २. ३.	३३१३८	कूबर १. ३.	३७११२७
" १.	२९१८				
कुविलीन ३.	४२१३६				

[कृवर]

वैजयन्तीकोषः

[कृष्णधूमल]

कृवर १.	३।७।१३२
कूर ३.	४।३।७५
कूरदूषक १.	३।८।५४
कूर्च १.	४।४।५७
” १. ३.	६।५।२०
चर्केसर १.	३।३।२२०
कूर्चाल १.	३।६।११२
कूर्चिका २.	३।८।१४८
” २.	७।२।५
कुर्ची २.	३।९।१३
कूर्पर १.	४।४।७२
कूर्पास १.	४।३।१२८
कूर्म १.	३।७।७६
” १.	३।७।७९
” १.	४।१।५०
” १.	८।६।१३
कूल ३.	४।२।३२
” ३.	६।३।५
कूलङ्कषा २.	४।३।२३
कूलमण्डक १	४।१।४८
(स्थूलमण्डक)	
कूली २.	३।३।८७
कूरमाण्डक १.	१।१।५१
” १.	३।३।१७०
कृकण १.	२।३।३६
कृकणपत्रिका २.	६।३।२३०
कृकर १.	२।३।३६
कृकलास १.	४।१।२८
कृकवाकु १.	२।३।१३
” १.	३।३।७९
कृकाटिका २.	४।४।८४
कृच्छ्र १ २. ३.	१।२।३९
” १. ३.	३।६।१३६
कृच्छ्रक ३.	३।६।१३६
कृच्छ्रातिकृच्छ्र १.	३।६।१३८
कृच्छ्रातिकृच्छ्रक ३.	३।६।१४१
कृत ३.	२।१।९१
” ३.	३।६।९८

कृत ३.	३।९।६२
” १. २. ३.	६।५।२१
कृतकृत्य १. २. ३.	५।४।१९
कृतकोटिकवि १.	३।६।१७९
कृतज्ञ १.	३।४।७०
कृतपुङ्खक १. २. ३.	३।७।१४९
कृतभी २.	४।१।४८
कृतमाल १.	३।३।४८
” १.	३।४।२८
कृतमालक १.	२।३।२३
” १.	४।४।१०६
कृतमुख १. २. ३.	५।४।१९
कृतवेधन १.	३।३।१५९
” १.	३।३।१६०
कृतहस्त १. २. ३.	३।७।१४८
कृताकृत ३.	३।६।९७
कृतान्त १.	१।२।३५
” १.	७।१।१६
कृताह १.	३।४।२७
कृतालक १.	१।१।५७
कृतास्त्र १. २. ३.	६।७।१४९
कृति २.	४।४।३६
कृतिन् १.	३।३।२९
” १. २. ३.	५।४।१९
कृतोद्वाह १.	३।६।८
कृत् १. २. ३.	५।४।१०२
कृत्ति २.	३।६।२१
” २.	४।३।६०
” २.	४।४।१०३
कृत्तिका २ ब.	२।१।४३
कृत्तिकापिञ्जर १.	३।७।९८
कृत्तिवासस् १.	१।१।४२
कृत्य ३.	३।६।२३६
” १. २. ३.	६।५।२०
” २. ३.	८।९।३३

कृत्रिम ३.	३।२।२८
” १.	३।८।११०
” १.	३।८।१११
” १.	३।८।१२४
कृत्रिमाचारी २.	२।१।७६
कृत्स्न १. २. ३.	५।४।८६
कृपण १. २. ३.	५।४।५९
कृपा २.	३।६।१९२
कृपाण १.	३।७।१५९
कृपाणी २.	३।९।३७
कृपीट ३.	७।३।८
कृपीटयोनि १.	१।२।१६
कृप्ति १.	३।५।३३
” १.	४।१।३४
कृप्तिकोशोत्थ १. २. ३.	४।३।११८
कृमिज ३.	३।८।१०७
कृवी १.	३।९।२६
कृश १ ब.	२।१।३७
” १.	५।३।७
” १. २. ३.	५।४।५
कृशानु १.	१।२।१७
कृशानुरेतम् १.	१।१।४५
कृशाशिवन् १.	२।९।६३
कृपक १.	३।८।२८
” १. २. ३.	७।५।३१
कृपि २.	२।८।३
कृपीवल १.	३।७।२७
” १. २. ३.	३।८।७
कृष्टक १. २. ३.	३।८।२२
कृष्टि २.	६।५।२४
कृष्ण १.	१।१।१५
” १.	१।१।२५
” १.	३।३।८३
” १.	५।३।११
” १.	६।५।१४
कृष्णकाक १.	२।३।१७
कृष्णकोहल १.	३।९।५८
कृष्णद्वैपायन १.	१।१।३२
कृष्णधूमल १.	५।३।१३
” १.	५।३।२२

कृष्णनवाशुद्ध १. २।२।२
 कृष्णपाक १. ३।३।८३
 कृष्णपाकफल १. ३।३।८३
 कृष्णपिङ्गल १. ५।३।२४
 कृष्णपीत १. ५।३।२२
 कृष्णफल १. ३।३।८३
 कृष्णफला २. ३।३।१०८
 कृष्णभगिनी २. १।१।६२
 कृष्णभूम १. २. ३. ३।१।४५
 कृष्णभेदी २. ३।८।८६
 कृष्णरक्तसित १. ५।३।२५
 कृष्णला २. ३।३।१७९
 कृष्णलोहित १. ५।२।१
 कृष्णवर्ण १. ३।८।४३
 कृष्णवर्णा २. ४।२।२९
 कृष्णवर्त्मन् १. १।२।१४
 कृष्णविपाणा २. ३।६।१०९
 कृष्णवृन्त १. ३।८।४७
 कृष्णवृन्ता २. ३।३।९०
 " २. ८।२।१५
 कृष्णवृन्तिका २. ३।३।५७
 कृष्णशालि १. ३।८।३३
 कृष्णशिम्व २. ३।८।४७
 कृष्णशृङ्गक १. ३।४।९
 कृष्णसर्प १. ४।१।१२
 " १. ४।१।१३
 कृष्णसार १. ३।४।१२
 कृष्णस्वसृ २. १।१।६२
 कृष्णाजिन ३. ३।६।२१
 कृष्णायस ३. ३।२।३३
 कृष्णिका २. ३।३।१८१
 कृसर १. ३।३।७८
 " ३. ४।२।४७
 " १. २. ३. ४।३।७९
 केकर १. २. ३. ५।४।१३
 केका २. २।३।३९
 केकालि १. २।३।३८
 केकिन् १. २।३।३७
 केणिका २. ४।३।२५

केण्डुक १. ४।१।४७
 केतक १. २. ३. ३।३।२२३
 केतन ३. ३।७।१७६
 " ३. ४।३।१९
 " ३. ७।३।१२
 केतर २. ४।३।१९
 केतु १ व. १।३।३७
 " १. ६।१।१६
 " १. ८।१।६०
 केतुमाल ३. ३।१।७
 केदर १. ३।८।१७
 केदार १. ३।८।१७
 केनिपात १. ४।२।१६
 केयूर ३. ४।३।१४३
 केरल १ व. ३।१।३४
 केरलक १. ३।९।६४
 केलि १. ३. ३।९।८८
 केलिकिल १. १।१।५१
 " १. ३।७।१७
 " १. ३।९।६७
 केकिकुञ्जिका २. ४।४।२८
 केलिसहायक १. ३।७।१७
 केवल १. २. ३. ७।५।२६
 केवलिन १. १।१।३५
 केश १. ४।४।९७
 " १. ८।६।११
 केशकार १. ३।७।११७
 केशकूट १. ४।४।१००
 केशघ्न ३. ४।४।१२६
 केशपक्ष १. ५।१।१८
 केशपद्धति २. ४।४।१००
 केशपाश १. ५।१।१८
 केशपाशी २. ४।४।१०२
 केशव १. १।१।१४
 " १. २. ३. ५।४।८
 केशवप्रिय १. ३।२।५
 केणवायुध ३. ३।७।१३४
 केशहस्त १. ५।१।१८
 केशिक १. २. ३. ५।४।८
 केशिका २. ३।३।१३७
 केशिन् १. २. ३. ५।४।८

केशिनी २. ३।३।११६
 केशी २. ४।४।१०२
 केसर १. ३।२।५
 " १. ३।३।२६
 " १. ४।२।४५
 " १. ४।३।१३२
 " १. ३. ७।५।३०
 केसरा २. ३।३।९९
 केसरिन् १. ३।३।३३
 " १. ७।१।२१
 केकसेय १. १।२।४१
 केटभारि १. १।१।१५
 केटभी २. १।१।६२
 केड्य १. ३।३।५०
 " १. ३।३।५८
 केहयद्विपिन् १. ३।३।७५
 केतव १. ७।३।८
 केदारक ३. ५।१।१२
 केदारिक ३. ५।१।१२
 केदार्य ३. ५।१।१२
 केरव ३. ४।२।४१
 केराती २. ३।७।१९२
 केलास १. ३।२।५
 केलासनाथ १. १।२।५६
 केवर्त १. ३।५।३२
 " १. ३।५।९१
 " १. ३।९।४२
 केवर्तमुस्तक १. ३।३।१९९
 केवल्य ३. ३।३।२३८
 केशिक ३. ५।१।१२
 केशिकी २. २।९।१०१
 केश्य ३. ५।१।१२
 कोक १. २।३।९
 " १. ३।४।८
 कोकनद ३. ४।२।४०
 " ३. ४।२।४२
 कोकहित १. २।१।५६
 कोकाह १. ३।७।९९
 कोकिल १. २।३।२६
 " १. ७।१।२०

कोकिलाच]

कोकिलाच १.	३३१०१
कोकुन्द १.	४३१७२
कोकुराह १.	३७१०५
कोटर १. ३.	३३३१४
कोटि २.	४३१५२
” २.	५११२९
” २.	५११३१
” २.	६२१११
कोटिका २.	४११४९
कोटिवर्ष ३.	४३१९
कोटिश १.	३८१२९
कोटी २.	३७१७८
कोटीर १.	४३१३५
कोट्टी २.	४४११०
कोठ १.	४४१२४
कोण १.	२११३५
” १. २. ३.	२११२९
” १. २. ३.	२१११३६
” १.	४३१५२
” १.	६१११६
कोणप्रतिग्राहिन ३.	
	४३१४१
कोणेपिशाचक १.	४११४८
कोण्ट १.	२३१२२
कोतना २ व.	२१११९
कोदण्ड ३.	३७१७२
” ३.	३७१७३
” ३.	७३११२
कोदङ्ग १.	३४१३४
कोदङ्ग १.	४३१३२
कोद्व १.	३८१५४
कोप १.	३६१८३
कोपन १. २. ३.	५४१३२
कोमल १.	५३१५
कोयष्टि १.	२३१२०
कोरक १.	३३११९
कोरण ३.	२४१२
कोरदूषक १. ३.	३८१५४
कोराङ्गी २.	३८१८८
कोल १.	२११३६
” ३.	३८१८०

वैजयन्तीकोपः

कोल ३.	५११४८
” १.	५३१३४
” १.	५३१०५
” १. २. ३.	५४११४
” १. २. ३.	६५११६
” १.	६५११७
कोलक ३.	३८१०५
” १.	४१११८
कोलदल ३.	३८१०१
कोलम्बक १.	२११२०
कोलवल्ली २.	३८१७८
कोला २.	३८१८१
” २.	६५११७
कोलाक १. २. ३.	
	२४१२३
कोलाङ्गक १.	३४१३३
कोलाहल १.	२४१२७
कोलि २.	३३१८७
” १. २.	८११२६
कोलिण्ट १.	३४१६६
कोविद १.	३६१२४
कोविदार १.	३३१४७
कोश १.	२३१५०
” १.	३७१३
” १.	३७१४४
” १.	३७११६८
” १. ३.	३११७४
” १.	४४१६१
” १. ३.	४४१६३
” १. २. २.	६५११५
कोशफल ३.	२८१०५
” १.	३८१०५
कोशफला २.	३३१५८
” २.	३३१६१
” २.	३३१६१
कोशातकी २.	३३१५८
कोशिका २.	३३११७
” २.	४३१५७
कोष्टिका २.	३३११९६
कोष्ट १. ३.	३५१२२
कोष्टकारी २.	२३१४७

[कौलटिनेय

कोण ३.	५३१९
कोसल १ व.	३११३७
” १ व.	३११४०
” ३.	३७१७४
” १.	५३११४
कोसलानन्दिना २.	४३१५
कोहल ३.	३११२७
” १.	३५११८
कोहली २.	३६१४९
कौकुट ३.	३६१९२
” १. २. ३.	५४१२४
कौकुटिक १. २. ३.	
	३६११७
” १. २. ३.	८४१६
कौचेल्यक १.	३७१५९
कौट १.	३६१८०
कौटतच १.	३११३४
कौटिक १.	३११३७
कौटिल्य १.	३६१५९
कौतुक ३.	६६१८७
” ३.	७३११०
कौतूल १.	४४१३८
कौतुहल ३.	३६१८७
कौद्रवीण १. २. ३.	
	३८११९
कौनृतिक १. २. ३.	
	५४१२२
कौन्तिक १. २. ३.	
	३७१४४
कौन्ती २.	३८१९५
कौपीन ३.	४३१२९
” ३.	७३११३
कौबेसी २.	२११५
कौमारी २.	१११६५
कौमुद १.	२११८६
कौमुदी २.	२११२८
कौमोदकी २.	११११८
कौम्भ ३.	३८१३८
कौरक्या २.	२४१२८
कौलकुव्य ३.	४३११५
कौलटिनेय १.	४४१४४

[कौलटेय]

कौलटेय १.	४४४४
" १.	४४४४
कौलटेय १.	४४४४
कौलीन ३.	७३१३
कौलेयक १.	३४४७०
" १. २. २.	५४४६१
कौश ३.	४३१६
कौशिक ५.	४४४११०
(कौशिक)	
" १.	७१११७
कौशिकी २.	८२११४
कौशेय १. २. ३.	
	४३१११८
कौपीतकी २.	३६११५३
कौस्त्यनन्दवर्धन १.	
	१११२१
कौसीय ३.	३६११७८
कौस्तुभ १.	११११७
कौहोल ३.	३६११८२
ककच १.	३११५६
" १. ३.	३११३६
ककचिक १.	३११५३
ककु १.	५४४१४
ककुभुज १.	१११३
ककुभि १.	११२२३
कथन ३.	४४४१२७
कन्दन ३.	२४४१०
" ३.	७३१६
कन्दित ३.	३११८७
कपुक १.	३१८६९
क्रम १.	३६१११३
" १.	३६१११३
" १.	४११३१
क्रमण १.	३७१९१
" ३.	४४४५६
क्रमुक १.	१२१३२
" १.	३३१२१७
क्रमेलक १.	३१४६७
" १.	३१४४५
क्रय १.	३८१६९
क्रयविक्रयिक १.	३८१७२

शब्दानुक्रमणिका

क्रयिक १. २. ३.	३८१६८
क्रय १. २. ३.	३८१६८
क्रय ३.	४४४१०६
क्रयाद् १.	१२१२२
" १.	१२१४०
क्रयाद् १.	१२१४०
क्राकचिक १.	३११५६
क्राथ १.	४४४१२७
क्रान्ति २.	५२११६
क्रामणक १.	३८११३०
क्रायिक १. २. ३.	३८११८
क्रासन १.	५३११
क्रिमि १.	४३११५३
क्रिमि १.	३८१९७
क्रिमि ३.	४३१११७
क्रिमिपर्वत १.	३११४८
क्रिमिर १.	५३१२५
क्रिमिरा २.	३४१२६
क्रिया २.	३१११२३
" २.	५२१९
" २.	६२१९
क्रियावत् १. २. ३.	५४४७४
क्रीडा २.	३११८७
" २.	२११८८
क्रुद्ध १.	२३१३४
क्रुध् २.	३६११८३
क्रुधा २.	३६११८३
क्रुष्ट ३.	२११८७
क्रूर १.	३३१२१७
" ३.	४४४१०८
" ३.	५३१५
" ३.	५३१७
" १. २. ३.	५४४२४
" १. २. ३.	५४४६०
" १. २. ३.	६४४४
क्ररा २.	३३१८७
क्रेणी २.	३३१६९
क्रेतव्य १. २. ३.	३८१६८
क्रेतु १. २. ३.	३८१६८
क्रेय १. २. ३.	३८१६८
क्रोड १.	२११३५

[काथन]

क्रोड ३.	५११४९
" १. २. ३.	६११२३
क्रोडीकरण ३.	४३११७०
क्रोध १.	३६११८३
" १.	३११७६
क्रोधन १.	३३१६९
" १. २. ३.	५४४३२
क्रोधविवशा २.	३३१४७
क्रोश १.	२४१३
" १.	३११६२
क्रोष्टु १.	३३१३२
क्रोष्टुककटि ३.	३३११६९
क्रोष्टुमेखला २.	३३११६७
क्रौञ्च १.	२३११०
" १.	२३१३४
क्रौञ्चारि १.	१११५७
क्लम १.	५२१२८
क्लमथ १.	५२१२८
क्लान्ति २.	५२१२८
क्लिन्न १. २. ३.	५४४११३
क्लिष्ट १. २. ३.	५४४११३
क्लीतक ३.	३८११०३
क्लीतकी २.	३३१११०
क्लीच १. २. ३.	३७१४७
" १.	४४४३
क्लेदन् १.	६१११६
क्लेदु १.	२११२६
क्लेश १.	३६११९३
क्लेशित १. २. ३.	
	५४४११३
क्लोमन् ३.	४४४११२
क्लण १.	२४१११
क्लणक १.	४४४१३५
क्लणन ३.	२४१११
क्लणित ३.	२४१११
क्लथन ३.	५२१४१
क्लथित २.	५४४११५
क्लाण १.	२४१११
क्लाथ १.	४४४१४१
क्लाथन ३.	३७१२१५
" ३.	५२१४१

काथसम्भव ३.	३१२४३	चय १.	५१२३२	चीरबीज १.	४१२४८
काथि १.	३११५२	” १.	५११५४	चीरविदारी २.	३३१९६
क्षण १.	२११५४	चयि १.	२३१९	चीरशर १.	३११९८
” १.	३११६२	चरि २.	३१११	” १.	३१११४७
” ३.	४११२७	चरिन् १.	२११८८	चीरशुक्ल १.	४१२४८
” १.	५१२१७	चव १.	४११२१	चीरशुक्ला २.	३३१९६
” ३.	५११११	चवथु १.	७१११८	चीराधि १.	३११११
क्षणदा २.	२११५६	चाणिन् १.	३११२२	चीराश १.	२३१७
क्षणन ३.	३१०२१४	चाणिनी २.	२११५७	चीराहार १. २. ३.	
क्षणा २.	४३१२६	(क्षणिनी)			३११३३४
(कणा)		क्षणी २.	२११५७	क्षीरिका २.	३१०८०
क्षणांशु २.	२१२४	क्षान्त १. २. ३.	५१२२५	क्षीराद १.	३११११
क्षणिका २.	२१२४	क्षान्ति २.	३१११	क्षीरोदसुता २.	१११३६
क्षणितु १.	३१०२१७	क्षाम १.	११२२१	क्षुण्ण १. २. ३.	५११४९
क्षत ३.	३१०२१७	” १. २. ३.	५१०८४	क्षुण्णक ३.	३११३३९
क्षतज ३.	४१११०५	क्षार १.	३१०१२७	क्षुत् २.	४११२१
क्षतव्रत १. २. ३.		” १.	३१०१२९	क्षुत १.	४११२१
	३१११३	” १.	५३१३०	क्षुद १.	३११२६
क्षत् १.	३११८५	” १.	५११३३	क्षुद्र १.	४११३९
” १.	३११११६	क्षारक १.	७१११६	” १. २. ३.	५१११०९
” १.	३१०२४	क्षारण ३.	२११३३	” १. २. ३.	६११३३
” १.	३१०१३७	क्षारपत्रक १.	३३११५४	क्षुद्रक ३.	३१०१२२
क्षत्र १.	३१०११	क्षारमृत्तिका २.	३१०२५	” ३.	३१०१३३
क्षत्रकुण्ड १.	३११६२	क्षालन २.	३१११०७	क्षुद्रघण्टा २.	४३११४५
क्षत्रिय १.	२११२	क्षिति २.	६१२८	क्षुद्रनासिक १. २. ३.	
” १.	३१०११	क्षितिसम्भवा २.	३११४२		५११११
क्षत्रियगोलक १.	३११६२	क्षिपण १.	७११२१	क्षुद्रनीवृत् १ व.	३११४१
क्षत्रिया २.	४११२३	क्षिपणु १.	७११२१	क्षुद्रपक्षिन् १.	२३१४१
क्षत्रियाणी २.	४११२३	क्षिपा २.	५१२३३	” १.	२३१४८
क्षत्रियी २.	४११२२	क्षिप्त १. २. ३.	५११६७	क्षुद्रहंस १.	२३१९
क्षपण १. २. ३.	५१११५	” १. २. ३.	५११९७	क्षुद्राण्ड १.	४११४५
क्षपा २.	२११५६	क्षिप्नु १. २. ३.	५११४०	क्षुद्रोपाय १.	३१०१२
क्षम १. २. ३.	६११३३	क्षिप्र १.	२३११९	क्षुध् २.	३११८२
क्षमा २.	१११४७	” ३.	४१११०८	क्षुधा २.	३१०४२
” २.	३११११	” १. २. ३.	५११२४	क्षुधाभिजनन १.	३१०४२
” २.	३११८४	क्षिप्रा २.	५११८४	क्षुधित १. २. ३.	५११३६
क्षमित् १. २. ३.	५११३३	क्षीव १. २. ३.	५११३७	क्षुप १.	३३१६
क्षमिन् १. २. ३.	५११३३	क्षीर ३.	३११४५	” १.	३१०६३
क्षय १.	३१०७५	” ३.	६१३४	क्षुमा २.	३१०४५
” १.	४३११९	क्षीरक १.	४११२०	क्षुर १.	३३११०१
” १.	४११२४	क्षीरज ३.	३१०१३९	” १.	३३११४१

सुर १.	३१९२६	सौम ३.	४३११२२	खड्गनामान् १.	४११५१
सुरक १.	३३११०१	सौरकार १.	३१७११७	खड्गपत्र १.	३१२२६
सुरकर्मन् ३.	३१६१४	चणुत १. २. ३.	३१७११७	खड्गपुच्छ १.	४११५१
सुरप्र १.	३१७१८२	चणू २.	३१८२९	खड्गाङ्ग १.	११२३१
सुरमदिन् १.	३१९२६	धमा २.	३११११	खड्गाम्बु ३.	३१७१६१
सुरसमुद्र ३.	४३११०८	धमाभृत् १.	३१२११	खड्गिन् १.	३१४१७
सुरिका २.	३१७१६३	धिवङ्क १.	३१४१७१	खण्ड ३.	३१८११९
सुल्लक १. २. ३.	७१४१९	ध्वेड १.	२१४११	” १. ३.	३१८१३४
सुल्लतात १.	३१९१०८	” १. २. ३.	६१५२१	” १. ३.	४१४५६
” १.	४१४३२	” १. ३.	८१९३१	” १. २. ३.	५१४८६
सुव १.	४१४९९	ध्वेल १.	४११२२	” १. २. ३.	६१५२५
सेत्र ३.	३१८११७	” १.	४११२२	खण्डना २.	३१६५३
” ३.	४१४३५	ख		खण्डपरशु १.	१११४३
” ३.	४१२५२	ख ३.	२११११	खण्डपर्कट ३.	४३११०६
” ३.	६३३६	” ३.	८३११९	खण्डल १. ३.	४३११३०
सेत्रज १.	३१६१६१	” ३.	८१६१४	खण्डशर्करा २.	३१८१३३
” १. २. ३.	७१५३२	खग १.	२१११४	खण्डिक १.	३१८१४३
सेत्रपल्ली २.	४३३२७	” १.	२३३३३	खण्डिका २.	३१६३२
सेत्राजीव १. २. ३.	३१८१३	” १.	२३३३२	खण्डित १. २. ३.	२१४२०
सेत्रिक १.	३१८११०	” १.	३१७१७८	खण्डिता २.	२११६०
सेत्रिय १. २. ३.	७१४११०	” १.	६१११८	खण्डिन् १.	३१८३८
सेत्रिया २.	३१८६०	खगच्छाय ३.	८१९१९	खण्डीर १.	३१८३६
सेथ्य ३.	३१८१२३	खचित १. २. ३.	५१४७८	खतिलक १.	११२१४
सेष १.	५१२१२	खजक १.	३१९३१	खदरी २.	३१३१४८
सेषण १.	४१४५८	खजाका २.	४३११६३	(खदिर)	
” ३.	५१२३३	खञ्ज १.	३३३२०८	खदिका २.	४३३६७
” ३.	५१२४०	” १.	३१५६	खदिर १.	११२६
सेषणी २.	४३११७	” १. २. ३.	५१४१४	” १.	३३३६३
सेषणीय १.	३१७१६६	खञ्ज १.	२३३२३	खद्योत १.	२३३४७
सेम १.	६१५२२	खञ्जरीट १.	२३३२३	खनक १.	३१५४०
सेमङ्कर १. २. ३.	५१४५५	खञ्जरीटी २.	२३३३४	” १.	४१३३१
सेत्र ३.	५१११२	खट १.	५३३४	” १. २. ३.	७१५३३
सेथी २.	४३३७७	खटी २.	३१२१६	खनि २.	३१२१०
सोड १.	३३३१६२	खट्टास १.	३१४३५	खनित्र ३.	३१८२८
सोणी २.	३११११	खट्टासिका २.	३१४३५	खनित्री २.	३१६१२३
” २.	३१६१७	खट्वा १.	४३३१६४	खपुट १. २. ३.	३१६१३२
सोद १.	६१११३	खट्वाङ्ग १.	१११५९	खपुर १.	३३३११
सोभ्य ३.	३१२३१	खट्वाङ्गिन् १.	१११४६	” १.	३३३२२२
सौद्र ३.	३१८१३५	खड्गिका २.	४३३४२	” १.	७१३२२
सौम १. ३.	४३३३३	खड्ग १.	३१४३७	खर १.	३३३३९
” १. २. ३.	४३३११७	” १.	३१७१५८		

[खर]

वैजयन्तीकोषः

[खोड]

खर ३.	३३१२१८	खल १.	३१८१३१	खाध्वनीन १.	२१११४
„ १.	३३१२२८	„ १. २. ३.	३१८१४२	खारी २.	५११५७
„ १.	३१४१६५	„ १.	५१४२५	„ २.	५११५७
„ १.	५३३३	खलकुल ३.	३१८१४७	„ २.	५११६३
„ १.	५३१५	खलति १. २. ३.		खारीक १. २. ३.	
„ १.	५३१७		४१४१४७		३१८१२२
„ १.	५३१४२	खलधान ३.	३१८१३१	खापेय १.	१३११
„ ३.	८१६६	खलपू १. २. ३.	३१८१६७	खिल ३.	३१६३३
खरक १.	२१४१०	खला २.	६१५२५	„ १. २. ३.	३१८११८
खरकुटी २.	४३१२५	खलि २.	३१९१२७	खिलखिल १.	२३१४०
खरकोमल १.	२११८४	„ २.	४३१८१	खुडार १.	३१८१४४
खरकाण १.	२३३३५	खलिनी २.	५१११२	खुडुक १.	३३१२२१
खरच्छद १.	३१४१२२९	खलीन १. ३.	३१७११३	(खुडुक)	
खरट १.	५३३४	खलु ४.	८१७२०	खुर १.	३१४७४
खरटी २.	३११२६	खलुकी २.	३३३८८	„ १.	३१८१०१
खरणस् १. २. ३.		खलुष १.	५३३३४	खुरणस् १. २. ३.	
	५१४१२	खलूरिका २.	३१७१९४		५१४११
खरणस १. २. ३.		खलेपाली २.	३१८३१	खुरणस १. २. ३.	
	५१४१२	खल्या २.	५१११२		५१४११
खरमञ्जरी २.	३३३११५	खल्व १.	३१८१४६	खुरुराह १.	३१७१०५
खरमुख ३.	३१९१२५	„ ३.	४३३६०	खेचर १.	१३३३
खरम्भर १ व.	३११२३	खलवाट १. २. ३.		„ १.	७११२२
खरागरी २.	३३३८६		४१४१४७	खेट १. ३.	४३३१
(खरा, गरी)		खलुक १.	५३३५३	„ १. २. ३.	५१४७५
खरारि १.	१११२१	खप १.	३१५४९	„ १. २. ३.	६१५२४
खराशवा २.	३१८१०२	„ १.	३१५५६	खेटक ३.	३१७१९७
खरु १. २. ३.	३१६१२	„ १.	५१४५२	„ ३.	४३१३३
„ १.	६१११८	खस १.	४१४१२३	„ १.	४१४८०
खरुञ्जक १. ३.	३१५१०	खसुम ३.	३१७४७	„ १.	४१४१२१
खरुहा २.	३३३१३२	खाङ्क १.	२१११४	खेटन ३.	३१९४०
खरुल १.	४१४७६	खाटि १.	३१७२१६	खेटिन् १. २. ३.	
खर्जनी २.	३३६१०९	खाङ्गिक १. २. ३.			४१४१४६
खर्जू २.	४१४१२४		३१७१४४	खेद १.	५२३३२
खर्जूर ३.	३३२१३	खाण्डवप्रस्थ १. ३.		खेय ३.	४३१३३
„ ३.	३३२१४		४३३८	खेल १.	३३३१२५
„ १.	३३३२२२	खातक ३.	४३२५	खेला २.	३१९८७
„ १.	४१३३३	खादन ३.	४३१०४	खेलि १.	३१८१४४
खर्जूरिका २.	३३३२२२	„ १	४१४८८	खेल्हाह १.	३१७१०३
खर्व ३.	५११२८	खादित १. २. ३.		खोल्हाह १.	३१७९९
„ १. २. ३.	५१४८१		५१४१०७	खोड १.	२११३५
		खाद्य ३.	४३३९१	„ १. २. ३.	५१४१४

(४६)

[खोरण]

खोरण १.	पा३३
खोलक १.	७११२३
ख्यातगर्हण १. २. ३.	३६११
ख्याति २.	२४३६
” २.	३६१६३
ग	
गगन ३.	२१११
गङ्गा २.	४२१२४
गङ्गाधर १.	१११४२
गङ्गेष्टि २.	४११५७
गच्छ १.	पा१३७
गज १.	३७६०
गजचिन्त्रिटा	३३१७२
गजच्छाया २.	२११३१
गजजीवन १.	३७८८
गजता २.	पा११९
गजमण्डन १.	३७८६
गजवीथिका २.	२११४८
गजानन १.	१११५३
गजाराति १.	३४३२
गज १. २. ३.	६५२६
गज्जन ३.	२४२
गज्जा २.	३२१०
गड्ड १.	४४१३३
” १. २. ३.	६५२९
गड्डल १. २. ३.	पा४११
गड्डची २.	३८४५
गड्डोल १.	४३१०१
गण १.	३७५८
” १.	पा१११
” १.	६११९
” १	८६१३
गणक १.	३७२५
गणतिथ १. २. ३.	पा११९
गणन ३.	पा१३६
गणपतिप्रिय १.	१११५१
गणपूरण १. २. ३.	पा११९
गणरात्र ३.	२११५९

शब्दानुक्रमिका

गणाधिप १.	१११५४
गणि १.	३६८२
गणिका २.	३७३३
” २.	४४२४
” २.	७२१७
गणिकागण १.	पा१८
गणिकारी २.	३३८६
गणोत्साह १.	३४८
गण्ड १.	३७७५
” १.	४४९०
” १.	४४१२३
” १.	पा१३७
” १.	६१२०
गण्डक १.	३४७
” १.	३७११६
” १.	४१४५
गण्डकली २.	३३१४८
गण्डफली २.	८२५
गण्डमाल १	४४१२९
गण्डमालहन् १.	३३७७
गण्डरी २.	३३९८
गण्डशैल १.	३२१९
गण्डरी २.	३८७८
गण्डुक १.	४३१६२
गण्डपद १.	४१५९
गण्डप १.	४४७८
” १. ३.	७५३४
गण्डपक १.	३७७०
गण्डोर १.	४३१०१
गण्डोली २.	२३४६
गति २.	३६२३६
” २.	४४१३३
” २.	पा२१०
” २.	६२११
” २.	८१५
गद १. २.	६५२९
गदाग्रज १.	११२५
गदापाणि १.	१११३
गद्गद १. २. ३.	२४१५
गद्गदस्वर १.	३४८
गद्यप्रथमयी २.	२४४२

[गमन]

गन्त्री २.	३७१२७
” २.	४३१०८
गन्ध १.	पा३२
” १.	पा३५४
” १.	६१२२
गन्धक १.	३२१४४
(गन्धिक)	
गन्धकुटी २.	३८१९८
गन्धचेलिका २.	३४३६
गन्धन ३.	७३१३
गन्धनाकुला २.	३८१९७
गन्धमुण्डक १.	३३५९
गन्धमृग १.	३४३५
गन्धरस १.	३२१५
गन्धर्व १.	१२३८
” १.	१३२
” १.	३४३२
” १.	७१२४
गन्धर्वगण १.	१३११
गन्धर्वहस्त १.	३३६५
गन्धवह १.	१२४७
” १. २.	८५७
गन्धवाह १.	१२४७
गन्धसार १.	३८११३
गन्धसारण १.	पा३४९
गन्धसोम ३.	४२४१
गन्धालु २.	४१३२
गन्धाश्मन् १.	३२१४
गन्धाहिक १.	४११८
गन्धिक १.	पा३५१
” १.	पा३५४
गन्धिघना २. १. ३.	१९३९
गन्धिनी २.	३८१९८
गभस्ति १.	२११३
” १.	२११६
” १. २.	८१२५
गभीरक १. २. ३.	४२१९
गम १.	पा२१०
गमन ३.	पा२१९
” ३	पा२१०

[गमि]

वैजयन्तीकोषः

[गान्धर्व]

गमि १.	३१६२०१	गर्म १	४४४४०	गवल ३.	३१८११८
(निमि १)		" १.	६११२१	गवसी २.	३३११२३
गम्भारी २.	३३३५८	गर्मक ३.	२११५८	गवान् १.	४३१५४
गम्भीर १. २. ३.	४१२१०	(गर्भित)		गवान् ३.	४३१५३
" ३	८३११७	" ३.	४३११५५	गवान् २.	३३११३४
गर १.	४११२२	गर्मपाकिन्	३१८३४	" २.	३३११७३
" १.	४४१८३	गर्मसम्पुट १.	४४१११३	" २.	३३११८३
गरल १.	३३३५०	गर्मगार १.	४३१५१	गवादिनी २.	३२११४९
" १.	४११२२	गर्मजि १.	३३३१५७	गवीधुका २.	३१८५९
गरवायु १.	१२१५३	गर्मधान ३.	३३६२	गवेधु २.	३१८६१
गरह ३.	३३६१७	गर्मशय १.	४४११८	गवेधुका २.	३१८६१
गरी २.	३३३८६	गर्मिणी २.	४४११६	गवेपणा २.	३३३१२१
गरुड १.	१११३७	गर्मोपघातिनी २.	३३४१७	गवेपित १. २. ३.	५४१९८
गरुडध्वज १.	११११४	गर्मुट १.	३५३३०	गव्य ३.	३१८१४५
गरुडा-२.	४४११०१	गर्मुटिका २.	३१८५९	गव्या २.	३११६२
गरुत् १.	२३३४८	गर्मुत् २.	३१८५९	" २.	५१११३
गरुत्त १.	१११३७	" २.	६१११८	" २. ३.	६५१२६
" १.	७११२४	गर्व १.	३३६१६९	गव्यूत ३.	३११६२
गरुल १.	४२१४७	गर्वहारिका २.	२४१२८	गव्यूति २.	३११६२
गरोलिका २.	४२१४८	गर्वि २.	३३६१६९	गहन ३.	३३३१
गर्गर १.	३५३३४	गर्वित १. २. ३.	५४१२०	" ३.	८३११७
गर्गरी २.	३९३३२	गर्हण ३.	२४३३३	गह्वर ३.	७३११५
" २.	४३३२७	गर्हणा २.	३३६१९३	" ३.	८३११७
गर्ज १.	२४३३	गर्हा २.	३३६१९३	गाङ्गी २.	२११७६
" १.	३३७६०	गर्ह्य १. २. ३.	५४१७५	गाङ्गेय १.	१११५६
गर्जन ३.	२४३३	गर्ह्यवादिन् १. २. ३.		" १. ३.	७५३३५
" ३.	३३३२०६		५४१४७	गाङ्गेरुकी २.	३१८६१
गर्जना २.	२४३३	गल १. २. ३.	४४१८३	गाढ १. २. ३.	५४१३२
गर्जा २.	२४३३	गलकम्बल १.	३३३६०	गाढास्य ३.	३१८१४१
गर्जित २.	२२१५	गलगण्ड १.	४४११२९	गाणिक्य ३.	५११८
" १.	७५३३४	गलन्ती २.	४३१५७	गाण्डव १. ३.	३१७१७४
गर्त २.	४२३३	गलस्तनी २.	३३३६२	" १. ३.	७५३३५
गर्तकुङ्कुट १.	२३३२१	गलाङ्कुर १.	४४११२९	गाण्डीव १.	७५३३५
गर्तिका २.	४३३२२	गलित १. २. ३.		गातु १.	२४३२
गर्वनक १.	३३३६६		५४११०२	गात्र ३.	३१७७५
गर्वभ १.	३३३६५	गलेवाल १.	४११४२	" ३.	४४३५२
गर्वभाण्ड १.	३३३५९	गल्या २.	५१११४	" ३.	४४३५५
गर्वभाह्वय ३.	४२३४१	गल्ल १.	४४३९०	गात्रसङ्कोचिन् १.	३३३७२
गर्वन १. २. ३.	५४३३५	गल्वर्त १.	३३९५३	गान ३.	२४३२
गर्वना २.	३३३१८०	गवय १.	३३३३३	" ३.	३९११०९
गर्म १.	३१८१४१	गवल १.	३३३११	गान्धर्व १.	१३३२

गान्धर्व ३.	३१६२९	गुच्छ १.	३३३२०	गुण्डा २.	३३३९५
” ३.	३१९११०	” १.	४३३१४०	गुण्डित १. २. ३.	५४३१३३
गान्धार १ व.	३१३२४	गुच्छा २.	३३३३५	गुद ३.	४४३६०
” १.	३१९१३२	” २.	३३३६०	गुदग्रह १.	४४३३२
गायत्र १.	३१६१८	गुच्छार्ध १.	४३३१४०	गुदानिल १.	३३३२०५
” ३.	३३३३४	गुज १.	३३३२०६	गुध १.	३३३१३३
गायत्री २.	३३३३४	गुल्लन ३.	२४३२	गुन्दिल १.	२४३१०
गारुड ३.	३३३१९	गुल्ला २.	३३३१७९	गुन्द्र १.	३३३२२८
गारुमत् ३.	३३३३८	” २.	५३३४८	गुन्द्रा २.	३३३६६
गार्भिण ३.	३३३३	” २.	६३३११	” २.	३३३१९९
” ३.	५३३८	गुड १.	३३३२७	” २.	३३३६०
गार्हपत्य १.	१३३२४	” १.	४३३१०१	गुप्त १. २. ३.	५४३१००
गालव १.	३३३४९	” १.	४३३१६१	गुप्तराग १.	३३३२२५
” १.	३३३५२	” १.	४४३६२	गुप्ति २.	६३३११
गालि २.	२४३३३	” १.	४४३१३३	गुम्फ १.	५३३३९
गिर २.	१३३९	” १. २.	६५३२७	गुरण ३.	५३३३४
गिरि १.	३३३१	” ३. २.	८३३३२	गुरु १.	१३३३४
” ३.	३३३९६	गुडक १.	४३३४७	” ३.	३३३२८
” १.	४३३१६१	गुडजूष १.	४३३९६	” १.	३३३२२
गिरिकर्णिका २.	३३३११	गुडपुष्प १.	३३३४४	” १.	३३३५३
गिरिकर्णी २.	३३३१३४	गुडफल १.	३३३४५	” ३.	३३३३९
गिरिका २.	४३३३२	गुडा २.	६५३२७	” १. २. ३.	६५३२७
गिरिकोलि २.	३३३७८	” २.	८३३३३	रुद्रपत्र ३.	३३३३२
गिरिजा २.	४३३२२	गुडाका २.	३३३१९७	गुरुस्वभृत् १. २. ३.	५४३२५
गिरिप्रिया २.	३३३१०५	गुडूची २.	३३३१३१	गुलिन् १.	५३३२५
गिरिमल्लिका २.	३३३७३	गुडेरक १.	४३३१०१	गुल्लम्ब १.	३३३२०
गिरिलक्ष्मण १.	३३३२८	गुण १.	३३३१६२	गुल्फ १.	४४३५७
गिरिश १.	१३३३९	” १.	३३३३०	गुल्फशीर्ष १.	४४३५७
गिरिसार १.	३३३३४	” १. २. ३.	४३३९३	गुल्म १.	३३३७
गिरिस्तनी २.	३३३३	” १.	५३३११	” १.	५३३५८
गिरीयक १.	४३३१६२	” १.	५४३६४	” १.	४४३११३
गिरीश १.	१३३३९	” १.	६३३२०	” १.	५४३३३०
गिल १.	३५३१५	गुणग्राम १.	५३३६७	” १.	६३३१९
गीत ३.	३३३१०९	गुणलयनी २.	४३३१२५	गुल्मिनी २.	३३३७
गीतिशासन ३.	३३३२९	गुणवृत्त १.	८३३२०	गुवाक १.	३३३२१७
गीतुपक्रम १.	३३३१४०	गुणवृत्तक १.	४३३१७	गुह १.	१३३५५
गीर्ण १. २. ३.	५४३१०६	गुणसामान्य ३.	३३३१६२	गुहा २.	३३३६
गीर्वाण १.	१३३२	गुणावली २.	३३३३६	” २.	३३३१३६
गीष्पति १.	२३३३३	(गुणापणी)		गुहाख्य १.	३३३८०
गुगुलु १.	३३३५३	गुणित १. २. ३.	२४३६२	गुहाशय १.	४३३५०
गुच १.	२३३६३	गुणोत्कर्ष १.	५३३३		

गुहाशय]

गुहाशय १.	८११२१
गुहय ३.	४४४६२
” १. २. ३.	५४४१२०
” १. २. ३.	५४४१२०
गुहयक १.	१३३३
” १.	८११५६
गुहयकेश्वर १.	१३३५७
गुहयधारा २.	४४४६३
गुहयवन्ध १.	४३३१३१
गुहयमध्य १.	४४४६२
गु १. २.	८५३८
गूढकोश १.	१२१६०
गूढपद ३.	३३३१७३
गूढपाद् १.	४१३६
गूढपूरुष १.	३३७२६
गूढवृत्त १.	३३३५५
गुध १.	४४४११९
गूल १. २. ३.	५४४११३
गुञ्जन १.	३३३५७
” १.	३३३२०४
” १.	३३३२०६
” १.	३३३२०७
गुण्डव २.	३३३३९
गुप्नु १. २. ३.	५४४३५
गुध्र १.	२३३३०
गुष्टि २.	३३३५८
” २.	३३४४८
गुह ३.	४३३१९
” १ व.	४४४३५
गुहकाण्ड १.	३३८७८
गुहकारिका २.	२३३४६
गुहगोधिका २.	४१३३०
गुहगौलिका २.	४१३३०
गुहजालक १. २. ३.	३३१८६
गुहद्रुम १.	३३३५४
गुहपति १.	१२३२४
” १.	३३७२७
गुहमणि १. २.	४३३१६१
गुहमृग १.	३३४६९
गुहमेधिन १.	३३६४०

वैजयन्तीकोपः

गुहयालु १. २. ३.	५४४३८
गुहश्रेणी २.	४३३४६
गुहस्थ १.	३३६४०
गुहस्थूण ३.	४३३३९
” ३.	८१२२२
गुहान्तर ३.	३३१५२
गुहावग्रहणी २.	४३३४४
गुहिणी २.	२३३४६
” २.	४४२११
” २.	७२३७
गुहिन १.	३३६४०
गुहीति २.	३३३१६५
गुहेडिका २.	४१३३६
गुहेश्वर १.	५४४७०
गुहोच्छिष्ट १.	३३३२०४
गुहोदक ३.	४३३८१
गुह्य १.	२३३५
” १. २. ३.	६४४५
गुह्यक १.	५४४२८
गैय ३.	१२११०९
गेह १. ३.	४३३१९
गेहेनर्दिन् १. २. ३.	५४४७०
गैरिक ३.	३२३११
” ३.	३२३२०
गैरूप १.	३३५३३
गैरेय ३.	३२३१६
गैरेयक ३.	३३३२१९
गो १.	१११२
” २.	१११९
” २.	३३३४१
” १.	३३४५२
” २.	३३४५२
” १. २.	८५३३७
गोकण्टक १.	३३३१४१
गोकरीपेन्धन ३.	३३६९७
गोकर्ण १.	३३४१५
” १.	५११८०
गोकर्णी २.	३३३११४
गोकुल ३.	३३४६१
गोकुच्छ ३.	३३६१३९

[गोनस

गोचुर १.	३३३१४१
गोगण १.	११११३
गोग्रन्थि १.	३३४६०
गोगन्धन १.	१२३५४
गोचर १.	५३३२
गोजिह्वा २.	३३३११६
” २.	३३८६०
गोडुम्बा १.	३३३१७३
गोणिका २.	५११५८
गोणी २.	४३३१३०
” २.	५११५६
” २.	५११६३
गोतम ३.	३३७१७४
गोत्र १.	३२३११
” ३. २.	६५२८
गोत्रभिद् १.	१२३३
गोत्रा २.	५१११३
” २.	६५२८
गोदर्भ ३.	३३३२०१
(गोनर्द)	
गोदा २.	४२३२८
गोदारण ३.	३३८२७
” ३.	३३८२९
गोदावरी २.	४२३२८
गोदुह १.	१३३१२
” १.	३३९२८
गोध १.	३३५१
” २. ३.	३३७१५५
गोधन ३.	३३४६१
गोधा १.	३३५१
” २.	३३७१५५
” २.	४१३२६
गोधामाली २.	४१११८४
गोधासन ३.	३३६२२०
गोधि २.	४४१९६
गोधूम १.	३३८५३
गोधूमचूर्ण ३.	४३३६८
गोनर्द १.	२३३३३
गोनर्दीय १.	३३६१५७
गोनस १.	४१११३
” १.	४१११४

गोनास]

गोनास १.	४१११४
गोनिपदन ३.	३१६२२५
गोप १.	३७१२२
” १.	३१९२८
गोपघोण्टा २.	३३१८८
गोपति १.	३१४५३
” १.	७११२४
गोपभद्रा २.	३३१५७
गोपा २.	३३११३९
गोपानसी २.	४३३३९
गोपायित १. २. ३.	५४११००
गोपाल १.	३१९२८
गोपाली २.	३६५६
गोपुच्छ १.	४३११४१
गोपुर ३.	३३१२०१
” ३.	४३११५
गोप्य १.	३१९३
” १. २. ३.	६५२२९
गोमत् १. २. ३.	३१४५९
गोमत ३.	३३१६२
गोमतल्लिका २.	३१४४६
गोमती २.	४२२२९
गोमय १. ३.	३१४६०
गोमायु १.	३१४३८
गोमिन् १. २. ३.	३१४५९
गोमुख १.	४११५३
” १. ३.	७५३३६
गोरक्षजम्बू २.	८२१११
गोरक्षतण्डुल १.	३१८६२
गोरस १.	३१८१३९
” १.	३१८१४९
गोरुत ३.	३११६२
गोर्गल १.	३३१२३३
(होर्गल)	
गोर्द ३.	४४११२२
गोल १.	३२११५
” ३.	४३१८२
गोलक १.	३१५६०
” १.	३१५६२
” १.	३१५६३

शब्दानुक्रमणिका

” १.	३१५६३
” १.	७११२३
गोलका २.	७२१७
गोलस्तिका २.	२३१२४
गोलपुस १.	३१४३२
गोला २.	३२११७
गोलाङ्गूल १.	३१४४०
गोलोक १.	३३१२०७
गोलोमी २.	३३११९७
” २.	३३१२३३
गोवन्दिनी २.	३३१६६
गोवाहिन् १.	३१४३३
गोविन्द १.	११११५
” १. २. ३.	२१४५९
गोवीथी २.	२११४७
गोवृष १.	३१४५४
गोव्रत ३.	३६११४८
गोशकृत् ३.	३१४६०
गोशाल १. २. ३.	८१९३४
गोशाला २.	४३३२२
गोशीर्ष ३.	३१८११३
गोष्ट १.	३१९३१
गोष्टवातिङ्गन १.	३३११०३
गोष्टश्च १. २. ३.	५४२२६
गोष्ठी २.	३१८१३
गोष्पद १. २. ३.	७१५३७
गोसङ्ख्य १.	३१९२८
गोसर्ग १.	२११६८
गोसन्य ३.	४३१११३
गोस्तन १.	४३११४१
गोस्तनी २.	३३११८१
गोस्वामिन् १. २. ३.	
” ३.	३१४५९
” ३.	३१९१०५
गोहरीतकी २.	३३३३०
गौतम १.	१११३५
” १.	३६११५६
” ३.	४१११०८
गौतमी २.	१११५९
गौधार १.	४११२६
गौधेय १.	४११२७

[ग्रहराज

गौधेर १.	४११२६
गौर १.	३३१९४
” ३.	३३१२३२
” ३.	५३११०
” ३.	५३१२०
” १. २. ३.	६४१५
गौरव ३.	३१८११६
” ३.	५२१२०
गौरशाक १.	३३१४४
गौरसर्ज १.	३३३३९
गौरसर्प १.	५११४३
गौरार्द्र १.	४११२३
गौरावस्कन्दिन् १.	१२११७
गौरी २.	१२१४६
” २.	३३११२१
” २.	३३१२११
” २.	८६३३
गौर्य १.	१११५६
गौष्ठीन ३.	३१९३१
ग्मा २.	३११३
ग्रथित १. २. ३.	५४१११०
ग्रन्थ १.	६११२१
ग्रन्थन ३.	५२३३९
ग्रन्थि १.	३३१११
” १.	३१९३१
ग्रन्थिक ३.	३१८११
ग्रन्थिनी २.	३१८७७
ग्रन्थिपर्ण ३.	३१८१२
ग्रन्थिल १.	३३३३८
ग्रस्त १. २. ३.	५४११०८
ग्रह १.	१२१३८
” १.	२११३०
” १.	२११५०
” १.	३३६३३
” १.	३१९५७
” १.	६११२०
ग्रहकल्लोल १.	२११३६
ग्रहण ३.	७३११४
ग्रहणी २.	४४११२९
ग्रहभोजन १.	३७१९१
ग्रहराज १.	८११२१

ग्रहि]

वैजयन्तीकोपः

[वृणा

ग्रहि १.	८१११०	ग्लास्नु १. २. ३.	४१११४५	घनश्रेणी २.	३१११
ग्रहीतृ १. २. ३.	३१८१९	ग्लौ १.	२११२५	घनसागर १.	३१८१०५
" १. २. ३.	५११३८	घ		घनाघन १.	८११२२
ग्राम १.	३११११०	घङ्गोर १.	३१६१६९	घनागम १.	२११८९
" १.	४१३२	घट १.	४१३१५८	घनात्यय १.	२११८९
ग्रामणी १. २. ३.	५११६६	" १.	५११५५	घनाम्ला २.	४१३७८
" १. २. ३.	७११३६	घटना २.	५१२३४	घनोपल १.	२१२७
ग्रामणीकुल ३.	३११२०	घटा २.	३१७७०	घरिन् १.	३१८३५
ग्रामतत्त्व १.	३११३४	" २.	३१८१४	घर्ष १.	३१५१८
ग्रामता २.	५११९	" २.	५१२३४	" १.	३१५३०
ग्रामधान्य ३.	४१३१३	घटिका १. ३.	५११६०	" ३.	३१६१९४
ग्रामप्रेष्य १.	३१५६२	घटिका २.	२११५४	" १. ३.	४१३५०
ग्रामसीमा २.	४१३११	" २.	७१२८	घर्षक १.	२१३२२
ग्रामसूकर १.	३११७१	घटिकालक्षण ३.	३१८१२४	घर्षिका २.	३१११३१
ग्रामार्थ १.	४१३५	घटी २.	४१३५९	" २.	८१२५
ग्रामीण १. २. ३.	४१३१३	घटीयन्त्र ३.	४१२२१	घर्षरी २.	३१११३१
ग्रामीणा २.	३१३११०	घट्ट १.	४१२०	घर्म १.	३१८८१
ग्रामेयक १. २. ३.	४१३१२	घण्टा २.	३१३१५८	" १.	८११५७
ग्राम्य १.	२१३४१	" २.	४११८०	घस्मर १. २. ३.	५११५०
" १. २. ३.	४१३१३	घण्टाताड १.	४१३३०	घस्र १.	२११५५
ग्राम्यधर्म १.	४१३१७०	घण्टापथ १.	४१३१६	घाटा २.	४११८५
ग्राम्या २.	३१३१६०	घण्टारवा २.	३१३१८	घाण्टिक १.	३१५३७
ग्रावन् १.	३१६१०२	घण्टाला २.	४१२१५८	" १.	३१७३०
" १.	६१११९	घण्टास्वन ३.	३१२२९	घात १.	३१७२११
" १.	८१६४	घन १.	२१२१	घातुक १. २. ३.	५११४२
ग्रास १.	३१६१५	" ३.	३१२३२	घारि २.	२११५७
" १.	४१३१०१	" १.	३१६१५	घास १.	३११७४
ग्रासग्रह ३.	३१६१५०	" १.	३१६१०२	घासहार १.	३१५६३
ग्राह १.	४११५२	" १.	३१७१७१	घासि १.	११२१४
" १.	६१११९	" ३.	३१९११५	घासिक १.	३१७११७
ग्राहिन् १.	३१३३२	" ३.	३१९११६	घासिण १.	३१५२१
ग्रीषा २.	४१४८३	" ३.	३१९१२३	घुटिक १.	३१७८६
ग्रीष्म १.	२११८८	" ३.	४११८६	" १.	४११५७
ग्रीष्मसुन्दर १.	३१३१५७	" १.	५१३५५	घुण १.	४१३३६
ग्रैवेयक ३.	४१३१३७	" १. २. ३.	५११२६	" १.	५१३४९
ग्रैष्मिका २.	३१३१८६	" १. २. ३.	६१५३०	घुणाभीष्टा २.	३१३१९८
ग्लवथु १.	४१४१२२	घनगोलक १. ३.	३१२२३	घुल्लु १.	३१८५९
ग्लस्त १. २. ३.	५१११०८	घनधातु १.	४१११०४	घुसुण ३.	३१८११६
ग्लह १.	३१९६०	घनपद ३.	४१२२	घूर्णन ३.	५१२१०
ग्लान १. २. ३.	४१४१४५	घनरस १.	४१२३	घूर्णि २.	५१२१०
ग्लानि २.	४१४१२२	घनवासक १.	३१३१६९	घृणा २.	३१६१९२

घृणा २.	३१६१९	घोष १.	२१४२	चक्रावर्त १.	५२११०
(मृणा)		" १.	३३१५८	चक्राह्वयाह्वय १.	२३१९
" २.	६१२१२	" १.	३१९३२	चक्रिन् १.	११११२
घृणि १.	२११५५	घोषवती २.	३९११६	" १.	३६१४०
" १.	६११२२	घोषित १. २. ३.	२१४२२	" १.	४११६
" १.	८१२२५	घौष १.	४११२५	" १.	६११२३
१ त ३.	३१८१३८	घ्राण ३.	४११९१	चक्रीवत् १.	३११६५
" ३.	६३१६	" १. २. ३.	६१२२९	चक्रोद्गी २.	३३१२१०
" १.	८१२२८	च		चक्षुस् १.	२११३३
घृतपूर १.	४३१७४	च ४.	८१७४	चक्षुष्य १.	३८१३७
घृतभुज १. २. ३.		" ४.	८१७११	" १.	४३१७०
	३६१३५	चकित १. २. ३.	५११८	" १. २. ३.	५११७०
घृतलेखनी २.	३६११०१	चकीर १.	२३१३५	" १. २. ३.	५१११७
घृताञ्जन ३.	३६१९२	चक्र ३.	३३१२१८	चक्षुर्ग्या २.	३१२४४
घृताशिन् १. २. ३.		चक्रण ३.	३३१२१८	" २.	३३१२४
	३६१३५	चक्र १.	२३१९	चक्षुस् ३.	४११९४
घृतिन् १.	३६१३५	" ३.	३७१५५	चक्षुर १.	७११२५
(घृतिन्)		" ३.	३७१३४	चञ्चटक १.	३३१५२
घृषि १.	३९११९	" ३.	४२१३०	चञ्चरीक १.	२३१४३
घृष्टि १.	२१११६	" ३.	४११२१	चञ्चल १.	२३१२४
" १.	३११६	" ३.	६३१७	" १. २. ३.	५११७८
" १.	८१२२५	चक्रकारक ३.	३८१९९	चञ्चला २.	२२१३
घृष्व १.	३९११९	चक्रचर १.	३६१४२	चञ्चु २.	२३१५०
घोटक १.	३७१९१	चक्रधारण ३.	३७१३१	" १.	३३१६५
घोण १.	३११५४	चक्रपक्ष १.	२३१५	चटक १.	२३११४
घोणस १.	४१११४	चक्रपाणि १.	११११०	(पण्डक)	
घोणा २.	२३१४६	चक्रपाद १.	८११२२	" १.	२३११८
" २.	४११२१	चक्रप्रान्तः १.	३७१३५	चटिका २.	३८१९१
" २.	६२११२	चक्रभृत् १.	८११५०	चटिकाशिर १	३८१९१
घोणिन् १.	३११५	चक्रमर्दन १.	३३१५८	चटु १.	६११२३
घोण्टा २.	३३१२१७	चक्रलक्षणा २.	३३१३२	चटुल १. २. ३.	५११७९
घोर १.	३११३८	चक्रवर्तिन् १.	३७१२	चडक १.	२२१६
" ३.	३८११७	चक्रवर्तिनी २.	३८१८९	चण १.	३८१४३
" १. २. ३.	३९१७९	चक्रवाक १.	२३१९	चण्ड १.	५३१९
घोरवाशिन ३.	२११४	चक्रवाल ३.	२११६	" १. २. ३.	५११३२
घोरित ३.	२११५	" ३.	३२१३	चण्डकोलाहल २.	
घोल १.	३११२१	" ३.	५११३		३९१२६
" ३.	३८११४८	चक्रवृत्ति २.	४८१६	चण्डमुण्डा २.	१११६३
" १.	३८११४९	चक्रसंज्ञ ३.	३२११५	चण्डांशु १.	२१११५
" ३.	३८११५०	चक्राङ्का २.	३३११४३	चण्डात १.	३३१९२
" १.	४३१५९	चक्राङ्गा २.	३८१८६	चण्डातक ३.	४३१२२

चण्डाल १.	३१५१२२	चतुष्पञ्च १. २. ३.	चन्द्रा २ व.	२११२०
„ १.	३१५१८३		चन्द्रातप १.	४३१२३
„ १.	३१५१०७	चतुष्पथ १.	चन्द्रिक १.	५३१५१
„ १.	३१५१५४	चतुष्पाद् १.	चन्द्रिका २.	२११२८
चण्डालवल्लकी २.		„ १.	„ २.	४३२२७
	३१५१२७	चतुष्प्रस्थ १.	चन्द्रिकाप्रिय १.	२३३३५
चण्डिल १.	३१५१२६	चतुष्टोम १.	चन्द्रिमा २.	२११२८
चण्डी २.	१११६२	चतुस्स्नेह ३.	चन्द्रोदय १.	४३१२३
चतुर ३.	३१५१२२	चत्वर १.	चप १.	३३१२१५
„ ३.	४३१२१	चत्तरी २.	चपल १.	३४३३३
„ १. २. ३.	५४१५४	„ २.	„ १.	३१८११०
„ ४.	५४११३७	चत्वारिंशत् २.	„ १. २. ३.	५४१७८
„ १. २. ३.	७४१११	चन ४.	„ १. २. ३.	५४१२५
चतुरङ्गक ३.	३१७५९	चनका २.	„ १. २. ३.	७५३३९
चतुरङ्गुल १. २. ३.		चन्दन १. ३.	चपला २.	२२३३
	३११५२	„ ३.	चपेट १.	४४१७६
„ १.	३३३४८	चन्दनद्रवभाजन ३.	चक्र ३.	४४१८७
चतुरा २.	३१४१९		चमक ३.	३३१२०२
चतुरूषण ३.	३१८८१	चन्द्र १.	चमर १.	३४२९
चतुर्गति १.	४११५०	„ ३.	चमरिक १.	३३३४७
चतुर्थ १. २. ३.	५११२१	„ १.	चमरी २.	३४२९
चतुर्थक १. २. ३.		„ १.	चमस १. ३.	३३१०१
	५११५१	„ ३.	चमू २.	३३१०२
चतुर्थकालिक १. २. ३.		चन्द्रकान्त १.	„ २.	३३७५५
	३३३१२६	चन्द्रकिन् १.	„ २.	३३७५८
चतुर्दष्ट १.	१२११२	„ १.	चमूपाणि १.	३३७५९
चतुर्दशी २.	२११७०	चन्द्रगोलिका २.	चमू १.	३३४२३
„ २.	३१५११७	चन्द्रपाद १.	„ १.	३३४२४
चतुर्धा ४.	८१८२०	चन्द्रवाला २.	चम्पक १.	३३३८१
चतुर्भद्र १.	३३३२३६	चन्द्रभासा २.	चम्पकद्वीप ३.	३१११७
चतुर्मुख १.	१११७	चन्द्रभीरु ३.	चम्पा २.	२२३४
चतुर्वर्ग १.	३३३२३५	चन्द्रमणि १.	चम्पुक १.	२३३४
चतुर्विधान्न ३.	४३३९१	चन्द्रमस् १.	चम्पू २.	२३४४२
चतुर्हस्त १.	३११५७	चन्द्रमातृ २.	चम्पोपलक्षण १ व.	
चतुश्शाख ३.	४३४५२	चन्द्रमौलि १.		३१३३१
चतुश्शाल ३.	४३३२६	चन्द्रव्रत ३.	चय १.	५१११
चतुष्क ३.	५११५५	चन्द्रव्रतिक १. २. ३.	चर १. २. ३.	५४६१
चतुष्की २.	४३३२४		चरण ३.	३३३११५
चतुष्कवः(स्) ४. ८१८६		चन्द्रशाला २.	„ १. ३.	४३४५६
		चन्द्रहास १.	„ १. ३.	७५३७
		„ १.	चरणाग्रक ३.	४३४५७

चरम १. २. ३.	पा४७७	चल १. २. ३.	पा४७८	चान्द्री २.	रा१२८
„ ४.	पा४१४०	चलच्चञ्चु १.	रा३३५	„ २.	रा१७२
चराचर १. २. ३.		चलदल १.	३३२७	चाप १. ३.	३७१७२
	पा४६२	चलन ३.	७३१५	चामर ३.	३३२०२
चराशा २.	रा११४	चला २.	रा२६	„ ३.	४३१५९
चरि १.	३३७२	„ २.	४४१०	चामरपुष्प १.	८११५१
चरित्र ३.	३३११५	चलाचल १. २. ३.		चामीकर ३.	३२११८
चरी २.	४४८		पा४७८	चामुण्डा २.	१११६३
चरु १.	६१२२	चलित ३.	३७२०१	चाम्पेय १.	३३१८१
चक्ति २.	४३१४७	„ १. २. ३.	पा४९५	„ १.	३३१८२
चर्च १.	१२६१	चविक ३.	३८८१	चार १.	३७२६
चर्चरी २.	रा४२७	चव्य ३.	३८८१	„ ३.	४३३६
चर्चा २.	१११६३	„ ३.	३८८१	चारटी २.	३८८९
„ २.	४३१४७	चपक १. ३.	३९५३	चारण १.	३९६४
„ २.	४४१०	चपाल १. ३.	३६१०५	चारणी २.	३३१३४
„ २.	६२१२	चाक्रगिर ३.	३११५	चारित्र ३.	३६११५
चर्चिक्य ३.	४३१४७	चाक्रिक १.	३५२३	चारी २.	३६६७
चर्पट १.	४४७७	„ १.	३५७८	चारु १.	रा१३३
चर्मटि २.	रा४२७	„ १.	३९२७	„ १. २. ३.	पा४१३५
चर्मकार १.	३५४०	„ १.	७१२५	„ १. २. ३.	६४६
„ १.	३५४०	चाङ्गेरी २.	३३१६३	चारुक १.	३४३०
„ १.	३५४२	चाट १.	पा३१४	चारुनाल ३.	४२४०
„ १.	३९४३	चाटस १.	पा३२९	चार्वी २.	३६११५
चर्मकोश ३.	४३६२	चाटु १.	६१२३	चाल १.	३४६९
चर्मन् ३.	३६२१	चाटुकार १.	४३१४२	चालन ३. २.	८९३२
„ ३.	३७१९७	चाणक्यमूलक ३.		चलनी २.	४३६५
चर्मपर्णी २.	३३१४४		३३१५५	चाप १.	रा३२९
चर्मप्रसेदिनी २.	३९४३	चाण्डाल १.	३९५४	चिकित्सक १. २. ३.	
चर्मप्रसेविका २.	३९१७	चाण्डालिका २.	३९१२७		४४१४३
चर्ममय ३.	३७१९७	चातक १.	रा३३२	चिकित्सा २.	४४१३९
चर्मिक १.	३३३४५	चातिक १.	३७३०	चिकिर १.	७१२५
चर्मिन् १.	१११५२	चातुर १. २. ३.	७५३८	चिकिल १.	३८२६
„ १.	३३३४५	चातुरीक १. २. ३.		(चिकिच्छिल)	
„ १. २. ३.	३७१४४		४३१०९	चिकुर १. २. ३.	पा४७९
चर्या २.	३६११६	चातुर्जात ३.	४३१५१	„ १. २. ३.	७५३९
चवर्ण ३.	४३१५१	चातुर्मास्य १.	३६१४५	चिक्कण ३.	३३२९८
चवर्णा २.	रा३३४५	चात्वाल १. ३.	३६१११	„ १.	पा३४
चल १.	१२४९	चान्द्रमसायनि १. २१३२		चिक्कस १.	४३६८
„ ३.	३७२०७	चान्द्रायण ३.	३६१३६	चिक्काण ३.	३८५५
„ १.	३८११०	चान्द्रायणरत १. २. ३.		चिक्रोड १.	४१२७
„ १. २. ३.	पा४६८		३६१२७	चिञ्चा २.	३३६१

चिञ्चलिक]

चिञ्चलिक १.	११२११
चिञ्चोटिका २.	४२१४८
चित् २.	३१६१६४
” ४.	८८११२
चितकावेर ३.	३८१११६
चिता २.	३७२११६
चिति २.	३६११६४
” २.	३७२११६
चिक्कृत ३.	२१४१९
चित्त ३.	३६११७२
चित्तविभ्रम १.	३६११७७
चित्ताभोग १.	३६११७४
चित्तोन्मादकरी २.	१११४९
चित्या २.	३७२११६
चित्र १. २. ३.	३११७८
” १.	४११४३
” ३.	४३११४८
” ३.	६११३०
चित्रक १.	३८१८२
” १.	४१११५
” १.	५३१२३
चित्रकूट १.	३२१२
चित्रकूत् १.	३३१४६
” १.	३१११२
चित्रगुप्त १.	१२१३६
चित्रतण्डुला २.	३८१९७
चित्रदण्ड १.	३३१२०८
चित्रपत्त १.	२३१२०
चित्रपट १.	४३१११९
चित्रपत्रक १.	२३३३७
चित्रपर्णिका २.	३३३१३६
चित्रपिङ्गल १.	२३३३७
चित्रपुङ्ख १.	३७११८०
चित्रफलन् १.	४११४३
चित्रभानु १.	८११२२
चित्ररथ १.	१२१५
चित्रल १.	३३११६८
चित्रला २.	३४१६३
चित्रवाज १.	३३३२९
चित्रशाला २.	४३३२३

वैजयन्तीकोषः

चित्रशिखण्डिज १.	२११३३
चित्रशिखण्डिन् १.	२११५०
चित्रा २.	२११६०
” २.	३३३११३
” २.	३३३१३८
” २.	३३३१७३
” २.	४११११७
” २.	६११३०
चित्राङ्ग १.	३४१४
चित्राङ्गि २.	३३३१३७
चित्राणुक १.	४११४९
चित्रावनि २.	३६३३५
चित्रोपपन्ना २.	२११६०
चिह्नित १.	३३३१७२
चिद्रूप १. २. ३.	५३१२७
चिपाट १.	३७१३२
चिपिट १.	४३३६८
” १. २. ३.	५३१८३
चिबुक ३.	४३१८७
चिरक्रिय १. २. ३.	५३१७२
चिरजीविन् १.	१११७
” १.	२३३१५
चिरण्टी २.	४३१९
चिरन्तन १. २. ३.	५३१८७
चिरम् ४.	८८११
चिरमेहिन् १.	३३३६६
चिररात्र ३.	२११५९
चिररात्राय ४.	८८११
चिरसूता २.	३३३४८
चिरात् ४.	८८११
चिरि १.	१२११८
चिरिविस्वक १.	३३३६२
चिरेण ४.	८८११
चिलिचिम १.	४११४५
चिलिमीलिका २.	८२११२
चिल्ल १.	६३१५
चिल्लाक १.	२३३४

[चूचुक

चिल्लिक १.	२३३२८
चित्त १.	३३३५२
चित्त १.	५३३५७
चिह्न ३.	२११२९
” ३.	६३३८
चीन १ व.	३११२३
” ३.	३२३३३
” १.	३३३५०
” १.	३४३२१
” १.	३८३३७
” १.	३८३५९
चीनक १.	३४३१३
चीननक १.	४११४४
चीनपट्ट ३.	३२३३०
चीनसी २.	३४३२१
चीना २.	३६३५०
चौर ३.	४३३३०
चीरिणी २.	४३३८
चीरी २.	२३३४८
चीवर ३.	४३३२८
चुक्र ३.	३८३३२
” १.	३८३३३
चुक्रिका २.	३३३१६३
चुचुन्दरी २.	४१३३२
चुण्डिन् १.	४२३७
चुन्दी २.	४३३२५
चुप १.	५३३७
चुबुक ३.	४३३८७
चुम्बक १.	३२३३८
चुम्बन ३.	४३३१७१
चुम्न १. २. ३.	६१३३१
चुल १.	४३३७८
चुलुक १.	३३३३
” १.	४३३७८
चुलम्पा २.	३३३६३
चुल्ल १.	६३३५
चुल्लि २.	४३३५४
चूचु १.	३३३५१
” १.	३३३५३
चूचुक १.	३३३७४
” १.	३३३८१

चूचुक]

शब्दानुक्रमिका

[छाग

चूचुक ३.	४४६८	चैत्री २.	२११७५	छुत्रा २.	३३१२४
चूडक १.	३८४५	चैद्य १ व.	३११३६	" २.	३३२३४
चूडा २.	४४१०२	चोच १. २. ३.	६५३१	" २.	३८४९
" २.	८२१५	चोच ३.	३३१४	छुत्राक १.	३३१५३
चूडाकरण ३.	३६४	" ३.	३८१०४	छुत्राकी २.	३८१२४
चूडामणि २.	३३१७९	चोचु १.	४४१००	छुत्रिन् १.	३७२८
" १. २. ३.	४३१३६	चोट १.	४४१०३	छुद १.	२१६२
चूत १.	३३२५	चोटलिङ्गक १.	३७१८५	" १.	२३४९
चूतक १.	४२७	चोदनिका २.	३८४७	" १.	३३१६
चूर्ण ३.	४३१५७	चोदनी २.	३३१६७	छुदन ३.	२३४९
चूर्णपूष ३.	४३७२	चोद्य १. २. ३.	६४६	" ३.	३३१६
चूर्णि २.	४१५८	चोर १.	३९५५	छुदावलि ३.	३७१८५
" २.	६२१२	" १. ३.	४३७६	छुदिसू ३.	३६९१
चूलि २.	६२१३	चोरपुष्पी २.	३३११६	" २. ३.	४३३७
चूलिक १.	२३१३	चोरिक १.	३७२०	" २.	४४१०३
" १.	३८३९	चोल १ व.	२३३३	छुदिस्तृण ३.	३८६७
चूलिका २.	३६२२२	" १.	३३८३	छुदमन् ३.	३६९५
" २.	३७७३	" १. ३.	४३३७	" ३.	६३८
चूपण ३.	४३१०३	" १.	४३१२८	छुदमप्रधारवत् १.	३७२८
चूपा २.	३७८४	चोलक १. ३.	३३१३	छुन्द १.	६१२४
चूप्य ३.	४३१९१	चोलान्त १.	४३३७	छुन्दना २.	३६१९५
चेटक १.	३९२	चोली २.	४३१२७	छुन्दसू ३.	३६२७
चेटा २.	४४२६	चौच १. २. ३.	५४३३५	" ३.	३६२८
चेटिका २.	४४२६	चौण्ड १.	४२७	" ३.	६३९
चेत् ४.	८८१४	चौरिक १.	३९१५९	छुन्दोभेद १.	३६३४
चेतकी २.	३३१७८	चौरिका ३.	३९१५८	छुन्न १. २. ३.	५४१२०
चेतना २.	३६१६३	चौर्य २.	३९१५८	छुन्नपथ ३.	३७५४
चेतसू ३.	३६१७२	चौल २.	३६४	छुन्ना २.	३३१३१
चेदि १ व.	३१३६	च्यवन १.	३६१५७	(छिन्ना)	
चेन्नाल १.	३६१६९	च्युति २.	४४६०	छुर्दन १.	३३५०
चेल ३.	४३११७	" २.	४४६१	" १.	३३७५
" १. २. ३.	५४७५	च्युप १.	६१२३	" १.	४४१३५
" १. २. ३.	६५३१	छ		छुर्दनी २.	३३१७१
चेत्तलाण १.	३३१६८	छग १.	३४६२	छुर्दि २.	६२१३
चैत्य ३.	३६९०	छगल १.	३४६२	छुल ३.	३६१९५
" ३.	४३२८	छगी २.	३४६२	छुलवाच् २.	२४१९
" ३.	६३८	छण्डकट १.	३५३६	छुल्ली २.	३३१३
चैत्यवृत्त १.	८६२०	छत्र ३.	३६१६	छुवि २.	४३१५०
चैत्र १.	२१८३	छत्रक १.	३३१६९	छाग १.	३३३५
चैत्ररथ ३.	१२५९	छत्रधर १. २. ३.	३७१४५	(भाग)	
चैत्रिक १.	२१८३			" १.	३४६२

छागण १.	२।१।२०	जगल १	५।४।२७	जड १. २. ३.	५।४।१४
छागणक १	३।५।२७	जग्घ १. २. ३.	५।४।१०७	" १. २. ३.	६।४।६
छात १. २. ३.	५।४।१०२	जग्घि २.	४।३।१०२	जडा २.	३।६।४९
छात्र १.	३।६।२५	जघन १.	४।४।६४	जतु ३.	४।३।५३
" १.	३।७।२७	" ३.	७।३।१५	जतुक ३.	३।८।१३१
" ३.	३।८।१३६	जघनपिण्डिका २.	३।७।७८	जतुका २.	३।३।४४
छादिपेय १. २. ३.		जघनभाग १.	३।७।७६	जतुकाहला २.	३।९।१२६
	३।८।६७	जघनेफल १.	३।३।७४	जतुकृत २.	३।८।८९
छान्दस १.	३।६।८१	जघनेफला २.	३।३।१११	जतुका २.	३।८।८९
छाया २.	२।१।२३	जघन्य ३.	३।८।११५	जतु ३.	४।४।६९
" २.	६।२।१३	" १. २. ३.	५।४।७६	जन १.	३।६।२०२
छायाकर १. २. ३.		" १. २. ३.	५।४।७७	जनक १.	४।४।२९
	३।७।१४५	" १. २. ३.	७।४।११	जनङ्गम १.	३।९।५४
छायापुत्र १.	२।१।३५	जघन्यज १.	३।९।१	जनता २.	५।१।९
छित १. २. ३.	५।४।१०२	" १. २. ३.	५।४।४	जनन ३.	४।४।१८
छिद्र ३.	३।८।१८	जङ्गम १. २. ३.	५।४।६१	" ३.	४।४।४९
" ३.	४।१।२	जङ्गित १.	३।५।३	जननी २.	४।४।२६
" ३	५।४।१४४	जङ्गा २.	४।४।५८	" २.	७।२।८
" ३	६।३।९	जङ्गात्राण ३.	३।७।१५४	जनपद १.	३।१।२१
छिद्रित १. २. ३.		जङ्गापद १.	३।१।५२	" १.	८।१।२३
	५।४।१११	जङ्गाल १. २. ३.		जनयितृ १.	४।४।२९
छिन्न ३.	३।८।१४२		३।७।१५०	जनयित्री २.	४।४।२६
" १. २. ३.	५।४।१०२	जटा २.	३।३।१२	जनवाद १.	२।४।३४
छिन्नपुच्छक १. २. ३.		" २.	३।३।२०२	जनश्रुति २.	२।४।३९
	३।४।५९	" २.	३।८।१००	जनस १. ४.	३।६।२०७
छिन्नरुहा २.	३।३।१३१	" २.	४।४।१०१	जनार्दन १.	१।१।१०
छेक १.	२।३।५	" २.	५।१।३	जनाश्रय १.	४।३।२८
" १. २. ३.	५।४।२०	जटाझाट १.	१।१।४४	जनि २.	३।१।१८
" १. २. ३.	६।५।३२	जटाटीर १.	१।१।४४	" २.	६।२।१४
छोटिका २.	३।६।२२९	जटायु १.	३।३।५४	जनिमन् ३.	७।१।२७
(चोटिका)		जटिन् १.	३।३।२८	जनी २.	३।३।१२८
ज		जटिल ३.	३।३।२०२	" २.	४।४।३६
जक्षा २.	४।३।१०४	" १. २. ३.	५।४।९	जनुस् ३.	४।४।१८
जक्षित १. २. ३.		जटिला २.	३।३।१९७	जन्तु १.	४।४।१
	५।४।१०८	" २.	३।८।१००	जन्तुधर १.	३।४।३४
जगत् १.	१।२।४८	जटी २.	३।३।२०३	जन्तुफला २.	३।८।६१
" १. २. ३.	५।४।६१	" २.	५।१।५८	जन्मन् ३.	४।४।१८
जगती २.	७।२।९	जटुल १.	४।४।९७	जन्य १. २. ३.	६।५।३२
जगत्क्षय १.	२।१।९४	जठर ३.	४।४।६७	जन्या २.	३।८।८९
जगत्प्राण १.	१।२।४७	जठरोत्सव १.	३।६।६२	जन्त्यु १.	४।४।१
जगल १.	३।९।५१	जड १.	५।३।६	जपा २.	३।३।१९५

[जपापुष्प]

जपापुष्प ३.	३।८।१६७
जम्पति १ द्वि.	४।४।४८
जम्बाल १.	३।८।२६
” १.	७।१।२६
जम्बीर १.	३।३।३५
” १.	३।३।२०
जम्बु ३.	३।३।२२
जम्बुक १.	७।१।२६
जम्बुल १.	३।३।२२
जम्बू २.	३।३।२२
” २.	३।३।२२
जम्बूरार्त १.	३।७।१६१
जम्बूट १.	३।३।१४
जम्बूद्वीप १.	३।१।१०
जम्बूलमालिका २.	३।६।५०
जम्भ १.	४।४।८९
जम्भक १.	३।३।३५
” १.	३।५।८५
जम्भरिपु १.	१।२।४
जम्भल १.	३।३।३५
जम्भीर १.	३।३।३५
जय १.	१।२।६
” १.	१।२।८
” १.	३।३।८५
” १.	३।७।२०९
” १.	३।८।३६
” १.	८।९।१२
जयदत्त १.	१।२।८
जयन्त १.	१।२।८
” १.	२।१।२६
जयन्ती २.	१।२।९
” २.	२।१।७८
” २.	३।३।९६
जयन्तीपुर ३.	४।३।८
जयवाहिनी ३.	१।२।११
जया २.	३।३।८९
” २.	३।३।१९७
” २.	३।८।८३
जयिन् १. २. ३.	३।७।१४७
जयोदाहरण ३.	२।४।३६
(जनोदाहरण)	

शब्दानुक्रमणिका

जय्य १. २. ३.	३।७।१४८
जरठ १. २. ३.	७।४।२
जरत् १. २. ३.	५।४।३
जरत्कार १.	३।६।१५६
जरद्गव १.	३।४।५५
जरन्त १.	३।४।९
जरा २.	४।४।५४
जराभीरु १.	१।१।२९
जरायु १.	४।४।१८
” १. ३.	७।५।३९
जरायुज १. २. ३.	४।४।२
जरुर्द १.	३।७।९७
जर्जर १.	३।९।२९
” १.	५।३।४१
जर्ण १.	२।१।२७
” १.	३।३।५
जर्तिल १.	३।८।३९
जल ३.	४।२।२
” १. २. ३.	५।४।१४
जलक १.	३।४।३३
जलकण्टक १.	४।२।४८
जलकरिन् १.	४।१।६०
जलकाक १.	२।३।११
जलकोलि २.	३।३।८९
जलचर १.	२।३।४१
जलजन्तु १.	४।१।४०
जलजम्बुक २.	३।३।१०३
जलजा २.	३।८।५८
जलतस्कर १.	२।१।१२
जलद १.	२।२।१
जलदा २.	२।२।४
जलद्रोणि २.	४।३।६१
जलनर १.	४।१।६०
जलनिधि १.	४।२।११
जलनीली २.	४।२।४९
जलपालिका २.	२।२।४
जलपिप्पिक १.	४।१।४१
जलप्रिय १.	३।४।५
जलबृंहण ३.	४।२।३०
जलभूषण १.	१।२।४६
जलमार्जस् १.	४।१।५४

[जागर]

जलमुच १.	२।२।१
जलमुस्त ३.	३।३।२०१
जलरङ्ग १.	२।३।११
जलराशि १.	४।२।१०
जललम्बिका २.	३।३।१९८
जलवालक १.	३।२।३
जलव्याल १.	४।१।१९
जलशीनक १.	५।४।८
जलशूर १.	४।२।४९
जलसम्भवा २.	३।४।४३
जलाचार १. २. ३.	३।६।१३१
जलात्मन् १.	३।४।८
जलाधार १.	४।२।५
जलालोका २.	४।१।५८
जलाशय १.	३।३।२३१
” १.	४।२।५
जलाश्व १.	४।१।६०
जलाहार १. २. ३.	३।६।१३५
जलक १. २. ३.	८।९।२६
जलका २.	४।१।५८
जलेशय १.	८।५।८
जलोच्छ्वास १.	४।२।३१
जलोद्गम १.	४।२।८
जलोलक १.	५।३।४१
जलौकस् १ ब.	४।१।५८
जलपाक १. २. ३.	५।४।४६
जल्ल १.	३।५।५४
जव १.	१।२।५५
” १. २. ३.	३।७।१५०
” १.	५।२।३१
जवन १. २. ३.	३।७।१५०
” ३	५।२।३१
जविन् १.	३।४।१६
” १. २. ३.	३।७।१५०
जसु १.	५।३।१
जसुरि १.	७।१।२५
जागर १. २. ३.	३।६।१९६

[जागर]

वैजयन्तीकोषः

[जीर्णक]

जागर १.	३७१५३	जानुभञ्जिनी २.	३७५२	जालिका २.	३७१५३
जागरण ३.	३६१९६	जानुमात्र १. २. ३.		जालिन् १.	३९१४२
जागरित ३.	३६१९६		४४८२	जालिनी २.	३८१७
जागरितृ १. २. ३.		जानुमात्री २.	३७५२	" २.	४३२३
	५४४४	जाग्राल १. ३.	३९२९	" २.	४४१०१
जागरूक १. २. ३.		जामदग्न्य १.	११२०	जाली २.	३३१५९
	५४४४	जामातृ १.	४४३८	जाल्म १. २. ३.	६४६
जागर्या २.	३६१९६	" १.	७१२६	जावक ३.	४३१५४
जागृवि १.	१२१८	जामि २.	६२१४	जाहक १.	३४७२
जाघनी २.	४४५८	जामेय १.	४४४१	जाह्वी २.	४२२४
जाङ्गल १. २. ३.	२४२०	जाम्यव ३.	३३२२	जिघत्सा २.	३६१८२
" १ व.	३११४०	जाम्यूनद ३.	३२२०	जिघत्सु १. २. ३.	५४३६
" १. २. ३.	३११४५	जाया २.	४४३४	जिघांसु १.	३७४१
" ३.	३८१०७	जायाजीव १.	३९६२	जिङ्गी २.	३३१३५
जाङ्गलिक १.	४१२५	जायापति १ द्वि.	४४४८	" २.	३३१६०
जाटलि २.	८९२६	जायु १.	४४१४१	जित १. २. ३.	३७१४८
जाढ्य १.	३८१४४	जार ३.	४२४२	जितकाशिन् १. २. ३.	
जात ३.	५११३	" १.	४४३८		३४२१८
जातरूप ३.	३२१८	जारण ३.	३८१२६	जितरण १. २. ३.	
जातवेदस् १.	१२१४	जारद्रव ३.	२११४९		३७२१८
जातारणि १.	३६१७२	जारद्रवी २.	२११४७	जित्वर १. २. ३.	
जाति २.	३३२३	जारवायु १.	१२१५४		३७१४७
" २	३३१८२	जारी २.	१११५९	जिन १.	१११३३
" २	३५१११	" २.	३६४८	" १.	१११३५
" २	६२१४	जाल ३.	३११३	जिष्णु १.	१२१४
जातिकोश ३.	३८१०६	" ३.	३३१९	" १. २. ३.	
जातु ४.	८८७	" १.	३५३३		३७१४७
जातोक्ष १.	३४५४	" ३.	३९४३	जिह्वा १.	४११५
जात्य १. २. ३.	५४६१	" ३.	६३१९	" १. २. ३.	६५३२
" १. २. ३.	५४६४	जालक ३.	३३१९	जिह्वा २.	१२२९
" १.	६४७	" १.	३८३९	" २.	४४९०
जानकीकान्त १.	११२०	" ३.	५१३	" २.	६२१५
जानु १. २.	४४५९	जालकिनी २.	३४६५	जिह्वापान १.	३४७०
जानुक १. २. ३.		जालन १.	५३३९	जिह्वास्वाद १.	४३१०३
	३६१३३	जालन्धर १ व.	३१२६	जीन १. २. ३.	५४३
जानुदध्न १. २. ३.		जालपाद १.	२३१२	जीमूत १.	७१२६
	४४८२	जालपादक १.	२३१६	जीरक १.	३८८३
जानुद्वयस १. २. ३.		जालभूषण १.	३५३६	जीरण १.	३८८३
	४४८२	जालिक १.	३९३८	जीर्ण १. २. ३.	५४३
जानुनिकृञ्चन ३.		" १.	३१३४	" १.	६५३४
	३६२२२	" १. २. ३.	५४२३	जीर्णक ३.	३३२०५

[जीणि]

जीणि २.	४१४५४
जील ३.	६३१५०
जीव १.	३६६१६१
” १. २. ३.	३७२२०
” १.	३७२२०
” १.	४१४१
” १. २. ३.	६५३३
जीवक १. २. ३.	५४११६
” १. २. ३.	७५४४०
जीवजीव १.	२३३४०
जीवत १. २. ३.	३७२२०
जीवतोका २.	४१४१९
जीवथ १.	४१५५०
जीवधन ३.	३४६१
जीवन ३.	३८११
” ३.	४२२
” ३.	४३१७५
जीवनी २.	११११६
” २.	३३१४३
जीवनीय ३.	३८१४६
” ३.	४२२
जीवनीया २.	३३११२
” २.	३३१४३
जीवन्ती २.	३३८४
” २.	३३१३२
” २.	३३१४०
” २.	३३१४३
जीवपति २.	४१४१४
जीवयोधिनी २.	३३१४५
जीवलोक १.	३६२०६
जीववृत्ति २.	३८१४
जीवशाक १.	३३१५०
जीवसू २.	४१४१९
जीवा २.	३३१४३
” २.	३७१८८
जीवातु १.	३७२२१
जीवान्तक १.	३९३७
जीविका २.	३८११
जीवित ३.	३७२२०
जीवितकाल १.	३७२२१
जीवितागद १.	३७२२१

शब्दानुक्रमिका

जीवितेश १. २. ३.	८५१८
जुगुप्सन ३.	३९१७६
जुगुप्सा २.	२४३३
” २.	३६१९३
” २.	७२१८
” २.	८९१४
जुहुराण १.	१२११९
जुहू २.	३६११००
जृति २.	५२३१
जूर्ण २.	३३२३०
जूर्णद्वय १.	३८१५७
जूर्ण २.	६१२४
जृम्भ १. २. ३.	८९३८
जृम्भण १. २. ३.	३९१८८
जृम्भा २.	३९१८८
” २.	८९३८
जृम्भिका २.	३९१८८
जृम्भित १. २. ३.	७५४४०
जृत् १. २. ३.	३७१४८
जेमन ३.	४३१०२
जेय १. २. ३.	३७१४८
जेन्र १. २. ३.	३७१२८
” १. २. ३.	३७१४८
जेन्नी २.	३३१३३
जैन १. २. ३.	५४११६
जैवातुक १. २. ३.	८५१९
जोङ्गक ३.	३७१०७
जोटिङ्ग १.	१११४५
जोड ३.	३३२१८
जोणाल १.	५३१९
जोनल १.	३८१५६
जोन्नला २.	३८१५७
जोषम् ४.	८७२०
ज्ञ १. २. ३.	८५३९
” १.	८९१४७
ज्ञपित १. २. ३.	५४११३
ज्ञप्त १. २. ३.	५४११३
ज्ञप्ति २.	३६१६४
” २.	३६१६४
ज्ञात १. २. ३.	५४१०१

[ज्योतिष्मती]

ज्ञाति २.	४१४५०
ज्ञान ३.	१११४७
” ३.	३६१६४
ज्ञानिन् १.	३७१५०
ज्या २.	३७१७८
” २.	८२१७७
ज्यानि २.	४१४५४
ज्यानिवारण ३.	३७१५५
ज्यायस् १. २. ३.	५४१४
” १. २. ३.	६४१७
ज्येष्ठ १.	२३३६
” ३.	३२२८
” ३.	३२३१
” ३.	३३२०२
” ३.	३८१४५
” १.	४४३१
” १. २. ३.	६४१७
ज्येष्ठग्री २.	२११४१
ज्येष्ठतात १.	४४३२
ज्येष्ठश्वश्रू २.	४४२८
ज्येष्ठा २.	१११४९
” २.	१२१४२
” २.	१३१४१
” २.	४१३३०
” २.	४४२७
” २.	४४७४
” २.	६२१५
ज्येष्ठामूलीय १.	२११८४
ज्येष्ठाम्बु ३.	४३६७
ज्यैष्ठ १.	२११८४
ज्यैष्ठी २.	२११७५
ज्योकि ४.	८८६
ज्योतिरानृण्य ३.	३६८७
ज्योतिरिङ्गण १.	२३३७
ज्योतिश्शास्त्र ३.	२११५०
ज्योतिषामयन ३.	२११५०
” ३.	३६३३
ज्योतिषामपति १.	८१५३
ज्योतिष्मती २.	३११३९
” २.	३८६०

ज्योतिष्टोम १.	३१६८६	क्षिल्लिका २.	४११९६	ढारिका २.	४११३३
ज्योतिस् ३.	६३११०	क्षिल्ली २.	४३१७७	ढौण्डक १. २. ३.	४११३३
ज्योत्स्ना २.	२११२८	क्षीरिका २.	२३१४८	त	
ज्योत्स्नी २.	३३११६०	ट		तक्रोल ३.	३१८१०५
ज्यौतिष १.	२११८१	टगर १. २. ३.	७५१४१	तक्र ३.	३१८१४९
ज्यौतिषिक १.	३१७२५	टङ्क १.	३१८१३१	तक्रज ३.	३१८१३६
ज्यौत्स्नी २.	२११५८	" १.	३१९२२	तक्रपिण्ड ३.	३१८१४४
ज्वल १.	५३१७	" १.	६११२४	तक्रवासन १.	३३१३६
ज्वलन १.	२१११५	टङ्कण ३.	३१८१३०	तच्चक १.	७११२८
ज्वलित १. २. ३.	८१११४	टट्टनी २.	४११३०	तच्चन् १.	३५१३९
ज्वाल १.	११२२९	टट्टर १.	२११११	" १.	३५१८६
ज्वाला २.	११२२९	टट्टरी २.	३१९१३५	" १.	३११३४
भ		टर्क १ व.	३११२७	" १	८१११२
झञ्झानिल १.	११२५२	टिट्ठिम १.	२३३३४	तच्चशिला २.	४३१९
झटप्प १.	५१२१९	टिट्ठिभासन ३.	३१६१२५	तगर १.	३३११९४
झटा २.	३३३१७७	ड		तङ्क १. ३.	३१६१८५
झटिति ४.	८१८१	डक्कन ३.	२११८	तट १.	३१२६
झण्डाली २.	३३३१५९	डङ्क १.	३११५३	" १. २. ३.	४११३२
झम्प १.	५१२१९	डमर १.	३१६१९०	" १. २. ३.	८११३८
झम्पटि २.	४११९९	डमरु १.	३१९१३५	तटाक १. ३.	४१२६
झर १.	३१२१७	डयन ३.	२३३५०	तटित् २.	२१२४
झरसी २.	३३३१५७	डहु १.	३३३७५	तटित्पति १.	२१२२
झरा २.	३३३१५७	डिण्डिक १.	३१५१५	तटित्वत् १.	२१२१
झरुका २.	३१८२५	डिण्डिम १.	३१९१३५	तटिनी २.	४१२३
झर्झर १.	३१९१३५	डिण्डीर १.	४१२१३	तटी २.	८११३८
झर्झरक १.	२११९२	डिण्डीश १.	१११४५	तण्डुल १.	३१८१७
झलका २.	११२२९	डिम १.	३१९१००	" १.	४३३६६
झल्लरी २.	४११९९	डिम्ब १.	२३३५०	तण्डुला २.	३१८७७
" २.	७१२१९	" १.	३१६१९०	तण्डुलीयक १.	३३३१५०
झप १.	४११४१	" १.	४१११३	तत ३.	३१९११५
" १.	४११५१	" १.	६११२४	" १. २. ३.	५१११०
" १. २.	६११३४	डिम्भ १. २. ३.	५११२	तति २.	८११५
झपा २.	३१८६१	" १. २. ३.	६११७	तत्क्रिय १. २. ३.	५११७३
झपापर १.	३१५१४	डण्डुभ १.	३१९१९	तत्त्व ३.	३१९१२३
झाट १.	३३३१८९	डण्डुर १.	४३३३२	" ३	५१२१
झाण्ड १.	१११४६	डोम्ब १.	२१५४९	तत्त्वधी २.	३१६१६५
झिङ्गिल्ल १.	३१९१२४	ढ		तत्र ४.	३१६२१
झिणिका २.	४११२७	ढक्का २.	२१९१३४	तत्रभवत् १. २. ३.	८११४६
झिण्टी २.	३३३१९०	ढक्कारी २.	३१९१२८	तथा ४.	८१७२१
झिण्टीकान्त १.	१११४४	ढङ्क ३.	२३३६९	" ४.	८१८२०
झिल्लिका २.	२३३४८	ढण्डुक १. २. ३.	५११२३		

तथागत]

शब्दानुक्रमिका

[तर्क

तथागत १.	१११३३	तन्त्री २.	६१२१६	तमोनुद् १.	७११२८
तथार्थवाच् १.	५३३३	तन्दन ३.	२१४५	तमोनुद् १.	८११२३
तथ्य ३.	५३३३	तन्दू २.	६१२१६	तमोपह १.	८११२३
तद् १. २. ३.	५४१२०	तन्द्र १.	४११५२	तमोरिपु १.	२१११४
” ४.	८७१११	तन्द्रा २.	३६११७८	तम्पा २.	३१४४२
तदा ४.	८८१५	” २.	३६११९७	तम्बा २.	२१४४२
तदानीस् ४.	८८१५	” २.	६१२१५	तम्बिकी २.	३११११३
तनय १.	४३३३९	तन्मात्र ३.	३६१२०५	तरल्लु १.	३१४४४
तनु १.	३३३८५	तन्वी २.	३८१७७	तरङ्ग १.	३३३१६२
” २.	४४१५२	तपन १.	२११११	” १.	४१११४
” २.	४४१०३	” १.	३६११५१	तरङ्गिणी २.	३३३२१२
” १. २. ३.	५४१५	” १.	७११२९	” २.	४१२२३
” १. २. ३.	५४१२५	तपनीय ३.	३२११८	तरण ३.	५१२१२
” १. २. ३.	६१३३५	तपस् ३.	१११४७	तरणा २.	४३३८०
तनुकृवर ३.	३७१३२	” १.	२११८२	तरणि १. २.	७१४४२
तनुत्र ३.	३७१५२	” ३.	३६११३६	तरणी २.	४१२१५
तनुस् ३.	६३११२	” ३.	३६१२०७	तरण्डक १.	४१२१६
तनूकृत १. २. ३.		” ३.	३६११०९	तरत् १.	८११११
	५४११११	तपस १.	२११२६	तरत्सम १.	११२२१
तनूनपात् १.	११२१४	तपस्य १.	२११८३	तरपण्य ३.	४१२१८
तनूरुह ३.	२३३४९	तपस्विन् १. २. ३.		तरल ३.	४३३६२
” ३.	४४१९७	” १. २. ३.	३६११२६	” १.	४३३१४३
तन्तु १.	३३३८७	” १. २. ३.	८१२२८	” १.	५३३१५
” १.	३११११	तपस्विनी २.	३८११००	” १.	७१४४४
” १.	४१११३	तपिनी २.	४१२२७	तरलित १. २. ३.	
तन्तुक १.	४११५२	तस १.	५३३८		५४१०३
तन्तुनाग १.	४११५२	” १. २. ३.	५४१९८	तरवारि २.	३७१६२
तन्तुनाभ १.	४११३४	तसकृच्छ्र ३.	३६११३९	तरस् ३.	१२१५५
तन्तुवाय १.	३१५९७	तमङ्गक १.	४३३३२	” ३.	३७२१०
” १.	३१९८	तमत १.	४३३६३	” ३.	६३११३
” १.	४११३४	तमरक ३.	३२३३२	तरस ३.	४४१०६
तन्तुसन्तत १. २. ३.		तमस् ३.	२११६२	तरि १.	११२२८
	५४१११५	” ३.	३६११६२	” २.	४१२१५
तन्त्र ३.	३७११४	” ३.	३६११६२	” २.	४३३६३
” १.	४११५२	” १. २.	६१३३५	तरीष १.	३६११६७
” ३.	४४११४१	तमस्विनी २.	२११५७	तरु १.	३३३५
” ३.	६३३११	तमाल १. ३.	३३३८७	तरुण १.	३३३६५
तन्त्रक १. २. ३.		तमालपत्र ३.	४३३१४८	” १. २. ३.	५४३३
	४३३१२०	तमिन्ना २.	२११५७	तरुणी २.	३३३१८८
तन्त्रशाला २.	४३३२२	” २.	७१४४३	तर्क १. ३.	३६११७६
तन्त्री २.	३११३०	तमी २.	२११५७	” १.	६१२१५

तर्कविद्या]

तर्कविद्या २.	३१६।३२
तर्कारी २.	३१६।९६
(तर्कारी)	
तर्कु १.	३१९।९
तर्जनी २.	४१४।७३
तर्ङ्ग २.	४३१।६३
तर्णक १.	३१४।५१
तर्पण १.	४१२।३३
” ३.	४३१।६९
” ३.	७३१।१६
तर्मन् ३.	३१६।५२
तर्प १.	८१२।२०
तर्पित १. २. ३.	५१४।३७
तर्पु १.	२११।१३
तर्हि ४.	८१८।२०
” ४	८१८।५
तल १.	३१३।२१६
” १. २. ३.	३१७।१५५
” १.	३१९।१२२
” ३.	४११।१
” १.	४१४।७३
” १.	४१४।७७
” ३.	५११।५०
” ३.	५११।६३
” १.	५३१।६
” १. ३.	६१५।३५
तलपोट १.	३१३।१०६
तलप्रोह १.	३१७।७८
तलयन्त्र ३.	३१७।५१
तलसारक ३.	३१७।११४
तला २.	३१७।१५५
तलिका २.	३१७।११४
तलिन १. २. ३.	५१४।१२५
” १. २. ३.	७१४।१२
तलिनी २.	४३१।३३
तलिम ३.	७३१।१६
तलुनी २.	४१४।८
तलेक्षण १.	३१४।५
तल्प ३.	६३१।१२
तल्पगृह ३.	४३१।२०

वैजयन्तीकोपः

तल्लज १.	८१९।४२
तविष १.	७१५।४२
तष्ट १. २. ३.	६११।१११
तत्कर १.	३१९।५६
” १.	८१६।७
तस्थिवस् १. २. ३.	५१४।६२
ताटिक १.	३१३।१५२
ताडङ्क १.	४३१।३३४
ताडन ३.	५११।३६
ताडी २.	३१३।२२४
ताण्डव १. ३.	३१९।७३
तात १.	४१४।२९
तातगु १. २. ३.	७१५।४३
तातल १. २. ३.	७१५।४४
तान १. ३.	३१९।१११
तानित ३.	७३१।१६
तान्त १.	२११।८०
तापस १. २.	३१६।१२४
” १. २. ३.	३१६।१२६
तापिच्छ १.	३१३।८७
तापी २.	४१२।२७
तामरस ३.	४१२।२९
तामसी २.	२११।६०
” २.	३१६।१९७
तामिस्त्र ३.	२११।६२
ताम्बूल ३.	४३१।१०६
ताम्बूलकरङ्गिका २.	३१७।३८
ताम्बूलवल्लिका २.	८१५।२८
ताम्बूली २.	८१५।२८
ताम्र ३.	३१२।२४
” १. २. ३.	६१५।३७
ताम्रकर्प १.	५११।५२
ताम्रकुट्टक १.	३१९।१५
ताम्रचूड १.	२१३।१३
ताम्रजीव १.	३१५।३९
ताम्रधारण ३.	५११।५९
ताम्रपर्णी २.	२११।९
” २.	४१२।२९
ताम्रपाकिन् १.	३१३।५९

[तालपत्रिका

ताम्रमूला २.	३१३।१२५
ताम्रवृम्त १.	३१८।४७
ताम्रसार ३.	३१८।११३
ताम्रा २.	३१३।१७९
ताम्राक्ष १.	२१३।२६
तार १. २. ३.	२१४।१३
” १.	३१६।२३३
” १.	५३१।२३
” १. २. ३.	६१५।३६
तारक ३.	३१६।२३३
” १. २. ३.	४१४।९४
” १. २. ३.	७१५।४४
तारकारि १.	१११।५४
तारजीवन ३.	३१२।१९
तारण १.	२११।८०
तारणी २.	३१८।१४
तारा २.	२११।३८
तारावट १.	३१३।१९४
तारावर्त्मन् ३.	२११।२
तारुण्य ३.	४१४।५३
ताचर्य १.	११३।१९
” १.	११३।३७
” १.	३१७।९१
” ३.	३१८।१२५
ताचर्यशैल ३.	३१२।४१
ताचर्यासन ३.	३१६।२२८
तार्ण १.	११२।२१
” ४.	३११।२०
तार्णसौम ३.	३११।२०
ताल १.	३१२।१४
” ३.	३१३।२१६
” १.	३१७।१८५
” १.	३१९।१२३
” १.	४१४।७७
” १.	४१४।८०
तालक १.	४११।२७
” ३.	४३१।४९
” ३.	४३१।१३४
” १.	५३१।८
तालपत्र ३.	४३१।१३४
तालपत्रिका २.	३१९।१२४

तालपर्वी]

शब्दानुक्रमिका

[उक्तता

तालपर्वी २.	३८१९८	तिक्तीक १.	३३१७७	तिलाट १.	३८११४८
तालमूली २.	३३१२०३	तिथि १. २.	२११६९	(किलाट)	
तालवृन्त ३.	४३११५९	तिन्तुडीक १.	३३१८१	तिलिस्स १.	४१११४
तालाङ्क १.	१११२३	तिन्तुणी २.	३३१८१	तिलिस्सक १.	३३१४४
” १ व.	१३११३	तिन्तुणीक ३.	३८११३२	तिल्य १. २. ३.	३८१२०
ताली २.	३३१२०३	तिन्त्रिडीक ३.	८३१६	तिप्य १.	३३१७५
” २.	३३१२२४	तिन्दुक १.	३३१५१	” १.	६११२५
” २.	३९१२२४	तिमि १.	४११४१	तिप्या २.	३३१७७
” २.	४३१४९	तिमित १. २. ३.		तीचण ३.	३२१३४
तालु २.	३३११७१		५१११०७	” १.	३३१११९
” ३.	४३१८९	तिमिर ३.	२११६४	” १.	३३१२२१
तालुजिह्वा १.	४११५३	तिमिङ्गिल १.	४११५१	” १. २. ३.	३७२८
तावत् ४.	८७२८	तिमिला २.	३९११३५	” १.	५३१९
तावतिथ १. २. ३.		तिमिषा १.	३३१४६	” १.	५३१२६
	५११२०	तिमिषाशु १.	४११५१	” १. २. ३.	६५३७
तावत्कृति २.	५११३६	तिरश्चीन १. २. ३.		तीचणगन्ध १.	३३१५६
तावत्कृत्वः(-सु) ४.	५११३६		५११९१	” १.	३३१११९
ताविष १. २.	७५१४२	तिरस् ४.	८७२१	तीचणच १.	५३१२९
तिक्त १.	३३१५३	तिरस्करिणी २.	४३११२४	तीचणतण्डुला २.	३८१७७
” १.	३३११२८	तिरस्कार १.	३६१७७	तीचणधूमा २.	३३१९१
” १.	३३११६६	तिरित १. २. ३.	३८१११	तीचणरस १.	३८१२७
” १.	५३१२६	तिरीट १.	३३१५२	तीचणा २.	३३१९७
” १.	५३१७७	तिरीटिका २.	३३१८७	तीचणाग्र ३.	३८१६५
तिक्तक १.	५३१५५	तिरोधान ३.	२११६४	तीचणार्जक १.	३८१२२१
तिक्तकापाय १.	५३१३१	तिर्यग्गामिन् १.	२११३४	तीर ३.	४२१३२
तिक्तच्छदन १.	३३११६३	तिर्यच् ४.	५११९१	तीरतरङ्गिका २.	३९१९१
तिक्तपदुस्वादुकपाय १.		तिल १.	३८१३९	तीरभुक्ति २.	३११३०
	५३१४०	तिलक १.	३३१६१	तीरित १. २. ३.	२४११९
तिक्तपटोलिका २.		” १.	३३१६९	तीरी २.	३७१८३
	३३११६१	” ३.	३८१२५	तीर्थ १. ३.	४२१२०
तिक्तवल्का २.	३३१११४	” १. ३.	४३११४८	” ३.	४३१७५
तिक्तशाक १.	३३१४१	” १.	४३१९७	” ३.	६३११३
तिक्तसार १.	३३१६३	” ३.	४३११२	तीर्थवाह १.	४३१९८
तिक्तिक १.	५३१३०	” १. ३.	८११३०	तीवर १.	३५११२
तिग्म १.	५३१७	तिलककण्टक १.	२३११८	तीव्र १. २. ३.	५३१३२
” १.	६५३७	तिलकालक १.	४३१९७	तीव्रकोपा २.	४३११०
तितउ १. ३.	४३१६५	तिलखल १ व.	३११३९	तु ४.	८७१४
तितिच्चा २.	३३११८४	तिलपर्णी २.	३८११५	” ४.	८७१११
तितिष्ठ १. २. ३.	५३१३३	तिलपिञ्ज १.	३८१३९	तुक १.	३५१७५
तित्तिरि १.	२३१३५	तिलपुष्प ३.	३८१४०	तुङ्ग १. २. ३.	५३१८१
” १.	३११५१	तिलपेज १.	३८१३९	तुङ्गता २.	५३१२४

तुङ्गभद्रा]

वैजयन्तीकोषः

[वृष

तुङ्गभद्रा २.	४२२२८	तुल्य १.	३१८१११	तूलफला २.	३३३९१
तुच्छ १. २. ३.	५४८७	तुर्य १. २. ३.	५१२२१	तूलिका २.	३३३२३५
” १. २. ३.	६५३६	तुर्यकालभुज् १.	३६१२५	” २.	३१९१३
तुटि २.	२१५२	तुलसी २.	३३११९	तूलिनी २.	३३३९१
” २	६२१६	तुला २.	५१६०	तूली २.	६२१७
तुण्ड ३.	४४८६	” २.	६२१७	तूणीकाम् ४.	८८१५
तुण्डि १. २. ३.	५४६	” २.	८६१४	तूणीम् ४.	८८१५
तुण्डिकेरी २.	३३९९	तुलाकोटि १.	४३१४५	तूङ्गी २.	३३११२
” २.	३३१४७	तुलापुरुष १.	३६१४३	तृण ३.	३३१८४
तुण्डिन् १.	२३४	” १.	३६१४३	” ३.	३३२२५
तुण्डिभ १. २. ३.		तुलिका २.	३९६	” २.	३३२३३
	४४१४६	तुल्य १. २. ३.	५४१२१	” २.	३३२३५
तुण्डिल १. २. ३.		तुल्यविक्रम १.	३४१	तृणकोल १.	३८५९
	४४१४६	तुवर १.	३३१५२	तृणजलायुका २.	
तुत्थ ३.	३२४३	” १.	५३२७		४१५९
तुत्वा २.	३३११०	” १.	५३४२	तृणता २.	७२१०
” २.	३८८७	तुवरी २.	३२१७	तृणद्रुम १.	३३२२४
तुत्थाञ्जन ३.	३२४२	” २.	३८४८	तृणधान्यक ३.	३८५८
तुन्द ३.	४४६७	तुप १.	३३१७६	तृणध्वज १.	३३२१४
तुन्दपरिमृज १. २. ३.		” १.	४३६६	तृणपञ्चिका २.	३८६४
	५४५५	तुपानल १.	१२२०	तृणराज १.	३३२१६
तुन्दिक १. २. ३.	५४७	तुपाम्बु ३.	४३८३	” १.	३३२२०
तुन्दिन् १. २. ३.	५४७	तुपार १.	२२१९	तृणशय्य १. २. ३.	
तुन्दिल १. २. ३.	५४७	” १.	५३७		३६१३१
तुन्न १. २. ३.	५४११५	तुषित १ व.	१३८	तृणशून्यक ३.	३३१८३
तुन्नवाय १.	३९१११	तुष्ट १.	३३८५	तृणशीणक १.	५३५०
तुमुल १. २. ३.	२४१२	तुष्टि २.	३६१६६	तृणसंवर १.	३४१२
” १. २. ३.	३७२१७	तुहिन ३.	२२१९	तृणसञ्चय १.	३८६५
तुमुलान्नक १.	३३१७६	तूण १.	३७१७८	तृणसिंह १.	३५२
तुम्बा २.	३७१३५	” २. (आण)	३८११०	तृणस्तम्ब १.	३३२३५
तुम्बिका २.	४३१३२	तूणी २.	३७१७८	तृणाटवी २.	३३२
तुम्बी २.	३३१६७	तूणीर १.	३७१७८	तृणेन्धन ३.	३६१९६
तुम्बुक १. २. ३.	२४१६	तूपर ३.	३६१०५	तृण्या २.	५११४
तुम्बुका २.	३३१६८	” १. २. ३.	७४१२	तृतीय १. २. ३.	५११९१
तुरग १.	३७९०	तूवर १.	३४७३	तृतीयाकृत १. २. ३.	
तुरङ्ग १.	३७९०	तूर १.	३९१३७		३८२२
तुरङ्गम १.	३७९०	तूर्ण १. २. ३.	५४१२४	तृतीयाप्रकृति १.	४४३
तुरायण ३.	३६१४४	तूर्य १. २.	३९१३६	तृपत् १.	२१२७
तुराषाह् १.	१२१७	तूल १. २.	३९९	तृपि १.	२१२७
तुरीय १. २. ३.	५१२१	तूलपुष्प १.	३३१९३	वृष १. २. ३.	४३१०५
तुरुष्क १ व.	३१२७	(स्थूलपुष्प)		” १. २. ३.	५४१९९

[वृत्ति]

शब्दानुक्रमिका

[त्रिधात्मन्]

वृत्ति २.	३१६१८८	तोमर १. ३.	३७१६६	त्रास १.	६११२५
„ २.	४३१०५	तोय ३.	४२११	त्रिंशत् २.	५११२६
वृषक १.	३१६१९९	तोयपर्णिका २.	३८१५३	त्रिः (-स्) ४.	८८८३
वृप् २.	८२११९	तोयपिप्पली २.	३३१९७	त्रिक ३.	४४१६६
वृषि २.	३१६१७९	तोयप्रवाह १.	३२११७	„ १. २.	८९१२७
वृषित १. २. ३.	५४१३७	तोयप्रसादन १.	३३१४२	त्रिकुट्ट १.	११११०
वृष्णज् १. २. ३.	५४१३५	तोरण १. ३.	४३१४२	„ १.	३२१२
वृष्णा १.	८२११९	तोरणस्तम्भ १.	३१६५८	त्रिकुट्ट ३.	३८८८०
ते १. २. ३.	८५१३९	तोषणी २.	३३१२१२	त्रिकण्टक १.	३३१९८
तेजन १.	३३१२१५	तौर्यत्रिक ३.	३१९७१	„ १	३३११४१
„ २. ३.	३७१९९१	त्यक्त १. २. ३.	५४१०१	„ १.	३६११६५
तेजनक १.	३३१२२८	त्यक्तभर्तृका २.	३६१४५	„ १.	४२१४७
तेजनी २.	३३१११४	त्यक्तसंवासा १. २. ३.	३६११३	त्रिकल १.	३२१३
तेजस् ३.	१२११९	त्यक्तात्मन् १. २. ३.	३६११३	त्रिकालदर्शिन् १.	३६११५०
„ ३.	६३११४	त्याग १.	३६१११८	त्रिकालदृश् १.	१११३५
तेजस्विन् १.	४४१११०	„ १.	५२१४०	त्रिकुट ३.	३८१११९
तेजित १. २. ३.	३७११९७	त्रपा २.	३६११९७	त्रिकूट १.	३२१२
तेम १.	५२१२९	त्रपु ३.	३२१३०	„ ३.	३६१११०
तेमन ३.	४३१८५	„ ३.	३२१३१	„ ३.	३८१११९
„ ३.	७३११७	„ ३.	६३१३३	त्रिकेतु १.	२३१२५
तेर १.	३३१४२	त्रपुष १. २. ३.	३३११७१	त्रिकोणक १.	४३१३३६
„ ३.	४४१८६	त्रय ३.	५१११६	त्रिखट्व १. २.	८९१३६
तैतुल १ व.	३११२६	त्रयी २.	३६१२६	त्रिखर १.	५३१३४
तैल ३.	३८१३३७	त्रयीतनु १.	२१११३	त्रिगन्ध ३.	४३११५०
तैलपर्णिक ३.	२८१११४	त्रयीपुष १.	३६११	त्रिगर्त १ व.	३११२६
तैलपर्णी २.	८२१६	त्रयोदशी २.	३९१११८	त्रिगुणाकृत १. २. ३.	३८१२२
तैलपायिका २.	२३१४४	त्रस १. २. ३.	५४१६१	त्रिचतुर १. २. ३.	५११२५
तैलिस् १.	५३१३२	त्रसर १.	३९१९	त्रिजातक ३.	४३११५०
तैलिन् १.	३९१२७	„ १.	४३१३२	„ १. २. ३.	८९१३९
तैलिशाला २.	४३१२४	त्रसरेणु २.	२११२३	त्रितत्त्व २. ३.	८९१३६
तैलीन १. २. ३.	३८१२०	„ १. २.	५११४२	त्रितय ३.	५१११६
तैष १.	२११८२	त्रस्त ३.	३६११६८	त्रिदश १.	१११४
तोक ३.	४४१४१	„ १. २. ३.	५४११८	त्रिदिव १.	१११२
तोकम १.	६५१३८	त्रस्तु १. २. ३.	५४११८	„ १.	७११२९
तोक्षार १ व.	३११२५	त्राण १. २. ३.	५४११००	त्रिदिवा २.	३८८८७
तोटक १.	३८१४१	त्रात १. २. ३.	५४११००	त्रिधा ४.	८८१२०
तोदृभी २.	३९११२६	त्रापुष ३.	३२१२३	त्रिधात्मन् १.	१२११५
तोड ३.	३६१५	त्रायन्ती २.	३३११०९	„ १.	७११२९
तोत्र ३.	३७१८२	त्रायमाणा २.	३३११०९		
„ ३.	३८१२९				
तोदन ३.	७३११७				

त्रिपत्नी]

वैजयन्तीकोषः

[दक्षिणाशारत

त्रिपत्नी २.	३१६६६	त्रिसर १. २. ३.	८१९२५	त्वरी २.	३१९८९
त्रिपदी २.	३१७८३	त्रिसरा २.	४३१७९	त्वष्ट १. २. ३.	५११११
त्रिपर्णक १.	३३१२९	त्रिसारा २.	३३१९२	त्वष्टृ १.	१३१७
” ३.	८३१९	त्रिसीत्य १. २. ३.	३८१२२	” १.	३१९३४
त्रिपात्र ३.	८१९८	त्रिसुगन्ध ३.	४३१५०	” १.	६११२५
त्रिपाद १.	३११५२	त्रिस्नेह ३.	४३१९९	त्वाष्ट्र १.	३१६१०८
त्रिपुट १.	३१८४४	त्रिस्त्रोतस् २.	४३१२४	त्वाष्ट्रक १.	३१८४२
त्रिपुटा २.	३३११३७	त्रिहृत् १. २. ३.	३१८२२	त्वाष्ट्री २.	२११२३
” २.	३१८८७	त्रुटि २.	२११५२	त्विप् २.	४३१५०
त्रिपुटी २.	३३११३७	” २.	३१८८७	” २.	८२११८
त्रिपुर १.	३३१७७	” २.	६१११७	त्विपागपति १.	२१११२
त्रिपुरारि १.	१११४३	त्रेता २.	२११९१	त्सर १.	३१७१६८
त्रिफला २.	३१८८२	” २.	३१९६२	दृ	
त्रिमार्गागा २.	४२१२४	” २.	६१११७	दंश १.	२३१४५
त्रिमार्गा २.	४२१२५	त्रेधा ४.	८१८२०	” १.	४१९१०
त्रियामा २.	२११५६	त्रैधस् ४.	८१८२०	दंशन ३.	३१७१५२
त्रियुग ३.	२११९२	त्रैपुर १ व.	३११३६	दंशवन्धन ३.	४११३९
” ३.	८१९८	त्रैवृत ३.	४३१९९	दंशलालिक १.	३१११०
त्रियूह १.	३१७१००	त्रैपुडुभ ३.	८१९१६	दंशित १. २. ३.	३१७१४२
त्रिरसा २.	४३१८९	त्रैहोत्र ३.	३१६९१	दंशी २.	२३१४५
त्रिरेख १.	४११५६	त्रोटि २.	२३१५०	दंष्ट्रा २.	४११८९
त्रिलोकी १.	८१९८	त्र्यश्वा २.	३३११३७	दंष्ट्रिन् १.	६१५४०
त्रिलोचन १.	१११४२	त्र्यूषण ३.	३१८८०	दक्ष ३.	४१२१२
त्रिवर्ग १.	३१६२३५	त्वक्क्षीरा २.	३१८९०	दक्ष १.	२३११३
” १.	७११२८	त्वक्त्र ३.	३१७१५२	” १. २. ३.	५१११९
त्रिवलीक ३.	४११६०	त्वक्पत्र ३.	३१८१०४	” १. २. ३.	५११५४
त्रिविक्रम १.	११११९	त्वक्सार १.	३३१२२५	” १. २. ३.	५११३७
त्रिविक्रमासन १.	३१६२२८	त्वग्गन्ध १.	३३१३६	दक्षकन्या २.	८२१७
त्रिविष्टप ३.	१११११	त्वग्ज ३.	४३१११७	दक्षवाच् १. २. ३.	५११४५
त्रिवीथिका २.	२११४५	त्वग्बल व १.	३१७१८३	दक्षा २.	३११११
त्रिवृत् २.	३३११३७	त्वच् २.	३३११३	दक्षाध्वराराति १.	१११४१
” १. २. ३.	३१९१०	” २.	४११०३	दक्षिण १. २. ३.	५११२०
त्रिवृत १. २. ३.	३१९१०	” २.	८२१२०	” १. २. ३.	७११४५
त्रिशङ्कु १.	७११२९	” २.	८११२२	दक्षिणस्थ १.	३१७१३८
त्रिशिरस् १.	११२१४४	त्वच १. २.	३३११३	दक्षिणाधिप १.	११२३५
” १.	११२१५६	” ३.	३१८१०४	दक्षिणानल १.	११२३३
त्रिष्कृष्ट १. २. ३.	३१८२३	त्वचिसार १.	३३१२१५	दक्षिणापथ १.	३११३२
त्रिष्टुभ १.	३१८४१	त्वरा १.	३१९८९	दक्षिणायन ३.	२११८९
त्रिष्टुभा २.	३१८४२	त्वरित १. २. ३.	५११२४	दक्षिणाशारत १.	३३११५२
त्रिसन्ध्य ३.	२११६७				

दक्षिणैर्मन्]

शब्दानुक्रमणिका

[दलकूर्चिका

दक्षिणैर्मन् १.	३।१।४०	दधिमण्डक ३.	३।८।१४४	दम्भ १.	३।६।१९५
दक्षिणैस्थ १.	१।५।१३८	दधिसुख १.	३।४।४०	दम्भोलि १.	१।२।१३
दग्धान्न ३.	४।३।७६	दधिसक्तु १.	४।३।७१	दम्य १.	३।४।५४
दण्ड १.	३।६।१८	दध्यसल १.	४।३।९७	दया २.	३।६।१९२
" १.	३।७।४६	दध्यज्य ३.	३।६।९९	दयालु १. २. ३.	५।४।३९
" १.	६।५।३८	दध्याली २.	३।३।१४३	दयित १. २. ३.	५।४।७०
दण्डक ३.	२।४।४२	दन्त १.	४।४।८८	दर १. ३.	६।५।३९
" १ व.	३।१।३३	" १.	६।१।२६	" १. २. ३.	८।९।३७
दण्डधर १.	१।२।३३	दन्तच्छद १.	४।४।८७	दरुण १.	२।३।२५
दण्डनीति २.	३।६।३०	" १.	८।९।१३	दरुथ १.	७।१।३१
दण्डपद्मासन १.	३।६।२२८	दन्तधावन १.	३।३।६३	दरुद २.	६।२।१८
दण्डपाल १.	३।७।२१	दन्तबीज १.	४।२।४७	दरिणि १. २.	३।८।२४
दण्डपाशिक १.	३।७।२०	दन्तभाग १.	३।७।८१	दरित १. २. ३.	५।४।१८
दण्डवत् १. २. ३.		दन्तवस्त्र ३.	४।४।८८	दरिद्र १. २. ३.	५।४।५९
	५।४।११८	दन्तवेष्ट १.	३।७।११०	दरी २.	३।२।६
दण्डाजिन ३.	३।६।१९५	दन्तशठ १.	३।३।३२	" २.	८।९।३४
दण्डासन ३.	३।६।२२६	" १.	३।३।३५	दर्दर १.	३।७।७४
" १.	३।७।१८१	" १.	३।३।३७	" १.	३।९।१२४
दण्डाहत ३.	३।८।१४८	" १. २. ३.	८।५।९	दर्दुरीक १.	८।१।२४
दण्डिक १.	३।७।१८१	दन्तशठा २.	३।३।१६३	दर्पक १.	१।१।२७
" १. २. ३.		दन्ताली २.	३।७।११२	दर्पण १.	४।३।१६२
	५।४।११८	दन्तावल १.	३।७।६१	दर्भ १.	३।३।२२७
दण्डिका २.	३।९।१२९	दन्तिका २.	४।३।५३	" १.	३।३।२२७
दण्डिन् १.	२।३।२५	दन्तिन् १.	३।७।६०	" १.	३।३।२२९
" १. २. ३.		दन्तुर १. २. ३.	५।४।९	दर्व १.	१।३।३
	५।४।११८	दन्तोल्लखलक १. २. ३.	३।६।१३२	दर्वि १.	२।३।१०
" १.	६।१।२६	दन्त्य १. २. ३.	५।४।११७	" २.	४।३।१६३
दण्डोत्पल १.	३।३।१०६	दन्दशूक १.	४।१।४	दर्वितुण्ड १.	२।३।१०
दत्तात्रेय १.	१।१।३१	" १.	४।१।४०	दर्विदा २.	२।३।१०
दद २.	४।४।१२५	दध्र १. २. ३.	५।४।१३६	दर्वी २.	३।६।१०१
ददुम १.	३।३।१५८	दम १.	३।७।४६	दर्वीकर १.	४।१।७
ददुज ३.	३।८।१३५	" १.	५।२।२७	" १.	४।१।८
ददुण १. २. ३.	४।४।१४५	दमण्डक १.	३।५।९	" १.	४।१।१०
ददुनाशिनी २.	३।३।१०३	दमथ १.	५।२।२७	" १.	४।१।११
ददुमत् १.	४।४।१४५	दमनक ३.	३।३।१२३	दर्श १.	२।१।७०
दधि ३.	३।८।१०९	दमयन्तिका २.	३।६।१८	दर्शक १.	३।७।२४
" ३.	३।८।१३९	दमित १. २. ३.		दर्शन ३.	३।७।१७
दधिलीर ३.	३।६।९९		५।४।११४	दर्शनी २.	४।३।१६
दधित्य १.	३।३।३२	दमुनस् १.	१।२।१८	दल ३.	३।३।१६
दधिफल १.	३।३।३२	दम्पति १ द्वि.	४।४।४८	" १.	६।५।३९
दधिवस ३.	३।८।१४२			दलकूर्चिका २.	३।३।२०८

दलत् १.	४११४६	दाक्षिणात्य १.	३३३२२०	दारु ३.	३३३७१
दली २.	८११७	दाक्षी २.	३३३४३	दारुक १.	१११२६
दव १.	११२२१	दाक्षीपुत्र १.	३३३१५४	दारुकण्टक ३.	२१२२७
” १.	६११२७	दाडिम १. २. ३.	३३३७२	दारुण १. २. ३.	३११७९
दवधु १.	४४१२२	” १. २. ३.	८११३८	” ३.	५३३५
दश १ २. ३. व.	४३१३३	दाण्डपाता २.	२११७५	दारुतक्षणी २.	३११३६
दशन १.	४४१८८	” २.	८११६	दारुफला २.	३३३१८१
दशनोच्छिष्ट १.	८११५२	दाण्डाजिनिक १. २. ३.		दारुहरिद्रा २.	३३३२१२
दशपुर ३.	३३३२०१		५४१२३	दारुहस्तक १.	४३१६३
दशवल १.	१११३३	दात १. २. ३.	५४१०२	दार्दर ३.	३१११६
दशबाहु १.	१११४७	दायूह १.	२३३१२	दार्ढ्य १.	२३३३८
दशम १. २. ३.	५११२०	” १.	२३३३६	दार्ढ्याघाट १.	२३३३३
दशमिन् १. २. ३.	५४१४	दान ३.	३८३३०	दार्ढिका २.	३२१४३
दशमीस्थ १. २. ३.		दाधिक १. २. ३.	४३३१५	” २.	३३३११६
	८४१७	दान ३.	३३३६३	दार्ढी २.	३३३२१२
दशरथात्मज	१११२२	” ३.	३३३११८	दाल ३.	३८३३५
दशा १ व.	४३३६१	” ३.	६३३१५	दास्मि १.	११३६
” २.	४४१५३	दानव १.	१३३१	दाव १.	६११२७
” २.	५१२२	दानवाञ्जन ३	३३३१२२	दाश १.	३११४२
दशाङ्गुल १. २. ३.		दान्त ३.	३३३१२३	दाशरथि १.	१११२०
	३३१५३	” १. २. ३.	५४११४	दाशार्ह १.	१११२५
दशानाह १.	३३३६१	दान्ति २.	५१२२७	दाशेरक १.	३३३६७
दशार्ण १ व.	३३३३७	दामन् २. ३.	३१२२९	दास १.	३१२
दशाव्यय १.	१११४७	” २. ३.	८११३२	दासमोचित १.	३११४
दशाश्व १.	११२४२	दामनी २.	३१२२९	दाससूनु १.	३११३
दशास्थ १.	११२४२	दामा २.	३१२२९	दासी २.	३३३१११
दशेरक १ व.	३३३३८	दामाञ्जन ३.	३७११२	” २.	३३३१९०
दस्यु १.	३३५११२	दामोदर १.	१११२५	” २.	४४१२६
” १.	३३५२१५	दाय १.	६११२६	दासीसभ ३.	८१२०
” १.	३३७४०	दायाद १.	७११३०	दासेय १.	४४१३३
” १.	३३१५६	दार ३.	४१२३९	दासेर १.	४४१३३
दस्युजाति २.	३३५२०८	” १ व.	४४३५	दिक्करी २.	४४१८
दत्त १ द्वि.	१३३६	दारक १. २. ३.	५४१२	दिगन्त १.	२११६
दहन १.	१२१५	दारद १ व.	३११२७	दिगम्बर १. २. ३.	
” १.	५३३८	” १.	३२१४४		५४१५
दहर १. २. ३.	५४१३६	दारपत्र १.	४३३७१	दिग्गज १.	२११८
दह १. २. ३.	५४१३६	दारसङ्ग्रह १.	३३३५४	दिग्ध १.	६५४१
दा २.	३३७५२	दारित १. २. ३.		दिग्भवा १. २. ३.	
दाक्षायण ३.	३२१९९		५४१११		४४११६
दाक्षायणी २.	८१२६	दारिपत् १.	३८२६	दियुग्म ३.	२११७
दाक्षाय्य १.	२३३३०	दारु ३.	३३३३३	दिग्वासस् १.	१११४६

दिङ्मण्डल ३.	२११६	दिष्टि २.	३११५३	दीर्घपत्री २.	३३१९६
दिङ्मध्य ३.	२११७	,, २.	६२११९	दीर्घपर्णी २.	३३१९७४
दिङ्मार्ग १.	४३११७	दिष्ट्या ४.	८१७२१	दीर्घपाद १.	२३३३१
दिधिषु १. २.	७५५४७	,, ४.	८८११७	दीर्घपृष्ठ १.	४११६
दिधिषूपति १.	३६१४३	दिहण्ड १ व.	३११२४	दीर्घफला २.	३३१९६०
दिन ३.	२११५६	दीक्षणीयेष्टि २.	३६१८७	दीर्घरोमक ३.	३३१२०२
दिनत्रयिन् १.	३६१४१	दीक्षा १.	३६१८७	दीर्घरोमन् १.	३६१७
दिनप्रणी १.	२१११०	दीदिवि १.	२११३४	दीर्घवल्ली २.	३६१३३३
दिनम्मन्या २.	२११५८	,, १. २.	४३१७६	दीर्घवाच् १.	२३३१३
दिनादि १.	२११६४	दीधिति २.	२११२२	दीर्घवृन्त १.	३३३६८
दिव् २.	११११	दीन १.	३३३७०	,, १.	३३३२३८
,, २.	८२११७	,, १.	३३३२२३	दीर्घशूक १.	३८१६१
दिवस १. ३.	२११५५	,, १. २. ३.	५४१६०	दीर्घसूत्र १. २. ३.	५४१७२
दिवस्पति १.	१२११	दीनवादिन् १. २. ३.	५४१४७	दीर्घिका २.	४२१६
दिवा ४.	८८१७	दीनार १.	५११४१	दीर्घाङ्ग १.	२११२०
दिवाकर १.	२१११०	दीप १.	४३१६१	दीर्घा २.	२११२
दिवाकीर्ति १.	८११२४	दीपक १.	३९१४१	दुःख १. २. ३.	१२३९
दिवाचर १.	२१११०	,, १. २. ३.	७५४७	,, ३.	३६११८७
दिवाटन १.	२३३१५	दीपन १.	३३३६०	,, १. २. ३.	५४१४४
दिवाभीत १.	८११२४	दीपवल्ली २.	४३३६०	दुःखदोह्या २.	३४१४९
दिविपद् १.	१११३	दीपवृत्त १.	४३३६१	दुकूल ३.	४३३२२
दिवौकस् १.	१११३	,, १.	८६२०	,, ३.	७३३१८
,, १.	७१३०	दीपिका २.	४३३६०	दुग्ध ३.	३८१४५
दिव्य ३.	२१११	दीस १. २. ३.	८४१४	दुग्धतालीय ३.	८३३१४
,, ३.	३३३२०४	दीसा २.	२२१४	दुद्रुम १.	३३३२०५
,, ३.	३८१२	दीसि २.	२११२२	दुध १.	१२३१
,, ३.	३९११०	दीप्य १.	३८१८३	दुन्दु १.	१११२६
,, ३.	८३३१८	दीप्यका २.	३८१०२	दुन्दुभ ३.	३३३२००
दिव्यकालिनी २.	४१११७	दीर्घ १. २. ३.	५४१८१	दुन्दुभि १.	१२३४५
दिव्येलक १.	४१११५	दीर्घकोशिका २.	४११५८	,, १.	३९१३३
दिव्येलक १.	४१११७	दीर्घदण्ड १.	३११५९	,, १. २.	७५४८
दिश् २.	२११२	(दिव्यदण्ड)		दुर् ४.	८७४
,, २.	४३१५५	दीर्घदर्शिन् १.	३६२३५	दुर्ध्व १.	३११५०
दिशा २.	२११२	दीर्घदृष्टि १. २. ३.	५४१५३	दुराचार १. २. ३.	३६१२२
दिशान १.	३६२२	दीर्घनादिन् १.	३४१६९	दुरालभा २.	३३३१२५
दिश्य १. २. ३.	५४११६	(रतिकील)		दुरासद १.	१२३६
दिष्ट १.	२११५२	दीर्घनिद्रा २.	३६२०१	दुरित ३.	३६१६८
,, ३.	२४२२५	दीर्घनिर्वश १.	३७१६३	दुरोदर १.	८५११०
,, ३.	३६१८९	दीर्घपत्र २.	३३३२०६	दुर्ग ३.	३७३
,, ३.	४३११५				
दिष्टान्त १.	३३३२०१				

दुर्ग]

वैजयन्तीकोषः

[देवभिन्न

दुर्ग ३.	३।७।४९	दुहितृ २.	४।४।४०	दृषद् २.	३।२।८
„ १. २. ३.	६।५।४१	दूत १.	२।१।३४	„ २.	४।३।१६३
दुर्गत १. २. ३.	५।४।६०	„ १.	३।७।२९	दृष्ट ३.	३।७।१४
दुर्गति २.	१।२।३७	दूती २.	४।४।२४	दृष्टान्त १.	७।१।३२
„ २.	७।२।१०	दून १. २. ३.	५।४।९८	दृष्टि २.	४।४।९४
दुर्गन्ध ३.	३।८।१२५	दूर ३.	५।४।१४२	„ २.	६।२।१८
„ १.	५।३।५५	दूरदर्शिन १.	२।३।३०	दृष्टिबन्ध १.	४।४।९२
दुर्गम १.	३।२।१	„ १.	३।६।२३५	देव १.	१।१।२
दुर्गा २.	१।१।६२	दूर्वा २.	३।३।२३२	„ १.	३।७।१५८
दुर्जन १.	५।४।२५	दूपक १.	३।७।४१	„ १.	३।९।१०३
दुर्दर्शा २.	३।६।४९	दूपणारि १.	१।१।२१	„ १. २. ३.	८।९।४६
दुर्दिन ३.	२।२।८	दूपिका २.	३।६।४७	देवकुसुम ३.	३।८।१०३
दुर्नामन् २.	४।१।५८	„ २.	४।४।९५	देवखात ३.	४।२।५
„ ३.	४।४।१३१	दूप्य ३.	४।३।१२५	देवगिरि १.	१।३।१२
दुर्वल १. २. ३.	५।४।५	„ ३.	४।४।११८	देवच्छन्द १.	४।३।१३८
दुर्बाल १. २. ३.	५।४।१५	दूप्याङ्गी २.	३।३।३४	देवजग्ध ३.	३।३।२३४
दुर्भग १. २. ३.	५।४।६९	दृक्छद् १.	४।४।९५	देवजन १.	१।३।३
दुर्मनस् १. २. ३.	५।४।३४	दृक्श्रवस् १.	४।१।६	देवतरु १.	१।३।१४
दुर्मुख १. २. ३.	५।४।४६	दृगध्यक्ष १.	२।१।१३	देवता २.	१।१।५
दुर्योधनासन ३.	३।६।२२७	दृगायुध १.	१।१।४३	देवतागण १.	१।३।८
दुर्वर्ण १. २. ३.	७।५।४५	दृग्लोमन् ३.	४।४।९५	देवताड १.	३।३।८६
दुर्वासस् १.	३।६।१५६	दृढ ३.	३।२।३३	देवतायतन ३.	४।३।२८
दुर्विध १. २. ३.	५।४।६०	„ ३.	३।३।२३२	देवतार्चनतूर्य १. ३.	
„ १. १. ३.	७।४।१३	„ १.	५।३।५		३।९।१३८
दुर्विनीतक १. २. ३.		„ १. २. ३.	५।४।८४	देवदारु ३.	३।३।७१
	३।७।१०७	„ १. २. ३.	५।४।१३२	देवदाली २.	३।३।१६२
दुर्हृद् १.	३।७।४२	„ १. २. ३.	५।४।१३७	देवदण्ड १.	३।७।१७१
दुल १.	५।३।५३	„ १. २. ३.	६।४।८	देवदुन्दुभि १.	१।२।७
दुली २.	४।१।५१	दृढच्युत् १.	३।६।१५७	„ १	३।३।१२१
दुश्चर्मन् १. २. ३.		दृढदला २.	३।३।२२४	„ २.	३।३।१९८
	५।४।१५	„ २.	३।३।२३०	देवद्वीचीन १. २. ३.	
दुश्चयवन १.	१।२।१	दृढा २.	३।३।१७७		५।४।९३
दुष्कृत ३.	३।३।१६८	दृति १.	४।३।५९	देवद्वयच् (ञ्च) १. २. ३.	
दुष्टसाचिन् १. २. ३.		दृढ्य १. २. ३.	५।४।११०		५।४।९३
	३।८।९	दृश् २.	४।४।९४	देवधान्य ३.	३।८।५७
दुष्टु ४.	८।८।१३	„ २.	८।५।३७	देवधूप १.	३।३।५३
(दुष्टु)		„ २.	८।९।२	देवन् १.	४।४।३३
दुष्प्रधर्षिणी २.	३।३।१०२	दृशान १.	२।१।१४	देवन १.	३।९।६०
दुष्पम ४.	८।८।१३	दृशीकु १.	३।६।८१	देवनन्दिन् १.	१।२।९
दुस्पर्श १.	३।३।१२६	दृश्य १. २. ३.	६।५।४२	देवप्रेम्य १.	३।५।६२
दुस्पर्शा २.	३।३।१०६	दृष्टपुत्र १.	४।३।१६३	देवभिन्न १.	४।१।१४

[देवभूय]

देवभूय ३.	३१६१२३७
देवमणि १. ३.	३१७११०
देवमातृक १. २. ३.	३११४६
देवमारिप १.	३३१५१
देवमाली २.	३३१८४
देवयज्ञ १.	३६६३
देवयान १.	२११४५
देवयु १.	३६१७८
देवयोनि १.	१३१५
देवर १.	४४३३
देवरथ १.	३१७१२६
” २.	३१९६६
देवल १. २. ३.	३६११
देववधू २.	२११२
देववेद्य १ द्वि.	१३६
देवसभा २.	१३११
देवसिन्धु २.	४२२४
देवा २.	३३१०६
देवाग्नि १.	१२२२
देवाज १.	१११३
देवाजीव १. २. ३.	३६११
देवार्ह ३.	३२२२
देवानाम्प्रिय १. २. ३.	५४२२
देविका २.	३३३४
देवी २.	३३११४
” २.	३३१३२
” २.	३१७३१
” २.	३१९४५
” २.	३१९१०४
देवीकोट्ट १.	४३१९
देवृ १.	४४३३
देश १.	३१२१
देशनिक ३.	४३११५
देशरूप ३.	३१७४८
(दशरूप)	
देशिक १.	३१८१३
देह १. ३.	४४५२
देहमर्दन १.	४४१३८

शब्दानुक्रमिका

देहलक्षण ३.	४४५४
देहलि १.	५३५६
देहली २.	४३४४
देहवारि ३.	४४१२०
दैतेय १.	१३१९
दैत्य १.	१३१९
” १.	३३११७६
” ३.	३३२३२
दैत्यक्षय १.	४१११
दैत्यदेव १.	१२११८
दैत्यमदन १.	३३२०८
दैत्या २.	३८१९८
दैत्यारि १.	११११०
दैन्य ३.	३६१८३
दैर्घ्य ३.	५२१५
दैव ३.	३६१८९
दैवज्ञ १.	३१७२५
दैवज्ञा २.	४१३०
” २.	४४११
दैवत ३.	१११५
दैवपर १. २. ३.	५४३०
दैविक ३.	३८१२
दैष्ट ३.	३६१८९
(नैष्ट)	
दोलक ३.	४२३९
दोला २.	३१७३६
” २.	३१७३७
दोलिका २.	३१७३७
दोशिशखर १.	४४७१
दोष १.	३६१९३
दोषग्रह १.	३३३४२
दोषज्ञ १. २. ३.	४४१४४
” १.	७१३२
दोषदर्शिन १. २. ३.	५४३४
दोषप्रणालिका २.	
दोषा ४.	८१७
दोस् १. ३.	४४७१
” १. ३.	८१३१
दोहल ३.	३४६१

[द्रविण]

दोहल ३.	३६१८०
दौन्दुभि २.	३६१९५
दौन्दुभी २.	३६१५६
दौर्मत्य ३.	५२१४
दौवारिक १.	३१७२४
दौष्यन्त १.	३१५६७
” १.	३१५७२
दौहित्र १.	४४४५
दौहद ३.	३६१८०
द्यावापृथिवी २.	३११५
द्यु १.	२११५६
” १.	८१६०
द्युचर १.	१३३४
द्युमणि १.	२११११
द्युमत् १.	२१११२
द्युमयी २.	२११२३
द्युम्न ३.	३८७३
” ३.	८३१५
द्युवन् १.	६१२७
द्युवर्धकि १.	१३३६
द्युत १. ३.	३१९५९
द्युतकारक १.	३१९५९
द्युतकृत् १.	३१९५८
द्यो २.	११११
” २.	८२१७
द्योत १.	१२३१
द्योतन ३.	७३१८
द्योता २.	३६५१
द्रक्षण ३.	५१४८
द्रक्ष ३.	४३३४
द्रप्स १.	२२१८
” ३.	३८१४२
द्रमिड १.	३५५६
द्रमिल १.	३५१०२
(द्रविड)	
द्रव १.	३६१२६
द्रवक्षेप १.	५२१४०
द्रवण ३.	५३११
द्रवन्ती २.	३३११३
द्रविण ३.	३८७३
” ३.	८३१५

द्रव्य ३.	६३।१५	द्रोणिका २.	३३।१२४	द्विजायनी २.	३६।२०
द्रव्यपद १.	५३।१	द्रोणी २.	४२।१५	द्विजालय ३.	४४।८६
द्राक् ४.	८।८।१	” २.	६।२।१८	द्विजिह्व १. २. ३	७।५।४५
द्राक्षा २.	३३।१८१	द्रोह १.	३।५।९	द्वितय ३.	५।१।१५
द्राक्षाफल १.	३३।२७	द्रौणिक १. २. ३.	३।८।२१	द्वितीय १. २. ३.	५।१।२०
द्रागमृत ३.	४।२।४	द्रन्द्ध ३.	५।१।१५	द्वितीया २.	२।१।७०
द्रावण १.	३३।४२	” ३.	६।३।१६	” २.	४।४।३४
” १.	३।८।१२४	द्रय ३.	५।१।१५	द्वितीयाकृत १. २. ३.	३।८।२३
द्राविडक १.	३३।१६७	द्वादश १. २. ३.	५।१।२१	द्वित्र १. २. ३.	५।१।२५
द्राविल १.	३।६।१५९	द्वादशात्मन् १.	२।१।१०	द्विधा ४.	८।८।२०
द्रु १.	३३।४	द्वादशाह १.	३।६।१४४	द्विधागति १.	४।१।४७
द्रुकिलिम ३.	३३।७१	द्रापर १.	२।१।९२	द्विनग्ननक १. २. ३.	५।४।१५
द्रुघण १.	१।१।९	” ३.	३।९।६२	द्विप १.	३।७।६०
” १.	३।७।१७१	” १.	७।१।३०	” १.	८।६।१५
” १.	७।१।३०	द्वार् २.	४।३।४२	द्विपद १.	१।१।१९
द्रूण ३.	३।७।१७२	” २.	८।२।१६	द्विपाद् १.	३।५।१
द्रुणा २.	३।७।७८	द्वार ३.	४।३।४२	द्विमुखी २.	४।१।२०
द्रुणी २.	४।१।५१	द्वारका २.	४।३।६	द्विमुष्टिक १.	५।१।५२
द्रुत ३.	३।९।१२३	द्वारपटल ३.	४।३।५०	द्विरद १.	३।७।६०
” १. २. ३.	४।३।९५	द्वारपाल १.	३।७।२४	द्विरसन १.	४।१।४
” १. २. ३.	५।४।१२४	द्वारबन्ध १.	४।३।४३	द्विरेफ १.	२।३।४२
” १. २. ३.	६।४।८	द्वारयन्त्र ३.	४।४।४९	द्विवेदिनी २.	२।१।७६
द्रुति २.	५।३।१	द्वारवती २.	४।३।६	द्विप् १.	३।७।४१
द्रुम १.	३।३।४	द्वारवतीपद ३.	३।१।१९	द्विपत् १.	३।७।४०
” १.	३।३।८५	द्वारस्थ १.	३।७।२४	द्विपन्तप १. २. ३.	५।४।६९
द्रुमश १.	४।३।४७	द्विः-(स्) ४.	८।८।६	द्विष्कृष्ट १. २. ३.	३।८।२३
द्रुमामय १.	४।३।१५३	द्विक १.	२।३।१५	द्विसीत्य १. २. ३.	३।८।२३
द्रुवय ३.	५।१।६४	” ३.	३।७।१०	द्विहल्य १. २. ३.	३।८।२३
द्रुह १.	३।५।२६	द्विकालिक १. २. ३.	३।६।१२८	द्विहायनी २.	३।४।४५
द्रुहिण १.	१।१।७	द्विखण्डक १.	४।३।१२७	द्वीप १. ३.	४।२।३३
” १.	७।१।३२	द्विगुणाकृत १. २. ३.	३।८।२३	द्वीपवत् १. २.	८।५।२९
द्रूण १	४।१।३२	द्विज १.	३।३।३	द्वीपिन् १.	३।४।३
द्रेक्काण १.	२।१।५१	” १.	४।४।७८	द्वेधा ४.	८।८।२०
द्रोण १.	२।३।१७	द्विजकुत्सित १.	३।३।५५	द्वेषण १.	३।७।४१
” १. ३.	५।१।५५	द्विजन्मन् ३.	३।५।५७	द्वेषिन् १.	३।७।४१
” १.	५।१।६३	(विजन्मन्)		द्वेष्य १. २. ३.	५।४।६९
” १. ३.	६।५।४०	” १.	७।१।३१	द्वैगुणिक १. २. ३.	३।८।८
द्रोणक्षीरा २.	३।४।५०	द्विजपोत १.	३।९।१		
द्रोणदुग्धा २.	३।४।५०	द्विजाति १.	७।१।३१		
द्रोणपुष्पिका २.	३।३।१२४				
द्रोणमुख ३.	४।३।३				

[इत]

शब्दानुक्रमणिका

[धारण]

इत ३.	५१११५	धन्या २.	३१८४९	धर्षणी २.	३१६४६
इध ३.	३१७६	धन्याक ३.	३१८५०	„ २.	७५४८
इधम् ४.	५१८२०	धन्येय ३.	३१८५०	धव १.	३३१९७
इष १. २. ३.	३१७१२८	धन्वन् १.	३१२४२	„ १.	४४३७
इषायन १.	११३३२	„ ३.	३१७१७२	„ १.	६१२७
इमानुर १.	१११५४	धन्वन्तर ३.	३११५७	धवल ३.	५३१०
इथाचित ३.	५११६२	धन्वन्तरसहस्र ३.	३११६२	„ १. २. ३.	७५४९
इथाढक १. ३.	५११५५	धन्वन्तरि १.	८११२५	धवला २.	३१४३३
इथायोग ३.	२११९२	धन्वयास १.	३३१२२६	धवित्र ३.	४३१५९
ध		धन्ववन १.	३१५३३	धातकि २.	३३१९७
धटिक १. ३.	५११६०	धन्विन् १. २. ३.		धातु १.	४४१११
धटिनी २.	३१६१८		३१७१४३	„ १.	६१२८
धन ३.	३१८७३	धमन १.	३३१२२८	धातृ १.	१११६
धनञ्जय १.	८११२४	„ १.	४४१९१	„ १.	८६११
धनद १.	१२१५६	धमनी २.	३१८१०१	धातृपुष्पिका २	३३१९७
धनवत् १. २. ३.	५४१५७	„ २.	४४११६	धात्री २.	३११२
धनाध्यक्ष १.	१२१५६	धम्मिल्ल १.	४४११००	„ २.	३२११७७
धनाया २.	३१६१८०	धयन ३.	४३१०४	„ २.	६१११९
धनिन् १.	१२१५६	धर १.	३१९१९	धानका २.	५११४०
„ १. २. ३.	५४१५७	धरण ३.	५११४४	धाना २.	३१८४९
धनिष्ठा २ व.	२११४१	धरणी २.	३११२	„ १ व.	४३१७१
धनीयिका २.	३१८४९	धरणीधर १.	११११३	„ २.	६२११९
धनु (धनुःपट) १.	३३१५७	धरा २.	३११२	धानी २.	३१६६०
„ १. २.	३१७१७२	„ २.	३३११३१	धानुष्क १. २. ३.	
„ २.	६२११९	धरासुत १.	२११३१		३१७१४३
धनुर्ग्रह १.	३११५३	धरित्री २.	३११२	धान्य ३.	३१८३१
धनुर्वृण्ड १.	३११५७	धरीक १.	४११२८	„ ३.	३१८५१
धनुर्धर १. २. ३.		धरुण १.	७११३२	धान्यकोष्ठ १.	४३१६४
	३१७१४३	„ ३.	८३११८	धान्यमञ्जरी २.	३१८६४
धनुर्वेद १.	३१६३०	धर्म १. ३.	३१६१६८	धान्यराशि १.	३१८६५
धनुश्श्रेणी २.	३३१११४	„ १.	३१७१५८	धान्यवृद्धि २.	३१८५
धनुष्पाणि १.	१११२२	„ १.	५२११	धान्या २.	३१८४९
धनुष्मत् १. २. ३.		„ १. २. ३.	६५४२	धान्याम्ल ३.	४३१८३
	३१७१४३	धर्मद्रवी २.	४२१२५	धान्योत्क्षेपण ३.	५२१६१
धनुस् ३.	३११५५	धर्मपत्तन ३.	३१८७९	धामन ३.	४३११७
„ ३.	३११५७	धर्मपाल १.	३१७१५८	„ ३.	६३११६
„ १. ३.	३१७१७२	धर्मभ्रातृ १.	३१६२४	धामार्गव १.	३३१११५
„ १.	८६११५	धर्ममाणव १.	३१६२३	„ १.	३३११६२
धनोत्पत्ति २.	३१७४४	धर्मराज १.	१११३३	धारकदारु ३.	४३१४०
धन्य १. २. ३.	५४१५६	„ १.	१२१३५	धारका २.	४४१६३
धन्या २.	३३११०४	धर्षण ३. २.	७५४८	धारण ३.	५११५९

धारणा]

वैजयन्तीकोषः

[धैवत

धारणा २.	३१६२३१	धीरा १. २. ३.	पा४५२	धूमिका २.	२१२१०
" २.	३१८१५	" १. २. ३.	६५४४	धूमोर्णा २.	११२३६
" २.	४३१४०	धीरा २.	३३१३१	धूम्या २.	पा११४
धारणी २.	३३११७८	धीवर ३.	३२२३३	धूम्र १.	पा३८
धारभार ३.	पा१६१	" १.	३५२६	" १.	पा३२१
धारा २.	३१७११८	" १.	३५८२	धूम्रकर्ण १.	३१६६
" २.	३१७१८६	" १.	३१४२	धूम्राट १.	२३२७
" २.	४२२३०	धुक्षिप्त ३.	३८१४५	धूर्जटि १.	११४०
" २.	६२२२०	धुत १. २. ३.	पा४९५	धूर्त ३.	३२३६
धाराग्र ३.	७३११८	धुत्तर १.	३३७६	" १.	३३६०
धाराट १.	७१३३	धुनी २.	४२२३	" १.	३३६१
धाराधर १.	२२२१	धुर २.	३१३३०	" १.	३३७६
धारिका २.	२१५५४	" २.	८२१७	" ३.	३८११५
धारोष्ण ३.	३८१४६	धुरण १.	पा१४३	" १.	३९५८
धार्तराष्ट्र १.	२३३७	धुरन्धर १.	३३९४	" १. २. ३.	पा४२४
धार्मिक १.	३६२३	" १. २. ३.	३१६७	धूर्तर १.	३३६०
" १.	३७२०	धुरीण १. २. ३.	३१६७	धूलि २.	३८२५
धावन २. ३.	७५४९	धुर्य १.	३३७७	" २.	८६१७
धावनी २.	३३१३६	धुर्य १. २. ३.	३१६७	" १. २.	८९२६
धिक् ४.	८१७५	धुर्यावकर्तिक १. २. ३.		धूलिजङ्घ १.	२३१६
धिवृत्त १. २. ३.			३६१३३	धूलिध्वज १.	१२४९
" १. २. ३.	पा४७१	धुर्वी २.	३७१३०	धूलिभक्त ३.	३६५६
" १. २. ३.	पा४११०	धुस्तूर १.	३३७६	धूलिलुठित ३.	३७१११
धिविक्रिया २.	पा२२१	(धुत्तर)		धूलीकदम्ब १.	८१५३
धिग्वन १.	३५९७	धुल्लक्षणा २.	२३१८	धूसर १.	३९२७
धिग्वनक १.	३५६	धूत १. २. ३.	पा४१०१	" १.	पा३१४
(धिश्चनक)		" १. २. ३.	६४८	धृति २.	११४७
धिषण १. २.	७५५०	धूप १.	१२२८	" २.	३६१६६
धिष्ण्य ३.	२१३८	धूपायित १. २. ३.		" २.	३७२०८
" १. ३.	६५४३		पा४९८	" २.	६२२०
धी २.	३६१६३	धूपित १. २. ३.	पा४९८	धृष्ट १. २. ३.	पा४१७
धीकर १.	३९६	धूम १.	१२२८	धृष्टा २.	३६५०
(अधीङ्गर)		" १.	८६५	धृष्टु १. २. ३.	पा४१७
धीकर्मिक १.	३७२०	धूमक १. २. ३.	२२१०	" १. २. ३.	६४९
धीता २.	६२२०	धूमकेतु १.	१२१६	धेनु २.	३४५०
धीति २.	४३१०४	" १.	८१२५	" २.	३७७०
धीमक ३.	३२३३	धूमज १ व.	२१३७	धेनुप्या २.	३४५०
धीमत् १.	३६२३४	धूमयोनि १.	२२११	धेनुक ३.	पा११०
धीमती २.	४४२१	धूमल १. ३.	३९१३८	धेनुकी २.	२१७७
धीर १. २. ३.	३७१५०	" १.	पा३२१	धैर्य ३.	३७२०८
" १. २. ३.	पा४२०	धूमवर्णा २.	१२३०	धैवत १.	३९१३२

धोरण १.	२३१६	नकुटक ३.	४४१९१	नटभूषण ३.	३१२१३
” ३.	३१७१२३	नकुल १.	४११२७	नटिति २.	३१९७८
धोरी २.	३१६५७	नक्तक १.	२३१२३	नटी २.	३१८१००
धौत १. २. ३.	३१७१९७	” १.	५३११३०	नटोत्साहन ३.	३१९१३९
धौतकौशेय ३.	४३१११८	नक्तञ्चर १.	२३१२२	नट्या २.	५१११४
धौतयुग्म ३.	४३११२०	नक्तम् ४.	८१८७	नट्वत् १. २. ३.	३११४४
धौरण १. २. ३.	३१७१२१	नक्तमाल १.	३३१६२	नट्वल १. २. ३.	३११४४
धौरित १. २. ३.	३१७१२१	नक्र १.	४११५३	नण्ड १.	३१९६३
धौरितिक १. २. ३.	३१७११८	नक्षत्र ३.	२११३८	नत १. २. ३.	५१४८३
” १. २. ३.	३१७१२१	नक्षत्रकालिक १. २. ३.	३१६१२७	” १. २. ३.	५१४१२३
धौर्य १. २. ३.	३१४५७	नक्षत्रनेमि १. २.	८५१२६	” १. २. ३.	६१४१९
धौर्य १. २. ३.	३१७१२१	नक्षत्रमाला २.	३१७८७	नतजानु २.	३१६४७
ध्यान ३.	३१६२३२	” २.	४३११४२	नतनास १. २. ३.	५१४१२
ध्यामक ३.	३३१२३४	नख ३.	३१८१०१	नद १.	४१२२९
ध्रुव १.	३१७१३१	” १. ३.	४१४७५	नदनु १.	२१२१२
” १. २. ३.	६५१४४	नखर १. ३.	४१४७५	नदी २.	२१२२२
ध्रुवा २.	३३१९६	नखरायुध १.	४१४७२	” २.	८१९३
” २.	३३११००	नखशस्त्र १.	८६१२३	नदीभव ३.	३१८१२०
” २.	३३११००	नखायुध १.	४१४७२	नदीमातृक १. २. ३.	३११४७
ध्रुगा २.	२१४२	नखास्त्र ३.	४१४११७	नद्ध १. २. ३.	५१४९७
ध्वज १. ३.	३१७१३३	नग १.	३३१५	नद्धी २.	३१९४४
” १. ३.	६५१४३	” १.	३१८१०४	ननन्द २.	४१४२७
” १. ३.	८६१५	” १.	८११५८	ननान्द २.	४१४२७
ध्वजप्रहरण ३.	१२१४८	नगर ३.	४३११	ननु ४.	८१७२२
ध्वजिन् १.	३१९१४४	नगरद्वारकुट्टक १.	४३११५	” ४.	८१८२
ध्वजिनी २.	३१७१५५	नगरी २.	४३११	नन्दक १.	११११७
ध्वनि १.	२१४१	नगाधारा २.	३११३	नन्दधु १.	३१६१८८
ध्वस्त १. २. ३.	३१७२१९	नग्न १.	३१६७३	नन्दन ३.	१२११०
” १. २. ३.	५१४१०२	” १. २. ३.	५१४१५	” १.	३१६१०२
ध्वाङ्क १.	२३११७	” १.	६११३१	” १.	४१४३९
” १.	६११२७	नग्नहृ १.	३१९१५०	” १.	८१९१४
ध्वाङ्गी २.	२१४४	नगना २.	४१४१०	नन्दनीनन्दन १.	३१६१५८
ध्वान १.	२१४१	नगनाट १. २. ३.	५१४१५	नन्दयन्ती २.	१११६०
ध्वानका २.	५११४९	नचक्र १.	३१६१९९	नन्दा २.	१११६०
ध्वान्त ३.	२११६४	नट १.	३३१६९	” २.	३३१९७
ध्वान्तमणि १.	२३१४७	” १.	३१५५५	नन्दि २.	३१६१८८
न		” १.	३१५१०३	नन्दिक १.	३१६१५८
न ४.	८१७१५	” १.	३१९१६२	नन्दिका २.	१२१११
नःसुद्र १. २. ३.	५१४११	नटन ३.	३१९७८	नन्दिकेश्वर १.	१११५१

नन्दिन्]

वैजयन्तीकोषः

[नागवारिक

नन्दिन् १.	१११५१	नयनोदक ३.	३१९८७	नवांशुक ३.	४३१२०
” १.	३८८३५	नर १.	३१५१	नवीन १. २. ३.	५४८८
नन्दिनी २.	१११६०	” १.	६१२९	नव्य १. २. ३.	५४८८
” २.	३३१७८	नरक १.	१२३७	नसिक १.	४४३८
” २.	३८८८	नरकाराति १.	११२५	नश्यद्प्रसूति ४.	४४२०
” २.	४३१११	नरकीलक १. २. ३.		नश्वर १. २. ३.	२४१९
” २.	४४२७		३६१२	नष्टा २.	३६४८
नन्दिवर्धन १.	१११४४	नरकोलि २.	३३८९	नस २.	३५२३
” १.	२१७३	नरदेव १.	३७२	नस्त ३.	४४१४०
नन्दिसरस् ३.	२११११	नरनारायण १.	११३०	नस्तित १. २. ३.	३४५७
नन्दीचारी २.	३९१४२	नरवाहन १.	१२५७	नस्य ३.	४४१४०
नन्दीमुखी २.	३६२००	नरेन्द्र १.	३७२	नस्योत् १. २. ३.	३४५७
नन्द्यावर्त १.	३३१९४	” १.	७१३७	नहुष १.	३५१
” १.	४३३०	नर्तक १.	३९६३	नाक १.	१११
नपुंसक ३.	४४३	नर्तन ३.	३९७३	” १.	६१२९
नप्तृ १.	४४४५	नर्तनप्रिय १.	२३३८	नाकु १.	३१४८
नप्र १.	३९६३	नर्मदा २.	४२२६	नाकुल ३.	३६२१८
नभःप्राण १.	१२४८	नर्मन् ३.	३९८८	नाकुली २.	३८९८
नभस् ३.	२१११	नल १.	३३२२८	नाकुसुदम्न १.	४१६
” ३.	२१८४	नलक ३.	४३१२५	नाग ३.	३२३०
नभस १.	७१३३	” ३.	४४११६	” ३.	३२३२
नभसङ्गम १.	२३२	नलकूवर १.	१२५९	” १.	४१४
नभस्य १.	२१८५	नलतीर ३.	४४५९	” १.	६१३०
नभस्वत् १.	१२५०	नलद ३.	३३२३१	नागकेसर १.	३३८२
नभोज्जण १.	३३१९४	नलमीन १.	४१४५	नागजिह्वा २.	३२१२
नभोजात १.	१२५०	नलान्तर १.	३१६१	” २.	३३१३९
नभ्राज् १.	२२११	नलिक ३.	४३१२५	नागजीवन ३.	३२३१
नमः (-स्) ४.	८८१४	नलिन ३.	४२३८	नागदन्त १.	४३५३
नमत ३.	४३१६६	नलिनी २.	४२४३	नागदन्तक ३.	३६२१४
” १.	७१३५	” २.	७२१०	नागदन्ती २.	३३१०९
नमसित १. २. ३.		नलिवाह १.	३७११७	नागपाश १.	३७१९६
	५४१०५	नली २.	३८१००	नागबला २.	३८६१
नमस्कार १.	३६३९	नल्व १.	३१६०	नागमातृ २.	३२१२
नमस्कारी २.	३३१४८	नल्वल ३.	५१५६	नागर १.	३३६१
नमस्या २.	३६३९	नल्विक १.	३१६०	” १. २. ३.	७५५०
” २.	३६३९	नव १. २. ३.	५४८८	नागरङ्ग १.	३३३६
नमस्थित १. २. ३.		नवति २.	५१२७	नागराज १.	४१३
	५४१०५	नवनीत ३.	३८१३८	नागरी २.	३३१३७
नम्र १. २. ३.	५४८३	नवम १. २. ३.	५१२०	नागलोक १.	४११
नय १.	५२३२	नवमालिका २.	३३१८६	नागवल्ली २.	३३१४०
नयन ३.	४४९४	नवश्री १. २. ३.	४३११९	नागवारिक १.	८१५३

[नागवीथिका]

नागवीथिका २.	२।१।४६
नागवृन्तिका २.	३।३।१२६
नागाङ्क ३.	४।३।८
नागी २.	२।१।६
नागोदरी २.	३।७।१५४
नागोद्भव ३.	३।८।११८
नाटक ३.	३।९।१००
नाटकी २.	३।९।७३
नाटिका २.	३।९।१००
नाट्य ३.	३।२।२८
॥ ३.	३।९।७१
॥ ३.	६।३।१७
नाट्यधर्मिका २.	३।९।७२
नाट्योक्त ३.	३।९।७२
नाडिजङ्घ १.	२।३।१६
नाडिन्धम १.	३।९।१६
नाडी २.	२।१।५४
नाडीव्रण १.	३।८।१३३
नाथ १. २.	६।५।४५
नाद १.	२।४।१
नादेय ३.	३।८।१२८
नादेयी २.	३।३।९६
॥ २.	३।३।१९९
नाना ४.	८।७।२२
॥ ४.	८।८।४
नानीकर १. २. ३.	५।४।४८
नानीकवाच १. २. ३.	५।४।४८
नानीपात १.	४।१।२०
नान्दी २.	३।९।६९
॥ २.	३।९।१३३
नापित १.	३।९।२६
नापितकोलिका २.	४।४।९६
नाभि २.	४।४।६६
॥ १.	६।१।३०
नाभिका २.	३।७।१३५
नाभिज १.	१।१।९
नाभिनाला २.	४।४।९
नाभी २.	४।४।६६

शब्दानुक्रमणिका

नाभीद ३.	३।१।५
नाभील ३.	७।३।१९
नाम ४.	८।७।२३
नामकर्मन् ३.	३।६।३
नामधेय ३.	३।१।३१
नामन् ३.	३।१।३१
नामवर्जित १. २. ३.	५।४।२१
नामशास्त्र ३.	३।६।३१
नाय १.	३।२।३२
नायक १.	४।३।१४३
॥ १. २. ३.	५।४।५७
नार ३.	३।१।१३
नारक १.	१।२।३७
॥ १.	१।२।३८
नारकी २.	२।१।६
नारङ्ग १.	३।३।३६
नारद १.	३।३।७
नारसिंही २.	१।१।६४
नाराच १.	३।७।१८०
नाराची २.	३।९।१९
नारायण १.	१।१।१०
॥ १. २.	८।५।१०
नारी २.	३।३।८१
॥ २.	४।४।४
नार्यङ्ग १.	३।३।३६
नाल १. २. ३.	३।८।१८
॥ १. २. ३.	३।८।६३
॥ १. २. ३.	४।२।४२
॥ ३.	६।३।१७
॥ १, २. ३.	८।९।३८
नालक ३.	४।३।१२५
नाला २.	४।२।४२
नालिका २.	३।१।५८
॥ २.	३।१।५८
॥ २.	३।६।९५
॥ २.	३।७।११०
॥ २.	३।७।११७
॥ २.	३।९।१७२
॥ २.	७।२।११
नालिकेर १.	३।३।२२०

[निकाय्य]

नाली २.	३।८।६३
॥ २.	४।४।११६
॥ २.	८।९।३८
नालीकर १. २. ३.	५।४।४८
नालीकवाच १. २. ३.	५।४।४८
नावन ३.	४।४।१४०
नावारोह १. २. ३.	४।२।१९
नाविक १.	३।५।३८
॥ १.	३।५।१००
॥ १. २. ३.	४।२।१९
नाव्य १. २. ३.	४।२।२०
नाश १.	३।७।२१०
॥ १.	६।१।३१
नासत्य १ द्वि.	१।३।५
नासत्यद्वय १ द्वि.	१।३।५
नासा २.	४।३।४०
॥ २.	४।३।४५
॥ २.	४।४।९१
नासाग्र ३.	४।४।९२
नासारज्जु २.	३।७।११२
नासिका २.	४।४।९१
नासिकापुट १.	४।४।९१
नासिकामल १.	४।४।९२
नासिक्य १ द्वि.	१।३।६
नासिर १. ३.	३।७।२०३
नासू २.	३।९।१३३
नास्तिक १. २. ३.	५।४।३८
नि ४.	८।७।५
निंसन ३.	४।३।१७१
निकट ३.	५।४।१४०
निकर १.	५।१।२
निकर्षण ३.	४।३।३१
निकष १.	३।९।१९
निकषा ४.	८।८।१५
निकामम् ४.	४।३।१०४
निकाय १.	५।१।४
निकाय्य १.	४।३।१८

[निकार]

निकार १.	७११३७
निकारण ३.	३७२१२
निकार्य १.	४३११८
निकाश १ २. ३.	५४१२२
निकुञ्चिन् ३.	३६१५१
निकुञ्ज १. ३.	३२१२०
निकुरुम्ब ३.	५११२
निकृष्ट १. २. ३.	५४७५
निकेतन ३.	४३११७
निकण १.	२४१११
निकाण १.	२४१११
निक्षेप १.	३८११२
निखर्व ३.	५११२८
" ३.	५११३०
निखिल १. २. ३.	५४१८५
निगण १.	३६१९५
निगम १.	७११३५
निगरण १. २. ३.	४४१८३
निगल १.	३७१८३
निगाल १.	३७१९०९
निगूढक १.	३८१३८
निगूढचरण ३.	३६१२१२
निग्रह १.	७११३४
निघ १.	३९११८
निघण्टु १.	३६१३१
निघस १.	४३११०२
निघानका २.	३९१२०
निघृष्टा २.	३६१५०
निघ्न १. २. ३.	५४१२८
निचित १. २. ३.	५४११५
निचुल १.	३३१६७
निचोट १.	३७११८४
निचोल १.	३३१४१
" १.	४३११२६
" १.	४३११२८
निज १. २. ३.	३७१४३
" ३.	५२११

वैजयन्तीकोषः

निज १. २. ३.	६११९
नितम्ब १.	३२१८
" १.	४४१६४
" १.	७११३६
नितम्बिनी २.	४४१४
नितान्त १. २. ३.	५४१३२
नित्य १. २. ३.	५४१८८
" १. २. ३.	५४१३०
नित्यशक्तिन् १.	३४११२
नित्यहोम १.	३६१७०
निदाघ १.	३९१८१
" १.	८११५७
निदान ३.	७३१२०
निदानज्ञ १.	४४११४४
निदिग्ध १. २. ३.	५४११०८
निदिग्धिका २.	३३११०५
" २.	३३११०६
निदेश १.	३७१४७
" १.	७११३४
निदेशक १.	३११५९
निद्रा २.	३६१९७
निद्राण १. २. ३.	५४१३९
निद्रालु १.	३३११५०
" १. २. ३.	५४१३९
निधन १. ३.	७५१५१
निधान ३.	१२१६०
" ३.	५२१४०
निधि १.	१२१६०
निधिपाल १.	१२१५७
निधुवन ३.	३११३४
(विधुवन)	
" १.	४३११७०
निन्दा २.	३११३३
" २.	६२१२१
निप १.	४६१५८
निपक्षति २.	२११७०
निपात १.	३६१२०१
निपान ३.	४२१९
निपीतिन् १.	३८११२७

[निरञ्जना]

निर्वहण ३.	३७१२१२
निर्वह १. २. ३.	५४१२६
निर्वीर्य १. २. ३.	५४१२६
निभ ३.	३६१९५
" १. २. ३.	३९१२१
" १. २. ३.	५४१२२
निभृत् १. २. ३.	५४१३२
निमय १.	३८१७१
निमित्त ३.	७३११८
" १.	८३११६
निमित्तग्रहण ३.	३७१९०
निमिष ३.	३९१९०
निमीलन ३.	३३१२०१
" १.	३९१९०
निमेष १.	२११५३
निम्नक १.	३३१३६
निम्नगा २.	४२१२२
निम्ना २.	३३११७८
निम्ब १.	३३१७५
नियति २.	७२११२
नियन्तृ १.	२७१३८
नियम १.	३६११४
" १.	३६१२०९
" १.	५२१३७
" १.	७११४०
नियमोज्झति २.	५२१६
नियामक १.	४२११८
नियुत ३.	३३१२३२
" ३.	५११२८
" ३.	५११३०
" ३.	५११३२
नियुद्ध ३.	३७१२०७
नियोग १.	५२१२५
नियोज्य १.	३९१२
निर् (निस्) ४.	८७१५
निरञ्जन १.	३३११२
निरञ्जना २.	११११६
" २.	२११७२

निरन्तर १. २. ३.	५४११२६	निर्भर १. २. ३.	५४११३१	निवर्तना २.	५४११७
निरय १.	११२३७	निर्भर्त्सन ३.	८३३८	निवसथ १.	४३३२
निरर्थक ३.	५२३६	निर्मद १.	३७३६८	निवसन ३.	४३३१८
निरवग्रह १. २. ३.	५४१२७	निर्मात्य ३.	४३११५६	” ३.	४३३११६
निरसन ३.	३४३२१३	निर्मुक्त १.	४३१२०	निवह १.	५११२
निरस्त १. २. ३.	७४११३	निर्मोक १.	४३१२१	” १.	७१३३४
निराकरिण्यु १. २. ३.	५४१४०	निर्याण ३.	५२११३	निवहा २.	३३३१८६
निराकार १.	५२१२३	” ३.	७३३१९	निवात १. २. ३.	७४११४
निराकृति २.	३३६९	निर्यातिन ३.	८३३७	निवाप १.	३३३६४
निरामय १. २. ३.	४४११४३	निर्याम १.	४२११९	निवीत ३.	३३३२१
निरायस १.	३४३६३	निर्यास १.	३३३११	” १. २. ३.	४३३२२०
निरास १.	५२१२३	निर्यूह १.	४३३३१	निवृत्त १. २. ३.	५४११०८
निरिणा २.	३३६४६	” १.	४४११४१	निवृत्ति २.	७२१११
निरिप १.	३०८२८	” १.	७१३८	निवेश १.	५२११४
निरुक्त ३.	३३६२८	निरलंजा २.	३३६४६	” १.	७१३३३
” ३.	३३६३१	निरलिङ्ग ३.	८७१	निशरण ३.	३७२१२
निरूपण १. २. ३.	८५१२	निरलेप ३.	४२३८	निशा २.	२११५७
निरोध १.	७१३३३	निर्वपण ३.	३३६११८	निशाकर १.	२११२४
निश्च्युति २.	१२१४२	निर्वहण ३.	३१११०९	निशाकेतु १.	२११२५
निर्गमन ३.	५२११३	निर्वाण ३.	७३२०	निशाचर १. २.	८५११२
निर्गीत ३.	३११११०	निर्वाद १.	२४३३३	निशात १. २. ३.	३७११९७
निर्गण्डी २.	३३३११८	निर्वापण ३.	३७२१३	निशादशिख १.	२३३२२
” २.	३३३१८६	निर्वाय १. २. ३.	५४१७३	निशानाथ १.	२११२४
निर्ग्रन्थ १. २. ३.	५४११६	निर्वासन ३.	३७२१२	निशान्त १. २. ३.	७५५५१
” १. २. ३.	७४११३	निर्विष १.	४११११	निशामणि १.	२३३४७
निर्ग्रन्थन ३.	३७२१३	निर्विषा २.	४१११७	निशार १.	४३३१२७
निघाति १.	२२३६	निर्वीरा २.	४३२८	निशित १. २. ३.	३७११९७
निर्जर १.	१११३	निर्वृति २.	७२११०	निशीथ १.	२११६६
निर्द्धर १.	३२३७	निर्वृत्त १. २. ३.	५४११११	तिथिथिनी	२११५८
निर्णय १.	३३६१७६	निर्वेद १.	३३६१६७	निशिथ्या २.	२११५८
निर्णिक्त १. २. ३.	५४१६६	” १.	५२३३	निशुम्भन ३.	३७२१२
निर्णवृत्त १.	३५४५	निर्वेश १.	७१३९	निश्चय १.	३३३१७६
निर्दय १. २. ३.	७४११५	निर्व्यथन ३.	४११२	निश्चारक १. २. ३.	८५१११
निर्देश १.	३७३७	निर्हरण २.	३७११२२	निश्रेणि २.	४३१५१
निर्व्यथ १.	५४११३	निर्हार १.	५२११७	निश्वास १.	३३३२०४
निर्व्यथनी २.	३३३११०	निर्हाद १.	२४३१	निरशलाक १. २. ३.	५४११२०
निर्व्यथनी ३.	३३३११०	निलय १.	४३३१८		
निर्व्यथनी ४.	३३३११०	निलम्प १.	१११२		
निर्व्यथनी ५.	३३३११०	निलिम्पिका २.	३३३४२		
निर्व्यथनी ६.	३३३११०	नित्ययनी २.	४११२१		
निर्व्यथनी ७.	३३३११०	निर्व्यथनी ३.	३३३६०		

[निशोष]

वैजयन्तीकोषः

[नीलवृष]

निशोष १. २. ३.	५१४८६	निष्ठा २.	६१२२१	निस्स्पृहा २.	३१६५०
निशोष्य १. २. ३.	५१४६६	निष्ठान ३.	४३१८५	निस्स्त्राव १.	४३१७९
निश्रेयस ३.	८३१८	" ३.	४३११०	निस्स्वाध्याय १. २. ३.	३१६९
निश्वास १.	३१६२०४	निष्ठीव १. ३.	५१२३६	निहत १. २. ३.	३१६३७
निषङ्ग १.	३१७१७८	निष्ठीवन ३.	५१२३६	" १. २. ३.	७११३३
" १.	७११३४	निष्ठुर १. २. ३.	२१४२१	निहनन ३.	३१७२१२
निषङ्गिन् १. २. ३.	३१७१४३	" ३.	३१२२७	निहित १. २. ३.	५११०४
निषद्या २.	४३१३४	" १.	५१३५	निहव १.	७११३९
निषद्वर १.	३१८२६	निष्ठेवन ३.	५१२३६	नीच १. २. ३.	३१६३७
" १. २.	८१५११	निष्ठ्या २.	२११४०	" १. २. ३.	५१४२२
निषध	७११३८	निष्ठ्यूत १. २. ३.	७११४	" १. २. ३.	५१६०
निषाद १.	३१५४	निष्ठचूति २.	५१२३६	" १. २. ३.	५१४८१
" १.	३१५६९	निष्णात १. २. ३.	५११९९	" १. २. ३.	६१४२०
" १.	३१५७०	निष्पक्व १. २. ३.	५१११५	नीचुदार १.	३१३५४
" १.	३१५७२	निष्पत्तिसुता २.	४१४२०	नीचैः (—स्) ४.	८१८१९
" १.	३१५८४	निष्पन्नाकृति २.	५१२३८	नीड १. ३.	२१३४९
" १.	३१५१३२	निष्पन्न १. २. ३.	५१४४६	" १. ३.	८१३३६
निषादिन् १.	३१७८७	निष्पाव १.	४१२४६	नीडज १.	२१३४
निषिद्धैकरुचि १. २. ३.	३१६१२	" १.	४१२४६	नीडिन् १.	२१३२
निषूदन ३.	३१७२१२	निष्प्रवाणि १. २. ३.	४३१२०	नीडोद्भव १.	२१३२
निष्क १.	५११४१	निष्प्रभ ४.	८१८१३	नीप १.	३१३६०
" १. ३.	५११४६	निसर्ग १.	५१२१	नीर ३.	४१२१
" १. ३.	६१४२०	" १.	८१५३५	नील १.	११२६१
निष्कला २.	४१४१६	निसृष्ट १. २. ३.	५१११६	" १.	३१४१७
निष्कासित १. २. ३.	५१४७१	निस्तरुण ३.	५१२२१२	" १.	५१३११
निष्कुट १.	३१३३३	निस्तल १. २. ३.	५१४८२	नीलक १.	११२२९
" १.	३१३१४	निष्पिंश १.	३१७१६०	नीलकण्ठ १.	३१३१५५
निष्कुटी २.	३१८८७	" १. २. ३.	७१५५१	" १.	८१२२२
निष्कोटित १. ३.	३१९१२२	निस्वन १.	२१४११	नीलकेशी २.	३१३११०
निष्कोश १.	३१७७७	निस्वान १.	२१४११	नीलग्रीव १.	१११४२
निष्क्रम १.	७११३६	निस्सङ्ग १. २. ३.	३१४२०	" १.	८१२२२
निष्पङ्क १.	३१३६२	निस्सङ्गजा २.	३१३१८७	नीलजम्बूर १.	३१३१९४
निष्पथ १.	३१५४६	निस्सारण ३.	३१५४१	नीलदंष्ट्र १.	१११६७
निष्ठयान्ता २.	३१३१३५			नीलपीतल १.	५१३२१
निष्ठा २.	३१९१०९			नीलपुष्प १.	३१८५८
				नीललोहित १.	१११४०
				" १.	५१३१९
				नीलवासस् २.	२१३३६
				नीलवृष १.	३१६१२३

नीलशीर्ष]

शब्दालुक्रमणिका

[पक्षक

नीलशीर्ष १.	३।४।४१
नीलसितश्याम १.	५।३।१३
नीलाक्ष १.	२।३।५
नीलाङ्गा २.	४।१।३९
नीलाब्ज ३.	४।२।३५
नीलाम्बर १.	१।१।२४
नीलिक १.	३।५।१९
नीलिका २.	३।३।१८६
नीलिङ्गी २.	३।१।४२
नीलिनी २.	३।३।११०
नीली २.	३।३।११०
नीलीराग १. २. ३.	४।२।३४
नीलोत्पल ३.	४।२।३४
नीबलक १.	३।५।२४
नीवाक १.	३।८।६६
नीवार १.	३।८।५७
नीवि २.	४।३।१३०
नीवी २.	३।८।७०
नीवृत् १.	३।१।२१
नीव्र ३.	४।३।३७
नीहार १.	२।२।९
नु ४.	८।७।६
नुत १. २. ३.	५।४।१०६
नुति २.	३।१।३५
नुत्त १. २. ३.	५।४।९७
नुन्न १. २. ३.	५।४।९७
नूतन १. २. ३.	५।३।८६
नूतना २ व.	२।१।१८
नूतन १. २. ३.	५।४।८६
नूनम् ४.	८।७।२२
नूपुर १. ३.	४।३।१४५
नृ १.	३।५।१
” १.	४।४।३
नृगालिक १ व.	३।१।२८
नृङ्ग ३.	४।३।३
” ३.	४।३।४
नृतु १.	३।९।६३
नृत्त ३.	३।९।७३
नृप १.	३।७।१

नृपति १.	३।७।१
नृपलक्ष्मन् ३.	३।७।१६
नृपात्मज १.	३।३।१७०
नृपात्मजा २.	३।३।१६७
नृपार्हक ३.	३।८।१५६
नृलिङ्गक १.	३।९।११२
नृशंस १. २. ३.	५।४।२४
नृसिंह १.	१।१।१८
नृसेन २. ३.	८।९।३४
” २. ३.	८।९।३५
नेतृ १.	३।३।३७
” १. २. ३.	५।४।५७
नेत्र ३.	६।३।१७
नेत्रपिण्ड १.	४।४।९५
नेत्ररुज् २.	४।४।३२
नेम १. २. ३.	५।४।८६
” १. २. ३.	६।५।४७
नेमि १.	३।४।६६
” २.	३।७।१३५
” २.	४।२।८
” २.	६।२।२१
नेनिन् १.	३।३।४७
नेमीय १.	३।३।४७
नेरिन् १.	१।२।५२
नैकृत १. २. ३.	५।४।२२
नैकृतिक १. २. ३.	५।४।२२
नैगम २.	३।८।७२
” १.	७।१।३७
नैगमेय १.	१।१।५७
नैचिकी २.	३।४।४६
” २.	३।४।६०
नैपथ्य ३.	४।३।१३२
नैपाली २.	३।२।१७
नैयग्रोध १.	३।३।२२
नैर्ऋत १.	१।२।४०
नैर्ऋती २.	२।१।४
नैल ३.	३।१।८
नैषध ३.	३।१।६
नैष्किक १.	३।७।२१
नैष्ठिक १.	३।७।२१

नौ २.	४।२।१५
” २.	८।२।१७
नौजीविन् १.	३।९।४२
नौतार्य १. २. ३.	४।२।२०
नौशिरस् ३.	४।२।१७
नौस १. २. ३.	३।६।१२७
न्यक्ष १. २. ३.	६।४।९
न्यग्रोध १.	३।३।२७
” १.	४।४।८२
न्यग्रोधी २.	३।३।११३
न्यङ्कु १.	३।४।१५
” १.	६।१।३३
न्यच् १. २. ३.	५।४।८५
” १. २. ३.	५।४।९३
न्यर्तुद ३.	५।१।२८
न्यस्त १. २. ३.	५।४।१०४
न्यस्तक १. ३.	३।८।१२
न्याद १.	४।३।१०२
न्याय १.	३।७।४८
” १.	३।८।१५
न्यायगण १.	३।३।२९
न्याय्य १. २. ३.	५।४।१०३
न्यास १.	३।८।१२
न्युङ्क् १. २. ३.	५।४।१३५
न्युङ्ज १.	३।३।३७
” १. २. ३.	५।४।११
” १. २. ३.	५।४।९०
” १. २. ३.	६।५।४६
प	
पक्ति २.	६।२।२२
पक्तिका २.	३।८।४२
पक्ष ३.	३।८।१४३
” १. २. ३.	४।३।९३
” १. २. ३.	४।३।९५
पक्षण १. ३.	३।९।३२
पक्ष १.	२।१।७९
” १.	२।३।४९
” १.	६।१।३५
पक्षक १.	४।३।२४

पञ्चक]

वैजयन्तीकोषः

[पणव

पञ्चक ३.	४३१४२
पञ्चचर १. २. ३.	८१५१३
पञ्चति २.	२११७०
” २.	७२११३
पञ्चद्वार ३.	४३१४२
पञ्चभाग १.	३१७८१
पञ्चरचना २.	३१७१८६
पञ्चशाला २.	४३१२४
पञ्चाङ्ग ३.	२११५५
पञ्चान्त १.	३११७३
पञ्चिका २.	८११३
पञ्चिणी २.	२११५९
पञ्चिन् १.	२३११
पञ्चिपोत १.	२३१४
पञ्चिवन्धन ३.	३११४२
पञ्चिल १.	३१११५९
पञ्चिशाला २.	४३१२१
पञ्चमन् ३.	४२१४५
” ३.	४४१९५
” ३.	६३११९
पङ्क १.	३१८२६
” १.	६५१४८
पङ्कक्रीडनक १.	३१४६
पङ्कज ३.	४२१३७
” ३.	८११४०
पङ्करस १.	३११४७
पङ्किल १. २. ३.	३११४३
पङ्केरुह ३.	४२१३९
पङ्क्ति २.	५११२४
” २.	५११२६
” २.	५११३३
” २.	६२१२२
पङ्क्तु १. २. ३.	५१११४
पङ्क्तुल १.	३१७१०४
पचन ३.	३११२७
” ३.	५२१३२
पचम्पच १.	३३१८२
पचम्पचा २.	३३१२१३
पचा २.	५२१३२
” २.	८११४

पचि २.	१२११८
” २.	२३११८२
पज १.	३११११
पञ्चक ३.	३१७१०
पञ्चकृत्वः (-स्) ४.	८१८१६
पञ्चकोल ३.	३१८१८३
पञ्चलार १. २. ३.	८११५४
पञ्चगूढ १.	४१११६
पञ्चचीरोद्धित ३.	३१६५
पञ्चचूड १. २. ३.	३१६१२
पञ्चजन १.	३१५११
पञ्चजनीन १.	३१७२३
(पञ्चजनिनः)	
पञ्चत्व ३.	३१६२०२
पञ्चदशी २.	२११७३
पञ्चभद्र १.	३१७१३
पञ्चम १.	३१११३२
” १. २. ३.	५११२०
पञ्चलक्षण ३.	३१४३८
पञ्चलोह ३.	३१२२८
पञ्चवक्त्र ३.	८१६२२
पञ्चवायु १. २. ३.	३१६२०३
पञ्चशाख १.	४१४७३
पञ्चप १. २. ३.	५११२६
पञ्चसुगन्ध ३.	४३११५२
पञ्चहस्त १.	३११५८
पञ्चाङ्गी २.	३१७२१३
पञ्चाङ्गुल १.	३३३६५
पञ्चामृत ३.	४३१९१
पञ्चाशत् ५११२६	
पञ्चास्य १.	३१४११
पञ्चिका २.	३११५९
पञ्चेषु १.	१११२८
पञ्चोपण ३.	३१८११
पञ्चर ३.	२३१४९
पञ्जिका २.	१२१३६
पट १.	३३१५७
” १. ३.	४३११६
” १. २. ३.	८११३७

पटकुटी २.	४३१२५
पटचर १ व.	३११४१
” १.	३११५७
” ३.	४३१२७
पटचोर १.	३११५७
पटल ४.	४३१३७
” १.	७५५२
पटली २. ३.	५११६
पटवासक १.	४३१५७
पटह १. ३.	३११३४
” १.	३११३८
पटी २.	८११३७
पट्ट १.	३३१६५
” १. २. ३.	३१७१४७
” ३.	३१८१२०
” ३.	३१८१२३
” १. २. ३.	४४१४३
” १.	५३१२६
” १. २. ३.	५४१५४
पट्टच्छद १.	३३१६४
पट्टञ्चिका २.	३४१४९
पटोलक १.	३३१६५
पटोली २.	३३१५९
पट्ट १.	३१७१५४
” १.	४४१४०
” १.	६११३४
पट्टन ३.	४३३३
” ३.	४६३३
पटवन्ध १.	३१५६२
पट्टस १.	३१७१६४
पठि १.	३३३२३
पट्टवीश १.	३१७८६
पण १.	३१८६९
” १.	३११६०
” १.	५११३८
” १.	५११३८
” १.	५११३९
” १.	५११४५
” १.	६११३४
पणव १.	३११३४
” १.	७११५२

पणिक]

शब्दानुक्रमणिका

[पद्याख

पणिक ३.	३६१८८	पताकिनी २.	३७५५	पत्री २.	८१६३२
„ १.	४३३३४	पति १.	४४३७	पत्रोर्ण १.	३३३६८
पणित १. २. ३.	५४१०६	„ १.	५४५८	„ १.	४३११८
पणितव्य १. २. ३.	३८६९	पतिंवरा २.	४४३७	पथिकृत् १.	१२२५
पणायित १. २. ३.	५४१०६	पतिघ्नी २.	३६५३	पथिन् १.	३१४९
पण्ड १. २. ३.	३४५९	पतित १. २. ३.	३७२१९	पथ्या २.	३३१७८
„ १.	४४३	पतितोत्पन्ना २.	३६४९	पद् १.	४४५६
पण्डा २.	३६१६४	पतिवत्नी २.	४४१४	पद् ३.	२११७
„ २.	३६१६५	पतिव्रता २.	४४३७	„ ३.	४४५६
पण्डित १.	३६१३४	पतेर १.	४१३	„ ३.	६३१८
पण्य १. २. ३.	३८६९	पत्तन ३.	४३४	पदपणिका २.	३३१३६
पण्यभू २.	४३३५	पत्ति २.	३७५७	पदभञ्जना २.	३६३१
पण्यवीथी २.	४३३५	„ १.	३७१३९	पदवस्मीक १.	४४१३३
पण्यस्त्री २.	४४२४	„ २.	४३१४९	पदवी २.	३६४९
पण्याजीव १.	३८७२	पत्तिच्छेद १.	४३१४८	पदाजि १.	३७१३९
पतग १.	२३१	पत्तर १.	३३१५६	„ १.	७१५४
पतङ्ग १.	२३१	पत्नी २.	४४३५	पदाति १.	३७१३९
„ १.	२३१४३	पत्नीसन्नहन ३.	३६८९	पदातिक १.	३७१३९
„ १.	४११४०	पत्र १.	३३१६	पदिक १.	३१५१
„ १.	७११४०	„ १.	६३२०	पद्म १.	३७१४०
पतङ्गना २.	३८४९	„ १. २. ३.	८१३२	पद्धति २.	५१२४
पतङ्गी २.	२३१४८	पत्रक ३.	३८१२८	„ २.	७२१५
पतञ्जलि १.	३६१५७	„ ३.	४३१४९	पद्म १.	१२६०
पतत् १.	२३१	पत्रकृत १.	३८१८४	„ १. ३.	३३१९५
पतत्र ३.	२३१४९	पत्रणा २.	३७१८६	„ ३.	३७८२
„ ३.	३३१७	पत्रताली २.	३३२२४	„ १. ३.	४२३६
„ ३.	७३२२	पत्रपरशु १.	३१२५	„ ३.	५१३२
पतत्रि १.	२३१	पत्रपाश्या २.	४३१३६	„ ३.	५३१२
पतत्रिन् १.	२३१	पत्रफला २.	३७१६४	„ १. २. ३.	६५४८
पतद्ग्रह १.	४३१६०	पत्रमध्यसिरा २.	३३१४३	„ १.	८६१२
पतन ३.	३३१६	पत्ररथ १.	२३१	पद्मकर्कटी २.	४२४६
„ ३.	३६११६	पत्ररेखा २.	४३१४९	पद्मकासनिन् १.	३६२११
पतयालु १. २. ३.	५४३८	पत्रल ३.	३८१४३	पद्मचारिणी २.	३८८९
पताक १.	४४७९	पत्रला २.	३३२२४	पद्मानाभ १.	१११५
पताका २.	३७१३३	पत्रसारक १.	३८१२८	पद्मपत्र ३.	३८८८
„ २.	३७१९३	पत्राङ्ग ३.	३८११५	पद्मबन्धु १.	२१११
पताकिन् १. २. ३.	३७१४५	पत्राङ्गुलि २.	४३१४९	„ १.	२१५६
		पत्रिणी २.	४४२८	पद्मा २.	३३१००
		पत्रिन् १.	२३१	„ २.	३८८१
		„ १.	३७१७९	„ २.	३८८९
		„ १.	६१३२	पद्माक्ष ३.	४२४६

पद्मालया]

वैजयन्तीकोषः

[परिचिस

पद्मालया २.	१।२।३६	परजात १	३।१।२	पराचल १.	३।२।३
पद्मासन ३.	१।१।७	„ १. १. ३.	५।४।४९	पराचीन १. २. ३.	५।४।९१
„ ३.	३।६।२०५	परतन्त्रक १. २. ३.	५।४।२८	पराजक १.	३।५।६
पद्मासनिन् १. २. ३.	३।६।१३४	परन्तप १. २. ३.	५।३।६९	पराजित १. २. ३.	३।७।२१९
पद्मिन् १.	४।२।४३	परपिण्डाद् १. २. ३.	५।४।४९	पराञ्जन १.	५।३।४४
पद्मोत्तर ३.	३।८।९१	परभाग १.	५।२।३	पराधीन १. २. ३.	५।४।२८
पद्य १. २. ३.	३।१।४७	परभृत् १.	२।३।१६	परान्न १. २. ३.	५।४।४९
„ १.	३।९।१	परमन्थु १.	१।२।५	पराभव १.	८।१।२६
पद्यमात्रिका २.	२।४।४२	परमम् ४.	८।८।१७	पराभूत १. २. ३.	३।७।२१९
पद्या २.	३।१।४९	परमात्मन् १.	३।६।१६१	परायण ३.	३।६।१४५
पनस १.	३।३।७४	परमान्न ३.	४।३।७७	„ ३.	८।५।१३
पनायित १. २. ३.	५।४।१०६	परमेश्वर १.	१।१।४१	परारि ४.	८।८।१०
पनित १. २. ३.	५।४।१०६	परमेष्ठिन् १.	१।१।८	परारिका २.	३।३।२०७
पन्न १. २. ३.	५।४।१०२	परमेष्ठिनी १.	१।१।६०	परार्थोक्ति २.	३।१।३७
„ १. २. ३.	५।४।११५	परम्पर १.	३।४।५५	परार्थ्य १. २. ३.	५।५।६४
पन्नग १.	४।१।६	„ १.	४।४।४६	परार्थ १. २. ३.	५।१।२९
पन्नगारि १.	१।१।३८	परम्परा २.	५।२।३९	परालिनी २.	४।३।४४
पपा २.	४।४।१३६	परम्पराक २.	३।६।९४	परावसु ३.	३।६।१४५
पय १.	३।९।१२४	परम्परावाहन ३.	३।७।१३७	पराविद्ध १.	१।२।५७
पयस् ३.	३।८।१४५	परवत् १. २. ३.	५।४।२८	„ १.	३।५।१८
„ ३.	४।२।२	परशु १.	३।८।१३१	„ १.	४।३।३६
„ ३.	६।३।२०	„ १.	३।९।३५	पराशक १.	३।३।२३०
पयस्या २.	३।६।९८	परशुभृत् १.	१।१।५४	पराशर १.	३।६।१५५
पयस्विनी २.	४।२।२२	परश्वः (-स्) ४.	८।८।९	परास ३.	३।२।३१
पयोगर्भ १.	२।२।२	परश्वध १.	३।९।३५	परासन ३.	३।७।२१४
पयोण्ड १.	३।३।७४	परस्पर १. २. ३.	५।४।१२३	परासु १. २. ३.	३।७।२२०
पयोधर १.	८।१।२७	परस्वत् १.	३।४।११	परास्कन्दिन् १.	३।९।५६
पयोवहा २.	४।२।२०	परा २.	३।३।१३४	परि ४.	८।७।२५
पयोव्रत ३.	३।६।१४७	„ २.	३।३।२२१	परिकर १.	८।१।३३
पर १.	३।६।१६१	„ ४.	८।७।२६	परिकर्मन् ३.	४।३।११२
„ १.	३।७।४१	पराक १.	३।६।१४४	परिकर्मिन् १.	३।९।३
„ ३.	३।८।१०५	पराकार १.	५।२।२१	परिकर्ष १.	३।७।७२
„ ३.	५।१।२९	पराक्रम १.	३।७।२०९	परिकल्पना २.	३।६।१९६
„ १. २. ३.	५।४।१४२	„ १.	८।१।५०	परिक्रम १.	५।२।२८
„ १. २. ३.	६।५।४९	पराग १.	७।१।४२	परिक्रूरा २.	३।३।१०५
परकुल १.	४।१।५४	पराच् ४.	५।४।९१	परिक्रोणा २.	३।३।२२१
परच्छन्द १. २. ३.	५।४।२७			परिचिस १. २. ३.	५।४।१०८

परिचेष १.	८११३०	परिपेलव ३.	३३३२०१	पविन्याण ३.	३३३१०५
परिखा २.	४३११३	परिप्लव १.	२३३१२२	परिव्याध १.	३३३३३०
परिगत १. २. ३.	८१४१७	" १. २. ३.	५४४७६	" १.	३३३३७२
परिग्रह १.	२११३०	परिप्लाविन् १.	२३३१६	परिवान् १.	३३३१६०
" १.	४१४५१	परिवर्ह १.	४३३१५८	परिशाथ १.	४३३१६८
" १.	८११३०	" १.	८११२८	परिशुष्क ३.	४३३८८
परिघ १.	३३७१७१	परिवृढ १. २. ३.	५४४५८	परिषद् २.	३३८१३
" १.	७११४१	परिभव १.	३३३१७१	परिष्कार १.	४३३१३३
परिघातन १.	३३७१७१	परिभाषण ३.	८३३१५	परिष्वङ्ग १.	४३३१६९
परिचय १.	३३७१९५	परिभोक्तृ १. २. ३.	५४४२५	परिसर १.	४३३१२
" १.	५१२३१			परिसर्प १.	५१२२८
परिचर १. २. ३.	३३७१४१	परिमण्डल १.	३३७१९९	परिसर्पा २.	५१२२८
		" १. २. ३.	५४४८२	परिस्कन्द १.	३३९१२
परिचर्या २.	३३६३८	परिमल १.	५३३५२	परिस्कन्ध ३.	४३३१५८
परिचारक २.	३३९१२	" १.	८११२८	परिस्तोम ३.	४३३१६६
परिचारिका २.	३३७३६	परिमोषिन् १.	३३९१५५	परिस्पन्द १.	४३३५१
परिच्छद १.	३३५८	परियष्टृ १.	३३६७४	परिस्त्रावी २.	४३३३३१
" १.	४३३१५८	परिरम्भ १.	४३३१९४	परिस्तुत २.	३३९४५
परिजन १.	४३३५१	परिवत्सर १.	२११९०	परिस्तुता २.	३३९४५
परिजम्न १.	२११२४	परिवर्जन ३.	३३७११४	परिहार १.	५१२१७
परिणत १.	३३७७८	परिवर्त १.	३३८७१	परीक्षक १. २. ३.	५४३३०
परिणय १.	३३६५४	" १.	८११२९	परीच्छा १.	३३६१२२
परिणाम १.	५१२२४	परिवसथ १.	४३३२	परीतत् १. ३.	४३३१३३
परिणाय १.	३३९६१	परिवसित १. २. ३.	५४३१०५	" १. ३.	८१२३१
परिणाह १.	५१२५			परीवाप १.	८११२९
परितः (-स्) ४.	८१७३२	परिवाच् २.	२४३३५	परीवार १.	३३७१६८
" ४.	८१८३	परिवाद १.	२४३३२	परीवाह १.	४३३३१
परिताप १.	४३३१२२	" १.	३३९१२१	परीष्ट १.	३३६७४
परित्राण ३.	४३३१०५	परिवादिनी २.	३३९११७	परीष्टि २.	७२१५५
परित्राणी २.	३३३१०९	परिवापण ३.	३३६४	परीसार १.	५१२२८
परिदेवन ३.	२४३२९	परिवार १.	४३३५१	परीहास १.	३३९८८
परिधान ३.	४३३१२१	" १.	८११२८	परु १.	३३४२९
परिधि १.	३३४९	परिवारक १.	४३३६८	परुका २.	३३३१०३
" १.	७११४१	परिवित्त १.	३३६४३	परुत् ४.	८१११०
परिधिस्थ १. २. ३.	३३७१४१	परिवित्ति १.	३३६४३	परुल १.	३३७९१
		परिवी २.	३३९६०	परुष १. २. ३.	२४३२१
परिपण ३.	३३८१०	परिवृक्ति २.	३३७३१	" १.	३३३१२२
परिपत् १.	३३८२६	परिवेत्तृ १.	३३१४२	" १.	५३३३
परिपत्र ३.	४३३१०३	परिवेष १.	३३१५९	" १. २. ३.	७३३२०
परिपन्थिन् १.	३३७४२	परिवेषक १.	२१३३१	परुस् १.	३३३११
परिपाटी २.	३३६११४	परिवेषण ३.	४३३१००	परेत १.	१२३३८

परेत]

वजयन्तीकोपः

[पवित्र

परेत १. २. ३.	६।५।५२	पर्यवस्था २.	५।२।३०	पलाश ३.	३।३।१६
परेतराज १.	१।२।३४	पर्यवस्थानृ १.	३।७।४२	" १.	३।३।२९
परेद्यवि ४.	८।८।९	पर्यस्ति २.	३।६।१५०	" १.	३।३।२०३
परेष्टुका २.	३।५।४९	पर्याण ३.	३।७।११४	पलाशिका २.	३।३।१९५
परैधित १.	३।९।२	पर्याधानृ १.	३।६।७४	पलाशिनृ १.	७।१।५४
" १. २. ३.	५।४।४९	पर्यास ३.	४।३।१०५	पलिकिनी २.	३।४।६३
परोक्ष १. २. ३.	५।४।१३३	" १. २. ३.	७।५।५३	पलिकनी २.	३।४।४६
परोवण्ट १.	३।७।१९८	पर्यासम् ४.	४।३।१०४	" २.	४।४।२१
परोष्णी २.	२।३।४४	पर्याय १.	३।६।११३	पलित ३.	३।८।७९
पर्कट १.	२।३।३१	" १.	७।१।५५	" ३.	५।४।१४४
" ३.	३।३।२१७	पर्याहार १.	३।७।४५	" १. ३.	७।५।५२
पर्कटिन् १.	३।३।२८	पर्याहित १.	३।६।७४	पलिन १.	३।५।१९
पर्जनी २.	३।३।२१२	पर्युद्ञ्जन ३.	३।८।४	पलिपादक ३.	३।७।७५
पर्जन्य १.	७।१।४२	पर्येपणा २.	३।६।१२१	पल्लप १.	५।३।४२
पर्ण ३.	३।३।१७	पर्वत १.	३।२।१	पल्लोद्भव ३.	४।४।१०७
" १.	३।३।२९	पर्वन् ३.	२।१।७३	पल्यङ्क १.	४।३।१६५
" १.	८।६।१२	" ३.	३।३।११	पल्ययन ३.	३।७।११४
पर्णश १. २. ३.	३।६।१३१	" ३.	३।६।६२	" १.	४।४।४६
पर्णशवर १.	३।५।४७	" ३.	६।३।१९	पल्ल १.	३।५।१४
पर्णशाला २.	४।३।२६	" १. ३.	८।९।३१	पल्लव १. ३.	३।३।१७
पर्णादा २.	३।४।६३	पर्शु १. ३.	४।४।११५	" १.	४।४।३९
पर्णास १.	३।३।११९	पल ३.	४।४।१०६	" १. ३.	७।५।५८
पर्णिका २.	३।३।१२४	" ३.	५।१।४५	पल्लवाङ्कुर १.	३।३।१५
पर्दन ३.	२।४।८	" ३.	५।१।४६	पल्ली २.	४।१।३०
पर्पट १.	२।४।१२८	" ३.	५।१।५१	" २.	४।३।२७
पर्पटी २.	३।२।४१	पलगण्ड १.	३।९।१४	" २.	६।२।२३
" २.	३।३।२१३	पलगण्डक १.	३।५।४८	पव १.	३।८।४६
पर्पण १.	३।३।१०७	पलङ्कप १.	३।८।११२	(पल)	
पर्परा २.	३।३।२१३	पलङ्कषा २.	३।३।१४१	" १.	५।२।३१
पर्परी २.	४।४।९९	पलतेजस् ३.	४।४।१०७	पवन १.	१।२।४९
पर्परीक १.	८।१।२५	पलल १.	३।३।६९	" १.	१।२।५३
पर्यङ्क १.	३।६।२१३	" ३.	४।४।१०६	" ३.	४।३।६६
" १.	४।३।१६५	" ३.	७।३।२१	" ३.	५।२।३१
" १.	७।१।५२	पलशत ३.	५।३।६०	पवमान १.	१।२।२४
पर्यटन ३.	५।२।११	पलशीनक १.	५।३।५०	" १.	१।२।४८
पर्यनुयोग १.	२।४।३७	पलाण्डु १.	३।३।२०५	" १.	८।१।२७
पर्यन्तपर्वत १	३।१।७	" १.	३।३।२०७	पवि १.	१।२।१३
पर्यन्तभू २.	४।३।१२	पलाण्डुक १.	३।३।१५३	" १.	६।१।३३
पर्यय १.	३।६।११४	पलायन ३.	३।७।२१०	पवित्र ३.	३।२।२२
		पलाल १. ३.	३।८।६४	" ३.	३।६।२०
				" १.	३।८।५२

पवित्र ३.	४२।४०	पाकशासन १.	१।२।३	पाण्ड्य १ ब.	२।१।३३
” १. २. ३.	५।४।६५	पाकशुक्ला २.	३।२।१३	पाण्डु १.	३।३।२२२
” १. २. ३.	७।५।५८	पाकु २.	८।९।३	” १.	५।३।१२
पशु १.	३।४।३०	पाक्य ३.	३।८।१२२	पाण्डुक १.	३।५।२७
” १.	३।४।६२	” ३.	३।८।१२४	पाण्डुकम्बलिन् १. २. ३.	३।७।१२९
” १.	३।४।७२	पागल १.	३।५।१५	पाण्डुभूम १. २. ३.	३।१।४५
” १.	३।६।८४	पाचन १.	५।३।२६	पाण्डुल १.	५।३।१४
” १.	३।६।११२	पाज १.	४।३।७६	पाण्डुवर्णक १.	४।४।१३७
” ४.	८।८।२१	पाञ्चजन्य १.	१।१।१७	पाण्डुसोपाक १.	३।५।४३
पशुगोशुग १.	५।१।१८	पाञ्चमिक १.	५।१।५९	” १.	३।५।१०६
पशुपति १.	१।१।३८	पाञ्चालिका २	३।९।१४	पाण्ड्य १ ब.	३।१।३३
” १.	८।१।२६	पाट् ४.	८।८।२	पात २.	४।४।५४
पशुबन्ध १.	३।६।८४	पाटल १.	५।३।१७	पातक ३.	३।६।१६८
पशुसंस्कार १.	३।६।९३	” १. २. ३.	७।५।५६	पातन ३.	३।७।१७४
पश्चात्ताप १.	३।६।१८५	पाटला १. २. ३.	३।३।२३	पाताल ३.	४।१।१
पश्चात्सुन्दर १.	३।३।१५७	पाटलि १. २.	३।३।९०	” ३.	७।४।२२
पश्चिम १. २. ३.	५।४।७७	पाटलिङ्गिका २.	३।८।४९	” ३.	८।३।१८
पश्चिमाङ्ग ३.	४।४।६९	पाटली २.	३।६।६२	पातालमूलिक १. २. ३.	३।६।१२९
पश्यतोहर १.	३।९।५७	पाटव ३.	४।४।१४२	पाताली २.	७।२।१७
पद्यौही २.	३।४।४७	पाट्टर १.	२।१।७०	पातिक १.	३।७।१४०
पांसु १.	३।८।२५	पाठक १.	३।३।२३	पातुक १. २. ३.	५।४।३८
पांसुचन्दन १.	१।१।३८	पाठा २.	३।३।१३१	पात्म १.	२।१।८८
पांसुज ३.	३।८।१२३	पाठीन १.	४।१।४२	पात्र ३.	२।३।२६
पांसुलवण ३.	३।८।१२२	पाणि १.	४।४।७३	” ३.	३।६।१४६
पांसुला २.	४।४।१०	” १.	५।१।४९	” ३.	३।९।६८
पाक १.	३।३।८३	” १.	८।६।९	” ३.	४।२।३२
” १.	३।८।४५	पाणिक १.	५।१।३८	” ३.	५।१।५५
” ३.	५।२।४१	पाणिगृहीती २.	४।४।३५	” ३.	६।३।२१
” १.	६।१।३३	पाणिग्रह १.	३।६।५५	” १. २. ३.	८।९।३८
” १.	८।९।१४	पाणिघ १.	३।७।१	पाथस् ३.	४।२।२१
पाककृष्ण १.	३।३।८३	पाणिनि १.	३।६।१५४	” ३.	६।३।२०
पाककृष्णफल १.	३।३।८३	पाणिन्युपज्ञ ३.	३।९।२१	पाथि १.	२।१।१३
पाकपुटी २.	४।३।२३	पाणिपात्र १. २. ३.	३।६।१३२	पाथिस ३.	६।३।२१
पाकफल १.	३।३।८३	पाणिमुक्त ३.	३।७।१९५	पाथेय ३.	३।९।७
पाकफलकृष्ण १.	३।३।८३	पाणिमूल ३.	४।४।७३	पाथोवक्रा २.	३।३।२१९
पाकमण्डल ३.	३।९।२७	पाणिरूह १.	८।५।७६	पाद १.	२।१।१६
पाकयज्ञ १.	३।६।८३	पाणिवाद १.	३।९।७१	” १.	३।२।७
पाकयज्ञिक १.	१।२।२७	पाणिश १.	३।५।२०	” १.	४।४।५६
पाकल १.	३।७।९१	पाण्डर १.	५।३।१०		
” ३.	३।८।९९	” १.	५।३।१२		
पाकवर्तन ३.	५।२।४१				

पाद]

वैजयन्तीकोषः

[पालन

पाद १.	पा२१७	पाप्मन् १.	३६११७८	पारि २.	६१२२४
पाददण्ड १.	३१७१८३	पाप्मन् १.	४१४१२३	पारिकर्मिक १. २. ३.	३१७१९
पादप १.	७११४५	पाप्मन् १. २. ३.	४१४१४५	पारिकाङ्क्षिक १. २. ३.	३६१२६
पादपच्छाय १. २. ३.	८११३४	पाप्मन् १.	३१५५०	पारिजातक १.	१३११४
पादपाश १.	३१७११२	" १. २. ३.	५१४१२	" १.	३३१४४
पादपुटी २.	३१७११५	" १. २. ३.	७१४२०	पारितथ्या २.	४३११३६
पादप्रसार १.	३६१२१७	पामा २.	४१४१२३	पारिन् १.	४११५४
पादफली २.	३१७११५	पामारि १.	३१२११४	पारिपन्थिक १.	३१९५६
पादरक्षणी २.	३१७१५५	पायस ३.	३१८१०९	पारिपार्श्विक १.	३१९६७
पादरक्षिणी २.	४३११६२	" ३.	४३१७७	पारिप्लव १. २. ३.	५१४७९
पादवाहिक १.	४१११८	पायु १.	४१४६०	पारिभद्र १.	३३१५४
पादस्फोट १.	४१४१२२	पाय्य १.	५११६४	" १.	३६१७१
(पादः, स्फोटः)		पार १.	४२१३२	पारिभाव्य ३.	३१८१९९
पादात १.	३१७१३९	पारत १.	३१२१४४	पारियाणिक १. २. ३.	३१७१२८
" ३.	५११११	पारद १ व.	३११२८	पारियान्नक १.	३२१३
पादायुध १.	२३११४	पारधेनुक १.	३१५२२	पारिषद १.	१११५१
पादावर्त १.	४१२२१	" १.	३१५८४	परिहार्य ३.	४१४१४४
पादिक ३.	३१७१४०	पाररक्षिक १.	३६११६०	परिहाण्य १.	५३१५०
" १.	५११३८	पारशव १.	३२१३४	पारी २.	४३१५९
" ३.	५११५२	" १.	३१५४	पारीन्द्र १.	३१४११
पादिका २.	४३१३९	" १.	३१५६८	पारे ४.	८१८२१
(पालिका)		" १.	३१५७३	पार्थिव १.	३१७११
पादिकाशीर्ष ३.	४३१४०	" १.	३१५७६	पार्थिवेन्द्र १.	१११२२
(पालिकाशीर्ष)		" १.	८११३२	पार्वण ३.	३६१८३
पादुका २.	३१७५०	पारश्वधिक १. २. ३.	३१७१४४	पार्वत १.	३३१७५
" २.	४३११६२	पारसीक १.	३१७१४४	पार्वती २.	१११५८
पादू २.	६१२२४	" १.	३१७१४४	" २.	३२११६
पादूकृत् १.	३१९४३	पारसीककुल ३.	३१११९	पार्श्व १. ३.	४१४६९
पादोपवेश १.	३६१२१२	पारायण १.	३६११४५	" ३.	५१११४
पान १.	३६१२०४	" १.	८३१९	" १. ३.	६१५५१
" ३.	४३११०	पारावत १.	३३११४	पार्श्वस्थ १.	३१९६९
पानगोष्ठिका २.	३१९५०	" १.	३१५१०	पार्श्वोदरप्रिय १.	४११४६
पानीय ३.	४२१२	" १. २. ३.	८१५१५	पार्णि १.	३१७७९
पानीयशालिकार.	४३१२३	पारावतपदी २.	३३११४०	" १. २.	६१५४०
पानीयसम्भव ३.	३१८१२२	पारावर १.	३१५९४	पार्णिग्राह १.	३१७४०
पाप १.	३३११७७	पारावार १.	४२११२	" १. २. ३.	३१७१४१
" १.	३६११६८	पाराशरिन् १.	३६११६०	पालन १.	३३१२३४
" १. २. ३.	६१५५०	पाराशर्य १.	१११३२	(वालन)	
पापवेली २.	३३११३०				

पालन]

शब्दानुक्रमणिका

[पितृव्य

पालन १.	४११४६	पिङ्गल १.	४११२७	पिण्ड १.	३२११५
पालाश १.	५३२२२	" १.	५३११८	" १.	४३११०१
पालि १.	३६१५०	पिङ्गलकेशाक्षी २.		" १.	६११३१
" २.	३६१२६		३६१५२	पिण्डक १.	१३३४
" २.	४४१९३	पिङ्गला १.	२११९	" १.	३६१११०
" २.	६२१२२	" २.	२३२२१	" १.	४३१४५
पालिकाष्ठ ३.	४३१५०	पिङ्गाण १.	५३११३	पिण्डफला २.	३३११६७
पाली २.	३६१४९	पिचण्ड १.	७११५७	पिण्डा २.	३३२२११
" २.	३९११२६	पिचण्डिल १. २. ३.		पिण्डारक १.	३३१७८
पालुखञ्जन १.	३५११०		५४१७	" १.	३३१४४
पालुपी २.	४४१३५	पिचिण्ड १.	४३१८९	पिण्डि १.	४३१७०
पालुक १.	३९१५	पिचिण्डिका २.	३९१५८	" १.	६११३४
पाल्लवा २.	८९१६	पिचु १.	३९१९	पिण्डिका २.	४४१५८
पावक १.	१२११५	" १.	५११४९	" २.	७२११४
" १.	३३१८६	पिचुमन्द १.	३३१७५	पिण्डित १. २. ३.	७४११९
" १.	३६१९२	पिचुल १.	३३१५०	पिण्डिल १. २. ३.	७४११७
पावन १.	३६११११	" १.	३३१७६	पिण्डीक १.	३३१७८
पावनक १.	३६११३०	पिचूल ३.	५११४७	पिण्डीतक १.	३३१४९
पावनी २.	३६११५	पिच्छट ३.	३२१३०	पिण्डीशूर १. २. ३.	
पाश ३.	३९१३०	पिच्छनद १.	३३१२०६		५४१७०
" १.	६११३७	पिच्छन्दका २.	४३१३१	पिण्डघ १.	४४१९२
पाशक १.	३९१६०	पिच्छा २.	४३१८०	पिण्या २.	३३११४८
पाशबन्धन २.	३४१६१	पिच्छित १. २. ३.		पिण्याक १.	३९१२७
(पादबन्धन)			५४१८३	" १.	७११४६
पाशिन १.	१२१४५	पिच्छिल १. २. ३.		पितामह १.	४४१२९
पाशुपत १.	३३११९४		५३१४	" १.	८११२८
पाशुपात्य ३.	३६१४	पिच्छिला २.	३३१९२	पितृ १.	४४१२९
पाशुबन्धक १.	१२१२५	पिच्छीला २.	३९११२६	" १.	४४१४७
पाश्चात्य १ ब.	३११३	पिच्छ ३.	२३१३९	" १ ब.	४४१४९
" १. २. ३.	५४१७७	" ३.	६३१२१	पितृकार्य ३.	३६१६६
पाश्या २.	५१११४	पिञ्ज १.	५३११३	पितृज्येष्ठ १.	४४१३२
पाषण्ड १.	३६१२३८	पिञ्जा २.	३३१२११	पितृदान ३.	३६१६४
" १.	३६१२३९	पिञ्जप १.	५३१२४	पितृनस्व १.	३११५९
पाषाण १.	३२१८	पिट १.	४३१६४	पितृपति १.	१२१३३
पाषाणदारक १.	३९१२२	पिटक १.	४३१६३	पितृपितृ १.	४४१२९
पाषाणपुष्प १.	३६१९६	" १.	४३१६४	पितृप्रपा २.	३६१६७
पासि १.	२१११४	" १. २. ३.	४४११२३	पितृप्रसू २.	२११६९
पिक १.	२३१२६	" १. २. ३.	८११३७	पितृभोजन ३.	३६१६४
पिङ्ग १.	४१११४	पिटका २.	४४११२३	पितृयाण १.	२११४६
" १.	५३११८	" २.	८११३७	पितृवन ३.	३११४८
पिङ्गल ३.	३३१२०२	पिटर १.	४३१५५	पितृव्य १.	४४१३१

पितृवस्त्रीय]

वैजयन्तीकोषः

[पुञ्जील

पितृवस्त्रीय १.	४१४४२	पीठर ३.	३३२००	पीथ ३.	३१८१३८
पित्त ३.	४१४१२१	पीठीव ३.	४१४६०	" ३.	३१८१४५
पित्तल ३.	३२१२६	पीडन ३.	३१७२०७	" ३.	६३३२२
पित्त्या २.	२११७२	पीडा २.	३१६१८७	पीन १. २. ३.	५४६
पित्तसत् १.	२३११	" २.	६२१२५	पीनकोशी २.	३१८६५
पिधान ३.	२११६४	पीडित १. २. ३.	५४११५	पीनस १.	४१११४
" ३.	४३१५५	पीत १.	३२११४	" १.	४११२१
पिनद्ध १. २. ३.	३१७१४२	" १.	५३१११	पीनस्कन्ध १.	३१४५
पिनाक १.	१११५०	पीतकङ्कु २	३१८५६	पीनस्तनी २.	३१४४९
" १. ३.	७५५५७	पीतघोषा २.	३३१६२	पीनाह १.	४२१८
पिनाकिन् १.	१११३९	पीतचन्दन ३.	३१८११३	पीनोद्धनी २.	३१४४९
पिपतिपत् १.	२३११	पीततण्डुला २.	३१८५५	पीयू १.	६११३२
पिपासा २.	३१६१८१	पीतदारु ३.	३३३७१	पीयूष ३.	३१८१४६
पिपासित १. २. ३.	५४३३७	" १.	३३३१२	" ३.	७३३२३
पिपासु १. २. ३.	५४३३७	" ३.	३१८११४	पीलु १.	३३३४५
पिपीलिका २.	४११३६	पीतधातु १.	३२१११	" १.	६११३२
पिप्पल ३.	३३३२०	पीतधूमल १.	५३३२०	पीलुक १.	२३३४
" १.	३३३२७	पीतन ३.	३२११४	पीलुकुण १.	८१११४
" ३.	४१४६८	" १.	३३३३१	पीलुनी २.	३३११४
पिप्पलक १.	३१९१२	" ३.	३१८११७	पीलुपर्णिका २.	३३११४
पिप्पली २.	३१८७३	पीतपुष्प १.	३३३१७०	पीलुपर्णी २.	३३११४७
" "	३१८७६	पीतमुण्ड १.	२३३१९	पीवन् १. २. ३.	५४६
पिप्पलीमूल ३.	३१८९१	पीतरक्त १.	५३३१७	पीवर १.	३३३३९
पिप्पिका २.	२३३२४	पीतरसा १.	३३३१३९	" १.	५४६
पिप्पु १.	४१४९७	पीतल ३.	५३३११	पीवरी २	३३३१४२
पिलाट १.	३१७७३	पीतलिका २.	३१७७३	पुंश्रली २.	४१४९
पिल्ल १.	६१४५	पीतलोह ३.	३२१२५	पुंस् १.	४१४२
पिशङ्ग १.	५३३१८	पीतलोहित १.	५३३२०	" १.	८११६१
पिशाच १.	१३३४	पीतश्यामल १.	५३३२०	पुंसवन ३.	३३३३
" १.	७११५७	पीतसागर १.	३३३१५१	" ३.	३१८१४५
पिशित ३.	४१४१०७	पीतशाल १.	३३३३९	पुंहल १.	४१४१२५
पिशुन १. २. ३.	५४१२५	पीतसितासित १.	५३३१२	पुङ्ख १.	३१७१८५
पिष्ट १.	५११५५	पीतहरित १.	५३३२१	" १.	६११३३
पिष्टक १.	४३३७२	पीता २.	३३३२११	पुङ्गर्भ १.	४१४३९
पिष्टपचन ३.	४३३५७	पीताम्बर ३.	१११११	पुङ्गव १.	७११५७
पिष्टपिण्डका २.	४३३७२	पीताम्लान १.	३३३१८८	पुङ्गाह १.	३१७१००
पिष्टात १.	४३३१५७	पीति १.	३१७९१	पुच्छ १. ३.	३१४७४
पीठ ३.	४१४१६४	" १. २.	६१५५१	पुच्छभाग १.	३१७८१
पीठवन्धन १.	४१४८०	पीतु १.	२३३३	पुञ्ज १.	५११३
पीठमर्द १.	३१९७०	पीथ १.	१२११९	पुञ्जिका २.	२२१७
				पुञ्जील १.	३३३२३

पुट २.	३५१२८	पुनरुद्धा २.	३६१४५	पुरीष ३.	४४१११८
" १. २. ३.	३९१३३	पुनर्नव १.	४४१७६	पुरु १. २. ३.	५४१८५
" १.	४३११	पुनर्नवा २.	३३११४६	पुरुष १.	१११८
" १.	४३१६४	पुनर्भव १.	४४१७६	" १.	४४१२
" १. २. ३.	८११३७	पुनर्भू २.	३६१४५	" १.	७११४६
पुटकिनी २.	४११४४	पुनर्भूज १.	४४१४५	पुरुषव्याघ्र १.	२३१३०
पुटभेद १.	४११३०	पुनर्भुवन् १.	२११२५	पुरुषाद १.	१११४१
पुटभेदन ३.	४३१३	पुनर्वसु १.	२११३९	पुरुषोत्तम १.	११११२
पुटानिल १.	१११५३	" १.	३६१५८	पुरुह १. २. ३.	५४१८५
पुटी २.	३९१३३	पुत्राग १.	३३१७०	प्ररुहृत १.	१११२
" २.	८११३७	पुष्पिका २.	४४१६३	पुरोग १. २. ३.	३७१४५
पुण्ड्र १.	६११३२	पुर् २.	३६१६३	पुरोगम १. २. ३.	
पुण्ड्रक १.	५३११०	" २.	४३११		३७१४६
पुण्डरीक १.	२११८	" २.	८१११६	पुरोगामिन् १.	३३१७०
" ३.	३३११२३	पुर १.	३३१५४	" १. २. ३.	३७१४६
" १.	४१११५	" ३.	३३१२३४	पुरोडाश १.	३६१९९
" १.	४१११९	" १.	३५१२७	पुरोधस् १.	३७१२४
" ३.	४११२३	" ३. २.	४३११	पुरोनुवाक्या २.	३६११२
" ३.	४११४०	पुरः(-स्) ४.	८११११	पुरोभागिन् १. २. ३.	
" १.	८१११६	पुरज्जक १ व.	३११३०		५४१३४
पुण्डरीकाक्ष १.	११११०	पुरतः (-स्) ४.	८११११	पुरोवचस् ३.	२११४१
पुण्ड्र १ व.	३११३०	पुरद्वार ३.	४३११५	पुरोवात १.	१११५४
" १.	३३१२२६	पुरन्दर १.	१११२	पुरोहित १.	३७१२४
पुण्ड्रलक्षण २.	३११३०	पुरन्ध्री २.	४४१२१	पुरोहिन् १.	३४१३४
पुण्ड्रा २.	३५१४३	पुरमद १.	३८११०८	पुलक १.	३११४१
पुण्य ३.	३६११६८	पुररक्षिन् १.	३७११८	" १.	३७११६३
" १. २. ३.	६११५०	पुरस्कृत १. २. ३.	८१११	" १.	७११४७
पुण्यगन्धिक ३.	४११४०	पुरस्तात् ४.	८७१३३	पुलकिन् १.	३३१६०
पुण्यजन १.	८११२६	पुरस्सर १. २. ३.		पुलाक १.	७११४७
पुण्यजनेश्वर	१११५८		३७११४५	पुलाकिन् १.	३३१५
पुण्याह ३.	२११६७	पुरा ४.	८७१२३	पुलिन ३.	४११३३
" ३.	८११२२	पुराज १.	१११८	पुलिन्द १.	३५१४७
पुत्तिका २.	२३१४८	पुराण ३.	३११३८	" १.	३५१४७
पुत्र १.	४४१३९	" ३.	३३१२९	" १.	३५१८३
" १.	४४१४८	" १. २. ३.	५४१८७	पुलिन्दक १.	४१११६
" १.	८११४३	पुराणान्त १.	१११३५	पुलोमजा २.	१११११
पुत्रजीव १.	३३१७९	पुरातन १. २. ३.	५४१८७	पुलोमशत्रु १.	१११३३
पुत्रल १.	८११४३	पुरावृत्त ३.	२४१३८	पुस्तक १.	३५१४८
पुनःपुनः (र्) ४.		पुरी २.	४११७	" १.	३५१८२
	८११११	" २.	४३११	" १.	३५१८५
पुनर् ४.	८७१२४	पुरीष ३.	३८१२४	" १.	३५१८८

पुष्कस]

वैजयन्तीकोषः

[पृतना

पुष्कस १.	३१५८९	पुष्पाभिकीर्णक १.	४१११६	पूरक १.	३१५६४
" १.	३१५९१	पुष्पिका २.	३१५१२७	पूरणा २.	३३११४५
पुष १.	४४१६१	पुष्पित १. २. ३.	३३१८	पूरणी २.	३३१९०
पुषित १. २. ३.	५४१११४	पुष्य १.	२११३९	" २.	३३११४७
पुष्कर १.	३१८८८	" १.	२११९१	पूरित १. २. ३.	५४१८६
" ३.	७३१२४	पुष्यफल १.	३३११७०	पूरी २.	३३११४५
पुष्करसार १.	४१११६	पुष्यरथ १.	३१७१२६	" २.	३१८१२५
पुष्कराह्वय १.	२३३३३	पुष्यल १.	३१७८५	पूरुष १.	४४१३
पुष्करिणी २.	४२१५	पुस्त ३.	३१९१६	पूर्ण ३.	३१७१९१
पुष्कल १.	३३६१५	पुस्तक ३.	४३१०९	" १. २. ३.	५४१८६
" ३.	३३६१६	पू २.	३३६१६३	" १. २. ३.	५४१८६
" १.	४३११२	पूग १.	३३१२१७	पूर्णकलश १. ३.	३३६१८
" १. २. ३.	७४११९	" १.	५१११	पूर्णकुम्भ १.	४३१६१
पुष्ट १. २. ३.	५४१११४	पूगतिथ १. २. ३.		पूर्णकूट १.	२११३२
पुष्टि २.	११११६		५१११९	पूर्णकूटक १.	२११३२
पुष्टिवर्धन १.	२३३२८	पूगपट्ट १.	३३१२२२	पूर्णपात्र ३.	३३६६१
पुष्प १.	३३३१८	पूगपुष्पिका २.	३३६१५	पूर्णपात्रक ३.	३३६१७
" ३.	४४११६	पूगावपनी २.	४३१०८	पूर्णमासी २.	२११७२
" ३.	८१११५	पूजा २.	३३६१९	पूर्णा २.	२११७२
पुष्पक १. ३.	३१५५४	पूजित १. २. ३.		पूर्णानक ३.	३३६६१
" १.	४१११८		५४११३	पूर्णि २.	४२११३
पुष्पकाल १.	२११८८	पूज्य १. २. ३.	६१५५१	पूर्णिगा २.	२११७२
पुष्पकेतु १.	३३२४३	पूज्यपाद १. २. ३.		पूर्णिमा ३.	२११७२
पुष्पदन्त १.	२११८		८११४६	पुर्त ३.	३३६११५
पुष्पधन्वन् १.	१११२८	पूत १. २. ३.	३१८६७	पूर्व १. २. ३.	५४११४०
पुष्पफल १.	३३३३२	" १. २. ३.	५४१६५	" १. २. ३.	६१५४७
पुष्पफलिन १.	३३३६	पूतना २.	२१११८	पूर्वगन्धिक १.	३११८
पुष्परजस् ३.	३१८११७	पूति १. २.	३१५३५	पूर्वज १.	४४१३१
पुष्पलोलुप १.	२३३४२	" १.	५३१५७	" १. २. ३.	५४१४
पुष्पव १.	३१५५४	पूतिक १.	३३३६२	पूर्वदिवपाल १.	१२१२
" १.	३१५१०१	पूतिकरज १.	३३३६२	पूर्वदेव १.	१३१०
पुष्पवत् १.	२११२९	पूतिकाष्ठ ३.	३३३७१	पूर्वरङ्ग १.	३१९१३९
पुष्पवती २.	४४११५	पूतिकाष्ठक ३.	३३३७४	पूर्वाह्न १.	२११६४
पुष्पवाटी २.	३३३४	पूतिपुष्पी २.	३३३३४	पूर्वद्युः (-स्) ४.	८१७३२
पुष्पवीर्या २.	३३३१२८	पूतिफली २.	३३३१०८	" ४.	८१९८
(पुष्पी, वीर्या)		पूत्यण्ड १.	२३३४८	पूल १. ३.	३१८६४
पुष्पसारण १.	२११८७	पूप १.	४३३७२	पूलक १.	४४१११५
पुष्पाह्व १. २. ३.		पूय ३.	४४१११८	पूपन् १.	२१११०
	३३६१२८	पूर १.	४२३३०	पूक्थ-३.	३१८७३
पुष्पाभिकीर्णक १.		पूरक १.	३३३३३	पूच्छा २.	२१४३७
	४११११	" १.	३१८४४	पृतना २.	३१७५५

पृतना २.	३।७।५८
पृतनासाह १.	१।२।२
पृथक् ४.	८।८।४
पृथक्क्रिया २.	२।४।४०
पृथक्पर्णी २.	३।३।१३६
पृथग्जन १.	८।१।२६
पृथक् १ ब.	३।१।४०
पृथिवी २.	३।१।३
पृथिवीपति १.	८।१।५३
पृथु १.	३।४।४०
” २.	३।८।८५
” २.	३।८।१३२
” १. २. ३.	५।४।८०
पृथुक १.	४।३।६८
” १.	७।१।५८
पृथुचित्र १.	३।६।४१
पृथुच्छद १.	३।३।७६
पृथुरोमन् १.	४।१।४१
पृथुल १. २. ३.	५।४।८०
पृथुशालिका २.	३।८।८५
पृथुसूप्य १.	३।८।४०
पृथुहस्त १.	३।७।७१
पृथ्विका २.	३।८।८५
” २.	३।८।१३२
पृथ्वी २.	३।१।३
” २.	३।८।८५
पृथ्वीका २.	३।८।८७
पृदाकु १.	७।१।५८
पृक्षि १. २. ३.	४।५।५
पृक्षिपर्णी २.	३।३।१३६
पृषत् २. ३.	२।२।८
पृषत १.	२।२।८
” १.	३।४।१३
” १.	३।६।९९
पृषता २.	३।६।४७
पृषत्क १.	३।७।१७९
पृषदंशक १.	३।४।७१
पृषदश्च १.	१।२।५०
पृषदाज्य ३.	३।६।९९
पृष्ठ ३.	४।४।६९
पृष्ठग्रन्थि १.	४।४।१३३

पृष्ठचक्षुस् १.	४।१।४६
पृष्ठमध्यास्थि ३.	४।४।९१
पृष्ठमांसादन ३.	५।२।८
पृष्ठवाह्य १. २. ३.	३।४।५६
पृष्ठस्थ १. २. ३.	३।७।१४१
पृष्ठ्य १. २. ३.	३।४।५६
” ३.	५।१।१४
पेचक १.	२।३।२२
” १.	७।१।५३
पेचिका २.	२।३।३१
पेट १. २. ३.	८।९।३७
पेटक १.	४।३।६३
” ३.	५।१।३
पेटा २.	४।३।६३
पेटी २.	८।९।३७
पेत्व १.	३।४।६४
पेय ३.	४।३।९१
पेरा २.	३।१।४
पेराल १.	५।३।२०
पेरु १.	२।१।१३
” १.	५।३।१२
पेलव १.	३।५।८५
” ३.	३।८।७९
” १. २. ३.	५।४।१३६
पेशल १. २. ३.	५।४।५४
” १. २. ३.	५।४।१३७
” १. २. ३.	७।४।१९
पेशि २.	४।३।८९
” २.	४।४।११२
पेशी १.	२।३।५०
पैङ्गराज १.	४।१।१७
पैठर १. २. ३.	४।३।९४
पैण्डूप १. ३.	४।४।९३
पैतृप्वसेय १.	४।४।४२
पैष्टिकी २.	३।९।५०
पोगण्ड १. २. ३.	५।४।११
पोतकी २.	४।३।२४
पोतगल १.	४।१।१६
” १.	८।१।२७
पोटना २.	२।४।२६
पोटरूप १.	३।४।१५

पोटा २.	४।४।३
पोत १.	३।७।६६
” १.	४।३।४०
” १.	४।४।१३५
” १.	६।१।३३
पोतकी २.	२।३।१९
पोतचण्ण १.	४।२।१८
पोतवाह १.	४।२।१८
पोताधान ३.	४।१।४५
पोत्र ३.	६।३।२२
पोत्रिन् १.	३।४।६
” १.	३।४।९
पोथ १.	४।२।१५
पोलिक १.	४।३।७१
पोलिन्द १.	४।२।१६
पोपी २ ब.	२।१।१२
पोहिथ ३.	४।२।१५
पौञ्चलेय १.	४।४।४३
पौस्न ३.	३।६।३
” १. २. ३.	५।४।११८
पौण्ड्र १.	३।५।५०
पौतव १.	५।१।६४
पौत्तिक ३.	३।८।१३५
पौत्र १.	४।४।४५
पौनर्भव १.	४।३।४५
पौपिक १. २. ३.	४।३।९२
पौर १.	१।१।२२
पौरस्थ १. २. ३.	५।४।६
पौरुष १. २. ३.	४।४।८३
” ३.	४।४।१११
” ३.	७।५।५८
पोरुपेय १. २. ३.	८।४।१०
पोरेन्द्र १.	२।३।३२
पोरोगव १.	३।७।२१
पोरोहित ३.	३।६।२७
पौर्णमासी २.	२।१।७२
पौर्वापर्य ३.	३।६।११३
पौलस्थ १.	१।२।५६
” १.	७।५।५९
पौलोमी २.	१।२।११
पौष १.	२।१।८२

पौषी]

वैजयन्तीकोषः

[प्रति

पौषी २.	२११७४	प्रखर १. ३.	३७११५	प्रजागम १.	३६१८६
पौष्टिक ३.	३६११९	प्रख्य १. २. ३.	५४१२२	प्रजागर १.	३७१५८
पौष्पक ३.	३२१४३	प्रयणिका २.	४३३३३	प्रजाता २.	४४१४२
पौष्यक ३.	३२१४१	(प्रगणिता)		प्रजालुक १.	४४१५३
सा २.	४४११०१	प्रगण्ड १.	४४१०२	प्रजापति १.	१११६
प्याट् ४.	८८१२	प्रगतजालुक १. २. ३.		" १.	८११३४
प्र ४.	८७१६		५४११०	प्रजापतिहस्तक १.	
प्रकट १.	३११३३७	प्रगल्भ १. २. ३.	५४११७		३११५५
" १. २. ३.	५४१३३४	प्रगाढ १. २. ३.	७४२०	प्रजावती २.	४४३६
प्रकम्पन १.	१२१५०	प्रगुण १. २. ३.	५४१२४	प्रज्ञा २.	४४२१
प्रकर ३.	३८१०७	प्रगो ४.	८८१०	" २.	६२२३
" १.	५१११	प्रग्रह १.	२११४८	प्रज्ञान ३.	७३२२
प्रकरण ३.	३११००	" १.	३११५७	प्रज्ञु १. २. ३.	५४११०
प्रकाण्ड ३.	८११४२	" १.	७११४९	प्रज्वलित १. २. ३.	
प्रकाण्डकम् ३.	३३१२	प्रग्राह १.	७११४९		८४११४
प्रकामम् ४.	४३१०४	प्रग्रीव १. ३.	७५१५६	प्रणय १.	३८१७०
प्रकार १.	५२२३	प्रघण १.	४३३४५	" १.	७११४४
" १. २. ३.	५४१२२	" १.	७११५२	प्रणव १.	३६२३३
" १.	७११५६	प्रघाण १.	३३१५	प्रणष्ट १. २. ३.	३७२१९
प्रकाश १.	१२३१	" १.	४३३५	प्रणाद् १.	२४१९
" १. २. ३.	५४१३४	प्रघात १.	३७२०५	प्रणाम १.	५२२४
" १. २. ३.	७५१५४	प्रघार १.	५२३४	प्रणाय्य १. २. ३.	
प्रकीर्णक १.	३७१०	प्रचक्र ३.	३७२०१		७४१५
" ३.	४३१५९	प्रचक्षस् १.	२१३४	प्रणाल १. २. ३.	४४२०
प्रकीर्य १.	३३३६२	प्रचल १. २. ३.	५४१७८	प्रणिधि १.	७११५५
प्रकुक्ष ३.	५११५१	प्रचालक १.	२३३९	प्रणिपात १.	५२३८
प्रकृति २.	३६१६१	प्रचार १.	३७१५८	प्रणिहित १. २. ३.	
" २.	३७३	प्रचुर १. २. ३.	५४१८४		५४१०९
" २.	५२२	प्रचूडक १.	३८१४८	" १. २. ३.	८४१९
" २.	७२१२	प्रचेतस् १.	१२३६	प्रणीत ३.	४३१९४
प्रकोटी २.	३३११३	" १.	७११५६	प्रणीति २.	४३३८
प्रकोष्ठ १.	४४१७२	प्रच्छदपट १.	४३१६६	प्रणय १. २. ३.	५४३२
" १.	७११५२	प्रच्छन्नद्वार ३.	४३१२६	प्रतति २.	७२१५
प्रक्रम १.	५२११५	प्रच्छदिका २.	४३१४२	प्रतल १.	४४१७७
प्रक्रय १.	३८१६९	" २.	८११५	प्रतानिनी २.	३३७
प्रक्रिया २.	७२११४	प्रजनन ३.	४४१६२	प्रताप १.	७११५४
प्रक्षण १.	२४१२	प्रजनिष्णु १. २. ३.		प्रतापन ३.	५३८
प्रक्षाण १.	२४१२		५४११४	प्रतापस १.	३४११४
प्रक्षर १.	३७११५	प्रजल्पन ३.	२४३९	प्रतारण ३.	५२३५
प्रक्षराङ्गी २.	३४१४४	प्रजा २.	४४१४१	प्रतारिका २.	४४३६
प्रक्ष्वेलन १.	३७१८०	" २.	६२२३	प्रति ४.	८७२५

प्रतिकर्मन्]

शब्दानुक्रमणिका

[प्रत्यादेश

प्रतिकर्मन् ३.	४३१३२
प्रतिकूल १. २. ३.	५४१२७
प्रतिकृति २.	३१९२०
प्रतिकृष्ट १. २. ३.	५४१७५
प्रतिनिप्त १. २. ३. ८४१८	
प्रतिख्याति २.	५२१२९
प्रतिग्रह १.	८११३९
प्रतिग्राह १.	४३११६०
प्रतिघ १.	७११५४
प्रतिघातन ३.	३७२१४
प्रतिच्छन्द १.	५११२१
प्रतिच्छाया २.	५११२०
प्रतिजागर १.	५२१२९
प्रतिज्ञा २.	५२१३७
प्रतिज्ञात १. २. ३.	५४११०६
प्रतिर्जन ३.	२४१३९
प्रतिताली २.	४३१४९
प्रतिदान ३.	८३१९
प्रतिध्वान १.	२४११२
प्रतिध्वानदन्तुर १. २. ३.	२४११४
प्रतिनप्त १.	४४१४५
प्रतिनिधि १.	३१९२१
प्रतिपक्ष १.	३७४४२
प्रतिपत्ति २.	८२१७
प्रतिपद् २.	२११६९
” २.	७२११६
प्रतिपादन ३.	३६११८
प्रतिबन्ध १.	५२११३
प्रतिबिम्ब ३.	३१९२१
प्रतिभ १.	३१९६९
प्रतिभय १. २. ३.	३१९७८
” १. २. ३.	८१५१७
प्रतिभा २.	३६११७६
प्रतिभातवाच् १. २. ३.	५४१४७

(प्रतिभासवाच)

प्रतिभायुक्त १. २. ३.	५४११७
प्रतिभास १.	३६११७६
प्रतिभू १. २. ३.	३८११०
प्रतिम १. २. ३.	५४११२१
प्रतिमा २.	३१९२०
प्रतिमुक्त १. २. ३.	३७११४२
प्रतिमल १.	८११३१
प्रतियातना २.	३१९२०
प्रतिरवि १.	४११२८
प्रतिरूपक ३.	३१९२१
प्रतिरोधक १.	३१९५६
प्रतिरोधिन् १.	३१९५६
प्रतिलम्भ १.	५२१२०
प्रतिलोम १.	३१५११८
” १.	३१५११९
” १. २. ३.	५४११२७
प्रतिलोमज १.	३१५८९
” १.	३१५१०९
प्रतिवसथ १.	४३१२
प्रतिवाक्य ३.	२४१३७
प्रतिविषा २.	३८१९०
प्रतिशासन ३.	५२१३५
प्रतिशिष्ट १. २. ३.	८४१८
प्रतिश्याय १.	४४११२१
प्रतिश्रय १.	८११३१
प्रतिश्रव १.	५२१२९
” १.	५२१३७
प्रतिश्रुत् २.	२४११२
प्रतिष्कश १. २. ३.	८५११४
प्रतिष्टम्भ १.	५२११३
प्रतिष्ठा २.	७२११५
प्रतिसञ्चर १.	२११९५
प्रतिसर १.	३६१५९
” १. २. ३.	८५११४
प्रतिसर्ग १.	२११९५
प्रतिसारण ३.	४४११४०
प्रतिसारा २.	४३११२४

प्रतिहत १. २. ३.	८४१८
प्रतिहारी २.	३७१३८
प्रतिहास १.	३३११९२
प्रतीक १.	४४१५५
” १. २. ३.	७५१५४
प्रतीकार १.	३७२०९
प्रतीक्ष्य १. २. ३.	७४११७
प्रतीच १.	३८१५७
प्रतीची २.	२११५
प्रतीचीन १. २. ३.	५४१९१
प्रतीच्छा २.	४३११००
प्रतीत १. २. ३.	७४११६
प्रतीप १. २. ३.	५४११२७
प्रतीपदक्षिणी २.	४४१५
प्रतीवाप १.	३८११४४
प्रतीहार १.	८११२७
प्रतोद् १.	३८१२९
प्रतोली २.	४३११६
प्रतन १. २. ३.	५४१८७
प्रत्यक्च्छ्रेणी २.	३३१११३
” २.	३३११३३
प्रत्यक्पर्णी २.	३३१११५
प्रत्यक्ष १. २. ३.	५४११३३
प्रत्यगाशापति १.	१२१४६
प्रत्यग्दृष्टि २.	३६११७५
प्रत्यग्र १. २. ३.	५४१८९
प्रत्यग्रथ १ ब.	३११२६
प्रत्यच् १. २. ३.	५४१९१
प्रत्यनीक १.	३७१४१
प्रत्यय १.	७११५१
प्रत्ययित १. २. ३.	३८१९
(प्रत्ययिक)	
प्रत्यर्थिन् १.	३७१४२
प्रत्यवसान ३.	४३११०२
प्रभयवसित १. २. ३.	५४११०७
प्रत्यवस्कन्द १.	३८११६
प्रत्याकार १.	३७११६८
प्रत्याख्यान ३.	५२१२३
प्रत्यादेश १.	५२१२३

प्रत्यालीढ]

वैजयन्तीकोषः

[प्रलम्बाण्ड

प्रत्यालीढ ३.	३।७।१८८	प्रपद ३.	४।४।५७	प्रमदा २.	४।४।५
प्रत्यासार १.	३।७।५९	प्रपद्व्यापिन् १. २. ३.	४।३।१२१	प्रमदावन ३.	३।३।३
प्रत्याहार १.	३।६।२३१	प्रपा २.	४।३।२३	प्रमनस् १. २. ३.	५।४।३३
" १.	३।९।१४०	प्रपाठक १.	३।६।३२	प्रमा २.	५।२।३३
" १.	५।२।१८	प्रपात १.	३।२।६	प्रमाण ३.	७।३।२३
प्रत्युत्क्रम १.	५।२।१५	" १.	४।२।३२	प्रमातामह १.	४।४।३०
प्रत्युत्पन्नमति १. २. ३.	५।४।३१	" १.	७।१।५३	प्रमाथ १.	३।७।१८९
प्रत्युष १.	२।१।६८	प्रपातिन् १.	३।२।२	प्रमाथित ३.	३।८।१४३
प्रत्यूप ३.	२।१।६८	प्रपितामह १.	४।४।२९	प्रमाद १.	३।६।१७८
प्रत्यूपडम्बर १.	२।१।१५	प्रपुञ्जाट १.	३।३।१५८	प्रमापण ३.	३।७।२।३
प्रत्यूह १.	५।२।४	प्रपौत्रक १.	४।४।४५	प्रमिति २.	५।२।३३
प्रथन ३.	३।७।२०४	प्रफुल्ल १. २. ३.	३।३।९	प्रमीत १. २. ३.	३।७।२२०
" १.	३।८।३६	प्रवर्ह १. २. ३.	५।४।६२	प्रमीला २.	३।६।१९७
" ३.	५।२।३४	प्रवल १. २. ३.	३।७।१५१	प्रमुख १. २. ३.	५।४।६२
प्रथम १. २. ३.	५।१।२१	" १. २. ३.	५।४।६	" १. २. ३.	५।४।७६
" १. २. ३.	५।४।७६	प्रबोधन ३.	४।३।१४७	प्रभृत ३.	३।८।३
" १. २. ३.	५।४।१४०	प्रभ १. २. ३.	५।४।१२१	प्रमेह १.	४।४।१२८
" १. २. ३.	७।४।१७	प्रभञ्जन १.	१।२।४९	प्रमेहनुद् १.	३।३।१०६
प्रथा २.	५।२।३४	प्रभव १.	७।१।५०	प्रमोद १.	३।६।१८८
प्रथिक ३.	३।६।८८	प्रभवन्ती २.	५।२।२	प्रयत १. २. ३.	५।४।६५
प्रथिमन् १.	८।९।१४	प्रभविष्णुता २.	५।२।२	" १. २. ३.	७।४।१८
प्रदर १.	४।२।९	प्रभा २.	२।१।२२	प्रयत्त १. २. ३.	५।४।९९
" १.	७।१।५७	" २.	२।१।२३	प्रयत्नवत् १. २. ३.	५।४।११४
प्रदीप्त १. २. ३.	८।४।१४	" २.	६।२।२३	प्रयम १.	३।६।१४
प्रदेशन ३.	३।७।४६	प्रभाकर १.	२।१।१४	प्रयस्त १. २. ३.	४।३।९४
(प्रदर्शन)		प्रभात ३.	२।१।६९	प्रयाण ३.	७।३।२१
प्रदेशिनी २.	४।४।७३	प्रभाव १.	५।२।२	प्रयाम १.	३।८।६६
प्रदेष्टृ १.	३।७।२३	" १.	७।१।५६	प्रयुत ३.	५।१।२८
प्रदोष १. ३.	२।१।६५	प्रभावती २.	३।९।१२०	" ३.	५।१।२९
" १.	७।१।५५	प्रभास ३.	३।२।२८	प्रयोक्तृ १. २. ३.	३।८।८
प्रद्युम्न १.	१।१।२७	प्रभिन्न १.	३।७।६८	प्रयोग १.	५।२।१५
प्रद्योतन १. ३.	८।५।१७	प्रभु १. २. ३.	५।४।५७	" १.	७।१।४४
प्रद्राव १.	३।७।२११	" १. २. ३.	६।४।१०	प्रयोजन ३.	३।६।२३६
प्रधान १. ३.	५।४।६२	प्रभुता २.	५।२।२	" ३.	८।३।८
प्रधानधातु १.	४।४।१११	प्रभृत १. २. ३.	५।४।८४	प्ररूढ १.	३।८।५२
प्रधि १.	३।७।१३५	प्रभ्रष्टक ३.	४।३।१५५	प्ररोचना २.	३।९।१४२
" १.	८।९।१३	प्रमथ १.	१।१।५१	प्ररोह १.	३।३।११
प्रपञ्च १.	७।१।५६	" १.	३।७।२११	प्ररोहक १.	३।७।११५
प्रपतित १. २. ३.	५।४।११५	प्रमथन ३.	३।७।२१३	प्रलम्बाण्ड १. २. ३.	५।४।८
		प्रमथाधिपति १.	१।१।४१		

[प्रलम्भारि]

प्रलम्भारि १.	१११२३
प्रलय १.	२११९५
” १.	३१९८९
” १.	७११४३
प्रलाप १.	२४३३०
प्रलोभिन् १.	३३३१८९
प्रलोभ्य ३.	४४११०१
प्रवक् १.	३१९१६४
प्रवण १. २. ३.	७१५५३
प्रवयस् १. २. ३.	५४३३
प्रवर १.	३१८३४
” १.	३१८३७
” ३.	३१८११९
” १. २. ३.	५४३६२
” १. २. ३.	८१९५३
प्रवर्ग्य १.	११२२९
प्रवर्हिक्का २.	२४३३९
प्रवह १.	७११४३
प्रवहण ३.	३७१२७
” ३.	४२११५
प्रवापण ३.	३६१२०
प्रवाल १. ३.	३२३३९
” १.	३३३१५
” १.	३३३१५४
” १. ३.	७१५५५
प्रवासन ३.	३७२१३
प्रवाह १.	४२३३०
” १.	५२३३९
” १.	७११४५
प्रवाहि १.	३७१२५
प्रवाहिक १.	१२३४१
प्रवाहिका २.	४४१२९
प्रविदारण ३.	३७२०४
प्रविसर १.	२११६८
प्रविसारण ३.	३७२१५
प्रवीण १. २. ३.	५४३१९
प्रवीरा २.	४३३११
प्रवृत्ति २.	३७१८२
” २.	३१८४८
” २.	७२११६
प्रवृद्ध १. २. ३.	७४११८

शब्दानुक्रमणिका

प्रवेक १. २. ३.	५४३६३
प्रवेणी २.	७२११६
प्रवेल् १.	३१८३६
प्रवेक्ष १.	५२११४
प्रवेष्ट १.	३७१७२
” १.	४४३७२
प्रव्याल १.	२११३२
प्रव्रजित १.	३६११६०
प्रशंसा २.	२४३३५
प्रशसन ३.	३७२१४
प्रशस्तमृद् २.	३१८२४
प्रशान्तार्चिस् १.	१२३३२
प्रशान्तिक ३.	३६११८२
प्रश्न १.	२४३३७
” १.	८१९१४
प्रश्नवादिनी २.	४४३११
प्रश्रय १.	५२३३८
प्रश्रित १. २. ३.	५४३३२
प्रष्ठ १. २. ३.	३७११४५
प्रष्ठवाह १. २. ३.	३६१५६
प्रसन्ना २.	३१९४५
प्रसंभ १.	१२३५५
” १. ३.	३७२०९
प्रसभा २.	३६३४६
प्रसरणी २.	३७२०१
प्रसर्पक १.	३६१८१
प्रसव १.	२११८७
” १.	३३३२०
” १.	४४३४०
” १.	७११४८
प्रसव्य १. २. ३.	५४३२८
” १. २. ३.	७४३१८
प्रसहनी २.	३३३१०४
प्रसहा २.	३३३१०४
प्रसह्य ४.	८१८१८
प्रसाद् १.	७११५५
प्रसादन १.	३३३३८
(प्रसाधन)	
” १.	४३३२९
” ३.	४३३७५
प्रसाधन १.	४३३११२

[प्रस्ताव

प्रसाधन ३.	४३३११२
” ३.	४३३१३२
प्रसित १. २. ३.	५४३३०
प्रसिति २.	५२२२८
प्रसिद्ध १. २. ३.	७४३१९
प्रसू २.	६२२२४
प्रसूता २.	४४३१७
प्रसूतात् १ द्वि.	४४३४७
प्रसूति २.	४४३४१
” २.	७२११६
प्रसूतिका २.	४४३१७
प्रसूतिज ३.	१२३३९
प्रसून ३.	३३३१८
” ३.	७३३२४
” १. २. ३.	७५५५५
प्रसूत १.	४४३७७
” १. ३.	५११५२
प्रसूता २.	४४३५८
प्रसूत्वन् १. २.	८१५२९
प्रसेवक १.	३१९१२०
” १.	४३३६४
प्रस्कन्न १. २. ३.	३७२१९
प्रस्तर १.	३२३८
” १.	३६१९१
” १.	४३३१६५
” १.	७११५१
प्रस्तार १.	३३३२
प्रस्ताव १.	२४३४१
प्रस्तुता २.	३४३४९
प्रस्थ १.	५११५३
” १.	५११६३
” १.	६१५४६
प्रस्थान ३.	५२३१०
प्रस्फोटन ३.	४३३६५
” ३.	४३३६६
प्रस्मरण ३.	३६३१७७
प्रस्त्रवण १.	३२३४
” ३.	३२३७
प्रस्ताव १.	४३३७८

प्रस्ताव]

वैजयन्तीकोषः

[प्रासाद

प्रस्ताव १.	४१४१२०	प्राच्छ १.	३१६२४	प्रान्तर ३.	३११५०
प्रहत १. २. ३.	३१८११८	प्राच्य १.	३११२२	” ३.	४३११२
” १. २. ३.	५१४४९	प्राजन ३.	३१८२९	प्रापणिक १.	३१८७२
” १. २. ३.	७१४१८	प्राजापत्य ३.	३१६२	प्रापणिका २.	३१६५०
प्रहर १.	२११६७	” १.	३१६८	प्राप्त १. २. ३.	५१४९९
प्रहरण ३.	८३१८	” ३.	३१६१३६	” १. २. ३.	५१४१०३
प्रहसन ३.	३१९१००	” १.	३१६२०७	” १. २. ३.	५१४१०९
प्रहसन्ती २.	३१३१८७	प्राजितृ १.	३१७१३८	” १. २. ३.	६१४१०
(प्रसहन्ती)		प्राज्ञ १.	३१६२३४	प्राप्तरूप १. २. ३.	८१५१५
प्रहस्त १.	११२४४	प्राज्ञा २.	४१४२१	प्राप्तुं २.	४१४८
” १.	४१४७७	प्राज्ञी २.	४१४२१	१। सार्थ १. २. ३.	३१९५३
प्रहार १.	५१२१९	प्राज्य १. २. ३.	५१४८४	प्राप्ति २.	५१२१३
प्रहासिन् १.	३१९६९	प्राङ्चिपाक १.	३१८१४	” २.	६१२२४
प्रहि १.	४१२७	प्राण १.	११२४८	प्राभृत ३.	३१७४६
” १.	८१९१०	” १.	३१२१५	प्राय १.	४१४५३
प्रहित ३.	४१३८६	” १.	३१६२०३	” १.	६११३६
” १. २. ३.	५१४९७	” १ ब.	३१६२०३	प्रायः (-स्) ४.	८१८१६
प्रहृष्ट १. २. ३.	८१४१३	” १. २. ३.	५१४६१	प्रायण ३.	७१३३४
प्रहेलिका २.	२१४३९	” १.	६११३८	प्रायणीय १. २. ३.	३१६८८
प्रांशु १. २. ३.	५१४८१	प्राणद १.	१११९	प्रार्थित १. २. ३.	५१४११२
प्राकार १.	४१३१४	” ३.	४१४१०६	” १. २. ३.	७१४१६
प्राकारमूलिक १.	४१३१३	प्राणदा २.	३१८८३	प्रालम्ब ३.	४१३१५५
प्राक्तन १. २. ३.	५१४८७	प्राणनाथ १. २. ३.	८१५१६	प्रालम्बिका २.	४१३१३७
प्राक्पादरज्जु २.	३१७११३	प्राणयम १.	३१६२२९	प्रालेय ३.	२१२१९
प्राग्जालिक १ ब.	३११२९	प्राणायाम १.	३१६२२९	प्रावार १.	४१३१२३
प्राग्ज्योतिष १ ब.	३११२९	प्राणिक ३.	३१६९२	मावृत १. २. ३.	४१३१२०
प्राग्भार १.	५१२३	प्राणिद्युत ३.	८१११०	प्रावृप् २.	२११८९
प्राग्र १. २. ३.	५१४६३	प्राणिन् १.	४१४१	प्रावृपायणी २.	३१३१२९
प्राग्रहर १. २. ३.	५१४६३	प्राणिफल १.	३१३२८	” २.	८१२१३
प्रागाढ ३.	३१८१४४	प्राणिस्वन १.	२१४३	प्रावृपेण्य १.	३१३६०
प्राग्वंश १.	३११५१	प्रातः (-र्) ४.	८१८१०	प्रावेशनिक १.	३११५९
प्राच १. २. ३.	५१४९१	प्रातिहारिक १.	३१९३३	प्राश्रिक १. २. ३.	३१८१९
प्राचिका २.	२१३२०	” १. २. ३.	५१४२४	प्रास १.	३१७१६५
प्राची २.	२११५	प्राथमकल्पिक १.	३१६२४	प्रासङ्ग १.	३१७१३३
प्राचीन १. २. ३.	५१४९१	प्रादु (-स्) ४.	८१८१८	प्रासङ्ग्य १. २. ३.	३१५५८
प्राचीनतिलक १.	२११२७	प्रादेश १.	४१४८०	प्रासाद १.	४१३१२९
प्राचीनवर्हिष् १.	८११५४	प्रादेशन ३.	३१६११९		
प्राचीना २.	३१३१३१	प्राध्व १. २. ३.	६१५४७		
प्राचीनावीत ३.	३१६२१	प्राध्वम् ४.	८१८१६		
प्राचीर ३.	४१३१४	प्रान्त १.	४१३१३२		
प्राचेतस १.	३१६१५३				

प्रास्थित १.	२३३६
प्राहुण १.	३१६६८
प्राह्ण १.	२११६४
प्रिय १.	३३३३१
” १. २. ३.	३७७३३
” १.	४४३३७
” १. २. ३.	५४४७०
” १. २. ३.	५४४७३
प्रियंवद १. २. ३.	५४४७४
प्रियक १.	३३३३९
” १.	३३३४३
” १.	३३३६६
” १.	३४३१७
” १.	७११५३
प्रियङ्गु २.	३८१५५
” ३.	३८११७
प्रियङ्गवाख्या २.	३३३६६
प्रियनादिका २.	३९११३८
प्रियापत्य १.	२३३३१
प्रियाला २.	३३३१८१
प्रियालु १.	३३३१७
प्रियैलिका २.	३८३४६
प्रीत १. २. ३.	५४३९९
प्रीति २.	६२२२५
प्रुव १.	५३३८
प्रुचा २.	६२२२५
प्रुह १.	३७३३६
” १.	३९३३
” १.	४३३१६०
प्रुहित १. २. ३.	५४३५५
” १. २. ३.	५४३५०३
प्रुह्लोल ३.	३७३३६
प्रुह्लोलन ३.	३७३३६
प्रुह्लोलि २.	८९३२७
प्रुह्लोलित १.	५४३५०३
प्रुजन ३.	५२३३२
प्रेत १.	१२३३८
” १.	१२३३८
” १. २. ३.	६५५५२
प्रेतदाहामि १.	१२३२२
प्रेतालय १.	३३३७७

प्रेत्य ४.	८८११५
प्रेमन् १. ३.	३६३८६
” १. २.	५५५५१
प्रेम्य १.	३९३२
प्रेष १.	६३३३३
प्रेक्षण ३.	३६३९४
प्रेक्षण्यासादन ३.	३६३८४
प्रेत १. २. ३.	३९३१२
प्रेथ १. ३.	३७३९९
प्रेथिन् २.	३७३९०
प्रेन्द्र १.	५३३९
प्रेष्टपद १. २. ३.	२३३४१
प्रेष्टपदा २. ४.	८९३५७
प्रेष्टी २.	४३३४४
प्रेह १.	३७३७६
प्रेठ १. २. ३.	५४३१७
प्रेठि २.	३६३१६६
प्रेष्ठपद १.	२३३८५
प्रेष्ठपदी २.	२३३७६
प्लक्ष १.	३३३२७
” १.	३३३२८
प्लक्षक १.	३३३५९
प्लक्षद्वीप १.	३३३११
प्लव १.	२३३३३
” ३.	३३३२०१
” १.	३९३५४
” १.	४३३४७
” १.	४३३१६
” १.	४३३७१
” १.	५२३१२
” १.	६२३३७
प्लवग १.	८९३३२
प्लवङ्ग १.	८९३३२
प्लवङ्गम १.	८९३३२
प्लवन ३.	३३३२०१
प्लव ३.	३३३२२
प्लविन् १.	२३३१
” १.	३३३११
प्लिहन् १.	४३३११३
प्लुत १. १. ३.	३७३११८

प्लुन १. २. ३.	३७३२३
प्लुषि १.	२३३४८
प्लसात १. २. ३.	५४३१०७
फ	
फक्षिका १.	३६३३३
(पक्षिका)	
फण १. २.	३४३१२१
फणिन् १.	३३३४९
” १.	४३३१५
फणिर्जक १.	३३३१२०
फण्ड १.	३३३२०५
” १.	३३३२०७
फल ३.	३३३२०
” १.	३३३८३
” ३.	३७३१८६
” १.	३७३१९२
” १.	३८३७०
” ३. २.	६५५५२
” ३. २.	६५५५३
फलक ३. २.	३७३१९७
” १.	३८३४५
” १. २.	७५५६०
” १. २.	८९३२७
फलकिन् १.	४३३४३
फलकी २.	८९३२७
फलकृष्ण १.	३३३८३
फलपाककृष्ण १.	३३३८३
फलपाकान्ता २.	३३३२२४
फलस १.	५३३४०
फला २.	३३३२६
” २.	३३३१६१
फलाङ्कुरा २.	३८३३५
फलाध्यक्ष १.	३३३४३
फलाशन १.	२३३२५
फलिक १.	३३३२
फलित १. २. ३.	३३३८
फलिन् १. २. ३.	३३३८
फलिन १. २. ३.	३३३८
फलिनी २.	३३३६६

फलिनी २.	३३१५८	फेरुण्ड १.	३१४३८	वन्धुता २.	५११९
" २.	३३१२०३	फेरुविन्ना २.	३३११३७	वन्धुर १. २. ३.	५१४८३
फली २.	३३१६६	फेला २.	४३१०६	" १. २. ३.	७१४२१
" २.	३३१५८	फेलुक १.	४१४६३	वन्धुरा २.	३३७१३२
" २.	३३७१९८			वन्धुल १.	४१४४४
" २.	६१५५३	ब		वन्धूक १.	३३११८५
फलीकृत १.	४३१६६	बक १.	२३११०	वन्धु १.	११११०
फलीहस्त १.	३३७७१	" १.	३३११३	" १.	४११२८
फलेग्राहि १. २. ३.	३३३८	" १. २. ३.	३३७११३	" १. २. ३.	४१४१४७
फलेपाकिन् १.	३३१५९	बकपुष्प १.	३३११९३	" १.	५३११८
फलेरुह १.	३३१२१६	बकोट १.	२३११०	वर्कर १.	३३१७३
फलेरुहा २.	३३१९०	बडवा २.	३३७१७७	वर्वर १.	३३५५०
फलोदय २.	११११	बडवागण १.	५११९	" १.	४११९८
फल्गु २.	३३११११	बडवापति १.	३३१६६	" १. २. ३.	५१४२२
" १. २. ३.	५१४७६	बडवामुख १.	८११५५	वर्ह १.	२३३३९
फल्गुनाल १.	२११८३	वत ४.	८१२६	" ३.	३३११७
फल्गुनी २.	२११४३	वदर १.	३३१९९	" ३.	६३१२२
फाणित ३.	३३८१३४	वदरी १.	३३१८७	वर्हचन्द्रक १.	२३३३९
फाण्ट १.	४१४१४१	" २.	३३११४८	वर्हिण १.	२३३३६
" ३.	५१२४	बद्ध ३.	५११३०	" ३.	३१११९
फारी ३.	३३८८५	" १. २. ३.	५१४६७	वर्हिध्वजा २.	१११६०
फाल १.	३३८२८	" १. २. ३.	५१४९७	वर्हिन् १.	२३३३६
" ३.	३३८१०६	बद्धदर्भ १.	३३१२४	वर्हिपुष्प ३.	३३८२२
" १. २. ३.	४३१११७	बद्धभूमि २.	४३३३२	वर्हिमुख १.	१११४
" १.	६११३९	बद्धम्बु ३.	४२१९	वर्हिष्ठ ३.	३३१२०२
फालगलालेप १.	३३१६७	बन्दी २.	३३१५७	वर्हिस् १.	६१५५३
फालाकली २.	३३७३२	बन्ध १.	३३८७०	वल १.	१११२४
फाल्गुन १.	२११८२	" १.	३३१३१	" ३.	३३७३
फाल्गुनिक १.	२११८२	" १.	४१४५३	" ३.	३३७५५
फाल्गुनी २.	२११७५	" १.	५१२२८	" ३.	३३७२१०
फुल्ल १. २. ३.	३३१९	" १.	६१३३९	" १.	३३८५३
" १. २. ३.	३३१७८	बन्धकी २.	३३७३५	" ३.	३३८११४
" १.	४११११	" २.	४१४१०	" ३.	४१४१०९
फुल्लक १.	४१३३९	" २.	७२११७	" १. २. ३.	६१५५४
फुल्लरीक १.	४११५	बन्धन ३.	३३३२०	वलक १.	३३११९९
फेन १.	४२१३३	" ३.	३३११२१	" ३.	४३३९९
फेनक १.	४३१७४	बन्धनी २.	३३८३०	वलकाली २.	३३८८२
फेनिल १.	३३३३२	बन्धाकि १.	३३१२	वलदेव १.	१११२२
" १. २. ३.	७१५६०	बन्धु १.	१११२९	वलभद्र १.	१११२३
फेरव १.	३३१३८	" १.	४१४५१	वलभद्रिका २.	३३११०९
फेरु १.	३३१३८	बन्धुजीव १.	३३११८५	बलयु २.	३३११११

बलरिपु १.	११२२	बहिर्यात ३.	३१११०	बाडव ३.	५११९
बलवत् ४.	८८८४	बहिर्वा ३.	४११४२	बाडवेय १.	३१४५३
बला २.	३१३६६	बहिर्वाप्रकोष्ठ १.		बाडव्य ३.	५११७
” २.	३१३१२७		४११४६	बाड १. २. ३.	५११३२
” २.	३१८१७६	बहिष्कर्ष १.	३१७७०	” १. २. ३.	६५५५५
” २.	३१८११४	” १.	३१७७८	बाडम् ४.	८१७२६
” २.	३१९१०७	बहु १.	११२२७	वाण १.	१११५२
बलाका २.	२१३१०	” १. २. ३.	५११८०	” १.	३१३३९
बलाङ्ग १.	३१८३६	” १. २. ३.	५११८४	” १.	३१७१७९
बलात्कार १.	३१७२०९	” १. २. ३.	६१११०	” १.	३१७१८३
बलारोहा २.	३१८८२	बहुकर १. २. ३.	३१८६७	वाणाभ्यास १.	३१७१९५
बलास १.	४११२१	बहुक्षीरा २.	३१४४५	बादर १.	४१३११७
बलि १.	३१७४५	बहुगहर्धवाच् १. २. ३.		बाधा ३.	६१२२५
” १. २.	३१९१३८		५११४६	बान्धकिनेय १.	४१४४४
” १.	६११३९	बहुजाली २.	३१३१६१	बान्धव	४१४५१
बलिक १. २. ३.		बहुतिथ १. २. ३.	५१११९	बाभ्रवी २.	१११५९
	३१३१२७	बहुपाद् १.	३१३२७	बाहृत ३.	३१३२२
बलिकण्टक १.	११११९	बहुप्रज १.	३१४६	बाल ३.	३१३२०२
बलिन् १.	१११२२	बहुरूप १.	१११४७	” १.	३१७६६
” १.	१११२३	” १.	३१८१११	” १.	५१३७
” १.	३१३१६५	बहुल ३.	३१८१२४	” १. २. ३.	५१३२
” १.	३१३१८९	” १. २. ३.	५११८०	” १. २. ३.	६११११
” १.	३१३२२१	” १. २. ३.	५११८४	” १. २. ३.	६१५५७
” १. २. ३.		” १. २. ३.	७१५६१	बालक १.	३१८३३
	३१७१५१	बहुला २.	३१५४२	” ३.	३१८१४०
” १.	३१८३५	बहुलीकृत १. २. ३.		बालगर्मिणी २.	३१४४६
” १.	४१११०		३१८६७	बालचूतक १.	५१३३५
बलिपुष्ट १.	२१३१६	बहुवक्र १.	३१८५४	बालजात ३.	३१८१४०
बलिभुज् १.	२१३१८	बहुवार १.	३१३५५	बालतृण ३.	३१३२३५
बलिश ३.	३११६०	बहुव्यय १. २. ३.		बालनायिका २.	३१८६०
” ३.	३१९४२		५११५८	बालपत्र १.	३१३६३
बलिसदमन् ३.	४१११	बहुसारक १.	३१८१२८	बालपुष्कल १.	३१७८०
बलीवर्द १.	३१४५३	बहुसुता २.	३१३१२४	बालमीर १.	३१३३०
बल्वज १ व.	३१३२३०	बहुसुति २.	३१४५०	बालमूषिका २.	४११३२
बल्कयणी २.	३१४४८	बहुसुतिका २.	४१४२०	बालवत्स १.	२१३२३
बस्त १.	३१४६२	बहुसूदन ३.	३१८१२४	बालशाकट १. २. ३.	
बहल १. २. ३.	५११८४	बहुस्वन १.	२१३२२		३१८२१
” १. २. ३.	५११८४	बहुदित ३.	२१४३९	बालशाकिन १. २. ३.	
” १. २. ३.	७१४२१	बहेटक १.	३१३१७६		३१८२१
बहिः (-स्) ४.	८८८१४	बाडव १.	११२२१	बालहस्त १.	३१४७४
बहिरर्ग १.	३१५७	” १.	३१६११	बाला २.	३१३१८५

बाला]

वैजयन्तीकोषः

[बृहन्नाम्न

बाला २.	३१३२१२	विम्बसारक १. २.	३१७१८५	बुध १.	३१६२३२
बालाम्ल १.	५३१३५	(विम्बसारक)		बुधा २.	३१३१२५
बालिशङ्ख १. २. ३.		विम्बोष्ठी २.	३१३१४७	" २.	३१६१६३
	७४१२०	विल ३.	४११२	" २.	३१८१९४
बालेय १.	३१४६५	विलेशय १.	८५११८	बुधित १. २. ३.	५४११०१
बाल्य ३.	४१४५४	विलेशया २.	३१४२६	बुधन १.	३१३१२२
बाष्प १.	६११४०	विलौकस् १.	४११६	बुन्दिर ३.	४३११८
बाष्पी १.	३१८१३२	विल्व १.	३१३३०	बुमुत्ता २.	३१६१८२
बाह १. २. ३.	५४१२०	" १.	५११५१	बुमुत्त १. २. ३.	५४१३६
बाहा २.	४१४०१	विल्वक १.	४११४७	बुम्बिका २.	४३१७०
बाहु १. २.	४१४०१	विस ३.	४२१४३	बुम्बी २.	४३१७०
बाहुज १.	३१७१	विसकण्टिका २.	२३११०	बुसुल १.	३१५३०
बाहुदन्तेय १.	१२१७	विसखण्ड ३.	४२१३९	बुलि २.	४१४६०
बाहुदा २.	४२१२६	विसनाभिज ३.	४२१३८	" २.	४१४६१
बाहुमूल ३.	४१४६९	विसप्रसून ३.	४२१३८	बुलकी २.	४११५५
बाहुयुद्ध ३.	३१७२०७	विसिनी २.	४२१४३	बुशाली २.	४३१२६
बाहुरक्षा २.	३१७१५५	विसिर ३.	३१८१२०	(बुशाली)	
बाहुल १.	२११८६	बीज ३.	२११८६	बुपा २.	३१९१७
" ३.	३१७१५५	" ३.	४१४१११	बुस १.	३१८६४
बाहुलेय १.	८११३५	" ३.	६३१२३	" ३.	३१८१४२
बाह्यनृत्त ३.	३१९७३	बीजकोश १.	४२१४५	बुसा २.	३१६१७
बाह्यलङ्घिन् १.	३१६२३८	बीजपुष्पिका २.	३१८५७	" २.	३१९१०७
बाह्यिक १ व.	३११२७	बीजपूर १.	३१३३३	बुस्तक १. २. ३.	३१३१५५
बाह्यीक १ व.	३११२७	बीजवर १.	३१८३५	वृंहित ३.	२१४७
" १.	३१७९५	बीजसू २.	३११४	वृन्द ३.	५११३
" ३.	३१८११३	बीजाकृत १. २. ३.	३१८२३	" ३.	५११२८
" ३.	७३१२६			" ३.	५११३०
बिडाल १.	३१४७१	बीजिन् १.	४१४२९	" ३.	५११३१
बिडालक १.	४१४९५	बीज्य १.	४१४५०	वृन्दाक १.	११११३
बिडौजस १.	१२१४	बीभत्स १.	३१९७५	वृन्दारक १. २. ३.	८५११८
बिन्दु १.	२१२८	" १.	३१९७७		
" २.	४१४२०	" १. २. ३.	३१९७८	वृहच्छद १.	३१३२०९
" १.	८१६१०	" १. २. ३.	७४१२१	वृहत् १. २. ३.	५४१८०
बिन्दुक १.	५११३८	बुक्कन ३.	२१४६	वृहत्तिका २.	४३१२२३
" ३.	५११४९	बुद्ध १.	१११३१	वृहती २.	३१३१०४
बिन्दुमेद १.	३१६२२३	" १.	१११३२	" २.	३१९११९
बिम्बोक १.	३१९९४	" १. २. ३.	५४११०१	" २.	७२११७
बिम्भेण १.	३१५४९	बुद्धि २.	३१६१६३	वृहत्कर्कोटक १.	३१३१६५
बिम्ब १.	४११२९	बुद्धिमत् १.	२१३२७	वृहद्गृह १ व.	३११३६
" १. ३.	६१५५५	बुद्बुद १.	४२११३	वृहन्नाम्न १.	१२११४
बिम्बसारक ३.	३१७१७५	बुध १.	२११३२		

(१०४)

वृहस्पति १.	२११३३	ब्रह्मपुत्र १ व.	२३३३७	ब्राह्मी २.	११११९
वृहणक १.	५११५४	” १.	४११२४	” २.	१११६४
वेन १.	६५३३४	” १.	८११३५	” २.	२११६
वेर ३.	३१९२१	ब्रह्मवन्धु १. २. ३.	८१११०	” २.	३३११४४
बोक्काण १.	३७११५	ब्रह्मविन्दु ३.	३६१२६	भ	
बोध १. २. ३.	५४१०१	ब्रह्मभाव १.	३६१२३७		
बोधकर १.	३७३३०	ब्रह्मभूय ३.	३६१२३७	भ ३.	२११३८
बोधन ३.	३६११६४	ब्रह्ममेखल १.	३३३२२९	भक्त ३.	४३३७५
बोधनीया २.	३६१९४	ब्रह्मरात्रिक १.	३६११५५	” १. २. ३.	६५६०
बोधान १.	३६१२२	ब्रह्मरीति २.	३२१२६	भक्तमण्डक १. ३.	४३३७८
बोधि १.	६५५७	ब्रह्मलोक १.	३६१२०८	भक्ति २.	३६३३८
” २.	८११५	ब्रह्मवर्चस ३.	३६१११६	” २.	६२१२६
बोधिसत्त्व १.	१११३२	ब्रह्मबालुक ३.	४११२३	भक्त १. २. ३.	५४१५०
बोधी २.	५११३७	ब्रह्मविष्णुमहेश्वर १ व.	१११५	भक्तकार १. २. ३.	४३३९२
बोल १.	३२१९५	ब्रह्मवृत्त १.	३३३२९	” ३.	४३३१०४
” १.	५३३१६	” १.	८६११९	भक्तणी ३.	३६६०
” १. २. ३.	६५५६	ब्रह्मवेदि २.	३११२३	भक्षित १. २. ३.	५४१०८
बोसर १.	५३३३४	ब्रह्मसंज्ञ १.	३३३८०	भग ३.	४४६१
ब्रसी २.	३६११४९	ब्रह्मसू १.	१११२९	” १. ३.	६५५८
ब्रह्मगर्भ ९.	१११५६	ब्रह्मसूत्र ३.	३६१२०	भगनेत्रान्तक १.	१११४३
ब्रह्मघोष १.	४११२३	ब्रह्मस्थली २.	४३३१०	भगन्दर १.	४४१३०
ब्रह्मचर्य ३.	३६११४	ब्रह्महत्या २.	८११७	भगवत् १. २. ३.	८५३१
” ३.	३६१२०९	ब्रह्माञ्जलि १.	३६१२६	” १. २. ३.	८११४६
ब्रह्मचारिणी २.	८५३०	ब्रह्मी २.	३३३१४४	भगिनी २.	४४२६
ब्रह्मचारिन् १.	१११५६	ब्रह्मोद्य ३.	८१११६	भगिनीपति १.	४४३८
” १.	३६३७	ब्रह्मौदनामि १.	१२१२६	भगिनीभ्रातृ १.	४४४७
” १.	८५३०	ब्राह्म १.	२११६७	भग्न १. २. ३.	३७१४८
ब्रह्मजटा २.	३३३१२२	ब्राह्मण १.	३६११	भग्नस्थिवन्ध १.	४४१३९
ब्रह्मदण्ड ३.	३७१७५	” १.	३६३३३	भङ्ग १.	४२१४४
ब्रह्मदण्डी २.	३३३१००	” १. २. ३.	७५६०	भङ्गि २.	५२३४
ब्रह्मदर्भा २.	३६११०२	ब्राह्मणव्र १. २. ३.	३६११०	भङ्गुर १. २. ३.	७४२१
ब्रह्मधारा २.	४३३१०	ब्राह्मणयष्टिका २.	३३३१००	भङ्ग्य १. २. ३.	३६२०
ब्रह्मन् १.	१११६	ब्राह्मणी २.	३२१२७	भजमान १. २. ३.	३४१०३
” १.	३५३	” २.	४११२९	भञ्जना २.	२४१२६
” ३.	३६१२७	” २.	४११३६	भञ्जिका ३.	३३३१००
” १.	३६३७९	ब्राह्मण्य ३.	७३३२५	भट १.	३५१९
” ३.	३६१६१	ब्राह्मिक १.	३६१२२	(नट)	
” १.	३६१६३				
” १.	६५१०३				
” १.	८११३०				
ब्रह्मनाभ १.	११११५				

भट १.	३।७।१३९	भन्दना २.	२।१।१९	भव १.	६।१।४१
भटिन्न १. २. ३.	४।३।९४	भम्भराली २.	२।३।४४	भवत् १. २. ३.	८।१।४६
भटोद्योग १.	३।७।२०२	भम्भा २.	३।१।१३३	भवन १.	३।४।७०
भट्ट १. २. ३.	८।१।४६	भय ३.	३।६।१८५	" ३.	४।३।१७
भट्टरक १. २. ३.	८।१।४६	भयङ्कर १. २. ३.	३।१।७८	भविक १. २. ३.	५।४।१४२
भट्टारक १.	३।१।१०३	भयद्रुत १. २. ३.	३।७।२१८	भवितव्यता २.	३।६।१८९
" १. २. ३.	८।१।४६	भयन ३.	३।६।१८५	भवितृ १. २. ३.	५।४।४१
भट्टारिका २.	३।१।१०४	भयानक १.	३।१।७५	भविल १. २. ३.	७।५।६२
भट्टिनी २.	३।१।१०४	" १.	३।१।७७	भविष्णु १. २. ३.	५।४।४१
भण्डन ३.	७।३।२६	" १. २. ३.	३।१।७८	भव्य १.	३।३।३७
भण्डाकी ३.	३।३।१०२	भर १.	५।२।३	" १. २. ३.	५।४।१४२
भण्डिल १.	३।३।७२	" १.	६।१।४१	" १. २. ३.	६।४।११
भण्डीरी २.	३।३।१४५	" १.	६।१।४२	भषण ३.	२।४।६
भदन्त १.	३।१।१०७	भरण ३.	३।१।५	" १.	३।४।६८
भद्र १.	३।७।६२	भरणी २.	२।१।४१	भषित ३.	२।४।६
" १. २. ३.	५।४।८०	भरण्य ३.	३।१।५	भसत् १.	२।३।२
" १. २. ३.	५।४।१४३	भरत १.	१।२।२६	भसद् २.	६।२।२६
" १. २. ३.	६।५।६०	" १.	३।६।७८	भसल १.	२।३।४२
" ३.	८।१।२४	" १.	३।१।६२	भसित ३.	१।२।३३
भद्रकाली २.	१।१।६१	भरथ १.	१।२।१९	भस्त्रा २.	३।१।१७
भद्रकुम्भ १.	४।३।६१	भरद्वाज १.	२।३।१९	भस्मगन्धिनी २.	३।०।९५
भद्रदारु ३.	३।३।७१	भरित १. २. ३.	५।४।८६	भस्मगर्भा २.	३।३।९२
भद्रपदा १. २. ३.	२।१।४१	भरुज १.	३।४।३७	भस्मन् ३.	१।२।३३
गद्रपणिका २.	३।३।५८	भरुटा २.	४।३।८६	भा २.	२।१।२२
भद्रमन्द्र १.	३।७।५४	भर्ग १.	१।१।४०	भाग १.	४।४।५५
भद्रमन्द्रमृग १.	३।७।६४	भर्तृ १.	४।४।३७	" १.	५।२।७
भद्रमुख १.	३।३।२२८	भर्तृदारक १.	३।१।१०५	" १.	६।१।४१
भद्रमुखक १.	३।३।१९९	भर्तृदारिका २.	३।१।१०४	भागधेय १.	३।७।४५
भद्रमृग १.	३।७।६४	भर्त्सन ३.	२।४।३४	" १. २. ३.	८।५।१९
भद्रयव १. ३.	३।३।७३	भर्मन् ३.	३।१।५	भागवत १.	३।६।१०५
भद्रलक्षण ३.	३।७।६३	" ३.	६।३।२३	" १.	३।६।१०५
भद्रवदन १.	१।१।२४	भर्मिन् १.	३।५।११	भागिनेय १.	४।४।४१
भद्रश्री १.	३।८।११२	भल्लह १.	३।४।७०	मागीरथी २.	४।२।२४
भद्रसुत १.	३।७।१५९	भल्ल १.	३।७।१८२	भाग्य ३.	३।६।१८९
भद्रा २.	३।३।१३९	भल्लाट १.	३।४।७	" ३.	६।३।२४
भद्राकरण ३.	३।६।४	भल्लातक १. २. ३.	३।३।९५	भाङ्गीन १. २. ३.	३।८।२०
भद्राङ्ग १.	१।१।२४	भल्लुक १.	३।४।४०	भाजन ३.	४।३।६२
भद्राश्व ३.	३।१।७	भल्लुक १.	३।३।६८	भाङ्गी २.	३।३।१००
भद्रासन ३.	३।७।१५	" १.	३।४।७	भाण १.	३।१।१००
भद्रेश्वर १.	१।१।३९				

भाण्ड ३.	३।७।४४	भावज्ञा २.	३।३।६७	भिन्नकूट ३.	३।७।५६
" ३.	४।३।६२	भावना २.	४।३।१५८	भिया २.	३।६।१८५
" ३.	६।३।२३	" २.	८।१।४	भिन्न १.	३।५।४६
भाण्डागारिक १.	३।७।२३	भावित १. २. ३.	५।४।९९	भिषज् १. २. ३.	४।४।१४३
भाण्डी २.	३।३।१४५	" १. २. ३.	८।१।२२	भिस्सा २.	४।३।७६
भातु १.	२।१।१०	भावुक १. २. ३.	५।४।४१	भिस्सिटा २.	४।३।७७
भानु १.	२।१।१०	भाषणी २.	२।४।३५	भी २.	३।६।१८५
" १.	२।१।५५	भाषा २.	१।१।९	भीत १. २. ३.	५।४।१८
" १.	६।१।४०	" २.	३।८।१६	भीति २.	३।६।१८५
भाद्र १.	२।१।८५	" २.	३।९।१०२	" २.	३।९।७६
भाद्रपद १.	२।१।८५	भास १.	२।३।३२	भीम १.	१।१।४३
भामिनी २.	४।४।५	भासन्त १.	७।१।५८	" १. २. ३.	३।९।७८
" २.	४।४।१०	भासुर १. २. ३.	५।४।१४२	भीमर १.	३।७।२६
भार १.	५।१।६१	भास्कर १.	२।१।१२	भीरु १.	३।३।७८
" १.	६।१।४१	" १.	७।१।५८	" २.	३।३।१६६
भारत ३.	३।१।५	भास्वत् १.	२।१।१२	" २.	४।४।५
भारती २.	१।१।९	" १. २. ३.	६।५।५९	" १. २. ३.	५।४।१८
" २.	३।३।११९	भास्वर १ व.	१।३।८	भीरुक १. २. ३.	५।४।१८
" २.	३।९।१०१	भिन्ना २.	३।३।१५	भीरुचेतस् १.	३।४।११
" २.	३।९।१०२	" २.	३।३।१२१	भीरुपर्णी २.	३।३।१४२
भारद्वाज ३.	४।४।१०९	" २.	६।२।२६	भीरुवाल १.	३।३।३०
भारद्वाजी २.	३।३।९९	भिन्नाचार १. २. ३.	३।३।१७	भीलुक १. २. ३.	५।४।१८
भारयष्टि २.	३।९।६	भिन्नु १. २. ३.	३।३।१२६	भीषण १. २. ३.	३।९।०९
भारवह १. २. ३.	३।७।२२२	" १.	३।३।१६०	भीष्म १. २. ३.	३।९।७८
भारवाह १.	३।९।६	" १.	३।४।२७	भुक्त १. २. ३.	५।४।१०८
भारसह १.	३।४।६६	भिन्नुकी २.	४।४।१०	भुम् १. २. ३.	५।४।१२४
भारिक १.	३।९।६	भिन्नुलोचक ३.	३।३।५	भुज १.	३।३।४५
भारित ३.	५।१।६२	भिन्नुसङ्घाटी २.	४।३।१२८	" १.	३।३।१९३
भारुष १.	३।५।५८	भिण्डपाल १.	३।७।१६६	" १. २.	४।४।७१
" १.	३।६।१०३	भित्त ३.	४।४।५६	भुजग १.	४।१।५
भार्गव १.	२।१।३४	भित्तिका २.	४।३।३७	भुजगाङ्गय ३.	३।३।२९
भार्गवी २.	१।१।३६	" २.	७।२।१८	भुजङ्ग १.	४।१।५
" २.	३।३।२३३	भिदा २.	५।२।४१	" १.	४।४।३९
भार्गी २.	३।८।८१	भिदु १.	१।२।१३	भुजङ्गम १.	४।१।५
भार्या २.	४।४।३४	भिदुर १.	१।२।१३	भुजङ्गारि १.	२।३।३७
भालुक १.	३।४।३३	" १.	३।७।८३	भुजि १.	१।२।१८
भाव १.	३।६।१७४	भिद्य १.	४।२।२९	भुजिष्य १.	३।९।२
" १.	३।९।८०	भिन्न १. २. ३.	५।४।१११	" १.	३।९।४
" १.	३।९।९७	" १. २. ३.	६।४।११	" १. २. ३.	७।४।२२
" १.	६।१।४३	भिन्नकुम्भ १.	३।९।४	भुरण्यु १.	७।१।५९
				भुवन ३.	३।६।२०६

भुवन ३.	भा११२	भूपदी २.	३३११८३	भृङ्ग १.	२३३४२
" ३.	४२१२	भूपूग १.	३३२२१९	" ३.	३८११०४
भुवन्य १.	७११५९	भूसुज्ज १.	३३७१	" ३.	३८११०७
भुवस् १. ४.	३३६२०६	भूसृत्सभ ३.	८१९२०	भृङ्गराज ३.	३३११०७
भुसुण्डी १.	३३७१७०	भूमि २.	३३१११	" १.	८११३६
(भुसुण्डी)		" २.	६२२२७	भृङ्गरीट १.	१११५२
भू २.	३३११४	भूमिकन्दर ३.	३३११५३	भृङ्गा २.	३८१५१
" २.	८१२१६	(भूमिकन्दक)		भृङ्गाण १.	२३३४२
" २.	८६१४	भूमिका २.	३३१६८	भृङ्गार १.	४३११०८
भूधन १.	४३४५३	भूमिकागत १.	३३१६८	भृङ्गारी २.	२३३४७
भूत १. ३.	१३३२	भूमिकूरमाण्ड १.		भृङ्गिन् १.	१११५२
" ३.	३३६२०६		३३३१९५	भृङ्गिरिटि १.	१११५२
" ३.	४३४१	भूमिमयी २.	२३३२३	भृङ्गकण्ठ १.	३३५५३
" १. २. ३.	५३४९९	भूमिलाभ १.	३३३२०१	" १.	३३५६६
" १. २. ३.	६३५५९	भूमिस्पृश १	३८११	भृङ्गकण्ठक १.	३३५१००
" १. ३.	८१९३०	" १.	७११५९	भृत्क १. २. ३.	३३९५
भूतग्राम १.	५३११७	भूयिष्ठ १. २. ३.	५३४८५	भृत्ति १.	३३९५
भूतघ्नी ३.	३३३१२१	भूरद १.	३३३१३३	भृत्तिभुज् १. २. ३.	३३९५
भूतदमनी २.	१११४९	भूरि १. ३.	३३२२०	भृत्त्य १.	३३९२
भूतधात्री २.	३३१२	" १. २. ३.	५३४८५	भृत्त्या २.	३३९६
भूतपुष्प १.	३३३६९	भूरिमाय १.	३३३३८	भृत्थ १.	४३१५०
भूतफल १.	३३३१६६	भूरिलोह ३.	३३२२९	भृत्श १. २. ३.	५३४१३१
भूतलोद्भव ३.	३३२३०	भूरिश्रवस् १.	१२१५	भृत्शकोपन १. २. ३.	५३४३२
भूतवास १.	३३३१७६	भूरुह १.	३३३४	भृत्शङ्गत १. २. ३.	३३७१४९
भूतसम्भव १.	२३१९४	भूरुह १.	३३३४	भृष्ट १. २. ३.	४३१९३
भूतसारी २.	३३८८२	भूर्ज १.	३३३४५	भृष्टयव १.	४३३७१
भूतात्मन् १.	७११६०	भूर्जषत्र १.	३३३४५	भेक १.	३३५२९
भूतापुत्र १.	१३३२	भूलता २.	४३१५९	" १.	४३१४७
भूति २.	१३३३३	भूलवण २.	३३८१२२	" १. २. ३.	६३५५९
" २.	४३३८७	भूलल्लर ३.	३३३१५३	भेटक १.	३३८६९
" २.	६३२२७	भूशक्र १.	३३४१	भेद १.	३३७१३
" २.	८३५३४	भूश्वत्र ३.	४३१३	" १.	६३१४२
भूतिक ३.	७३३२६	भूषण ३.	४३१३३	भेदित १. २. ३.	५३४१११
भूतेश १.	१३१४३	भूष्ण १. २. ३.	५३४४१	भेन १.	६३१४२
भूतेष्टा २.	२३१७०	भूसृवण ३.	३३३२३४	भेय १.	५३२१२
" २.	२३१८०	भूसृष्ट १.	६३१४२	भेरी २.	३३९१३३
भूदार १.	३३४६	भूस्रोट ३.	३३३१५३	भेरीनाद १.	२३४११
भूदैष १.	३३६१	भृकुंस १.	३३९६७	भेल १.	३३४३
भूधर १.	३३२१	भृकुटि २.	३३९९१	" १.	४३२१६
भूनामन् २.	३३२१७	भृगु १.	३३२६		
भूप १.	३३७१	भृङ्ग १.	२३३२७		

[मेल]

शब्दानुक्रमणिका

[मञ्जूषा]

मेल १. २. ३.	६५५७	अमरेष्ट १.	८११५९	मख १.	३६१८२
मेलन ३.	५२११२	अमि २.	५२११०	मगध १ व.	३११३१
मेलुक १.	१११५२	अप १.	५१११०२	मघवत् १.	११२२
मेपज ३.	४११४१	अष्ट १. २. ३.	५१११०२	मघा १ व.	२११४३
मैत्र ३.	३६८२	आज् १.	११३११	मङ्कु १.	४११२६
" ३.	५१११३	आणक्षक	३६५२५	मङ्कुश १.	३६५७०
मैमरथी २.	२११६१	आवृ १.	४११३१	मङ्कु ४.	८६८१
मैरव १. २. ३.	३११७९	" १.	४११४७	मङ्ग १. ३.	३२११७
" १.	८११६०	आवृष्य १.	७११५९	मङ्गल १.	२११३१
मैपज्य ३.	४११४१	आत्र १.	३६८४१	" १.	५३१४८
भोः (-स्) ४.	८६८२	आत्रीय १.	४११४२	मङ्गलध्वनि १.	३६६५७
भोग १.	४११२१	आन्ति २.	५२११०	मङ्गलमालिका २.	
" १.	६११४४	आमकादि १.	३२१३८		३६६५७
भोगभूमि २.	१११११	आमर ३.	३६८१३५	मङ्गलाह्निक ३.	३६६५८
भोगवती २.	४११४	आमरी २.	१११५९	मङ्गल्य १.	३३३३०
" २.	४२२५	आप्ट १.	५२१५६	" ३.	३६८४०
भोगिन् १. २. ३.	७५३१	अकुंस १.	३११६७	" १.	३६८१४९
भीगिनी २.	७५३२	अकुट १.	३११६७	" ३.	४३११४
भोज १ व.	३११३७	अकुटि २.	३११९१	मङ्गल्या २.	३३१९८
" १.	३६६२	अ २.	४११९६	" ३.	३६८१०८
भोजन ३.	४३१०२	" २.	८११२	" २.	५३१५८
भोजनीय ३.	३६८११९	अकुंस १.	३११६७	मङ्गिनी २.	४२११५
भोज्य ३.	३३३६२	अकुटि २.	३११९१	मचर्चिका २.	८११४२
भोल १.	३२२२१	अण १.	६११४०	मज्ज १.	४१११०
भौम १.	१२१३२	अणि २.	४२२२१	मज्जा २.	३३११४
भौरिक १ व.	३११३१	अण १.	३६५१५	" २.	४१११०
" १.	३६७२१	अणक १.	३६५३१	मज्जाकर ३.	४११०९
अकुंस १.	३११६७			मञ्च १.	४३३३२
अकुञ्च १.	३६५१५	म		मञ्चक १.	४३१६४
अकुटि २.	३११९१	मक १.	३६५२९	मञ्जन ३.	३६५२४
अम १.	३६६१७७	मकर १.	१२१६०	मञ्जरि २.	३३३२०
" १.	३१११८	" १.	४११५१	मञ्जरी २.	३३११९
" १.	४२१११	" १.	८६१३३	मञ्जरीक १.	३३१२०
" १.	५२११०	" १.	८६११५	मञ्जिष्ठा २.	३३१३५
अमन्त १.	५२१५१	मकरध्वज १.	१११२७	मञ्जी २.	३३३२०
(गृहकोटहक)		मकरन्द १.	३३११९	" २.	३६६२
अमर १.	२३३४२	मकरवाहन १.	१२१४५	मञ्जरी १. ३.	४३१४५
" १. २. ३.	७५६२	मकरालय १.	४२१११	मञ्जु १. २. ३.	५११३४
अमरक १.	३६८१३५	मकुट १. ३.	४३१३५	मञ्जुल १. २. ३.	
" १.	४११९९	मकण १.	३७६७		५११३४
अमरालक १.	४११९९	मक्षिका २.	२३३४४	मञ्जूषा २.	४३३६३
		मञ्जुण ३.	५११४८		

मञ्जूषा]

वैजयन्तीकोषः

[मधु

मञ्जूषा २.	७२।१	मण्डलिन् १.	४।१।७	मत्स्याक्षी २.	३।३।१४४
मट १.	३।५।१८	” १.	४।१।८	” २.	३।३।१५६
मटची २.	२।२।७	” १.	४।१।१०	मथित ३.	३।८।१००
मठ १.	४।३।२७	” १.	४।१।१३	मथिन् १.	३।१।३१
” १. २. ३.	८।१।३९	” १.	७।१।६०	मथुरा २.	४।३।६
मठर १.	५।३।३	मण्डलेश्वर १.	३।७।२	मद १.	३।३।१८८
मठी २.	८।१।३९	मण्डहारक १.	३।५।४४	” १.	३।७।८२
मट्टपिका २.	३।६।५१	मण्डिका २.	४।३।७८	” १.	५।२।३२
(मट्टपिका, मट्टपिका)		मण्डकी २.	३।७।७९	” १.	८।५।३६
मड्ड १.	३।१।१३५	मण्डूक १.	३।७।५१	मदकल १.	३।७।६८
मड्डकैरिक १.	३।५।३१	” १.	४।१।४८	मदकोहल १.	३।४।५४
मणि १. २.	३।२।३६	मण्डूकपर्ण १.	३।३।६८	मदन १.	२।३।३
” १. २.	४।३।६२	मण्डूकपर्णी २.	३।३।१४४	” १.	३।३।४९
” १. २.	४।३।७३	मण्डूर ३.	३।२।३६	” १.	३।३।६१
” १. २.	६।५।६२	मत ३.	३।६।१७४	” १.	३।८।५५
मणिक १.	४।३।५६	” ३.	३।८।१०७	” १.	३।८।१३७
मणिकण्ठ १.	२।३।२९	मतङ्गज १.	३।७।६०	” १.	७।१।६१
मणिकार १.	३।५।६३	मतल्लिका २.	८।१।४२	मदनध्वजा २.	२।१।७५
” १.	३।१।१५	मति २.	३।६।२३३	मदना २.	३।१।४६
मणित ३.	२।४।७	” २.	६।२।२७	मदनी २.	३।४।३६
मणिवन्ध १.	४।४।७३	मत्कुण ३.	३।७।१५४	मदवृन्द १.	३।७।६२
मणिल १. २. ३.	५।४।८	” १.	४।१।३५	मदमत्तक १.	३।३।७७
मणिसालु १.	१।३।१२	मत्त ३.	३।७।६७	मदयन्ती २.	३।३।१८३
मणिसोपान ३.	४।३।१४२	” १. २. ३.	५।४।३७	मदस्थान ३.	३।१।७३
मणीच ३.	७।३।२७	मत्तकाशिनी २.	४।४।१२	मदिरा २.	३।१।४५
मणीचक ३.	३।३।१८	मत्तवारण ३.	४।३।३१	मदिष्ठा २.	३।१।४६
मण्टप १. ३.	४।३।२८	” ३.	४।३।१६४	मदुर १.	३।३।३
मण्डजात ३.	३।८।१४०	मत्त ३.	३।८।३०	मदोत्कट १.	२।३।१४
मण्ड १. ३.	४।३।३७	मत्सर १. २. ३.	७।५।६३	” ३.	३।१।४८
” १.	५।१।४७	मत्स्य १.	१।१।१८	मदोदका २.	३।८।८२
मण्डन ३.	४।३।१३३	” १.	४।१।४१	मदुगु १.	२।३।११
” १. २. ३.	५।४।४१	मत्स्यगु १.	३।६।१५७	” १.	३।५।५२
मण्डपीठिका २.	२।१।७	मत्स्यगुणी २.	३।८।१३३	” १.	३।५।७१
मण्डल १.	३।४।६९	मत्स्यधानी २.	२।१।४२	” १.	३।५।८४
” ३.	३।७।४९	मत्स्यनाशन १.	२।३।३४	” १.	३।५।९३
” ३.	३।७।१८७	मत्स्यपित्ता २.	३।८।६८	मदलध्वनि १.	२।४।१०
” ३.	४।४।१२४	मत्स्यराज १.	४।१।५१	मद्य ३.	३।१।४४
” १. २. ३.	७।५।६५	मत्स्यवेधन ३.	३।१।४२	मद्यबीज ३.	३।१।५०
मण्डलपत्रिका २.	३।३।९२	मत्स्यव्रतिन् १. २. ३.	३।६।१३१	मद्यलालस १.	३।३।२६
मण्डलाग्र १.	३।७।१६०	मत्स्यसङ्घात १.	४।१।४५	मद्यसन्धान ३.	३।१।५१
मण्डलिन् १.	३।४।७२			मधु १.	२।१।८३

मधु]

शब्दानुक्रमणिका

[मन्थर

मधु १.	२।१।८७
" १.	३।३।६१
" २.	३।३।१४३
" १. ३.	३।८।१३४
" ३.	३।८।१४५
" १.	५।३।३३
" १.	६।५।६१
मधुक १.	३।५।३७
" १.	३।७।३०
" ३.	३।८।१३४
" १.	५।३।३२
मधुकर १.	२।३।४३
मधुका २.	३।८।५६
मधुकुक्कुटी २.	३।३।३४
मधुक्रम १.	३।९।५२
मधुत्तीर १.	३।३।२२२
मधुच्छद १. २.	३।३।३८
मधुनृण १.	३।३।२२५
मधुप १.	२।३।४२
मधुपर्क १.	३।६।६२
मधुपर्णी २.	८।२।८
मधुपुष्प १.	३।३।४३
मधुबीज १.	३।३।७४
मधुबोल १.	५।३।३८
मधुमक्षिका २.	२।३।४५
मधुमद्य ३.	३।९।४८
मधुमालक १.	५।३।३७
मधुयष्टिका २.	३।८।१०३
मधुर ३.	३।८।१०३
" ३.	३।९।११२
" १. २. ३.	४।३।८२
" १.	५।४।२५
" १.	५।४।२७
" १. २. ३.	७।३।२२
मधुरवाच् १. २. ३.	५।४।४४
मधुरस १.	३।३।२१०
मधुरसा २.	८।२।८
मधुरस्वन १.	४।१।५५
मधुरा २.	३।१।२५
" २.	४।३।६

मधुराङ्गक १.	५।३।२७
मधुराम्लक ३.	३।८।१३६
मधुलिह् १.	२।३।४२
मधुवाच् १.	२।३।२७
मधुवार १.	३।९।५२
मधुव्रत १.	२।३।४३
मधुशिमु १.	३।३।५६
मधुश्रेणि १.	३।५।४४
मधुछील १.	३।३।४३
मधुसख १.	१।१।२८
मधुसारथि १.	१।१।२९
मधुसूदन १.	१।१।१५
मधुस्रव १.	३।३।४३
मधुस्रवा २.	३।३।१८०
मधूक १.	३।३।४३
मधूच्छिष्ट ३.	३।८।१३७
मधूपद्मा २.	४।३।६
मधूल ३.	३।८।१३७
" १.	५।३।३३
मधूलक १.	३।३।४४
" १.	५।३।२५
" १. २. ३.	८।९।३३
मधूलिक १.	५।३।३३
मधूषिका २.	४।३।६
मध्य ३.	३।९।१२३
" १. ३.	४।४।६७
" १. २. ३.	५।१।२९
" १. २. ३.	६।५।६३
मध्यदन्त १.	४।३।८९
मध्यदेश १.	३।१।२२
मध्यन्दिन १.	२।१।६५
मध्यम १.	३।९।१३२
" १.	४।४।६७
" १. २. ३.	५।४।७७
मध्यमा २.	४।४।७४
मध्यमीय १. २. ३.	५।४।७७
मध्यमोत्खात १.	३।६।२३०
मध्यरात्र १.	२।१।६६
मध्यस्थ १. २. ३.	३।८।९
मध्याह्न १.	२।१।६५

मध्वालुक १.	३।३।२१०
मध्वासव १.	३।९।४९
मनरिशला २.	३।२।११
" २.	३।३।२११
मनस् ३.	३।३।१७२
मनसिज १.	१।१।२७
मनस्कार १.	३।६।१७४
मनाक् ४.	८।८।१२
मनाका २.	७।२।१९
मनित १. २. ३.	५।४।१०१
मनीपा २.	३।६।१६३
मनीपिन् १.	३।६।२३५
मनुज १.	३।५।१
मनुज्येष्ट १.	३।७।१५८
मनुष्य १.	३।५।१
मनुष्यधर्मन् १.	१।२।५६
मनोजव १.	३।५।५
मनोजवा २.	१।२।३०
मनोज्ञ १. २. ३.	५।४।१३४
मनोज्वला २.	३।४।१८२
मनोमिधा २.	३।२।१२
मनोरथ २.	३।३।१७९
मनोरम १. २. ३.	५।४।१३५
मनोविकार १.	३।९।८०
मनोहर १. २. ३.	५।४।१३५
मनोहरी २.	३।८।७७
मन्तु १.	३।७।४७
मन्त्र १.	३।६।३३
" १.	६।१।४५
मन्त्रजिह्व १.	१।२।१७
मन्त्रज्ञ १.	३।७।२६
मन्त्रिन् १.	३।७।१८
" १.	३।७।१९
" १.	८।१।४५
मन्थ १.	३।९।३१
" १.	४।३।७१
मन्थपात्र ३.	३।९।३२
मन्थर १. २. ३.	३।७।१५०

[मन्थर]

वैजयन्तीकोषः

[मलय]

मन्थर १. २. ३. ७।५।६४	मयु १. १।३।३	मर्कट १. ३।४।३९
मन्थविष्कम्भ १. ३।९।३२	मयूक १. २।३।३७	„ ३. ४।३।४८
मन्थान १. ३।९।३१	मयूख १. २।१।१६	मर्कटक १. ३।८।६२
मन्थोदधि १. ३।१।११	„ १. २. ३. ८।९।२५	„ १. ४।१।३४
मन्द १. १।२।३४	मयूर १. २।३।१४	मर्कटास्य ३. २।२।२४
„ १. २।१।३५	„ १. २।३।३६	मर्कटी २. ४।३।४८
„ ३. ३।८।१४०	मयूरक ३. ३।२।४२	मर्कस १. ३।९।५१
„ १. २. ३. ५।४।५५	„ १. ३।३।११५	मर्कोटपिपीलिका २. ४।१।३७
„ १. २. ३. ६।५।६०	„ १. ३।३।१२०	
मन्दगामिन् १. २. ३. ३।७।१५०	मरकत ३. ३।२।३८	मर्त १. ३।६।२०६
मन्दर १. ४।३।१४०	मरण ३. ३।६।२०२	मर्त्य १. ३।५।१
मन्दरमणि १. १।१।४६	मरणालस ३. ३।६।२१७	मर्त्यलोक १. ३।६।२०६
मन्दरवासिनी २. १।१।६३	मरन्द १. ३।३।१९	मर्द १. ३।६।१६७
मन्दाकिनी २. १।१।१३	मराल १. २।३।५	मर्दन ३. ५।२।३०
मन्दाक्त ३. ३।६।१९४	„ १. ३।३।१९२	मर्दनी २. ३।७।१५५
मन्दागा २ व. २।१।४१	„ १. ३. ५।३।१७	मर्दल १. ३।९।१३४
मन्दार १. १।३।१४	मरिच ३. ३।८।७९	मर्दलध्वनि १. २।४।१०
„ १. ३।३।४४	मरिष्टक १. ३।२।३८	मर्मभेदन १. ३।७।१७९
मन्दिर ३. ४।३।१८	मरीच ३. ३।८।७९	मर्मर २. २।४।८
„ ३. ७।३।२७	मरीचि १. २. २।१।१६	„ १. ५।४।१४४
मन्दुपाल २. ३।५।३१	मरीचिका २. २।१।२२	मर्मरा २. ४।३।७०
मन्दुरा २. ४।३।२१	„ २. ५।१।४२	मर्मस्पृश १. २. ३. ५।४।११२
मन्दोत्खात १. ३।६।२३०	मरु १ व. ३।१।३८	मर्यादा २. ३।९।१५
मन्दोष्ण ३. ५।३।९	„ १. ३।१।४२	„ २. ४।२।१३
मन्द्र १. २. ३. २।४।१३	मरुक १. ३।४।११	„ २. ४।३।११
„ १. ३।७।६२	मरुजा २. ३।४।२२	„ २. ७।२।१९
मन्द्रभद्रमृग १. ३।७।६५	मरुत् १. १।१।२	मर्ष १. ३।६।१८४
मन्द्रलक्षण ३. ३।७।६३	„ १. १।२।३९	मल ३. ३।२।२९
मन्मथ १. १।१।२७	„ २. ३।३।११७	„ १. ३।५।२४
„ १. ३।३।३२	मरुवत् १. १।२।४	„ १. ४।१।३२
मन्मथसख १. २।१।८३	मरुद्गण १ व. १।३।८	(अल)
मन्या ३।७।८५	„ १ व. १।३।१०	„ १. ३. ४।४।११९
„ २. ४।४।११७	मरुध्व १. ३।३।६३	„ १. ३. ४।४।१२०
मन्यु १. ३।६।१८३	मरुन्माला २. ३।३।११७	„ १. ५।४।१४४
„ १. ६।१।४५	मरुल १. ३।४।७३	„ १. ३. ६।५।६५
मन्वन्तर ३. २।१।९३	„ ३. ४।२।१	मलद १ व. ३।१।३६
मय १. १।३।७	मरुवक ६. ३।३।४९	„ १. ३।८।३५
„ १. ३।४।६७	मरुक १. ७।१।६२	मलना २. ३।३।१६०
मयष्टक १. ३।८।३८	मरुद्भव १. ३।३।६४	मलय १. ३।२।३
	मर्क १. १।२।४९	„ १. ७।५।६३
	„ १. ६।१।४७	

मलयज]

शब्दानुक्रमणिका

[महाबुस

मलयज १.	३१८११२	मषिघटी २.	३१९२५	महाग्राम १.	४३३२
मलयद्वीप ३.	३१११४	मसुर १.	३१८१४०	महाग्रीव १.	३१४६७
„ ३.	३१११६	मसूरक १.	३१८१४०	महाघोण्टा २.	३१३७८
मलयवासिनी २.	१११६३	मसूरिका २.	३१८१४०	महाचण्डी २.	१११६४
मलयद्वाशास् २.	४१४१५	मसूरी २.	४१४१३७	महाचारी २.	३१९१४२
मलवारिन् १. २. ३.	५१४१६	मसृण १.	५१३१४	महाजम्बू २.	३१३१९२
मलयविष्टम्भ १.	४१४१२८	मसृणत्व ३.	५१३११	महाजाली २.	३१३१६२
मलस्रुति २.	४१४१२८	मसृणी २.	३१८१४५	„ २.	३१८१२३
मलहारक १.	३१७८७	मस्कर १.	३१३२१५	महाज्वाला २.	११२२९
मलिन ३.	४१२११	मस्करिन् १.	३१६१६०	महाझप १.	४११५५
„ १. २. ३.	५१४६६	मस्तक १. ३.	४१४८६	महाटवी २.	३१३२
मलिना २.	४१४१५	मस्तिक १.	४१४८५	महातेजस् १.	१११५५
मलिनाम्बु ३.	३१९२५	मस्तिक १.	४१४११२	महात्मन् १. २. ३.	५१४५६
मलिम्बुच १.	३१३१४	मस्तु ३.	३१८१४४	महादंष्ट्र १.	३१४४
„ १.	३१६७७	मस्तुलङ्ग १. ३.	८१५१९	महादेव १.	११३११
„ १.	३१९५५	मस्तुलङ्ग १.	४१४११२	महादेवी २.	१११५८
मलीमस १. २. ३.	५१४१६	मह १.	३१६१६१	„ २.	३१७३१
मल्लक १.	३१४७२	महः ३.	३१६२०७	महाधन १. २. ३.	४३११८
„ १.	४१६६७	महत् १.	३१६१६३	महाधातु १.	४१४१०४
मल्लक १.	२१३२	„ ३.	३१६२०७	महानट १.	१११४४
मल्ल १.	३१५५५	„ १. २. ३.	६१५६३	महानर्मन् १.	३१५७१
„ १.	४१३६७	„ ३.	८१३१८	महानस ३.	४३१५४
„ १.	४१४८८	महती २.	३१३१३८	महानाद १.	३१४११
मल्लक १.	२१३३१	„ २.	३१९११९	महानील ३.	३१२४०
मल्लनाग १.	३१६१५९	महत्तरी २.	३१७३७	महानेमि १.	२१३१५
मल्लि २.	६१२२७	महर् ३. ४.	३१६२०७	महापत्त १.	२१३११
„ १. २.	८१९२६	महत्विज् १.	३१६७९	महापत्तिन् १.	२१३२३
मल्लिका २.	३१३१८३	महस् ३.	६१३२४	महापत्र १.	३१३२१६
मल्लिकाकुसुमप्रिय १.	३१३३५	महाकदम्बक १.	३१३६०	महापद्म १.	११२६०
मल्लिकाच १.	२१३७	महाकन्द ३.	३१३२०४	„ १.	३१३२०९
„ १.	३१७९२	„ ३.	३१८७६	„ १.	४१११२
मल्ली २.	४१३५७	महाकाय १.	३१७६१	„ ३.	४१२४०
„ २.	८१९२६	महाकार १ ब.	३११३९	महाप्रलय १.	२११९४
मशक १.	२१३४४	महाकाल १.	८११३७	महाफला २.	३१३८८
मशकहरी २.	४१३१२४	महाकाली २.	१११६१	„ २.	३१३९२
मशकिन् १.	३१३२८	महाकीर्तन ३.	४१३१९	„ २.	३१३१७०
मशन ३.	२१४२	महाकोशातकी २.	३१३१५९	महाबल २.	११२५०
मशाक १.	२१३३	महागण १.	५११३१	„ २.	३१८१३१
		महागन्धा २.	१११६४	महाबुस २.	३१८३४
		महाग्रहायणी २.	२११७८		

(११३)

[महाब्रुस]

वैजयन्तीकोषः

[माणव्य]

महाब्रुस २.	३८८५१	महाशक्का २.	३३३३४	महोदया २.	४१४६
महाभूत ३.	३६१२०६	महाशालि १.	३८८३२	महोदरी २.	३३१९९९
महामात्र १.	३८८८८	महाशिला २.	३८८१६९	महोद्रेक १.	५११५४
" १. २. ३.	५१४५६	महाशृङ्ग १.	३९१२८	महौजस् १.	१११५६
महामुख १.	४११५३	महाश्रावणिका २.	३९१५४	महौषध १.	३३३२०६
महामुनि १.	३३३७९	महाश्वेता २.	३३३१३५	" ३.	८३३१०
महामूल्य १. २. ३.	४३३११८	" २.	३३३१९६	मा २.	१११३६
महामृग १.	३८८६३	महासना २.	३३३१११	" २.	८८११०
महामेरु १.	१३३१२	महासन्धा २.	३३३१०५	" २.	८९१२
महाम्बुज ३.	५११३२	महासर्प १.	४११११	मांस ३.	४१४१०६
महायज्ञ १.	३६६६३	महासहा २.	३३३१०७	मांसकर ३.	४१४१०५
महायव १.	३८८५२	" २.	३३३१८८	मांसकील १.	४१४१३३
महारजत ३.	३३३१८	" २.	८१११५	मांसनिष्काथ १.	४३३८७
" ३.	३८८९१	महासुति २.	२११९४	मांसल १. २. ३.	५१४६
महारण ३.	३८८२०६	महासेन १.	१११५५	मांसलता २.	४१४११२
महारस १.	३३३२२२	महास्नायु २.	४११११७	मांसविक्रयिन् १.	३९१३७
" १.	३३३२२५	महाहस १.	३९१८४	मांसि १.	५३३५६
महारसा २.	३३३११०	महित १.	३३३१५	मांसिक १.	३९१३७
" २.	३३३१२३	(महिक)		मांसी २.	३८१००
महाराज १.	३९११०३	महिमत १.	११२२७	माकन्द १.	३३३२५
" १.	४१४७६	महिमन् १. ३.	८१३३१	माक्षिक ३.	३३३१५
" १.	८१३२६	महिला २.	४१४४	" ३.	३८१३५
महारात्र १.	२११६६	महिष १.	३१४८	मागध १.	३१५१६
महारात्री २.	१११६१	" १.	३१५१३	" १.	३१५७९
महाराष्ट्र १ व.	३११३३	महिषबाहन, १.	१२३३३	" १.	३१५८०
महालय १.	८११३६	महिषाक्ष १.	३८११२	" १.	३१५८७
महालोभ १.	३३३५२	महिषी २.	२११७४	" १.	३७३३०
महावस १.	४११५४	" २.	३७३३१	" १.	३८८४
महाविड ३.	३८८१२३	" २.	७१२१९	मागधी २.	३३३१६०
महाविष्णु १.	१११३१	मही २.	३११३	" २.	३८८७६
महावीर १. २. ३.	८१५२०	महीपति १.	३३३३७	मागवी २.	३८८५६
महावृष १.	३८८३५	महेच्छ १. २. ३.	५१४१६	माघ १.	२११८२
महावेग १.	३१५४०	महेन्द्र १.	११२७	माघी २.	२११७४
महाव्यसनसप्तक ३.	३७१११	महेन्द्रजित् १.	१११३७	माघ्य १.	३३३१९१
महाव्रत १.	१११४५	महेश्वर १.	१११३८	माटङ्क १.	४३३३४
महाशय १. २. ३.	५१४१६	" १.	३३३५३	माठि २.	३७१५३
महाशक्त १.	४११४४	महेश्वरी २.	३३३२६	माठि २.	३३३१८
		महोक्ष १.	३३३५५	माण १.	३३३२०९
		महोत्पल ३.	४३३३७	माणव १.	४३३१४०
		महोदधि १.	४३३१२	माणवक १. २. ३.	५१४३
		महोदय १.	४३३७	माणव्य ३.	५११७

[माणिक्य]

शब्दानुक्रमणिका

[मार्षक]

माणिक्य ३.	३२१४१
माणिक्या २.	४११३०
माणिचरि १.	११३३
माणिमन्थ ३.	३१८१२०
मातङ्ग १.	३७१५४
मातङ्गी २.	८२११४
मातरपितर १ द्वि.	
	४४१४७
मातरिश्वन १.	१२१४७
मातलि १.	१२१९
मातापितृ १ द्वि.	४४१४७
मातामह १.	४४३३०
” १ व.	४४१४९
मातुल १.	४४३३३
” १.	७११६१
मातुलपुत्र १.	८११५४
मातुलानिका २.	३८१५१
मातुलानी २.	४४३३६
मातुलाहि १.	४१११९
मातुली २.	४४३३६
मातुलुङ्ग १.	३३३३३
” १.	३३३३३
मातुलुङ्गी २.	३३३३४
मातृ २.	२११७४
” २.	४३१६३
” २.	४४२६
” २.	६२२८
” २.	८६१८
” २.	८९१४४
मातृका २.	४४२१
मातृमुख १. २. ३.	
	४४१४६
मातृशिष्ट १. २. ३.	
	४४२१
मातृष्वसेय १.	४४१४२
मातृष्वस्त्रीय १.	४४१४२
मात्र १. २. ३.	४४१३६
मात्रा २. ३.	६१५६२
” २. ३.	६१५६३
मात्सर्य ३.	३६१८४
माथ १.	४४१३८

माथिक १.	३३१७५
माद १.	५२३२
माधव १. ३.	३९१४९
” १.	७११६१
माधवी २.	३३१८७
” २.	३९१४५
माधुर १.	३६१०८
” १.	५३३२
माध्वी २ व.	२१२२१
माध्वीक ३.	३९१४८
मानमन्दिर १.	१२१४२
(मानमन्दर)	
मानव १.	३५११
मानवी २.	३३१८२
मानस ३.	३६१७२
मानसौकस् १.	२३३६
मानिन् १.	३३१५०
मानी २.	५११५३
मानुष १.	३५११
मानुष्यक ३.	५११८
मान्दा २ व.	२११९९
मान्य ३.	४४१३८
मान्धीर १.	२३२८
मान्धीलव १.	२३२८
माभीद १.	३३१७९
माया २.	११११६
” २.	३३१३८
” २.	३६१६१
” २.	३७१२
मायाविन् १. २. ३.	
	५४२४
माथिक १. २. ३.	५४२४
माथिन् १. २. ३.	५४२४
मायु १.	४४१२१
मायूरी २.	३९१३१
मार १.	१११२७
मारक १. ३.	३६२०२
(मरक)	
मारजित् १.	११३३
मारण ३.	३७२१४
मारि २.	३६२०२

मारि २.	४४१३७
मारिष १.	३३१५०
” १.	३९१०६
मारुङ्ग १.	५३३१
मारुत १.	१२१५०
मारुती २.	२११५
मार्कव १.	३३१०७
मार्ग १.	३११४९
” १.	६११४६
मार्गण ३.	३७१७४
” १. २. ३.	५४६०
” १.	७५६४
मार्गणा २.	३६१२१
मार्गनिवेश १.	४३१५
मार्गर १.	३५३२
” १.	३५१००
” १.	३९१४२
मार्गशीर्ष १.	२११८१
मार्गायणी २.	२१३८
मार्गित १. २. ३.	५४१९८
मार्ज १.	५३३१
मार्जन १.	३३१५२
” १.	५३३१
मार्जना २.	२४१०
” २.	३९१३०
मार्जा ३.	४३१९९
मार्जार १.	३३१७८
” १.	३३१५६
” १.	३४१७१
मार्जारकण्ठ १.	२३३३८
मार्जारकर्णिका २.	
	११३३
मार्जारिका २.	३४३६
मार्जारी २.	३४३३
मार्जालीय १. २. ३.	
	८५२०
मार्जिता २.	४३१९८
मार्तण्ड १.	२११३
मार्तण्ड १.	२११०
मार्दङ्गिक १.	३९१७०
मार्षक १.	३९१०६

माष्टि]

वैजयन्तीकोषः

[सुखरा

माष्टि २.	४३११४७
माल ३.	३१११३
" १.	३३११२२
" १.	३५१२५
मालती २.	४३११८२
मालतीतीरसम्भव १.	३१८१३०
मालव ३.	३१११६
" १ व.	३११३७
" १.	३१६१०६
मालवक १.	३५१६३
माला २.	४३११५४
मालाकार १.	३१९३३
मालातृणक ३.	३३१२३४
मालिक १.	३१९३३
मालिका २.	३३११८६
" २.	४३१२९
" २.	५११२४
मालुक १. २. ३.	२४१२०
" १.	३५११९
मालुधान १.	४१११९
मालुवा २.	३३१२१०
मालूर १.	३३३३०
मालोर्जर १.	३३११२०
माल्य ३.	६३१२५
माल्यजीविन् १.	३१९३३
माल्यवत् १.	३१२४
माप १.	३१८३५
" १.	५११४३
" १.	५११४४
" १.	५११४५
" १.	५११६३
माषपर्णी २.	३३११०७
माषाशिन १.	३७१९१
माषीण १. २. ३.	३१८२०
माष्य १. २. ३.	३१८२०
मास १.	८११६१
मास १.	२११८०
मासतम १. २. ३.	५१११९
मासर १.	३१९५१

मासर १.	४३३७८
मासिक ३.	३६१६५
माहामलय ३.	३१११६
माहिर १.	१२१६
माहिष १. २. ३.	३१११४
माहिषाडुक १.	३५१४८
माहिष्मती २.	४३१९
माहिष्य १.	३५११२
" १.	३५१६९
माहेन्द्री २.	३३११७५
माहेयी २.	३१४४२
माहेश्वरी २.	१११६४
मित १. २. ३.	५४१३६
मितद्रु १.	४२११२
मितम्पच १. २. ३.	५४१५९
मित्र १.	२१११५
" ३.	३७३९
" ३.	३७४३
" ३.	३८१९२
" ३.	८११४७
मिथस् ४.	८७१२७
मिथिला २.	४३१७
मिथुन ३.	४३११००
" ३.	४४१४८
" ३.	५१११५
" १. २. ३.	५१११६
" ३.	५१११६
" ३.	८६११४
मिथुनत्व ३.	४३१७१
मिथुनिन् १.	२३१२४
मिथ्या ४.	८८१३३
मिथ्याचर्या २.	३६१९६
मिथ्याभियोग १.	३११३२
मिर्मिर १. २. ३.	५११९
मिश्र १. २. ३.	५११०८
मिश्रक ३.	३६१९२
मिष १.	३५११४
" ३.	३६१९५
मिषत् १. २. ३.	५४१६१
मिहिका २.	२२१९

मिहिर १.	२१११५
" १.	७११६२
मीढ १.	३१४६४
" १. २. ३.	५४११३
मीढा २.	३६१४६
मीन १.	४११४१
" १.	८६११४
मीना २.	३६१२३
मीनाङ्क १.	१११२७
मीमांसा २.	३६१२९
" २.	३६१७५
मीलिका २.	३२१२७
(नीलिका)	
मुक १.	५३१५६
मुकुन्द १.	११११३
" १.	१२१६१
मुकुन्दक १.	३३१२०५
मुकुर १.	४३११६२
मुकुल १. ३.	३३११९
मुक्तकञ्चुक १.	४११२०
मुक्तवन्धना २.	३३११८३
मुक्ता २.	४११५६
" २.	६२१२९
मुक्ताफल ३.	४११५७
मुक्तामुक्त ३.	३७१९६
मुक्तावली २.	४३१३८
मुक्तास्फोट १.	४११५६
मुक्ति २.	३६१२३८
मुख ३.	३८१२२१
" ३.	४३११५
" ३.	४४१८६
" ३.	६३१२५
मुखज १.	३६११
मुखवन्धन ३.	३८१४१
मुखभूषण ३.	३२१३१
" ३.	३३११०६
मुखभेद १.	३११८८
मुखमण्डन १.	३३१६९
मुखर १. २. ३.	५४१४६
मुखरञ्जु २.	३७११२
मुखरा २.	२३१२०

मुखावास]

शब्दानुक्रमणिका

[मूल

मुखावास १.	३।७।४८	मुनि १.	३।६।१५२	मुस्त १.	४।१।२५
मुखवासन १.	५।३।५३	मुनिपिष्टकिन् १. २. ३.	३।६।१५२	" १. २. ३.	८।९।३८
मुखशाला २.	४।३।२४		३।६।१३४	मुस्तक १. ३.	३।३।२००
मुखशोभा २.	३।६।३५	मुनिप्रिय १.	३।८।५८	मुस्ता २.	३।३।२००
मुख्य १. २. ३.	५।४।६३	मुनिवृत्त १.	८।६।१९	" २.	८।९।३८
मुख्योपाय १.	३।७।१२	मुतिव्रतिन् १. २. ३.	३।६।१३३	मुस्तु १. २.	४।४।७९
मुख १. २. ३.	६।४।१२		३।६।१३३	मुहुः (-र्) ४.	८।७।२७
मुचिर १. २. ३.	७।५।६६	मुनिसेवित १.	३।८।५७	" ४.	८।८।११
मुचुटि १. २.	४।४।७९	मुनीन्द्र १.	१।१।३४	मुहुःप्रोक्त १. २. ३.	२।४।२२
मुचुटी २.	३।७।१९३	मुर ३.	३।८।९८	मुहूर्त १. ३.	२।१।५४
मुचुलिन्द १.	३।३।३६	मुरज १.	३।९।१२९	मूक १.	३।७।१०८
मुञ्ज १.	३।३।२२८	मुरजध्वनि १.	२।४।१०	" १. २. ३.	५।४।१४
" १.	३।३।२२९	मुररिपु १.	१।१।१३	मूका २.	३।९।१७
मुञ्जकेशिन् १.	१।१।१३	मुरली २.	३।९।१२५	मूढ १. २. ३.	३।७।२१९
मुञ्जन ३.	२।४।२	" २.	३।९।१२७	" १. २. ३.	५।४।२१
मुण्ड १. २. ३.	३।६।६	मुरुङ्गी २.	३।३।५६	" १. २. ३.	६।४।१२
" १. ३.	४।४।८६	(मरुङ्गी)		मृत १.	६।१।४६
मुण्डन ३.	३।६।४	मुरुण्ड १ ब.	३।१।२५	मृतक ३.	३।८।१४४
मुण्डा २.	३।३।१२५	मुर्मुर् १.	१।२।२०	मूत्र ३.	४।४।१२०
" २.	४।४।१०	" १.	५।३।६	मूत्रकृच्छ्र ३.	४।४।१२८
मुण्डित १. २. ३.	३।६।६	मुपित १. २. ३.	५।४।११६	मूत्राशय १.	४।४।६६
मुण्डितिका २.	३।३।१२५	मुष्क १. ३.	४।४।६३	मूत्रित १. २. ३.	५।४।११३
मुण्डी २.	३।३।१२५	मुष्कर १. २. ३.	५।४।८	मूर्ख १. २. ३.	५।४।२१
मुण्डीर १.	२।१।१३	मुष्टि १.	३।७।१६८	मूर्च्छन १. २. ३.	३।९।१३१
मुद् २.	३।६।१८८	" १. २.	४।४।७९	मूर्च्छना २.	३।६।२००
मुदित १. २. ३.	५।४।३३	" १. २.	५।१।५१	" २.	३।९।११०
" १. २. ३.	५।४।९९	" १. २.	५।१।६३	मूर्च्छा २.	३।६।२००
मुदिर १.	२।२।२	मुष्टिक १.	३।१।५४	मूर्च्छाल १. २. ३.	३।७।२१९
मुद्ग १.	३।८।३६	मुष्टिमान्द्य ३.	३।७।१९२	मूर्च्छित १. २. ३.	३।७।२१९
मुद्गर १.	३।६।१०२	मुष्ट्यष्टक ३.	३।६।१६	" १. २. ३.	७।४।२२
" १.	३।७।१७१	मुष्ट्यायोजन ३.	३।७।१८९	मूर्ति २.	६।२।२८
मुद्गरक १ ब.	३।१।२९	मुसल १. ३.	४।३।६५	मूर्धन् १.	४।४।८५
मुद्रित १. २. ३.	५।३।९७	मुसलयष्टिक १.	३।७।१७१	मूर्धाभिषिक्त १. २. ३.	८।५।२७
" १. २. ३.	५।४।११०	मुसलिन् १.	१।१।२३	मूर्धावसिक्त १.	३।५।६५
मुधा ४.	८।८।१२	" १.	३।७।९७	मूर्धावसिक्तक १.	३।५।३
मुनय १. ३.	३।६।१६८	मुसली २.	३।३।२०३	मूर्वा २.	३।३।११४
मुनि १.	१।१।३४	" २.	३।८।५०	मूल ३.	२।१।४०
" १.	३।३।१२३	" २.	४।१।२६		
" १.	३।३।१५८	" २.	४।१।३०		
" १.	३।३।२२७	मुसल्य १. २. ३.	५।४।७१		
" १.	३।६।१५०	मुसुटी २.	३।८।५६		

मूल ३.	३३११३	मृगया २.	३१९३८	मृदङ्ग १.	३३११६०
३.	६३३२६	मृगयु १.	३१९३८	१.	३१९१२९
मूलक १. ३.	३३११५५	मृगरिपु १.	३१४२	मृदाह्वया २.	३१२१७
मूलकर्मन् ३.	३३६११७	मृगरोमज १. २. ३.		मृदु १.	५३१५
मूलकशाकट १. २. ३.			४३३११८	१. २. ३.	६३११२
	३३८२१	मृगलचमन् १.	२११२५	मृदुकण्टक १.	४११४३
मूलकशाकिन् १. २. ३.		मृगवीथी २.	२११४८	मृदुत्वच् १.	३३३४५
	३३८२१	मृगव्य ३.	३१९३८	१.	३३२२९
मूलकादिसुत १. २. ३.		मृगशिरस् ३.	२११३८	मृदुरोमन् १.	३३३३१
	४३३८३	मृगशीर्ष ३.	२११३८	मृदुल ३.	३३११०७
मूलकारण ३.	३३६१६१	मृगसिंहक १.	३३४२	१.	५३१५
मूलकृच्छ्र ३.	३३६१४०	मृगाजीव १.	३३४४	मृदुवात १.	१२१५१
मूलधातु १.	४३११०४	मृगाद् १.	३३४३	मृदङ्ग ३.	३२३३१
मूलपुष्पिका २.	३३३१२४	मृगादन १.	३३४४	मृद्वीका २.	३३३१८१
मूलवर्हणी २.	२११४०	मृगादी २.	३३३१७२	मृध ३.	३३७२०३
मूलरस १.	५३३२८	मृगारि १.	३३४३	मृषा ४.	८८११३
मूलसस्य ३.	४३३९०	मृगित १. २. ३.	५३४९८	मृषार्थक १. २. ३.	
मूलिक १. २. ३.		मृगेन्द्र १.	३३४१		२३१७
	३३६१२९	१.	८३६५	मृषासाक्षिन् १. २. ३.	
मूलिन् १. २. ३.	३३८१९	मृड १.	१११४०		३३८१०
मूल्य ३.	३३८१७०	मृणाल १. २. ३.	४२१४३	मृष्ट १. २. ३.	५३१९१
३.	६३३२५	१. २. ३.	८१९३८	मेकल १ व.	३११३७
मूषिक १.	४११३१	मृणाली २.	४२१४३	१ व.	३११४०
मूषिकपर्णी २.	३३३११३	२.	८१९३८	१.	५३३६
मूषिका २.	४११३४	मृत १. २. ३.	३३७२२०	मेखलकन्यका २.	४२१२६
मृग १.	३३४११	३.	३३८२	मेखला २.	३३६१७
१.	३३४३०	३.	५२११६	२.	४३३१४६
१.	३३६१२१	मृतस्नान ३.	३३६६४	२.	७२११८
१.	३३७६२	मृत्खन ३.	३३६१११	मेघ १.	२२११
१.	३३७६४	मृत्तिका २.	३३८२४	१.	८३३३
१.	६३१४७	मृत्तिकाचूर्ण ३.	३३८२४	मेघज ३.	४२११
मृगणा २.	३३६१२१	मृत्यु १. २.	३३६२०२	मेघनाद १.	१२१४४
मृगवृण्णा २.	२११२२	मृत्युञ्जय १.	१११४०	१.	३३३१५१
मृगदंशक १.	३३४६८	मृत्युपुष्प १.	३३३२१४	मेघनादानुलासिन् १.	
मृगधूर्त १.	३३४३८	१.	३३३२२५		२३३३८
मृगनाभि १.	३३८१०४	मृत्युसंयमन १.	३३६२२३	मेघपुष्प ३.	४२११
मृगपालिका २.	३३४३५	३.	३३६२२७	मेघमाला २.	२२२२
मृगबन्धनी २.	३३९३९	मृत्सा २.	३३८२४	मेघवर्त्मन् ३.	२११२
मृगमत्तक १.	३३४३७	मृत्सना २.	३३८२४	मेघवह्नि १.	१२१२०
मृगमद १.	३३८१०४	मृद् २.	३३८२४	मेघवाहन १.	८११५४
मृगमात्रिका २.	३३४२६	मृदङ्ग १.	३३३१५९	मेघवाहिन् १.	१२१२८

मेघाख्य ३.	३१२।१५	मेघशृङ्ग ३.	४११।२५	मोरट १.	३१८।१४९
मेघाभ १.	३१३।९३	मेघाण्ड १.	११२।६	" १.	७।५।६५
मेचक १.	२।३।३९	मेपी २ व.	२।१।१५	मोरटा २.	३३।१२४
" ३.	४।४।६८	" २.	४।४।६५	मोषक १.	३।९।५६
" १.	५।३।११	मेहन ३.	४।३।१७१	मोह १.	३३।२०९
मेचटिक १.	५।३।५७	(मोहन)		" १.	३।६।१८१
मेट १.	४।३।२९	" २.	४।४।६१	" १.	६।१।४५
मेढी २.	४।३।४०	मेहल १.	५।३।५७	मोहकालिका २.	३।९।४६
मेढ १.	४।४।६१	मेहिन् १.	३।४।३	मोहनी २.	१।१।१६
मेणक १.	३।५।१९	मैत्र ३.	३।५।५७	मौकलि १.	२।३।१५
मेथि १. ३.	३।८।३१	" १.	३।६।१	मौकल्य १.	३।५।७९
मेथिक १.	३।६।१०६	मैत्रक १.	३।५।१०४	मौक्तिक ३.	३।२।४०
मेद १.	३।५।३५	मैत्रावरुणि १.	३।६।१५२	" ३.	४।१।५६
" १.	३।५।९२	मैत्री २.	८।९।३५	मौज्जी २.	३।६।४२
" १.	३।५।९३	मैत्रेय १.	३।५।३४	मौडी २.	४।३।७०
" १.	३।५।११७	मैत्रेयक १.	३।५।९४	मौढ्य ३.	३।६।२००
मेदक १.	३।९।५०	मैत्र्य ३.	८।९।३५	मौण्डिक २.	३।६।४
मेदस् ३.	४।४।१०७	मैथिल १.	२।१।६५	मौद्गीन १. २. ३.	३।८।१९
मेदस्कर ३.	४।४।१०७	मैथुन ३.	७।३।२७	मौनिन् १.	३।६।१५०
मेदस्तेजस् ३.	४।४।१०९	मैथुनिन् १.	२।३।३३	मौरजिक १.	३।९।७०
मेदिनी २.	३।१।३	मैन १.	३।१।१३	मौर्विका २.	३।७।१७८
मेदुर १. २. ३.	५।४।४३	मैनाक १.	३।२।४	मौर्वी २.	३।६।१७
मेदोभव १.	४।४।१०९	मैनाकभगिनी २.	१।१।६२	मौलि १. २.	४।३।१३५
मेधजित् १.	३।६।१५८	मैनाकस्वस् २.	१।१।६२	" १. २.	६।५।६४
मेधा २.	३।६।१६५	मैरेय ३.	३।९।४९	मौलिक ३.	३।६।२
मेधाविन् १.	२।३।२५	मोक १.	३।२।७२	मौष्टिक १.	३।९।१६
" १.	३।६।२३४	" १.	३।६।२५	मौहानिक १.	२।१।८३
मेध्य १.	३।३।२२९	मोक्ष १.	३।६।२३८	मौहूर्त १.	३।७।१५
" १. २. ३.	५।४।६५	" १.	६।१।४७	मौहूर्तिक १.	३।७।२५
मेघ्या २ व.	२।१।१८	मोक्षण ३.	३।७।१९२	म्लान १.	४।१।४८
" २ व.	२।१।२०	मोक्षवल्ग्विन् १.		म्लिष्ट १. २. ३.	६।४।११
मेनात्मजा २.	१।१।५८		३।६।२३८	म्लेच्छ ३.	३।२।२५
मेरु १.	१।३।१२	मोघ १. २. ३.	५।४।१२९	" १.	३।५।११५
मेरुगण्ड १ व.	१।३।१३	मोच १. २. ३.	६।५।६४	" १.	३।५।११६
मेलन ३.	५।२।२७	मोचक १.	३।३।५६	म्लेच्छभोज्य १.	३।८।५३
(मेलक)		मोचा २.	३।३।१७५	म्लेच्छास्य ३.	१।२।२५
मेलामणि १. २.	३।९।२५	मोष्टायित ३.	३।९।९५	य	
मेलामन्द १.	३।९।२५	मोद १.	३।६।१८८	यकृत ३.	४।४।११३
मेलाम्बु ३.	३।९।२५	मोदक १. २. ३.	८।५।६६	यत्त १.	१।२।५५
मेप १.	३।४।६४	मोरक ३.	३।८।१४६	" १.	१।३।१
" १.	८।६।१४	मोरट ३.	३।८।१४६	" १.	३।४।६९

यत् १.	८११५८	यति २.	६१२२९	यमस्वस्व २.	१११६२
यत्तकर्म १.	४३१५३	यतिन् १.	३६१६०	” २.	४१२२५
यत्तधूप १.	३८१११	यत्त १. २. ३.	५४११४	यमी २.	४१२२५
यत्तराज् १.	१२१५५	यत्न १.	३६१६७	यमुना ३.	४१२२५
यत्न १.	४४१२४	यत्र ४.	८८१२१	यमुनाभ्रातृ १.	१२१३४
यत्नन् १.	४४१२४	यथा ४.	८७२७	ययु १.	६११४८
यज १.	३६१८३	” ४.	८८१२०	” १. २. ३.	६१५६५
यजत्र ३.	३६१९४	यथातथम् ४.	८८१३३	यर्हि ४.	८८१५
यजन ३.	३६१९४	यथायथम् ४.	८८१३४	यव १.	३८१५१
यजमान १.	३६१७६	यथार्थम् ४.	८८१३३	” १.	५११४३
यजुरादेष्टृ १.	३६१७६	यथार्हवर्ण १.	३७२६	” १ व.	८११५६
यजुस् ३.	३६१२६	यथासुख १.	२११२६	यवक १.	३८१५३
यज्ञ १.	३६१६३	यथास्वम् ४.	८८१३४	यवक्य १. २. ३.	३८११९
” १.	३६१८२	यथेप्सित १. २. ३.		यवक्रीत १.	३६१५६
” १.	६११४७		४३१०४	यवक्षार १.	३८१२७
यज्ञकर्माह १. २. ३.		यथोद्धत १. २. ३.	५४१२१	यवचूर्णक १.	४३६८
	५४११७	यद् १. २. ३.	५४१२१	यवद्वीप ३.	३१११४
यज्ञकृत् १.	३६१८६	” १. २. ३.	८७११	” ३.	३१११५
यज्ञजागर १.	३३१२२७	यदा ४.	८८१५	यवन १ व.	३११२४
यज्ञत्यागिन् १.	३६१७७	यदि ४.	८८११४	” १.	३५११२
यज्ञपूरुष १.	११११२	यदृच्छा २.	५२१६	” १.	३५७२
यज्ञलिह् १.	३६१७८	यद्भविष्य १. २. ३.	५४१३०	” ३.	३८११२६
यज्ञवराह १.	३१११८	यद्वद १. २. ३.	५४१३०	यवनिका २.	४३१२४
यज्ञवह १.	१३१६	यन्तृ १.	३७१३८	यवनेष्ट ३.	३२१३०
यज्ञाग्नि १.	१२१२३	” १.	६११४७	” १.	३३१२०७
यज्ञाङ्ग १.	३४११२	यन्त्र ३.	३७१५०	यवपिष्टक १.	४३१७२
यज्ञाढ्य १.	३६११५५	यन्त्रक ३.	३९११८	यवफल १.	३३१२१५
यज्ञिय १.	२११९२	यन्त्रगृह ३.	४३१२४	यवफलक १.	८११५५
” १.	३३१२२९	यन्त्रमुक्त ३.	३७१९५	यवमत् १. २. ३.	५४१११९
” १. २. ३.	५४११७	यम १.	१२१३३	यवस १.	४४१७४
यज्ञोपकरण ३.	३६१९४	” १.	३६१२०९	यवागू २.	४३१८०
यज्ञोपवीत ३.	८३११७	” १.	३७१९७	यवाग्र १.	५११४३
यज्ञोपवीतक ३.	३६१२०	” १. २. ३.	३७१२२	यवाग्रज १.	३८१२८
यज्वन् १.	३६१७६	” ३.	५१११५	यवानिका २.	३८११०२
यज्वर १.	७११६२	” १.	५२१३०	यवान्वित १. २. ३.	
यत् ३.	३७१८९	” १. २. ३.	६१५६५		५४११९
” १. २. ३.	५४१३२	यमक ३.	४३१९९	यवास १.	३३१२२६
” १. २. ३.	६४११२	यमभगिनी २.	१११६२	यविष्ठ १.	१२१२६
यतः (-स्) ४.	८८१२१	यमरथ १.	३४११०	यवीयस् १. २. ३.	५४१४
यतस्त्रुच १.	३६१७८	यमराज १.	१२१३४	यवीयस ३.	३२१२३
यति १.	३६१६०	यमल ३.	५१११५	यव्य १. २. ३.	३८११९

यशःपटह १.	३१९१३४	यान ३.	३७७१२३	युगमध्य ३.	३७७१३१
यशस् ३.	२१४१६	” ३.	६३३२६	युगल ३.	५१११५
यष्टि १. २.	३१६१२३	यानमुख १.	३७७१३०	युगवर्तक १.	२११३५
” २.	३७७१६२	यापन १.	७३३२८	युगान्त १.	२११९४
” १. २.	८१९२५	याप्य १. २. ३.	५१४७५	युगालिक १ व.	३११२५
यष्टिमधुका २.	३८८१०३	” १. २. ३.	६१४१३	युगावर्त १.	११११४
यष्ट १.	३१६७६	याप्ययान ३.	३७७१३६	युगासार ३.	२११९२
यस्त १. २. ३.	५१४११६	याम १.	२११६७	युगाह्वया २.	३८८९४
याग १.	३१६८२	” १.	५२३३०	युगिन् १.	३१६८२
यागकण्टक १.	३१६८०	यामक १.	२११३९	युग्म ३.	५१११५
याचक १. २. ३.	५१४६०	यामिनी २.	२११५६	” १. २. ३.	५११२३
याचनक १. २. ३.	५१४६०	यामुन ३.	३२०४२	युग्म १.	१११५०
याचना २.	३१६१२०	याम्या २.	२११५६	” १. २. ३.	३१४५८
याचित ३.	३८८२	यायजूक १.	३१६७५	” ३.	३७७१२३
याच्ना २.	३३३१२०	यायावर १.	३१६४२	युग्मशानप्रसेव १.	३७७११५
याजक १.	३१६७८	” १.	३१६१५६	युज्ज १. २. ३.	५११२३
याजन ३.	३१६६३	याव १.	४३३१५३	युजिन १.	१२१४८
” ३.	३८८७	यावक ४.	३८८५३	युज्जान १.	७११६३
याज्ञवल्क्य १.	३१६१५५	यावत् ४.	८७७२८	युत १. २. ३.	६१४१३
याज्ञिक १.	३८८५२	यावतिथ १. २. ३.	५११२०	युतक ३.	५१११५
याज्य १.	८१९४४	यावनाल १.	३८८५६	” १. २. ३.	७१५६७
याज्या २.	३१६११२	यावशादन १.	३१५८	युद्ध ३.	३७७२०३
याज्यापुट १.	३१६११२	यावशूक १.	३८८१२८	युद्धध्वान १.	२१४१०
यात ३.	३७७८९	याष्टीक १. २. ३.	३७७१४४	युध् २.	३७७५६
यातना २.	१२३३९	यास १.	३३३१२६	युधिष्ठिर १.	१२१५
यातयाम १. २. ३.	८१४११	युक्त १. २. ३.	५१४१०३	युवति २.	४१४८
यातु ३.	१२३४०	” १. २. ३.	६१४१३	युवन् १. २. ३.	५१४३
यातुक १.	२११६७	युग १.	३११५७	युष्मद् १. २. ३.	८१९४९
यातुधान १.	१२३४१	” ३.	३७७१३०	यू १.	४३३१००
यातुपति १.	१२३४३	” १.	५१११५	यूक १.	४११३८
यातृ २.	४१४३७	” १. ३.	६१५६६	यूथ १. ३.	५११४
यात्य १.	१२३३८	युगकीलक ३.	३८८२८	यूथनाथ १.	३७७६७
यात्रा २.	५२३१०	युगच्छद् १.	३३३४७	यूथप १.	३७७६७
” २.	६२२२९	युगद्वय ३.	२११९२	यूथिका २.	३३३१८२
यादस् ३.	४११४०	युगान्धर १ व.	३११७९	यूप १. ३.	३१६१०३
यादसान्नाथ १.	१२३४६	” १.	३७७१३२	यूपमध्य ३.	३१६१०४
यादसाम्पति १.	८११५७	युगपत् ४.	८८८६	यूपाम्र ३.	३१६१०४
यादस्पति १.	८११५८	युगपार्श्वग १. २. ३.	३१४१५६	यूप १. ३.	४३३१००
यान ३.	३७७			योक्त्र ३.	३८८२८
				योग १.	३१६२०८

[योग]

योग १.	६११४८
योगपट्ट १.	३१६१५०
योगवाही २.	३१८१२९
योगाञ्जि १.	३१६१५५
योगावाप १.	३१७१८८
योगिन् १.	३३३३६
” १.	३१८१२८
योगिनी २.	१११६०
योगियान १.	२११४५
योगेश १.	३१६१५५
योगेष्ट ३.	३१२१२९
योग्य १.	२११३९
” ३.	३१७१२४
” ३.	३१८१४५
” १. २. ३.	६१५६७
” १. २. ३.	३१५६७
योग्या २ व.	२११४१
” २.	३१६१४६
” २.	३१७१९५
” २.	३१८१९४
” २.	६१५६७
योग्यार्थ १.	३१७१३०
योजन ३.	३११६३
” १.	३३३२१८
योजनगन्धा २.	८१२१२
योजनबल्ली २.	३३३१४५
योजना २.	३११६३
योत्र ३.	३१८१२८
योधन ३.	२१४१०
योनि १. २.	४१४६१
” १. २.	६१५६६
योषा २.	४१४१४
योषित् २.	४१४१४
यौतक ३.	३१६१५५
” १. २. ३.	७१५६७
यौतुक ३.	३१६१५५
यौध १.	३१७१३९
यौधक १.	३१७१३९
यौधेय १ व.	३११२८
यौन ३.	३१६१२
यौनिक १.	११२१५२

वैजयन्तीकोषः

यौवन ३.	४१४१५३
” ३.	५१११८
यवागुली २.	४१३१७८
यवागुल्या २.	४१४१७८
र	
रंहस् ३.	११२१५५
रक्त ३.	३१२१२४
” १.	३३३१४०
” ३.	३१८११५
” ३.	३१८११६
” ३.	४१४११६
” ३.	४१४१०५
” १.	५१३१११
” १. २. ३.	६१४११४
रक्तक १.	३३३१८५
रक्तकुण्डल ३.	४१२१४४
रक्तग्रह १.	११२१४१
रक्तचन्दन ३.	८१६१२३
रक्ततेजस् ३.	४१४१०७
रक्तदन्ती २.	१११६१
रक्तदृष्टि १.	२३३११४
रक्तपाणिक ३.	४१२३५
रक्तपीतासितश्चेत् १.	५३३१६६
रक्तपुच्छिका २.	४११२९
रक्तपुष्प १.	३३३३९
” १.	३३३१४७
रक्तफला २.	३३३१४७
रक्तभव ३.	४१४१०७
रक्तशालि १.	३१८३२
रक्तशीर्षक १.	३१८१०९
रक्ता २.	३३३१५३
रक्ताक्ष १.	७१२६३
रक्ताङ्ग १.	३३३१५५
रक्तिका २.	३३३१७९
रक्षस् ३.	११२१४०
रक्षस्सभ ३.	८१९२०
रक्षित १. २. ३.	५१४१००
रक्षोघ्न १.	३१८१४१
” ३.	४१३१८२

[रक्षास]

रङ्गुटी २.	३१८१४४
रङ्ग ३.	३१२३०
” ३.	३१२३१
” १.	६११५१
रङ्गाजीव १.	३१९१२२
” १.	३१९१६३
रङ्गावतारिन् १.	३१९१६३
” १.	३१९१६५
रङ्गोपमर्दिन् १.	३१९१६६
रचना २.	४३३१५८
” २.	५१२१४४
” २.	५१२३९
रजःपुष्प १.	३३३२२३
रजःपूता २.	३३४१२२
रजक १.	३१५३८
” १.	३१५४५
रजत ३.	३१२२३
” १. २. ३.	७१५७०
रजताद्रि १.	३१२१५
रजनी २.	२११५६
” २.	३१८८९
” २.	७१२२०
रजस् ३.	३१२३२
” ३.	३३३१६२
” ३.	३१८२५
” ३.	६१२२८
” ३.	८१५३६
रजसानु १.	८११३७
रजस्वल १.	३३४१९
रजस्वला २.	४१४१५
रज्जु २.	३११५८
” २.	३१९३०
” २.	८१२३
रज्जुदाल १.	३३३१५४
रजन ३.	३१८११५
” ३.	३१९१६०
रक्षनवल्ली २.	३३३१६४
रक्षनी २.	३३२१११
” २.	३३३११०
” २.	३३३२११
रक्षास १.	३१५१३

रण ३.	३।७।२०४	रथवारक १.	३।५।२५	रव १.	२।४।४
„ १. ३.	६।५।६८	(रथकारक)		रवण १.	२।४।१
रणरणक १.	३।६।१७९	रथाङ्ग ३.	३।७।१३४	„ ३.	३।२।२९
रणसङ्कुल ३.	३।७।२१७	„ ३.	३।७।१३५	„ १.	३।३।१६५
रण्डा २.	३।३।११३	रथायुधक १.	३।७।१७४	(द्रवण)	
„ २.	६।२।३१	रथाश्रमन् १.	३।५।२०	„ १.	३।४।६७
रत ३.	४।३।१७०	रथिक १. २. ३.	३।७।१४०	„ १. २. ३.	५।४।४८
रतद्विक ३.	८।३।११	रथिन् १. २. ३.	३।७।१४०	„ १. २. ३.	७।५।७०
रतार्थिनी २.	४।४।११	रथिन १. २. ३.	३।७।१४०	रवा २.	३।३।९९
रति २.	३।३।१७८	रथ्य १. २. ३.	६।४।१४	रवि १.	२।१।४०
„ २.	३।९।७६	रथ्या २.	४।३।१६	रविग्रावन् १.	३।२।३७
„ २.	४।३।१७०	„ २.	५।१।१३	रविध्वज १.	२।१।५५
रतिपति १.	१।१।२८	रथ्यावाद १.	२।४।२७	रशना २.	४।३।१४६
रतेमदा २.	१।३।१	रद १.	४।४।७८	रश्मि १. २.	२।१।१६
रत्न ३.	३।२।३६	„ १.	६।१।५०	„ १. २.	६।१।५०
„ ३.	६।३।२६	रदन १.	४।४।७८	„ १. २.	८।९।२५
„ ३.	८।३।१७	रदिन् १.	३।७।६०	रश्मिकलाप १.	४।३।१३९
रत्नगर्भ १.	१।२।५८	रन्तिदेव १.	१।१।१४	रश्मिमालिन् १.	२।१।१३
रत्नगर्भा २.	३।१।४	रन्धक १. २. ३.	४।३।१०८	रस १.	४।४।२
रत्नवर ३.	३।२।२०	रन्धन ३.	५।२।३२	„ १.	३।२।१५
रत्नसू २.	३।१।४	रन्धित १. २. ३.	४।३।९३	„ १.	३।२।४४
रत्नहस्त १.	१।२।५८	रन्ध्र १.	३।५।७	„ १.	३।३।४९
रत्नाकर १.	४।१।११	„ ३.	४।१।२	„ १.	३।३।५५
रत्नि १.	३।१।५४	„ ३.	८।६।९	„ १.	३।३।२०५
रथ १.	२।३।९	रभस १.	५।४।१४४	„ १.	३।४।३०
„ १.	३।३।३१	„ १.	७।१।६३	„ १.	३।८।१११
„ १.	३।७।१२४	रभू १.	३।७।२९	„ १.	३।९।७४
रथकट्या २.	५।१।१३	(रत्न)		„ १.	३।९।७५
रथकार १.	३।५।४८	रमणी २.	४।४।६	„ १.	४।३।१००
„ १.	३।५।७५	रमति १.	८।१।६३	„ १.	४।४।१०४
„ १.	३।५।७५	रमा २.	१।१।३६	„ १.	४।४।११४
„ १.	३।५।९०	रम्भण ३.	२।४।५	„ १.	५।३।२
„ १.	३।९।३४	रम्भा २.	२।४।५	„ १.	५।३।४५
रथकारक १.	३।५।३३	„ २.	३।३।१७३	„ १.	६।१।४९
रथगरुत १.	३।६।१०७	„ २.	३।३।१७४	रसक १.	३।२।३५
रथगर्भक १.	३।७।१२७	„ २.	३।६।१८	„ १.	३।६।१९८
रथगुप्ति २.	३।७।१३२	रश्मिमत ३.	२।४।५	„ १.	३।८।१२८
रथनीड १.	३।६।१३२	रम्यक ३.	३।१।८	„ १.	४।३।८७
रथपद ३.	३।७।१३४	रय १.	१।२।५५	रसकोप १.	५।३।४०
रथरेणु १. २.	५।१।४२	रयि १. २.	८।९।२७	रसक्रिया २.	४।४।१४२
		रत्नक १.	४।३।१२९	रसगर्भक ३.	३।२।४१

रसज्ञ १.	३।२।३५	रागशालव १.	५।३।३१	राजहंस १.	२।३।७
रसज्ञा २.	४।४।९०	रागसूत्रक ३.	५।१।६४	राजादन १.	३।३।४३
रसज्येष्ठ १.	५।३।२५	राघव १.	१।१।२०	" १.	८।५।२१
रसतेजस् ३.	४।४।१०५	राङ्गव १. २. ३.		राजावर्त १.	४।३।११९
रसन ३.	७।५।६८		४।३।११८	राजि २.	४।३।१४८
रसना २.	४।४।९०	राज् १.	३।७।१	" २.	४।४।९०
रसनेत्री २.	३।२।११	राजक ३.	५।१।८	" २.	६।२।३०
रसयोनि १.	३।८।१३०	राजकर्कटि २.	३।३।१६७	राजिका २.	३।८।४२
रसवती २.	४।३।५४	राजकोशातकी २.		राजिमत् १.	४।१।७
रसवर १.	३।२।३५		३।३।१६१	" १.	४।१।९
रसविद्ध ३.	३।२।२२	राजजम्बू २.	२।३।९३	राजिल १.	४।१।९
रसा २.	३।१।२	राजदन्त १.	४।४।८९	" १.	४।१।१५
" २.	३।३।१३१	राजधानी २.	४।३।४३	" १.	४।१।२०
" २.	३।३।१८१	राजन् १.	३।७।१	" १. २. ३.	५।४।७
" २.	४।१।२	" १.	६।१।५०	राजीफल १.	३।३।१६६
रसागेह १.	१।३।१०	" १.	८।९।१२	राजील १.	४।१।९
रसाग्र १.	४।३।७७	राजन्य १.	३।७।१	" १.	४।१।१०
रसाञ्जन ३.	३।२।४१	राजन्यक ३.	५।१।८	राजीव १.	३।४।१३
रसाढ्य १.	३।८।१२८	राजन्वत् १. २. ३.		" ३.	४।२।३८
रसातल ३.	४।१।१		४।१।४६	राजीवक १.	४।१।४६
" १.	४।३।११०	राजपटोल १.	३।३।१६६	राजीवत् १.	३।३।१६५
रसादान ३.	४।३।१०३	राजपुत्री २.	८।२।८	राज्ञी २.	३।२।२७
रसायन ३.	३।८।१४८	राजफल १.	३।३।१६६	राज्यलौख्य ३.	३।६।१८२
रसाल १.	३।३।४१	राजबीजिन् १.	४।४।५०	राज्याङ्ग ३.	३।७।३
" १.	४।३।९८	राजभृङ्ग १.	२।३।२७	राढ १.	३।३।५०
रसिक १.	३।९।४७	राजमार्ग १.	४।३।१६	राढा २.	३।१।२१
रसोद्भव ३.	४।४।१०५	राजमाष १.	३।८।४६	" २.	३।१।३०
रसोन १.	३।३।२०४	राजमुद्र १.	३।८।३८	" २.	४।३।१५०
रहस् ३.	५।४।१२०	राजराज १.	१।२।५७	राण १. ३.	२।४।७
" ३.	६।३।२७	राजरीति २.	३।२।२६	रातप ३.	५।३।३१
रहस्य १. २. ३.		राजवंश्य १.	४।४।५०	राता २.	३।६।५२
	५।४।१२०	राजवत् १. २. ३.	३।१।४६	रात्रि २.	२।१।५७
राक १.	६।१।५१	राजवर्त १.	४।३।११९	रात्रिचर १.	१।२।४०
राका २.	२।१।७३	राजवल्ली २.	३।३।१६४	" १.	३।९।५६
" २.	४।४।८	राजवाह्य १.	३।७।३९	रात्रिज ३.	२।१।३८
राक्षस १.	१।२।४०	राजबिहङ्गम १.	२।३।२९	रात्रिजागर १.	३।४।७०
राक्षसघ्न १.	१।१।२१	राजवृक्ष १.	८।६।२०	रात्रिञ्चर १.	१।२।४०
राग १.	३।६।१८१	राजवेश्मन् ३.	४।३।३०	रात्रिद्विप् १.	२।१।१४
" १.	३।९।११४	राजसर्षप १.	३।८।४२	रात्र्याख्या २.	३।३।२११
" १.	६।१।५१	" १.	५।१।४२	राथन्तरि १.	१।२।१२
रागवत् १.	३।३।२१७	राजसी २.	२।१।६०	राद्धान्त १.	३।६।२५

राध १.	२।१।८३	रिष्टि २.	३।७।१५९	रुद्रपुष्प ३.	३।३।१९५
राधा २.	२।१।४०	रीढा २.	३।६।१७२	(ओढपुष्प)	
राम १.	१।१।२०	रीण १. २. ३.	५।४।१०९	रुद्रव्रतित्त् १. २. ३.	
” १.	१।१।२०	रीति २.	३।२।२५		३।६।१३१
” १.	१।१।२२	” २.	५।२।२	रुद्रसख १.	१।२।५८
” १.	३।४।३२	” २.	६।२।३०	रुद्रा २ व.	२।१।२१
” १. २. ३.	६।४।१४	रीतिपुष्प ३.	३।२।४३	रुद्राक्ष १.	३।३।७९
रामक १.	३।५।७९	रुक्म ३.	३।२।१८	रुद्राणी २.	१।१।५८
” १.	३।५।८२	” ३.	६।३।२७	रुधिर १.	२।१।३२
रामठ ३.	३।८।१३१	” १.	८।६।१०	” ३.	४।४।१०५
रामदूती २.	३।३।१०९	रुग्मेद १.	४।४।१३७	रुमा २.	३।२।१०
रामपूग १.	३।३।२१८	रुच् २.	२।१।२२	रुमाभव ३.	३।८।१२१
रामभगिनी २.	१।१।६२	” २.	४।३।१५०	रुह १.	३।४।१४
रामस्वसृ २.	१।१।६२	” २.	८।२।१९	रुक्थ १.	७।१।६४
रामा २.	४।४।६	रुक्क १.	३।३।३३	रुवु १.	३।३।६५
राम्भ १.	३।६।१८	” ३.	३।८।१२५	रुवुक १.	३।३।६५
रालि १.	८।९।१०	” १.	८।१।६४	रुशती १. २. ३.	२।४।१८
रावण १.	१।२।४२	रुचि २.	२।१।२२	रुप् २.	३।६।१८३
रावणसूदन १.	१।१।२०	” २.	३।८।१३२	रुपा २.	३।६।१८३
राशि १.	२।१।५०	” २.	३।९।८३	रुच ३.	३।२।३४
” १.	५।१।३	” २.	६।२।१४	” १.	३।३।५
” १.	५।२।५४	रुचिट १.	३।४।१४	” ३.	३।८।१४२
राष्ट्र ३.	३।७।३	रुचित १. २. ३.	५।४।९६	” १.	५।३।३
” ३.	३।७।४८	रुचिर १. २. ३.	५।४।१३४	” १.	५।३।५६
” ३.	६।५।६९	रुचिष्य ३.	३।८।१२५	” १. २. ३.	५।४।४४
राष्ट्रिका २.	३।३।१०६	रुचु १.	३।४।२८	” १. २. ३.	६।४।१३
राष्ट्रिय १.	३।९।१०५	रुच्य १.	४।४।३७	रुचणीय १.	३।९।४७
रास १.	३।९।७३	” १.	५।१।३८	रुचणीया २.	३।८।६१
रासभ १.	३।४।६५	” १. २. ३.	५।४।१३४	रुचवालुक ३.	३।८।१३५
” १.	८।६।५	रुज् २.	४।३।१३८	रुचस्वर १.	३।४।६६
रास्ना २.	३।८।९८	रुजा २.	३।४।६५	रुठ १. २. ३.	३।७।२१७
राहु ३.	२।१।३७	” २.	४।४।१३८	” १.	३।८।५१
रिक्त १.	२।१।७९	” २.	६।२।२९	रूप ३.	३।९।१०१
रिक्तक १. २. ३.	५।४।८७	रुण्ड १.	३।७।१०८	” ३.	५।२।१
रिक्थ ३.	३।८।७३	” १.	३।७।२१६	” ३.	५।३।२
रिङ्ग १.	३।७।१३६	रुण्डक १.	३।५।२८	” ३.	६।३।२८
रिङ्गोल ३.	३।७।१३६	रुत ३.	२।४।४	रूपजीवना २.	४।४।२४
रिङ्गोलन ३.	३।७।१३६	रुदित ३.	३।९।८७	रूप्य ३.	३।२।२३
रिपु १.	३।७।४१	रुद्ध १. २. ३.	५।४।९६	” ३.	३।८।७४
रिरी २.	३।२।२५	रुद्र १.	१।१।३९	” १. २. ३.	६।५।६८
रिष्ट ३.	६।३।२७	” १ व.	१।३।८	” ३.	८।६।११

[रूप्यमास]

वैजयन्तीकोपः

[लक्ष्मणा

रूप्यमास १.	पा११४४	रोचन १.	३३३९१	रोहिणी २.	७२१२१
रूप्यशतमान ३.	पा११६०	" १. २. ३.	पा१४४२	रोहिणीकान्त १.	२११२४
रूप १.	पा३१२९	रोचना २.	७२१२०	रोहित् १.	३४११४
रूपित १ २. ३.	पा१११३	रोचनी २.	३२१११	" १.	८११११
रेक १.	४११४६	" २.	३३३९५	रोहित ३.	२२१३
रेखा २.	३११२४	" २.	३३३१३८	" १.	३३३४०
" २.	६२१३२	" २.	३३३२११	" १.	३४११६
रेचक ३.	८१११५	रोचिष्णु १. २. ३.	पा१४४२	" १.	३६१५६
रेचनी २.	३३३१३८	रोचिस् ३.	२१११६	" १.	पा३११
रेचित १. २. ३.	३१७११८	रोदन ३.	३११८७	रोहिताश्व १.	१२११५
" १. २. ३.	३१७१२२	रोदनी २.	३३३१२५	रोहिन् १.	३३३४०
" ३.	३११९२	रोदस २ द्वि.	३११५	रौच्य १.	३६११६
रेटि २.	६२१३२	रोदसी २ द्वि.	३११५	रौद्र ३.	२११२२
रेणु १.	३१८२५	रोध १.	३१७१८०	" ३.	३११७५
" १. २.	पा११४२	रोधस् ३.	४२१३१	" १. २. ३.	३११७९
" १. २.	८११२६	रोधोवक्त्रा २.	४२१२२	रौद्री २.	१११४९
रेणुका २.	३१८१५	रोपण १.	३१७१७९	" २.	१११५८
रेतस् ३.	४१११११	रोमकर्ण १.	३१४३१	" २.	३६१९२
" ३.	६३१२७	रोमज ३.	४३३११७	" २.	८२११४
रेफ १. २. ३.	पा१४७५	रोमन् ३.	३१४७५	रौमक ३.	३१८१२१
रेमटि २.	३६११९६	" ३.	४१४९७	रौरव १.	१२१३७
रेभण ३.	२१४१२	रोमन्थ १.	३१४७५	रौहिणेय १.	८११३७
रेरिहाण १.	१११४४	रोमन्थन ३.	३१४७५	रौहितक १.	३३३४०
रेवट १. ३.	७१५६९	रोमश १.	३३३७५	रौहिप १.	३३३४०
रेवती २.	१११५९	" १.	३१४६४	" १.	३४११६
" २.	३३३१०९	" १. २. ३.	पा१४८	" १. ३.	७१५७१
" २.	३३३१८२	रोमशपुच्छक १.	४११२७	ल	
" २.	७२१२०	रोमशी २.	४११२७	लकुच १.	३३३७५
रेवतीकान्त १.	१११२३	रोमहर्ष १.	३११८२	लक्ष १.	३३३३५
रेवा २.	४२१२६	रोमहृत् ३.	३२११४	" ३.	३१७१९४
रेशी २ व.	२११२०	रोमाङ्क १.	३११८२	" ३.	पा१३२
रेषण ३.	२१४१६	रोमाञ्च १.	३११८२	" १. २. ३.	६१५६९
रेषा २.	२१४१६	रोमोद्गम १.	३११८२	लक्ष्ण ३.	२११२९
रै १. २.	८१५३८	रोष १.	३६११८३	" ३.	३१७१९४
रोक ३.	४११२	" १.	पा२१४	" ३.	पा२११
" १. ३.	६१५६७	रोषाण १.	३१११९	" ३.	७३१२८
रोक्य ३.	४१११०५	" १. २. ३.	७१५७१	लक्ष्मा २.	पा१३२
रोग १.	४११३८	रोहणद्रुम १.	३१८११२	लक्ष्मण १. २. ३.	पा१५६
रोगहारिन् १.	४११४३	रोहणी २.	४११२९		२३३३३
रोगाख्य ३.	३१८१९	रोहिणी २.	३१४४४		
रोचक १.	४३३२९	" २.	३१८६६		

लक्ष्मन् ३.	२।१।२९	लङ्घन ३.	५।२।१२	ललनाच १.	३।४।३४
” ३.	६।३।२९	लज्जा २.	३।६।१९४	ललन्तिका २.	४।३।१३६
लक्ष्मी २.	१।१।१६	लज्जालु २.	३।३।१४८	लकाट ३.	४।४।९६
” २.	१।१।३६	” २.	३।३।१४८	ललाटिका २.	४।३।१३६
” २.	३।६।१९१	लज्जाशील १. २. ३.		” २.	४।३।१४९
” २.	३।८।९३		५।४।४०	ललाम १. २. ३.	७।५।७२
” २.	३।८।१९	लज्जित १. २. ३.	५।४।५१	ललामक ३.	४।३।१५५
” २.	८।२।१९	लट् १.	४।३।५६	ललामन् १. ३.	७।५।७२
लक्ष्मीनिकेतन ३.		लडह १. २. ३.	५।४।१३५	ललित ३.	३।९।९६
	४।३।११४	लण्ड १. ३.	४।४।११९	लल्लर १. २. ३.	२।४।१५
लक्ष्मीपति १.	८।१।३८	लता २.	३।३।७	लव १.	२।१।५३
लक्ष्मीपुत्र १.	८।१।३८	” २.	३।३।६६	” १.	५।२।२९
लक्ष्मीवत् १.	३।३।४२	” २.	३।३।१०४	लवङ्ग ३.	३।८।१०३
” १. २. ३.	५।४।५६	” २.	३।३।११७	लवण ३.	३।८।१२६
लक्ष्य ३.	३।७।१९४	” २.	३।३।१८७	” १. २. ३.	४।३।९३
लक्ष्यग्रह १.	३।७।१९०	” २.	८।९।३	” १.	५।३।२६
लगणा २.	३।३।१३९	लताकुश १.	३।३।२२८	” १.	५।३।२७
लगुड १.	३।९।२९	लताकोलि २.	३।३।७८	लवणक्रीतक १.	३।५।८८
लगुडवर्शिका २.		लताङ्कुर १.	३।३।२१९	लवणलायिका २.	
	३।३।२१६	लतापूग ३.	३।३।२१८		३।७।११६
लग्न १.	३।७।६८	लतामारिष १.	३।३।१५२	लवणाकर १.	३।२।१०
लग्नक १. २. ३.	३।८।१०	लतार्क १.	३।३।२०५	लवणापण १.	४।३।३४
लघु १.	३।३।५३	” १.	३।३।२०७	लवणोत्कट १. २. ३.	
” २.	३।३।११६	लतावृहती २.	३।३।१०४		४।३।९३
” ३.	३।८।१०७	लब्ध १. २. ३.	५।४।६४	लवणोद १.	३।१।१०
” १. २. ३.	५।४।७६	लब्धवर्ण ४.	३।६।२३५	लवन १.	५।२।२९
’ १. २. ३.	५।४।१२४	लभ्य १. २. ३.	६।४।१५	लवली २.	३।३।२६
” १. २. ३.	६।४।१५	लम्पट १. २. ३.	५।४।३६	लवित्र ३.	३।८।३०
लघुक १.	३।३।२१९	लम्पा २.	३।७।४६	लवेटिका २.	३।८।३१
लघुकाष्ठ १.	३।७।१९९	लम्पाक १ व.	३।१।२५	लश १.	३।३।११
लघुग १.	१।२।४८	लम्बकर्ण १.	३।४।६२	लशुन ३.	३।३।२०४
लघुहस्त १. २. ३.		लम्बन ३.	४।३।१३७	” ३.	३।३।२०६
	३।३।१४९	लम्बा २.	३।७।४६	लषित १. २. ३.	५।४।९६
लघ्वचरक १.	२।१।५२	लम्बोदर १.	१।१।५३	लस ३.	३।८।११५
लङ्का २.	६।२।३२	लम्बन ३.	५।२।२०	” १.	४।४।१३५
लङ्कायिका २.	३।३।११७	लय १.	३।६।२००	” १.	५।३।५४
लङ्केश्वर १.	१।२।४३	” १.	३।७।१९२	लसिका २.	४।४।११८
लङ्गन ३.	५।२।१२	” १.	३।९।१२२	लसीका २.	४।४।११८
लङ्गनी २.	४।३।५३	लयनालिक १.	४।३।२८	लस्तक १.	३।७।१७७
लङ्घन ३.	३।७।१२३	लल ३.	६।३।२९	(लस्तुक)	
” ३.	४।४।१३९	ललना २.	४।४।४	लस्तकग्रह १.	३।७।१८९

लहरी २.	४२११४	लिच्छिवि १.	३१५५४	लेखक १.	३११२३
लाक्षा २.	४३११५३	लिपि	३११२४	लेखनी २.	३१११३
लाङ्गल ३.	३१८२७	लिपिकर १.	३११२३	लेखा २.	३११२४
लाङ्गलपद्धति २.	३१८३०	लिपिसन्नाह १.	३१७१५४	" २.	४३११४९
लाङ्गलिन् १.	३३१२२०	लिस १. २. ३.	६१११५	" २.	५११२४
लाङ्गली २.	३३११९७	लिसिका २.	२११५३	लेख्य ३.	३१८१२
लाङ्गूल ३.	३१४७४	लिप्सा २.	३१६१८०	लेढ् १.	११२५१
" ३.	७३१२९	लिप्सु १. २. ३.	५११३५	लेप १.	४३१०२
लाङ्गूली २.	३३११३६	लिबि २.	३११२३	" १.	६११५२
लाज १ ब.	४३१६८	लिष्ट १. २. ३.	५१११५	लेपकार १.	३१११४
लाजमण्ड १.	४३१७९	लिह् १.	११२५१	लेप्य ३.	३१११३
लाजि २.	३११२४	लीला २.	३११८८	लेलिहान १.	४२१५
लान्छन ३.	२११२९	" २.	३११९२	लेश १.	२११५४
लाढीक १.	३११३	" २.	३११९३	लेण्डु १.	३१८२४
लातक १.	३३११८९	" २.	३११९७	लेहन ३.	४३१०३
लाभ १.	३१८७०	" २.	६१२३३	लेह्य ३.	४३१९१
लामज ३.	३३१२३१	लीसुष १.	५३१३८	लैङ्गिक १.	३१११६३
लाल १.	३१४३६	लुङ्ग १.	३३१३३	लैङ्गधूम १.	३१६१८०
" ३.	६३१२९	लुङ्गना २.	२११२६	लोक १.	३१६२०६
लालक १. २. ३.	२१११५	लुठित १. २. ३.	३१७१०७	" १.	६११५२
लालन १.	३१८१११	लुण्ठित १. २. ३.	५१११६	लोकजित् १.	१११३३
लालस २. ३.	५११३६	लुब्ध १. २. ३.	५११३५	लोकपाल १.	२११४
लालसा १. २. ३.	७११७२	लुब्धक १.	३११३८	" १.	८११३८
लाला २.	३३१२६	लुम्बिका २.	३१११३५	लोकान्ताद्रि १.	३१२३
" २.	४११२०	लुलाय १.	३११९	लोकालोक १.	३१२३
लालाटिक १. २. ३.	८११११	लुलित १. २. ३.	५१११०३	लोचक १. २. ३.	३१६१३४
लालिका २.	३१७११२	लुष १.	३१५३१	" १. २. ३.	७११७३
लाव १.	२३१४०	(युष)		लोचन ३.	४११९४
लावण १.	३१११०	लुस्त ३.	३१७१७७	लोचना २.	२११२८
लावली २.	३३१२६	लुत्त १. २. ३.	५११४४	लोचमस्तक १.	३१८१०२
लास्य ३.	३११७३	लुता २.	४११३४	लोचमालक १.	३३११९९
लिकुच १.	३३१७५	लुतात १.	४११३६	लोटन ३.	५११४२
लिङ्गा २.	४११४२	लुतापट्ट १.	४११३५	लोटना २.	२११२८
लिङ्गु १.	३३१११	लुतिका २.	४११३४	लोठभू २.	३१७११२
" १.	६११५१	लुन १. २. ३.	४१११०२	लोट १.	३११८७
लिङ्ग ३.	५१११७	लुनदोस् १.	१११५२	लोध्र १.	२११८७
" ३.	६३३३०	लुमन् ३.	३११७४	" १.	३३३५२
लिङ्गज्येष्ठ ३.	३३११६३	लेख १.	१११३	" १.	३३३५२
लिङ्गवृत्ति १. २. ३.	३३११९	" १.	३१८१२	लोपा २.	२३३२५
लिङ्गशोफ १.	४१११३२			लोपासुद्रा २.	३३११५३

[लोपायिका]

शब्दानुक्रमणिका

[वञ्चक]

लोपायिका २.	२।३।२५
लोपास १.	३।४।३९
लोप्त्र ३.	३।९।५८
लोभन ३.	३।२।१९
” १.	३।८।३६
लोभन् ३.	४।४।९७
” १. ३.	८।९।३१
लोभश्च १. २. ३.	५।४।८
लोभशी २.	३।८।१००
लोल १.	३।७।२०६
” १. २. ३.	५।४।३६
” १. २. ३.	६।४।१६
लोलम्ब १.	२।३।४२
लोलिका २.	३।८।५८
लोलुप १. २. ३.	५।४।३६
लोलुभ १. २. ३.	५।४।३६
लोष्ट १. ३.	३।८।२४
लोष्टभक्षण १.	३।८।२९
लोह ३.	३।२।३३
” ३.	३।२।३६
” १. ३.	६।५।६९
लोहकारक १.	३।९।१६
लोहकार्पापण १.	५।१।३९
लोहज ३.	३।२।२९
लोहदण्ड १.	३।७।१६७
लोहपृष्ठ १.	२।३।३१
लोहमात्र १.	३।५।१५६
लोहमारक १.	३।३।१५६
लोहमालक १.	३।५।३६
लोहल १. २. ३.	५।४।४७
लोहशृङ्खल १.	३।७।८५
लोहसंश्लेषक १.	३।८।१३०
लोहाख्य ३.	३।८।८०
” १.	३।८।१०७
लोहामिसार १.	३।७।२००
लोहित १. २.	३।८।१२६
” १.	४।१।४३
” ३.	४।४।१०५
” १.	५।३।११
लोहितक ३.	३।२।३९

लोहितचन्दन ३.	३।८।११६
लोहिता २.	१।२।३०
लोहिताक्षक १.	४।१।१५
लोहिताङ्ग १.	३।१।३१
लोहिताहि १.	४।१।१२
लोहितीक ३.	५।१।४७
लोहित्य १.	३।१।१७
लोह्य ३.	३।२।२६
(लोभ्य)	
लौह ३.	३।२।३३
व	
व ४.	८।८।१५
वंश १.	३।३।११
” १.	३।३।२१४
” १.	३।३।२२६
” १.	३।९।१२५
” १.	४।४।४९
” १.	४।४।६६
” १.	६।१।५२
वंशक ३.	३।८।१०७
वंशज १.	४।४।५०
वंशपत्र ३.	३।२।१४
वंशरोचना २.	३।८।९०
वंशवर्ण १.	३।८।४३
वंशिक १.	३।१।६१
” १.	३।५।२३
” ३.	३।८।१०७
वंशिका २.	३।९।१२५
वंश्य १.	४।४।५०
वंश्या २.	३।८।५०
वकुल १.	३।३।२६
वक्तव्य १. २. ३.	८।४।१५
वक्तृ १. २. ३.	५।४।४५
वक्त्र ३.	४।४।८६
वक्त्रपट्ट १.	३।७।११४
वक्र १.	२।१।३६
” १.	४।४।९१
” १. २. ३.	५।४।१२३
वक्रकील १.	३।७।८५
वक्रदंष्ट्र १.	३।४।५

वक्रपद ३.	४।३।११९
वक्राख्य ३.	३।२।३१
वक्राङ्ग १.	२।३।६
वक्रोष्ठक १. २. ३.	३।९।८३
वक्त्रच्छद १.	३।७।१५३
वक्षस् ३.	४।४।६८
वक्षसिज १.	४।४।६८
वङ्कनि १.	४।४।११५
वङ्कण १.	४।४।५९
वङ्ग १ व.	३।१।३१
” ३.	३।२।३१
वङ्गजीवन २.	३।२।२४
वङ्गसेनक १.	३।३।१५६
वचन ३.	२।४।२१
” ३.	२।४।३४
वचनेस्थित १. २. ३.	५।४।४९
वचस् ३.	२।४।२१
वचा २.	३।३।१९७
वचाच्छद १.	३।३।१२१
वज्र १. ३.	१।२।१३
” १. ३.	२।२।६
” १. ३.	३।२।३९
” ३.	३।३।२०२
” १. ३.	३।६।१४६
” १. ३.	६।५।६८
” १. ३.	८।६।३
वज्रदक्षिण १.	१।२।७
वज्रधारण ३.	३।२।२२
वज्रनिपेष १.	२।२।६
वज्रपाणि १.	१।२।५
वज्रपुष्प ३.	३।८।४०
वज्रा २.	३।३।९७
वज्रांशुक ३.	४।३।११९
वज्राभिषवण ३.	३।६।१४७
वज्रासन ३.	३।६।२१८
वज्रिन् १.	१।२।१
वज्री २.	३।३।९८
वञ्चक १. २. ३.	५।४।२४

वक्षक]

वैजयन्तीकोषः

[वमति

वक्षक १. २. ३.	७५१०४	वत्सनाभ १.	११४२४	वनस्पति १.	३३३६
वक्षति १.	११२११८	वत्सर १.	२१११९०	" १.	८११४२
वक्षथ १.	७११६४	वत्सरान्ता ३.	२१११७७	वनायुज १.	३१७८५
वक्षन ३.	५२१३५	वत्सल १. २. ३.	५१११८	वनालु १.	३३३१५०
वक्षुल १.	२३३११	वत्सला २.	३१११४७	वनाश १.	३१८१२
" १.	२३३२६	वत्सादनी ३.	३३३१३२	वनिता २.	४११४
" १.	३३३३१	वत्सीय १. २. ३.	३११२८	" २.	७२१२५
" १.	३३३४०	वद १. २. ३.	५११४५	वनी २.	३३३१
" १.	३३३४६	वदन ३.	४११८६	वनीपक १. २. ३.	५११६०
वक्षुला २.	३११४५	वदान्य १. २. ३.	७११२६	वनेवासिन् १.	३३३१२४
वट १.	३३३२७	वदाल १.	४११४३	वनोद्भवा २.	३३३१८४
" १.	३१११७	वदावद १. २. ३.	५११४५	वनौकस् १.	३११४०
" १. २. ३.	३११३०	वध १.	३१७२११	वन्दन ३.	३३३३९
" १. २. ३.	८११३७	" १. २. ३.	६११७५	वन्दनमाला २.	३३३५९
वटक ३.	५११४८	वधरत १. २. ३.	३३३११	वन्दा २.	३३३८४
वटाश्रय १.	११२१५६	वधस्थान ३.	३११३७	वन्दाक १.	३३३८४
वटी २.	३११३०	वघा २.	३३३१४९	वन्दाक १.	३३३८४
" २.	८११३७	वधिर. १. २. ३.	५११३३	वन्दारु १. २. ३.	५११४३
वटु १. २. ३.	५११३	वधू २.	४११४	वन्दिन् १.	३११७८
वट्टकृति २.	३३३९	" २.	४११७	" १.	३११८१
वडवा २.	३१७१०७	" २.	४११३५	" १.	३१७३०
" २.	४११२६	" २.	४११३६	वन्दीक १.	११२७
" २.	७२१२२	" २.	४११३६	वन्ध्य १. २. ३.	३३३८
वडवामुख ३.	४११११	वधूटी २.	४११९	वन्ध्या २.	३११४७
" १.	८११५५	वधोद्यत १. २. ३.	५११६८	वन्य १.	३३३१३३
वणिग्गृह ३.	४१३३४	वन ३.	३३३१	" ३.	४२३३६
वणिज् १.	३१८७२	" ३.	४२३२	वन्या २.	३३३१६१
यणिजा २.	३१८३	" ३.	६३३३१	" २.	५१११४
वणिज्य ३. २.	८११३२	वनकोद्रव १.	३१८५५	वपन ३.	३३३४
वणिज्या २.	३१८३	वनगव १.	३११३३	" ३.	३११२६
वण्ट १.	५२१७	वनच्छाग १.	३११६३	वपनी २.	४३३२५
वण्टफ १.	३१८३०	वनज १.	२३३४१	वपा २.	४११२
वतंस १.	४३३१५४	" ३.	४२३३६	" २.	६२३३३
" १.	८११५९	वनतिक्रिका २.	३३३३३०	वपुस् ३.	६३३३०
वत्स १.	२११९१	वनद्रुम १.	३१८१०८	" ३.	८३३१७
" १.	३३३७३	वनन १.	३११११	वप्त् १.	४११२९
" १.	३३३५१	वनप्रिय १.	२३३२७	वप्र १. ३.	३३३२६
" १. २. ३.	५११२	वनमाय १.	३१८१०८	" १. ३.	४३३३३
" १. २. ३.	६११७३	वनमालिन् १.	१११२५	" १. ३.	६११७९
वत्सकामा २.	३३३४७	वनमुद्र १.	३१८३८	वमति १.	८१११०
वत्सतर १.	३३३५४				

वमथु १.	३।७।८२	वरयितृ १.	४।४।३७	वरिष्ठ १. २. ३.	७।४।२५
" १.	४।४।१२६	वररुचि १.	३।६।१५८	वरीयस् १. २. ३.	
" १.	८।९।१३	वरला २.	२।३।८		७।४।२६
वमि १.	१।२।१८	वरवर्णिनी २.	८।२।१३	वरुट १.	३।५।५५
" २.	४।४।१२६	वरवाहन १ द्वि.	१।३।५	वरुण १.	१।२।४५
वज्र १. २. ३.	४।१।३८	वरा २.	३।३।१०५	वरुणकाष्ठिका २.	
वयस् ३.	४।४।५३	" २.	३।३।१७९		३।६।१०८
" ३.	४।४।५३	" २.	३।३।२१३	वरुणकृच्छक ३.	३।६।१४१
" ३.	६।३।३०	" २.	३।३।२३३	वरुणग्रह १.	४।४।१३४
वयस्य १. २. ३.	३।७।४३	वराङ्ग ३.	३।८।१०४	वरुणप्रिया २.	१।२।४६
वयस्या २.	३।३।११२	" ३.	७।३।२९	वरुणावास १.	४।२।११
" २.	४।४।२५	वराङ्गना २.	३।३।२२४	वरुथ १.	३।७।१३२
वयस्स्थ १. २. ३.	५।४।३	वराङ्गा २.	३।४।४५	वरुथिनी २.	३।७।५५
वयस्थ्या २.	७।५।७८	वराट १.	३।९।३०	वरेणुक १.	३।८।३१
वर १.	२।३।१८	वराटक १.	४।१।५७	वरेण्य १. २. ३.	५।४।६३
" ३.	३।२।१४	" १.	४।२।४५	वरेन्द्री २.	३।१।२१
" ३.	३।३।५४	वराणक १.	३।५।५०	" २.	३।१।३०
" १.	३।३।१५२	" १.	३।६।१५९	वरोत्कट १.	३।४।४
" ३.	३।३।१९९	वराधि १.	३।९।३९	वरोत्पल ३.	४।२।३५
" १.	३।८।११०	वरान्तक १.	१।३।६	वर्ग १.	५।१।४
" ३.	३।८।११७	वराभ १.	३।७।१६१	" १.	५।१।३६
" १.	३।८।१२७	वराम्ल १.	३।३।३३	वर्चस् ३.	६।३।३१
" ३.	४।४।१११	वरारोहा २.	३।३।१८४	वर्चस्क १.	४।४।११९
" १. २. ३.	५।४।६४	" २.	३।३।१९९	वर्जन ३.	५।२।४०
" १. २. ३.	६।५।७२	" २.	४।४।१२	" ३.	७।३।२९
वरक १.	३।८।३८	वरागल १.	३।३।७९	वर्ण १. ३.	२।४।२१
" १.	३।८।५४	वराल १.	५।३।१४	" १.	३।५।२
" १.	४।३।१२७	वरालक ३.	३।८।१०३	" १.	४।३।१५६
वरट १. २.	८।९।२६	वराला २.	२।३।८	" १. २. ३.	६।५।६०
वरटा २.	२।३।८	वराश्रि १.	५।३।२८	वर्णक ३.	३।६।५६
" २.	२।३।४६	वरासि २.	४।३।१२६	" ३.	४।३।१४७
वरण ३.	२।१।६३	वराह १.	३।४।५	" १. २. ३.	७।५।७९
" १.	३।३।४१	वराहकन्द १.	३।३।२१०	वर्णतर्णक १. २. ३.	
" १.	४।३।१४	वराहकर्णक १.	३।७।१६७		८।९।३२
वरण्ड १.	४।३।६५	वराहद्वीप ३.	३।१।१४	वर्णन ३.	५।२।३९
" १.	४।४।१२५	" ३.	३।१।१८	वर्णा २.	३।८।४९
वरत्रा २.	३।७।८४	वरिवसित १. २. ३.		वर्णि १.	८।९।१०
" २.	३।९।४४		५।४।१०५	वर्णित १. २. ३.	
वरनिमन्त्रण ३.	३।६।५६	वरिवस्या २.	३।६।३८		५।४।१०६
वरप्रदा २.	३।६।१५३	वरिष्ठ १.	२।३।३५	वर्णिन् १.	३।६।७
वरयात्रा २.	३।६।५६	" ३.	३।२।२५	वर्णिनी २.	३।३।२१२

[वर्णिलिङ्गिन्]

वर्णिलिङ्गिन् १. २. ३.

वर्ण्य ३.	३१६१९
वर्तक ३.	३१८११६
" ३.	३३३१०
" ३.	३३३१०१
" १.	७११६४
वर्तन ३.	२१४२२
" ३.	३१७१११
" ३.	३१८११
" ३.	५१२१४१
" १. २. ३.	५१४१४०
वर्तनी २.	७१२१२१
वर्ति २.	४१३१६१
" २.	४१३१६१
वर्तिष्णु १. २. ३.	५१४१९०
वर्तुल १. २. ३.	५१४१८२
वर्तुलान्न १.	२१३१३०
वर्त्म ३.	४१४१९५
वर्त्मन् ३.	४१४१९५
वर्द्धी २.	३१९१४४
(वध्री)	
वर्धकि १.	३१९१३४
वर्धकिहस्त १.	३१९१५६
वर्धन ३.	४१३११००
" १. २. ३.	५१४१४०
" ३.	७१३१२९
वर्धनी २.	४१३१५७
वर्धमान १.	४१३१५९
" १.	८१११४४
वर्धिष्णु १. २. ३.	५१४१४०
वर्धी २.	६१२१३४
वर्मन् ३.	३१७१५२
वर्मि १.	८१९११०
वर्मित १. २. ३.	३१७१४२
वर्य १. २. ३.	५१४१६३
वर्या २.	४१३१७
वर्ष १. ३.	२१११९१
" १. ३.	२१२११७
" १. ३. २ व.	६१५१७९
वर्षकारी २.	३१६१५२
वर्षण ३.	२१२१७

वैजयन्तीकोपः

वर्षमुख १.	२१११८१
वर्षवर १.	३१७१२३
वर्षा २ व.	२१११८९
" २.	३१३११७
वर्षाभी १.	४१६११८
वर्षाभू १. २.	७१५१७७
वर्षाभ्वी २.	३१३११४५
वर्षासिद्ध १.	२१३१३७
वर्षासिद् १. २. ३.	५१४१४
वर्षमन् १. ३.	६१५१८१
वल १.	६१११५३
वलत्त १.	५१३११५
वलम्न १.	४१४१६७
वलज १.	५१३१४०
" ३.	७१५१७८
वलजा २.	३१८१६५
" २. ३.	७१५१७८
वलन ३.	३१९१११
" १.	५१३१५२
वलना २.	२१४१२५
वलभी २.	४१३१३१
" २.	४१३१३९
वल्य १.	११२१५१
" १.	३१३१२५
" १.	३१३११९९
" ३.	४१३११४४
वल्यित १. २. ३.	५१४१९६
वलरिपु १.	११२१२
वलाङ्ग १.	२१११८७
वलाहक १.	२१२११
" १.	३१३१७८
" १.	४११११२
" १.	४११११७
वलाहका २.	३१७१९८
वलि २.	६१२१३३
वलिन १. २. ३.	५१४१७
वलिभ १. २. ३.	५१४१७
वलिर १. २. ३.	५१४११३
वलीक ३.	४१३१३७
वलीनक १.	३१३१२२३

[वशीकार]

वलीमुख १.	३१४१४०
" ३.	३१८११४१
वल्क ३.	३१३११४
वल्कल १. ३.	३१३१३३
वल्गन ३.	३१७११२२
वल्गा २.	३१७११४
वल्गित १. २. ३.	३१७११८
" १. २. ३.	३१७११२२
वल्गु ३.	४१४१९५
" १. २. ३.	६१४११६
वल्मीक १. ३.	३१११४८
वल्कली २.	३१९११६
वल्कभ १. २. ३.	५१४१७०
" १. २. ३.	७१४१२५
वल्कलि २.	३१३१२०
वल्कलीका २.	४१४१९९
वल्कव १.	३१९१२८
" १. २. ३.	४१३१९२
वल्का २.	३१८१४८
वल्कार १.	३१५१५२
वल्की २.	३१३१७
वल्कीपद ३.	४१३११९९
वल्कर ३.	४१२१३
" १. २. ३.	४१३१८९
वश १.	३१३१८३
" १.	३१५११९
" १. २. ३.	५१४१२८
" १. २. ३.	५१४१३२
" १. २. २.	६१५१७१
" १. २. ३.	६१५१७१
वशा २.	३१३१८६
" २.	३१४१४७
" २.	४१४१४
" २.	६१५१७१
वशाकु १.	२१३१३
वशामख १.	३१५१२७
वशिक १. २. ३.	५१४१८७
वशिन् १.	४१११५४
वशीकार १.	३१६१११७

वश्य १. २. ३. ५४३२
 वपट् ४. ८८३
 वसति २. ७२२३
 वसन ३. ४३११६
 वसन्त १. २११८७
 वसन्तघोष १. २३१२७
 वसा २. ४४११४
 वसिक १. २. ३. ३३११३४
 वसित ३. ४३१११६
 वसिष्ठ १. ३३११५५
 वसीर १. ३३८७८
 वसु १ व. १३१८
 " १. ३३१५४
 " ३. ३३१३६
 " १. ३३३५
 " १. ३३३१९४
 " १. २. ३. ३३८११
 " १. ३३८३६
 " ३. ३३८७३
 " १. ६५५७८
 वसुदेव १. १११२६
 वसुधा २. ३११२
 वसुन १. ३३१८३
 वसुन्धरा २. ३११२
 वसुभट्ट १. ३३११९४
 वसुमती २. ३११२
 वसुरेतस् १२११६
 वसुवह्निका २. ३३११०८
 वसुव्रत ३. ३३११४९
 वस्त ३. ४३११७
 (वस्न)
 वस्ति १. २. ४३११३१
 " १. २. ४४१६६
 वस्तिशुण्डक ३. ३३१२१७
 वस्य ३. ४३११७
 वस्त्र ३. ४३१११६
 वस्त्रकोश ४३१६३
 वस्त्रग्रन्थ १. ३. ४३११३०
 वस्त्रधारणी २. ४३१५३

वस्त्रान्त १. ४३११३१
 वस्न १. ३३८१७०
 " ३. ३३८१२२
 वस्वौकसारा २. १२१५९
 वह १. १२१४८
 " १. ६११५३
 वहन ३. ३३१२४
 वहा २. ४२१२३
 वहि १. ६११५३
 वहित्र ३. ३३१२४
 वहित्रकर्ण १. ३३१२१६
 वहिन् १. ३३१५२
 वह्नि १. १२११४
 वह्निक १. ५३१८
 वह्निशिख ३. ३३८९१
 वह्निसुत १. ४४११०४
 वा ४. ८८६
 " ४. ८८१५
 वाक्पति १. ५४१४५
 वाक्य ३. २४१२१
 वाचट् ४. ८८३
 वागीश १. २. ३. ५४१४५
 वागुर १. ३३११७
 वागुरा २. ३३१३९
 वागुरिक १. ३३१३८
 वागूजी २. ३३११०८
 वाग्गुद १. २३१२८
 वागिमन् १. २३१२५
 " १. २. ३. ५४१४५
 वाघत् १. ३३१७८
 वाच् २. ११११
 वाच्यम १. ३३११५०
 वाचस्पति १. २११३३
 वाचाट १. २. ३. ५४१४६
 वाचाल १. २. ३. ५४१४६
 वाचाला २. २३१२०
 वाचिक ३. २४१२५
 " ३. २४१३६
 " १. २. ३. ३३११९९
 वाचोयुक्तिपट्ट १. २. ३. ५४१४५

वाच्य १. २. ३. ८४११५
 वाज १. २३१४९
 " १. ३३११८५
 " १. ४३१३६
 वाजिदन्तक १. ३३११०१
 वाजिन् १. ६११५५
 वाजिन ३. ३३१२८
 वाजिशाला २. ४३१२१
 वाञ्छा २. ३३११७९
 वाञ्छित १. २. ३. ५४१२६
 वाट १. ३३१२१
 " १. ३. ४३११४
 " १. २. ३. ८१३३७
 वाटक १. ३. ४३१५
 वाटधान १. ३३१५३
 " १. ३३१५०१
 वाटिका २. ३३१२१७
 वाटी २. ३३१४
 " २. ३३१२३०
 " २. ८१३३७
 वाटयपुष्पी २. ३३१२२७
 वाटयमण्ड १. ४३१७९
 वाट्या २. ३३१२२७
 वाट्याल १. ३३११२८
 " १. ३३१५४
 वाडबैय १. ८१३३९
 वाण ३. २४१११
 वाणि २. ३३१८
 वाणिज १. ३३८७२
 वाणिज्य ३. ३३८३
 वाणिनी २. ७२१२३
 वाणी २. १११९
 वात १. १२१४७
 वातगामिन् १. २३१४
 वातम १. ३३१६५
 वातपात १. २३१६
 वातपोथ १. ३३१२९
 वातप्रसी १. ३३११६
 " १. ८१३८
 वातमृग १. ३३११६

[वातल]

वैजयन्तीकोषः

[वार्ताहर

वातल १. २. ३. ४४१४५	वानर १. ३४३२	वारण १. १२१७
वातसख १. १२११७	” १. ८६१७	” १. ३४७६१
वातसञ्चार १. ४४१२७	वानवासिक १. ३५२०	” १. ४२११०
वातसारथि १. १२११७	वानस्पत्य १. ३३३६	वारणावत ३. ४३१९
वातसुत १. ३१९७०	वानीर १. ३३३३१	वारणासी २. ४३३७
वातापिसूदन १. ३६१५२	वान्ताशिन् १. २. ३. ३६१९	वारखुला २. ३३११७३
वातायन ३. ४३१५४	वान्ति २. ४४१२६	वारमुख्या २. ४४४४२
वातायु १. ३४११६	वापिम १. ३६६६४	वारवाण १. ३. ८१२२
वाताहार १. २. ३. ३६१३१	वापी २. ४२६	वारवाणि १. ८११४२
वाति २. १२१४८	वाप्य ३. ३८१९९	वारखी २. ४४२४
वातिक १. ४११२५	वाम १. ११२९	वाराणसी २. ४३३७
वातिङ्गन १. ३३१०२	” १. १२१५	वाराह ३. ३१११८
वातुल १. ३६१४३	” १. २. ३. ६४१६	वाराही २. १११६४
वातुल १. २. ३. ७५६०	वामदेव १. १११४२	” २. ३३१२१०
वात्या २. २११५१	वामन १. ११११९	वारि ३. ४२११
” २. ५१११४	” १. १२१८	” २. ६५६२
वात्सक ३. ५१११०	” १. २. ३. ५४१८१	वारिकूट १. ४३१५
वात्स्यायन १. ३६१५९	वामलूर १. ३११४८	वारिज ३. ३६११९
वादन ३. ३१११४	वामलोचना २. ४४५	वारिधर १. २२११
” ३. ३११२१	वामा २. १११४८	वारिपणी २. ४२१४६
” ३. ३११३१	” २. ४४५	वारिपिण्ड १. ४११४८
” ३. ३११३६	वामी ३. ३७१०७	वारु १. ३७१०
वादर १. २. ३. ४३११७	वायव्य १. २११९१	” २. ६२३३७
वादित्र ३. ३१११४	” १. २. ३. ३६१०१	वारुणपाशक १. ४११५२
” ३. ३११३६	वायस १. २३११६	वारुणी २. १११५९
वादित्रलगुड १. ३११३६	” १. ८६६	” २. ३३१०९
वाद्य ३. ३१११४	वायसाली २. ३३१२६	” २. ३११४६
वाद्यनिर्घोष १. ३११३६	वायसी २. ३३११२	वार्च ३. ३३११
वाद्यवादकसामग्री २. ३११४०	” २. ३३१४९	वार्त ३. ४४१४२
वान १. २. ३. ३३११०	वायु १. १२१४७	” १. २. ३. ४४१४३
” ३. ३११८	वायुन १. १११२	वार्ता २. २४३२९
” १. २. ३. ६५६०	(वायुन)	” २. ३६११
वानक ३. ३६१४	वायुवर्त्मन् ३. २१११	” २. १. ३. ६५२५
वानदण्डक १. ३११८	वायुसम्भवा २. ३४१४४	वार्ताकशाकट १. २. ३. ३६१२१
वानप्रस्थ १. ३३१४३	वार २. ३. ४२३	वार्ताकशाकिन १. २. ३. ३६१२१
” १. ३६१२४	वार १. ५१११	वार्ताकी २. ३३१०२
” १. ८११४०	” १. ५२३	” २. ३३१०४
	वारक ३. ३७१५०	वार्ताकु २. ३३१०२
	वारट १. ५११५१	वार्ताहर १. ३११६

[वार्तिक]

शब्दानुक्रमणिका

[विकराल]

वार्तिक ३.	३१६५६	वाशा २.	३१३१०२	वास्तोष्पति १.	११२२
” १.	३१७२९	वाशित ३.	२१४४	वास्त्र १. २. ३.	३१७१२९
वार्द्धक ४.	७३३३०	वाशिता २.	७२१२२	वाह १.	३१४५२
” ३.	८१९१७	वाशी २.	२११२०	” १.	३१४६५
वार्धुष ३.	३१९५	वास १.	३३१९९१	” १.	५११५६
वार्धुषिक १. २. ३.	३१९८	” १.	३१७१८	” १.	५११५८
वार्धुषिन् १. २. ३.	३१९८	वासक १.	३३१०१	” १.	५११५८
वार्धुष्य ३.	३१९५	वास्तेयी २.	२११५७	वाहन ३.	३१७१२३
वार्ध्वाणस १.	३१४८	वासन १.	४३१४५	वाहनी २.	४३१७७
(वार्ध्नीणस)		” ३.	४३१६७	वाहवारण १.	३१४३३
वार्मण ३.	५१११३	” ३.	५४१४९	वाहस १.	४१११९
वार्मिक १.	३१५४०	वासना २.	४३१५८	” १.	७११६५
वार्षी २.	२११८९	वासनी २.	३३११६८	वाहि १.	८१९१०
वाल १. ३.	४३११६०	वासनीयक ३.	३१८११६	वाहिक १.	५११५३
” १.	४१४९८	वासन्त १.	३३१६१	वाहित १.	३१७८७
” १.	६११५४	” १.	३१८३७	” ३.	५११६४
वालक ३.	७३३३१	वासन्ती २.	३३११८२	वाहित्य ३.	३१७७३
वालकूर्चा १.	४११००	” २.	३३११८७	वाहिनी २.	३१७५५
वालकेशी २.	३३३२३०	वासयोग १.	४३११७७	” २.	३१७५८
वालधि १.	३१४७४	वासर १. ३.	२११५५	” २.	४१०२३
वालनाटक १.	३१८५४	” १.	७११७२	वाहिनीपति १. २. ३.	
वालपाशक १.	३१७८१	वासव १.	११२११		३१७१४१
वालपाश्या २.	५३११३६	” १.	३१६१०८	वाहीक १ व.	३११२७
वालमृग १.	३१४१९	वासस् ३.	४३१११६	वाह्य १.	३१४५२
वालवायज १.	३१२४०	” १.	८१६१६	” ३.	३१७१२३
वालवीज्य १.	३१४६३	वासागार ३.	४३१२०	वि १.	३१२२
वालहस्त १.	३१४७४	वासिक ३.	४३१४१	” १.	८११६०
वालिका २.	४३११३५	वासिष्ठ ३.	४१११०६	” ४.	८१७६
वालिली २.	२११४२	वासी २.	३१९३६	विंश १. २. ३.	५११२२
वालुक ३.	३१८१९६	वासुकि १.	४११३	विंशति २.	५११२६
” ३.	४११२३	वासुदेव १.	११११२	विंशतितम १. २. ३.	
वालुका २ व.	४१२३३	” १.	८११३९		५११२२
” २.	७२१२४	वासू २.	३१९१०७	विंशतिभुज १.	११२४२
वालुकी २.	३३११६७	वास्तु १. ३.	४३११०	विकङ्कत १.	३३३३८
वालक १. २. ३.	४३१११७	” १. ३.	६५१८०	विकच १ व.	११२३७
वालमीक १.	३१६१५३	वास्तुक १.	३३११५४	” १. २. ३.	३३३९
वालमीकि १.	३१६१५३	वास्तुकशाकट १. २. ३.		विकट १. २. ३.	५११८२
वाचदूक १. २. ३.			३१८२१	” १. २. ३.	५११२६
	५१४४५	वास्तुकशाकिन १. २. ३.		” १. २. ३.	७११२६
वावाता २.	३१७३२		३१८२१	विकटा २.	३१७४७
वाशन ३.	२१४४	वास्तुमध्य ३.	४३११०	विकराल १.	३१४७

[विकराल]

वैजयन्तीकोषः

[विताली]

विकराल १. २. ३. ५४८२	विजुभा २. २११२३	विजयच्छन्द १. ४३१३९
विकरालिन् १. ५३१९	विज्ञोभ १. ३१७४७	विजविल १. २. ३. ५३१४
विकर्णि १. ३१७१८२	विगण्डीर ३. ३३१५५	विजाता २. ४३११७
विकर्तन १. २११११	विगत १. २. ३. ७४१२४	विजाति २. ३३१२६
विकर्मन् ३. ३३१११७	विगतनासिक १. २. ३. ५४११२	विजिज्ञासा २. ४३११७५
विकल १. २. ३. ५४८६	विगता २. ३३१४८	विज्ञ १. २. ३. ५४११९
विकला २. ३३१५०	विगन्धिका २. ३२११२	विट १. २११७०
विकलाङ्ग १. २. ३. ५४१११	विगन्धिन ३. ४३१३६	” १. ४३१३९
विकल्पना २. २४१४०	विगम १. ५२१२७	विटका २. ४३१३८
विकसा २. ३३१३३५	विगर्वा २. २४१२८	विटकान्ता २. ३३१२१२
विकार १. ५२१२२	विगीत १. २. ३. ३३१११	विटङ्क १. ३३११७२
” १. ७११६६	विग्रक १. ३३१८४	” १. ३. ४३१५४
विकालक १. २११६५	विग्र १. २. ३. ५४११२	विटप १. ३३११६
विकिर १. २३१३	विग्रह १. ३१७६	” १. ३१८७३
” १. ४२१८	” १. ५२१३	” १. ३. ७५११६२
” १. ७११७०	” १. ७११६८	विटपिन् १. ३३१४
विकिष्कु १. ३११५६	विघन १. ३३११०२	विटाटिका २. ३३११४६
विकुण्ठना २. ३३११७५	विघस १. ३३१६७	” २. ४३३३८
विकुर्वाण १. २. ३. ५४३३३	विघसासिन् १. ३३१६१	विटाश्रय १. ४३१२७
विकृत १. २. ३. ३११७८	विघूणिका २. ४३१९१	विटखदिर १. ३३१६४
” ३. ३११९५	विघ्न १. ५२१४	विट्चार १. ३३१७१
” १. २. ३. ४३१४४	विघ्नेश १. १११५३	विट्पति १. १११४
” १. २. ३. ७४१२५	विचकिल १. ३३११८३	विड १. ३१८१२४
विघ्न १. ३३१६६	विचक्षण १. ३३१२३४	विडङ्ग १. ३. ३१८१७
विक्रम १. ५२११६	विचक्षणा २. ३१८४७	” १. २. ३. ८११३८
” १. ५२११७	विचयन ३. ५२१४२	विड्ड ३. ४३११०८
विक्रय १. ३१८६९	विचर्चिका २. ४३११२३	वितंस १. ३११४१
विक्रयिक १. २. ३. ३१८६८	विचारिका २. ३१७३७	वितत ३. ३११११५
विक्रान्त १. २. ३. ३१७१४७	विचारोक्ति २. २१८२८	” ३. ३११११६
” ३. ३११४८	विचिकित्सा २. ३३११७७	वितथ १. २. ३. २४११७
विक्रायिक १. २. ३. ३१८६८	विचुल १. ३३१५०	वितरण ३. ३३१११८
विक्रेतृ १. २. ३. ३१८६८	विचोलक १. १२१४३	वितर्क १. ३३११७६
विक्रेय १. २. ३. ३१८६९	विच्छित्ति २. ३११९३	वितर्दिका २. ४३१३६
विकलव १. २. ३. ५४१६७	विच्युत १. २. ३. ५४११०२	वितस्ति २. ३११५३
	विजन १. २. ३. ५४१११९	” २. ४३१८०
	विजन्मन् १. ३१५१०४	” १. २. ८११२७
	(द्विजन्मन्)	वितान ३. ३१७१९०
	विजय १. ३३११५९	” १. ३. ४३११२३
	” १. ३३१२०९	” १. २. ३. ७५१७६
		विताली २. ३१११२४

वितुन्नक]

शब्दानुक्रमणिका

[विप्रव

वितुन्नक ३.	३११४२
वित्त ३.	३१८७३
” १. २. ३.	६५७४
वित्तेश १.	१११५७
विदग्ध १.	५३११८
” १. २. ३.	५४१२०
विदण्ड १.	४३१५०
विदर १.	५११४१
विदल १. २. ३.	३३११४
विदा २.	३३१६३
विदारक १.	४१३१
विदारण ३.	८३११२
विदारी २.	३३१२३
” २.	३३११५
विदित १. २. ३.	५४११०१
” १. २. ३.	७४१२३
विदिश्व २.	२११३
विदुर १. २. ३.	५४१४३
विदुल १.	३३१३१
(अम्बुप्रिय)	
विदूषक १.	३११६५
विदूषिका २.	३३१५३
विदेह १ व.	३११३०
विद्ध १. २. ३.	५४१९७
” १. २. ३.	५४११११
” १. २. ३.	६४११७
विद्धकर्ण २.	३३११३१
विद्धायुध ३.	३३११७३
विद्या २.	३३१२७
” २.	३३१३०
विद्याधर १.	१३१४
विद्युत् २.	२१२३
” २.	३१२१२
विद्रधि १. २.	४४११३७
विद्रव १.	३३१२११
विद्रुत १. २. ३.	४३११५
विद्रुम १.	३१२३९
” १.	७११६५
विद्रुमलता २.	३१८१५
विद्रुस् १.	३३१२३४

विद्वेष १.	३३११८४
विधवा २.	४४११४
विधा २.	३३१३५
” २.	६१३३४
विधातृ १.	१११६
विधान ३.	७३१३३
विधि १.	१११९
” १.	३३१३३
” १.	३३१११३
” १.	३३११८९
” १.	५१२२५
” १.	६११५५
विधु १.	२११२४
” १.	६११५५
विधुत १. २. ३.	५४११०१
” १. २. ३.	७४१२३
विधुन्तुद १.	२११३६
विधुर १.	११२४१
” १. २. ३.	७४१२७
विधुवन ३.	५१२४०
विधूनन ३.	५१२४०
विधेय १. २. ३.	५४१२८
” १. २. ३.	५४१३२
विनय १.	७११७०
विनयग्राहिन् १.	३३१६७
विना ४.	८१८४
विनायक १.	१११३२
” १.	१११५३
विनिमय १.	३३१७१
विनियोग १.	५१२२५
विनीत १. २. ३.	७५१७४
विनोद १.	३३११८७
विन्दु १. २. ३.	५४१४३
विन्ध्य १.	३३२३
विन्ध्यकूटक १.	३३११५१
विन्ध्यवासिन् १.	२३११५८
विन्ध्यवासिनी २.	१११६३
विन्न १. २. ३.	५४१९९
” १. २. ३.	६४११७

विपन्नक १.	३३१४२
विपञ्ची २.	३११११६
” २.	७१२२४
विपण १.	३३१६९
विपणि २.	४३३३५
” २.	७१२२४
विपत्ति २.	३३११९१
विपथ १.	३११५०
विपद् २.	३३११९१
” २.	३३१४४
विपर्यय १.	५१२१
विपर्यास १.	५१२५
विपश्चित् १.	३३१२३४
विपाक १.	३३११८९
” १.	७११६७
विपाकिन् १.	२३११२७
विपादिका १.	४४१२२
(विपाटिका)	
विपाश्व २.	४१२२७
विपाशा २.	४१२२७
विपिन ३.	३३११
विपुल १. २. ३.	५४१८०
विपुला २.	३११२
विप्र १.	३३११
विप्रकार १.	५१२२२
विप्रकुण्ड १.	३३१६२
विप्रकृष्ट ३.	५४११४२
विप्रतिसार १.	३३११८५
विप्रप्रिय ३.	३३११३९
विप्रयाण ३.	३३१२१०
विप्रयोग १.	५१२१६
विप्रलम्भ १.	५१२२०
विप्रलाप १.	२३१२९
” १.	८११४१
विप्रशेषित ३.	३३१६७
विप्रशिक्षा २.	४४१११
विप्रिय ३.	३३१४७
” १. २. ३.	५४१६९
विप्रुष २.	२१२८
विप्रुष १.	२३२२
विप्रुव १.	३३११९०

विबुक् १.	३१५२०	विरागार्ह १. २. ३.		विविक्त १. २. ३. ७४२४	
विबुध १.	७११६६		५४५५४	विद्युताक्ष १.	२३१३३
विभण्ड १.	३१५२६	विराज् १.	३१७१	विवेशिका २.	४३१४
विभञ्जन ३.	५२१३९	विराव् १.	२४३३	विवेष्टन ३.	५२१४२
विभाकर १.	२१११४	विरावृत्त ३.	३१८१७९	विश १.	३१५२
विभाग १.	५२१७	विरिञ्च १.	१११७	" १.	३१८१
विभाजन ३.	३१३१५१	विरुक्तकोद्रव १.	३१८१५५	" २. ३.	४३११९
विभात ४.	२११६८	विरुक्ताण ३.	२१४३३	" १. २.	८१५३९
विभाव १.	३१९८०	विरूप १. २. ३. ५४१२६		विशङ्कट १. २. ३.	
विभावनी २.	३१३१८५	विरूपाक्ष १.	१११४२		५४१८२
विभावरी २.	२११६७	विरोचन १.	८११४२	विशद १.	५३११०
विभावसु १.	८१३३९	विरोध १.	३१६१८४	" १. २. ३. ५४१३४	
विभाषण ३.	२१४२४	विरोधन ३.	५२१३०	" १. २. ३. ७४२५	
विभीतक १. २. ३.		विरोधिन् १.	३१७४२	विशय १.	३१६१७७
	३३१७५	विरोधोक्ति २.	२४२२९	विशर १.	३१७२११
विभीदक १.	३३१७६	विलक्ष १. २. ३. ५४२२९		विशल्या २.	३३१३३
विभीषण १.	१२१५	विलम्बित ३.	३१९१२३	विशस् १.	३१७२११
विभु १. २. ३.	६१५८१	" १. २. ३. ८१४१२		विशसन १.	३१७१५८
विभृति २.	८१५३४	विलम्भ १.	५२११९	" ३.	३१७२१४
विभृषण ३.	५३१३३	विलाप १.	२४२२९	विशाख १.	१११५७
विभ्रम १.	३१२१६	विलाव १.	५२२२९	" १.	७१५८३
" १.	७११६९	विलास १.	३१९९३	विशाखा २.	२११४०
विमनस् १. २. ३.		विलिष्ट १. २. ३. ५४१८४		" २.	८१५५७
	५४३३४	विलीन १. २. ३. ४३१५५		विशाखिका २.	३१६१२३
विमल १.	३१२४१	" १. २. ३. ७४२३		विशारद १. २. ३.	
" १. २. ३. ५४१६६		विलेपी २.	४३१८०		८१४१२
विमालुज १.	४३१३३	विलेप्या २.	४३१८०	विशाल १.	४३१२९
विमान १. ३.	७१५८१	विलोमिका २.	३३११११	" १. २. ३. ५४१८०	
वियत् ३.	२१११	विल्वगन्ध १.	३३११२१	" १. २. ३. ५४१८२	
वियद्गङ्गा २.	१३१३३	विविध १.	७११७१	विशालता २.	५२१५
वियम १.	५२१३०	विवरण ३.	२४२२६	विशालत्वच् १.	३३१४७
वियात १. २. ३. ५४१७		विवर्ण १.	३१५२	विशाला २.	३३११०३
वियाम १.	५२१३०	" १. २. ३. ७४२४		" २.	३३११७२
वियुन १.	१२१६	विवर्णता २.	३१९८१	विशिख १.	३१७१७९
वियोग १.	५२२२६	विवश १. २. ३. ७५२२७		" १. २. ३. ७५५८१	
विरजा २.	३३१९२	विवस्वत् १.	१११३	विशिखा २.	४३११६
विरत ३.	३१७२०२	" १.	२१११२	विशिखाश्रय १. ३१७१७८	
विरति २.	५२१३६	विवाद १.	२४२२४	विशीर्णपाद् १.	१२१३५
विरल १. २. ३. ५४१२५		विवाह १.	३१६५४	विशीर्णाङ्गी २.	३१६५१
विरह १.	५२१२६	विवाहामि १.	१२२२७	विशुन्यलवण २.	
विराग १.	३१६१६७	विविक्त १. २. ३. ५४११९९			३१८१२३

[विशेष]

विशेष १.	३१६२०५
विशेषक १. ३.	४३११४८
„ १. ३.	८१९३०
विशेषभाग १.	३१७७६
विशोक १.	२३१२९
विश्राणन ३.	३१६११८
विश्लिष्ट १. २. ३.	५४१२५
विश्लेष १.	५२२२६
विश्व १ व.	१३१८
१ १. २. ३.	५४८६
„ १. २. ३.	६५७८
विश्वकर्म १.	३१३९
विश्वकर्मन् १.	१३३६
„ १.	८११४१
विश्वगोप्त् १.	८११३९
विश्वभृत् २ व.	२११२१
विश्वभेषज ३.	३८७५
विश्वभर १.	८५२२
विश्वरुचि २.	१२३०
विश्वरूप १.	१११५
विश्वरेतस् १.	१११८
विश्वविस्ता २.	२११७५
विश्वस्ता २.	४११४
विश्वहयं १.	३६१८३
(विश्वहर्यत)	
विश्वा २.	३११३
विश्वात्मन् १.	१११६
„ १.	७११६७
विश्वावसु १. २.	८५२३
विष ३.	३२३३
„ ३.	३१२४
„ ३.	४२२
विषम १.	३३१५५
विषम्वी २.	३३१००
„ २.	३३१२७
„ २.	३३१३२
विषजित् ३.	३८१६६
विषधर १.	४११६
विषपुष्पक १.	३३१५०
विषम १.	३३१२१६

शब्दानुक्रमिका

विषमच्छद १.	३३१४७
विषमस्पृहा २.	३६१७९
विषमायुध १.	११२८
विषमोन्नत १. २. ३.	५४८३
विषय १.	३७४८
„ १.	५३२
„ १.	७११२२
विषयग्राम १.	५११७
विषयिन् १. २. ३.	७५७५
विषवृक्ष १.	८६१९
विषवैद्य १.	४१२५
विषा २.	३८१९०
विषाण १. २. ३.	७५८२
विषाणिका २.	४३२२
विषाणिन् १.	३४१५२
„ १. २. ३.	७५७७
„ १.	८६१४
विषाणी २.	३३११६
विषाद १.	३६१९१
विषुव १. ३.	२११९०
विषुवत् १. ३.	२११९०
विषूचीन १. २. ३.	५४१९१
विष्कम्भ १.	७११६७
विष्किर १.	२३३३८
„ १.	७११६६
विष्ट ३.	३६१२०६
विष्टर १.	३३३४
„ ३.	४३१६४
„ १.	७११६९
विष्टरश्रवस्	११११०
विष्टि १.	३११५५
विष्टा २.	३३१००
„ २.	४४११९
विष्टाख्य ३.	३२३६
विष्टिका २.	३८८१
विष्णु १.	११११०
„ १.	१११२०
विष्णुकान्ता २.	३३१२३

[विस्मय]

विष्णुकान्ता २.	३३१३४
विष्णुगुप्त १.	३६१५९
विष्णुपद ३.	२१११
विष्णुपदी २.	४२२४
विष्णुरथ १.	११३३८
विष्णुशक्ति २.	११११६
विष्फार १.	२४१९
विष्फुलिङ्गिनी २.	१२३०
विष्य १. २. ३.	५४७१
विष्वक् ४.	८८३
विष्वक्सेन १.	१११११
विष्वक्सेना २.	३३३६
विष्वच् १. २. ३.	५४१९१
विष्वद्वीचीन १. २. ३.	५४१९३
विष्वद्वच् १. २. ३.	५४१९३
विसंवाद १.	५२२०
विसर १.	५१११
„ १.	५३२६
विसर्ग १.	१२८९
„ १.	३६३७
„ १.	७१७०
विसर्जन ३.	३६११८
विसर्जिका २.	२११९१
विसार १.	४११४२
विस्त १. २. ३.	५४११०
„ १. २. ३.	७४२६
विस्त १.	५११५१
विस्तर १.	५२३
विस्तार १.	३३१६
„ १.	५२३
विस्तीर्ण १. २. ३.	५४१८०
विस्तीर्णजानु २.	३६१४७
विस्मृत १. २. ३.	५४११०
विस्फोट १.	४४१२३
विस्मय १.	३६१८१
„ १.	३९७६
„ १.	७११६५

विस्मरण]

वैजयन्तीकोषः

[वृद्ध

विस्मरण ३.	३१६१७७	वीथि २.	३१९१००	वृकधूप १.	३१८११०
विस्मृत १. २. ३.	५१४१०९	वीथिका २.	५१२१४६	" १.	३१८११२
विन्न ३.	४१४१०६	वीथी २.	२११४४४	वृकधूर्तक १.	३१४१७
" ३.	४१४१०८	" २.	६१२३५	" १.	३१४३८
विस्संज्ञा २.	४१४५४	वीध्र १. २. ३.	५१४६६	वृकधोरण १.	३१४३२
विस्सन्ध १. २. ३.	५१४५२	वीनाह १.	३१३२२७	वृकवाला २.	४३१४४
विस्सम्भ १.	७११६६	वीर १. २. ३.	३१७१४७	वृकस्थली २.	४३१९
विहग १.	२३३२	" १.	३१९७५	वृकाम्लिका २.	३३३३४
विहगाधिप १.	१११३८	" १. २. ३.	६१५८२	वृक्ण १. २. ३.	५१४१०२
विहङ्ग १.	२३३२	वीरजयन्तिका २.		वृक्तवर्हिस् १.	३३३७८
विहङ्गम १.	२३३२		३१७२०८	वृक्ष १.	४१४११२
विहङ्गिका २.	३१९६	वीरण ३.	३३३२३१	वृक्ष १.	३३३४
विहनन ३.	३१९१०	वीरचूण ३.	३३३२३१	" १.	८१९११
विहसित ३.	३१९८३	वीरपत्नी २.	४१४१३	वृक्षक १.	३३३८३
विहस्त १. २. ३.	५१४६८	वीरपाण ३.	३१७२०२	वृक्षगृह १.	८१६१८
विहान १. ३.	२११६८	वीरभद्र १.	१११५३	वृक्षमूलिन् १. २. ३.	
विहापन ३.	३१६११८	वीरभार्या २.	४१४१३		३३३२२९
विहायस् १. ३.	७१५८०	वीरमातृ २.	४१४१३	वृक्षरुहा २.	३३३८५
विहायस ३.	२१११	वीरल १.	४११५५	वृक्षादनी २.	३३३८५
विहार १.	४३३२८	वीरविप्लावक १.		वृक्षाल ३.	३१८१३२
" १.	७११६८		३३३६२	वृक्षोत्पल १.	३३३७२
विहारिणी २.	३३६५२	वीरवृक्ष १.	८१६१८	वृजिन १. २. ३.	५१४१२३
विहास १. २. ३.	७१५८३	वीरशङ्कु १.	३१७१८०	" १.	७१५८४
विह्वल १. २. ३.	५१४६७	वीरशाक १.	३३३१५४	वृत्तिद्रुम १.	४३३१४
वीकाश १.	७११६७	वीरसू २.	४१४१३	वृत्तिमार्ग १.	३११५१
वीक्षा २.	३३६१८१	वीरस्कन्ध १.	३३४१९	वृत्त ३.	३३६११५
वीचि २.	४३२१४	वीरस्नाका २.	४३३१११	" १. २. ३.	५१४८३
" २.	६३२३५	वीरहन् १.	३३६७१	" १. २. ३.	६१५७६
वीज्य १.	३३८३१	वीराशंसन ३.	३३७२०६	वृत्ताङ्गी २.	३३३६७
" १.	३३८१२८	वीरासन ३.	३३६२२७	वृत्तान्त १.	२१४३९
वीणा २.	३३९११६	वीरधू २.	६३२३५	" १.	७११७१
वीणावशशलाका २.	३३९१२०	वीरोज्ज १.	३३६७०	वृत्ति २.	३३८१
वीणावाद १.	३३९१७०	वीरोपजीवक १.	३३६७१	" २.	३३८७
वीत ३.	३३७८९	वीर्य ३.	३३७२१०	" २.	३३९१०२
(पीत)		" ३.	४३११११	" २.	६३३३६
" १. २. ३.	६३५७५	" ३.	६३३३२	वृत्र १.	६३१५६
वीतक ३.	४३३११०	वीर्यकर १.	४३१११०	वृत्रारि १.	१३२१
वीतराग १.	१११३५	वीलक १.	३३५२८	वृथा ४.	८३७२८
वीतिहोत्र १.	१३२१४	वीवध १.	७११७१	वृथाजात १.	३३६७७
		वृक १ व.	३३१४०	वृद्ध ३.	३३८९६
		" १.	३३४८	" १. २. ३.	५१४११६

[वृद्ध]

शब्दानुक्रमणिका

[वेन]

वृद्ध १. २. ३.	६५५८०	वृषपर्णा २.	३३११४३	वेणु १.	३३३२१४
वृद्धकाक १.	२३११७	वृषपूतन १.	३३११२२	" १.	३३११५४
वृद्धगोनस १.	४१११३	वृषभ १.	३३२१५	वेणुक १.	३३११३३
वृद्धनाभि १. २. ३.	४१४१४६	" १.	३३४१५२	" ३.	३३७८२
वृद्धप्रपितामह १. ४१४३०		वृषल १.	३३४१५२	वेणुका २.	३३११२५
वृद्धप्रमातामह १. ४१४३०		" ३.	३३८१७६	वेणुधमा १.	३३११७१
वृद्धवयस् १. २. ३.	५४३३	" १.	३३९११	वेण्ठ ३.	४३३२७
वृद्धश्रवस् १.	११२११	वृषलक्षणा २.	३३६१५२	वेतन ३.	३३९१५
वृद्धा २.	४१४२१	वृषली २.	७२१२४	वेतस १.	३३३३१
वृद्धि २.	३३८१५	वृषवाहन १.	११११४६	वेतस्वत् १. २. ३.	३३११४३
" २.	३३८१९४	वृषसानु १.	८१११४०	वेताल १.	११२३८
" २.	४१४१३१	वृषस्यन्ती २.	४१४११	वेतालासन ३.	३३६२२१
" २.	५२३३३	वृषा २.	३३३११३	वेज १.	३३३१३३
" २.	६२३३७	" २.	३३३१७३	वेत्रधर १.	३३७२४
वृद्धोक्त १.	३३४१५५	" २.	३३८१९४	वेत्रवती २.	४११२८
वृद्धयाजीव १. २. ३.	३३८१८	वृषाकपायी २.	८२११३	वेद १.	३३३२७
वृन्त ३.	३३३२०	वृषाकपि १.	८१११४०	वेदगर्भ १.	३३६११
" १.	३३३१६८	वृषाक्रान्ता २.	३३४१५१	वेदन १. २. ३.	७५५८३
" ३.	३३४१५१	वृषाण १.	११११५२	वेदपठितृ १.	३३६१३३
" ३.	४१४१६८	वृषावाह १.	३३८१५७	वेदयष्टि २.	३३६१२४
वृन्ततुम्बी २.	३३३१६८	वृष्णि १.	३३४१६४	(देवयष्टि)	
(वृत्ततुम्बी)		वृष्टि २.	२२१७	वेदाङ्ग ३.	३३६२८
वृन्ता २.	३३३१६६	वृष्य १.	३३३२२५	वेदि २.	३३६१०९
वृश्चिक १.	३३३१४६	" १.	३३८३५	" २.	३३६११०
" १.	४११३२	वृष्यकन्द ३.	४२१४७	वेदिका २.	४३३३६
" १. २.	४११३३	वृष्या २.	३३८१९४	" २.	७२२२५
" १.	४११३३	वेग १.	१२१५५	वेदितृ १. २. ३.	५४१४३
वृश्चिकच्छदा २.	३३३१२७	" १.	६११५६	वेदिपर १ व.	३३१३७
वृश्चिकाली २.	३३३१२६	वेगसर १.	३३७१०८	वेद्यास्तरण ३.	३३६११
वृष ३.	४३३३६	वेगिन् १.	१२१५०	वेधक १.	३३८१२०
" १.	४११२	वेङ्कट १.	३३२१५	वेधनिका २.	३३९१८
" १. २. ३.	६५५७७	वेङ्कर १.	३३६१६९	वेधमुख्यक १.	३३३११७
वृषण १.	४१४६३	वेजन १.	३३६१०८	वेधमुख्या २.	३३४३६
वृषणश्च १.	१२११०	वेटी २.	४२११५	वेधस् १.	११११९
वृषण्वसु १.	१२१८	वेण १.	३३६१९८	" १.	६११५७
वृषध्वज १.	१११४२	" १.	३३६१९८	वेधित १. २. ३.	५४११११
वृषन् १.	१२११	वेणि २.	४२३३०	वेध्य ३.	३३७१९४
" १.	६११५६	वेणिनी २.	४१४६	वेध्या २.	३३९१३५
		वेणी २.	३३३८६	वेन १.	३३५८४
		" २.	३३४६५	" १.	३३५९७
		" २.	६२३३६		

वेन]

वैजयन्तीकोषः

[वैश्वदेवामि

वेन १.	३१५१९	वेहत् २.	३१४४७	वैदेहक १.	३१५७८
वेपथु १.	३१५८५	वै ४.	८१७७	" १.	३१८७२
" १.	३१५८९	" ४.	८१७११	वैदेही २.	३१८७७
वेमन् १.	३१५८	वैकच्य ३.	४३१२३	वैद्य १. २. ३.	४३१४३
वेल १.	३३१२५	" ३.	४३१५६	वैद्यमातृ २.	३३११०२
वेलज १.	५३३३६	वैकरञ्ज १.	४११९	वैद्यशास्त्र ३.	३३१२९
वेलव १.	३१५२२	" १.	४१११०	वद्यत ३.	३१११९
(पेलव)		" १.	४१११६	वैद्युत्त्वत १.	३१११२
वेला २.	४२११३	वैकुण्ठ १.	११११२	वैद्योत १. २. ३.	३२११९
" २.	४२१३३	" १.	३३११२१	वैधव्यलक्षणोपेता २.	३३१५३
" २.	६२१३६	" १.	७११७२	वैधात्र १.	१३१७
वेलान १.	५३३३६	वैकृन्त १.	३२१३५	वैधेय १. २. ३.	५३१२१
वेल्ल ३.	३१८१९७	वैखानस १.	३३१३३४	वैनतेय १.	१११३७
वेल्लन ३.	३१८७९	वैखारक १.	५३३३०	वैनयिक १. २. ३.	३१७१३०
वेल्लित १. २. ३.	५३१९५	वैघटिक १.	३१९१५	वैनीतक १. ३.	३१७१३७
" १. २. ३.	७३१२३	वेचित्य ३.	३३१२००	वैपरीत्य ३.	५३१५
वेश १.	३१५१८	वैजनन १.	४३११९	वैमात्रेय १.	४३१३३
(उग्रवेश)		वैजयन्त १.	१११५५	वैमेय १.	३१८७१
" १.	४३३३५	" १.	११२१९	वैयथित १.	३३११०७
वेशनी २.	४३३२४	" १.	११२१९	वैयाघ्र १. २. ३.	३३११२८
वेशन्त १.	४२१६	वैजयन्तिक १. २. ३.	३३११४५	वैर ३.	३३११८४
वेशवार १.	४३३८७	वैजयन्ती २.	३३३१६	वैरङ्गिक १. २. ३.	५३१५४
" १.	४३३९०	" २.	८२१९	वैरशुद्धि २.	३३१२०९
वेशमन् ३.	४३३१८	वैज्ञानिक १. २. ३.	५३११९	वैराग्य ३.	१११४७
वेशमस्थूणा २.	४३३३९	वैहूर्य ३.	३२१४०	" १.	३३११६७
वेश्य ३.	३३३१८४	वैणव ३.	३२१२१	वैरिन् १.	३३१४१
वेश्या २.	४३३२४	" १.	३३३२२	वैवधिक १.	३३११६
वेश्यागृह ३.	४३३३३	" १.	३३३३८	वैवस्वत १.	१२३३४
वेश्याचार्य १.	३३१७०	वैणविक १.	३३१७१	वैशाख १.	२३१८३
वेश्याजनाश्रय १.	४३३३५	वैणिक १.	३३१७०	" १. ३.	३३११८६
वेश्यापति १.	४३३३९	" १.	५३३५७	" १.	३३१३१
वेप १.	३३१६८	वैतसिक १.	३३१४०	वैशाखिन् १.	३३१७६
" १.	४३३१३२	वैतनिक १. २. ३.	३३१५	वैशाखी २.	२३१७५
वेष्ट १.	३३११०९	वैतालिक १.	३३१८१	वैशिख ३.	३३११७५
" ३.	६३३३२	" १.	३३१३०	वैश्य १.	३३११
वेष्टन ३.	३३३१०५	वैदिक १.	३३३१८	वैश्यकुण्ड १.	३३१६३
" ३.	४३१९३	वैदेह १.	३३१८७	वैश्रवण १.	१२१५७
" ३.	७३३३४	" १.	३३१११६	वैश्वदेवामि १.	१२३२७
वेष्टावार ३.	३३११२३	वैदेहक १.	३३११६		
वेष्टित १. २. ३.	५३१९६				
वेसर १.	३३७१०८				

(१४२)

वैश्वानर]

शब्दालुक्रमणिका

[अन्त]

वैश्वानर १.	११११४	व्यवहार १.	८११४३	व्यालामुध ३.	३८१५५
" ३.	२११४९	व्यवहित ३.	५११४२	व्यालि १.	३८१५८
वैश्वानरी २.	२११४८	व्यवाय १.	७११६५	व्यावहारी २.	८११४८
वैपथिकी २.	३७३३५	व्यष्ट ३.	३११२४	व्यास १.	१११३०
वैष्णव १.	३६१०८	व्यसन ३.	७३३३२	" १.	१११३१
वैष्णवी २.	११११६	व्यसनार्त १. २. ३.	५११६८	" ३.	३६१०६
" २.	१११६५	व्याकरण ३.	३६१२८	" १.	५११३३
वैष्णुत ३.	३६१५५	" ३.	८३१११	व्युत्क्रम १.	५११३६
वैसारिण १.	४११४१	व्याकुल १. २. ३.	५११६८	व्युत्थान ३.	५११२०
वैहायस ३.	३७१८८	व्याकृति २.	५११३४	" ३.	७३३३१
वैहासिक २.	३७११७	व्याकोच १. २. ३.	३३३१९	व्युत्पन्न १. २. ३.	५११२२
वोरुखान १.	३७१०२	व्याघात १.	३३३४८	व्युप १. २. ३.	३६१३२
वोपाट ४.	८८१३	व्याघ्र १.	३४३३	व्युष्ट ३.	२११६८
वौक्षट ४.	८८१३	व्याघ्रक १. ३.	४३३४३	व्युष्टि १. २. ३.	३६१२६
वौषट ४.	८८१३	व्याघ्रनख ३.	३८१९९	" १. २. ३.	६१२३५
व्यंसक १. २. ३.	५११२४	व्याघ्रपाद् १.	३३३३८	व्यूढ १. २. ३.	५११८०
व्यक्त १.	५३३८	व्याघ्रपुच्छक १.	३३३६५	" १. २. ३.	५११८३
" १. २. ३.	६१५७२	व्याघ्राट १.	२३३१९	व्यूति २.	३१२३२
व्यङ्गा २.	३६१५०	व्याज १.	३६१९५	व्यूह १.	५११२२
व्यजन ३.	४३३५५	" १.	६११५४	" १.	६११५६
व्यञ्जक १.	३११९८	व्यादीर्णस्य १.	३४११	व्योकार १.	३११३६
व्यञ्जन १.	३३३२३	व्याध १.	३११३८	व्योमकेश १.	१११४१
" १. ३.	३६३३६	व्याधाम १.	१२११३	व्योमगुण १.	१११११
" १. २. ३.	३६१९३	व्याधि १.	४११३८	व्योमधारण १.	३२३३५
" ३.	४३३८५	" १.	८६१८	व्योमनू ३.	२११११
" ३.	४४१०३	व्याधित १. २. ३.	४४१४४	" ३.	५११३१
" ३.	७३३३०	व्यापन १.	५१२४१	व्योमसम्भवा २.	३४१४४
व्यतिकर १.	८११४१	व्यापलण्डिका २.	४४१८४	व्योमाख्य ३.	३२११५
व्यतिहार १.	५१२६	व्यापादन ३.	३७२१५	" ३.	३६१६१
व्यत्यय १.	५१२५	व्याप्य १.	४४१३८	व्योष ३.	३८१८०
व्यत्यास १.	५१२६	व्यप्त्र १.	२११२७	व्रज १.	३११३१
व्यथा २.	३६१८७	व्याम १.	४४१८२	" १.	५११११
व्यध्व १.	३११५०	व्यायत १. २. ३.	७४१२४	" १.	६११५४
व्यन्तर १.	४११९	व्यायाम १.	४४१८२	व्रण १. ३.	३७२१७
व्यय १.	३७३४४	" १.	७११६८	व्रणघ्नी २.	३३१५७
व्यर्थ १. २. ३.	५११२९	व्यायोग १.	३११०१	व्रणवन्ध १.	४४१४०
व्यलीक ३.	५१२३५	व्याल १.	३६१७३	व्रत ३.	३१११३
" १. २. ३.	७१५७९	" १.	४११४	" १ व.	३११३२
व्यवच्छेद १.	३७१९२	" १. २. ३.	६१५७४	" १. ३.	३६११४
व्यवधि १.	१२३६३	व्यालगाहिन् १.	४११२५	" १. ३.	३६१३६
व्यवहार १.	३८११५			" १.	६३३३१

व्रतति]

वैजयन्तीकोषः

[शतभिषज्

व्रतति २.	३१३७	शकुन ३.	८१३१६	शङ्ख ३.	५११२८
व्रतती ३.	३१३७	शकुनि १.	२१३३	" १. ३.	६५५८३
व्रतसङ्ग्रह १.	३१६८७	शकुन्त १.	२१३३	" १.	८६११४
व्रतिन् १.	३१६७	" १.	२१३३२	शङ्खक १.	४४१९६
" १.	३१७१०	" १.	७११७४	शङ्खकार १.	३१५६३
व्रश्चन १.	३१९३५	शकुन्ति १.	२१३३	शङ्खद्वीप ३.	३१११४
व्राजिक ३.	३१६१४८	शकुलाक्ष १.	३१३२००	शङ्खनख १.	४११५६
व्रात १.	३१५१	शकुलादनी २.	३१३१९७	शङ्खपात्र ३.	३१६६२
" १.	३१५५९	" २.	३१८८३	शङ्खपाल १.	४१११२
" १.	५१११	शकुलार्भक १.	४११४५	शङ्खमुख १.	४११५३
व्रात्य १.	३१५५९	शकुलिन् १.	४११४१	शङ्खिनी २.	३१३११६
" १.	३१५१०२	शकृत् ३.	४१११८	शची २.	११२११
" १.	३११११९	शक्ति २.	१११३६	शचीपति १.	११२३
व्रीड १. २.	८१९२७	" २.	३१६१६१	शचीबल १.	३१९६६
व्रीला १.	३१६१९४	" २.	३१७५	शठ ३.	३१२३२
व्रीहि १ व.	३१३२३	" २.	६१२३८	" १.	३१३३३
" १.	३१८३१	शक्तिपाणि १.	१११५५	" १.	३१३३७
" १.	३१८३२	शक्र १.	६११५७	" १.	३१३७६
" १.	३१८६३	शक्रवृत्त १.	८१११८	" १.	३१८४१
" १.	८११५७	शक्राख्य १.	३१३७३	" १. २. ३.	५१४२२
व्रीहिकृक्क १.	३१८४०	शक्ल १. २. ३.	५१४४४	शण्डपुष्पिका २.	३१३९८
व्रीहिन् १. २. ३.	५१४११९	शकरी २.	२११२१	शण्ड १.	३१८१३९
व्रीहिमत् १. २. ३.	५१४११९	" २.	७१२२५	शण्डिली २.	१११५९
व्रीहेय १. २. ३.	३१८१९	शङ्कर १.	१११३९	शत ३.	५११२८
श		शङ्का २.	६१२३८	" ३.	५१३१
शंसा २.	२१४३५	शङ्किल १.	३१७८७	शतकोटि १.	११२१३
" २.	६१२४१	शङ्कु १.	११२४१	शतध्वनी २.	३१७१६९
शंस्य १.	११२२४	" १.	२१३६	शततम १. २. ३.	५११२३
शक १.	३१४७४	" १.	३१७८५	शतद्रु २.	४१२२७
" १.	३१५७४	" १.	३१७१६७	शतधारक ३.	११२१३
" १.	६१५९१	" १.	४१४६१	शतधृति १.	१११८
शकट १.	३१३२०९	" १.	५११३१	शतपत्र ९.	२१३३३
" १. ३.	३१७१२५	" १.	६११५९	" ३.	४१२३८
शकटाविल १.	२१३१२	" १. ३.	८१९३०	शतपदी २.	४१३३३
शकल १. ३.	४१४५६	शङ्कुकर्ण १.	८११४४	शतपर्व ३.	३१८९२
" ३.	७१३३४	शङ्कुमूली २.	२११७३	शतपर्वन् २.	३१३१४९
शकलज्योतिस् १.	४१११८	शङ्कुला २.	३१३१७०	" १.	३१८५४
शकुटा २.	३१७७९	शङ्ख १.	११२६०	" ३.	४१२४३
शकुन १.	२१३३	" १.	३१२४१	" १. २. ३.	८१५२३
		" १.	३१८१०१	शतप्रास १.	३१३१९२
		" १. ३.	४११५५	शतभिषज् १.	२११४३

[शतभीरु]

शतभीरु १.	३३११८३
(शीतभीरु)	
शतमन्यु १.	११२५
शतमान ३.	५११४५
” ३.	५११५०
शतमुखी २.	१११६०
शतमूर्धन् १.	३११४८
शतमूली २.	३३११४२
शतवीर्या ३३१२३३	
शतवेधिन १.	३८११३३
शतहृदा २.	२१२४
शताङ्ग १.	३१७१२४
शतानन्द १.	१११८
” १.	११११४
” १.	३१६१५६
शतावरी २.	३३११४२
शतावर्त १.	११११४
शतावर्ता २.	२१२४
शत्रु १.	३१७३९
” १.	३१७४०
” १. २.	८१९४७
शत्रुघ्न ३.	३१७१५७
शनक १.	३१५३०
शनकैः(-स्) ४.	८१८१३६
शनि १.	२११३६
शनैः(-स्) ४.	८१८१३६
शनैश्चर १.	२११३५
शपथ १.	७११७३
शफ १.	३१४१९९
शफरी २.	३३१९४
” १. २.	४११४४
शबर १ व.	३११३४
” १.	३१५२३
शबल १.	५३१२३
शबली २.	३१४४४
शब्द १.	२१४१
” १.	५३११७
” १.	६११५९
शब्दकार १. २. ३.	
	५१४४८
शब्दग्रह १.	४१४९२

शब्दानुक्रमणिका

शब्दन १. २. ३.	५१४४८
शम् ४.	८१८११७
शम १.	३११७६
” १.	५१२२७
शमथ १.	५१२२७
शमन १.	११२३५
” ३.	३१६१९४
” १.	७१५८७
शमल ३.	४१४११८
” ३.	७३३३४
शमित १. २. ३.	
	५१४११४
शमिता २.	४३३६८
शमी २.	३३३८९
” २.	३१८६५
शमीधान्य ३.	३१८६२
शमीफला २.	३३११४८
शम्फली २.	४१४२५
शम्ब १.	६११५८
शम्बर १.	३१४१३
” १.	४११४२
” १. ३.	७१५८४
शम्बरारि १.	१११२८
शम्बरी २.	३३१११३
शम्बल १. ३.	३१९७
शम्बाकृत १. २. ३.	
	३१८२३
शम्बूक १.	४११५७
” १.	४३३६७
” १.	४३३६७
शम्बूकावर्त १.	४११३०
शम्भर १.	३३११८८
शम्भल १.	३१७९६
शम्भु १.	६११५७
” १.	८१६१
शम्या २.	३१८२८
शम्याक १.	३३३४८
शय १.	४११२८
” १.	४३११२८
” १.	४११२३
शयण्डक १.	४११२६

[शरि]

शयथ १.	७१५८५
शयन ३.	४३११६५
” ३.	४३११६७
” १. ३.	७१५८५
शयनीय ३.	४३११६५
शयान १.	४११२८
शयालु १.	३१४३८
” १. २. ३.	५१४३९
शयित १. २. ३.	५१४३९
शयीचि १.	११२६
शयु १.	४३११९
शय्य ३.	४३११८
शय्या २.	४३११६५
” २.	६१२४१
शर १.	११२५४
” १.	३३३२२८
” १.	३१७१८०
” १.	३१८१४७
” १.	६११५८
” १.	८१६१६
शरज १.	१११५४
शरजालक	३१७१८३
शरण ३.	८३११७
शरद् २.	२११८९
” २.	२११९१
” २.	६१२३८
शरदण्ड १ व.	३११३९
शरभ १.	३१४३२
शरभा १.	३१६५१
” २.	३१७५२
शरण्य १. २. ३.	
	३१७१९४
” १. २. ३.	८१९३२
शराटिका २.	२३१११
शरादान ३.	३१७१८९
शरायुध ३.	३१७१७३
शराह १. २. ३.	५१४४२
शराव १.	४३१५९
शरावती २.	४२३३०
शरासन ३.	३१७१७२
शरि १.	३१४७३

शरि १.	३१४७४	शशादन १.	२३३३०	शाक्य १.	१११३४
(चरि)		शशिन् १.	२११२४	शाक्यसिंह १.	१११६४
शरीर ३.	४४५५२	शशिभूषण १.	१११३९	शक्र १.	३१४५३
शरु १.	२३३२०	शशिशेखर १.	१११३९	शाख १.	१११५७
शर्करा २.	३१८१३४	शशोर्ण ३.	३१८११८	शाखा २.	३३३१५
” २.	७२३२६	” ३.	८१२२२	” २.	६२३३९
शर्करिल १. २. ३.	३११४४	शश्वत् ४.	८१७२८	शाखापुरी २.	४३३१
	३११४४	” ४.	८१८६	शाखामृग १.	३१४३९
शर्मन् ३.	३१६१८९	” ४.	८१८११	शाखारण्ड १. २. ३.	३१६१३
शर्व १.	१११४०	” ४.	८१८१२	शाखस्थि ३.	४१४११६
शर्वर १. २.	७५८४	शङ्कुली २.	४३३७५	शाखि १ ब.	३११२७
शर्वरी २.	२११५७	” २.	७२३२६	शाखिन् १.	३३३५
” २.	८६५	शप्प ३.	३३३२३५	शाखोट १.	३३३७७
शर्वाणी २.	१११५८	शस्त १. २. ३.	५४१०६	शाङ्खिक १.	३१९१७
शल १.	१११५४	शस्त्र ३.	३६१११	शाट १.	४३३२७
” ३.	३१४३७	” ३.	३१७१५७	” १. २.	८१२२६
” १.	३१४६६	” ३.	३१८२६	शाटिका २.	४३३२७
शलक १.	२३३४	” ३.	६३३३३	शाटी २.	८१२२६
शलभ १.	२३३४३	शस्त्रक १.	३१८१३१	शाडव १.	५३३२८
शलल ३.	३१४३७	शस्त्रक्षार १.	३१८१३१	शाडविक १.	५३३४०
” २. ३.	३१४३७	शस्त्रमार्ज १.	३१८१५	शाण १.	३१९१९
शलाका २.	३१७१९९	शस्त्रमुख ३.	३१७१८६	” १.	५११४७
” २.	३१९४१	शस्त्राख्य ३.	३२३३३	” १.	५११६३
शलाट १.	५११६१	शखिका २.	३१७१६३	शाणी २.	४३३३०
शलाट्ट १. २. ३.	३३३१०	शाक १.	३३३७६	शात ३.	३६१८९
शलक ३.	६३३३२	” १.	३१८६२	शातकुम्भ ३.	३२३२०
शलमलि १. २.	३३३९०	” १. ३.	४३३९०	शातर १.	२११८२
शल्य १.	३१४३७	शाकट १. २. ३.	३१४५८	शान्नव १.	३१७४१
” १. ३.	३१७१६७	” १.	५११६१	शाद् १.	३३३२३५
” १. ३.	३१९४१	” ३.	५११६१	” १.	३१८२६
शल्यक १.	३३३६३	शाकटीन १.	५११६१	” १.	६५५५७
शल्लक १. २.	८१२२६	शाकफला २.	३३३१७०	शाङ्गल १. २. ३.	३११४३
शव १. ३.	३१७२१६	शाकशाकट १. २. ३.	३१८२०	शानक १.	२११८२
शवयान ३.	३१७२१६	शाकशाकिन १. २. ३.	३१८२०	शान्त १.	३३३४९
शवर १.	३३३५२	शाकुनिक १.	३१९४०	” १.	३१८७५
शवशीर्षक १.	३३३१०७	शाकोल १.	३३३५२	” १. २. ३.	५४११४
शश १.	३२३१५	शाक्तीक १. २. ३.	३३३५२	शान्ति २	५२३२७
” १.	३३३३१			” २.	६२३३९
शशमृत् १.	२११२४			शान्तिक ३.	३३३२०
शशलोमन् ३.	३१८११८			शान्तिगृह ३.	४३३२०
शशाङ्क १.	२११२७				

[शान्तियात्रा]

शब्दानुक्रमिका

[शितिचन्दन

शान्तियात्रा २.	३१६५६	शालाजिर १.	५३१५९	शिखर ३.	३१२८
शाप १.	२१४३२	शालि १.	३८८३२	” ३.	३३१५
शापटिक १.	२३३३७	शालिजात १.	३४३३५	शिखरिणी ३.	४३१९८
शाय ३.	५११६	शालियष्टिक १.	३८३३४	शिखरिन् १.	२३१५
” १. २. ३.	५४३२	शालिहोत्रिन् १.	३७१९०	” १.	८११५८
शाम्बरी २.	३७१२२	शालीन १.	३३११५६	शिखरी २.	३३१११५
शार १.	३१९६१	” १.	३६१४१	शिखा २.	१२१२९
” १.	५३१९९	” १. २. ३.	५४११७	” २.	३३११५
” १.	५३१२५	शालु १.	४११४७	” २.	४४१६८
” १. २. ३.	६५१९१	शालुक ३.	४२१४४	” २.	४४११०४
शारद १.	३३१४७	” ३.	७३३३४	” २.	६२१४०
” १.	३८३३६	शालर १.	४११४७	” २.	८२११५
” १. २. ३.	५४१८९	शालेय १. २. ३.	३८११९	शिखावत् १. २. ३.	३३१६
” १.	७५१८६	शाश्वत १. २. ३.	५४१८८	शिखावल १.	२३३३६
शारदी २.	३३११९७	शाकुलिक ३.	५११११	शिखिग्रीव १.	३२१४२
शारि २.	२३१२०	शासन ३.	३७१४७	शिखिन् १ व.	२११३७
” १.	३९१६०	” ३.	७३३३५	” १.	२३११३
” १. २.	६५१८८	शासि १.	८१११२	” १.	२३३३७
शारिका २.	३९१३६	शास्ति १.	८१११२	” १.	६११६०
शारिवा २.	३३११३९	शास्तृ १.	१११३२	शिखिवाहन १.	१११५५
शार्कर १. २. ३.	३११४४	” १.	३७११५९	शिखीन्द्र १.	३३१९४
” १.	३९१४९	शास्त्र ३.	६३३३३	शिमु १.	३३१५६
शार्ङ्ग ३.	११११७	शास्त्रविद् १. २. ३.	४४११४४	” १.	४३१९०
” १.	२३१२४	” १. २. ३.	५४३३१	शिमुज ३.	३८१९०
” ३.	६३३३३	शिशपा २.	३३१९१	शिक्षिन् ३.	४४१०३
शार्ङ्गवत् ३.	३११९	शिशुमार १.	४११५४	शिङ्गाण १.	४४१९२
शार्ङ्गाष्टा २.	३३११११	शिक्ष्य ३.	३९१७	” ३.	४४११०३
” २.	३३११४४	शिवियत १. २. ३.	५४१११६	शिङ्गाणिन् १. २. ३.	४४१९१
” २.	३३११७९	शिक्षा २.	३६१२८	शिक्षित ३.	२४१९
शार्ङ्गिन् १.	१११११	शिक्षित १. २. ३.	३७१४८	शिक्षिनी २.	४३११४५
शार्दूल १.	३४११	” १. २. ३.	५४११९	” २.	७२१२६
” १.	३४१३	शिक्षण्ड १.	२३३३९	शिण्डाकी २.	४३३८४
शार्वर ३.	२११६२	” १.	४४११०२	शित १. २. ३.	६५१८३
” १. २. ३.	७५१८७	शिक्षण्डक १.	४४११०२	शितशिव ३.	३८१९६
शार्वी २.	२११५	शिक्षण्डिक १.	२३३३३	” ३.	३८१२०
शाल १.	३३११५६	शिक्षण्डिन् १.	२३३३७	शितशूक १.	३८१५१
शाला २.	३३३१५	शिक्षण्डिनी २.	८२१९	शिति १. २. ३.	६४११७
” २.	३८१८८	शिक्षण्डी २.	४४११०२	शितिकुम्भ १.	३३११९२
” २.	६३३३७			शितिचन्दन ३.	३४३३६
शालाक ३.	३८१३३६				
शालाचा २.	२११५				

शितिसारक]

वैजयन्तीकोषः

[शीरा

शितिसारक १. ३३१५१	शिला २. ४३१४०	शिवेष्ट १. ३३१८३
शित्युट १. २३१४३	" २. ४३१४५	शिशिर १. २११८७
शितिल १. २. ३. ३३१४६	" २. ४३१४६	" १. ५३१७
शितिली २. ४१३६	शिलाजनु ३. ३३१४६	शिशु १. २. ३. ५३१२
शितिविष्ट १. २. ३. ४३१४७	शिलाह्वय ३. ३३१४६	शिशुक १. ७११७३
" १. २. ३. ५३१४५	शिली २. ४११५९	शिशुकृच्छ्र ३. ३३१४७
" १. २. ३. ८५१४८	" २. ४३१४०	शिशुकृच्छ्रातिकृच्छ्र ३. ३३१४८
शिफा २. ३३१४२	शिलीमुख १. ३३१४८१	शिशुत्व ३. ४३१४४
" २. ४३१४०	" १. ८११४४	शिशुप्रिय ३. ४३१४५
" २. ३३१४५	शिलोच्चय १. ३३१४७	शिशुवर्जिता २. ४३१४०
शिविका २. ३३१४६	शिलोद्भव ३. ३३१४८	शिश्र ३. ४३१४१
शिविर ३. ४३१४०	शिल्प ३. ३३१४५	शिश्विदान १. २. ३. ३३१४२
शिव्या २. ३३१४५	शिल्पा २. ४३१४५	शिष्टि २. ३३१४८
(शिव्या)	शिल्पिन् १. ३३१४७	शिष्य १. ३३१४५
शिव्यक १. ३३१४७	शिल्पशाला २. ४३१४२	" १. २. ३. ८११४४
शिर १. ३३१४८	शिव १. १११४१	शीकर १. ३. २३१४७
" १. ३३१४९	" १. ३३१४९	" १. ५३१४६
शिरःपीठ १. ४३१४४	" ३. ३३१४५	शीघ्र १. १३१४०
शिरस् ३. ३३१४५	" १. ३३१४६	" १. २. ३. ५३१४२
" ३. ४३१४५	" ३. ३३१४७	शीघ्रगमन ३. ५३१४१
" ३. ८३१४१	" ३. ५३१४३	शीत १. ३३१४१
शिरसिज १. ४३१४७	" १. २. ३. ६३१४४	" १. ५३१४६
शिरसिसिच २. ४३१४२	शिवङ्कर १. ३३१४८	" १. २. ३. ६३१४३
शिरस्थ १. २. ३. ३३१४७	" १. २. ३. ५३१४५	शीतक १. २. ३. ५३१४५
(शिरस्थ)	शिवताति १. २. ३. ५३१४५	शीतकङ्क २. ३३१४६
शिरस्य ३. ४३१४०	शिवपार्श्व १. १३१४२	शीतकृच्छ्रक ३. ३३१४७
शिरीष १. ३३१४२	शिवपुरी २. ४३१४७	शीतपङ्क १. ३३१४७
शिरोगेह ३. ४३१४३	शिवप्रिय १. ३३१४९	शीतपल्लव १. ३३१४३
शिरोधरा २. ४३१४४	शिवमल्लिका २. ३३१४९	शीतल १. १३१४५
शिरोधि २. ४३१४४	शिवव्रतिन् १. २. ३. ३३१४३	" १. ३३१४२
शिरोरत्न ३. ४३१४६	शिवा २. १११४९	" ३. ४३१४४
शिरोरुह २. ४३१४८	" २. १११४८	" १. ५३१४६
शिरोरुहा २. ३३१४२	" २. ३३१४९	शीतला २. ३३१४३
शिरोवर्तिन् १. २. ३. ३३१४०	" २. ३३१४७	" २. ३३१४४
शिरोऽस्थि ३. ४३१४५	" २. ३३१४७	शीघ्र ३. ३३१४५
शिल ३. ३३१४२	" २. ३३१४७	" १. ३३१४७
शिला २. ३३१४८	" २. ३३१४७	शीन १. २. ३. ४३१४५
" २. ३३१४२	" २. ६३१४४	शीरा २. ३३१४९

शीरी २.	३३१२२८	शुकसृष्टा २.	३३११७८	शुनी २.	३३१७१
शीर्णक १. २. ३.	३३११२९	शुक्रा २ व.	२११२१	शुभ १.	५३११४३
शीर्णपर्णाशिनू १. २. ३.	३३११२९	शुक्ल १.	२११७९	" १. २. ३.	६३११७
शीर्णवृन्त १.	३३११७१	" ३.	४३१११	" १.	८६११६
शीर्ष ३.	३३११०७	" १.	५३११०	शुभंयु १. २. ३.	५३१२९
" ३.	४३१८५	शुक्लकार ३.	४२१४७	शुभक १.	३३१४१
शीर्षक ३.	३३११५६	शुक्लधातु १.	३३११३	शुभदती २.	२११९
शीर्षण्य ३.	३३११५६	शुक्लपुष्प १.	३३१६१	शुभा २.	३३१४१
" ३.	४३११०१	" १.	३३११९१	शुभान्वित १. २. ३.	५३१२९
शीर्षत्राण ३.	३३११५६	शुक्लहरित १.	५३१२४	शुभ्र ३.	३३१२४
शील ३.	६३१३३	शुक्लापाङ्ग १.	२३१३६	" १.	५३११०
शीवाल ३.	४२१४९	शुक्ल १. २. ३.	३३११७	" १. २. ३.	६३११८
शुक १.	२३१२	शुक्ला २. १. ३.	८११३७	शुभ्रि १.	६५१२२
" १.	२३१२५	शुच् २.	३३११८३	शुक्क १. ३.	६५१८९
" ३.	३३१८९२	शुचि १.	२११८४	शुक्क ३.	३३१२४
शुककूट १.	३३१५८	" १.	२११८८	" ३.	६३१३४
शुकनास १.	३३११५७	" १.	४३११३५	शुक्का २. ३.	३११३०
शुकनासक १.	१३१६८	" १. २. ३.	५३१६५	(शुल्पा)	
शुकपोत्र १.	४३११७	" १. २. ३.	६५१८५	शुश्रूपा २.	३३१३८
शुक्त ३.	४३१८२	शुचिकर्णिक ३.	४२१४०	शुश्रूपित १. २. ३.	५३११०५
" ३.	४३१८५	शुण्ठ १.	४३१८९	शुष १.	३३१५०
" १.	५३१२६	शुण्ठि २.	३३१७५	शुषिका २.	३३११८१
" १.	५३१२९	शुण्ठा २.	६२१४०	शुषिल १.	१२१४७
" १. २. ३.	६३११८	" २.	३३१५३	शुष्कगोमय १.	३३१६०
शुक्तित्तकपायक १.	५३१३५	शुण्ठापान ३.	३३१६२	शुष्कमांस ३.	४३१८९
शुक्ति २.	३३१८१	शुण्डाल १.	४२१२७	शुष्मन् १.	१२११५
" २.	३३११०१	शुतुद्री २.	४३१८५	" ३.	३३१२१०
" २.	३३११३२	शुद्ध ३.	५३१६५	शुष्मि १.	१२१५०
" २.	४३१५६	" १. २. ३.	६५१९१	शूक १.	६३१५८
" २.	४३१५८	" ३.	८३११८	" १.	३३१६५
" २.	५३१५०	शुद्धजड १.	३३१७२	शूकक्रीट १.	४३१३३
" २.	६२१३७	(शुद्ध, जड)		शूकधान्य ३.	३३१६२
शुक १.	१२१२३	शुद्धान्त १.	४३१३६	शूकशिखि २.	३३१२२९
" १.	२११३४	" १.	७३१७४	शूद्र १.	३३११७
" १.	२११८४	शुद्धि २.	३३१८९	" १.	३३१११
" १.	३२११९	शुन १.	३३१६९	" १.	३३१११
" १. २. ३.	६५१८६	शुनक १.	३३१६८	शूद्रकुण्ड १.	३३१६३
शुकशिष्य १.	१३११०	शुनासीर १.	१२११	शूद्रा २.	४३१२३
		शुनि १.	३३१६९	शूद्री २.	४३१२२

शून्य १. २. ३. रा१२०	शृङ्गिण १. ३१४६४	शैवल १. ४१२४९
" १. २. ३. ३१४४५	शृङ्गिणी २. ३१४४१	शैवल्लिनी २. ४१२२३
" १. २. ३. ५१४८७	शृङ्गिन् १. ३१४१९	शैवाल ३. ४१२४९
शूर १. २. ३. ३१७२८	" १. ३१४५२	शैशव ३. ४१४५४
" १. २. ३. ३१७१४७	" १. ३१७९६	शोक १. ३१६१८३
" १. ३१८३३	" १. ४११४४	" १. ३१९७६
" १. २. ३. ६१५९२	" १. ८११६०	शोचिष्केश १. ११२१५
शूरसेन १ व. ३११२४	शृङ्गिवेर ३. ३१२१४	शोचिस् ३. ६१३३४
शूरसेनि १ व. ३११२४	" ३. ३१८७६	शोण १. ३१३६८
शूर्प १. ३. ४१३६५	शृङ्गी २. ३१८१०	" १. ३१७१००
" १. ३. ५११५६	" २. ४११४४	" १. ५१३१७
शूर्पकर्ण १. ३१७६१	शृङ्गीकनक ३. ३१२२२	" १. ५१३५१
शूर्पकारि १. १११२८	शृत १. २. ३. ४१३९५	शोणरत्न ३. ३१२३९
शूर्पावर ३. ५११५५	शेखर १. ४१३१५३	शोणिक १. ५१३३१
शूल १. ४१४१३७	शेफ १. ४१४६१	शोणित ३. ४१४१०६
" १. २. ६१५९२	शेफस् ३. ४१४६१	" ३. ५१३५१
शूलनाशक ३. ३१८१२५	शेफालिका २. ३१३१८६	" ३. ८१६८
शूलाकृत १. २. ३. ४१३९४	शेमुषी २. ३१६१६३	शोथ १. ४१४१२२
शूलिक १. ३१४३१	शेवधि १. ३. ११२६०	शोथशत्रु १. ३१३२०९
" १. ३१५५	शेवाल ३. ४१२४९	शोधन १. ३१३४१
" १. ३१५१२	शेष १. १११३०	शोधनी २. ४१५२२
" १. ३१५६९	" १. ४११३	शोधित १. २. ३. ५१४६६
" १. ३१५७३	" १. २. ३. ६१५८७	शोध्य ३. ४१४१०५
शूलिका २. ३१८१२३	शैच १. ३१६२४	शोफ १. ३. ४१४१२२
शूलिन् १. १११४१	शैख १. ११२८७	शोफघ्नी २. ३१३१४५
शून्य १. २. ३. ४१३९४	" १. ३१५५३	शोभ १. ३१६२३९
शृङ्खल १. २. ३. ३१७८३	" १. ३१५१००	शोभन ३. ३१३३२
" १. २. ३. ४१३१४६	शैखरिक १. ३१३११५	" १. २. ३. ५१४१३५
शृङ्खलक १. ३१४६८	शैखालीक १. ३१६१०७	शोभा २. ४१३१४९
शृङ्ग ३. ३१२८	शैमव ३. ३१६२२	शोभाजन १. ३१३५६
" १. ३. ६१५८७	शैनि १. १११२६	शोष १. ४१४१२४
शृङ्गवर्जित १. ३१४७३	शैव्या २. ४१२६७	शोषु १. ३१६१८१
शृङ्गवाद्य ३. ३१९१२५	शैल १. २११८६	शौक ३. ५११६
शृङ्गाट १. ३११५१	" १. ३१२१	शौक्तिकेय ३. ४११५७
" १. ३१७५१	" १. ८१६४	शौक्लिकेय १. ४११२४
शृङ्गाटक १. ४१२४७	" १. ८१९११	शौच ३. ३१३२०९
शृङ्गार १. ३१७८६	शैलमूल ३. ३१३२०३	शौटीर्य ३. ३१६१६९
" १. ३१९७५	शैलालिन् १. ३१९६२	शौण्ड १. २१३१४
" १. ४१३१६९	शैलप १. ३१९६२	" १. २. ३. ५१४३७
शृङ्गारगर्व १. ३१६१६९	शलेय ३. ३१२४१	
	" ३. ३१८१६	

[शौण्ड]

शब्दानुक्रमणिका

[श्रेष्ठिन्]

शौण्ड १. २. ३.	६५१९०	श्रद्धा २.	३६१८०	श्रीपर्णी २.	३३१५८
शौण्डिक १.	३५१४४	" २.	६२३३८	" २.	३३१५८
" १.	३५१४४	श्रद्धालु १. २. ३.	५४३३७	" २.	७५१८६
शौण्डी २.	३८१७६	श्रन्थन ३.	५२३३९	श्रीपुष्प ३.	४२३४१
" २.	६५१९०	श्रपणी २.	३६१९००	श्रीफल १.	३३३३०
शौद्धोदनि १.	१११३४	(श्रयणी)		श्रीफली २.	३३१११०
शौभिक १.	३६१९०३	श्रपाच्य १.	७११७४	श्रीवेर ३.	३३२०२
शौरि १.	१११२६	श्रमण १. २. ३.	५४१५५	श्रीमकुट ३.	३२११९
शौर्य ३.	५११५६	श्रमणी २.	३३१२५	श्रीमत् १ ब.	२१३३७
शौर्य ३.	३७२१०	" २.	३३११०	" १.	२३३२५
शौर्यकरण ३.	५२११६	श्रमस्थान ३.	३७१९४	" १.	३३३५३
शौलिक १. २. ३.		श्रयण ३.	४२३३३	" १.	३३३६०
	५४१५०	श्रवण ३.	२११४०	" १.	३३३६९
शौलिक १.	३५११५	" ३.	४४१९३	" १.	३४१५३
श्च्योति २.	५२३३४	श्रवस् ३.	४४१९२	श्रील १. २. ३.	५४१५६
श्मशान ३.	३११४८	श्रविष्ठा २ ब.	२११४०	श्रीवत्स १.	१११११
श्मश्रु ३.	४४१०३	श्राणा २.	४३३८०	" १.	११११७
श्मश्रुल १. २. ३.	५४१९	श्राद्ध ३.	३६६६४	श्रीवत्सपिण्याक १.	
श्याम १.	३३३४५	" १. २. ३.	५४३३७		३८१९०९
" ३.	३८१७९	श्राद्धदेव १.	१२३३४	श्रीवत्साङ्ग १.	१११११
" १.	५३१११	श्रान्त १. २. ३.	५४३३६	" १.	८११४५
" १.	५३११४	श्रामणी २.	३३१२५	श्रीवास १.	३८१९०९
श्यामकङ्कु २.	३८१५६	श्राय १.	५२३३३	श्रीवृत्त १.	३३२२७
श्यामल १.	५३१११	श्रावक १.	३५११११	" १.	८६१९९
श्यामलक १.	३३३२६	श्रावण १.	२११८५	श्रीवृत्तकिन् १.	३७१९२
श्यामवल्ली २.	३८१८०	श्रावणिक १.	२११८४	श्रीवेष्ट १.	३८१९०९
श्यामा २.	२३३१९	श्रावणी २.	२११७६	श्रीसंज्ञ ३.	३८१९०३
" २.	३३३३३८	" २.	३८१९३	श्रुत १. २. ३.	६५१८९
" २.	३८१७७	श्री २.	३६१९१	श्रुतकर्मन् १.	२११३६
" २.	४४१८	" २.	८२१९९	श्रुति २.	३६१२७
" २.	६२३३९	" २.	८११२	" २.	४४१९३
श्यामाक १.	३८१५६	श्रीकण्ठ १.	१११३८	" २.	६२३४०
श्यामाङ्ग १.	२११३२	श्रीकर्णायक १.	२३३४०	श्रूपा २.	३३११५४
श्यामाङ्गी २.	४२३२६	श्रीकृच्छ्र ३.	३६११४०	श्रेणि २.	६५१९०
श्यामिका २.	३४११९	श्रीखण्ड १.	३८१११३	श्रेयस् १. २. ३.	५४११४३
श्याव १.	५३३१८	श्रीगर्म १.	३७१५५९	" १. २. ३.	८५३३२
" १.	५३३३१	श्रीघन १.	१११३२	श्रेयसी २.	३३१३१
श्येत १.	५३३१०	" १.	३८१३३९	" २.	८५३३३
श्येन १.	२३३१९	श्रीधर १.	११११२	श्रेष्ठ ३.	३२३२५
" १.	२३३३०	श्रीपति १.	१११११	" १. २. ३.	५४३६३
श्येना २.	२३३२०	श्रीपथ १.	४३३१६	श्रेष्ठिन् १.	३५१७१

[श्रोग]

वैजयन्तीकोषः

[पाण्मातुर]

श्रोग १. २. ३.	५४११४
श्रोगा २.	२११४०
श्रोगि २.	४४४६४
श्रोत्र ३.	४४१९३
श्रोत्रकान्ता २.	३८८९३
श्रोत्रिय १.	३६८०१
” १.	८१९४५
श्रौषट् ४.	८८८३
श्रौषि २.	३६१६६
श्रयाख्य ३.	३८१०९
श्रयूष १.	५३२८
श्लघ्न १.	५३१४
” १. २. ३.	५४१३६
श्लघ्नपत्रक १.	३४१९४
श्लघ्नवाच् १. २. ३.	५३१४४
श्लाघा २.	२४३५
श्लिङ्ग २. ३.	३६१९१
श्लीपद् १.	४४१३३
श्लेष्मन् १.	४४१२१
श्लेष्मफल १.	३३१५५
श्लेष्मल १.	३८८५३
” १. २. ३.	४४१४६
श्लेष्मसू १. २. ३.	४४१४६
श्लेष्मातक १. २.	३३१५५
श्लेष्मिन् १.	३३१५३
श्लोक १.	६११६०
श्वः (-स्) ४.	८८८९
श्वकण्टक १.	३१५५८
” १.	३१५१०६
श्वचण्डाल १.	३१५८
श्वदंष्ट्रा २.	३३११४२
” २.	३७१५१
श्वदयित ३.	४४११०९
श्वन् १.	३४१८६
” १. ५	८६१५
श्वनिश ३. २.	३१५३४
श्वपच १.	३१५३९
” १.	३१५४७
श्वपाक १.	३१५३८

श्वपाक १.	३१५५१
श्वपामन १.	३३११०७
श्वभीरु १.	३४१३७
श्वभ्र १. ३.	४११२
श्वयथु १.	४४१२२
श्ववृत्ति २.	३८८७
श्वशुर १.	४४१३०
” १ द्वि.	४४१४८
श्वशूर्य १.	७११७४
श्वध्रु २.	४४१३०
श्वश्रुश्वशुर १ द्वि.	४४१४८
श्वश्रेयस १. २. ३.	५४११४३
श्वसन १.	१२१४७
श्वसित ३.	३६१२०४
श्वस्तन १. २. ३.	५४१८९
श्वापद् १.	३४१७३
श्वाली १.	३४१७१
श्वविध् १.	३४१३७
श्वास १.	३६१२०४
श्वासहेति २.	३६१२००
श्वासा २.	३३१३३८
श्वित्र ३.	४४१२५
” १. २. ३.	५४११४४
श्वेत ३.	३८१३३९
” १.	५३११०
” १. २. ३.	६१५९२
श्वेतकन्द १.	३३१२०५
श्वेतकाक १.	२३११८
श्वेतचार १.	३८१२७
श्वेतच्छाण ३.	३८१४९
श्वेततण्डुल १.	३८१३२
श्वेतपिङ्गल १.	३४११
श्वेतबिन्दुका २.	५३११५
श्वेतमध्य १.	३३१२००
श्वेतमरिच ३.	३८१९०
श्वेतरक्त १.	५३११७
श्वेतशाल १.	३८१३३
श्वेतशिखिका २.	३८१४६
श्वेतसुरसा २.	३३११९९

श्वेता २.	३१५५०
श्वेत ३.	३११९
श्वोववीयस ३.	५४११४२
ष	
पट्क ३.	३७११०
पट्कर्मन् ३.	३६१६३
पट्पद १.	२३१४३
पट्सस १. २. ३.	५११२६
पडभिज्ञ १.	१११३२
पडश्रा २.	३३११११
” २.	३३११७७
पडानन १.	१११५६
पडपण ३.	३८१८१
पडगुण १.	३७१६
पडग्रन्थ १. २.	७११८७
पडग्रन्था २.	३३११९८
पड्ज १.	३११३२२
पड्द १. २. ३.	३४१५७
पड्स १.	५३१४५
पडसासव १.	४४११०४
(पडसावस)	
पण्ड १.	३४१५३
” १.	३६१२२
” १.	३७१२३
” १.	४४१३
” १. ३.	५११५
” १.	६११६०
पण्डतायोग्य १.	३४१५५
पण्माससङ्ग्रहिन् १.	३६१२५
पष्टि २.	५११२७
पष्टिक १.	३८१३४
पष्टिक्य १. २. ३.	३८११९
पष्टितम १. २. ३.	५११२२
पष्टिहायन १.	३७१६४
पष्ट १. २. ३.	५११२१
पष्टकालिन् १. २. ३.	३६१२७
पष्टी २.	१११५९
पाण्ड १.	१११४६
पाण्मातुर १.	१११५६

षाण्मासी]

शब्दानुक्रमणिका

[सगोत्र

षाण्मासी २.	३१६१६६
षाष्टिक ३.	३१६१४६
षिद्ध १.	३१९७०
” १.	४४३९
षोडत् १. २. ३.	३१४५७
षोडशक १. २. ३.	८१५२४
षोडशाङ्गि १.	४११४७
षोडशावर्त १.	४११५६
षोडशाह १.	३१६१४४
पट्टम १.	६११६१

स

संयत् २.	३१८१२०६
संयत् १. २. ३.	५४१६७
संयता २.	३१८१६८
संयम १.	३१६१२३३
” १.	५१२३०
संयाज्य १.	३१६११२
संयाम १.	५१२३०
संयाव १.	४३१७३
संयुग १.	३१८१२०४
संयोग १.	५१२२६
संरम्भ १.	३१९८९
संराव १.	२१४४
संरोध १.	७११७६
संवत् ४.	८१८१०
संवत्सर १.	११२१९०
संवत्सरतम १. २. ३.	५१११९
संवदन ३.	२१४२५
संवनन ३.	३१६११७
संवर १.	४१२१०
” १.	४१२१२
संवर्त १.	३१३१७७
” १.	३१८४३
” १.	३१९७६
संवर्तक ३.	१११२४
” १.	११२२१
संवर्तिका २.	४१२४५
संवसथ १.	४३१२
संवादन ३.	२१४२५
संवाप १.	४३११६७

संवाल १.	२११२८
” १.	३१७८०
संवास १.	४३१४
” १.	४३३५
” १.	४३१६७
संवासन ३.	४३१२३
संवाहक १.	३१९१५
संवाहन ३.	५१२३०
संवित्ति २.	३१६१६४
” २.	७१२२९
संविद् २.	५१२३७
” २.	६१२४१
संवीक्षण ३.	५१२४२
संवीत १. २. ३.	५१२९६
संवृत १.	२११४५
संवृतता २.	३१६३५
संवेश १.	४३११६८
(सवोस)	
संव्यान ३.	४३११२२
संसप्तक १.	३१७१५२
संशय १.	३१६१७७
” १.	३१६१९७
(संश्रय)	
संशयालु १. २. ३.	५१२३८
संशित १. २. ३.	५१२९४
संश्रव १.	५१२३७
संश्लेष १.	५१२२६
संसद् २.	३१८१३
संसरण ३.	४३११६
” ३.	८३११२
संसिद्धि २.	७१२२९
संस्पृष्ट १. २. ३.	७१२२८
संस्पृष्टिन् १.	५१४५
संस्कार १.	३१६१२
संस्कृत १. २. ३.	७१२२८
संस्कृतस्तम्भ १.	३१६१०३
संस्कृति १. २.	७१५८८
संस्तर १.	४३११६५
” १.	७११७६

संस्तव १.	५१२३१
संस्ताव १.	३१६११०
संस्त्याय १.	७११७८
संस्था २.	३१६८७
” २.	३१८१५
” २.	६१२४३
संस्थाचर १.	३१७२७
संस्थान ३.	५१२२१
” ३.	७१३३७
संस्थित १. २. ३.	३१७२२०
संस्पृष्टमैथुना २.	३१६४८
संस्फोट १.	३१७२०४
संहतजानु १. २. ३.	५१४१०
संहतल १.	४१४७८
संहनन ३.	४१४५२
संहार १.	२११९५
संहारी २.	४३३३८
संहिता २.	७१२२८
संहृति २.	२१४३१
सकल १. २. ३.	५१४८५
सकाश १. २. ३.	५१४१३३
सकृत् ४.	८१८२९
” ४.	८१८६
सकृत्प्रज १.	२३११७
” १.	८११४५
सकृप १. २. ३.	३१९७९
सक्तु १.	४३१७०
” १. ३.	८१९३१
सक्तुफला २.	३१३८९
सक्थि ३.	३१७७९
” ३.	४१४५९
सखि १. २. ३.	३१७४३
” १. २. ३.	६१५९८
सखी २.	४१४२५
सख्य ३.	३१६१८७
सगर ३. २.	८१९३३
सगर्भ १.	४१४३४
सगोत्र १.	४१४५०

[सन्धि]

वैजयन्तीकोषः

[सदागति

सन्धि २.	४३११०३	सङ्गथ ३.	४४११४२	सतत १. २. ३.	५४११३०
सङ्कट १. २. ३.	५४११२६	सङ्ग्रह १.	७११७८	सतरत्न ३.	५१२१
सङ्कर १.	४३१५२	सङ्ग्राम १.	३१७२०६	सती २.	१११५९
सङ्करण १. २. ३.	३१७६२	सङ्ग्राह १.	३१७२००	” २.	३२११६
” १. २. ३.	३१७६५	” १.	४४१७९	” २.	४४१७
” १. ३.	३१९११	सङ्घ १.	५१११४	सतीनक १.	३१८४४
सङ्कर्षण १.	१११२२	सङ्घचारिन् १.	४१११४२	सतीर्थ १.	३१६२४
सङ्कलित १. २. ३.		सङ्घतिथ १. २. ३.	५१११९	सतृष् १. २. ३.	५४१३७
	५४११०९	सङ्घर्ष १.	७११७७	सतेरक ३.	२११८६
सङ्कल्प १.	३१६१७३	सङ्घात १.	४४११०९	सतिककु १.	३११५७
सङ्कीर्ण १.	३१५२	” १.	५११११	सत्त्व ३.	३१६१६२
” १. २. ३.	५४१११०	सङ्घातिका २.	३१६१०८	” ३.	३१९१७
सङ्कुचित १.	२१३६	सचिव १.	७११७५	” १. ३.	६१५९३
सङ्कुल १. २. ३.	२१४१७	सङ्गः (-प्) ४.	८१८१७	सत्त्वक १.	११२३८
” १. २. ३.	५४१११०	सज्ज १. २. ३.	३१७१४२	सत्पथ १.	३११४९
सङ्कुसुम १. २. ३.	५४१६८	सज्जन ३.	३१७१५९	सत्य ३.	१११४७
सङ्कोच ३.	३१८११७	सज्जना २.	३१७१७०	” ३.	३१६२०९
सङ्कन्दन १.	१२३	सञ्चय १.	५११११	” ३.	५११३
सङ्क्रम १.	३११५२	सञ्चर १.	४४१५३	” १. २. ३.	६१५९५
सङ्क्रा २.	१२१५१	सञ्चार १.	३१७२८	सत्यङ्कार १.	३१८७१
सङ्क्षेप १.	२१४४०	सञ्चारिका २.	३१७३६	सत्ययुग १.	२११९१
सङ्गथ ३.	३१८२०४	सञ्चारिणी २.	४४१२४	सत्ययौवन १.	१३१४
सङ्गथान ३.	५११३६	सञ्चारित १.	३१९३	सत्यलोक १.	३१६२०८
सङ्गथावत् १.	३१६२३४	सञ्चारिन् १.	३१९८१	सत्यवती २.	३३१४४
सङ्ग ३.	३१८१२१	सङ्घादनी २.	४४११०३	सत्यवतीसुत १.	१११३१
” ३.	५११६१	सङ्घेद्य ३.	४२३१	सत्याकृति २.	३१८७१
” १.	५१२२७	सङ्गवन ३.	४३२६	सत्याग्नि १.	३१६१५२
सङ्गत १.	२११६४	सङ्गावन ३.	३१८१४४	सत्यानृत ३.	३१८३
” १.	३१६१४७	सङ्गपन ३.	३१७२१५	सत्यापन ३.	३१८७१
” ३.	३१६१८६	सङ्गा २.	२११२३	सत्र ३.	३१६८५
सङ्गति २.	५१२२१	” २.	६१२४३	” ३.	३१६८५
सङ्ग्र १.	३१६१४७	सङ्गु १. २. ३.	५१११०	” ३.	६१३१५
” १.	५१२२७	सङ्ग्वर १.	१२३११	सत्रशाला २.	४३२६
सङ्गर १.	३१७२०५	सट १.	३१५७	सत्रा ४.	८१८१७
” १.	७१५९२	सट्ट ३.	४३१४४	सत्वर १. २. ३.	५४१२४
सङ्गव १.	२११६४	सट्टक ३.	४३१९८	सदस् २. ३.	३१८१४
सङ्गाली २.	३३३८९	सणि १.	५३१५५	सदसदात्मक ३.	३१६१६४
सङ्गीतक ३.	३१९७२	सण्डीन ३.	२३१५०	सदस्य १.	२१६८१
सङ्गीर्ण १. २. ३.	५४११०६	सत् ३.	१२३३८	” १.	३१८१३
सङ्गूढ १. २. ३.		” ३.	३१६२३४	सदा ४.	८१८१५

सदागति]

शब्दानुक्रमणिका

[ससल्ला

सदागति १. २।१।१५	सन्तान १. १।३।१४	सन्धिवन्धन ३. ४।४।११७
सदातन १. २. ३. ५।४।८८	„ १. ४।४।४०	सन्ध्या २. २।१।६९
सदाफल १. ३।३।२२१	„ १. ४।४।४९	सन्न १. २. ३. ५।४।१५
सदृश १. २. ३. ५।४।१२१	सन्तानिनी २. ३।८।१४७	„ १. २. ३. ६।४।१९
सदृश १. २. ३. ५।४।१२१	सन्ताप १. १।२।३१	सन्नद्ध १. २. ३. ३।७।१४२
सदृश १. २. ३. ५।४।१२१	„ १. ४।४।१३८	सन्नय १. ७।१।८२
सद्वेश १. २. ३. ५।४।१४१	सन्तापित १. २. ३. ५।४।९८	सन्नाम १. ५।२।२४
सद्विधि १. १।२।१८	सन्तोष १. ३।६।१६६	सन्नाह १. ३।७।१५३
(सधि)	„ १. ३।६।२०९	सन्नाहित १. २. ३. ५।४।९७
सद्विध ३. ४।३।१८	सन्दर्श १. ३।९।१७	सन्नाहय १. ३।७।६९
सद्यः (—स्) ४. ८।८।७	„ १. ४।३।१०	सन्निष्ठ १. २. ३. ५।४।१४१
सद्यःपाक १. ३।६।१९९	सन्दर्शित १. २. ३. ३।८।११	सन्निधि १. ७।१।८०
सद्यःप्रचालितान्नक १. ३।६।४२	सन्दर्भ १. ५।२।३९	सन्निपात १. ५।२।२६
सद्यस्तन १. २. ३. ५।४।८९	सन्दृष्ट १. ३।९।११३	सन्निभ १. २. ३. ३।९।२१
सद्रुचि १. २. ३. ३।७।४३	सन्दान ३. ३।९।२९	„ १. २. ३. ५।४।२२२
सधर्मचारिणी २. ४।४।३५	सन्दानिनी २. ४।३।२२	सन्निवेश १. ४।३।३१
सध्रीचीन १. २. ३. ५।४।९३	सन्दानभाग १. ३।७।७६	„ ३. ५।२।२१
सध्वयच् १. २. ३. ५।४।९३	„ १. ३।७।७९	सन्निहित १. २. ३. ५।४।१३३
सनकुमार १. १।३।७	सन्दाल १. २।१।५१	सन्न्यास १. ३।६।१४४
सनल १. २. ३. ३।१।४४	सन्दिता १. २. ३. ५।४।९७	सन्न्यासपत्नी २. ४।३।२८
सना ४. ८।८।६	सन्देष्ट १. २. ३. ५।४।३८	सपट्टी २. ४।३।४४
सनात् ४. ८।८।६	सन्देश १. २।४।२५	सपत्न १. ३।७।४१
सनातन १. १।३।७	सन्देशगिर २. २।४।३६	सपत्राकृति २. ५।२।३८
„ १. २. ३. ५।४।८८	सन्देशहर १. ३।७।२९	सपदि ४. ८।७।३३
„ १. २. ३. ८।५।२५	सन्देह १. ३।६।१७७	„ ४. ८।८।१
सनाभि १. ४।४।५०	सन्दोह १. ५।१।२	सपर्या २. ३।६।३९
सनालिङ्ग १. ३।५।२०	सन्द्रव १. ३।७।२११	सपिण्ड १. ४।४।५०
सनि १. २. ३।६।१२१	सन्द्राव १. ३।७।२११	सपीति २. ३।९।५३
„ १. ८।९।१०	सन्धा २. २।१।६९	ससकी २. ४।३।१४६
सनिष्ठीव १. २. ३. २।४।१८	„ २. ६।२।४४	ससजिह्व १. १।२।१७
सनीडक १. २. ३. ५।४।१४१	सन्धान ३. ४।३।८२	ससतन्तु १. ३।६।८२
सन्तत १. २. ३. ५।४।१३०	सन्धानी २. ३।३।१०५	ससति २. ५।१।२७
सन्तति २. ४।४।४१	„ २. ४।३।२१	ससर्पण १. ३।३।४७
„ २. ७।२।२८	सन्धि १. ३।७।६	ससम १. २. ३. ५।१।२०
सन्तमस ३. २।१।६२	„ १. ६।१।६३	ससमातृ २. १।१।६५
	सन्धिकाष्ठ ३. ४।३।४१	ससर्पि १ व. २।१।५०
	सन्धित १. ४।४।१०१	ससला २. ३।३।१८५
	सन्धिनी २. ३।४।५१	

ससससि]

वैजयन्तीकोपः

[समुद्रनवनीतक

ससससि १.	२।१।११	समन्तात् ४.	८।८।३	समाहार १.	५।२।१८
ससार्चिस् १.	१।२।१६	समन्तिक १. २. ३.		" १.	८।१।४७
ससि १.	३।७।९०		५।४।१३३	समाहित १. २. ३.	
सब्रह्मचारिन् १.	३।६।२४	समपद ३.	३।७।१८७		२।१।१३
सभा २.	३।८।१३	समम् ४.	८।८।१७	" १. २. ३.	२।४।१४
" २.	५।१।५	समय १.	७।१।८२	समाह्वय १.	८।१।४७
" २.	६।२।४२	समया ४.	८।७।३३	समिक ३.	३।७।२०३
सभाजन ३.	३।६।१८६	" ४.	८।८।१५.	" १.	७।१।७७
सभासद् १.	३।८।१३	समर १. ३.	३।७।२०६	समिति २.	७।२।२७
सभास्तार १.	३।८।१३	" १. ३.	८।६।७	समिदाधान ३.	३।६।२१
सभिक १.	३।९।५९	" १. ३.	८।६।८	समिधु २.	३।६।९६
सभ्य १.	१।२।२५	समर्थ १. २. ३.	७।४।३०	" २.	३।७।२०६
" १.	३।८।१३	समर्थन ३.	३।८।१५	समीक १.	५।३।६
" १. २. ३.	६।४।१८	समर्याद १. २. ३.		" १.	७।१।७५
सम् ४.	८।७।८		५।४।१४१	समीकरण ३.	३।८।३०
सम १.	३।१।५२	समलेपनी २.	३।९।१४	समीचीन ३.	५।३।३
" ३.	५।१।६१	समवकारक १.	३।९।१००	समीप १. २. ३.	५।४।१४०
" ३.	५।१।६२	समवर्तिन् १.	१।२।३४	समीर १.	१।२।४९
" १. २. ३.	५।४।८६	समवाय १.	५।१।१	समीरण १.	१।२।४७
" १. २. ३.	५।४।१२१	समशन १.	५।३।५४	" १.	३।३।१२०
" १. २. ३.	६।५।९५	समष्टि २.	५।३।४८	समुच्चय १.	५।२।१८
समक ३.	५।१।६२	समसुप्ति २.	२।१।९४	समुच्छ्रय १.	८।६।४६
समकम् ४.	८।८।१७	समस्त १. २. ३.	५।४।८५	समुच्चित १. २. ३.	
समच १. २. ३.	५।४।१३३	समस्थान ३.	३।६।२२४		५।४।१०१
समग्र १. २. ३.	५।४।८५	समस्था २.	२।४।४०	समुत्थान ३.	५।२।२५
समङ्ग १.	३।९।६०	समा २ ब.	२।१।९१	समुत्पिञ्ज १. २. ३.	
समङ्गा २.	३।३।१३५	" २.	६।५।९५		५।४।९४
समज १.	५।१।५	समांसमीना २.	३।४।४८	समुद् १. २. ३.	५।४।३३
समज्ञा २.	२।४।३६	समाघात १.	३।७।२०४	समुदय १.	३।७।२०५
समज्या २.	३।८।१४	समाज १.	५।१।५	" १.	५।१।२
समक्षस ३.	३।७।४८	समादान ३.	३।६।१०४	समुदस्त १. २. ३.	
समतट १ ब.	३।१।३१	समाधि १.	३।६।२३२		५।४।११२
समधिक १. २. ३.		" १.	३।९।६०	समुदाय १.	३।७।२०५
	५।४।१३७	" १.	७।१।८१	" १.	५।१।२
समनीपद १.	१।२।४४	समान १. २. ३.	५।४।१२१	समुद्र १.	४।३।६४
समन्त १. २. ३.	५।४।१३३	" १. २. ३.	७।५।८८	समुद्धत १. २. ३.	
समन्ततः (-स्) ४.		समानोदर्य १.	४।४।३४		५।४।३१
	८।८।३	समापन ३.	८।३।१३	समुद्र ४.	४।२।११
समन्तदुग्धा २.	३।३।९७	समालम्भन ३.	४।३।१४७	" १. २. ३.	५।१।२९
समन्तभद्र १.	१।१।३३	समास १.	२।४।४०	समुद्रनवनीतक ३.	
समन्तमुज्ज १.	१।२।१४	" १.	५।२।१८		२।१।२७

समुद्रान्ता]

शब्दानुक्रमणिका

[सर्वज्ञ

समुद्रान्ता २.	८१२१०	सम्भोग १.	३१७७०	सरस्वती २.	१११९
समुन्दन ३.	५१२२९	” १.	७११८०	” २.	४१२२८
समुन्नति २.	३३१६	सम्भ्रम १.	३१९८९	” २.	८१५३०
समुन्नद्ध १. २. ३.	८१४१२	” १.	७११७९	सरि २.	२११२
समूह १.	३१४२०	सम्मति २.	७१२२९	सरित् २.	४१२२२
समूह १.	५११२	सम्मद १.	३१६१८८	सरिताम्पति १.	४१२११
समूहन ३.	३१७१८९	सम्मर्द १.	३१७२०५	सरिस्पति १.	४१२१२
समृद्ध १. २. ३.	५१४५७	सम्मार्जनी २.	४३१५२	सरी २.	३१७९८
समृद्धि २.	३१८९३	सम्मासा २.	३३१२७	सरीष्प १.	४११४
समोलक १.	५३१४५	(समांसा)		” १.	४११४०
समोलुक ३.	३१२३०	सम्मुख १. २. ३.	५१४४७	सरुज् २.	३१६५०
सम्पत्ति २.	३१६१९१	सम्मूर्च्छन ३.	५१२४१	सरुराह १.	३१७१०६
” २.	३१७४	सम्यच्च ३.	५३३३	सरोज २.	४१२३७
सम्पद् २.	३१६१९१	सम्राज् १.	६११६१	सरोरुह ३.	४१२३६
” २.	८११५	सर १.	११२४८	सर्ग १.	३१६३२
सम्पात १.	५१२२६	” १.	३३३४२	” १.	५१२१
सम्पातपाटव ३.	५१२९	” ३.	३१८१४५	” १.	६११६२
सम्पुट १.	४३३६४	” १.	५३२६	सर्ज १.	३३३३८
सम्पूर्ण १. २. ३.	५१४८७	सरक ३.	३१५५३	सर्जक १.	३१८१४०
सम्पृक्त १. २. ३.	५१४७८	” ३.	७३३३८	सर्जन १.	३१८१११
सम्प्रति ४.	८१८५	सरधा २.	२३३४५	सर्प १.	४११४
सम्प्रधारण ३.	३१८१५	सरट् १.	६११६४	” १.	८१६१५
सम्प्रयोग १.	५१२२६	सरट् १.	४११२८	सर्पजाति २.	४११११
” १.	८११४५	सरटी २.	३१२२७	सर्पदंष्ट्री २.	३३१२७
सम्प्रश्न १.	३१८१५	सरणी २.	४१२२१	सर्पशुज् १.	४१११६
सम्प्रहार १.	३१७२०४	सरण्यु १.	७११७६	” १.	८१६२१
सम्प्रेष १.	५१२२५	सरमा २.	३१४७१	सर्पभूता २.	३१११
सम्प्रेषणी २.	३१६६५	सरल १.	३३३७४	सर्पराज १.	४११३
सम्फल १.	३१४६४	” १. २. ३.	५१४२०	” १.	४१११५
सम्फुल्ल १. २. ३.	३३३९	सरलद्रव १.	३१८१०९	” १.	४१११६
सम्बन्ध १.	५१२३३	सरलशोणिक १.	५३१५१	सर्पशफरी २.	४११४४
सम्बाध १. २. ३.		सरलिक १.	५३१५२	सर्पाञ्चर १.	४११२१
” १. २. ३.	५१४१२६	सरस् ३.	४१२६	सर्पारि १.	८१६२१
” १. २. ३.	७१५१२	” ३.	६३३३४	सर्पिस् ३.	३१८१३८
सम्भरी २.	३१८१२१	सरसिज ३.	४१२३७	” ३.	६३३३५
सम्भव १.	७११७९	सरसी २.	४१२६	सर्व १.	५११३१
सम्भाल १ व.	३११२४	सरसीज ३.	४१२३७	” १.	५१४८५
सम्भावना २.	३१६१७६	सरसीरुह ३.	४१२३७	सर्वसहा २.	३११३
सम्भाषण ३.	२१४२३	सरस्वत् १.	४१२२९	सर्वगन्ध ३.	४३१५१
सम्भेद १.	४१२३१	” १.	८१५३३	सर्वजनप्रिया २.	३१८९३
” १.	५१२२६	” १.	८१५३३	सर्वज्ञ १.	१११३३

[सर्वज्ञ]

वैजयन्तीकोषः

[साज्य]

सर्वज्ञ १.	१११४४	सवितृ १.	२१११०	सहस्रवेधिन् १.	३१०१३३
सर्वतः (-स्) ४.	८१८३	" १.	७११७८	सहस्रांशु १.	२१११५
सर्वतोभद्र १.	४३३०	सविध १. २. ३.		सहस्राक्ष १.	१२११
सर्वतोमुख १.	१११८	" १. २. ३. पा४१४१		सहस्रिन् १. २. ३.	
" ३.	८३१९८				३१०१४१
सर्वदा ४.	८३१५	सविस्मय १. २. ३.		सहा २.	३३१०६
सर्वधुरीण १. २. ३.				" २.	३३१२८
	३१४५८	सवेध १. २. ३. पा४१४१		" २.	३३१७८
सर्वभक्ष १. २. ३.		सवेश १. २. ३. पा४१४१		" २.	३३१९०
	पा४१५०	सव्य १.	१२१२८	" २.	३३१९१
सर्वभक्षा २.	३१४६२	" १. २. ३. दा४१८		सहाध्यायिन् १.	३३१२४
सर्वमङ्गला २.	१११५८	सव्येष्ट १.	३१०१३८	सहाय १.	३१०१६
सर्वला २.	३१०१६६	सस्य ३.	३३१२०	" १. २. ३. ३१०४३	
सर्वलोचना २.	३१०१९८	" ३.	३१०३१	सहायता २.	पा११९
सर्वविद् २.	३१६२३३	सस्यसंवर १.	३३१३८	सहित ३.	३१०१७६
सर्वविद्या २.	३१६३१	सह ४.	८१०१७	सहितोदर ३.	३१०१७७
सर्ववेदस् १.	३१६७७	सहकारक १.	३३१२५	सहिष्णु १. २. ३. पा४३३	
सर्ववेशिन् १.	३१६६३	सहचर १. २. ३.		सहुरि १.	१२११८
(सर्वकेशिन्)			३३१९१	" १.	७११७५
सर्वसन्नहन ३.	३१०१५७	सहचरी २.	४१३३४	सांयान्त्रिक ३.	१२१६८
सर्वसस्यभू २.	३१०१७	सहज १.	४१३३१	" ३.	३१०१२३
सर्वसह १.	३३१५३	" ३.	पा२११	" १.	४२११८
सर्वान्नीन १. २. ३.		सहधर्मिणी २.	४१३३४	सांयुगीन १. २. ३.	
	पा४१५०	सहन १. २. ३. पा४३३			३१०१४९
सर्वाभिसार १.	३१०१५७	सहपानक ३.	३१०५३	सांराविण ३.	८१०१७
सर्वार्थसिद्ध १.	१११३४	सहभोजन ३.	४३१०३	सांवरसर १.	१२१८०
सर्वोद्य १.	३१०१५७	सहरक्षस् १.	१११२१	" १.	३१०२५
" ३.	३१०१३६	" १.	१११२२	" १.	३१०३३
सर्षप १.	३१०१४१	सहस् १.	२११८१	आंवरसरी २.	३१०६६
सर्षपी २.	३३३६७	" ३.	३१०२१०	साकम् ४.	८१०१७
सलज्ज १.	३३३१२२	सहसा ४.	८१०३४	साकेत ३.	४३१५
सलवण ३.	३२१३२	सहसानु १.	३१०६३	साक्षात् ४.	८१०३०
सलिल ३.	४२११	" १.	७१०४५	साक्षिन् १. २. ३. ३१०१९	
सल्लकी २.	३३३९६	सहस्य १.	२११८२	सागर १.	४२११०
सल्लाप १.	२११२९	सहस्र ३.	पा१२८	साङ्कारिका २.	३१०१२
सव ३.	३१०६२	सहस्रतम १. २. ३.		साङ्ग्रामिकगुण १.	
सवन १.	३१०६९		पा१२३		३१०४
सवर्ण १.	३१५३	सहस्रदंष्ट्र २.	४११४२	" १.	३१०५
" १.	३१५७०	सहस्रपत्र ३.	४२१३८	साचि १.	१२११८
" १. २. ३. पा४१२१		सहस्रवीर्या २. ३३३२३३		" ४.	८१०१९
सविक्रम १.	३१०११	सहस्रवेधिन् ३. ३१०१३१		साज्य ३.	३१०६५

साति २.	६।२।४४	सान्ध्य १.	२।१।१६	सारपर्णी २.	३।३।१००
सातिसार १. २. ३.		सान्नाय्य ३.	३।६।९९	सारमेय १.	३।४।६८
	४।४।१४६	साक्षपदीन ३.	३।६।१८७	सारस १.	२।३।३३
सात्त्वत १.	१।१।२३	सामज १.	३।७।६१	” ३.	४।३।३७
” १. २. ३.	३।५।५७	सामन् ३.	२।४।२३	” १.	७।१।८३
” १. २. ३.	३।५।१०५	” ३.	३।६।२६	सारसन ३.	३।७।१५६
सात्त्वती २.	३।९।१०१	” ३.	३।६।१११	” ३.	४।२।१४६
सात्त्विक ३.	३।६।११९	” ३.	३।७।१३	सारसप्रिया २.	२।३।३३
” १. २. ३.	३।९।९९	सामन्त १.	३।७।१८	सारस्वत १.	३।६।१९
सात्त्विकी २.	२।१।६०	सामर्थ्य ३.	७।३।३८	सारिका २.	३।९।१२८
साद् १.	३।६।१९१	सामाजिक १.	३।८।१३	सारी २.	३।९।९१
सादिन् १.	६।१।६५	सामान्य १. २. ३.		सार्थ १.	५।१।४
साद्यस्क १. २. ३.			५।४।१२९	सार्थवाह १.	३।८।७२
	५।४।८९	सामि ४.	८।७।२९	सार्द्र १. २. ३.	५।४।१०७
साधन ३.	७।३।३६	सामिक ३.	३।६।९३	सार्धम्	८।८।१७
साधारण १. २. ३.		सामुद्र १.	३।५।४२	सार्पिष्क १. २. ३.	४।३।९५
	५।४।१२९	” ३.	४।४।५४	सार्वभौम १.	२।१।८
साधिका २.	३।३।१७८	सामूना ३.	३।४।२०	” १.	३।७।२
साधीयस् १. २. ३.		साम्पराय १.	८।१।४८	साष्टि २.	३।६।२३७
	७।४।२९	साम्परायिक १.	३।७।१२६	साल १.	३।३।३८
साधु १. २. ३.	५।४।१३५	” १.	३।७।२०३	” २.	४।३।१४
” १. २. ३.	६।५।९६	साम्प्रतम् ४.	८।७।३४	” २.	६।१।६५
साधुवाद १.	२।४।३६	” ३.	८।८।५	सालभक्षिका २.	३।९।१४
साध्य १ ब.	१।३।८	साम्बाधिक १.	२।१।६६	सालानुरीयक १.	
साध्वस ३.	३।६।१८५	सायक १.	७।१।७७		३।६।१५४
साध्वी २.	४।४।७	सायन्तूर्य ३.	३।९।१३७	सालावृक १.	८।१।४६
सानु १. ३.	३।२।७	सायम् ४.	८।८।१०	सात्व १ ब.	३।१।३२
” १.	३।६।८३	सायाह्न १.	२।१।६५	” १ ब.	३।१।३८
सानुनासिक १. २. ३.		सायुज्य ३.	३।६।२३७	सावन १.	२।१।८१
	२।४।१६	सार १.	३।३।१४	सावित्र १.	३।६।४१
सानुमत् १.	३।२।१	” १.	४।४।१०९	सावित्री २.	४।४।७४
सान्त्व १. २. ३.	२।४।१६	” १. २. ३.	६।५।९७	सावित्रेय २.	१।२।३४
” ३.	३।७।१३	सारघ ३.	३।८।१३५	साष्टी २.	३।३।१७५
” ३.	६।३।३५	सारङ्ग १. २. ३.	७।५।८९	सास्ना २.	३।४।६०
सान्त्वन ३.	३।७।१३	सारण १.	१।२।५४	साहस १. ३.	३।७।४६
” ३.	५।२।३८	” १. २. ३.	३।१।४६	साहस्र १. २. ३.	
सान्दष्टिक ३.	३।६।२३६	” १. २. ३.	३।६।६		३।७।१४१
सान्देशिक १.	३।७।२९	” ३.	३।८।१४९	” ३.	५।१।१३
सान्द्र १. २. ३.	५।४।१२६	” ३.	५।२।११	साहायक १. २.	८।९।३५
सान्द्रस्निग्ध १. २. ३.		सारणी २.	२।४।४२	सिंह १.	३।२।५
	५।४।४३	सारथि १.	३।७।१३८	” १.	३।४।१

[सिंह]

वैजयन्तीकोषः

[सुगन्धि]

सिंह १.	८६११४	सिता २.	३१८१३४	सीम १.	५३१७
सिंहकर्णी २.	३१७१९३	सिताङ्ग १.	३१८१०५	सीमन् २.	४३१११
सिंहकेसर १.	३१३२६	सितायुध १.	४११४४	” २.	६२१४४
सिंहपुच्छी २.	३१३१३७	सितासित १.	१११२४	सीमन्त १.	४४११००
” १.	८२११५	सितोदर १.	११२५८	सीमन्तिनी २.	४४१४
सिंहमल ३.	३१२२८	सिद्गुण्ड १.	३१३९८	सीमन्तोन्नयन ३.	३६१३
सिंहल ३.	३१११९	” १.	३१५९	सीमा २.	४३१११
” ३.	३१२३१	सिद्ध १.	१३१२	” २.	६२१४४
” ३.	३१८७५	” १. २. ३.	४३१९३	सीर ३.	३१८२७
सिंहवाहना २.	१११६२	” १. २. ३.	५३११११	सीवन ३.	३१९१२
सिंहसंहनन १. २. ३.		सिद्धसेन १.	१११५५	सीवनी २.	३१९११
	५४१६	सिद्धान्त १.	३६१२५	” २.	४४१६२
सिंहाण ३.	३१३३६	सिद्धार्थ १.	३१८४१	सीस १. ३.	३१२२९
सिंहासन ३.	३१७१५	सिद्धि २.	३१८९३	सु ४.	८१८८
सिंहास्य ३.	३३११०१	सिद्धि ३.	४११२६	” ४.	८१८४
सिंहिका २.	३६१४७	सिद्धिन् १.	५४१४४	” ४.	८१८१३
सिंही २.	३३११०२	सिद्धमल १. २. ३.		सुकर १. २. ३.	३१७१०७
” २.	३३११०६		४४१४४	सुकुमार १.	५३१५
सिकता २ व.	४२१३३	सिध्य १.	२१३२९	सुकृत ३.	३६१६८
सिकताप्राय ३.	४२१३३	सिन ३.	४४१५२	” ३.	७५१९४
सिकतावत् १. २. ३.		सिनीवाली २.	२११७१	सुकृतिन् १. २. ३.	
	३११४४	” २.	८२११०		५४१५६
सिकतिल १. २. ३.		सिन्दुक १.	३३११८	सुख ३.	३६१८९
	३११४४	सिन्दुवार १.	३३११८	” ३.	५४१४४
सिक्थ १.	६११६६	सिन्दूर ३.	३१८११८	” ३.	६३३३५
सिच् २.	४३१११६	सिन्धि ३.	३१८१२१	सुखकर १.	१११२१
सिच्य १.	४३१११६	सिन्धु १ व.	३११२७	सुखद्वयुण १.	१११५०
सित १.	५१११०	” १.	३३१९८	सुखदोष्टा १.	३४१४९
” १. २. ३.	५४१९७	” २.	४२१२३	सुखवर्चक १.	३१११२९
सितकाच १.	५३११३	” १.	६५१९७	सुखवास १.	३३११७१
सितकाचर १.	५३११३	सिन्धुर १.	३१७६१	सुखसुसिका २.	३६१२००
” १.	५३१२४	सिन्धुसर्ज १.	३३१३९	सुखा २.	१११४९
सितकुञ्जर १.	१२१४	सिन्धुव ३.	३१८१२१	सुखोदय १.	३११४८
सितकृष्ण १.	५३१२४	सिरा २.	४४११६	सुगत १.	१११३४
सितच्छद १.	२३१५	सिराल १. २. ३.	५४१८	सुगन्ध १.	३३१६९
सितपिङ्गाण १.	५३११४	सिल ३.	३१८२	” १.	३३१२००
सितपीतहरित्रील १.		सिलिन्ध्र १.	३३१५३	” १.	४३१५३
	५३११५	सिह १.	३१८११०	सुगन्धक १.	३३११६४
सितलोहित १.	५३१२५	सीता २.	३१८३०	सुगन्धा २.	३३११८६
सितश्याम १.	५३११२	” २.	६२१४५	” २.	३१८९७
” १.	५३११५	सीत्य १. २. ३.	३१८२२	सुगन्धि २.	३३११९

[सुगन्धि]

सुगन्धि १.	३१४२
" १.	३१४८४
सुगन्धिक १.	३१८३२
सुगन्धिका २.	३३११३९
सुगन्धिन् ३.	३१८९५
सुगन्धी २.	३३११७५
सुग्रीव १.	४११५५
सुचरित्रा २.	३१८५०
सुत १.	११३३
" १.	४१४४०
" १.	६११६६
सुतङ्ग १.	३३३२२०
सुतश्रेणी २.	३३१११३
सुतापुत्र १ द्वि.	४१४४८
सुताह्वा २.	३३११४४
सुतेजित १. २. ३.	५१४९४
सुत्रामन् १.	१२१४
सुत्वन् १.	३१६७५
सुदर्शन ३.	११११७
" ३.	१२११०
" १.	२३३३०
सुदर्शना २.	३३११४३
सुदार १.	३२१४
सुदिनाह ३.	८१२२२
सुदुष्प्रभ १.	४११२९
सुधन्व १.	३१६१०७
(युन्धान)	
सुधन्वन् १.	३१५५६
सुधन्वाचार्य १.	३१५५७
" १.	३१५१०४
सुधर्मन् २.	१३१११
सुधा २.	४३१०५
" २.	६२१४५
सुधी १.	३१६२३४
सुनन्दा २.	१११६०
" २.	३१४४३
सुनाल ३.	४२१४२
सुनासीर १.	१२१५
सुनिषण्णक १.	३३११५०
सुन्दर १. २. ३.	५१४१३४

शब्दानुक्रमणिका

सुन्दरी २.	४१४६
सुपथिन् १.	३११४९
सुपर्ण १.	१११३८
" १.	३३१४९
सुपर्णक १.	२३११९
सुपर्णाण्ड १.	३१५२५
सुपर्णतनय १.	१११३७
सुपर्वन् १.	१११४
सुपार्श्व १.	३३१५९
सुप्त १.	२३३२४
" ३.	३१६१९७
" १.	४१४१३४
सुप्रतीक १.	२११८
सुफल १.	३३३३३
" १.	३३३९३
सुब्रह्मण्य १.	१११५७
सुभग १. २. ३.	५१४७०
सुभञ्जन १.	३३३५६
सुभद्रा २.	३३११७०
सुभिच्चा २.	३३३९७
सुभीरुक ३.	३२१२४
सुम ३.	३३११८
सुमदा २.	१३११
सुमन १.	३१८५३
सुमनस् २ व.	३३११८
" १. २.	७१५९०
सुमना २.	३१४४४
सुमानस १. २. ३.	५१४५७
सुसुखी २.	३३३१२३
सुमेरु १.	१३११२
सुयमा २.	३३३६७
सुर १.	१११२
सुरगायन १.	१३३२
सुरज्येष्ठ १.	१११७
सुरदीर्घिका २.	१३३१३
सुरपर्णिका २.	३३३७०
सुरभि १.	१२१२६
" १.	२११८७
" २.	३३३९६
" १.	३३३१२२

[सुवृत्त]

सुरभि २.	३१४४३
" १.	५३१४७
" १.	५३१४९
" १. २. ३.	७१५९३
सुरभिच्छद्व १.	३३३९३
सुख १.	५३१५४
सुरवर्त्मन् ३.	२१११
सुरवल्लभ १.	३३३७०
सुरश्वेता २.	४११३१
सुरसा २.	३३३९३
" २.	२१८९७
सुरा २.	३१५४५
सुराचार्य १.	२११३३
सुराजन् १. २. ३.	३११४६
सुराजिका २.	४११३१
सुराधिप १.	१२१२
सुरामण्ड १.	३१५५२
सुरालय १.	१३३१२
सुरावास १.	११११
सुराष्ट्र १.	३१८३७
सुराष्ट्रजा २.	३२११७
सुराह्वय ३.	३३३७१
सुरूपा २.	३३३१८४
सुरूहक १.	३३३१०२
सुरोत्तम १.	११११४
सुलभ १.	१२१२७
सुललिक १.	३१५२७
सुलवणा २.	३१६६०
सुलोह ३.	३२१३४
सुलोहक ३.	३२१२५
सुवर्चला २.	२११२३
" २.	३१८४५
सुवर्चिका २.	३१८१२९
सुवर्ण १.	३२११९
" १. ३.	५११४१
" १.	५११४९
सुवहा २.	३१८९८
सुवासक १.	३३३१७१
सुवासिनी २.	४१४८
सुवृत्त १. २. ३.	५१४८२

[सुवेले]

वैजयन्तीकोषः

[सुप्र]

सुवेले १.	३१२२	सूक्ष्म १. २. ३.	६५५९८	सूना २.	३७८४
सुव्रता २.	३१४४९	"	८११११०	" २.	४१४९०
सुषम १. २. ३.	५४११३५	सूक्ष्मदर्शिन १. २. ३.		सूनातटि २.	३९१३७
सुषमा २.	४३१५२		५४१२९	सूनु १. २.	४४३९
सुषवी २.	३३१६३	सूक्ष्मा २.	११११६	सूनुत ३.	५४१४३
" २.	३८८५	सूचक १.	३४३८	" १. २. ३.	७४२९
सुषि १. २.	४११२	" १.	३५४०	सूप १. ३.	४३८६
सुषिक १.	५३३६	" १.	३९६८	" १. २. ३.	४३९३
सुषिम १.	५३३६	" १. २. ३.	५४१२५	सूपकार १. २. ३.	४३९२
सुषिर १.	३३२२८	सूचना २.	८२१४	सूर १.	२१११०
" ३.	३९११५	सूचा २.	३९११	सुरण १.	३३२०८
" ३.	४११२	" २.	८२१४	सुरि १.	३६२३४
" १. ३.	७५९०	सूचि १.	३५२९	सूर्मि १. २.	३९२२
सुषिरच्छेद १.	३९१२७	" १.	३५९१	" १. २.	८९२५
सुषिरा २.	३८१००	" २.	३९११	सूर्य १.	२१११०
सुष्ठुति २.	३६२००	" २.	४३१४८	सूर्यकान्त १.	३२३७
सुष्ठुम्ना २. १.	८१२५	सूचिसूत्र ३.	३९१२	सूर्यभ्रातृ १.	१२१२
सुषेण १.	३३१८४	सूची २.	४३१४८	सूर्या २.	३३१३४
सुषेणी २.	३३१३८	सूचीमुख ३.	३६२१४	सूर्याचन्द्रमस १ द्वि.	
सुष्ठु ४.	८८१४	सूत १.	३२१४४		२१२९
" ४.	८८१३	" १.	३५१२	सूर्यारक १ ब.	३१३५
सुसंस्कृत १. २. ३.		" १.	३५७७	सूर्यावर्त १.	३३१२४
	४३९४	" १.	३५७७	सूर्योद १.	३६६८
सुसाम १.	३३३७	" १.	३७१३८	सूकथा २.	४१५८
सुस्निग्धा २.	३३१०४	सूता २.	३४७३	सूकन् ३.	४४८८
सुहस्त १. २. ३.		सूति १.	२३३६	सूग १.	३७१६६
	३७१४८	सूतिकागृह ३.	४३२०	सूगाल १.	३४३७
सुहित १. २. ३.	४३१०५	सूतिकामास १.	४४१९	" १.	८५७
" १. २. ३.	५३९९	सूथान १. २. ३.	५४५४	सूगालकोलि २.	३३८९
सुहृद् १.	३७३	सूत्र ३.	३६२०	सूगालवास्तुक १.	
" १. २. ३.	३७४३	" ३.	३९११		३३१५४
" २.	४४२५	" ३.	३९१४२	सूजया २.	३४१०
" १. २. ३.	६४२०	" ३.	६३३६	" २.	४१३०
सुहृदय १. २. ३.	५४१६	सूत्रक ३.	३७१५३	सूणि १. २.	३७८४
सुहृ १ ब.	३११५	सूत्रधार १.	३९६८	सूणिका २.	४४१२०
सूकर १.	३४५	सूत्रवेष्टन १.	५११९	सूति २.	३१४९
" १.	३८३३	सूत्रसङ्ग्रह १.	३७११०	सूदाकु १.	१२१९
सूकरी २.	४३१४१	सूद १.	४३८६	" १.	७१७७
सूक्ष्म ३.	४३१२२	" १. २. ३.	४३९२	सूपाट १. २.	८९२५
" ३.	४४११०	सून ३.	३३१८	सूपाटिका २.	२३५७
" १. २. ३.	५४१३६	" ३. २.	६५९९	सूप्र १.	२१२७

[सुमर]

सुमर १.	३१४२९
सृष्टा २.	३१८९४
” २.	३१९१२९
सृष्टि २.	८१५३५
से १. २. ३.	८१५४०
सेकपात्र ३.	४२११८
सेकमिश्रान्न ३.	४३११०६
सेकिम ३.	३२११५५
सेवतृ १.	४१४३७
सेचन ३.	४२११८
सेतु १.	३३३४१
” १.	४२११०
सेतुज १ ब.	३११३४
सेना २.	३१७५५
सेनानी १.	१११५५
” १. २. ३.	३१७१४१
सेनामुख ३.	३१७५८
सेनारक्ष १. २. ३.	३१७१४०
सेनास्थ १. २. ३.	३१७१४०
सेभ्य १.	५३३७
सेराल ३.	५३३२०
सेराह १.	३१७१०४
सेरुहाह १.	३१७१०६
सेलिस १.	३१४२४
सेलु १.	३३३५५
सेवक १.	३१७१७
” १. २. ३.	७५१९३
सेवन ३.	३३३३८
” ३.	३१९१२
” ३.	७३३३७
सेवनी २.	३३३१८४
सेवा २.	३३३३८
” २.	३१८१७
सेव्य १.	२३३१८
” ३.	३३३२३१
” ३.	३१८११५
” ३.	३१८१२०
” ३.	३१८१४२
” १.	३१९४९

शब्दानुक्रमणिका

सेव्य ३.	८३३१८
सेव्या २.	३३३८५
” २.	३३३१७७
” २.	३१८५८
सेहिका २.	५११५४
सैहिकेय १.	२११३६
सैकत १. २. ३.	३११४४
” ३.	४२३३३
सैतवाहिनी २.	४२३२६
सैता २.	४२३२६
सैध १.	२११८२
सैनिक १. २. ३.	३१७१४०
” १. २. ३.	३१७१४०
सैन्धव ३.	३१८१२०
” ३.	३१९७२
” १.	७५१९१
सैन्य ३.	३१७५५
” १. २. ३.	३१७१४०
सैर १ ब.	३११४०
सैरन्ध्री २.	४१४२५
सैराभ १.	५३३५५
सैरिक १. २. ३.	३१४५८
सैरिन्ध्र १.	३३३११२
” १.	३३३११५
सैरिन्ध्रजाति २.	३३३११३
सैरिभ १.	४३३८
सैरेयक १.	३३३१९०
सोढ १. २. ३.	५३३११५
सोढ १. २. ३.	५३३३३
सोत्पात ३.	४३३११२
सोत्व १.	३३३७६
सोदर १.	४३३३४
सोदर्य १.	४३३३४
सोन्माद १. २. ३.	५३३४१
सोपाक १.	३३३४५
” १.	३३३१०६
सोपान ३.	४३३५१

[सौमिक]

सोम १.	३३३१६९
” १.	३३३८४
” १.	६३३६६
सोमप १.	३३३७५
सोमपान ३.	३३३९२
(सोममान)	
सोमपीथिन् १.	३३३७५
सोमभवा २.	४२३२६
सोमयोनि १.	८११४९
सोमरसोद्भव ३.	३१८१४५
सोमराजि २.	३३३१०८
सोमल १.	५३३८
सोमवल्ली २.	३३३१४४
सोमवल्ली २.	३३३१०८
” २.	३३३१३२
सोमाल १.	५३३४
सोमिन् २.	३३३८३
सोर १.	५२३१२
सोरण १.	५३३३८
सोरावास १.	४३३८८
सोल १.	५३३६
” १.	५३३३५
सोलिक १.	५३३६
सोवाल १.	५३३१३
सौख्य ३.	३३३१८९
सौगन्धिक १.	३२३१४
” ३.	३३३२३४
” ३.	४२३३५
सौचिक १.	३१९११
सौदामनी २.	२२३५
सौध ३.	३२३३४
” १. ३.	४३३२९
सौधात १.	३३५७
सौनन्द ३.	१११२५
सौसिक १.	३३३२०३
सौभागिनेय १.	४३३४३
सौमनस १.	५३३४९
सौमिक ३.	३३३१०१
(सोमक)	
” १. २. ३.	३३३१२७

सौमिकी]

सौमिकी २.	३१६८७
सौमेरव ३.	३११७
सौम्य १.	२११३२
” ३.	२११९१
” १.	३१६८४
” १.	३१६१०८
” ३.	३१६१४५
” १. २. ३.	६१५९८
सौम्यकृच्छ्र ३.	३१६१३२
सौम्या २.	८१२१५
सौरत १.	११२५१
सौरभेय १.	३१४५३
सौरभेयी २.	३१४४१
सौरसा २.	३३३८८
सौराष्ट्र ३.	३१२२९
सौराष्ट्रिक १.	४११२४
(सारोष्ट्रिक)	
सौराष्ट्री २.	३१२१६
” २.	३१८४८
सौरि १.	२११३५
सौरिक १.	१११११
सौर्य १.	२११९१
सौवर्चल ३.	३१८१२५
” ३.	३१८१२६
सौवस्तिक १.	३१७२४
सौवास १.	३३३१२०
सौविद १.	३१७२२
सौविद्वह १.	३१७२२
सौविष्ट ३.	३१६११२
सौवीर १ ब.	३११२८
” ३.	३१२४२
” ३.	४१३८१
” १. ३.	७१५९१
सौशमिकन्ध ३.	८१९१९
सौष्टव ३.	३१७२०८
सौहार्द ३.	३१६१८६
सौहित्य ३.	४३३१०५
सौहृद ३.	३१६१८६
स्कन्द १.	१११५४
” १.	६१९६५
स्कन्दोल १.	३१३१६

वैजयन्तीकोपः

स्कन्ध १.	३३३१५
” १.	४३३७१
” १.	५११११
” १.	५११५
स्कन्धवह १.	३१४५२
स्कन्धवाहक १. २. ३.	३१४५६
स्कन्धशाखा २.	३३३१५
स्कन्धशृङ्ग १.	३१४१०
स्कन्धाग्नि १.	११२२०
स्कन्धावार १.	४३३१४
स्कन्धिक १. २. ३.	३१४५६
स्कन्न १. २. ३.	५११०२
स्खलित ३.	३१७२०७
स्तन १.	३१४५१
” १.	४१४६८
स्तनन्धय १. २. ३.	५१४२
स्तनप १. २. ३.	५१४२
स्तनयितु १.	८११४६
स्तनाग्र ३.	४१४६८
स्तनित ३.	२१२५
स्तन्य ३.	३१८१४५
स्तवक १.	३३३२०
स्तब्ध १. २. ३.	५१४२०
स्तब्धरोमन् १.	३१४५
स्तब्धलोचन १. २. ३.	५१४९
स्तभ १.	३१४६२
स्तभि २.	८१९१०
स्तम्ब १.	३३३७
” १.	३३३१६
” १.	३१८६३
स्तम्बकरि १.	३१८३२
स्तम्बज ३.	३३३२३२
स्तम्बरम १.	३७७६०
स्तम्भ १.	३११६४
स्तम्भि १.	४१२१२
स्तम्भिन् १.	४१२१२
स्तम्भ ३.	३३३११

[स्थल

स्तव १.	२१४३५
स्तिमित १. २. ३.	४१७३०
स्तुत १. २. ३.	५११०६
स्तुति २.	२१४३५
” २.	३३३१११
स्तुतिपाठक १.	३१७३०
स्तूप १.	६११६७
स्तूपपृष्ठ १.	४११५०
स्तेन १.	३१९५६
स्तेम १.	५१२२९
स्तेय ३.	३१९५८
स्तैन्य ३.	३१९५८
स्तोक १.	२१२८
” १. २. ३.	५११३६
स्तोकक १.	२३३३२
स्तोकपाण्डु १.	५३३१४
स्तोत्र ३.	२१४३५
” ३.	३३३१११
स्तोम १.	३११६१
” १.	३१४८२
” १.	५१११
स्त्यान १. २. ३.	४३३९५
स्त्री २.	४१४४
” २.	८१२१६
” २.	८१६५
स्त्रीधर्मिणी २.	४१४१५
स्त्रीपुंसलक्षणा २.	४१४३
स्त्रीप्रिय १.	३३३४०
स्त्रीभूषण १.	३३३२३
स्त्रीवास १.	३११४८
स्त्रीव्यञ्जनाकृता २.	४१४८
स्त्रैण १. २. ३.	५१११८
स्त्याख्या १.	३३३६७
स्थगणा २.	३१११
स्थण्डिल १. २. ३.	३३३३३२
स्थपति १.	३१५८६
” १.	७११८०
” १.	८१९४५
स्थपुट १. २. ३.	५१४८३
स्थल ३.	३११४२

[स्थल]

स्थल १. २.	८१९३२
स्थलशृङ्गाट १.	३३३१४१
स्थली २.	३११४२
” २.	८१९३२
स्थविर १. २. ३.	५४३३
स्थाणु १.	१११४३
” १. ३.	३३३१३
स्थान ३.	३१७१८६
” ३.	३१९१११
” ३.	६३३३६
स्थानिक १. २. ३.	३१९१९
स्थानीय ३.	४३३१
” ३.	४३३२
स्थाने ४.	८१८१४
स्थापत्य १.	३१७२३
” १.	८१९४५
स्थापनी २.	३३३१३०
स्थाप्य १.	३१८१२
स्थामन् ३.	३१७२१०
स्थायिन् १.	३१९१८१
” १. २. ३.	५४३४२
स्थायिभाव १.	३१९१७६
स्थायुक १.	३१७२१
” १. २. ३.	५४३४२
स्थाल १.	१११४५
” ३.	४३३६१
स्थाला २.	३१८२७
स्थालिक १.	५३३५७
स्थाली २.	४३३५५
स्थावर १. २. ३.	५४३६२
स्थाविर ३.	४३३५४
स्थासक १.	३१७८७
” १.	४२१३३
” १.	४३३१४८
स्थास्नु १. २. ३.	५४३४२
” १. २. ३.	५४३७९
स्थित १. २. ३.	६३३२०
स्थितासन ३.	३३३२२६
स्थिति २.	३१८१५
” २.	५२१२

शब्दानुक्रमणिका

स्थिति २.	५२११४
” २.	६२१४४
स्थिर १.	२११३६
स्थिरगति १.	२११३५
स्थिरजिह्व १.	४११४२
स्थिरप्रेमन् १. २. ३.	५४३२६
स्थिरा २.	३११२
” १.	३३३१००
स्थूल ३.	४३३१२५
स्थूणा २.	३१९२२
” २.	६२१४६
स्थूणाशीर्ष ३.	४३३४०
स्थूरिन् १. २. ३.	३३३५६
स्थूल ३.	३१८१३९
” १. २. ३.	५४३८४
” १. २. ३.	६३३१९
स्थूलकाष्ठाम्नि १.	१२१२०
स्थूलनास १.	३३३६
स्थूलपुष्पिका २.	३३३१३५
स्थूललक्ष १. २. ३.	५४३५८
स्थूलशाटिका २.	४३३१२६
स्थूलहस्त १.	३१७७१
स्थूलोच्चय १.	८११४८
स्थेय १.	३१८१३
स्थेयस १. २. ३.	५४३७९
स्थेष्ट १. ३.	५४३७९
स्थौण्य ३.	३१८१२
स्थौर १ व.	३११३६
स्नपित १. २. ३.	५४३१०७
स्नव १.	५२१३२
स्नसा २.	४३३११७
स्नातक १.	३३३४०
स्नान ३.	४३३११३
” ३.	६३३३६
स्नायु २. ३.	३३३११७
स्नाव १.	३३३११४
” १.	३१९३३

[स्फिच्]

स्नाव १.	४३३११७
स्निग्ध १.	३३३५३
” १. २. ३.	३३३४३
” १. २. ३.	५३३१८
स्नु १.	३२१७
स्नुमिका २.	३१८१२९
स्नुत १. २. ३.	५४३१०९
स्नुषा २.	४३३३६
स्नुह् २.	३३३९७
स्नुही २.	३३३९७
स्नेह १. ३.	३३३१८६
” १. ३.	३१८१३७
” १.	५३३१
” १. ३.	६३३९९
” ३.	८३३१८
स्नेहपात्र ३.	४३३६०
स्नेहपूर १.	३१८४५
स्नेहचर ३.	४३३१०८
स्नेहु ३.	४३३११३
स्पन्द १.	२११२६
स्पन्दित ३.	३१९९१
स्पर्ध १. २. ३.	५४३६४
स्पर्श १.	१२१४९
” १.	३३३३६
” १.	५३३२
” १. २. ३.	६३३९६
स्पर्शन ३.	३३३११८
” १. ३.	७३३८९
स्पर्शानन्दा २.	१३३१
स्पश १.	३३३२०५
” १.	६३३६४
स्पशा २.	३३६८९
स्पष्ट १. २. ३.	५४३१३४
स्पृक्का २.	३३३११७
स्पृष्टता २.	३३३३५
स्पृहा २.	३३३१७९
स्फटा २.	४३३२१
स्फटिक १.	३३३३७
स्फाति २.	५२३३३
स्फार १. २. ३.	५४३८०
स्फिच् २.	४३३६५

[स्फीत]

स्फीत १.	पा३१७
स्फुट १. २. ३.	३३१९
„ १. २. ३.	पा३१३४
„ १. २. ३.	दा३१९९
स्फुटन ३.	पा२१४१
स्फुटवल्गुकी २.	३३११४०
स्फुटित १. २. ३.	३११४६
स्फुरण ३.	पा२१३३
स्फुरित ३.	३११९१
स्फुलन ३.	पा२१३३
स्फुलिङ्ग १. २. ३.	१२१३१
स्फूर्जक १.	३३१५१
स्फूर्जधु १.	२१२६
स्फोटक १.	४१४१२३
स्फ्य १.	३३११०२
स्म ४.	८१७१७
„ ४.	८१७१११
स्मय १.	३३११६९
स्मयाक १.	३३११५८
स्मर १.	१११२७
स्मराङ्कुश १.	४१४७६
स्मित १. २. ३.	३३१९
„ ३.	३३१९८३
„ ३.	८१९१६
स्मृति २.	३३१२९
स्यद १.	१२१५५
स्यन्द १.	२११२६
स्यन्दन १.	३३७१२४
स्यन्दनध्वनि १.	२१४९
स्यन्दिनी २.	४१४१२०
स्यन्न १. २. ३.	पा३१०९
स्यमीक १.	७११७५
स्याल १.	४१४३२
स्यालिका २.	४१४२८
स्यूत १.	४३१६४
„ १. २. ३.	पा३११२
स्यूति २.	३३११२
स्यूना २.	६२१४५
स्यूम १.	६११६१
स्योनाक १	३३३६८

वैजयन्तीकोषः

संसिन् १.	३३३४५
सक्ति २.	४३१५२
सज् २.	४३१५४
सख १.	४३१९३
„ १.	पा२३२
सखण १.	३३३४२
सखत्पाणिपादा २.	३३१५२
सखङ्गभा २.	३३१४७
सखन्ती २.	४२१२२
सखट्ट १.	१११६
सखट्टव ३.	१११४८
सखस्त १. २. ३.	पा३१०२
सखाक ४.	८१८११
सखावस्ती २.	३३१२१
„ २.	३३१३०
सुगासादन ३.	३३१८९
सुगिह १.	१२११७
सुच २.	३३११००
„ २.	८२११८
सुत १. २. ३.	पा३१०९
सुव ३.	३३११००
सुवा २.	३३१११४
स्रोतस् ३.	४१४१३
„ ३.	६३३३७
स्रोतस्विनी १.	४२१२२
स्रोतोञ्जन ३.	३२१४२
स्व १. २. ३.	८१५३८
स्वः (-र्) ४.	१११२
„ (-र्) ४.	३३१२०७
„ (-र्) ४.	८१७१७
स्वकुलक्षय १.	४११४१
स्वङ्ग १. २. ३.	पा३१६
स्वच्छन्द १. २. ३.	पा३१२७
स्वज १.	४११२०
„ १.	४१४४५
स्वजन १.	४१४५१
स्वतन्त्र १. २. ३.	पा३१२७
स्वतन्त्रवृत्ति २.	पा२१२०
स्वदन ३.	पा३१०३
स्वधिति १.	३३१३६

[स्वर्नदी]

स्वधिति १.	३३१३६
स्वन १.	२१४११
„ १. २. ३.	पा३१४८
स्वम १.	३३११९७
„ १.	३३११९७
स्वमज् १. २. ३.	पा३१३९
स्वप्रतिष्ठ १.	पा३१२७
स्वभाव १.	पा२१२
स्वभू १.	११११२
स्वमनीषिका २.	३३११७४
स्वयंवरा २.	४३३७
स्वयम् ४.	८१८१८
स्वयम्भू १.	१११८
स्वर १.	३३१११०
„ १.	३३११३२
„ १.	६११६३
स्वरकम्प १.	३३१८५
स्वरभेद १.	३३१८५
स्वराष्ट्रचिन्ता २.	३३७१४
स्वरिङ्गण १.	१२१५२
स्वरित १. २. ३.	३३१३७
स्वरु १.	६११६४
स्वरुमोचन १.	३३११०६
स्वरूप ३.	पा२११
स्वरेणु २.	२११२३
स्वर्ग १.	११११
स्वर्जि २.	३३११२९
स्वर्जिका २.	३३११२९
स्वर्ण ३.	३३११८
„ १.	३३१२२१
स्वर्णकार १.	३३११६
स्वर्णचूड १.	२३१२९
स्वर्णद्वीप ३.	३३११९
स्वर्णराज ३.	४२१४१
(स्वर्णराग)	
स्वर्णरीति २.	३३१२६
स्वर्णशुक्ति २.	३३१२१
स्वर्णाद्रि १.	१३११२
स्वर्नदी २.	१३११३

स्वर्भानु]

स्वर्भानु १.	२।१।३६
स्वर्वापी २.	४।२।२४
स्वर्वेश्या १.	१।३।१
स्वरूपदेहा २.	३।६।५१
स्वरूपफला २.	३।३।१६०
स्वसर १.	४।४।३१
स्वसू २.	३।१।४
स्वसृ २.	४।४।२६
स्वस्कन्द १.	३।९।४
(स्वस्कन्ध)	
स्वस्तर १.	३।८।६६
स्वति ४.	८।७।२९
स्वस्तिक १.	२।३।२८
” १.	३।३।१४९
” १.	३।६।२२४
” १.	४।३।३०
” १.	४।३।१३६
स्वस्त्ययन ३.	३।६।५८
स्वस्त्रीय १.	४।४।४१
स्वाती २.	२।१।४०
स्वादु १.	५।३।२५
” १. २. ३.	६।४।१९
” ३.	८।३।१८
स्वादुकण्टक १.	८।१।५५
स्वादुगन्धा २.	३।३।५७
स्वादुतिक्तकषाय १.	५।३।३३
स्वादुमुस्ता २.	४।२।४८
स्वादुरसा ३.	८।२।९
स्वाद्य १.	५।३।३०
स्वाद्वल्गुतिक्ततुवर १.	५।३।३९
स्वाद्दी २.	३।३।१८१
स्वाध्याय १.	७।१।८३
स्वान्त १.	१।३।११
” १.	२।४।१
स्वान्त ३.	३।६।१७३
स्वाप १.	३।६।१९७
” १.	४।३।१६७
स्वापतेय ३.	३।८।७३
स्वामिन् १.	१।१।५६

शब्दानुक्रमणिका

स्वामिन् १.	३।६।१५९
” १.	३।७।३
” १.	३।९।१०५
” १. २. ३.	५।४।५८
” १. २. ३.	६।५।९४
स्वामिनी २.	३।७।३२
” २.	३।९।१०३
स्वाराज् १.	१।२।४
स्वास्थ्य ३.	४।४।१४२
स्वाहा २.	१।२।१९
स्वित् ४.	८।७।६
स्वेद १.	३।९।८१
स्वेदचूपक १.	१।२।५२
स्वेदज १. २. ३.	४।४।२
स्वेदनी २.	४।३।५६
स्वैर १. २. ३.	६।४।२०
स्वरिणी २.	४।४।९
स्वरिन् १. २. ३.	५।४।२७
ह	
ह ४.	८।७।८
” ४.	८।७।११
हंस १.	२।३।५
” १.	३।३।२००
” १.	६।१।६८
” १.	८।६।६
हंसक १.	४।३।१४४
हंसकान्ता २.	२।३।८
हंसकालीसुत १.	३।४।१०
हंसच्छत्र ३.	३।८।७६
हंसपद ३.	५।१।५०
हंसपाद ३.	३।२।४५
हंसवाहन १.	१।१।८
हंससाचि १.	२।३।९
हक्कार १.	२।४।३१
हञ्जा २.	३।९।१०८
हट्ट १.	४।३।३५
हट्टविलासिनी २.	३।८।१०१
हट्टवेशमाली २.	४।३।३५
हठ १.	३।७।२०९
” १.	४।२।४६

[हरिकेलीय

हठ १.	६।१।६८
हड्डिक १.	३।५।४८
हड्क १. ३.	३।९।१३४
हण्डा २.	३।९।१०८
हतक १. २. ३.	३।७।१४७
” १. २. ३.	५।४।६७
हना २.	३।६।५०
हनन ३.	५।१।३६
हनु १.	३।५।३३
” २.	३।८।१०१
” १. २.	४।४।९०
हन्त ४.	८।७।३०
” ४.	८।८।२
हन्तकार १.	३।६।१५
हज्ज १. २. ३.	५।४।११३
हय १.	३।७।९०
हयन ३.	६।७।१२७
हयपुच्छी २.	३।३।१०७
हयशिरस् १.	१।१।३०
हर १.	६।१।६७
हरक १.	३।७।१६२
हरण १.	३।३।८२
” ३.	३।७।१९३
” ३.	३।९।९८
” १.	४।४।७१
” ३.	७।३।३९
हरणि २.	४।२।२१
हरशेखरा २.	४।२।२४
हराद्रि १.	३।२।५
हरानत १.	१।२।४२
हराह्वय १.	३।३।८०
हरि १.	१।१।१५
” १.	३।४।२
” १.	३।४।३९
” १.	३।५।२९
” १.	३।५।८९
” १.	३।७।१०४
” १.	३।८।३६
” १.	४।१।६
” १. २. ३.	६।५।१००
हरिकेलीय १ ब.	३।१।३१

हरिचन्दन]

हरिचन्दन १. ३.	१।३।१४
" ३.	३।८।१३
" १. ३.	८।५।२७
हरिण १.	३।४।१२
" १.	५।३।१२
हरिणी २.	३।९।२२
" २.	७।२।३०
हरित् २.	२।१।२
" १.	५।३।२२
" २.	६।५।१०१
हरित १.	३।४।२
" १.	३।८।३६
" १.	४।३।९०
" १.	५।३।२१
" १.	५।३।२२
हरिताल ३.	३।२।१३
हरितालिका २.	३।३।२३२
हरिदश्व १.	२।१।११
हरिद्रा २.	३।३।२११
हरिद्रारागक १. २. ३.	५।४।२६
हरिद्विष १.	१।३।१०
हरिन्मणि १. २.	३।२।३८
हरिपर्ण १.	३।३।१५५
हरिप्रिया २.	८।२।१०
हरिमन् २.	७।१।८४
हरिमन्थ १.	३।८।३७
हरिमन्थज १.	३।८।३७
हरिया १.	३।७।१०४
हरिरोमन् १.	८।१।४९
हरिलोचन १.	२।३।२२
हरिवत् १.	१।२।३
हरिवर्ण ३.	३।१।६
हरिवालुक ३.	३।८।९५
हरिवाहन १.	१।२।४
हरिहय १.	१।२।३
हरीतक १. २. ३.	८।९।३८
हरीतकी २.	३।३।२१
" २.	३।३।१७८
" २.	८।९।३८

वैजयन्तीकोषः

हरेणु २.	३।८।९५
" १. २.	८।९।२६
हरेणुक १.	३।८।४४
हर्तु १.	६।१।६७
हर्म्य ३.	५।३।१९
हर्ष १.	७।१।८४
हर्ष १.	३।३।१८७
हर्षज ३.	४।४।१११
हर्षमाण १. २. ३.	५।४।३३
हर्षवेणुक १.	३।६।६१
हर्षुल १.	२।१।३२
" १. २. ३.	७।५।९४
हर्षुला २.	३।६।५०
हल ३.	६।८।२७
हलभूति १.	३।६।५५४
हला २.	३।९।१०८
हलाम १.	३।७।१०२
हलायुध १.	१।१।२२
हलाहल १.	२।१।२४
हलिन् १.	१।१।२३
हलीचण १.	३।४।२
हलीम १.	३।३।२२३
हलीमक १.	३।३।६०
" १.	३।३।७६
हलुराह १.	३।७।१०५
हल्य १. २. ३.	३।८।२३
हल्या २.	५।१।१४
हव १.	१।२।१८
" १.	२।४।३०
" १.	६।१।६७
हवन १.	१।२।१८
" ३.	३।६।६९
हवनी २.	३।६।१००
" २.	३।६।१०९
हवित्री २.	३।६।१०९
हविर्मन्थ १.	३।३।८६
हविर्यज्ञ १.	२।६।८३
हविशाला २.	४।३।२२
हविस् ३.	३।८।१३८
" ३.	६।३।३७

[हस्तिमञ्ज

हव्ययोनि १.	१।१।४
हव्यवाहन १.	१।२।१७
" १.	१।२।२२
" १.	१।२।२४
हस १.	३।६।१९४
हसन ३.	३।६।१९४
हसनी २.	४।३।५५
हसन्ती २.	४।३।५५
हसित ३.	३।९।८३
हस्त १.	१।२।४३
" १.	३।१।५४
" १.	४।४।७३
हस्तकोहलि २.	३।६।५९
हस्तम १.	३।७।१५५
हस्तग्रय ३.	३।१।५७
हस्तद्वय ३.	३।१।५७
हस्तपर्ण १.	३।३।६४
हस्तविम्ब १.	४।२।१४८
हस्तलेपन ३.	३।६।६०
हस्तवारण ३.	४।३।१०५
हस्तसूत्र ३.	३।६।५९
हस्तावाप १.	३।७।१८९
हस्तिकर्कोटक ३.	३।३।१६५
हस्तिकर्ण १.	३।७।१९८
" १.	४।३।१२९
हस्तिकर्णदल १.	३।३।२९
हस्तिकोलि २.	३।३।८८
हस्तिघोष १.	३।३।१६२
हस्तिचार १.	३।७।१७०
हस्तिन् १.	३।७।६०
" १.	८।६।५
हस्तिनापुर ३.	४।३।८
हस्तिनी २.	४।३।८
हस्तिपक १.	३।७।८८
हस्तिपर्णिनी २.	३।३।१७१
हस्तिपादिका २.	३।८।९३
हस्तिपिप्पली २.	३।८।७८
हस्तिपूरणी २.	३।३।१४७
हस्तिप्रिया २.	३।३।९६
हस्तिमकर १.	४।१।५२
हस्तिमञ्ज १.	८।१।४३

हस्तिमुख १.	४३१५	हास्तिनपुर ३.	४३१८	हिमारी १.	७११८३
हस्तिराज १.	१११५३	हास्य ३.	३६१९४	हिरण्य ३.	३११९
हस्तिवातिङ्गन १.		" १.	३११७५	हिरण्य ६.	३८१७४
	३३११०३	" १.	३११७७	" ३.	७३३३९
हस्य १. २. ३.	५४१११७	हि ४.	८१७९	हिरण्यकशिपुद्विपत् १.	
हस्यगना २.	३३१९६	" ४.	८१७११		११११८
हस्यारोह १.	३१७८८	हिंसन ३.	३१७४१	हिरण्यगर्भ १.	११११७
हहाल १ व.	३११३६	हिंसा २.	३१७२१५	हिरण्यनाभ १.	३१२४
हा ४.	८१७८	" २.	६१२४६	हिरण्यवाहु १.	१३१५६
हाटक १. ३.	३१२२०	हिंसाकर्मन् ३.	३६११२	हिरण्यरेतस् १.	१२११६
" १.	३१७१६५	हिंसार १.	३१४३	हिरण्यवर्णा २.	४१२२२
हात्कृत ३.	२१४८	हिंस्र १.	३१४७३	हिस्क् ४.	८१७३०
हान ३.	५१२४०	" १. २. ३.	५४४४२	" ४.	८१८४
हायन १.	३१८३४	हिन्वा २.	३३१८९	" ४.	८१८१५
" १.	७१८८४	हिक्का २.	२३१२१	ही ४.	८१८१६
हार १.	४२११३८	" २.	४४११२७	हीन १.	३३१८२
" १.	४२११३९	हिक्किका २.	४४११३१	" १. २. ३.	५४२२२
हारफल ३.	४२११४०	हिङ्गु ३.	३१८१३१	" १. २. ३.	५४१०१
हारभूरा २.	३३११८१	हिङ्गुदी २.	३३११०४	" १. २. ३.	६४२२०
हारित १.	११२५२	हिङ्गुनिर्यास १.	८१११५६	हीनवर्ण १.	३५३
हारिता २.	३६१४९	हिङ्गुल १.	३१२४४	हीर १.	६४६९
हारिद्र १.	४४११३६	" ३.	३१२४५	हीरक १.	३१२३९
" ३.	५३१११	हिङ्गुल २.	३३११०२	हुङ्क १.	३१११३४
हारिन् १. २. ३.	५४११३५	हिङ्गीर १.	३१७८५	हुङ्कहिक्का २.	२४१११
हारी २.	३६१४८	हिण्डीकान्त १.	१११४४	हुण १.	१११११
हारीत १.	२३१४०	(चण्डीकान्त)		हुण्ड १.	३४३३
हार्द ३.	३६११८६	हित १. २. ३.	३१७४३	हुताशन १.	१२११६
हार्या २.	३१८११४	" १. २. ३.	५४११०४	हुति २.	३६१६९
हालक १.	३१७१०३	हिन्ताल १.	३३१२२०	" २.	३६१९०
हाला २.	३१९४५	हिम् ४.	८१७९	हुम् ४.	८१७९
हालाहल १.	४११२९	हिम ३.	२१२९	हुरिङ्गक १.	३५४४
हालिक १. २. ३.	३१५५८	" १.	५३१७	हुरुट्टक १.	३१७८५
हाली २.	४४१२८	हिमजा २.	३३१२०३	हुरुङ्कर १ व.	३११२४
हाव १.	३१९१२	हिमद्युति १.	२११२४	हुल ३.	३१७१६८
" १.	३१९१७	हिमवत् १.	३१२४	हुलमात्रिका २.	३१७१६४
हास १.	३६११९४	हिमवालुका २.	३१८१०५	हुलिङ्ग १ व.	३१३३९
" १.	३१९७६	हिमसंहति २.	२१२९	हुलिङ्गुली २.	३६१५७
" १.	३१९८३	हिमा २.	१११५९	हुलु १.	३४६४४
हासनिक १.	३१७१७	हिमाचल १.	३१२४	हुण्डुत १.	३१७१६२
हासिका २.	३६११९३	हिमानिल १.	११२५४	हुति २.	२४३३०
हास्तिक ३.	५३११०	हिमानी २.	२१२९	हुम् ४.	८१७९

हच्छय]

वैजयन्तीकोषः

[ह्यादीनि

हच्छय १.	१११२९	हेति २.	६२१४६	होतृ १.	३६१७९
" १.	११२२१	हेतु १.	५३३३७	होत्र १.	३६१६९
हणिया २.	३६१९३	" १.	६११६९	होत्वन् १.	३६१७६
(मृणिया)		हेमकरक १.	४३१५८	होम १.	३६१६९
हणीया २.	३६१९३	हेमकुश ३.	३१११९	होमकाष्ठी २.	३६१९५
हद् ३.	३६१९७३	हेमघ्न ३.	३२१३०	होमधूम १.	३६१९५
" ३.	४४१६८	हेमघ्नी २.	३३१२११	होमधेनु २.	३६१९५
" ३.	४४१११४	हेमज ३.	३२१३२	होमभस्मन् २.	३६१९५
हृदय ३.	४४१६८	हेमदुग्धक १.	३३१२८	होमयूप १.	३६१९३
" ३.	४४१११४	हेमधारण ३.	५११५९	होमेन्धन ३.	३६१९६
" ३.	७३३३८	हेमन् ३.	३२१२०	होरा २.	२११५१
हृदयालु १. २. ३.	५४११६	" ३.	६३३३७	होल १ व.	३११२६
हृष १.	३३३३२	हेमन्त १.	२११८७	हयः (-स) ४.	८१८१९
" ३.	३६१९३९	हेमपुष्प १.	३३३४१	हयस्तन १. २. ३.	
" ३.	३९१४८	" १.	३३३८१		५४१८९
" १. २. ३.	५४१९६	हेमपुष्पिका २.	३३३१८२	हृद १.	३११६४
" १. २. ३.	५४१३५	हेमप्रतिमा २.	३९१२२	" १.	४११५
" १. २. ३.	६५१००	हेममाष १.	५११५	हृस्व १. २. ३.	५४१८१
हृद्यगन्ध १.	३६१८४	हेमा २.	३११३	" १. २. ३.	६५१०१
हृद्या २.	३२१११	हेरम्ब १.	३११९	हृस्वगवेधुका २.	३६१६१
" २.	३११६३	" १.	७११८४	हृस्वनिर्वशक १.	
" २.	३६१९४	हेरुक १.	३६१२३९		३६११५९
हृद्यांशु १.	२११२६	हेलक ३.	५११६२	ह्राद १.	२११२
हृल्लेख १.	३६१९७९	हेला २.	६२१४६	ह्रादिनी २.	४२१२३
हृषित १. २. ३.	८११३३	हेलि २.	३६१५७	" २.	७२१२९
हृषीक ३.	३६१२०३	" १.	६११६९	ह्रादुनि २.	२२१५
हृषीकेश १.	१११११	हेपा २.	२११६	ही २.	३६१९४
हृष्ट १. २. ३.	५४१९९	है ४.	८१८२	हीक १. २. ३.	६५१०१
" १. २. ३.	८११३३	हैमकूट ३.	३११६	हीण १. २. ३.	५४१५१
हृष्टि २.	३६१९८८	हैमवत ३.	३११३	हीत १. २. ३.	५४१५१
हे ४.	८१८२	हैमवती २.	८२१११	हेपा २.	२११६
हेफा २.	४४११२७	हैयङ्गवीन ३.	३६१३८	ह्राद १.	३६१९८८
हेति १. २.	३६११५७	होह ३.	५११६२	ह्रादिनी २ व.	२१११९

समाप्तश्चाऽयं ग्रन्थः

